महावीर-संवत्
२४५०

[जिनाय-नमः]

# [जैनमत-प्रभाकर-किताब.]

(न्यायांभोनिधि-श्रीमद्-विजयानंदसूरि-
अपरनाम-महाराज-श्रीआत्मारामजी-
साहबके-शिष्य.)

[जनाब-फेजमाब-मग्जनेइल्म-जैनश्वेतांबर-
धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न-महाराज-
शांतिविजयजीकी-तस्नीफ-किइहुइ,-]
(बडेमार्केकी-किताब.)

[जिसकों]
शाह नरोत्तमदास भगवानदास, L O C
ॲकाउन्टंट-मुरारजी गोकुलदासमार्किट, कालबादेवीरोड,
बंबइने निर्णयसागर प्रेसमें छपवाकर
प्रकाशित किइ

(शेयर)
(याचकर सैर इल्मकी करना, यह तमाशा किताबमे देखो)

विक्रमसंवत् (१९८०), इस्वीसन (१९२४)

किमत दश (१०) रुपये.

प्रथमावृत्ति
१०००




*Vidyasagar-Nyayratna-Shreemat*
*Shantivyayu-Maharay*
*Jain Shvetambar-Sadhu*



# [ भूमिका. ]

## ( जैनमत-प्रभाकर. )

१ मेने दीक्षा इख्तियार कियेबाद सद्गुरु न्यायांभोनिधि
जयानंदसूरि अपरनाम, महाराज श्रीआत्मारामजी आनंदविजयजी
ाहबकी खिदमतमे रहकर जो कुछ ज्ञान हासिल किया था,
र किताबमें दर्ज कर दिया है, धर्म और कर्मकी जरुरी बातें इसमें
शन है, याते इसकों लेकर जनजन पढोगे, कुछ न कुछ ज्ञानकी
यीबात हासिल करोगे, फिलहाल ! इस किताबकी एक हजार
कल छपवाइ गइ है, इसमे जो तीन तस्वीरें दाखिल है, बंबई
इम्स औफ इंडिया प्रेसकी बनी हुई है, और उसके बनवानेमे
ाह नरोत्तमदास भगवानदासजीने अछी मदद दिई है, में उमेद
रता हुं, आप लोगोंको मजकुर किताब पसंद होगी.–

२ मेने मेरे खयालसें जहातक बना खिलाफ धर्मशास्त्रके कोई
ात इसमे नही लिखी, इतनेपरभी कोई गलती रहगई हो, ब-
रीये खतके कोई महाशय मुजे इत्तिला करेगें, उसपर खयाल
खकर दुसरी आवृत्तिमें सुधारा करदुंगा, लेख लिखना उसीका
ाम है, जिसके पढनेसे दुसरोंको फायदा पहुंचे, कई कहाकरते है,
भामें भाषण देना मुश्किल है, मगर सच पुछो तो इन्साफके लेख
लिखना उससेभी ज्यादा मुश्किल है, लिखाण लिखकर फिर दो-
ारा पढलेना चाहिये, जिससे रही हुई गलतीये दिख पडे, ग्रंथ
लिखकर तयार किये बाद छपवाना चाहो तो प्रेसमे देनेके पहले

दो तीन दफे फिर पढलो, जैसे धनुष्यसें छुटा हुवा बाण फिर हाथमें नही आता, लिखे हुवे लेख छपगये बाद फिर मिटा नही सकते, मगर हां! इतना-बनसकता है, जबतक किताब बंधीगई न हो, कोई फार्म बदलकर दोबारा छपवाना चाहो तो छपवा सकते हो.–

३ अगर कोई महाशय अपने लेखमें गलती बतलावे और वो सची हो, तो उसकों मंजुर करना चाहिये, और दुसरी आवृत्तिमे सुधारलेना चाहिये, ग्रंथकर्त्ताको मुनासिब है, रोचक भयानकको छोडकर यथार्थ बयान लिखे, जहां सवाल जवाबका काम आनपडे दाखले दलिलोंसें काम लेवे, अपशब्द लिखना बुद्धिमानोंका काम नही, शुक्र है–मुद्दतोंका इरादा आज कामयाब हुवा, और यह किताब छपकर आपलोगोंकी नजरोंके सामने आगई.–

४ इसमें सबसे अवल मेरी सवाने उम्री दर्ज किई है, जिसजिस मुल्कोंकी मेने सैर किई, तीर्थोंकी जियारत गया, और जगह जगहपर व्याख्यान धर्मशास्त्रके दिये उसका मतलब इसमें लिखा गया है, इसके बाद मुल्कमुल्ककी सैरका हाल, पुराने जमानेमें किसकिस मुल्कोंके क्याक्या नामथे? और जमाने हालमें क्याक्या नाम है? वहांके रशमरवाज पुरानी तारीखी इमारते और दिगर चीजोंका-मुफस्सल हाल इसमें दर्ज है, जोगरफी और इतिहासिक बातें यूरोप एशिया और अमरिका वगेरा मुल्कोंके हालातभी इसमें लिख दिये है, जिसके पढनेसे घरबेठे मुल्कोकी सैर हासिल होगी.

५ जैनमजहबका इतिहास इसमें तीर्थंकर रिषभदेव महाराजसे लेकर महावीरस्वामीतक चौईस तीर्थंकरोका बयान, बडेबडे नामी ग्रामी जैनाचार्य, जैनउपाध्याय, और जैनमुनि, कबकब हुवे, उनका बयान मुताबीक जैनशास्त्रके लिखागया है, आगे उसूल जैनमजहब इसमे जैनमजहबके उसूल दिखलाये है, तालीम धर्मशास्त्र इसमें तरहतरहकी मजहबी हिदायते पढनेसे दिल खुश होगा, सवाल

जवान मजहवे जैन, इसमे तरहतरहके सवाल जवाव है, चारतरहकी औरतोंका वयान, दरवयान साख्य मजहव, वयान वैदिक मजहव, दरवयान मिमासक मजहव, वीच वयान नैयायिक मजहव, वयान वौधमजहव, वैशेपिक मजहव, और नास्तिक मजहव, वगेराकी हकीकत एकपीछे एक दिई गई है, प्रत्यक्षप्रमाण, अनुमानप्रमाण, उपमान, और शाव्दप्रमाण इन चार प्रमाणोंमेंसे कौन कौनसे मजहवाले कितने प्रमाण मानते हैं, उसका खुलासा इसमें दिया है, दिगंवर मजहवका वयान–जिसमे श्वेतांवर और दिगंवरके वारेमें वडी चर्चा लिखीगई है, दिगंवर मजहवकी शाखे, काष्टासंघ, मूलसंघ, माथुरसंघ, गोप्यसंघ, वीशपथ, तेरहपंथ, वगेराका वयान दर्ज है, खरतरगछसमीक्षा, इसमें तीर्थकर महावीरस्वामीके पांच कल्याणिक सावीत किये है, अधिक महिना वार्षिक चातुर्मासिक पर्वकी अपेक्षा गिनतीमें नही लेना, यहभी सावीतकर वतलाया है.

६ वीचनयान मजहव स्थानकवासी और तेरहपंथ, इसमें मूर्त्तिपूजा मुताविक जैनशास्त्रोंके सावीतकर दिखाई है, वयान त्रिस्तुति मजहव, इसमे त्रिस्तुतिके वारेमे चर्चा है, श्रीमद् राजचंद्र किताबके लेखपर समीक्षा, इसमें जिसजिस लेखपर समीक्षा करना मुनासिव था, उनकी समीक्षा लिखीगई है, इसके वाद लालन आत्मवाटिका किताबमें जहा मेरे वारेमे जो कुछ लिखा है, उसका माकुल जवाव दिया है, अध्यात्मज्ञान किसको कहना, वगेरा वाते उमदा तौरसे देखनेमे आयगी, दरवयान आर्यसमाज, इसमें आर्यसमाजके वारेमें हकीकत है, वयान मजहवे इस्लाम, इसमें इस्लाम मजहवके उसूलोंका मुख्तसर वयान लिखा है.–

७ अष्टाग निमित्तोमे आठतरहके निमित्तोंका जिक्र है, अवल अंगस्फुरण निमित्तमे मर्दका कौनसा अंग और स्त्रीका कौनसा अग फुरके तो क्या फायदा या नुकशान होगा. दाहनी या वायी आंख फुरकनेसें क्या फल होगा? स्वप्नशास्त्रम कौनसा स्वप्न देखनेसें क्या

नफा और क्या नुकशान होगा, स्वप्न कितनी तरहके होते है, वगेरा केफियत लिखीगई है, स्वरविज्ञान, जिसमें हरमनुष्यकी मामुली अवाज किस स्वरमें है, और उससे क्या फल होना चाहिये, जैनागम अनुयोगद्वारसूत्रके फरमानसें उसके देखनेकी तरकीब बतलाई है, रागरागिनीके भेद, उनकी केफियत इसमें उमदा तौरसे मिलेगी, बयान भूमिकंप, इसमे जमीन कांप उठनेसे क्या फल होगा, इसका जिक्र है, बयान तिल और मसे जो शरीरमे होते है, उनकी पुरी केफियत, बीच बयान हस्तरेखा, जिसमें हाथपांवकी रेखा देखनेका तरीका, उसका फल और आसानीकेलिये हस्तरेखाके पंजेका चित्रभी इसमें दाखिल करदिया है.–

८ उत्पात और अंतरिक्षनिमित्त जिसमें उल्कापात, दिग्दाह, गंधर्वनगर और इंद्रधनुष्यका आकार आसानमें दिख पडनेसे दुनियामे क्या नफा नुकशान होगा? दुमदार सितारा, यानी पुछडिया तारा दिखाई दे तो क्या फल होगा? उसकी तपसील इसमें दिखाई है, विजलीके होनेसे कितने कोशतक असर होगा, और गर्जना होनेसें कितनी दूरतक उसका फल होगा वगेरा हकीकत बयान किई है.–

९ बयान शकुनशास्त्र, इसमें दृष्टशकुन और शब्दशकुनका हाल दर्ज है, स्वरोदयज्ञान, इसमे चंद्रस्वर और सूर्यस्वरमे क्या क्या काम करने चाहिये, हरमहिनेकी सुदी और वदी एकमके रोज सवेरे सूर्योदयकेवख्त अपना कौनसा स्वर चलता हो तो अछा है, उसकी हकीकत लिखी है, सोहं सोहं रटना, प्राणायाम, और ध्यान किसतरह करना, उसका जिक्रभी इसमें दिया है, बयान मंत्र-यंत्रशास्त्र, और जानवरोंके लक्षण काबिलजाननेके है, वांचनेसे मालुम होगा, इनके बाद बयान नजुमशास्त्र, जिसमे चादसूर्य वगेरा नवग्रहोका बयान, जन्मपत्रिकाके बारहभावोंका फल,

हरसालका वरतारा निकालनेकी तरकीब, रोगावलीचक्र, गई हुई चीज मिलेगी या नही? उसके देखनेकी तरकीब, मुहूर्त्त विवाह संस्कारका, मुहूर्त्त दीक्षाका, बयान प्रतिष्ठामुहूर्त्तका, तीर्थ-करोंकी राशि, नक्षत्र, और चिन्ह, सोना, चांदी, कपास वगेरा जरुरी चीजोंकी तेजी मंदी देखनेका तरीका, इसमे वतलाया गया है.–

१० चिकित्साविद्या, इसमें अपने बदनकी तंदुरुस्ति किसतरह रखना? कईतरहकी दवाये, और इलाज बतलाये है, शरीर तंदुरुस्त होगा तो धर्मभी बनसकेगा, इसलिये चिकित्साविद्याकीभी जरुरत है, बयान जिनमूर्त्तिकी प्रतिष्ठा और शांतिस्नात्रका इसमें लिखागया है, अंतिम आराधना (यानी) मौत करीब आनेपर अंतिम आरा-धना किसतरह करना, और व्रतनियम किसतरह लेना, उसका बयान इसमें है, पापकरनेसे इस आत्माको दौजक (यानी) नरकगति और पुन्य करनेसे स्वर्गगति मिलेगी, स्वर्गके नाचरग और उसकी तस्वीरभी इसमें दिईगई है, जिसके देखनेसें इन्सानका दिल पुन्य-धर्मपर रजु होगा, आगे इसके मुक्तिका बयान, जिसके पानेसें जन्म मरण छुट जाता हैं, आत्माको अतींद्रिय सुख मिलता है, और फिर दुनियामें आना नही होता, वगेरा बयान दिया है.–

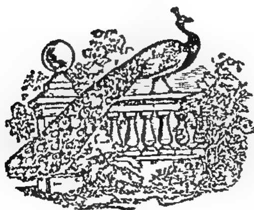
११ सिद्धांतरहस्यलेसमे, शास्त्रका मतलब दिखाया है, दुनियाके कारोबार नामके विषयमें दुनियाकी बाते, गौतमकेवली महाविद्यासें प्रश्न देखनेकी तरकीब, इतिहासिक समीक्षा, और दरबयान जैनतीर्थ जिसमे जमानेहालमें कौनकौनसे जैनतीर्थ नेस्तनाबुद होगये,? और कौनकौनसे मौजूद है, उनका हाल बतलाया है, इनके बाद जुदेजुदे कवियोके बनाये हुवे उपदेशिक पद, जिसमें राग रागि-नीके शाथ गानेके कइ पद छपे है, अखीरमें किताब जैनमत-प्रभाक-रकी पूर्णता और पेशगी होये हुवे ग्राहकोंके नाम रौशन है.–

१२ शुद्धिपत्रमें-पृष्ठ (५७५) में श्रीकृस्नजीके जन्मग्रहोंके बयानमें तीसरी पंक्तिपर जहां लिखा है, चंद्र-सूर्य-स्वगृही है, वहां चंद्र-उच्चका और सूर्य-स्वगृही है, एसा जानना.-

पृष्ठ (६४६) पर पंक्ति (१६) में जहां गर्भपैदा होनेकी दुसरीदवामें सफेद मिर्ची एक एसा लिखा है, वहां सफेद चिर्मी यानी-गुंज, एक एसा जानना, सफेद चिर्मीको सफेद चणोठीभी कहते है.-

जहां जहां कोइ हर्फ या लग मात्रकी अशुद्धि रहगइ हो वहां सुधारकर वाचना चाहिये.-

| | |
|---|---|
| सवत् (१९८०)<br>बंबई-<br>दादर. | ब-कलम,-जैनश्वेतांबर-धर्मोपदेष्टा,-<br>विद्यासागर-न्यायरत्न-<br>मुनि-शांतिविजय.- |



# [ अनुक्रमणिका ]

| विषय. | पृष्ठसंख्या. |
| --- | --- |

[ जिनाय-नमः– ]

# [ जैनमत-प्रभाकर-किताव. ]

(न्यायांभोनिधि श्रीमद् विजयानंदसूरि अपरनाम
महाराज श्रीआत्मारामजी साहबके शिष्य–)

जनाव-फैजमान-मग्जने इल्म-जैनश्वेतावरधर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-
न्यायरत्न-महाराज-शांतिविजयजीकी तस्नीफकिइहुइ
( वडे, मार्केकी किताव )

[ इवादत जिनेंद्रदेवोंकी ]

( दोहा )

नमुंदेव अरिहंतको गुरु नमुं निर्ग्रंथ,
स्याद्वादवानी नमुं यही मुक्तिका पंथ. १
जिनवानी जिनेरुचिकरी पाइ तत्वपरतीत,
जिने जिनवानी जानीनही भटकेभवभयभीत, २
सुनकर वानी जैनकी क्यौं न धरे मनधीर,
धर्म विना इसजीवकी कौन हरे भवपीर, ३

( तकदीरके वारेमे कवित्त )

कर्मसे जीव तुरग नचावत कर्मसें छत्रपति नर होइ.
कर्मसें पुत्र सुपुत्र कहावत कर्मसें और वडो नही कोइ,
कर्म फिर्यो जब रावणको तब सोनेकी लंक छिनकमे खोइ,
आप वडाइ कहा करे मूरख कर्म करे सो करे नहि कोइ. १

एक धरे शिंगार सुनार हि एक भरे घरको नित पानी,
एक हि दासी बनी घर डोलत एक कहावत है ठकुरानी,
एकहि सुंदर अंबर पहेनत एक फिरे नितचीवर हानी,
दत्त हि को फलदेखलियो नर तोहि न चेततमुरख प्रानी, २
शीत हरी दिन एकनिशाचर लंकलही दिन एसो हि आयो,
एकदिनो दमयंती तजी नल एकदिनो फिरहि सुख पायो,
एकदिनो वनवास गये अरु एकदिनो शिरछत्र धरायो,
सोच प्रवीन कछु न करो सब खेल यही विधकर्म बनायो, ३

( तृस्नाके बारमे कवित्त )

जो दसबीस पचास भये शत होय हजार तोलाख मगेगी,
कोटि खरब अरु संख असंख धरापति होनेकी चाह जगेगी,
स्वर्ग पातालको राज कियो तृस्ना अधिकी अति आगे जगेगी,
सुंदर एक संतोष विनानर तेरीतो भूख कभी न भगेगी.

( स्वभावके बारेमे कवित्त )

पावकको जलबुंद निवारन सुरजतापको छत्र कियो है,
रोगको वैद्य तुरगको चाबुक चौपगको कछु दंड दियो है,
हस्ती महामद वारन अंकुश भूत पिशाचको मंत्र कियो है,
औषध है सबको जगमाहि सभावको औषध नाहि कियो है,

( शेयर )

किसकदर शांतिविजयजीको बनाया कामील
आतमारामजी महाराजकी किरपा देखो, १

( दोहा )

सद्गुरु चरन प्रसादसे होत मनोरथ सिद्ध,
ज्यु घन बरसत वेलरुप फल फुलनकी वृद्ध, १
लगे भूख ज्वरके गये रुचसे लेवतआहार,
अशुभ गये शुभहि जगे जानत धर्मविचार, २

## The Life and Times of Mooni Shantivijejee

## ( जनाब–फेजमाव–मग्जनेइल्म–जैनश्वेतांवरधर्मोपदेश विद्यासागर–न्यायरत्न–महाराज–शांतिविजयजीकी सवानेउम्री–यानी–जीवनचरित. )

इस कितानकी शुरुआतमे महाराज साहवकी सवानेउम्री-(यानी) जीवनचरित दर्ज कियाहै, मगर-वो-सवानेउम्री-सिर्फ ! सवानेउम्रीही नही, वल्कि ! इसमे तरह तरहकी वाते-तीर्थोकी जियारते-मुल्कोकी सैर जगहजगहपर दियेहुवे व्याख्यान जमानेके तजरुवे और धर्मके तरहतरहके नफे नुकशानका तजकिरा होगा. जिसको पढकर आमलोग खुश होगे.

महाराज शांतिविजयजी साहवका जन्म संवत् (१९१७) शहर–भावनगर–जिले काठियावाड–गुजरातमे हुवा, उनके वालिदका नाम माणकचंदजी–और–वाल्दाका नाम–रलियातकुवर–था, दोंनो जैन मजहवपर सावीतकदम–और–पके एतकातवाले थे—जव उनके घर वेटा पैदाहुवा वडी खुशी हासिल हुई, और उनका नाम हठीसिंह रखा. जव उनकी उम्र करीव आठ सालकी हुई इनके वालिदने उनको वास्ते इल्म हासिल करनेके मदर्सेको भेजे, और इनकी छोटी उम्रमें अकल इतनी तेजथी किसी शख्ससे एक मरतवा कोई वात सुन लेतेथे फौरन ! याद हो जातीथी, और लोग उनकी अकलकी तारीफ करते थे, जव इनकी उम्र दस सालकी हुई इनके वालिदका ईतकाल होगया और इनके चचासाहव शेठ मूलचंदजी इनकी परवरीश करने लगे. हमेशा अपने भतीजेकों जैनमजहवकी वहुतसी हिकायते और किस्से कहानी कहा करतेथे. पस ! इनको वहुतसी हिकायते वडेवडे आलिम फाजिल मुनिजनोकी मुंहजवानी

याद हो गइ, और ये इस कदर छोटी उम्रमेंभी देवपूजन किया करते थे.

जब इनकी उम्र चारां सालकी हुई वाल्दाका ईंतकाल हो गया. सिर्फ ! चचासाहब और चचीसाहवा इनकी परवरीशकेलिये मौजूद थे और उनोंने इनकों दिलो जानसें परवरीश किया. चौदह वर्सकी उम्रमें इनोंने सात गुजराती किताबें पढकर इल्म अंग्रेजी पढना शुरू किया और दो सालमें तीन किताबें अंग्रेजीकी पढलिइ, शहर भावनगरमें जो जैनमजहबी मदर्सा जारीथा वहां जाकर मजहबी इल्म पढतेथे. अछीअछी नजीरे अपने मजहबकी जो आलिम फाजिलोकी बनी हुईथी जबानी याद करतेथे, जब कभी दोस्तांके शाथ हवाखोरीको या खेल करनेको जाया करतेथे यही कहा करतेथे दुनियामे धर्म एक आला दर्जेकी चीज है और दुनियवी कारोबार उसके पीछे है एक सुखी एक दुखी एक अमीर और एक गरीब यह सब पूर्वजन्मके कियेहुवे पुन्यपापका फल है, दोस्तलोग इसबातको सुनकर हसतेथे और कहतेथे, अगर ऐसेही धर्मपावंद बनते हो तो हवाखोरीको क्यौं आये? साधु होजाना बेहत्तर था, उनके जवाबमें यही फरमाते थे कब वह दिनआवे और में साधु बनुं.

अठरां वर्सकी उम्रमें पंचप्रतिक्रमण नवतत्व जीवविचार दंडक कर्मग्रंथ क्षेत्रसमास और स्वरोदयज्ञान वगेरा जबानी यादकर लिये थे अक्सर ! जब शहर भावनगरमे कई जैनमुनिमहाराज आया करते थे, ये उनकी खिदमतमें मशगूल रहते थे, और शहरके आदमी इनकेलिये कहा करते थे, क्या ! आपभी साधु होजायगे? एक वख्तका जिक्र है जब महाराज श्रीवृद्धिचंद्रजी साहब जो बडे कामील जैन मुनिथे, शहर भावनगरमे तशरीफ लाये और उनोंने जब व्याख्यान धर्मशास्त्रका वाजकिया येभी उनके व्याख्यान

सुननेको जाते थे, और उनोने जब यह व्याख्यान दिया कि जो शख्श रातके वक्त खानेपीनेका परहेज करेंगे वे दुर्गतिकी सफर न करेंगे; इनोने यह बात सुनकर उसी तारीखसे हमेशाके लिये रातको आपना खाना पीना कतइ छोड दिया,

संवत् (१९३२) में जब महाराज श्रीआत्मारामजी आनंद विजयजी साहब जो जैनमजहबके बडे कामील थे, शहर भावनगरमे तशरीफ लाये, और चारमहिने उनोने अय्याम वारीश कयाम किया, उसवक्त येभी वास्ते मजहबी व्याख्यान सुननेके आया करते थे,चारमहिनेतक हरहमेश व्याख्यान सुनते रहे, इनका एतकात धर्मपर बढा, और यहभी दिलमें मुसम्मीम इरादा कर लिया दुनयवी कारोबार छोड कर दीक्षा लेना बहेत्तर है, बाद वारीशके जब महाराज श्रीआत्मारामजी आनंदविजयजी साहब करीब एक-हजारश्रावकोके साथ तीर्थगिरनारजीकी जियारतको पावपैंदल जानेपर आमादा हुवे, इनके चचासाहब मूलचंदजीने अपने रिस्तेदारोके साथ इनकोभी तीर्थगिरनारजीकी जियारतके लिये भेज दिये, शहर भावनगरसें रवाना होकर तीर्थशत्रुंजय तलाजा दीव वेरावल पाटन मागरोल धोराजी होते हुवे तीर्थगिरनारजीको पहुचे, और वहाकी जियारत किई, बादचंद रोजके जब तीर्थगिरनारजीसें रवाना होकर जामनगरको गये और वहांकीभी जियारतकिई, वहासे महाराज श्रीआत्मारामजी आनंदविजयजी साहब मुल्क पंजाबको जानेकेलिये रवाना हुवे, और भावनगरके श्रावकलोग अपने वतनको लोटने लगे, उसवख्त इनोने दो कोशपर एक धुवाव गावमे जाकर दीक्षा इख्तियार किई, दुसरे रोज रिस्तेदारोने तलाश किइ और इनको अपने शाथमे नही देखे तो मालुम हुवा इनोने दीक्षा इक्तियार कर लिइ है, और धुवाव गावसे रवाना होकर आगे हणियाला गांव गये है, रिस्तेदारलोग इनकेपास गये और राज्यकी मददसें आगे जातेको रोककर वापिस जामनगर लाये,

इनका साधुपनेका वेश उतरवा दिया, झोली पात्रे उनके गुरुके पास भेजवा दिये, इनको अपने शाथमें वापिस लाये और जामनगरसें रवाना होकर धरोल राजकोटके रास्ते भावनगर ले चले, जब ये भावनगरमें आये, इनके चचासाहब मूलचंदजी दसकोशतक सामने गये, और इस अदेशेसे अपने भतीजेको कुछभी सख्तबात नही किइ कि इनका दिल नाराज न होजाय, मगर जब भावनगरमे आये, इनकी बहुत हांसी हुई, ख्वाह दोस्त या रिस्तेदार लोग और उनकी ओरतेभी इनसे तानाजनी करने लगी वाह! वाह!! आप तो साधु होगयेथे अब क्यों! वापिस दुनियामे आये? महाराज बेशक! उसवक्त बहुत शर्मिंदे हुवे, मगर असरलाचारी चचासाहब और ढिगर रिस्तेदारोके दो सालतक दुनियादारीकी हालतमे रहे, और अपने मुसम्मीम इरादेको नही छोडा, इस अर्सेमें महाराज श्रीआत्मारामजी आनंदविजयजी साहब और महाराज श्रीलक्ष्मीविजयजी साहबके खत इनकेपास आया करते थे, और येभी उनको बराबर जवाब देते रहते थे, जाहिरातमे ये दुनियादारीके काममे मशगुल थे, मगर अंदरुनी इरादा इनका उसीतर्फ लगाहुवा था, और अकसरलोग ऐसा कहा करते थे ये फिर साधु होजायगें, इनको रातदीन यही खयाल रहताथा मे दुनिया छोडकर कब अपने असली इरादेको पुरा करुं, हमेशां देवपूजन सामायिक प्रतिक्रमण चौदह नियम और पंचपरमेष्ठिका जाप किया करते थे, स्वरोदयज्ञानसें बरताव करना इनका लडकपनसेही स्वभाव था, चंद्रस्वरमे पानी दुध वगेरा पीते थे, और सूर्यस्वरमें खाना खाते थे.

इनके चचासाहबने इनकी सादीके लिये बहुत कोशिश किइ, मगर ये उनको साफ जवाब देते थे, मे सादी नही करना चाहता, सबब मेरा रहना इस दुनियामे अंद रोजका है. इनके चचासाहबको कोइ लडका नही था, इसलिये उनका स्नेह अपने भतीजेपर ज्यादा होना एक कुदरती बातथी, जब कभी अपने दोस्तोके शाथ

मजहबी बातपर बहेस करते थे फौरन! उनको जबाब देते थे धर्म सचा है, आराम या तकलीफ होना अपने अपने पूर्वकृत कर्मोका फल है, असलमें! इनकी दलिलें आलादर्जेकी तेज थी, कभी कभी ऐसा मौकाभी आन पडताथा रातके वख्त इनके दोस्त किसी मकानमें अलाहेदा जमा होतेथे और जब रात्री भोजन करने न करनेपर बहेस होतीथी तब ये जबाब देते थे, जैनशास्त्रोंमें रातका खाना मना है. दोस्तलोग कहा करतेथे जिस चीजमें दिनमें जीव नही तो रातको कहासें आगये? जबाबमें फरमाते थे, किसी शख्सने रातके वख्त एक लोटेमें पानी भरकर पिया, उस लोटेमें सेकडो चीटीया बमबब ठडके फिर रहीथी, पानीके साथ पिनेवालेके पेटमें चलीगइ, बतलाना चाहिये! रातके वक्त खानपान करनेसें अपना और दुसरोका नुकशान है या नही? सबुत हुवा रातके वख्त खानपान करना साफ बखतरसें भरा है, इसीलिये जैनशास्त्रोंमें रातका खाना मना फरमाया, जैसे मकानमें हमेशा चोरीका होना मुमकीन नही, मगर तोभी हरेक शख्स अपना मकान बंद करके सोता है, इसीतरह धर्मको चाहनेवाला शख्श रातको खानापीना बंद रखे इसीमें उसका भलाहै. ऐसीऐसी दलील हमेशा होती रहतीथी, कभीकभी दोलतके बारेमें बहेस होतीथी, तबभी यही जबाब देतेथे, दोलत मुकाबिले धर्मके कोइ चीज नही. इसतरह इनोंने दुनियादारीके काममें तीन वर्स गुजारे, और जब इनके चचासाहब शहर भावनगरसे तीर्थ शत्रुंजयकी जियारतको तशरीफ लेगये इनोंने किसीसे जाहिर-न-करके सवत्(१९३५) फाल्गुनसुदी पंचमीके रोज मुल्क पजाब तर्फ जानेके लिये तयारी किई और घरसे रवाना हुवे महाराज श्रीआत्मारामजी आनंद विजयजी साहब और महाराज श्रीलक्ष्मीविजयजी साहब उस वख्त मुल्क पजाबकी सफर करते थे, जिनके पास इनोंने पेस्तर दीक्षा इख्तियार किइथी.

[ बयान दुसरीदफेकी दीक्षाका ]

१ शहर भावनगरसें रवाना होकर शामको गोघाबंदर पहुंचे, जो सातकोशके फासलेपर वाकेहै, दुसरे रोज वहांसे जहाजमें सवार होकर सुरत गये सुरतसें बजरीयेरैलके बंबई और बंबइसें भुसावल खंडवा हरदा जबलपुर इलाहाबाद गाजियाबाद मेरट अंबाला लुधिहाना होतेहुवे मुल्क पंजाबमें जालंधर टेशन उतरे, और वहांसे (१८) कोशके फासले जो होशियारपुर शहर है जहां महाराज श्रीआत्मारामजी आनंद विजयजी साहब और महाराज श्रीलक्ष्मीविजयजी साहब ठहरे हुवेथे, फाल्गुन सुदी तेरसके रोज शामको जाकर उनसे मिले और एक महिना उनकी खिदमतमें रहे, जब शहर मलेरकोटके श्रावकोंने गुरुजीको अरिजा भेजा आप हमारे शहरमें तशरीफ लावे और इनको चेला बनावे, गुरुजीके शाथ ये शहर मलेरकोट गये, वहांके श्रावकोंने वडी शान व सौकतसें इनकी दीक्षाका जलसा किया, संवत् (१९३६) गुजरातकी अपेक्षा संवत् (१९३५) वैशाख सुदी दशमी गुरुवारके रोज मिथुनलग्नके वख्त गुरुजीने इनको दीक्षा दिई और नाम शांतिविजयजी रखा यह दीक्षा इनकी दोबार समजीये.

[ धार्मिक कायदे जैनमुनियो. ]

२ किसी रुहको कतल नही करना, चीटीसे लेकर हाथी तक किसीको मारना नही, जूठ बोलना नही, किसी किसमकी चोरी करना नही, इश्कबाजी नही करना, किसी तरहका लालच नही रखना, रातके वख्त खान पान नही करना, शराब और गोस्तसे परहेज रखना किसी तरहका नशा नही करना मुल्कोमे फिरकर धर्मकी बाज करना, और एक जगह मुकीम होकर रहना नही. अगर कोइ अपनेको इजा पहुंचावे तो गुस्सेकी ऐवजमें रहम करना, शिवाय देव गुरु धर्मके दुसरेकी परवाह नही रखना, किसीको

गाली नही देना, मगर खिलाफ कायदे धर्मके कोइ अपने शाथ वरताव करताहो तो वतौर नसीहतके सख्त लब्ज कहना मना नही, किसीको तोहमत लगाना नही, धोखा नही देना, किसीकी चुगली नही खाना, ओर किसीके शाथ लडना झगडना नही, मगर धर्मकी बुराइ बोलनेवालोंके शाथ बहेस करते वख्त सख्त बात कहना पडे तो उसकी मना नही, हमेशां भिक्षा मांगकर सिकमपरवरीश करना ओर खानेपीनेके लिये जो कुछ मिलजाय उसपर शब्र करना, जवाहिरात या गहने नही पहनना ओर हमेशां सीर खुला रखना.

३ दुनिया छोडकर साधुपना इख्तियार करना सहज बात नही, जवानीमे ऐशआरामकों छोडना ओर धर्मपर पाबंद होना बहादूर शख्शोका काम है, उमदा पुशाक ओर उमदा खाना छोडकर साधुपनेका वेश पहनना ओर घर घर भिक्षा मागना अगर धर्म प्यारा न हो तो एसा कौन कर सकताहै ? महाराजकी तकदीर हम आला दर्जेकी समजते है, जिनोने जवानीमे घर छोडकर जंगलकी राह लिइ, महाराजकी सवाने उम्री एसी है अगर इसको वांचकर इसपर कोइ अमल करे तो निहायत फायदा उठासके, जब कोइ खुशनसीब ओर इकबाल मदशख्श दुनियामे दिखाइ देवे तो अदाज किया जाता है इनके एसे होनेका सबब पूर्व जन्मका संस्कार है, ओर यह बात मुमकीन है विना पूर्वजन्मके संस्कारके एसा होना नही बन सकता, दुनियामे एकसे एक आलादर्जेके शख्श होगये, इसमे कोइ शक नही, जन्म लेना उनहीका सफल है जिनके शरीरसे कुल जाति गाव नगर ओर मुल्कको फायदा पहुंचे, दुनिया मोहरूपी जंजीरसे जडीहुइहै, जहा आराम वहां तकलीफ लगी है, युवानी बुढापेसे घीरी है, आराम ओर तकलीफका दौरा सबपर होता रहताहै, दुनियामे आलादर्जेकी

चीज एक धर्म है, जिनकों धर्म प्यारा हो वही ऐशआराम छोडकर साधुपना इख्तियार करसके,—

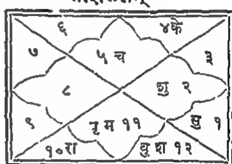
[ बीच बयान दीक्षालग्न और नजुम-]

४ संवत (१९३५) शाके (१८०१) वसंतऋतु वैशाख सुदी (१०) गुरुवार घटी ४२–५७–मघा नक्षत्र घटी १७–४७–ध्रुवयोग घटी ५०–३५–तैतल कर्ण एवं पंचांगशुद्धिः दिनमान घटी ३३–४ दिनार्द्ध–१५–३२–रात्रीमान २५–५६ उभयघटी ५० पूर्ण, सूर्योदयसे इष्टघटी १०–४० (लग्नघटी) २–२३–४–२० सूर्य घटी० १८–२७–५२ पर, महाराजकी दीक्षाका वख्त है,—

दीक्षालग्नम्




राशिलग्नम्




५ महाराजके दीक्षालग्नमे लग्नका मालिक बुध केन्द्रमें पडा है, इसलियें हमेशां सम्यग् दर्शन ज्ञान और चारित्रका फायदा हासिल होता रहेगा, और धर्मके काममे फतेहमंद रहेगें, आफतावका सितारा उंचस्थानका होकर ग्यारहमें खानेमें पडाहै, इसलिये किसी चीजकी कमी न रहेगी, अकल तेज होगी, और बडी बडी सभामें इज्जत पायगें, चमकता हुवा मंगलका सितारा नवमे खानेमे वेठाहै, चंद्रमा मित्रक्षेत्री होकर नवमे खानेको अपनी माकुल नजरसे देखताहै, बृहस्पति उसी नवमे खानेमें वेठाहै, और शुक्र उस नवमें खानेको एक नजरसे देखताहै, इसलिये महाराजका धर्मभुवन बहुत सुधरा हुवाहै, धर्मपर पुख्ता एतकात बना रहेगा, कइ ग्रथ धर्मके बारेमें बनायगें, और इनकी लिखीहुइ

इमारतको बहुत लोग पसंद करेंगें, बुध और शनिके सितारे केंद्रमे होनेसे और मंगल बृहस्पति त्रिकोणमे होनेकी वजहसे हमेशा अपने साधुपनेमे खुश रहेगें, बारहमे खानेमे शुक्रका सितारा अपने घरका मालिक होकर बेठाहे. इसलिये धर्मके कामोमे और मजहबी बहेसमें हमेशा फतेह पाते रहेंगे, और इनके आगे एक निशान बेतौर ध्वजा पताकाके चलेगा, जिस शख्शके लग्नका मालिक और भाग्यका मालिक लग्नके मालिकको पुरी तौरसे देख-ताहो उसको दीक्षा जरुर हासिलहो, महाराजके दीक्षा लग्नमे भाग्य भुवनका मालिक शनि और लग्नका मालिक बुध दोनो एकसाथ राज्यभुवनमे बेठेहे, इसलिये दीक्षायोग हुवा, और हमेशां इनका दिल धर्मपर पाबंद रहेगा, मगर मंगलका सितारा नवमे खानेमे पडनेसे इनको अपने गुरु भाइयोंसें नाइत्तफाकी बनी रहेगी, जिस शख्शके लग्नमे नवमे खानेका मालिक दशमे खानेमे पडा हो और दशमे खानेका मालिक नवमे खानेमे पडा हो उसकों हमेशां राज्ययोग बना रहे, महाराजके दीक्षालग्नमें देखलो! नवमें भुव-नका मालिक शनि दशमे पडा है, और दशमे भुवनका मालिक बृहस्पति नवमे पडा है, जिसकी बदौलत महाराज अपने साधुपनेमे बतौर राजऋषिके बने रहेगें, और बडे बडे खिताब पायगें, तीसरे भुवनमें चद्रमा मित्रक्षेत्री होकर पडा है, और धर्म-भुवनको पुरी तौरसें देखताहै, इसलिये दिनपर दिन इनके परा-क्रमकी तेजी रहेगी, और धर्मको तरक्की देते रहेगें, दुसरे भुवनमें केतु पडा है, इसलिये हमेशां सफर करते रहेगें एक जगह कयाम न करेगें, छठे भुवनका मालिक मंगल नवमे भुवनमे बेठा है, इस-लिये बीमारी और दुश्मनोसें मेहफुज यानी बचे रहेगें, मिथुन-लग्नमे दीक्षा लेनेवाला शख्श आलादर्जेका साधु महात्मा होताहै, महाराजका दीक्षालग्न मिथुन सिरसोदयी होनेसें जो काम अपने दिलमे करना चाहेगें उसकों पुरा करके छोडेगें, ख्वाह मुश्किल हो

या आसान, राहुका सितारा आठमे खानेमें पडाहै, इसलिये एक मरतबा महाराज बडे इकबालमंद होगें, बुधका सितारा तात्कालिक मैत्रीमें आफताबका दोस्त है, और आफताब बुधका अज हद दोस्त है, इसलिये महाराजकी उम्र लंबी होगी.

[ बयान हस्तरेखा और दिगर इशारे जिश्मके. ]

६ जिस शख्शकी अवाज पचम स्वरमेंहो, वह हरजगह इज्जत पाता रहे, महाराजकी स्वाभाविक अवाज पचम स्वरमे है, इसलिये हरशहर और मुल्कमें इज्जत पाते रहेंगे जो शख्श हिम्मत बहादूरहो अकसर बडानसीबेदार होताहै, और वह शिवाय देव गुरु धर्मके किसीकी परवाह नही रखता महाराजकी हिम्मत आलादर्जेकी है, जिस शख्शके हाथ इसकदर लंबेहो जब वो खडा हो तो गोडेतक बखूबी पहुंच जाय, वह आलादर्जेका इकबालमंद और आलिमकाजिल होताहै महाराजके हाथ गोडेतक पहुंचते है, जिस शख्शके निलाड उंचा और बडा है वह नसीबेदार होताहै. महाराजका निलाड उंचा और बडा है, जिस शख्शके पुरे बतीस दांतहो वह खुशनसीब होताहै, महाराजके पुरे बतीस दांत है, हरशख्शके हाथमे जो तीन रेखा होतीहै, उनमे एक उम्रकी दुसरी दौलतकी और तीसरी इज्जतकी अगर ये तीनो रेखा लंबी और पुरी हो, वह उम्रमे दौलतमे और इज्जतमें पुरा कामयाब होताहै, महाराजकी ये तीनों- रेखा बमूजब मजकुर तेहरीरके है जिस शख्शके हाथमें धजाका निशान हो वह हमेशां इज्जत पाता रहे, यही निशान महाराजके हाथमे भीहैं, जिस शख्शके हाथमें धनुष्यका निशान हो उसकी मुलाकातके लिये बहुत लोग ख्वाहेसमंद बने रहे, मगर उसकी मुलाकात होना दुसवार हो महाराजके दाहने हाथमें धनुष्यका निशान साफ मौजूद है, जिसके हाथमें पद्मका निशान हो वह अकलमद और शतावधान करनेवाला होताहै, महाराजके हाथमें पद्मका

निशान मौजूद है, जिसके हाथमे त्रिशूलका निशानहो–उसके आगे धर्मकी धजा पताका चले, महाराजके हाथमें यहभी निशान साफ है, जिसके दाहने हाथकी तिसरी अगुलीपर चक्र हो वह धर्मात्मा शख्श होताहै, महाराजके दाहने हाथकी तिसरी अगुलीपर हुवहु चक्रका निशान है, जिस शख्शके दोनो हाथोंकी अंगुली और अगुठोमे दाहनेमें दाहनी तर्फ झुकते और बायेमे बायी तर्फ झुकते हुवे शख हो वह शख्श धर्मात्मा और दुनियामे मशहूर होताहै, महाराजकी अगुलीयोमे शिवाय एक अगुलीके जो उपर बतला दिइ गइ है ऐसेही शंखके निशान है जिसके हाथकी ऊर्ध्वरेखा कलाइसें लेकर छोटी अगुलीतक अली गइहो वह हिम्मतबहादूर और मशहूर शख्श होताहै, महाराजके हाथमे वही रेखा मौजूद है जिसके दाहने हाथके अगुठेमें जवका निशान हो मशहूर और अकलमंद शख्श होताहै, महाराजके दोनों हाथोके अगुठोमे जवका निशान मौजूद है.

७ जिस शख्शकी उंचाइ अपनी अगुलीयोके नापसे (१०८) अगुल हो, वह शख्श खुशनसीब होताहै. महाराजके शरीरकी उचाइ (१०२) अगुलकी है, इसका मतलब जाननेवाला शख्श पेस्तर एकरसीसे अपने शरीरको खडेहोकर नापे और फिर वही शख्श अपने हाथकी अगुलीयोंके नीचके मुकामसे उस रसीको नापे, अगर (१०८) अगुलकी उचाइ हो तो जानना दोलतमंद खुश नसीब और राजाधिराज होगा, अगर (९५) अगुलतक उंचाइ हो तोभी उमदा है, और अगर (८२) अंगुलतक उचाइ हो तो मामुली दर्जेका आदमी जानना और इससें कम हो तो कमदर्जेका और कमनसीब जानना, मापनेकी रसीकों और शरीरकीउंचाइको मापते वख्त समजकर मापना चाहिये, विना समजे माप कियाजाय तो मिलेगा नही, जिस शख्शके दाहने या बायेपावके तलवोंमे नव अगुललंबी ऊर्ध्वरेखा होवे वह राजा या महात्मा होताहै, महाराजके

दोंनों पांवोके तलवोमे नवनव आंगुलकी ऊर्ध्वरेखा मौजूदहै, जिसके पांवके अगुठेके नीचे तलवेमें चक्रका निशान हो वह शख्श हमेशां मुल्कोंकी सफर करनेवालाहो, येभी निशान महाराजके दोनो पांवोंके तलवोमें मौजूद हैं, जिस शख्शकी नाभि उंडी हो वह हमेशां खानपानसें सुखी रहेगा अगर उंडी न हो और उसका कुछ हिस्सा बहार निकसाहुवा हो वह खानपानसे मोहताज रहेगा ख्वाह मर्द हो या औरत महाराजकी नाभि बहुत उंडी है, जिस शख्शके मस्तकपर तिल हो वह हमेशां इजत पाता रहे, महाराजके मस्तकपर तिलका निशान मौजूद है, जिस शख्शके दाहने हाथपर तिल हो वह अपने हाथकी कमाइ दौलत भोगे, और हमेशां फतेह मंद रहे, महाराजके दाहने हाथपर उमदा तिल है, जिस शख्शके दाहने हाथके पजेपर लहसन या तिल हो, वह शख्श बडा सखी होताहै; महाराजके दाहने हाथके पंजेपर लालरंगका लहसन मौजूद है, जिस शख्शके दोनो पावोमें किसी पांवपर तिल या लहसन हो वह हमेशा मुल्कोंकी सफर करता रहे, महाराजके बाये पावके उपरके कनारेपर लालरंगका लहसन मौजूदहै.–

(बयान हस्तरेखाका खतम हुवा.)

८ दीक्षा इख्तियारकिये बाद उसी रौज महाराज जब शहर मलेरकोटमें भीक्षाको गये उनकों क्षीरका आहार मिला, चंद रौज मलेरकोटमे ठहरे, पाक्षिकसूत्र जो हरेक जैनमुनिको मुहजबानी याद रखना चाहिये महाराजने सात रौजमें पुरा मुहजबानी याद कर लिया, और आठमे रौज सिद्धांतचंद्रिका व्याकरणग्रंथ पढना शुरु किया, व्याकरण काव्य कोश न्याय और अलंकार ये इल्म ग्रंथ है, बगेर मुहजबानी याद किये समजमे नही आसकते, महाराजने अवल व्याकरणग्रंथ कंठाग्र याद करना शुरु किया, और तमाम वख्त आपना इल्म पढनेमें बीताते थे, जेठ महिनेमें अपने

जीके शाथ मलेरकोटसे रवाना होकर लुधिहाना और जालधर
ते हुवे होशियारपुर तशरीफ लेगये, और संवत् (१९३६) की
रीश मुकाम मजकुर पर गुजारी, इस चौमासेमे शहर भावनगरसे
राजके चचासाहब मूलचंदजीके कइ खत आये.

[ महाराजके चचासाहबकेखत और उनका जवाब ]

९ भावनगरमे महाराजके चचासाहब मूलचंदजीके कइ खत
ये और उनमे लिखाथा, तुम बगेर कहे सुने यहांसे चलेगये और
धु होगये, हमको बडा रंज हुवा, वे दिन बहुत खुशीके जातेथे
तुमको हम अपने घरमे देखतेथे, होनबहारके आगे किसीका
नही चलता, हमारी अकलपर पर्दा पडगया हम तुमको
केले घर छोडकर चलेगये, जब हम शत्रुंजयतीर्थकी जियारत
र घर आये तो मालुम हुवा हमारे घरके बहु मूल्य रत्न हमारे
योके सितारे और दिल बहलानेके खिलोने तुम घर छोडकर
ले गये हो, तुमको ऐसा करना हर्गिज ! मुनासिब नहीथा
मारे चलेजानेका रंज हमारे दिलपर इस कदर जमगयाहै
सका बयान हम कुछ लिख नही सकते, हमको दुनिया सुनसान
ख पडतीहै, हमारादिल अजहद तकलीफ पाताहे, हमको उमीद
चंद रौजमे तुम घरका काम संभाललोगे, लेकिन ! हमारी
मीद खाखमे मिल गइ, आदमीके इरादे कभी पुरे नहीं होते,
स चीजको न चाहो-वह पास आतीहे, और जिस चीजकी
हना करो, वह दुर दुर चली जातीहे, असलमे ! इसवख्त तरह-
रहकी फिक्र हमारे दिलपर फैल गइहै, आरामके पीछे तकलीफ
र तकलीफके पीछे आराम सवार होता रहताहै, हमारे दिलकी
त दिलमे रहगइ, तुम दिनरात हमारी आखोके सामने फिरतेहो,
म आपने दिलको बहुतेरा समजातेहै, मगर चैन नही मिलता,
गर सोचा जायतो दुनिया छोडकर दिक्षा इख्तियार करना

हमारा फर्जथा, तुमारा नही, हम इस बात पर खयाल करतेहै, तुमसे दीक्षाका भार कैसे उठ सकेगा? हमको आपनी जींदगीमे इतना फिक्र कभी नही हुवा जैसा तुमारे चले जानेसे हुवाहै, रातकों नींद नही आती, खानपान अछा नही लगता, और धंदे रोजगारमे दिल नही जमता, हमक्या! अपने रिस्तेदार लोग सब कहतेहै, तुमकों ऐसा करना मुनासिब नहीथा.

१० महाराजने इन खतोको पढकर एक खत इसमजमूनका लिखा, बेंशक! मेरे चले जानेसें आपकों रज हुवा होगा, में आपको बगेर इत्तिला किये इसलिये चला आया, सायत! इत्तिला करने पर आप मुजे आने नही देते, आप बडेहै, मे छोटाहु, अब आप खुश होकर लिखे तेरी दीक्षा फतेहमदहो, उनोने महाराजके खतको पढकर अपने दिलको थांभ लिया, और समज लिया उनका दुनियवी कारोबारसे इतनाही बखरथा, जो कुछ तकदीरमे लिखाहै, हर्गिज! गलत नही होता, ऐसा सोंथकर जवाब लिखा हम अब और क्या कहे! जो कुछ हुवा अछाहै, दीक्षा लेना हमारा बख्तथा, मगर हमसे कुछ न बना, तुमारी दीक्षा फतेहमदहो, और तुमारी अछी गतिहो.—

११ शहर होशियारपुरके चौमासेमें महाराजने इल्म व्याकरण पढना शुरु किया, होशियारपुर एक छोटासा शहरहै, मगर रोनकदार और वाशिंदे यहांके दौलतमंदहै. जैनश्वेताबरकेघर करीब (५०) और एक बडा आलिशान जैनश्वेतांबर मंदिर यहांपर तामीरहै, महाराजके गुरुजी हमेशा शुभहके वख्त व्याख्यान धर्मशास्त्रका वाज करतेथे, व्याख्यान सभा अछी भरती थी, और महाराज हमेशां अपने गुरुजीकी व्याख्यान सभामे बेठकर व्याख्यान सुनतेथे, जो शख्श व्याख्यान भाषण या वक्तृता देनाचाहे पेस्तर दुसरोका व्याख्यानसुने चाहे कोइकितनाही कामील इल्महो तजरुबाहासिल करना उसकाभी फर्जहै महाराजको इल्म पढनेकी

ख्वाहेस हमेशां बनी रहतीथी, गुरुजीकी खिदमतमें मुताबिक अपनी ताकातके कमी नही करतेथे और काम क्रोध लोभ और दंभसें हमेशां परहेज रखतेथे, संवत् (१९३६) की सालका चौमासा शहर होशियारपुरमे खतम किया. बादबारीशके शहर होशियारपुरसे रवाना होकर महाराज शहरजालंधर तशरीफ लाये, जो होशियारपुरसे (१८) कोशके फासलेपर वाकेहै.—

१२ जिलेका सदर मुकाम जालंधर एक पुराना शहर है. पेस्तर सिकंदरकी चटाइके जालंधर कटोच राजपुतोकी राजधानी था, चीना मुसाफिर हयांक्सागने जब जालंधर शहरको देखाथा अपनी तवारिखमे लिखाहै उसवख्त जालंधर दो मीलके घेरेमें था जमाने हालमें यहापर अमलदारी अंग्रेज सरकारकी जारी है, जैनश्वेतांबरश्रावकोंकी आबादी ओर जैनश्वेतांबरमंदिर यहांपर बना हुवाहै. महाराजने यहापर चंदरोज कयाम किया और जालंधरसे रवाना होकर कस्बे निकोदर तशरीफ लेगये, जो करीब दशकोशके फासलेपर वाकेहै, कस्बे निकोदरका बाजार मामुली जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर करीब (२०) और एक जैनश्वेतांबरमंदिर यहांपर बना हुवाहै, महाराज चंदरोज यहापर ठहरे और आगे जीरागामको जानेके लिये रवाना हुवे. जो करीब (२०) कोशके फासलेपर वाकेहै, जीरागाम छोटा मामुली बाजार जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी और एक जैनश्वेतांबरमंदिर यहांपर बना हुवाहै, महाराजके गुरुजीने यहापर व्याख्यान सभामे जैनागम सूत्रकृतांग सटीक बाचा, महाराज व्याख्यान सभामे बेठकर हमेशां गुरुजीके मुखसें व्याख्यान सुनतेथे, और इल्म व्याकरण पढतेथे, एक महिना यहां ठहरे और फिर पटीगांव जानेकेलिये रवाना हुवे, पटीगाम छोटाहै, मगर जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी और एक जैनश्वेतांबरमंदिर यहापर अछा बना हुवाहै, महाराज यहां चंदरोज ठहरे ओर आगे शहर अमृतसर जानेकेलिये रवाना हुवे.

१३ अक्लीमें पंजाबमें अमृतसर एक बडा नामी ग्रामी शहर है, सन (१५७४) इस्वीमे सिख्खोंके गुरु रामदासजीने इसको आबाद किया, और एक अमृतसर नामका तालाव बनवाया, जिसकी वजहसे शहरका नाम अमृतसर कहलाया, सन (१८०९) इस्वीमें महाराज रणजितसिंहजीने किला गोविंदगड यहांपर तामीर करवाया, अफगान बलुचीस्तान बुखारावाले कश्मीरी और नयपाली वगेराके लोग यहांपर आबाद है, और तिजारतके लियेभी आते जातेहै, सिख्खोंका गुरुद्वारा जिसको दरबारसाहब बोलते है, बडे लंबे चौडे तालावके बीच बनाहुवा जिसमें सिख्खोंका धर्मपुस्तक ग्रंथसाहब रखा है, बडी अदब और पाकजगह है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर अमृतसरमें करीब (२५) और एक जैनश्वेतांबरमंदिर यहांपर तामीरहै, महाराज यहां एक महिना ठहरे, अमृतसरसे रवाना होकर कस्बा नारोवाल तशरीफ लेगये, एक जैनश्वेतांबरमंदिर और बीस पचीस जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर यहांपर आबाद है, नारोवालसे थोडी दूरपर कस्बा सनखतरा यहांभी एक जैनश्वेतांबरमंदिर और दश पनरां घर श्रावकोंके मौजूद है, दोनो कस्बेमें महाराज करीब पनरा पनरा रोज ठहरे और आगे शहर गुजरानवाल तशरीफ लेगये

१४ जिलेका सदर मुकाम गुजरानवाल एक आबाद शहर है, जैनश्वेतांबरश्रावकोंके घर करीब (७५) और एक जैनश्वेतांबर-मंदिर यहांपर तामीर है, महाराजने मौसिम गर्म यहां गुजारा, गुजरानवालसे रवाना होकर रामनगर तशरीफ लाये, रामनगर एक छोटा शहर है, एक शिखरबंद जैनश्वेतांबरमंदिर और बीस पचीस घर श्रावकोंके यहांपर आबाद है, यहां एक श्रावक गंडामल जगन्नाथजीके घर करीब चार अंगुल उंची पन्नेकी जिनप्रतिमा देखी जो बडी तेजस्वी बेश कीमती थी, महाराजने रामनगरमें पनरा रोज कयाम फरमाया, और फिर वहांसे लोटकर शहर

लाहोर तशरीफ लाये, मुल्क पजाबमे रावी नदीके बाये कनारे लाहोर एक बडा नायाब शहर है, चीना मुसाफिर हयान्तसागने अपने सफरनामेमे लिखा है. सन (९७७) इस्वीमे लाहोरके तख्तपर छत्रपति राजा जयपाल अमलदारी करताथा, मुसलमानोंकी सलतनतके वख्त बादशाह अकबरने लाहोरको तरक्की दिइ, बादशाह जहांगीर बडी मुद्दततक लाहोरमे रहा, सिख्खोंके महाराज रणजितसिंहजीने सन (१७९९) के अर्सेमें लाहोरके तख्तपर अमलदारी किट, जमाने हालमे अमलदारी अंग्रेज सरकारकी जारी है. लाहोरमें जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर करीब दश पनरा और एक जैनश्वेताम्बरमदिर मोजूद है, महाराज यहां आठ रोज ठहरे, लाहोरसे रवाना होकर वापिस अमृतसर आये, और सनत् (१९३७) की चातुर्मास यहांपर गुजारी, महोले रामगडीये कटरेमे शाह मोतीरामजी फगुमलजीके मकानमे ठहरे, इल्म व्याकरण सिद्धांतचंद्रिका जो गयेसाल पढना शुरु कियाथा, मुहजबानी याद करके खतम करलिया, और फिर अमरकोश पढना शुरु किया सूत्रदशवैकालिक और उत्तराध्ययन इस चौमासेमे बाचे, कभीकभी मजहबी बहेस करनेवालोंसे तकदीर और तदबीरके बारेमे बहेस होतीथी, महाराज फरमाते थे दुनियामे तकदीर बडीचीजहै, तदबीर खालि जाती है, तकदीर खाली नही जाती, इसलिये तकदीर कौवताली है, तकदीर उल्टी हो तो तदबीर चाहे जितनी करो कारआमद नही होती, अगर तकदीर अछी हो तो बगेर तदबीर किये चीज आनमीलती है. अगर तकदीरके फेरनेका कोइ उपाय होता तो नलराजा रामचद्रजी और पाचो पांडव सल्तनत छोडकर वनवासमे क्यों रहते ? सबुत हुवा तकदीर बडी कौवत रखती है, और उसके सामने तदबीर कोइ चीज नही, अगर तकदीर अछी है तो जगलमे पडेहुवेकोभी मगल है. और अगर तकदीर बुरी है तो राजसिंहासनपर बेठेहुवेकोभी तकलीफ है, किसी सोदागिरने

तिजारत किइ, माल खरीद किया, चदरौजमे उस चीनके भाव बढ-गये और फायदा हुवा, एक शख्श जमीनमें हल खेडता है, सलतनत पानेकी कोशिश नही करता मगर उसकी तकदीरका सितारा तेज हो तो वगेर कोशिश किये उसको सलतनत मिलजाती है, समजसको तो समजलो बात क्या हुई ? बात यही हुई तकदीर बडी चीज है, कोइ शख्श यह नही चाहता मुजे तकलीफ हो, मगर तकदीर बुरी हो तो अछेकेलिये कोशिश करते हुवे भी बुरा हो जाता है, सबुत हुवा मुकाबिले तकदीरके तदबीर कोइ चीज नही, फर्ज करो एक शख्शने अपने दुश्मनपर मुकदमा पेंशकिया, मगर तकदीरके सितारेने जोफ खायाथा, मुकदमा पेंश करनेवाला हारा, दुश्मनकी फतेह हुइ, सबबकी उसकी तकदीर बुलंद थी, मरते वख्त हरशख्श दवा लेकर बचनेकी कोशिश करता है मगर दवा कुछकार नही करती, आखीरकार मोंत करीब आनेपर वो मर जाता है, रिस्तेदारलोग रोरोकर बेठ रहते है, मगर कुछ नही करसकते, यह सब तकदीरहीका खेल है. हरशख्शकों लाजिम है, नेंकी करे और बदीसे परहेज रखे, अगर तकदीर अछी हो तो समुंदरमें डालीहुइ चीज फिर मिल जातीहै, इसलिये धर्मपुन्य करो जिससे आइंदे भला हो, मगर धर्मपुन्यभी जभी बनसकेगा, अगर पूर्वसंचित कर्म अछे हो.

१५ शहर अमृतसरमें इल्म व्याकरण पढनेवाले पंडित आलादर्जेके रहते है, कइ पंडितोसे महाराजकी मुलाकात हुई, संवत्(१९३७) की बारीश शहर अमृतसरमें खतम किइ, बाद बारीशके रवाना होकर शहर कसरूर तशरीफ लेगये कसरूर एक पुराना शहर है. महाराज यहां करीब एक महिना ठहरे, कइ महाशय धर्मचर्चाके लिये आया करतेथे, और मजहबी बहेस होतीथी, कसरुरसें रवाना होकर पटी जीरा वगेरा गांवोंकी सफर करते हुवे फिरोजपूर गये, यहांपर स्थानकवासी मजहबके श्रावक वास्तेमजहबी बहेसके आया करतेथे. और मूर्त्ति-पूजाके बारेमें बहेस होतीथी, मूर्त्ति पथरकी बनी हुइ है. कुछ बोलती

नही, फिर उसकों मानना क्या जरुरत! महाराजने जवाब दिया जितने पुस्तक हैं कागजके बने हुवे हैं, खुद कुछ बोलते नही, उनकोंभी मानना क्या जरुरत! पुस्तक ज्ञानकी मूर्त्ति है. देवमूर्त्ति देवकी स्थापना है. जैसे पुस्तक बांचनेसें ज्ञान और वैराग्य पैदा होता है, देवमूर्त्तिके देखनेसे देवके स्वरूपका ज्ञान होताहै, जिसने पुस्तककी इज्जत किइ उसने मूर्त्तिकी इज्जत किइ इसमे कोइ शक नही, इसलिये मूर्त्तिका मानना जाइज है, सूत्रदशवैकालिकमे बयान है, जिस मकानमें औरतकी मूर्त्ति चितरीहुइ हो, या कोइ तसवीर लटकाई हुई हो उसमें मुनिकों रहना मुनासिब नही, दिलमे बुरे इरादे पैदा होंगे खयाल करनेकी जगह है जैसे औरतकी मूर्त्ति बुरे इरादे होनेका सबब है. देवमूर्त्तिके देखनेसे दिलमे अछे इरादे क्यौ न होंगें? इसतरह बहेस हुइ, फिरोजपुरमे महाराजने चद्र रौंज कयाम किया. वहांसे रवाना होकर फरीदकोट तशरीफ लेगये, वहाभी चंदरौंज ठहरे, और वहांके वाशिंदोको तालीम धर्मकी दिइ. वहासे वापिस लोटकर जीरागांव आये, जीरेसे निकोदरके रास्ते शहर लुधिहाना पहुचे और वहांपर बारीश गुजारी.

[संवत् १९३८ का चौमासा शहर लुधिहाना मुल्क पंजाब]

१६ शतलज नदीसें (८) मील दखनकीतर्फ जिलेका सदर मुकाम लुधिहाना एक नामाब शहर है, सन (१४४०)के अर्सेमें लोदीखानदानके युसुफ और निहंगामके शाहजादोने इसको आबाद किया इसलिये इसका नाम लुधिहाना कहलाया, कश्मीरी काबुली और पठाण लोग यहा ज्यादा बसते हैं, एक जैनश्वेताम्बर-मंदिर और जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी यहांपर अछी है, महाराजने गये चौमासेमे जो अमरकोश पढना शुरु कियाथा, जिसके श्लोक करीब (१५००) है मुहजबानी यादकर लिया, फिर कुमारसंभव मेघदूत और काव्यदीपिका हिफ्ज याद करना शुरु किइ, और संस्कृत जबानमे बोलनेलगे, जैनमजहबके कइतरहके

बोलविचार महाराजने इस चौमासेमें वरजवान किये, और पद्द्रव्यकी चर्चामें कामील हुवे, शहर लुधिहानेका चौमासा खतमहुवा, बाद बारीशके लुधिहानेसे रवाना होकर मलेरकोट तशरीफ लाये, और वहापर एक महिना ठहरे, पेस्तर लिखचुकेहै, संवत् (१९२६) में महाराजने इसी मलेरकोटमे दीक्षा इख्तियार किइथी, मलेरकोट एक रौनकदार शहर है, एक जैनश्वेतांबरमंदिर और जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी यहापर अछी है, मलेरकोटसे रवाना होकर जीरागांव तशरीफ लेगये, और मौसिमें सर्द वहांपर गुजारा, इन दिनोंमे महाराजने वररुचिकोश मुंहजबानी यादकिया, जिरेसे रवाना होकर कइ गावोंकी सफर करते फिलोर फगवाडा और जालंधर होतेहुवे शहर होशियारपुर तशरीफ लाये, और संवत् (१९२९) की बारीश वहापर गुजारी, इस चौमासेमें महाराजने न्यायमुक्तावली ग्रंथ पढा. और उसका अनुमानखंड मुहजबानी यादकिया, इनदिनोंमें महाराज नयेनये काव्य बनाने लगे और संस्कृत इल्मके पुरे कामीलहुवे, बादबारीशके होशियारपुरसे रवाना होकर जालंधर और लुधिहानेके रास्ते शहर अंबाला तशरीफ लाये,—

१७ जिलेका सदर मुकाम अंबाला एक आबाद शहर है, तवारिखोंमे बयान है, इस्वीसनकी चौदहमी शताब्दीमे एक अंबाजी नामके महाशयने इसको आबाद किया, इसलिये इसका नाम अंबाला मशहूर हुवा, शहर और छावनीके बीच सरकारी इमारतें कचहरी और स्कुल वगेरा मकानात बनेहुवेहैं, एक जैनश्वेतांबरमंदिर और जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी यहापर मौजूद है, महाराज शहर अंबालेमें थोडे रोज ठहरे, और फिर वहासे रवाना होकर कुरुक्षेत्र सरहिंद तीतरवाडा बनोली होतेहुवे शहर देहली तशरीफ लाये, जमनानदीके पश्चिम कनारे देहली एक बडा गुलजार शहर है, पृथवीराज चौहानके वख्त इसकी रौनक बहुत थी, पेस्तर बहुत

अर्सेतक देहलीके तख्तपर क्षत्रिय राजे अमलदारी करते रहे, बाद मुसलमानोंकी अमलदारी शुरु हुइ, और कइबर्सोतक चली, सन (१५४०) इस्वीमे देहलीके तख्तपर बादशाह जहांगीर अमलदारी करता था, लालकीला जमना कनारे एक काबील देखनेकी जगह है, जमानेहालमे अमलदारी अंग्रेज सरकारकी जारी है, खानपान बोलचाल और पुशाक यहावालोंकी उमदा और बाशिंदे यहाके शोकीन है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर करीब (१००) और (३) जैनश्वेतांबरमंदिर यहापर बनेहुवेहै, बडा मदिर महोले नवघरेमे सुनहरी चिनकारी और शीशोका काम काबील देखनेके बना हुवाहै, महाराज शहर देहलीमें एक महिना ठहरे, देहलीसे रवानाहोकर शाहदरा गाजियाबाद मुरादनगर बेगमाबाद महीउद्दीन मेरट मोहानागार और गनेशपुरा होतेहुवे तीर्थहस्तिनापुरकी जियारतको गये.–

[ बयान तीर्थ हस्तिनापुर ]

१८ हस्तिनापुर एक पुराना जैनतीर्थ है, तीर्थंकर रिषभदेव महाराजने साधुपनेकी हालतमें अपने वार्षिकतपका पारना श्रेयांसकुमारके हाथसे एक घडे इक्षुरससे इसी हस्तिनापुरमे कियाथा, तीर्थंकर शांतिनाथ कुंथुनाथ और अरनाथ महाराजके च्यवनजन्मदीक्षा और केवलज्ञान ये चारचार कल्याणिक यहा हुवे, सुभूमचक्रवर्त्ती इसी हस्तिनापुरके तख्तपर हुवा, और सलतनत किइ, जमाने तीर्थंकर नेमनाथजीके कौरवपांडवोंका जंग इसी हस्तिनापुरके मेदानके हुवा, बडे बडे, खुशनसीब इकबालमंद आलीमफाजिल दलेर और जमामर्द यहापर पेदाहुवे, पेस्तर हस्तिनापुरकी आबादी बडी थी, आज बराये नाम रहगइ, तीनतीन चारचार कोशके घेरेमे बहुतसी नागपाती और जडीबुटीये खडी है, इसवख्त हस्तिनापुर एक विरानसा समजो, खास! हस्तिनापुरमे थोडेसे घर कुंवा बावडी पुराने खंडहेर एक बडा आलीशान जैनश्वेतांबरमंदिर और

जैनश्वेतांबरधर्मशाला मौजूद है, यात्री यहां कयाम करे और तीर्थकी जियारत करे, महाराजने इस तीर्थकी जियारत किइ, तीर्थंकर रिषभदेव महाराजके कदमोंकी छत्री जो मंदिरसे सवा मीलके फासले उत्तर तर्फ मौजूद है, वहां जाकर इबादत किइ, छत्रीपर बेठकर चारोंतर्फ नजरकरे तो शिवाय जंगलके दुसरी कोइ चीज नही दिखाइदेती, जमीन सोहावनी और दिलमें वीररस पैदाकरनेवाली देखोगे, महाराज छत्रीसें लोटकर वापिस धर्मशालामे आये, और तीनरौज ठहरकर मेरट गाजियाबाद आकर अलवर जानेके लिये रवाना हुवे, और बाद चंदरौजके अलवर पहुंचे, अलवर एक रौनकदार शहर है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी और जैनश्वेतांबरमंदिर यहां मौजूद है, महाराज शहर अलवरमें चंदरौज ठहरे और आगे जयपुर जानेके लिये रवाना हुवे, मालाखेडा राजगढ बसुवा बांदीकुइ डोसा जटवाडा बसइ कणोता और सांगानेर होतेहुवे जयपुर तशरीफ लाये.

१९ राजपुतानेमे जयपुर एक बडा गुलजार और अजनबी शहर है, हिंदमे बहुतसे शहर देखोगे मगर जयपुर आपनी कतावजहसे निरालाही है, जहोरी बाजार हवामहेल और रामगंज रौनकदार जगह है, सांगानेरी दरवजेके बहार रामनिवास बाग काबील देखनेके है जिसमे अजनबी चीजे रखीहुइ देखकर दिल खुश होगा, जयपुरमें जैनश्वेतांबर श्रावकोके घर करीब (२००) और बडे बडे पाच जैनश्वेतांबरमंदिर बने हुवेहै, जिनकी कारीगीरी शंगमर्मरका काम वेलबुटे और चित्रकारी देखकर दिलमे ताज्जुब होगा, जयपुरके बहार मोहनबाडी दादाबाडी घाट और टेशनपर अलग अलग जैनमंदिर बने हुवेहै, शहरसे तीन कोशके फासलेपर आमेर एक पुरानी राजधानी है, इसमे तीर्थंकर चंद्रप्रभुका मंदिर कावीलेदीद और सुनीद है, मूर्त्ति पुरानी और खूबसुरत देखकर दिल खुश होगा, जयपुरसें चार कोश दूर कस्बा सांगानेर जिसमे दो

जैनश्वेतांनरमंदिर और दादावाडी वनी हुइ है, - महाराज जयपुरमें एक महिनेतक ठहरे, श्रावकोंको तालीम धर्मकी दिइ जयपुरसे रवाना होकर महाराज शहर किसनगढकों तशरीफ लेगये, किसनगढ एक पुराना शहर है, जैनश्वेतांनर श्रावकोंकी आवादी पेस्तर ज्यादा थी, अब कम होगइ, जैनश्वेतांवरमंदिर (३) जिसमे चिंतामणि पार्श्वनाथजीका मंदिर निहायत उमदा और वडीलागतका वना-हुवा है, किसनगढसे रवाना होकर महाराज शहर अजमेरको गये.

२० अजमेर शहर पुराना है, पृथवीराज चौहानका तामीर करवाया हुवा किला अवत्तक मौजूद है, तारागढकी पश्चिम घाटी तर्फ पुराना अजमेर अवमी मशहूरहै, जहां चौहान राजाओंके महेलात वने हुवेथे, अजमेरमें जैनश्वेतानर श्रावकोंके घर करीन (१५०) और जैनश्वेतांवरमंदिर (३) महोले लाखन कोठरीमे बनेहुवे है, महाराज लाखन कोठरीमे चंदरोज ठहरे, अजमेरसे रवाना होकर पुष्करजीके रास्ते तीर्थ मेरटा फलोंदीकी जियारतकों गये, शहर मेरटेके नजदीक होनेसे इस तीर्थका नाम मेरटा फलौदी मशहूर हुवा, संवत् (११८१) के अर्सेमे यहांकी जमीनसे तीर्थंकर पार्श्वनाथजीकी मूर्त्ति निकसी थी, मंदिर तामीर करवाया और तीर्थ मशहूर हुवा, महाराजने इसकी जियारत किइ और दुसरे रौज शहर मेरटेकों तशरीफ लेगये, मेरटा एक पुराना शहर है, जैनश्वेतानर-श्रावकोंके घर करीव (१००) और (१४) जैनश्वेतावरमंदिर वने हुवे, महाराज यहा एक महिनेतक ठहरे, मेरटेसे रवाना होकर शहर नागोरको गये, जो (२०) कोशके फासलेपर वाके है, नागोरमे जैनश्वेतानर श्रावकोंके घर करीन (४००) और पांच जैनश्वेतांवरमदिर वने हुवे है, महाराज यहांभी एक महिना ठहरे, नागोरसे रवाना होकर जब शहर विकानेर जानेकेलिये रवाना हुवे, रास्तेमें एक नोखा नामके गांवमे रातकों सोते थे, आधीरातके

वख्त एक सर्पने आनकर महाराजके दाहने हाथके पंजेपर डंख मारा उसवख्त दो मुनिमहाराज औरभी शाथ थे, जो दीक्षामें और उम्रमें वडे थे, जब जहेरने ज्यादह जोर पकडा, महाराजकी नींद खुली और कहा, मेरे दाहने हाथके पंजेपर दर्द होता है, न मालुम क्या सबब है? जिस श्रावकके मकानमें महाराज ठहरेथे, वह और दोतीन श्रावक दुसरे वहां आये, और लालटेन लेकर इधर उधर देखने लगे, मालुम हुवा थोडी दूरपर एक बडा लंबा सांप एक बीलमें घुसरहा था, इससें साफ जाहिर हुवा महाराजकों सांपने काटा है, और दाहने हाथके पंजेकों देखा तो थोडासा खुन मालुम हुवा, महाराजकों यकीन होगया मेरे दाहने हाथके पंजेपर सर्पने डंख मारा है, खुद! सर्पके जहेरको उतारनेका मंत्र जानतेथे, पढना शुरु किया और कुछ दरकेबाद जहेर उतरा, पीछली रातकों थोडी नींद आइ. शुभह होते आगेकों रवाना हुवे, और देसनुक मीनासर वगेरा गांवोमें होतेहुवे शहर विकानेर पहुंचे, वहां पर गुरुजीसें मीले, और संवत् (१९४०) की वारीश विकानेरमें गुजारी, मुल्क मारवाडमें पथरीली जमीनपर वसा हुवा विकानेर एक गुलजार शहर है, महाराज विकारावजीने इसे आवाद किया इसलिये विकानेर कहलाया, तवारिखोमें लिखाहै सन (१४३९)के अर्सेमे महाराज विकारावजीका जन्म हुवा, बडे बडे दौलतमंद लोग इसमें आवाद है; जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर करीब (१०००) और कइ जैनश्वेतांबरमंदिर यहांपर बनेहुवे है, महाराजके गुरुजी शुभहके वख्त हमेशां व्याख्यान धर्मशास्त्रका देतेथे, सभा कसरतसें भरती थी, महाराज व्याख्यानसभामें वेठकर हमेशां व्याख्यान सुनतेथे और दुफेरके वख्त दुसरे मुनिमहाराजोंके शाथ अपने गुरुजीके मुखसें भगवतीसूत्रकी वाचना लेतेथे, इस चौमासेमें महाराजने नयप्रदीपग्रंथ मुहजवानी यादकिया, इसमें द्रव्यगुणपर्यायका बयान और नैगमसंग्रह व्यवहार रिजुसूत्र शब्द समभिरुढ और एवंभूत वगेरा सात नयोंकी हकीकत दर्ज है, स्याद्वादन्या-

यकी माहिती इसीसे मिलसकेगी, नयचक्र कर्मग्रंथ और क्षेत्रसमास हर जैनमुनिको पढना चाहिये, बाद वारीशके विकानेरसे रवाना होकर शहर जोधपुर तशरीफ लाये.—

२१ मारवाडकी देशी रियासतोंमें मशहूर राजधानी जोधपुर एक उमदा शहर है, सन (१४५९) इस्वीमे महाराज जोधरावजीने इसकों आवाद किया इसलिये जोधपुर नाम कहलाया, वडे वडे आलिशान मकान उमदा लालपथरोंके बनेहुवे और रौनकदार बाजार हैं, जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी कसरतसे और कइ जैन-श्वेतांवरमंदिर यहापर बेश किमती बनेहुवे हैं, महाराज जोधपुरमे करीब एक महिना ठहरे, और फिर वहांसे रवाना होकर लुनी गाम होते हुवे शहर पाली तशरीफ लाये; जोधपुर रियासतमे पाली एक पुराना शहर है, जैनश्वेतांवरश्रावकोंकी आवादी कसर-तसें और वडे वडे जैनश्वेतांवरमंदिर यहांपर तामीर है. जिनमे नवलखा पार्श्वनाथजीका मंदिर नामीग्रामी जैन मुनियोंकों ठहरनेके लिये कइ मकान बनेहुवे है, महाराजने पालीमे एक महिना कयाम किया, पालीसे रवाना होकर भासरी गंदोज होकर पंचतीर्थीकी जियारतकों गये.

## [ तवारिख पंचतीर्थी मुल्क मारवाड ]

२२ वरकाणा नाडोल नाडलाइ घाणेराव और रानकपुर ये मुल्क मारवाडी पंचतीर्थीके नाम हैं, रानीगावसें करीब देढकोशके फासलेपर वरकाणा एक छोटासा कस्वा है, यहापर एक वडा आलीशान जैन-श्वेतांवरमंदिर नजीकमें एक धर्मशाला वनी हुइ यात्रीलोग इसमे कयाम करतेहैं. महाराजने वरकाणा तीर्थकी जियारत किइ और आगे नाडोल तीर्थको जानेके लिये रवाना हुवे, जो करीब अढाई कोसके फासलेपर है, यहापर जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी और (६) जैनश्वेतावरमंदिर जिनमे तीर्थंकर पदमप्रभुका मंदिर निहायत पुराना और इसमें पदमप्रभुकी मूर्त्ति निहायत खूब सुरत राजा

संप्रतिकी तामीर करवाइ हुइ तख्तनशीन है; महाराजने इस तीर्थकी जियारत किइ और आगे नाडलाइ तीर्थके लिये रवाना हुवे. जो तीनकोशके फासलेपर वाके है, श्रावकोंके घर यहां करीब (१५०) और जैनश्वेतांवरमंदिर छोटे वडे (११) महाराजने नाडलाइ तीर्थमें जाकर जियारत किइ और दुसरे रौज वहांसे घाणेराव तीर्थको गये, घाणेराव तीर्थ पंचतीर्थीकी गिनतीमें चौथे दर्जेपर है. जैनश्वेतांवर श्रावकोंके घर करीव (४००) और दश जैनश्वेतांवरमंदिर वने हुवेहै, घाणेरावसे देढकोशके फासलेपर एक मंदिर जो मुछाला महावीरके नामसे मशहूर है. जंगलमें वतौर देव विमानके खडाहै, इन सवकी महाराजने जियारत किइ और घाणेरावसें रवाना होकर सादरीगांव गये जो करीव तीनकोशके फासलेपर मौजूद है. जैनश्वेतांवर श्रावकोंके घर करीव (४००) और छोटे वडे तीन जैनश्वेतांवरमंदिर यहांपर वने हुवेहै, सादरी गांवमे महाराज दो रौज ठहरे, तीसरे रौज रानकपुर तीर्थ जानेके लिये रवाना हुवे. जो सादरीगांवसे तीन कोश दूर और पंचतीर्थीकी गिनतीमे पांचमें नंवरपर है. रानकपुर पेस्तर वडा था, संवत् (१५००)के अर्सेमें यहां जैनश्वेतांवर श्रावकोंके घर करीव (३०००)थे. इस वख्त रानकपुर वरायेनाम रहगया न इस वख्त कोई जैनश्वेतांवरश्रावकका घर और न आवादी है, सिर्फ वडा आलिशान जैनश्वेतावरमंदिर धर्मशाला वाग और पुराने कोटके निशानात वाकी है. मंदिर क्या है एक देवविमान खडाहै, इसकी कारीगिरी और खूव सुरती देखकर ताज्जुव होगा, जव धरणाशाह शेठने इसकों तामीर करवाया इसकी खूव सुरती देखते तो मालुम होता, खुशनसीवोंने क्या क्या उमदा काम करवतलायेहै, जिसकी तारीफ लिखना कलमसें वहार है वावन जिनालयका उमदा मंदिर आलादर्जेकी कारीगिरी चारों तर्फसें वरावर तीनतीन मजिल उंचा और चारोंतर्फ चार दरवाजे मानींद समवसरणके देखलो.

तारीफ करो धरणाशाह शेठकी जिनोंने ननानवे लाख रुपये सर्फ करके यह त्रैलोक्यदीपकमंदिर तामीर करवाया. जिनके बडे भाग्य हो. ऐसे तीर्थकी जियारत करे, महाराजने इस तीर्थकी जियारत किइ, और इसीके आगे भानपुरा होकर मेवाडतर्फ जानेका जो रास्ता शुरु है, उस पहाडकी घाटीकों पार करके भानपुरा सायरा और मोटेगांवके रास्ते शहर उदयपुर तशरीफ लेगये.–

[ बयान शहर उदयपुर और तीर्थकेशरीयाजी. ]

२३ मुल्क मेवाडका शिरोताज उदयपुर एक नामीग्रामी शहर है, उदयपुरके महाराज राणासाहब चितोड सलतनतके वंशानुयायी है. उनमेसें महाराज प्रतापसिंहजीने अपने वालिद उदयसिंहजीके नामसें मुल्क मेवाडमें आनकर उदयपुर बसाया, जैनश्वेतांबरश्रावकोंकी आबादी कसरतसे और छोटेबडे (३५) जैनश्वेतांबरमंदिर यहांपर बने हुवेहै, महाराज गोडीजीके मंदिरपास एक मकानमें ठहरे, जिनमंदिरोंकी जियारत किइ, और चैत महिनेमे तीर्थकेशरीयाजीकों जानेके लिये रवाना हुवे, जो खुश्की रास्ते (१८) कोशके फासलेपर वाकेहै, तीनरोजमे तीर्थकेशरीयाजी पहुंचे पहाडोंके घेरेमें पाचसो घरोंकी आबादीका एक कस्बा धुलेवा नामसे आबाद है, एक हजार वर्सके पेस्तर मूर्त्ति केशरीयाजीकी धुलेवागावके बहार जमीनसें निकलीथी. मूर्त्ति ततकाल परचा देनेवाली होनेसें यात्रीलोग बहुत आनेलगे, दिनोदिन तरक्की बढी. खजाना तर हुवा, बावन जिनालयका बडा संगीन मंदिर बनाया गया और बडीशान व सौकतसें मूर्त्तिकी प्रतिष्ठा किइगइ, इस मूर्त्तिपर यात्रीलोग केशर ज्यादा चढाते है, इसलिये तीर्थका नाम केशरीयाजी मशहूर हुवा, तवारिख उदयपुरकी पढनेसें मालुम होताहै, महाराणा साहब मोकलसिंहजीके वरतमे यह मंदिर बना, मंदिरकी दिवारमें दो शिलालेख मौजूद है, महा-

जो राजासंप्रतिकी बनाइ हुइ है, प्रतिष्ठा इस मंदिरकी संवत् (१२८८) में किइगइ, परकम्माके जिनालयोकी दिवारपर लिखाहै आसराजसुत वस्तुपाल तेजपालने यह मंदिर तामीर करवाया, इसकी तामीरातमे एक करोड असीलाख रुपये सर्फहुवे जिसजगह मंदिर बना है उसकी भरती करनेमें छपन लाख रुपये लगेथे, उसवक्त जमानेमें इतना सर्फहुवा न मालुम आज दश गुने ज्यादा रुपये लगे और फिरभी ऐसा काम बनसके या नही ?

२६ अचलगढगांव ओरियागांवके आगे पहाडकी दामनमें बसा हुवा जब तराइमें पहुचोगे राजा कुमारपालका तामीर करवाया हुवा मंदिर दाहनी तर्फ नजर आयगा, राजाओंके तामीर करवाये हुवे मंदिरोंमें गजथर जरुर होताहै, इस मंदिरकी दिवारमें गजथर लगा हुवाहै, दिवानके तामीर करवाये हुवे मंदिरमें अश्वथर और शेठ साहुकारके तामीर करवाये मंदिरमें नरथर होना जरुरी है, अचलगढके पहाडकी चोटीपर बुलंद शिखरबंद मानींद स्वर्गविमानके एक बडा मंदिर बनाहुवा देखोगे, इसमें मूलनायक तीर्थंकर रिषभ देवभगवानकी मूर्त्ति करीब (४) हाथ बडी सबधातकी बनीहुइ तख्त नशीन है, और इसपर लेख है यह मूर्त्ति संवत् (१५६६) मे बनाइ गइ, शिवायइसके (१३) मूर्त्ति औरभी सब धातमय मौजूद है, कुल चौदह मूर्त्तिये वजनमे (१४४४) मणकी शुमार किइ जाती है, इन सबमें सोना ज्यादा और तांबा पीतल वगेरा दिगर धातु कम है, महाराजने आबु पहाडपर जाकर तमाम जैनश्वेतांबर-मंदिरोंकी जियारत किइ, और वापिस उसी रास्ते अनादरा गांव आये, और अनादरेसें शहर पालनपुर आनेके लिये रवाना हुवे, पालनपुर पहुंचनेसें मुल्क गुजरातकी सरहद शुरु हुइ समजो.—

२७ पालनपुर एक बडा आबाद शहर है, जैनश्वेतांबरश्रावकोंकी आबादी कसरतसे और बडे बडे जैनश्वेतांबरमंदिर यहापर बने हुवे है, महाराज शहर पालनपुरमें चंदरोज ठहरे, पालन;

पुरसे रवाना होकर उझा सिद्धपुर महेसाना और तीर्थ भोयनीकी जियारत करते हुवे, शहर अहमदाबाद पहुचे, उंझेमे सिद्धपुरमे और महेसानेमे जैनश्वेतांबरश्रावकोंकी आवादी और जैनश्वेतावर-मदिर बने हुवे है, मुल्क गुजरातका शिरोताज साबरमतीके बाये कनारेपर बसा हुवा अहमदावाद एक बडा गुलजार शहर है. जैनश्वेतांबरमुनियोंकों ठहरनेके लिये कइ मकान यहांपर बने हुवे है, कइ जैनपुस्तकालय विद्याशाला और पाठशाला यहा मौ-जूद है, कइ बडे बडे आलीशान बुलद शिखरबंद बेशकिमती जैनश्वेतावरमंदिर यहापर बने हुवे और जैनश्वेतांबरश्रावकोंकी आबादी कसरतसें है, अहमदाबाद पहुचकर महाराज महोले रतनपोलमे ठहरे, कइ जैनमुनिजनोंसें मुलाकात हुइ योगवहन करके बडी दीक्षा इख्तियार किइ और संवत् (१९४१) की बारीश यहापर गुजारी, वैयाकरणभूषण और कुवलयानंदग्रंथ इस चौमासेमें मुहजबानी याद किये, कादबरी विक्रमोर्वशी और शाकुंतल नाटक बाचा, और हरेक बातपर शास्त्रार्थ करनेकी ताकात हासिल हुइ, बाद बारीशके शहर अहमदाबादसे रवाना होकर कोंठ–धधुका–उमराला–वावडी–चमाडडी और मढडा–वगेरा गावोंके रास्ते तीर्थ शत्रुजयकी जियारतको गये,—

[ तवारिख तीर्थ शत्रुजय. ]

२८ तीर्थ शत्रुंजयकी तराइमें पालिताना एक छोटासा मगर रौनकदार शहर है, और आये गये यात्रीयोंसे हरवख्त गुलजार बना रहता है, बडी बडी धर्मशाला बनी हुइ यात्री दिलचाहे वहा कयाम करे, महाराज शहर पालितानेमे पहुंचकर शेठ हठीभाइकी धर्मशालामें ठहरे, और दुसरे रौज पहाडपर तीर्थ शत्रुंजयकी जियारतकों गये, पहाड शत्रुंजय सुमुंदरके पानीसे (१९८०) फुट उंचा और उसपर चढनेके लिये पथरोंकी सीढिये बनी हुइ है, जो साहब पावपेंदल जाना चाहे शौखसे जा, डोलीमे बेठकर जाना

चाहे उनके लिये डोलीभी तयार मिल सकती है, पहाडपर तरहत रहकी वनास्पति और जडी बुटीये खडी है, पहाडका चढाव तीन कोशका मगर जानेवाले आसानीसें जासकते है, रास्तेमें इच्छाकुंड कुमारपालकुंड छालाकुंड और भूषणकुंड वगेरा पानीके भरे हुवे होज आते है, यात्री अगर जल पीना चाहे तो पीइ सकते हैं, मोर तोते मेंना चीडीया वगेरा परींदे यहां दरख्तोंपर कलोले करते रहते हैं, पहाडका चढाव खतम करके जब रामपोल-दरवजेके करीब पहुंचोगे विमलवशीटोंकपर जानेका रास्ता मिलेगा, रामपोलके आगे वाघणपोल तीर्थंकर शांतिनाथजीका मंदिर नेमनाथजीकी चवरी जगतशेठका बनवाया हुवा मंदिर राजा कुमारपालका तामीर करवा हुवा मंदिर-सुरजकुंडका रास्ता और हाथीपोलका बडा आलीशान दरवजा मिलेगा, इसकों पार करके आगे बहुत बडी सीढियें चढना और तीर्थंकर रिषभदेव भगवानके मंदिरकों जाना चाहिये, मंदिर क्या हैं ? गोया! शत्रुंजयपहाडका एक जवाहिरात है, तीर्थंकर रिषभदेव महाराज इस पहाडपर पूर्वननानवे दफे तशरीफ लाये, इसलिये ननाणुं यात्रा करनेका रवाज जैनमजहबमे शुरु हुवा है, भरतचक्र-वर्त्तीके बनायेहुवे मंदिर रहेनही, वैसे तकदीरवाले मनुष्य नही रहे, न वैसी दोलत रही जैसा जमाना है, वैसा धर्म और कर्म बाकी हैं, इसवख्त यहापर जो मंदिर तीर्थंकर रिषभ देव-जीका मौजूद है शेठ करमाशाहरका तामीर करवाया हुवा जिसकी प्रतिष्ठा संवत् (१५८७) में हुइथी, करमाशाह शेठ जैसे खुशनसीब और मुबारिक सितारे दुसरे न होगें, जिनोंने ऐसे अजायब काम किये, कलमकी ताकात नही लिख सके, जबानकी हेसीयत नही तकरीर करसके, दुनियामें एकसें एक नकासी और शिल्पकारी है, मगर उस्तादोंने यहां आनकर उस्तादी खतम किइ, बडे बडे कारीगर लोग इस मंदिरका नक्शा उतारकर

लेजाते हैं, मंदिरके वहार वडा आलीशान चौक—शंगेमर्मर फर्स—और—सेंकडों मंदिरोंका घेराव दिलको मोहे लेता है, मंदिरोंके शिखर सोनेके कलश धजा पताका और झलाझल रौशनी देखकर आदमीकी नजर चकराजाती है,—

२९ शत्रुंजय तीर्थका यह एक मूल मंदिर समजो, और इसमें तीर्थंकर रिषभदेव भगवानकी वडी आलीशान मूर्त्ति काबीले दीद और दिदारके वनी हुइ गोया! खास तीर्थंकर रिषभदेव महाराज यहां आनकर,तख्तनशीन हुवे है, इस मूर्त्तिकी तारीफ कहातक करे, जिसकी सानी दुसरी दुनियामें न होगी, उंचाइमे छह हाथ बडी आंखे स्फटिकरत्नकी और लालाटमे हीरा लगाहुवा दर्शन करके दिल खुश होगा, इस मंदिरकी पिछाडी जहा एक वडा रायनीका दरख्त खडा है, उसके नीचे तीर्थंकर रिषभदेव महाराजके चरन जायेनशीन है, अंगुठे ओर अगुलीयोंके उपर सोनेके पत्ते जडेहुवे दर्शन करके दिल तर—वा—ताजा होगा, विमलवशी-टोंकके दर्शन करके दुसरी टोंककों जाना जो मोतीशाह शेठकी तामीर करवाइ हुइ है, तीसरी टोंकवाला भाइ शेठकी चौथी टोंक प्रेमचंद मोदीकी पांचमी टोंक शेठ हेमाभाइकी और छठी टोंक उजमनाइकी तामीर कर वाइ हुइ है, जो शेठ हेमाभाइकी हकीकी वहेन थी, सातमी टोंक साकरचंद प्रेमचंदकी, आठमी टोंक छिपावसीकी और नवमी टोंक चौमुखजीकी यह टोंक अह-मदावादवाले सदा सोमजीने सवत् (१६७५) मे वडी दौलत सर्फ करके तामीर करवाइ है, तीर्थ शत्रुंजय पहाडपर सबसे पुराना मदिर राजा संप्रतिका वनाया हुवा जो इसी नवमी टोंकके पास खडा है, यही समजो,—

३० तीन कोशके घेरेमे नवटोंक और छोटेवडे तीन हजार जैन-मंदिर इस पहाडपर कायम और वरपाहै, इन मंदिरोंकी और टों-कोंकी चारो तर्फ एक दिवार मानींद किलेके वनी हुईहै. नवटोंकोंके

वडे वडे अठारा दरवजे खीडकीये और जाने आनेके रास्ते साफ और पाक बने हुवेहै, हरटोकके रास्ते रातकों बंद करदिये जातेहैं, शत्रुंजयपहाड जैनमंदिरोंका एक नायाब शहर है, इतने इकट्ठे मंदिर दुसरी जगह कही नही देखोगे, मंदिरोंके शिखर धजाओंका फरराना घंटोकी झनझनाट दिलकों चकित करदेती है. वडीवडी मूर्त्तियोंके मस्तकपर हीरे कंधे हाथ और घुटनोपर सोनेके पते लगेहुवे निहायत खूबसुरत देखोगें एक पहाडपर इतने जैनमंदिरोंका जमाव हफते अकलीममें कहीं नही पाओगे, राजासप्रति राजाकुमारपाल और दिवान वस्तुपाल तेजपाल जैनश्वेतांबर श्रावक थे, जिनोंने इस तीर्थपर जैनमंदिर बनवाये और दौलत सर्फ किइ. हकुमत पाकर धर्म करना ऐसे धर्मपावद शख्शोंका काम है. शत्रुंजयपहाडके जैनमंदिरोंकी कारीगीरी हरजगह सफाइ खूबसुरती तरहतरहकी कता वजाके बनेहुवे शिखर गुंवज और पानीके होज देखकर आंखे तर होजातीहैं. वडेवडे मंदिरोंके शिखरपर चढकर देखो तो चारोतर्फ मानींद स्वर्गविमानके नजर आता है, महाराजने शत्रुंजय तीर्थके कुछ मंदिरोंकी जियारत किइ. और शामकों वापिस शहर पालितानेमे आये, वडेवडे गुनहगार और पापी मनुष्य इस तीर्थकी जियारत करके पाकहुवे है, जिनके वडे भाग्य हो इस तीर्थकी-जियारत करे महाराज शहर पालितानेमें पनरां रोज ठहरे. और फिर वहांसे रवाना होकर शिहोरकों तशरीफ लेगये, शिहोर एक अछा आबाद शहर है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी कसरतसें. और एक वडा जैनश्वेतांबरमंदिर वीच बाजारके बनाहुवा यात्री इसकी जियारतको आते है, महाराज शिहोरमें चंदरोज ठहरे और फिर वहासे रवाना होकर बरतेज गांव होते हुवे शहर भावनगर तशरीफ लेगये, वरतेज एक छोटासा गांव है, मगर यहा एक निहायत उमदा जैनश्वेतांबरमंदिर बना हुवाहै.—

## [ बयान शहर भावनगर. ]

२१ जिले काठियावाडके पूर्व कनारे समुंदरके तटपर भावनगर एक उमदा शहर है, सन (१७२३) इसीमे महाराज भावसिंहजीने इसकों आबाद किया. इसलिये इसका नाम भावनगर कहलाया. बडेबडे किमती जैनश्वेतांबरमंदिर जैनमुनियोंको ठहरनेकेलिये कइ मकान और जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी कसरतसे हैं, महाराज दुनियादारी हालतमे इसी भावनगर शहरके बाशिंदे थे, लडकपनमें यहांही परवरीश हुवे. ज्ञाती ओशवाल और जैनश्वेतांबर मजहब अपना कुलधर्म था, जब शहर भावनगरमें महाराज तशरीफ लाये कइ रिस्तेदार लोगवास्ते मुलाकातकों आये, और कहनेलगे आपने इस दुनियामे नेंकनामी हासिल किइ और आइंदे परलोकका रास्ता साफकिया, एक रोज महाराज जब अपने चचासाहबके घर भिक्षाकों गये. महाराजकी चाचीने कहा जिस रोजसे आपने दीक्षा इख्तियार किइ, छह महिनेके बाद तुमारे चाचेका इंतकाल होगया, कोइ दिन ऐसा नही जाताथा उनोने तुमको याद न कियेहो तुमको ऐसा करना मुनासिब नहीथा, बगेर कहे सुने चलेगये और साधु होगये, घरमें कोइ आदमी नही, जब तुमारी याद आतीहै, बिल्कुल रंजीदा होजाती हुं, महाराजने उनकों धीरज दीइ, और कहा दुनियामे जीव अकेलाही आता और जाता है कोइ किसीका साथी नही, दुनियामें सारवस्तु एक धर्म है, तुम खुद ? समजदार हो गम्र करो, और तीर्थंकर देवोंकी इबादत करो जिससे आइंदे भला हो. ऐसा कहकर भिक्षालेके अपने मकानको आये. जहा ठहरे थे, एक रोज महाराजकी चाचीने कहा अगर तुम व्याख्यान धर्मशास्त्रका बांचना सीखे हो तो हमकों सुनाओ, दुसरे रोज महाराजने व्याख्यानसभामे बेठकर व्याख्यान धर्मशास्त्रका सुनाया लोग खुश हुवे, और कहने लगे दीक्षा लेना ऐसेही शख्शोका काम हैं, जो धर्मशास्त्रकों पढकर आम लोगोंकों धर्मका फायदा पहुंचावे,

योंकी भूमि भरुअछ एक निहायत पुरानी नगरी है, जैनशास्त्रोंमें भरुअछका दुसरा नाम अश्वावबोध तीर्थ और तीसरा नाम शकुनिकाविहार लिखा है, सन (६०) इस्वीसें (२१०) इस्वीतक शहर भरुअछमें जैनराजोका राज्य था, चीना मुसाफिर ह्वांक्त साग सन (६२८) से सन (६४५) तक हिंदमें रहा, उसने अपने सफरनामेमे लिखा है, मेने भरुअछ शहरकों देखा, उस वख्त बौधोंकीभी आवादी यहां थी, और कइ बौधमंदिरभी यहा थे, सन (७४६) इस्वीसे सन (१२९७) इस्वीतक अणहिल्लपुर पटनके राजपुतराजोंके तावेमें रहा, बाद मुसल्मानी अमलदारीके वख्त उनकी अमलदारीभी यहा रही, जमाने हालमें अमलदारी अंग्रेज सरकारकी यहांपर जारी हैं, जैनोंकी आवादी इस वख्त यहां अछी और महोले श्रीमालीमें तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीका उमदा मंदिर यहापर मौजूद है, महाराजने इस तीर्थकी जियारत किइ, और करीव एक महिना यहा ठहरे, भरुअछसे रवाना होकर अंकलेश्वर वगेरा गांवोंमें होते हुवे सुरत तशरीफ लेगये,—

३२ तापीनदीके बांये कनारे समुंदरसें (१०) मील पूरव जिलेका सदर मुकाम सुरत एक गुलजार शहर है, वडे वडे दौलतमंद लोग यहां वसते है, जैनश्वेतांवरश्रावकोंकी आवादी कसरतसें और वडे वडे आलीशान वेशकीमती कइ जैनश्वेतांवरमंदिर यहांपर तामीर है, चौमासेका वख्त करीव आगया था, सवत् (१९४२) की वारीश महाराजने यहापर गुजारी, आचारांगसूत्र अनुयोगद्वार और ज्ञातासूत्र यहां वाचे, तत्वार्थसूत्र और प्रमाणनयतत्वलोकालंकार, हिफ्ज याद किये, जैन तत्वज्ञानकों जाननेके लिये ये दो ग्रंथ निहायत उमदा है, जो शख्श इनकों हिफ्ज याद करे और इनके माइनेकों अछीतरह समजे जैन तत्वज्ञानमे होशियार होजायगा, एक रोज कस्बे रांदेरके जैनश्वेतांवरमंदिरोकी जियारतकों गये, जो तापीनदीके सामने कनारे अछा आबाद है,

चौमासा खतम करके सुरतसे रवाना हुवे, और भरुअछके रास्ते शहर वडोदा तशरीफ लाये, मुल्क गुजरातके सीरेपर वडोदा एक नायाब शहर है, बडे बडे शरीफोंके मकान विद्या और इल्मकी तरक्की जैनश्वेतांबरश्रावकोंकी आबादी कसरतसे और बडेबडे जैनश्वेतांबरमंदिर यहांपर बनेहुवे है, महाराज यहां घडियालीपोलमे करीब एक महिना ठहरे. वडोदेसें रवाना होकर छाणी नडियाद वगेराकी सफर करतेहुवे खेडागाव तशरीफ लेगये, खेडेमें श्रावकोंकी आबादी अच्छी और जैनमंदिर बनेहुवे है, महाराज यहां करीब (१५) रोज मुकीम रहे, खेडेसे तीन कोसके फासलेपर मातरगांव जिसमे तीर्थंकर रिषभदेव भगवानका बडा आलिशान मंदिर तामीर है, उसकी जियारत किइ, और वहांसें अहमदाबाद वढवाण लीमडी बोटाद और बल्लभी नगरीकी दोबारा सफर करते हुवे बारीशके मोकेपर तीर्थ शत्रुंजयकी तराइमें पालितानेकों आये और संवत् (१९४३)की बारीश वहापर गुजारी, इस चौमासेमे महाराज व आर्जा खासी मुब्तीला रहे, करीब तीन महिने कोइ इल्म नही पढसके, बीमारीकी हालतमे महाराज पंचपरमेष्ठीका ध्यान करते थे, परहेजकारी चीजोंसें परहेज रखते थे, और धर्मशास्त्र वाचते रहते थे, बीमारी असाध्य नही थी आराम हुवा, इन दिनोंमे महाराजकी हकीकी बहेन मांजे अमरेलीसे शहर पालितानेको आइ, और महाराजसे मिली कहने लगी, आपकी तकदीरमे दीक्षा लिखी थी, खेर! साधु होगये मुजकों आपके दर्शन होगये यही गनीमत है, चंदरोज शहर पालितानेमे ठहरी, और, महाराजके मुखसें धर्मकी हिकायते सुनतीरही, कार्त्तिकसुदी पुनमके रोज पहाड शत्रुंजयपर जाकर तीर्थकी जियारत किइ, और पुराने मंदिर मूर्त्ति शिलालेखोंकी नकल अपनी नोंटबुकमें दर्जकिइ, बाद बारीशके पालितानेसें रवाना होकर महुवा जिसको संस्कृत जबानमें मधुपुर बोलते है, यहा तीर्थंकर

महावीरस्वामीका बडा मंदिर है, जियारत किइ, महुवासे रवाना होकर डाठागांव होतेहुवे तालध्वजतीर्थकों गये, यहां एक छोटेसे पहाडपर तीर्थंकर सुमतीनाथजीकी, टोंक बनी हुइ है, उसकी जियारत किइ, और फिर दोबारा शहर भावनगरकों तशरीफ लाये, करीब देढमहिना वहां ठहरे, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे, और आयेगये शख्शोंके शाथ धर्मके बारेमें बहेस मुबासा करते रहते थे, भावनगरसें रवाना होकर वल्लभी बोटाद लींमडी वढवाण ध्रांगधरा वगेरा शहरोंकी सफर करते हुवे शहर अणहिल्लपुरपटनको गये, राजा कुमारपालकी सलतनतका खास मुकाम अणहिल्लपुरपाटन यही शहर है, वडेवडे आलीशान और बुलंद शिखरबंद कइ जैनश्वेतांबरमंदिर और श्रावकोंकी आबादी यहां कसरतसें है. राजा कुमारपालके वख्तका एक मशहूर जैन-पुस्तकालय जिसमे ताडपत्रपर लिखे हुवे. पुस्तक मौजूद है, महाराजने देखे. जैनमंदिरोंकी जियारत किइ, एक महिना यहां कयाम किया. और फिर वहांसें रवाना होकर रियासत रांधनपुरकों तशरीफ लाये, संवत् (१९४४)की बारीश वहांपर गुजारी, रांधनपुर एक बडा आबाद शहर है. जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी और वडेवडे जैनश्वेतांबरमंदिर यहां तामीर है, स्याद्वादमंजरी जैन-मजहबका एक तर्कग्रंथ है, महाराजने यहां पढा, और उसका मूलपाठ हिफ्जयाद किया, पंचाशकसूत्र सटीक बांचा, इन दिनोमें महाराज बौधमजहबके पुस्तकोंका मुलाहजा करतेरहे, कइ लोग कहते है, जैन और बौधमजहब एक है, कइ कहते है, एक दुसरेकी शाखा है, मगर जैन बौद्ध किसी सुरत एक नही, बल्कि ? अलग अलग मजहब है और दोनोंके उसूलभी अलगअलग है, किताब आर्यदेशदर्पण महाराजने यहां बनाइ, जो उसीसालमे छपकर जाहिर हो चुकीथी, इसमे आर्य और अनार्य देशोंका खुलासा मुताबिकजैनशास्त्रके दिखलाया है, रांधनपुरका चौमासा खतम हुवा, वहांसे रवाना

होकर तीर्थशखेश्वरकी जियारतकों गये, जो करीब (१८) कोशके फासलेपर वाकेंहै. प्रतिवासुदेव जरासिंधु और कृश्नवासुदेवका जंग इसी जगह हुवाथा, शखेश्वरगाव वहुत वडा नही, लेकिन ? तीर्थकी वजहसे मुल्कोमे मशहूर हुवा, यहा तीर्थकर पार्श्वनाथ महाराजका वडा आलीशान जैनश्वेतांबरमंदिर बनाहुवा, महाराजने इस तीर्थकी जियारत किइ, तीन रोज यहां ठहरे. तीर्थशखेश्वरसे रवाना होकर कस्बे मांडलकों तशरीफ लेगये, माडल कस्बा अच्छा आबाद है. जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी और बडी लागतके जैनश्वेतांबरमंदिर यहापर तामीर है, महाराज करीब एक महिना यहा ठहरे, अपने गुरुजीसे सूरिमंत्र और वर्द्धमानविद्या यहा पढी. और छेदग्रथ महानिशीथसूत्र यहा वाचा.–

[ सवत् १९४५ का चौमासा शहर अहमदाबाद ]

३४ कस्बे माडलसें रवाना होकर शहर अहमदाबाद तशरीफ लाये, और संवत् (१९४५)की वारीश वहांपर गुजारी, दीक्षा इख्तियार किये बाद महाराज करीब नवबरसतक इल्म हासिल करते रहे, और इस चौमासेंसे हरहमेश व्याख्यान धर्मशास्त्रका देना शुरुकिया, पेस्तर कभीकभी देतेथे, आजसे हमेशाकेलिये जारीरखा, महाराजके लेखोंमे जैसा ज्ञानका असर है, व्याख्यानमेभी भारी असर है महाराजकी व्याख्यान सभामें शोरगुल करना सख्त मुमानीयत है, और यह बात बहुत वहेतरभी है, शोरगुल होनेसे सुननेवालोंकों शास्त्र सुननेमे खलल पडेगा महाराज अपनी व्याख्यानसभामे अगर सादर नादर कोइ किसी किसमका शोरगुल करे तो उसकों रुकसत करवा देते है, इससें कइ श्रावक महाराजसें नाराज रहते है, मगर अकलमंद लोग तारीफ करते हैं, साधु हो तो ऐसे हो, जो गरीब और अमीरको एकसा समजे, महाराज महोले रतनपोल शेठ दलपतभाइ भगुभाइके मकानमे ठहरे थे, व्याख्यानसभा कसरतसे भरती थी. पर्यूषणके दिनोंभी करीब (३०००) तीन हजार श्रावक-

श्राविका जमा होते थे, मगर क्या ! मजाल कोइ शौरगुल करने पावे, व्याख्यान धर्मशास्त्रके (१३) कानुन एक साइन बोर्डपर लिखकर या छपवाके अपनेमें मकान इसलिये लगवा दिये जाते थे सुननेवाले उसकों वाचकर उसपर अमल करे, उसकी नकल यहां देते है, ब-खूबी देखलो,-

[ व्याख्यान धर्मशास्त्रके १३ कानुन. ]

( दोहा. )

मालाफेरत हाथमें जीभ हिलत मुखमांह,
मनुआ फिरत बजारमें येभी समरन नांह. १.

१-अवलकानुन 'व्याख्यान सुनते वख्त कोइ शौरगुल न करे चुपचाप होकर सुने, व्याख्यान होनेका वख्त साढेआठ बजेसे साढेनव बजेतक मुकरर है,-

२-दुसरा कानुन, व्याख्यानसभामें कोइ सामायिक न करे, एक समयमें दोजगह खयाल न रहेगा,

३-तीसरा कानुन, व्याख्यान सुनते वख्त कोइ तस्बी (माला) न फेरे, धर्मशास्त्रके सुननेमें खलल पडेगा,

४-चौथा कानुन, व्याख्यानसभामें शौरगुल करनेवाले छोटे बच्चोंको न लावे, दुसरोंको सुननेमें खलल पडेगा,

५-पांचमा कानुन, व्याख्यानके दरमयान कोइ उठे नही, खतम होनेपर उठे,

६-छठा कानुन, व्याख्यान सुननेवालोंको कोई बुलाने आवे तो मुंहसे जवाब न देवे इशारेसें समजावे,

७-सातमा कानुन, शोगसंतापवालोंको परभावना (प्रसाद) लेनेमें कोइ हर्ज नही,

८-आठमा कानुन, धर्मशास्त्र सुनने आ[illegible] रखे नही, शोग रखनेसे [illegible] बढेगा

९–नवमा कानुन, व्याख्यानसभामें जहा जगह मीले बेठजाय, पिछे आनकर आगेआनेका इरादा न करे,

१०–दशमा कानुन, चलते व्याख्यानमें सिर्फ ! सीर झुकाकर सिजदा (नमस्कार)करे, व्याख्यानके पेस्तर या खतम होनेपर चाहे तीन क्षमाश्रमण देवे कोइ हर्ज नही,

११–ग्यारहमा कानुन, चलते व्याख्यानमें कोइ प्रत्याख्यान न मांगे, इससें सुननेवालोंकों खलल पहुचेगा.

१२–बारहमा कानुन शोगसंतापवाले (गमगीन) अगर प्रभावना बांटना चाहे तो ब–जरीये दुसरेके चीज मंगवाकर बांटदेवे,

१३–तेरहमा कानुन, व्याख्यानमें जिसकों जो कुछ पुछना हो, खुशीसे पुछे, मगरशर्त यह है, व्याख्यानमे जो बात चलीहो, उसीमजमूनकों पुछे, दुसरी बात न पुछे और अगर तुमारी भूलपर गुरु सख्त शुस्त बात कहे तो उसका लिहाज रखे,

(सूचना.) तीर्थंकरदेव समवसरणमें (व्याख्यानसभामें) बेठकर मालकोश रागमे तालीम धर्मकी देते थे, जमाने हालमे अगर कोइ जैनमुनि रागरागिनीमे व्याख्यान देवे तो कोइ मना नही,

( दोहा )

भैरव मालव कोशकों दीपराग हिंडोल,
मेघराग श्रीराग फुन ये षटरागकलोल, १,

( व्याख्यानसभाके तेरह कानुन खतम हुवे, )

३५ इनदिनोंमे महाराजने एक जाहिरखबर छपवाकर जारी किइ, कोइ मजहबवाला हो मुंजसे जो कुछ धर्मचर्चाके बारेमे पुछना चाहे दिनके बारावजेसें चार वजेतक रुबरु मीलकर पुछे,–

[ इस्तिहार उल आम, ]

( इसमें कुछ धर्मशास्त्रका मतलब दर्ज हैं. व खूबी देखलो, )

आम दुनियादार लोग खयाल करते है जो जो काम हम अपने मजहबकी रुसें करते है सब दुरुस्त है, हमारे नायब धर्म और धर्म-

शास्त्र-सत्र सचे है. हमको जो मजहबी रास्ता दिखलाया गया है बहुत सिधा है, मगर अकलमंदोंकों इसपर गौर करना चाहिये, कौनसा धर्म सचा है? जमाने हालमें अमलदारी निहायत उमदा कोइ किसीकों बगेर कसुरके तकलीफ नही देसकता, फिर ऐसा कौन सुस्त आदमी होगा जो साफतौरसे धर्मतत्वका निश्चय न करेगा!

कइ मजहबवाले कहते हैं, दुनियाको ईश्वरने बनाया और कइ कहते है धर्मधुर्म उठगया, नरक स्वर्ग सब गप्प है, और बहुतोंका यहभी खयाल है परलोक किसनें देखा, जिसके पास रसीद आइहो दिखलावे, और कइ फरमाते है, खानापीना एश करना यही मुनासिब है, बाद मरनेके कौन देखने आयगा? मगर जैन मजहबका कौल है, बेशक! पूर्वजन्मके भलेबुरे कियेहुवे कर्मोंका फल जगत है, इसका अवल अखीर कोइ नही, हमेशां इसी तरह आबाद और बरबाद होता चला आया, और ऐसेही होता रहेगा. पूर्वजन्ममें जिनोंने धर्म किया था, उनोने यहां सुख चैन पाया, और जो कुछ यहां करेंगे अगले जन्ममे पायगें; यह सब शास्त्रोंका इत्र है,

शुष्कवादो विवादश्च धर्मवादस्तथापरः
इत्येपस्त्रिविधो वादः कीर्तितः परमर्षिभिः १

शुष्कवाद विवाद और धर्मवाद यह तीन तरहके वाद शास्त्रोमे दिखलाये है. अकलमंदोकों चाहिये धर्मवाद करे शुष्कवाद और विवाद हर्गिज! न करे, सचे धर्मकी तलाश करना आम लोगोंका फर्ज है, इसलिये में मे बजरीये इस्तिहारके आम लोगोंको रौशन करताहुं जिसकिसी जैन सांख्य वैदिक नैयायिक वैशेषिक जैमनीय बौध दिगंबर स्थानकवासी तेरहपथ त्रिस्तुति रामानुज वल्लभकली कबीरपंथी नानकशाही रामस्नेही शैव सूर्योपासक इशाइ इस्लाम ब्रह्मसमाज और आर्यसमाज वगेरा कोइभी मजहबवाले हो, जिनकों धर्मचर्चाका फायदा हासिल करना हो मेरेपास दिनके

बारा बजेसे लेकर चार बजेतक आवे और धर्म चर्चाके बारेमे जो जो कुछ पुछना हो पुछे में मे माकुल जबाव दुंगा,

मुजे दुसरे मजहबवालोंसे नाराजी नही, ये लोग मेरेपास क्यौं आये? बल्कि! इस बातकों मे सबब खुशीका समजताहुं. जो कोइ महाशय वादविवादके सवाल पुछना चाहे, बजरीये अखबारके छपवाकर पुछे, जबाबभी छपवाकर दिया जायगा, साधुलोग जब अपने शहरमे तशरीफ लावे उनसे धर्मचर्चाका फायदा हासिल करना आमलोगोंका फर्ज है, यह इस्तिहार मेनें अपनी खुशीसे जाहिर किया है, किसीकों नाराज करनेके लिये नही, जिसकी मरजी हो धर्मचर्चाका फायदा हासिलकरे, जो जो महाशय संस्कृत जबानमे बोलना चाहेगें मे उनसे उसीतरह पेंश आउगा, और जो भाषामें बोलना चाहेगें उनके शाथ भाषामे बातचित करुगा, जो शख्श धर्मचर्चाके बारेमे सभा करना चाहेगें उनके शाथ वाद-विवादके कायदेसें वादी प्रतिवादी सभाध्यक्ष दडनायक और साक्षी-द्वारा सभामें सवाल जबाब किये जायेगें, और वे सवाल जबाब ब-जरीये छापेके छपवाकर सबको दिये जायगें ताकी आम लोगोंको फायदा पहुंचे,— [ ब-कलम-मु-शा. ]

( इस्तिहार उल आमकी नकल खतम हुइ. )

३६ एक रोज व्याख्यानसभामे कलकी राजा कब होगा इस-पर व्याख्यान दिया गया, उस रोज बडी सभा भरी थी, जो जो महाशय कहा करते हैं, कलकी राजा संवत् (१९१४)मे होगया, मगर यह बात गलत है, जैनागम महानिशीथसूत्रमें बयान है, कलंकी राजा श्रीप्रभअणगारकी हयातीमे होगा, युगप्रधान यत्रमे तेहरीर है, श्रीप्रभअणगार आठमे उदयके पहले युगप्रधान होगें, पाचमे आरेके एकीस हजार वर्समे तेइसदफे धर्मका उदय और तेइसदफे धर्मका अस्त होगा, उसमे जब आठमा उदय आयगा, कलकी राजा उस वख्त होगा, जमाने हालमें तीसरा उदय चलता

है, श्रीप्रभअणगार युगप्रधान अवतक हुवे नही, फिर कैसे कहा जासकता है कलंकी राजा होगया, सवुत हुवा कलंकी राजा अवतक नही हुवा, दीपमालाकल्पशास्त्रमें और पांचमे आरेकी सज्झायमे बयान है उन्नीसो चउदोत्तरा (१९१४)में होसे कलंकीराय यह फरमान महानिशीथसूत्र और युगप्रधान यंत्रके फरमानसें खिलाफ है. इसलिये काबील माननेके नही कहा जासकता.—

कइ मरतबा बडीबडी सभामें हरेक उसूलके लिये घंटोतक व्याख्यान देते थे; एक रौज जैन मजहबके उसूलपर वाज किया, इस चौमासेमें आवश्यकसूत्रलघुवृत्ति जो तिलकाचार्यरचित है, व्याख्यानके धर्माधिकारमे वाची, भावनाधिकारमे वासुपूज्यचरित महाकाव्य वाचते थे,-वसुदेवहिंडी बतौर स्वाध्यायके वांची हैमी नाममालके दो हिस्से हिफ्ज याद किये, और चौमासा खतम होनेपर शहर अहमदाबादसे रवाना होकर पेंथापुर माणसा विजापूर वडनगर वीशनगर खेरालु और टींबागावकी सफर करते हुवे तीर्थ तारंगाकी जियारतको गये, इन उपर लिखे, गांवनगरोंमें सब जगह जैनश्वेतांबरमंदिर और श्रावकोंकी आबादी कसरतसें है. तारगे पहाडका चढाव करीब दो कोसका और तमाम पहाडका घेराव बारां कोसका है, जब पहाडके शिखरपर पहुचोगे, तारगातीर्थका बडा आलिशान जैनश्वेतांबरमदिर धर्मशाला और तीर्थका कारखाना देखोगे, तारगा तीर्थकी तरकी बदौलत हेमचंद्राचार्यके हुइ, हेमचंद्राचार्य राजा कुमारपालके धर्मगुरु थे, उसी कुमारपालका तामीर करवायाहुवा बडा आलीशान संगीन और बेशकिमती जैनश्वेतांबरमंदिर इस पहाडपर खडा है, तीर्थकर अजितनाथ महाराजकी मूर्त्ति करीब पाच हाथ बडी सफेद रंग इसमे बतौर मूलनायकके तख्तनशीन है. पूजा करनेवाले लोग सीडीपर चढकर मूर्त्तिके मस्तकपर तिलक करसकते है, मूर्त्तिके निलाडपर सोनेका पत्र और उसमें जवाहिरात जडी हुइ और हाथपांवपर सोनेके पत्ते लगे हुवे है; महाराजने इस

तीर्थकी जियारत किइ, तीर्थतारगासें रवाना होकर शहर पालनपुरकों होते हुवे तीर्थ आवुजीकों गये, और वहाकी जियारत की इ आवुजीसें रवाना होकर शहर पाली तशरीफ लेगये, और वहा चंद-रौज कयाम किया, श्रावकोको तालीम धर्मकी दिइ, पालीसे रवाना होकर सोजत होते हुवे. नया शहर जिसका दुसरा नाम वियावर बोलते हैं. गये, नयाशहर दरअसल ! नयाही शहर है तिजारतकी तरक्की बाजार गुलजार जैनश्वेतानर श्रावकोकी आबादी कसरतसें और जैनश्वेतांवरमंदिर यहांपर बना हुवा है, महाराज चंद-रौज यहां ठहरे, नयेशहरसें रवाना होकर अजमेर तशरीफ लेगये, अजमेरसे किसनगढ होते जयपुर गये, जयपुरसे आगे शहर लश-कर गवालियर जानेका इरादा किया, मगर जब डोंसागाव पहुंचे महाराजके दाहने पावमें तकलीफ पैदा हुइ, चंदरौज वहा ठहरे, आगे जाना बना नही, वारीशके दिन करीब आगये थे, वापिस लोटकर जयपुर आये, और संवत् (१९४६)की वारीश जयपुरमे गुजारी. व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशा देते थे, इन दिनोंमे वाग्भटालंकार और अलंकारचूडामणि हिफ्ज याद किइ, अर्हन्नीतिग्रंथ पढा. पिछले दिनोंमे त्रैलोक्यप्रकाशग्रंथ जिसमें नजुमका बयान है, हिफ्ज याद किया, चंद्रप्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्ति ज्योतिष्करडक आरंभ-सिद्धि जन्मांभोधि और नारचंद्र जैनके नजुम ग्रंथ वाचे, बृहद्जातक-समरसार और नरपतिजयचर्या दुसरे मजहबके नजुम ग्रंथ इसलिये मुलाहजा किये कि इनमें नजुम किसतरह बयान फरमाया है, ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद मनुस्मृति याज्ञवल्कस्मृति महाभारत भागवत और गीता वगेरा वैदिक मजहबके धर्मपुस्तक शुरुसे अखीरतक इसगरजसें वांचे कि इनमे धर्मके बारेमे किस तरह बयान दिया हैं, अकलमंदोंका कौल है, हर मजहबकी किताबोंका मुलाहजा करे और उनकों पहिचाने, इन दिनोंमे महाराजने संगीतकलाका इल्म हासिल करना शुरु किया

सातस्वर तीन ग्राम एकीस मूर्छना और उनंचास तान इनको जाननेवाला शख्श गायनकलाका इल्म पुरी तौरसें पासकता है अगर तालस्वरसें तीर्थंकरदेवोंकी इबादत किइ जाय तो इस जीवकों पुन्यानुबंधि पुन्य और अशुभकर्मोंकी निर्जरा होसकती है जैनागम अनुयोगद्वारसूत्रमें सातस्वरोंका बयान उमदा तौरसें दर्ज है. महाराज सर्गम तराना भैरवी कालिंगडा जोगिया आसावरी सारग जिला झींझोटी कमाच पीलुं धनासीरी कल्याण सोरठ विहाग और जेजेवंती वगेरा रागरागीनी अछीतरह गाने लगे, और शुभहके वख्त व्याख्यान धर्मशास्त्रका देते वख्त कालिंगडा भैरवी वगेरा रागिनीसें व्याख्यान देनेलगे, बाद वारीशके जयपुरसें रवाना होकर महाराज सांगानेर तशरीफ लेगये, और चंदरौज वहां ठहरकर वापिस जयपुर आये, इस अर्सेमें जो महाराजके गुरुसाहब जोधपुरमें वारीशके अय्याममें मुकीम थे, मुनिमंडलके शाथ वडी सान-व-व सौकतसें जयपुरमें तशरीफ लाये, और महाराजभी गुरुसाहबकी पैंशवाइमें गये, जयपुरमें करीब (२०) रौजतक शाथ ठहरे, इस अर्सेमें गुरुसाहबका और महाराजका आपसमे कुछ तकरार होगया, और महाराज नाराज होकर गुरुजीसें जुदे होगये, चैत वेशाखके दिनोंमे अलवर वगेरामें होते हुवे, शहर देहलीकों तशरीफ लेगये और सवत् (१९४७)की वारीश वहांपर गुजारी. व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां वाज करते थे. और सुननेवाले कसरतसें जमा होते थे, जैनाचार्य सिद्धसेन दिवाकरकी बनाइहुइ द्वात्रिंशका और जैनाचार्य हरिभद्रसूरिका बनाया हुवा लोकतत्वनिर्णय और षट् दर्शनसमुच्चय मूलपाठ महाराजने यहां हिफ्ज याद किया, एक-रौज महाराज देहलीके इर्दगिर्द पुराने मकानात और नामीग्रामी इमारते देखने गये, देखकर खयाल आया कैसीकैसी इमारतें खुशन-सीबोंने तामीर करवाइ थी और अब किस हालतमें पडी है, जिन-जिन होजोंमें गुलाब और केवडा भराजाता था, उनमें आज कांजी

जमरही है, जहां मखमल और कमख्वानके फर्सपर मोतियोंकी झालरके शमियाने खडे किये जाते थे, वहा अब कोइ झाडुभी नही देता और अब वहां घास खडा है जिनकी अर्दलीमे सेकडो सवार दोडते थे, और तमामहिंदमे नही समाते थे वे थोडीसी जमीनमें सोये पडे है. होनहारके सामने किसीका जोर नही, चढती पढती सबकों आती है, हुकम होदा अमलदारी और खजाना छोडकर इस दुनिया फानी सरायसें एक रोज विदा होना है, पुरानी चीजोंकों देखकर आदमीकों एकतरहका असर होता है, और खयाल आता है, दुनियामें उमदा चीज धर्म है, जींदगीका कोइ भरुसा नही, जहां-तक बने धर्म करना चाहिये, देहलीका चौमासा खतम हुवा, बाद बारीशके देहलीसे रवाना होकर कुतुबमीनार आये, कुतुबमीनार जो बडी उंची इमारत है, जिसके उपर चढकर देखनेसें चारोतर्फ द्रख्तोंके झुंड और छोटेछोटे गाम इसतरह दिखाइ देते है, मानोंदे एक उमदा गालीचा बीछा हो. कुतुब मीनारसें रवाना होकर गुड-गांव (गुरुग्राम) कस्बा होकर फरुखनगर तशरीफ लेगये, और वहां करीब चार महिना ठहरे, दिगंबर मजहबके गोमटसार त्रिलोक-सार आदिपुराण हरिवंश पुराण वगेरा ग्रंथ यहां मुलाहजा किये, कइ महाशय मजहवी बहेस करनेकों आते थे, मुसल्मानोंका धर्म-पुस्तक कुरानशरीफ इन दिनोंमें महाराजने अवलसें अखीरतक वाचा, जिसका अर्बी जबानसें उर्दूमे तरजुमा हुवा है, महाराजने अपने लिये यहांपर टाइमटेबल मुकरर किया, शुभहसे लेकर शाम-तक और शामसेलेकर शुभहतक अपने काम करनेका वख्त निश्चय किया,–

[ टाइम टेबल, ]

३७ शुभहके छह बजेसे सातबजेतक प्रतिलेखना करना और स्थंडिलभूमि जाना, सात बजेसें आठ बजेतक योगाभ्यास करना, साढेआठ बजेसे साढेनवतक व्याख्यान धर्मशास्त्रका [illegible]

करना, दशवजेसे बारांवजेतक खानपान करना, बारांवजेसें चारवजेतक आयेगये शख्शोंके शाथ मजहबी वहेस करना, चारवजेसें पांचवजेतक प्रतिलेखना करना, और स्थंडिलभूमि जाना, पांचवजेसें छहबजेतक खान पानकरके सूर्यके अस्त होनेके बाद आठवजेतक प्रतिक्रमाण करना, आठवजेसें दश बजेतक ज्ञानचर्चा और प्राणायाम वगेग करना, दशवजेसे शुमहके पांचवजे-तक शयन करना, पांच वजेसें छहबजेतक सूरिमंत्रका जाप और प्रतिक्रमाण करना, इसतरह हमेंशांके लिये अपने वख्तकी पाबंदी किइ,

३८ फरुखनगरसें रवाना होकर महाराज होडल पलवल होते हुवे शहर मथुरा तशरीफ लेगये, जमनाकनारे मथुरा एक पुराना शहर है. समुद्रविजयजी उग्रसेनजी और वसुदेवजी वगेरा दश भाइ इसी मथुरामे हुवे, कृश्नवासुदेव और उनके वडेभाइ बलभद्रजी यहा पैदा हुवे, जो दुनियामे वडे मशहूर और मारुफ कहलाये, महोले घीया मंडीमें एक जैनश्वेतांबरमंदिर बना हुवा है, महाराज उसके नजदीकके मकानमें ठहरे, जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी इस वख्त यहांपर नही रही, शहर लशकर गवालियरके जैनश्वेतां-बर श्रावक इस मंदिरकी सार संभाल रखते है. मथुराके बहार जैन टीला नामसें एक मशहूर जगह थी, पेस्तर वहा जैनश्वेतांबर श्राव-कोंकी आबादी और जैनश्वेतांबरमंदिर बने हुवेथे, मगर अब बीरान है, मथुरामें महाराज करीब आठरोज ठहरे, एकरोज वृंदावन देखनेको गये, जो मथुरासे करीब छह मील उत्तरको जमनाके दाहने कनारे एक छोटासा शहर है. जमनाकनारे निजवन सेवा-कुंज कालीद्रह और चीरघाट अलग अलग बनेहुवे है. मथुरासें रवाना होकर महाराज शहर आगरा तशरीफ लाये.

३९ जमनाके दाहने कनारे जिलेका सदर मुकाम आगरा एक नायाब शहर है. इसका दुसरा नाम अखबराबादभी बोलते हैं.

महोले लौंनमंडीमें रोशनमहोलेमे और बेलनगंजमें जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी और जैनश्वेतांबरमदिर बनेहुवे है. जमानें बादशाह अकबरके जैनश्वेतांबराचार्य हीरविजयसूरिजी यहां तशरीफ लायेथे, और उनोंने बादशाह अकबरकों धर्मका उपदेश सुनायाथा, शहर आगरेमें जमनाकनारे ताजमहेल और लाल-किला बडे किंमती मकान है. महाराज महोले लौंनमंडीमे करीन जैनश्वेतांबरमंदिरके चंद्रोज ठहरे, और आगरेसें रवाना होकर धोलपुर मुरेना होते हुवे शहर लशकर गवालियर तशरीफ लेगये, और संवत् (१९४८) की बारीश वहापर गुजारी, दरमयान सराफा बजारके एक बडा आलीशान जैनश्वेतांबरमदिर बना हुवा है, महाराज उसके करीन पंचायती मकानमें ठहरे, और व्याख्या-नमें सूत्र आवश्यकलघुवृत्ति बाचना शुरु किइ, सभा कसतसें भरती थी, व्याकरणचंद्रप्रभा इस चौमासेमें आधा हिफ्ज याद किया, और स्याद्वादरत्नाकरावतारिका न्यायग्रंथ पुरा बाचा, एकरौज छावनी मुरार जो लशकरसें करीन तीन कोसके फासलेपर वाके है गये, और वहापर मूर्त्तिपूजापर व्याख्यान दिया, दुनियामे मूर्त्ति-पूजा कदीमसें होती चली आइ, इसको नही करनेवाले कई हुवे, मगर यह हमेशाके लिये कायमही रही, मूर्त्ति-प्रतिमा अकस प्रति-बिंब या तस्वीर ये सब मूर्त्तिहीके नाम है. वगेरा बहुत लंबा व्या-ख्यान था, यहां उतना नही लिखा, छावनी मुरारमें जैनश्वेतांबर-मंदिर और श्रावकोंकी आबादी है. महाराज उसी रौज शामकों वापिस लशकर आये, चौमासा खतम होनेपर लशकरसे रवाना होकर शहर गवालियरकों तशरीफ लेगये, जो करीब दो कोशके फासलेपर वाके है. गवालियर शहर पुराना पेस्तर ज्यादा आबाद था, अब छोटा रह गया, एक जैनश्वेतांबरमंदिर यहांपर बना हुआ श्रावकोंकी आबादी पहले ज्यादा थी जमानें हालमें कम रह-गइ, किला गवालियरका पुराना बना हुवा एकरौज महाराज

किलेपर गये, कइ पुरानी इमारतें इसमें काबील देखनेके हैं. असलमें इस किलेका नाम गोपाचलदुर्ग है. जैनश्वेतांबर मजहबके विविधतीर्थकल्पग्रथमें बयान है विक्रम संवत् (८०२) में यहां आमराजा अमलदारी करताथा, जैनश्वेतांबराचार्य बप्पभटसूरि यहां तशरीफ लायेथे, गवालियरसें रवाना होकर महाराज दोबारा छावनी मुरार गये, और वहां मौशिम शर्द गुजारा, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे, और आयेगये शख्शोंके शाथ मजहबी बहेस करतेथे, जब छावनी मुरारसें महाराज आगेकों रवाना होने लगे लशकरके श्रावकोंने आनकर आर्जू किइ जिससे दोबारा लशकर आना हुवा, और संवत् (१९४९) की बारीश वहां गुजारी, व्याख्यानमें समवायांगसूत्र और विविधतीर्थकल्पग्रंथ बांचना शुरु किया, चंद्रप्रभा व्याकरण जो गये चौमासेमें हिफ्ज याद करना शुरु कियाथा इस चौमासेमें पुराकर लिया, और संमतितर्क जो जैनमजहबका न्यायग्रंथ है पढना शुरु किया, उपाशक दशांग अंतकृतदशाग अनुत्तरोपपातिक प्रश्नव्याकरण और विपाकसूत्र इनदिनोंमें बतौर स्वाध्यायके बांचे, बाद चौमासेके लशकरसे रवाना होकर फिर छावनी मुरार गये, और शर्द मौशिम वहां गुजारा, व्याख्यानमे रायपसेणीसूत्र जीवाभिगम और पांडवचरित बांचा, जब वहांसे आगे जहांसी तर्फ जानेके लिये रवाना होनेलगे लशकरके श्रावकोने छावनी मुरार आनकर फिर अर्ज किइ, आप जहां तशरीफ लेजायगें धर्मकों तरक्की देयगें, हमारे लशकरके जैनश्वेतांबरमंदिरमें देवद्रव्यका इंतजाम ठीक होना जरुरी है. और वो आपकी धर्मतालीमसें ठीक होगा, उमेद करते हैं, आप हमारी अर्ज मंजुर करेंगें, महाराजने संवत् (१९५०) की बारीश फिर लशकरमें गुजारी, व्याख्यानमें स्थानांगसूत्र और प्रवचनसारोद्धार ग्रंथ बांचना शुरु किया, इस चौमासेमे संमतितर्क ग्रंथ तीन हिस्सा बांचा, और एक हिस्सा बाकी रहा, देवद्रव्यके

बारेमें श्रावकोंको तालीम धर्मकी दिइ, और देवद्रव्यका इंतजाम ठीक हुवा, एक दफे पूर्वसंचित कर्मपर व्याख्यान दिया और एक दफे जगत्कर्त्ताके बारेमें व्याख्यान दिया, महाराज लशकरके श्रावकोंको धर्मके बारेमें जो जो सुधारे करना फरमातेथे, उनपर वे अमल करतेथे, धर्मका फायदा होता देखकर महाराजने संवत् (१९५१) की सालका चौमासा शहर लशकरहीमें किया, इस चौमासेमें प्रज्ञापनासूत्र और आचारदिनकर ग्रंथ व्याख्यानमे बाचना शुरु किया, संमतितर्कका जो चौथा हिस्सा बाकी था इस चौमासेमें पुरा किया, अष्टांगनिमित्तका इल्म इन दिनोंमे महाराजने हासिल किया. नंदीसूत्र दशाश्रुतस्कंध व्यवहारसूत्र और निशीथसूत्र इन दिनोंमें बतौर स्वाध्यायके बांचे, चौमासा खतम हुवा, बाद चौमासेके लशकरसें रवाना होकर जहांसी तशरीफ लेगये, जहासी शहर बडा है, महाराज यहा पनरां रौज ठहरे, जहांसीसें रवाना होकर ललितपुर होतेहुवे बासोदा गांवमे रौनक अफरोज हुवे, बासोदेमे श्रावकोंकी आबादी और जैनश्वेतांबरमंदिर बना हुवा है, आपने वहा पनरां रौज कयाम फरमाया, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां बाज करतेथे, बासोदेसें भेलसेको तशरीफ लेगये, वहां एक महिना कयाम किया, भेलसेसे रवाना होकर शहर भोपालकों तशरीफ लाये, और संवत् (१९५२)की बारीश वहा गुजारी, महोले जुम्मेरातीमे एक बडा जैनश्वेतांबरमंदिर बना-हुवा है. महाराज उसके नजदीकके मकानमें ठहरे, श्रावकोंकी आबादी कसरतसें है, व्याख्यानमे सूत्र अनुयोगद्वार और नेमिनाथचरित बाचा, जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति और द्वीपसागरप्रज्ञप्ति बतौर स्वाध्यायके बाचे, महाराजकी धर्मतालीमसे श्रावकोंने यहा एक जैनश्वेतांबरपाठशाला खोली, जिसमें जैनश्वेतांबर श्रावकोंके लडके मजहबी इल्म हासिल किया करे, और बाद बारीशके शहर भोंपालसे रवाना होकर छावनी शिहोर नरसिंहगढ सारगपुर और शाहजहा-

पुरकी सफर करते हुवे, तीर्थ मकसीजीकी जियारतकों गये, मकसीजी मुल्क मालवमें एक मशहूर जैनतीर्थ है, मकसीनासका एक छोंटासा गांव यहांपर आवाद है, जिसकी वजहसें तीर्थका नामभी मकसीजी कहलाया, यहांपर तीर्थंकर पार्श्वनाथ महाराजका बुलंद शिखरबंद मंदिर मानींदे! स्वर्गविमानके वनाहुवा है, महाराजने जियारत किड, और वहासें रवाना होकर शहर देवास होते हुवे शहर इंदोर गये. और संवत् (१९५३)की वारीश वहांपर गुजारी, महोले मोरसलीकी गलीमें नये मंदिरके करीव एक मकानमें ठहरे शुभहके वख्त व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देते थे, और सुनने-वाले कसरतसें जमा होते थे, इन दिनोमें महाराजने प्राकृतव्याकरण हिब्ज याद किया, सूत्र अंगचूलिका और वगचूलिका बतौर स्वाध्यायके वांचे. आयेगये शख्शोंके शाथ मजहवी वहेस हुवा करती थी, वाद वारीशके शहर इंदोरसें रवाना होकर दोवारा तीर्थ मकसीकी जियारतकों गये, उस अर्सेमें मुल्क मालवेके वहुतसें जैन-श्वेतांवर यात्री वास्तेजियारतकों आये थे, उनोनें तरहतरहके वाजे वगेरा लवाजमोंसें पेंशवाइ किड और तीर्थ मकसीजीमें लाये, महाराज जहांजहां तशरीफ लेजाते है, अकसर श्रावकलोग मय-वेंड वाजा वगेरा जुलुसके पेंशवाइ करते हैं, कही वाजे वगेराका इंतजाम न हो वहा पेंशवाड नही करसकते, महाराजको इन वातोंसें न रंज है न खुशी महाराज न किसीकों फरमाते है मेरेलिये ऐसा करो, जिसकी जैसी मरजी हो वैसा करते है.

४० तीर्थ मकसीजीसें रवाना होकर महाराज शहर उज्जेनकों तशरीफ लेगये, जो मुल्क मालवेमे निहायत पुराना शहर है, और इसका दुसरा नाम अवंतीका पुरीभी वोलते हैं, राजा विक्रमादित्यके वख्त यहां वडी रवन्नक थी, और संस्कृतविद्याका वडा जोर शोर था, कइ पुराने जैनश्वेतांवरमंदिर और श्रावकोकी आवादी यहां कसरतसें है, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देते थे और सुननेवाले कसरतसें

जमा होते थे, शहर उज्जेनमें महाराजका कयाम फाल्गुन सुदी पुनमतक रहा, उज्जेनसें रवाना होकर शहर वडनगरको तशरीफ लेगये, और वहां करीब एक महिना ठहरे, श्रीयुत पंडित मोहनलालजी लक्ष्मीचंदजी महात्मा साकीन कुशलगढ यहां मीले, उनोने धर्मचर्चाके बारेमे बहुतसे सवाल पुछे, महाराजने उनका माकुल जवाब दिया, उनोने महाराजकी तारीफमे दोहे कवित बनाकर सुनाये, वो-इस तरह हैं,

[ दोहे ]

नाम शांति गुण शांत है शांति मुनि अणगार,
अशुभ कर्म कृत विघ्नको शांति करन दातार, १,—
चिंतामणि सम शांति मुनि रगे अधिक वैराग,
पंचममें परगट भये—भवीजन केरे भाग, ॥ २ ॥

[ कवित्त ]

महावीर शासनके उन्नति करनहार—
धर्मके धुरधर ऐसे मुनिराज है,
कुमति मद हस्तिनके कुंभस्थल फोरवेको—
पंचानन राजसम जिनके शिरताज हैं.
ज्ञान जलदाता-उलसाता भवि वारिजके—
अचल दृढरग जिनका समाज है.
मोहन मन माने तीन लोकमें-न-छाने—
ऐसे सुगुरु शयाने विजयशाति महाराज है १

---

४१ वडनगरसें रवाना होकर महाराज शहर रतलामको तशरीफ लेगये, रतलामके श्रावकोंने मयनेंड वाजा वगेरा जुलसके पेशवाइ किइ, वारीशका वख्त करीब था, संवत् (१९५४) का चौमासा वहांपर किया, रतलामशहर वडा है, वडे वडे जैनश्वेताबरमंदिर और श्रावकोकी आबादी कसरतसें है, इन दिनोंमे इस्ति-

हारे आम छपवाकर शहर रतलाममें इसलिये बांट दिये आम लोग धर्मचर्चाका फायदा हासिल करे, पर्यूषणपर्वकी अखीरके रोज जैनश्वेतांबर मजहबमें जो चैत्यपरिपाटीका जलसा होता है, उसके बारेमें चार स्तुति माननेवाले और तीन स्तुति माननेवाले श्रावकोंका आपसमे वादानुवाद हुवा, और उसका फेसला रतलामराज्यसें यह हुवा कि चार स्तुतिमाननेवाले श्रावकोंका जलसा पेस्तर निकले, महाराज खुद चार स्तुतिमाननेवाले है, उस वख्त जैनधर्मकी बडी तरक्की हुइ, रतलामके जैनश्वेतांबर चार स्तुतिमाननेवाले श्रावकोंने महाराजकी बहुत कदर किइ, और एक सिताब रेशमीकपडेपर सुनहरी हर्फोंसें लिखकर बतौर जैन पताकाके भेट दिया, उसमे लिखा था,

" विद्यासागर न्यायरत्न महाराज शांतिविजयजित्प्रसादात्
जैनश्वेतांबरधर्मो जयतुतराम् "

इसके शाथ एक मानपत्र इस मजमूनका दिया कि जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा विद्यासागर न्यायरत्न महाराज शांतिविजयजीकी खिदमतमें हम रतलामका चार स्तुतिमाननेवाला जैनश्वेतांबरसंघ यह मानपत्र और रेशमी कपडेपर सुनहरी हर्फोंसे बनाइ हुइ जैनपताका पेश करते है, आप मंजुर फरमायगें, मानपत्रमें लिखा था महाराज शांतिविजयजी जैनशास्त्रके पढेहुवे और षट् दर्शनके जाननेवाले हैं, जिनोंने पंजाब मारवाड. गुजरात राजपुताना और मालवा वगेरा मुल्कोमें सफर करके जैन मजहबकों तरक्की दिइ, आम जैनश्वेतांबरसंघ इनके नामसें वाकिफ है, इनके लेख कइ गुजराती और शास्त्री जैनमासिकपत्रोंमें छपेहुवे मौजूद है, महाराज हमारे शहरमे तशरीफ लाये, और संवत् (१९५४) का चौमासा यहा किया, शहर रतलाममें करीब (७००) घर जैनश्वेतांबर श्रावकोंके है, हम लोगोंकी अछीतकदीर थी जो महाराज यहां तशरीफ लाये, और जैनधर्मकों तरक्की दिइ, जिन

जिन जैनश्वेतांनर श्रावकोंका खयाल धर्ममें कमजोर होगया था महाराजने शास्त्र सबुत देकर उनोंकों पावंद किये, अब हम यह मानपत्र और जैनपताका आपकी खिदमतमें पेश करते हैं, और जिनेंद्रदेवोंसें इबादत करते है आपकी इज्जत और शान हमेशां बनी रहे, इस मानपत्रमें रतलामके (८२) जैनश्वेतांबर श्रावकोंके शाथ संघ रतलामके नामकी सही मौजूद थी, यहां सबके नाम नही लिखे, जिनको देखनाहो सन (१८९९) मार्च एप्रीलके जैनदिवाकर मासिकपत्र अहमदाबाद पुस्तक (१४) अंक (६) मे देखे, यहां उसीसे उतारा लिया गया है,

४२ बाद बारीशके शहर रतलामसें रवाना होकर शहर जावरा तशरीफ लेगये, जावरा एक आबाद शहर है, महाराज यहां करीब (१५) रौज ठहरे, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशा देते थे. शहर जावरेसें रवाना होकर खाचरोद वगेरा गावोंकी सफर करते वडनगर तशरीफ लेगये, श्रावकोंने देशी बाजे वगेरा लवाजमेसें आपका इस्तिकबाल किया, वडनगरमें महाराजने फाल्गुन महिनेतक कयाम फरमाया, वडनगरसें रवाना होकर शहर मदसोरमें रौनक अफ रौज हुवे, यहां एक महिनेतक कयाम किया, मंदसौर शहर पुराना और इसका दुसरा नाम दशपुर नगरभी बोलते हैं, यहांपर जैनश्वेतांबरमंदिर और श्रावकोंकी आबादी कसरतसें है, व्याख्यान हमेशां देतेथे, और आयेगये शख्शोंसे धर्मके बारेमे बहेस हुवा करती थी, मंदसौरसें रवाना होकर शहर परतापगड तशरीफ लेगये, परतापगढ एक अछा शहर है, जैनश्वेतांबरमंदिर और श्रावकोंकी आबादी अछी महाराज एक महिनेतक यहां ठहरे, व्याख्यान हमेशा देतेथे, कइ मजहबवाले वास्ते मजहबी बहेसके आते जातेथे, और धर्मके बारेमें सवाल जवाब होतेथे, परतापगढसें लोटकर वापिस मंदसौर आये और संवत् (१९५५) की बारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यानमे सूत्रआवश्यकलघुवृत्ति और

विविधतीर्थकल्प वांचना शुरु किया, संवत् (१९५६) की सालका बयान बजरीये नजुमके महाराजने किताब मानवधर्म-संहितामें यहां लिखा, मजकुर किताब दो वर्स पेस्तरसें बनाना शुरु किइ थी वो यहां पुरी किइ, और इसी संवत् (१९५५) में छपकर तयार हुइ, जो जो महाशय इसके अवलसें खरीददार हुवेथे उनकों भेज दिइ, इस चौमासेमें महाराजने इरादा किया कि एक किताब जैनतीर्थगाइड नामसे बनावे जिसमें तमाम जैनश्वेतांवर तीर्थोंके हालात दर्ज हो, जिससे तीर्थोंकी जियारत जानेवालोंकों फायदा पहुंचे, मगर यह बात बगेर जैनश्वेतांवर तीर्थोंके देखे भाले नही हो सकती, इसलिये चौमासा खतम करके मुल्क पूरबतर्फ समेत शिखर बगेरा तीर्थोंकी जियारत जानेका कस्द किया, और मंद-सौरसें रवाना होकर गुणा-शिपरी जहांसी और कालपी बगेराकी सफर करतेहुवे शहर कानपुरकों गये, जिलेका सदर मुकाम कान-पुर एक रौनकदार शहर है, बडे बडे आलीशान मकान और कोठीयें यहांपर बनीहुइ और तिजारतके लिये एक मशहूर जगह है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर करीब (२५) और उमदा एक जैन-श्वेतांबरमंदिर यहा बनाहुवा करीब उसके एक धर्मशालामें महा-राजने कयाम किया, पनरांरोज यहां ठहरे. श्रावकोंकों तालीम धर्मकी दिइ, और कानपुरसें रवाना होकर उन्नाव बगेरा कस्बोंके रास्ते शहर लखनउ तशरीफ लेगये और संवत् (१९५६) की बारीश वहां गुजारी,

४३ सदर मुकाम लखनउ जिसका नाम संस्कृत जबानमें लक्ष्मण-पुर है, बडा गुलजार शहर है, किसी उंचे मकानपर चढकर देखे तो दरख्त बाग मिनार गुंबज बडे बडे मकान और उनपर चमकती हुइ सुनहरी कलशीयां नजर पडेगीं, खानपान बोलचाल और पुशाक उमदा, लोग खुशमिजाज और मोजशोखमें सबसे अगाडी बडे हुवे है, मुसलमानोंकी अमलदारीके बख्त यह शहर बडी

तरक्कीपर था, जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर करीब (५०) और (८) जैनश्वेतांबरमंदिर यहांपर तामीर है, महोले बहोरन टोलेमे करीब एक मंदिरके महाराज ठहरे, व्याख्यान हमेशा देते थे, दश पंयन्ने सूत्र और नेमिनाथजीका चरित व्याख्यानमे बांचा, चौमासा खतम होनेपर लखनउसें महाराजने तीर्थसमेतशिखरजी जानेकी तयारी किइ, इत्तिफाक यह था कि मुल्कोंमें सख्त दुष्काल पडा हुवा था, आदमी और जानवर सख्त तकलीफमें मुब्तिलाथें, रास्तेके गांवोंमें श्रावकोंकी आबादी कम होनेकी वजहसें पावपेदल जानेका इरादा कामयाब होता नही दिखाइ दिया, और इरादे धर्मके रैलमे बेठकर जाना दुरुस्त समजा, जैनमुनिकों अगर रास्तेमें सफर करते कोइ नदी आजावे तो नावमें बेठकर पार होना हुकम है, अगर कोइ जैनमुनि अपने शौखसे या आरामके लिये रैल सवारी करे तो उसकी मुमानीयतभी है, सबब उसका इरादा धर्मपर नही रहा, आजकल श्रावक लोग बसबब रैलके अपना वतन छोडकर हजारो कोशोपर जासके है, जहां जैनधर्मका नाम निशान नही पाता, और वहापर कोइ जैनमुनि उनकों रास्ता जैनधर्मका बतलानेवाले नही मिलते, उस हालतमे अगर कोइ जैनमुनि इरादे धर्मके रैलमे सवार होकर वहां जावे और तालीम धर्मकी देवे तो धर्मका फायदा है, जमाने हालमें कइ जैनमुनि जब समेतशिखरजी वगेरा बडे तीर्थोंकों जाते है, या जहां श्रावकोंकी आबादी कम हो वैसी जगह सफर करते है तो उनके शाथ श्रावकश्राविका बेंलगाडी नोकर चाकर चलते है, मुनिलोग खुद जानते है, यह कार्य हमारे लिये होता है. अगर कहाजाय इसमे इरादे धर्मके भाव हिंसा नही, और विनाभाव हिंसाके पाप नही, तो यही दलिल दुसरे कार्यमें भी क्यौं न लाइजाय, ? जो जो जैनमुनिश्रावकोंकी या नोकर चाकरोंकी विनामददके पैदल सफर करते है, और निर्दोष खानपान लेते है, वें मुताबिक फर-

मान जैनशास्त्रके अछे है, महाराजने संवत् (१९५६) में रैलमें सफर करनेका तरिका इख्तियार किया, और शहर लखनउसें रैलमें सवार होकर तीर्थ अयोध्याकी जियारतकों गये, यह शहर तीर्थंकर रिषभदेव महाराजकी जन्मभूमि है, पेस्तर इसका नाम विनिता नगरीथा, कोशला साकेतपुर इसी अयोध्याके नाम है, तीर्थंकर अजितनाथजी अभिनंदनजी सुमतिनाथजी और अनंतनाथजी इसी अयोध्यामें पैदा हुवे, रघुवंशके खानदानमें राजारामचंद्रजी और लक्ष्मणजी बडे बहादूर और इकबालमंद शख्श इसी अयोध्यामें पैदा हुवे, और सलतनत किड, पेस्तर जैनोकी आवादी यहां ब्रहुत थी, जमाने हालमें नही रही. सिर्फ! कटडेमें जैनश्वेतांबरमंदिर धर्मशाला और तीर्थका कारखाना बनाहुवा है, सरयूनदी अयोध्याके नजदीक बहती है, महाराजने तीर्थ अयोध्याकी जियारत किड, अयोध्यासे रवाना होकर फैजाबाद तशरीफ लेगये, फैजाबादसें सात कोशके फासलेपर खुश्की रास्ते रतनपुरी एक पुरानी वस्ती है. जमाने हालमें इसका नाम नवराही बोलते हैं, तीर्थंकर धर्मनाथमहाराज इसी रतनपुरीमें पैदा हुवेथे, इस वख्त रतनपुरी बराये नाम एक छोटासा कस्वा रहगया, तीर्थंकर धर्मनाथमहाराजका बडा आलीशान जैनश्वेतांबरमदिर और अतराफ संगीन कोट खीचा हुवा देखकर दिलखुश होगा, महाराजने इस तीर्थकी जियारत किइ, दुसरेरौज रतनपुरीसे अयोध्या वापिस आये, और बसवारी रैल शहर बनारसकों तशरीफ लेगये, तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ और तीर्थंकर पार्श्वनाथ इसी बनारसमें पैदा हुवेथे, शहर बनारस बडा रौनकदार और लोग यहांके शोखीन है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर करीन (२५) और (८) मंदिर यहांपर तामीर है, एकरौज महोले भेलुपुर और भदेनीजीके दर्शनोंकों गये, एकरौज महाराज बनारससे करीब चार कोश दूर सिंहपुरीकी जियारतको तशरीफ लेगये, तीर्थंकर श्रेयांसनाथ महाराजकी

जन्मभूमि यही सिंहपुरी है, सिंहपुरीकी जियारत करके आगे चंद्रावतीकों गये, जो बनारससे सात कोशके फासलेपर गंगाकनारे सुहावनी जगह है, चद्रावतीनगरी जमाने हालमे छोटीसी वस्ती रहगइ, पेस्तर वडी थी, तीर्थंकर चंद्रप्रभु इसी नगरीमे पैदा हुवेथे, एक वडा खूबसुरत जैनश्वेतांवरमंदिर मानींद स्वर्गलोकके बना हुवा महाराजने इस तीर्थकी जियारत किइ और वापिस बनारस आये, बनारससे रेलमे सवार होकर मोगलसरायजंकशन होते हुवे शहरगया टेशन उतरे विहारप्रदेशमें गयाशहर पुराना है, जैनश्वेतावरमंदिर या श्रावकोके घर यहा कोइ नही, महाराज एक सरायमे ठहरे, शहरगयासे रेलमे सवार होकर नवादा टेशन तशरीफ लेगये, और वहांसे मुल्क पूरवकी पंचतीर्थीकी जियारतको पैदल रवाना हुवे,—

## [ वयान पंचतीर्थी मुल्क पूर्व, ]

४४ नवादेसें महाराज कुंडलपुरकों गये, कुंडलपुर एक छोटासा कस्वा है, और इसका दुसरा नाम वडगांव वोलते है, यहां कोई जैनश्वेतांवर श्रावक नही, सिर्फ! जैनश्वेतावरमंदिर और करीब उसके एक धर्मशाला तामीर है, महाराजने इस तीर्थकी जियारत किइ, और वहांसे रवाना होकर सुवे विहारकों गये, सुवे विहार एक आवाद शहर है पेस्तर जैनश्वेतावर श्रावककोंकी आवादी वहुत थी, अव कुछसात आठ घर रहगये, इसकी जियारत किइ, सुवे विहारसें रवाना होकर तीर्थ पावापुरीको गये, तीर्थंकर महावीरस्वामीकी निर्वाणभूमि यही नगरी है, तीर्थंकर महावीरस्वामी यहा दीवालीके रौज मुक्ति पाये, और मुक्तिपानेसे पहले यहांपर उनोने पांचमे आरेका भाव वयान फरमाया, जमाने हालमे पावापुरी एक छोटासा गाव रहगया, गावके वाहिर एक वडे सरोवरमें एक पुराना मंदिर जिसमे तीर्थंकर महावीरस्वामीके कदम जाये

नशीन है, इनकी जियारत किइ, सरोवरके कनारेसें मंदिरतक जानेके लिये पुख्ता पुल बना हुवा है,–

पावापुरीसे रवाना होकर महाराज तीर्थराजगृहीकों गये, मुल्क मगधकी राजधानी राजगृही नगरी पेस्तर बडी रौनकपर थी, जमाने तीर्थंकर महावीरस्वामीके राजगृहीके तख्तपर श्रेणिक नामका राजा अमलदारी करता था, जैनाचार्य जंबूस्वामी इसी राजगृहीके वाशिंदे थे, धन्ना शालिभद्रजी इसी राजगृहीमें पैदा हुवे जो बडे दौलतमंद और खुशनसीब थे, जमाने हालमें राजगृही एक छोटासा गांव रहगया, इस वख्त यहां जैनश्वेतांबरश्रावकोंकी आबादी बिल्कुल नही, मंदिर और धर्मशाला बनीहुइ मौजूद है, राजगृहीके बहार थोडी दुरपर १, विपुलगिरि. २, रत्नगिरि ३, उदयगिरि. ४, स्वर्णगिरि और वैभारगिरि पांच पहाड और उनपर जैनश्वेतांबरमंदिर बनेहुवे महाराजने इनकी जियारत किइ, पांचों पहाडकी जियारत एक रौजमें हो सकती है, राजगृहीकी जियारत करके महाराज गुणशिलवन आये, गुणशिलवन उद्यान जिसकों आजकल गुणायाजी बोलते हैं, यहांपर धर्मशाला और बीच तालावके एक बडा कींमती पुख्ता और पायेदार जैनश्वेतांबर-मंदिर तामीर है, तालावके कनारेसें मंदिरतक पुल बंधाहुवा, महाराजने इसकी जियारत किइ, और वापिस नवादा टेशन आये, नवादेसें रैलमें सवार होकर लखीसराय मधुपुर होते हुवे गिरिडी टेशनकों गये, गिरिडी कस्वा एक छोटीसी बस्ती मगर रौनकदार है, टेशनके सामने एक जैनश्वेतांबरमंदिर और धर्मशाला बनीहुइ यात्री इसमें बखूबी कयाम करे,–

महाराज एकरौज कस्बे गिरिडीमें ठहरे और दुसरेरौज तीर्थ-समेतशिखरजीकी जियारतको चले, जो नवकोश खुश्की रास्ते सडक पकी बनीहुइ, पांच कोश जानेपर बराकड गांव जहां तीर्थं-कर महावीरस्वामीको केवलज्ञान पैदा हुवाथा जियारतगाह है,

उसकी जियारत किइ, वराकडके नजदीक रिजुवालुका नदी वह रही है, रिजुवालुकाके अगाडी चार कोश जानेपर समेतशिखर पहाडकी तराडमे मधुवन एक उमदा जगह है. यहांपर चार वडी वडी धर्मशाला जैनश्वेतांबर कोठी तीर्थसमेतशिखरजीका कारखाना कोठीके वहार दुकानदार लोगोंकी दुकाने और चदलोगोंके आवादीके घर है, वागवगीचे मीठे पानीके कुवे और द्रख्तोंके झुडसें मधुवन एक सोहावनी जगह है, जैनश्वेतांबरमंदिर यहा (१०) वनेहुवे जिसमें शामलिया पार्श्वनाथजीका सवसे वडा और उसमे तीर्थंकरपार्श्वनाथजीकी शामरगमूर्त्ति तख्तनशीन है, मंदिरके सामने वडा चौक जिसमें करीव चार हजार मनुष्य वखूवी वेठ सकते है, वडी रौनकदार जगह है,–

मधुवनसें आगे शिखरजी पहाडकी शुरुआत होगी, शुरुसे लेकर पहाडके सीरेतक सडक वनीहुइ दोनोतर्फ द्रख्तोंके झुंड झाडी झुखड और तरहतरहकी वनास्पति यहापर पैदा होती है, कामराज हाथाजोडी रतनजोत सहदेवी मयूरशिखा शरपुंखा लक्ष्मणा और शंखावली वगेरा कइ जडीवुटीये यहा पाइ जाती है, शिखरजी पहाडकी चढाइ तीन कोश वीशटोंकोंकी सफर तीन कोश और पहाडकी उतराइभी तीनकोश कुल्ल नव कोशकी सफर यात्रीकों होगी, चाहे कोइ पांवपेदल जाय या डोलीपर यात्रीकों इख्तियार है, रास्तेमें पेस्तर चाहवगान आता है, आगे गंधर्वनाला करीवमे एक जैनश्वेतांवरधर्मशाला और मीठेजलका झरना, आगे इसके शीतानाला और इसके आगे अवलटोंक तीर्थंकर कुंथुनाथमहाराजकी इसीतरह वीश टोंकोंके दर्शन है, जैनमजहवके चोइस तीर्थंकरोंमेंसे चार तीर्थंकरोंको छोडकर वाकीके वीश तीर्थंकरोंने इस पहाडपर मुक्ति पाइ, और उनकी अलगअलग चरणपादुका वनीहुइ है, महाराजने पहाडसमेतशिखरपर जाकर इन सवकी जियारत किइ, पहाडके वीचमे एक वडा आलीशान

जैनश्वेतांबरमंदिर शामलिया पार्श्वनाथजीका बनाहुवा इसकों धुर-मठका मंदिर और जलमंदिरभी बोलते है, इसकों जगतशेठ खुशालचंदजीने वडी दौलत सर्फ करके तामीर करवाया, जिसकी तामीरातमे (९३६०००) रुपये सर्फ हुवे थे, महाराजने तीर्थ-समेतशिखरजीकी जियारत किइ, और पहाडसें उतरकर वापिस मधुवन आये, मधुवनसें वापिस उसी रास्ते गिरिडी टेशन आये, और रेलमें सवार होकर मधुपुर लखीसराय होतेहुवे शहर भागल-पुर तशरीफ लेगये,

जिलेका सदर मुकाम भागलपुर एक उमदा शहर है, जैनश्वे-तांवर श्रावकोंकी आवादी यहांपर नही. सिर्फ! टेशनके सामने एक जैनश्वेतांबरमंदिर और धर्मशाला बनीहुइ है, भागलपुरसे दो कोशके फासलेपर चंपानगरी एक पुराना जैनतीर्थ है, इसमे तीर्थंकर वासुपूज्य महाराजका मंदिर बनाहुवा और उसमे वासु-पूज्य महाराजकी मूर्त्ति राजासंप्रतिकी तामीर करवाइ हुइ तख्तन-शीन है, महाराज भागलपुरसें चंपानगरी गये, जियारत किइ और वापिस भागलपुर आनकर रेलमे सवार हुवे, नलहटी टेशन होतेहुवे मुर्शिदाबाद तशरीफ लेगये, मुर्शिदाबादके श्रावकोंनें मयबेंड वाजा और ध्वजापताकाके पेशवाइ किइ और सवत् (१९५७) की वारीश वहांपर गुजारी, जैनश्वेतांवर श्रावकोंके घर करीब (१५०) और कइ मंदिर यहांपर बनेहुवे है, व्याख्यानमें श्रोतालोग कसरतसें जमा होते थे, चौमासा खतम होनेपर चंदरोज फिरभी वहा ठहरे, पोषमहिनेमें मुर्शिदाबादसें रेलमे सवार होकर दोवारा समेतशिखरकी जियारतको गये, आठरोज वहां ठहरे, और फिर गिरिडीटेशनसे रेलमे सवार होकर लखीसराय जंकशन उतरे, वहांसें खुश्की रास्ते छह कोशके फासलेपर काकंदी नगरीकी जियारतको गये, काकंदीनगरी पेस्तर वडी थी, अब वहा वराये नाम आवादी है. और काकंदगांवके नामसे मशहूर है, तीर्थंकर

सुविधिनाथ महाराज इसी काकंदीनगरीमें पैदा हुवे थे, और धन्नाकाकंदी इसी नगरीके रहनेवाले थे, एक जैनश्वेतांवरमंदिर और धर्मशाला यहापर मौजूद है, महाराजने इस तीर्थकी जियारत किइ, और आगे क्षत्रीयकुंडगांवको गये, जो नवकोशके फासले-पर वाके है,-

४५ क्षत्रीयकुंडगाव पेस्तर वडा था, अव वराये नामके रहगया, और आजकल इसकों लछवाडगांवके नामसे वोलते ह, तीर्थंकर महावीरस्वामी इसी क्षत्रीयकुंडगांवमे पैदा हुवे थे, एक जैनश्वेतां-वरमंदिर और धर्मशाला यहापर कायम है, महाराज इसमे ठहरे, क्षत्रीयकुंडगांवसें करीव देढ कोशके फासले लछवाड नामका एक पहाड और उसपर मंदिर वनाहुवा है, ज्ञातवनखंडउद्यान इसी पहाडकी दामनमें वडी रौनकदार जगह है, तीर्थंकर महा-वीरस्वामीने इसी ज्ञातवनखंडउद्यानमे दीक्षा इख्तियार किइ थी, पहाडका चढाव करीव एक कोश और जव पहाडके सीरेपर पहुंचे तो तीर्थंकरमहावीरस्वामीका वडा मंदिर मिलेगा, महाराजने पहाडपर जाकर उसकी जियारत किइ, वापिस आते वख्त पहा-डकी दामनमे जो मंदिर है उससे पचास कदमके फासलेपर शामके चार वजेके वख्त एक वडा शेर जाताहुवा दिखाइ दिया, मंदिरके पूजारी धारीलालजीने शेरकों देखकर मंदिरका दरवाजा वंद करलिया, जिस डोलीमे महाराज सवार थे, डोली उठानेवालोंने डोली जमी-नपर रख दिइ, महाराजने उसकी वजह पूछी, कहारलोग मारें खौंफके कुछ वता न सके, महाराजने इधर उधर देखा तो थोडी दूरपर एक शेर नजर आया, मगर वदौलत देवगुरुधर्मके वो सामने नही वल्कि? कुदताहुवा वायी तर्फकी एक टेकरीकों लांघता चला गया, पूजारी धारीलालजीने मंदिरका दरवाजा खोला, और कहने लगा शुक्र है! आज हमारी जान वची, यहा तो अकसर ऐसाही माजरा हुवा करता है, महाराजने उस मंदिरके दर्शन

किये और शामकों क्षत्रीयकुंडगांव आये, दुसरेरौज वहांसें खुश्की रास्ते रवाना होकर लखीसराय जंकशनपर आये और वसवारी रैल पटना पहुंचे, पटना शहर पुराना है, स्थूलभद्रजी इसी पटनाके वाशिंदे थे, राजा चंद्रगुप्तने इसी पटनेपर अमलदारी किइ, चाणाक्य इसीका दिवान था, तिजारतके लिये पटना मशहूर है, पेस्तर पटनेमें जैनश्वेतांबर श्रावकोंके घर वहुत थे, इस वख्त कुछ पांच सात रहगये हैं, वाडेकी गलीमें दो जैनश्वेतांवरमंदिर वनेहुवे है, महाराजने उनकी जियारत किइ, पटनेकी पश्चिमको महोले तुलसीमंडीमे स्थूलभद्रजीके चरणोंकी छत्री और सुदर्शनशेठका शूलीसिंहासन होना एक मशहूर जगह है, पटनेसें रवाना होकर वखतियारपुर होते हुवे दोवारा बिहार तशरीफ लाये, शर्दमौशिम वहांपर गुजारा,—चैतमहिनेमें तीर्थपावापुरीकी दोवारा जियारतकों गये, वैशाखमहिनेमें भागलपुर और ज्येष्ठमहिनेमें भागलपुरसें वसवारीरैल वर्द्धमान वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे कलकत्ता तशरीफ लेगये.

४६ मुल्क बंगालमें कलकत्ता एक मशहूर और मारुफ शहर है, यह शहर करीब दोसो वर्ससें आवाद हुवा, हिंदमे बंगाल इलाकेका वडा शहर यही है, तिजारतके लिये जैसा वंबई वैसा कलकत्ताभी है, जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी कसरतसें और अफीम चौरास्तेपर एक जैनश्वेतांवरमंदिर वडी लागतका वनाहुवा देखकर दिल खुश होता है, संवत् (१९५८) की वारीश महाराजने शहर कलकत्तेमे गुजारी, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशा देते थे. सभा कसरतसे भरती थी, पर्युषणके दिनोंमे चैत्यपरिपाटीका जलसा उमदा हुवा, भारतमित्र और हिंदी वंगवासी जो कलकत्तेके नामीग्रामी अखवार है उनमें महाराजके वारेमे इसतरह लेख छपा था,—

[ अखबार भारतमित्र कलकत्ता तारिख २८ सितंबर-सन १९०१ इस्वी संवत् १९५८ भाद्रपद पौर्णिमा ]

श्वेतांबरजैनोंके गुरु विद्यासागर न्यायरत्नमहाराज शांतिविजयजी चार महिनेसे कलकत्तेमें है, गतमंगलवारसें पर्युषणपर्व आरंभ हुवा, व्याख्यानके समय करीब (५००) जहोरी जमा होते थे, जहोरी लोगोंने बडा जलसा किया, भाद्रपद सुदी ४ के रौज उक्त महाराजकों बडे जुलुससे जैनमंदिरके दर्शनको लेगये, ऐसा जलसा कभी नही हुवा था जैसा इससाल हुवा, आप बडे पंडित हैं, आपके आनेसे जैनोंमें बडा धर्मोत्साह फेला है, आपकी बनाइहुइ मानवधर्मसंहिता किताब जैनोंके पढनेके काबील है,—



[ अखबार हिंदीबंगवासी कलकत्ता. तारिख १८ मीनवेंबर सन १९०१ इस्वी संवत् १९५८ कातिक सुदी ७ सोमवार, ]

कलकत्तेमें गुरु यहांपर अनेक जहोरी जैनी है, विद्यासागर न्यायरत्नमहाराज शांतिविजयजी जैनी जहोरीयोंके गुरु है, आप चार महिनेसें कलकत्तेमे है, गुरुजीका निवास बरतल्लास्ट्रीट (५८) नंबरवाले मकानमें हुवा है, आपके आनेसे श्वेतांबरलोगोंमे उनके धर्मका बडा उत्साह हुवा है.



बाद चोमासके मृगशीर पौष महिनेतक कलकत्तेहीमे कयाम रहा, माघ सुदीमे कलकत्तेसे रेलमें सवार होकर वर्द्धमान आसनसोल मधुपुर और गिरिडी टेशन होतेहुवे तीसरी मरतबा तीर्थसमेत शिखरजीकी जियारतको गये, उस वख्त माघ सुदी दशमीके रौज प्रथम प्रहरमे दशमी टोंकपर महाराजके हाथसे चरणपादुकाके जीर्णोद्धारकी प्रतिष्ठा किइगइ, जो-बसबब बिजलीके गिरनेसे दोबारा मरम्मतके बनाइगइ थी, महाराज चंदरौज मधुबनमे ठहरे,

मधुवनसें रवाना होकर टेशन गिरिडीपर तशरीफ लाये, और वहांसे रैलमें सवार होकर आसनसोल चक्रधरपुर विलासपुर होतेहुवे शहर नागपुरमें रौनक अफरौज हुवे, नागपुर एक उमदा शहर है, महोले इतवार पेंठमें जैनश्वेतांबरश्रावकोंकी आवादी और मंदिर बनेहुवे है, महाराजका कयाम इतवार पेंठमें था, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देते थे, मौशीम गर्मी वहांपर गुजारा, आषाढमहिनेमें शहर मंदसोरके श्रावकोंका तार आया कि आप वराये महरबानी हमारे शहरमें तशरीफ लावे, और चौमासेका कयाम फरमावे, महाराजने उनकी अर्ज कवुल किइ, और नागपुरसे रैलमें सवार होकर भुसावल खंडवा इंदोर रतलाम वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे शहर मंदसौर मुल्कमालवेमें तशरीफ लाये और संवत् (१९५९) की वारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देते थे, किताव रिसालामजहवढुंढिये यहांपर बनाइ जो स्थानकवासी मजहबके श्रावक जीतमलजीके पांच सवालोके जवावमें तेहरीर है, छपवाकर शहर मंदसौरमें तकसीम करादिइ और दुसरे शहरोंमें बजरीये डाकके भेज दिइ, जैनसंस्कार विधिनामकी किताब यहां तयार किइ, सूर्यप्रज्ञप्ति और पिंडनिर्युक्ति यहांपर बतौर स्वाध्यायके वाचे, बाद्वारीशके मंदसौरसें रैलमें सवार होकर चितोडगढ टेशन तशरीफ लेगये, और पहाडपर जाकर जियारत किइ,—

४७ मुल्कमेवाडमें चितोडगढ एक पुराना शहर है, पेस्तर वडा था, जमाने हालमें छोटासा रहगया, जैनश्वेतांबरश्रावकोंकी आवादी और मंदिर बनेहुवे है, किला चितोरगढका निहायत पुख्ता और उपर जानेके लिये पकी सडक हुइ है. जब किलेपर पहुंचोगे बडे बडे मेंदान तालाव और आमरास्ता दिखाइ देगा, कुछ आगे बढनेसें बाजार दुकाने और लोगोंकी आवादी मिलेगी, पेस्तर यहा जैनश्वेतांबरश्रावकोंकी आवादी बहुत थी, अब कम

रहगइ, नजदीक रत्नेश्वरतालावके एक जैनश्वेतांबरमंदिर और उपाश्रय मौजूद है, मंदिरमे राजासंप्रतिकी तामीर किइहुइ मूर्त्तिये जायेनशीनहै, पुराने कीर्त्तिस्थंभके पास दो जैनश्वेतांबर-मंदिर खाली पडे है, गौमुखकुडके पास जो सुकोशलमुनिकी गुफा मशहूर है, एक पथरपर सुकोशलमुनिकी और एक सिंह-नीकी मूर्त्ति बनीहुइ है. एक मंदिर जो नजदीक कीर्त्तिस्थंभके खाली पडा है, दिवारमे एक छोटासा शिलालेख देखोंगे, उसमें चौलुक्यवंशके राजामूलराज सिधराज और कुमारपाल वगेरा राजाओंके नाम दर्ज है, चितोरगढकी जियारत करके महाराज नीचे शहरमे आये. और रैलमे सवार होकर अजमेर जयपुर बादी कुइ भरतपुर अचनेरा मथुरा और हाथरस वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे टेशन कायमगंज उतरे, और वहांसे खुश्कीरास्ते तीर्थकंपील-पुरकी जियारतकों गये जो तीन कोशके फासलेपर वाके है,—

४८ कंपीलपुर पेस्तर वडा आबाद शहर था, आजकल छोटासा रहगया, तीर्थंकरविमलनाथ इसी कपीलपुरमें पैदा हुवे थे, द्रुपदराजाकी बेटी द्रौपदी इसी कंपीलपुरकी थी, और उसका स्वयंवरमंडप यहां हुवा था, इसवख्त कंपीलपुरमें कोइ जैनश्वेतांबर श्रावक आबाद नही, एक वडा कीमती जैनश्वेतांबरमंदिर यहांपर बनाहुवा है और उसकी जेरनिगरानी शहर लखनउके जैनश्वेतांबर श्रावक करते है. महाराजने इस तीर्थकी जियारत किइ, और वापिस कायमगंज तशरीफ लाये, कायमगंजसे रैलमे सवार होकर तीर्थशौरीपुरकी जियारत जानेके लिये रवाना हुवे, दुसरेरोज सिकोहाबाद टेशन उतरे, सिकोहाबादसें खुश्की रास्ते सात कोशके फासलेपर जमनाकनारे तीर्थशौरीपुर आबाद है, जिसकों आजकल बटेश्वर कहते है, पेस्तरके जमाने जैसी आबादी नही रही, न कोइ जैनश्वेतांबर श्रावक यहा है, न धर्मशाला है, सिर्फ! जमनाकी विहडमें करीब एकमीलके फासले उंची पहाडी-

पर पांच जैनश्वेतांबरमंदिर बेमरम्मत खडे है, जिनमें चार विल्कुल खाली और एकमें तीर्थंकरनेमिनाथजीके कदम तख्तनशीन है, इस तीर्थकी जेरनिगरानी लशकरगवालियरके श्रावक रखते है, महाराजने इस तीर्थकी जियारत किइ और वापिस सिकोहाबाद तशरीफ लाये, सिकोहाबादसें रैलमें सवार होकर शहर इलाहाबाद गये, सद्र मुकाम इलाहाबाद जिसका असली नाम प्रयाग है, गंगाजमनाके संगमपर बसाहुवा बडा आबाद शहर है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी यहांपर नही, जैनश्वेतांबरमंदिरभी यहां नही, इलाहाबादसें रैलमें सवार होकर भरवारी टेशनपर उतरे, भरवारीसें आगे खुश्की रास्ते सातकोश दूर पपोसागांव और उसके आगे दो कोशपर कौशांबीनगरी मौजूद है, जिसकों आजकल कोसंबपाली कहते हैं. वत्सदेशकी राजधानी और छठे पद्मप्रभुकी जन्मभूमि यही कौशांबी नगरी है, आजकल न कोइ यहां जैनश्वेतांबरमंदिर है, न श्रावक हैं, सिर्फ! क्षेत्रस्पर्शना यानी कदमबोसी बाकी है, महाराज कौशांबीकी क्षेत्रस्पर्शनाकरके वापिस भरवारी टेशन आये, भरवारीसे रैलमें सवार होकर कानपुर लखनउ वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे अयोध्या टेशन उतरकर खुश्की रास्ते सरयूनदीके सामने कनारे टेशन लकडामडीसें रैलमें सवार हुवे, आगे गौडाजंकशन होते टेशन बलरामपुर उतरे, बलरामपुरसे खुश्कीरास्ते करीब सातकोशके फासलेपर सावथीनगरी जिसकों आजकल किला-सहेटमेट बोलते हैं, वहांकी जियारतकों गये, सावथ्थीनगरी पेस्तर बहुत बडी आबाद थी, जमाने हालमें एक विरान कस्बा बहुतसे पुराने मकानात और खंडहेर पडे नजर आते हैं, तीर्थंकरसंभवनाथ इसी सावथ्थीमे पैदाहुवे थे, किला सहेटमेट विरान है, उसमे तीर्थंकरसंभवनाथजीका मंदिर विना मूर्त्तिके खाली पडा है, आजकल न कोइ

जैनश्वेतांनरश्रावक-न-धर्मशाला है, महाराजने इस तीर्थकी जियारत किइ और वापिस वलरामपुर आये,-

४९ वलारामपुरसें रैलमें सवार होकर अयोध्या वनारस और मोगलसराय वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे शहर गयाजी उतरे, वहासें (१८) कोशके फासलेपर तीर्थभदीलपुरकी जियारतको गये, भदील-पुरके करीन पहाडकी दामनमें एक छोटासा हटनरीयागाम आनाद है, पेस्तर यहा भदीलपुर शहर था, तीर्थकरशीतलनाथजीकी जन्मभूमि यही मुकाम है, आजकल विल्कुल विरान होगया यहांपर एक पहाड और उसपर एक जैनश्वेतानरमदिर वनाहुवा विना मूर्त्तिके खाली पडा है, महाराज पहाडपर गये. और क्षेत्रस्पर्शना किइ, पहाडका चढाव करीन एककोशका तरहतरहकी वनास्पति और जडीवुटीयें यहांपर खडी है, भदीलपुरतीर्थकी क्षेत्रस्पर्शना करके शामको वापिस हटवरियागांव आये, भदीलपुरतीर्थके पहाडको आजकल यहाके लोग कोलुकापहाड कहते है, दुसरेरोज हटव-रीयागांवसे महाराज हंटरगंज और शहरघाटीके रास्ते वापिस गयाजीशहर आये, गयाजी टेशनसे रैलमे सवारहोकर पटना होतेहुवे मुकामा जंगशन उतरे, गंगानदीके पारजाकर सेमरिया घाट टेशनसे रैलमें सवार हुवे, और दरभंगा टेशनके रास्ते सीता-मढी टेशन तशरीफ लेगये, मुल्क विदेहकी राजधानी यही मिथिला नगरी है, पेस्तर वडी थी अव कम होगइ, उन्नीसमे तीर्थंकर मल्लिनाथ और एकीसमे तीर्थंकरनमिनाथ इसी मिथिलामे पैदा हुवे थे, जनकराजाकी वेटी शीताजीका स्वयवरमंडप इसी मिथि-लामें रचागया था, आजकल न कोइ जैनश्वेतानरमदिर न श्रावक है, सिर्फ! क्षेत्रस्पर्शना वाकी है, महाराजने मिथिलातीर्थकी क्षेत्र-स्पर्शना किइ, और सीतामढीसें रैलमें सवार होकर दरभंगा होते-हुवे वापिस मुकामाजंकशन आये, मुकामाजंकशनसें वसवारी रैल आसनसोल चक्रधरपुर विलासपुर और-नागपुर होतेहुवे आकोला

टेशनपर उतरे, और वहांसे खुश्की रास्ते तीर्थ अंतरिक्षजीकी जियारतकों गये, जो (२२) कोशके फासलेपर वाके है.—

५० मुल्क वराडमें अंतरिक्षजी पुराना जैनतीर्थ है और इस जगह एक सीरपुरगांव आवाद है, मंदिर अंतरिक्ष पार्श्वनाथजीका जो इस वख्त मौजूद है, वडा पुख्ता वनाहुवा और इसमें तीर्थंकर-अंतरिक्षपार्श्वनाथजीकी मूर्त्ति शामरंग करीव अढाइहाथ वडी तख्तनशीनहै, महाराजने इसकी जियारत किइ और वहांसें रवाना होकर वालापुर तशरीफ लाये, वालापुर छोटा है, मगर श्रावकोंकी आवादी अछी है, गर्मीयोंके दिनोमे यहां महाराजने करीव तीन महिने कयाम किया, आषाढ सुदी पंचमीके रौज वाला-पुरसें रवाना होकर पारसटेशनसे रेलमें सवार होकर जव आकोला टेशनपर रौनअफरौज हुवे, आकोलेके श्रावकोने मयवेंडवाजा वगेरा जुलुसके पेशवाइ किइ और शहरमें लेगये, वारीशका मौका करीव आगया था संवत् (१९६०)की वारीश शहर आकोलेमे गुजारी, मुल्क वराडमें सदर मुकाम आकोला एक आवाद शहर है, महोले ताजनापेंठमें एक जैनश्वेतांबरमंदिर वनाहुवा है, श्राव-कोंकी आवादी अछी व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे, इन दिनोंमें जैनएशोशिएशन ऑफ इंडिया ऑफिस वंबइसें महाराजके नामपर एक खत आया, उसमें लिखा था मुल्क अमरिकासें एक विद्वान् लिखते हैं, Jainism आर्टिकल दो हजार शब्दोंमे और Life of Tirthanker Mahavir आर्टिकल करीव एक हजार शब्दोंमें लिख भेजे तो हम अपनी वनाइहुइ किताबमें उसकों जैन-मजहबके वयानमें दर्ज करेगे, इसलिये आप दोनों आर्टिकल आठ रौजमें लिख भेजे तो वडी महेरवानी होगी, महाराजने दोनों आर्टि-कल आठ रौजमे तयार करके जैन एशोशिएशन ऑफ इंडिया ऑफिस वंबइकों यहांसे भेजे,—

५१ वादवारीशके आकोलेसे वसवारी रैल बुरानपुर तशरीफ

लेगये, श्रावकोंने मयबेंडबाजा और धजापताकाके पेंशवाइ किइ, महाराज बुरानपुरमे करीब दो महिने ठहरे, श्रावकोंको तालीम धर्मकी दिइ, बुरानपुरसे बसवारी रैल खंडवाजंकशन होते छावनीमहुटेशन उतरे, छावनी महुसे करीब (३०) मीलके फासले खुश्की रास्ते शहर माडवगढ एक पुराना जैनतीर्थ है, पेस्तर बडा था. अब छोटासा कस्बा रहगया, पुराने खंडहेर और मकानात देखकर दिलकों ताज्जुब होता है, खुशनसीबोंने क्या क्या मकान तामीर करवाये थे और अब किसकदर विरान पडे है, अतराफ मांडवगढके तरहतरहकी जडीबुटीयें लहलहा रही है, मगर उनके जाननेवाले नही रहे, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी इस वख्त यहांपर नहीं रही, हां ! एक बडा आलीशान जैनश्वेतांबरमंदिर धर्मशाला और तीर्थका कारखाना बनाहुवा है, महाराजने इस तीर्थकी जियारत किइ और वापीस छावनी महु आये, महुछावनीसे बसवारी रैल रतलाम गोधरालाइनसें अहमदाबाद टेशनपर होतेहुवे आबुरोड टेशन उतरे, आबुपहाडपर जाकर जियारत किइ; और फिर आबुरोडटेशनसें रैलमें सवार होकर अजमेर लाइनसें चितोडगढजंकशन होते हुवे शहर उदयपुर गये, और वहासे खुश्की-रास्ते तीर्थकेशरीयाजीकी जियारतके लिये रवाना हुवे वहाकी जियारत किइ वापिस लोटकर चैतसुदी छठके रोज उदयपुर तशरीफ लाये, और वहारबगीचेमे कयाम किया, उदयपुरके श्रावकोंको मालुम हुवा विद्यासागर-न्यायरत्न-महाराजशांतिविजयजी यहां तशरीफ लाये है, वास्ते दर्शनोकों आये, मूर्त्तिपूजापर व्याख्यान दिया, कइ महाशय मजहबी बहेसकेलिये महाराजके पास आया करते थे, और मजहबी बहेस हुवा करती थी.–

५२ एकरोज शहर उदयपुरके वाशिंदे कवि सुरजमलजीने गुरुभक्तिपर लावनी दोहे और शेयर बनाकर सभामें सुनाये वो इसतरह है,–

[ लावनी, ]

विद्यासागर न्यायरत्न श्रीशांतिविजयजी वडे अणगार,
संयमलीनो आपने छोडयो कुटुंबसवधन घरवार,
भावनगर गुजरातके मांही शहर वडो भारी उत्तम,
धन्य है धरणी वहांकी जहां मुनिजी लियो है जनम,
धन्य पिता मानकचंदजीको वे चलते जिन मतको धरम,
थे सतवादी जिनके पुत्र कहलाये अनुपम,-
धन्यवाद रलियात कवरकों माता बुद्धिकी थी अगम,
संस्कारसे आप आजन्में उदय भये निज पूरव करम,
महाजन विशा ओशवालथे जूठ वचन नहीं एक लगार,
संयम लिनो आपने छोड्यों कुटुंब सब धन घरबार, १
श्रीरी आत्माराम महाराज जिनोने लिये आपको है पहिचान,
दीक्षा लीनी साल उन्नीस और छत्तीस प्रमान,
वैशाख शुक्ल दशमी गुरुवारे हुवे संयमी चतुर सुजान,
मलेरकोट पाचाल मुल्कमें जानतहै सब निखिल जहान,
धर्मशास्त्रको पढे मुनीश्वर व्याकरण कोशको भारीज्ञान,
सर्व शास्त्रकों आपने पृथक् पृथक् लिने सबजान,
पंजाब पूरव मारवाड गुजरात मालवाकों दियोतार,
संयम लिनो आपने छोडयों कुटंबसबधन घरवार, २
दखनकों गये आप मुनिजी जिनमत खूब दीपाया है.
देशदेशमे आपका सुजश बहुतसा छाया है,
मानवधर्मसंहिता एक पुस्तक वहुत खूब फरमाया है,
प्रश्न पाचको खंडनकरके मजहब रिसाला बनाया है,
तीन थुइका परामर्श एक तीन थुइपें रचाया है,
विधि जैनसंस्कार बनाकर तनपर यश उपजाया है,
गृहस्थापनमें नाम हठीसिंह जन्मलग्नमें विदितविचार,
संयम लीनो आपने छोडयों कुटंबसबधन घरबार, ३

उन्नीस वर्सकी उमर आपकी जनसे यह संयम धार्यो,
धन्य मुनिजी आपनें काम क्रोध रिपुको मार्यो,
सकल कामना तजी जग्तकी लोभपापपावक जार्यो,
धन्य हो स्वामी आपने निजआतम कारज सार्यो,
विद्यासागरन्यायरत्नमुनिधर्मधुरधरपद धार्यो,—
देश देश और नगरगांवमे सुजश आपने विस्तार्यो,
सुरजमल्लकी हाथ जोडकर मुनिजी वंदना वारवार,
सयम लिनो आपने छोडयो कुटुंबसनधन घरवार, ४

[ लावनी दुसरी अष्टपदी, ]

मुनिश्री शातिविजयजी आप कर्मके मेट दिये संताप,
सुख ससारसे मुख मोडयो कुटुंनसे सब नातो तोडयो,
ध्याननिज जिनप्रभुसे जोडयो लोभ और मोहकाम छोडयो,
(दोहा) पचमहाव्रत धारके करते हो उपकार,
छकायाके जीव वचाते मुनिजी वारवार,
भूलकर नही करते संताप, कर्मके मेट दिये संताप, १
कामना छोडी सारीको तरसना मारी दारीको,
धन्य ऐसे आचारीको नमन है दृढव्रतधारीको,
(दोहा) पुदगलपरिचय छोडियो भव्यजीवनके काज,
विचरत हो सब जग्तमें धर्म ध्यानके जहाज,—
अनुकपा रही दिलमें व्याप कर्मके मेट दिये संताप,—२
दोप सन कर्मनको टार्यो गरव तनमनसे सन गार्यो,
धर्मजिनवरको विस्तार्यो अन्यमतचितमे नही धार्यो,
(दोहा) मिथ्यामतकों खंडन किनो, जिनमतमंडन कीन,
श्रीजिनप्रभुके चरन सरनमे रहते हैं लयलीन,
दुष्टजन गये आपसें काप कर्मके मेट दिये सताप, ३

इद्रियां पांचोकों मारी, आपने तजे कनक नारी
धर्मके पंथ रचे भारी, वचन सब माने संसारी,-
(दोहा) कहांतलक बर्नन करुं मुनिजी परमदयाल,
सुरजमलकी हाथ जोडकर वंदना ल्यो प्रतिपाल,
प्रभुका नितउठ करते जाप, कर्मके मेट दिये संताप,- ४



( दोहा. )

चेत सुदी छठके दिवस आये मुनिवर आप,
दर्शन दे कृतार्थ किये गये जन्मके पाप,- १
वेशाखवद एकम सुदिन करके आप विहार,
विहार करनेकी मुनिजी लिनी चितमें धार, २
श्रावकोंकी विनति करजो आप कुबुल,
हिरदेमेसें आप मुनिवर जाजोमत अब भूल, ३
मुनिमहाराजशांतिविजयजी आप गुनोंकी खान,
चौमासो किजो अठे दर्शन दिजो आन, ४
सुरजमलकी विनयभक्ति मुनिवर वारवार,
हाथ जोडकर मान जो करजो आप उपकार, ५

( शेयर )

विहार करनेकी मुनिजी आपकी सुनके खबर,
बहुत दिल मसमसाता और होता है फिकर, १
कब सुनेगें ज्ञानचर्चा आपके मुखसे जिकर,
श्रावकोंकी विनति है, चरनमे मस्तकको धर, २
प्रयाण किजो उदयपुरमें दयाकी करके नजर,
वो दिन उदय कब आयगा दर्शन दियोगें आनकर, ३



५३ उदयपुरसें रेलमें सवार होकर चितोड अजमेर फुलेरा होते-
हुवे मेरटारोड टेशन उतरे और, मेरटाफलोदीकी जियारत किइ

वहासें वापिस लोटकर फुलेराजंकशन आये. और आगे रेवाडी लाइनसें देहली होते मेरट टेशन उतरे, वहांसे (१८) कोशके फासलेपर तीर्थहस्तिनापुरकी जियारतको गये, वहांकी जियारत करके वापिस मेरट आये, मेरटसें बसवारी रैल गाजियाबाद होते सिकंदराबाद गये, आठरोज वहांपर कयाम किया व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देते थे, और आयेगये जिज्ञासुओंसे मजहबी बहेस होती थी, सिकंदराबादसें रैलमे सवार होकर अलीगढ आगरा ग्वालियर जहांसी भोपाल खंडवा वगेरा टेशनोपर होतेहुवे बुरानपुर तशरीफ लाये, वहापर एक महिना कयाम किया, इन दिनोमे शहर जबलपुरके श्रावकोका खत आया, उसमे लिखा था आप बराये महेरबानी हमारे शहरमें तशरीफ लावे, और हमकों तालीम धर्मकी देवे, महाराजने उनकी अर्ज कुबुल किइ, और बसवारी रैल खंडवा इटारसी वगेरा टेशनोपर होते दुसरे जेठवदी तीजके रौज जबलपुर पहुंचे, श्रावकोने मयनेंडबाजा वगेरा लवाजमेसें पेंशवाइ किइ, और संवत् (१९६१) की वारीश वहां गुजारी, सदर मुकाम जबलपुर नर्मदासे कुछ हटकर दाहने कनारे बसा हुवा एक आबाद शहर है, जैनश्वेतांबर श्रावकोकी आबादी और एक जैनश्वेतांबरमंदिर यहापर बनाहुवा है. करीब उसके जैनमुनियोंके ठहरनेके लिये मकान मौजूद है, महाराजने वहा कयाम फरमाया, हरहमेश व्याख्यान धर्मशास्त्रका वाज करते थे, सभा अछी भरती थी, कइ जिज्ञासुलोग मजहबी बहेसके लिये आते जाते थे, और धर्मके बारेमे बहेस होती थी, उपमितिभवप्रपंच और मेघमहोदधिग्रंथ महाराजने यहा बतौर स्वाध्यायके वांचे, बादवारीशके जबलपुरसे रैलमें सवार होकर आसनसोलके रास्ते वर्द्धमान तशरीफ लेगये, कल्पसूत्रमे जो अस्थिक गांवका जिक्र दर्ज है, जहा तीर्थंकरमहावीरस्वामीने अवल चौमासा किया था, वो यही स्थान है, यहा कोइ जैनश्वेता-

वरमंदिर नही, सिर्फ जियारतका मुकाम है, महाराजने यहांकी क्षेत्रस्पर्शना किइ, वर्द्धमानसें रैलमें सवार होकर वापिस आसन-सोल आये, आसनसोलसें कटकशहर होते, जगन्नाथपुरी पहुंचे कलकत्तेसें नैऋत्य दखनकों झुकता समुंदरके किनारे जगन्नाथपुरी एक छोटासा गांव है, पेस्तर यहां जैनतीर्थ था. फिलहाल ! नही रहा, वैदिक मजहबवाले इसको अपना तीर्थ मानते है, जगन्नाथ पुरीमें महाराज एक सप्ताह ठहरे और पुराने शिलालेख वगेराकी तलाश किइ, तवारिखोंके देखनेसें मालुम होता है, जगन्नाथजीके मंदिरको राजा अनंगभीमदेवने तामीर करवाया, और वो राजा अनंगभीमदेव सन (११७४) में उडीसेकी गदीपर था, जगन्नाथ-पुरीसे रैलमें सवार होकर वापिस शहरकटक आये, कटकशहर बडा है, श्रावकोंकी आबादी यहा नही, महाराज यहां तीनरौज ठहरे, और कटकसे रैलमें सवार होकर बंगाल नागपुर रैलसे भुसावल होते पांचोरा शहर आये, पांचोरा खानदेशमें एक छोटासा शहर है, जैनश्वेतांबरमंदिर और श्रावकोंकी आबादी अछी है, महाराज जब टेशन पांचोरेपर रौनकअफरौज हुवे श्रावकोंने पेंशवाइ किइ, व्याख्यान हमेशां देते थे, फाल्गुनमहिनेमे पा चोरेसे रवाना होकर कस्बे बालापुर तशरीफ लेगये, मौशिमगर्म वहांपर गुजारा, बालापुरसे रवाना होकर पारसटेशनसें बसवारी रैल भुसावल चालीशगाव वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे आषाढ महिनेमें धुलिया तशरीफ लाये, श्रावकोंने मय बेंडवाजा वगेरा जुलुसके पेंशवाइ किइ, शहरमें लेगये, संवत् (१९६२) की बारीश वहां गुजारी, जैनश्वेतांबरमंदिर और श्रावकोंकी आबादी अछी है, खानदेशमें धुलिया एक अछा आबाद शहर है, व्याख्या-नमें सूत्र आवश्यकलघुवृत्ति बांची, फुरसतके वख्त बतौर स्वा-ध्यायके अनेकांतजयपताका-योगशास्त्र और अध्यात्मबिंदु वगेरा ग्रंथ बांचते रहे, चौमासा खतम हुवा मौशिमशर्द फिरभी शहर

धुलियेहीमे गुजारा, इन दिनोंमें इरादा हुवा कि एक मरतवा शिखरजीकी जियारत फिर करे, मामुली कारोवार तो एसेही होते रहेगें, जो कुछ काम धर्मका करलिया वही वहेत्तर होगा,—

५४ संवत् (१९६३) चैत सुदी एकमके रौज शहर धुलियेसे यसवारीरैल रवाना हुवे, रास्तेमे जहां जहां योग था ठहरते जातेथे, वैशाख शुक्र पक्षमे शहर बनारस तशरीफ लेगये, इर्दगिर्द बनारसके सिंहपुरी चंद्रावती वगेरा तीर्थकी जियारत किइ, और वैशाख सुदी तीजके रौज बनारस यशोविजयजीजैनपाठशालाके विद्यार्थीयोंका इम्तिहान लिया और ज्येष्ठमहिनेमें मुल्क पूरवकी राजगृही पावापुरी वगेरा पंचतीर्थीकी और तीर्थसमेतशिखरजीकी जियारत किइ, मुल्क पूरवसें वापिस लोटकर वगाल नागपुररैलसें मुल्क वराड खानदेशमे चंदरौज सफर किइ. आषाढमहिनेमें टेशन भुसावल पांचोरा मनमाड और कल्यान वगेरा टेशनोंपर होते शहर पुना तशरीफ लाये. पुनेके श्रावकोंने मय वेंडवाजा वगेरा जुलुसके पेशवाइ किइ, और शहरमे लेगये. वारीशके दिन करीव आगयेथे, महाराजने संवत् (१९६३) की वारीश वहां गुजारी, सदर मुकाम पुना वंवइसे अग्निकोंनतर्फ समुंदरके पानीसें करीन दोहजारफुट उंचे मेंदानमें बसा हुवावडा आवाद शहर है, आव हवा यहांकी उमदा और इर्दगिर्द इसके बागवगीचे कसरतसें बनेहुवे है, वैतालपेंठमें बडेवडे जैनश्वेतांवरमंदिर खडे है, महाराज शुक्रवारपेंठमे शेठमोतीचंद भगवानदास जहोरीकी जैनधर्मशालामे ठहरे, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशा देतेथें, और सुननेवाले कसरतसें जमा होतेथे, पुनेमे जैनश्वेतांवर श्रावकोंकी आवादी अछी है, फुरसतके वख्त वतौर स्वाध्यायके सूरिमंत्रकल्प और शुक्रस्तव वगेरा ग्रंथ वाचे, वाद वारीशके माघमहिनेतक महाराजका कयाम शहरपुनेमेंही रहा, इन दिनोंमें महाराजकी चाची शहर भावनगरसें वास्ते महाराजसे मिलनेकों आइ, कुछदिन महाराजके मुखसे शास्त्र

सुना, वहुत खुश हुइ और कहनेलगी, हमारे खानदानमें ऐसा पुत्र पैदाहुवा जिसने परमेश्वरके नामपर अपनी जींदगी कुरवान कर दिइ, पुत्र हो तो ऐसा हो आजतक जैसे तुम अपने धर्मपर पावंद रहे आइंदेभी रहना, एक मरतवा अपने वतनकोभी चलना, और सव कुटुंवके लोगोंकों तालीम धर्मकी देना, तुम थोडे अर्सेसे जो रैलमें सफर करते हों इससे तुमको कोइ नही मानेगे ऐसा खयाल मत करना, तुमको तो सव मानेगें, महाराजने कहा, नही,! एसा खयाल नही है, वल्कि! मुजे मुल्क गुजरातके कइ श्रावकोंने अर्ज गुजारीश किइ है, आप इधरके मुल्कमें तशरीफ लावे, जव ज्ञानिदृष्टभाव होगा, उधरभी आना वनेगा, करीव अठरारौज महाराजकी चाची-शहर पुनेमे रही, और फिर अपने वतनको गइ,—

५५ माघसुदी दशमीके रौज महाराज शहरपुनेसे रैलमें सवार होकर कल्यान मनमाड और चालिसगांव वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे शहर धुलिया तशरीफ लाये, चंदरौज ठहरे, इन दिनोमें शहर मुलतान मुल्क पंजावसे श्रावकोनें वजरीये खतके अर्ज गुजारी, आप हमारे शहरमें कदमरंजा फरमावे, और हमकों तालीम धर्मकी देवे, महाराजने उनकी अर्ज कुवुल किइ, और संवत् (१९६४) के चैतसुदी एकमके रौज शहर धुलियेसें वसवारीरैल मुलतान जानेके लिये रवाना हुवे, भुसावल खंडवा भोपाल देहली अंवाला लुधिहाना अमृतसर लाहोर वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे गुजरांनवालटेशन उतरे, टेशनसे करीव आधमीलके फासलेपर जो महाराजसाहवके गुरुजी न्यायांभोनिधिविजयानंदसूरिमहाराजआत्मारामजी आनंदविजयजीसाहवकी जहां चरनपादुका वनीहुइ है, कदमवोसीकेलिये गये, वहांपर वेठकर सूरिमंत्र और वर्धमानविद्या पढी, जो गुरुजीनेही पेस्तर वक्षीथी, चरनपादुकाकी छत्रीसें टेशनपर वापिस आये, शहर गुजरांनवालके जैनश्वेतांवर श्रावकोको मालुम हुवा, विद्यासागरन्यायरत्नमहाराजशांतिविजयजीसाहव मुलतान जानेके

लिये यहां तशरीफ लाये हैं, कितनेक श्रावक शामको छह बजे टेशनपर मुलाकातको आये, और अर्ज करने लगे, आप शहरमें चलिये, महाराजने कहा, में इस वख्त सफरमें हुं. और शहर मुलतान जानेकेलिये इधर आया हुं, इसलिये जाना जरुरी है, फिर कभी देखा जायगा, एसा कहकर गुजरानवालटेशनसे रैलमे सवार होकर लाहोर रावींड और खानावल जंकशन होतेहुवे शहर मुलतान तशरीफ लेगये, श्रावकोने मय बेंडवाजा वगेरा जुलुसके पेशवाइ किइ, सदर मुकाम मुलतान चनाननदीके बाये कनारे बसाहुवा एक गुलजार शहर है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी और बाजारचुडी सरायगलीमे एक बडा जैनश्वेतांबरमंदिर बनाहुवा महाराज इसके करीब एक मकानमे ठहरे, और श्रावकोंको तालीम धर्मकी दिइ, दर असल! मुलतानके श्रावकोने महाराजको इसलिये बुलायेथे कि श्वेतांबरदिगंबरश्रावकोंकी आपसमे धर्मचर्चाके बारेमे कुछ बहेस चलती थी, महाराजने वहां जाकर जाहिर किया, जिसकिसी श्रावकको धर्मचर्चाके बारेमें जो कुछ पुछना हो, बजरीये छापेके छपवाकर पुछे, जबाबभी छपवाकर दिया जायगा, ताकि कोइ किसमकी रद बदल न होसके, महाराजने करीब दो महिनेतक शहर मुलतानमे कयाम किया, मगर किसी दिगंबरश्रावकने कोइ सवाल धर्मके बारेमें छपवाकर नही पुछे, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे, और गेरमजहबके कइलोग वास्ते मजहबी बहेसको आतेथे, इन दिनोमे महाराजने श्वेतांबर दिगंबर मजहबके बारेमे पचास नजीरे लिखकर मुलतानके जैनश्वेतांबरमंदिरकी दिवारपर आइनेमें जडवाकर लगवा दिइ, और श्वेतांबरश्रावकोंकों हिदायत किइ अगर कोइ दिगंबरश्रावक तुमसे श्वेतांबरमजहबके बारेमे कुछ पुछे तो इसकों देखकर जबाब दिया करना,

हिंदी आषाढवदी गुजराती जेठवदीतेरसके रोज महाराज बसवारीरैल मुलतानसें रवाना होकर शहर लाहोर आये, और खयाल

नही गुजरी, जहां महाराजका कयाम था, हिंदके वहुतसें शहरोंसें तार और खत महाराजके नामपर आये और उनमें लिखा था, व-सबब मूसानदीकी तुगीयानीके शहर हैदराबादमें बडा तोफान हुवा सुना है, आपकी खेरियतका हाल इरसाल फरमावे, महाराजने इनका जवाब दिया, में बदौलत देव गुरु धर्मके खुश हुं मेरेपर कोइ आफत नही गुजरी, चौमासेके बादभी कइ रौज महाराज शहर दखनहैदराबादमें ठहरे, पौषवदी नवमीके रौज शहर हैदराबाद और सिकंदराबादके श्रावकोंके शाथ महाराज बसवारी रैल तीर्थ कुल्पाक-जीकी जियारतकों गये, मंदिर यहांका निहायत पुराना होगया था, मरम्मत होनेकेलिये महाराजने श्रावकोंकों उपदेश दिया, और मरम्मत होना शुरु हुइ, कुल्पाक गाव छोटा है. श्रावकोंकी आबादी वहां नही रही, बिजवाडा लाइनमे आलेरटेशन उतरकर दोकोश आगे खुश्की रास्ते जाया जाता है, मजकुर तीर्थकी जियारत करके वापिस आलेरटेशनसें रैलमें सवार होकर वापिस दखनहैदराबाद आये, शहरहैदराबादसे रैलमें सवार होकर और-गाबाद तशरीफ लाये, चंदरौज वहां कयाम किया, व्याख्यान हमेशां देतेथे, औरंगाबादसे महाराज एकरौज इलोरेकी गुफा देखने गये, जो दौलताबादके आगे सातमील वायुकोनकों इलुर-गांवके करीब है, पुराने कारीगरोंने किसकदर पहाडोंमें उकेरकर बडी बडी गुफायें बनाइ है, देखकर ताज्जुब होगा, पहाडोंमें ऐसी गुफाये तामीर करनेवाले कारीगर आजकल नजर नही आते, महा-राज इन गुफाओंकों बडी बारीकीसे देखा, वापिस लोटते वख्त किला दौलताबाद जो रास्तेहीमें आता है देखा, औरंगाबादसें रैलमें सवार होकर मनमाड जंकशन होते शहर अहमदनगर तशरीफ लाये, श्रावकोने मय बेंडबाजा वगेरा जुलुसके पेशवाइ किइ, करीब एक महिना वहां ठहरे, इन दिनोंमे मुर्शिदाबादसे तीर्थसमेत शिखरजीके मेनेजर महाराज बहादूरसिंहजीका खत आया, उसमें

लिखाथा, पहाडसमेतशिखरजीकेलिये श्वेतांबरदिगंबरमजहबवालोंकी आपसमे जो काररवाइ चलती है, उसमे आपकी मदद होना जरुरी है, महाराजने उस वख्त समेतशिखरतीर्थके लिये मुल्कपूरवमें जाना जरुरी समजा, फाल्गुन महिनेमे शहर अहमद-नगरसें बसवारीरैल मनमाड भुसावल नागपुर आसनसोल वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे शहर कलकत्ता पहुंचे, और वहां जो अदालती काररवाइ चलतीथी उसकेलिये जरुरी बातें तीर्थसमेत शिखरजीके कार्यकर्त्ताओंकों समजा दिइ, जिससें श्वेताबरसंघके लिये आगे नतीजा अछा आया, इस कामकेलिये महाराज शहर कलकत्तेमे (१८) रौज ठहरे, कलकत्तेसे वापिस रैलमे सवार होकर उसी रास्ते फिर शहर अहमदनगर मुल्क दखनमें तशरीफ लाये, और मौशिम गर्म वहापर गुजारा,

५७ किताब जैनतीर्थगाइड जो महाराज बना रहेथे उसकेलिये मुल्क दखनकी सफर करना जरुरी समजा, शहर मद्रास तर्फ अकसर जैनमुनियोंका जाना इन दिनोंमे कम होगया है, बहेत्तर है, उधरभी तशरीफ लेजावे, इस इरादेसे हिंदी आषाढवदी पचमीके रौज शहर अहमदनगरसे रैलमे सवार होकर डोंड सोलापुर वाडी रायचूर गुंट-कल और आरकोनम होतेहुवे शहर मद्रास तशरीफ लेगये, मद्रासके श्रावक टेशन आरकोनमतक सामने आयेथे, और वहांसे आगेजव टेशन मद्रासपर रौनकअफरोज हुवे, बेंड बाजा और धजापताका वगेरा जुलुसके पेंशवाइ किइ, महाराजनें संवत् (१९६६) की वारीश वहांपर गुजारी, पर्यूषणके दिनोंमे जलसा अछा हुवा एक रौज

**मद्रासमेंल तारिख (३०) सन (१९०१) के अखबारमे महाराजके बारेमें नीचे लिखा हुवा एक आर्टिकल छपाथा, उसकी नकल इस तरह है—**

THE MAHAPAJ JAIN SWETAMBAR SADHU —A Jain correspondent writes —The Jain community can hardly have enjoyed a

more eventful period than the visit of this Jain Swetambar Sadhu, who on the 10th June last arrived here from Ahmednagar All the Jains were present at the Central Station to welcome him and they vied with one another to do him honour For more than four months he has been daily delivering lectures in the mornings on the Jain religion and on certain portions of Ramayana His unassuming appearance and the simplicity of his life is a source of spiritual inspiration to his disciples and his knowledge of Sanskrit and Jain literature is very profound The Sadhu's visit to Madras was made memorable by the celebration of the Puryusion festival which had not formally such importance as it has now It was solemnised with all its sacredness and on the fifth day which was the birthday of Mahabir, the learned Sadhu expounded the significance of the four fourteen dreams of Trisla Devi On the last day of the festival, a procession headed by the Holy Guru and his disciples went round the City of Madras and on the evening of the same day the festival was brought to an end at the Guru's residence which was gaily decorated for the occasion This Jain Sadhu has travelled extensively all over India, with the object of propagating his religion and wheresoever he went he spoke with the courage of his convictions He has written several books in Hindi and the most important of them are "Manava Dharma Sangita" and the "Jain Teerth Guide", in the latter of which there is an autobiography of the learned author Those who care for India in any way will be extremely happy to know that in the person of Vidyasagar Nyaratna-shreemat Shanti Vijayji Maharaj, ancient Jainism shines in all its purity

---

एक रौज महाराजकी व्याख्यान सभामें मुन्शी जाइजने महाराजके बारेमें भाषण दिया, चौमासा खतम होनेके बादभी महाराज चंदरौज शहर मद्रासमें ठहरे, और फिर तीर्थकुल्पाकजी जानेकेलिये रवाना हुवे, रवानगीके वख्त मुन्शीजाइजने शेयर बनाकर सुनाये वे इस तरह हैं.

[ शेयर, ]

कुछदिनों मदरास क्याथा ? क्यासें अब क्या होगया,
जो किया शरसब्ज गुलशन अब वो शहरा होगया,
हर गुलेतर सुककर कांटेके जैसा होगया,
हर सरावक सुरते बुल्बुल यह गोया होगया,
जब विहार इस जायसे ऐसे मुनिका होगया,
जैनमतवालोंको एक हेरतका नकशा होगया, — १,
विद्यासागरन्यायरत्न यह खिताबे आम है,
और मुबारक आपका शांतिविजयजी नाम है,
छ महिनेतक रहे मद्रासके गुलशनमे आप,
रुखारकीजा गुलभरे जैनोंके यहा गुलशनमे आप,
हर सरावक धर्मपर पाबंद अछा होगया,
जैनमतवालोंको एक हेरतका नकशा होगया, २,
इस वर्स चौमासेमे यहा औरही कुछ रंगथा,
वह मकान आरास्ताथा बादशाही ढंग था,
कल्प सुतरका दिलोंपर सबके सिक्का होगया,
हर सरावक धर्मपर ऐसा अनौखा होगया,
ठाठरंग महावीरके सुपनोंका ऐसा होगया,
जैनमतवालोंको एक हेरतका नकशा होगया, ३
होसके तारीफ अदा कब ? ऐसे मोहनगारकी,
शासतर गोया जबांकी धार है तलवारकी,
रातदिन है याद उन तीर्थकरोंके कारकी,
क्योंकि वो पहिचानते है अस्ल नुर व नारकी,
जाइज उनका आना जाना एक तमाशा होगया,
जैनमतवालोंको यह हैरतका नकशा होगया, ४—

५८ टेशन मद्रासमें रैलमें सवार होकर पौषवदी अष्टमीके अर्सेमे महाराज आलेर टेशनपर उतरे, और वहासे करीब दोकोस रुरुकी

रास्ते तीर्थकुलपाकजी गये, पौषवदी दशमीके असेंमें वहां यात्रीयोंका मेलाभराथा, मंदिरके शिखरपर धजादंड और कलश चढाया गया, दुसरे रोज सभा हुइ और उसमें सभाका प्रमुखस्थान महाराजको दिया गयाथा, कइ महाशयोंने भाषण दिये, शेठपुनमचंदजी छलाणी साकीन सिकंदराबाद जिनोने इस तीर्थकी मरम्मत करानेमे अछा ध्यान दिया था सभामे खडे होकर तीर्थकुल्पाकजीके बारेमें भाषण दिया, जैनश्वेतांबरधर्मोपदेष्टा विद्यासागर न्यायरत्न महाराज शांतिविजयजी मुल्क दखनमे बसवारीरेल तशरीफ लाये, हैदराबादमें चौमासा किया, तीर्थकुलपाकजीकेलिये उपदेश देनेपर मरमत हुइ और आज यह रौनक यहां हासिल हुइ है, पेस्तर यहांका मंदिर निहायत पुराना होगया था, और इसकी मरम्मत होना दरकार थी, पहले मंदिरमे यहांतक अंधेरा रहता था कि दिनमेभी बगेर चिरागके दर्शनको नही जायाजाता था, दिवारे और छत इस कदर बे मरम्मत होगई थी, अगर उसकी मरम्मत नही किड जाती तो चंदरोजमें मंदिर जमीन दोज होजाता, गये वर्स महाराज यहां तशरीफ लाये थे और इसवख्त सभाके प्रमुखस्थानपर रौनकअफरोज है, इन्ही महाराजके उपदेशसें इतनी तरक्की इस तीर्थकी हुइ है, मैं इल्तिमास करताहुं कि महाराजके कदम फिरभी इस तीर्थभूमिमें होते रहे, अखीरमें महाराजने तीर्थकी हिफाजत और तरक्कीके लिये हैदराबाद और सिकंदाराबादके श्रावकोंको हिदायत किड, दुसरे सभासदोंनेभी भाषण दिये. फोटोग्राफर्सने मयसभाके महाराजकी तस्वीर उतारी और सभा बरखास्त हुइ, तीनरोजतक मेला रहा, तीर्थकुल्पाकसें रवाना होकर आलेर टेशन आये, और वहांसे रेलमे सवार होकर सिकंदराबाद वाडी रायचूर गुंटकल होतेहुवे जब टेशन बेंगलोरपर रौनकअफरोज हुवे शहर बेंगलोरके श्रावकोंने बेंड-बाजा वगेरा लवाजमेसें पेशवाई किई, महोले चीकपेठमें कयाम किया, बेंगलोर शहर बडा आबाद है, चीकपेठमें जैनश्वेतांबरमंदिर

और श्रावकोंकी आबादी अछी है, बेंगलोरके महीशूर टाइम्स-अख-बारमें महाराजकेलिये इसतरह एक आर्टिकल छपाथा उसकी नकल यहां दिई है देखलो !

Vidyasagara Nyayaratna Sreemanth Shantivijayjee Maharaj arrived this morning from Secunderabad All the leading Marwadi and Gujurati Jain Community headed by Mr L A Pourwal of Messers Pourwal & Co waited at the Railway Station, and brought him in procession He is staying at Sowcar Ekambara Sahooj's Upstairs.

एक महिनेतक महराजने शहर बेंगलोरमें कयाम फरमाया, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशा देते थे, बेंगलोरसे रैलमे सवारहोकर गुंटकल बल्लारी वगेरा टेशनोपर होतेहुवे होस्पेट टेशन उतरे, और वहांसें रुश्की रास्ते नगरीकिष्कधा देखनेगये, जमाने रामचंद्रजीके किष्कंधामे सुग्रीव नामका राजा अमलदारी करता था, रामचद्रजी और लक्ष्मणजी जब लंका फतेह करनेको गयेथे यहां तशरीफ लाये थे, उसवक्त किष्कंधामें बडी रौनक थी, और तीर्थकर शातिनाथमहाराजका यहां जैनतीर्थ था, मगर जमाने हालमे वो-बरबाद है, आजकल न यहा कोई जैनमंदिर है न-श्रावकोंकी आबादी है, सिर्फ ! क्षेत्रस्पर्शना बाकीहैं, महाराजने यहाकी क्षेत्रस्पर्शना किई, और वापिस होस्पेट टेशन आये, होस्पेटसे रैलमे सवार होकर शहर गदग तशरीफलेगये, वहा (१५) रोज ठहरे, गदकसें न सवारीरैल विजयपुर होटकी सोलापुर डोंड अहमदनगर मनमाड भुसावल होते बालापुर तशरीफलाये, मौसिम गर्म वहा गुजरा, व्याख्यानमे स्थानागसूत्र बाचते थे, ज्येष्टमहिनेमे शहर इदोर मुल्कमालवेके श्रावकोका खत महाराजकी खिदमतमे पेश हुवा, उसमे लिखा था, आप हमारे शहरमे तशरीफ लावे और हमको तालीम धर्मकी देवे, महाराजने उनकी अर्ज

कुबुल किई, वालापुरसे पारसटेशन आकर वसवारीरेल खंडवाजं-
कशन होते जब टेशन इंदोरपर रौनकअफरोज हुवे, इंदोरके जैनश्वेता-
बर श्रावकोंनें बेंडबाजा वगेरा लवाजमेसें पेशवाई किई, और महा-
राजने संवत् (१९६७) की वारीश वहांपर गुजारी, पर्युषणपर्व खतम
होनेके बाद भाद्रपद सुदीमें तीर्थसमेतशिखरजीकी शहर कल-
कत्तमें जो अदालती कारखाई चलती थी उसमे जैनश्वेतांबरसंघके
हकमें जो फेसला हुवा उसकी खुशखबरीका तार महाराजके पास
आया, जिसके लिये पेस्तर शहर अहमदनगरसे महाराज कलकत्ते
गये थे, शहर इदोरका चौमासा खतम होनेके बाद इंदोरसे पाव-
पैदल तीर्थमांडवगढकी जियारतकों गये, वहाकी जियारत करके
वापिस छावनी महु आये, छावनीमहुसे वसवारीरेल इंदोर रतलाम
मदसोर चितोडगढ और उदयपुर टेशन होतेहुवे तीर्थकेशरी-
याजीकी जियारतकों गये, वहाकी जियारत किई, वापिस लोटकर
उदयपुर चितोड अजमेर आगरा कानपुर ईलाहाबाद मोगलसराय
गयाजी और ईसरी वगेरा टेशनोंपर होते समेतशिखरजीतीर्थको
गये, जब करीब मधुबनके पहुचे, जैनश्वेतांबरकोठीके मुनीम खजानची
नोकरचाकर चपरासी और शिखरजीकी जियारतको आयेहुवे दु-
सरे यात्रीलोग मयदेशी बाजे रोशनचौकी और धजापताका वगेरा
जुलुसके पेंशवाईको आये, और मधुबनजैनश्वेतांबरकोठीमें लेगये,
सभा हुई और तीर्थकी तरक्कीके लिये महारजने सब यात्रीयोंको
तालीम दिई, जैनश्वेतांबरकोठीके मुनीमने सभामें खडेहोकर भाषण
दिया कि तीर्थसमेतशिखरजीका पहाड राजापालगंजसे दिगंबर म-
जहबवालोने पटेपर लेलिया था, वो बातहाईकोर्टसे नामंजुरको हुई और
श्वेतांबरमजहबवालोंका जो राजापालगंजसे शिखरजीपहाडका एग्रीमेंट
था वो मंजुर रहा, यह जैनश्वेतांबरमजहबवालोंकों खुशी होनेका स-
बब है, जैनश्वेतांबरधर्मोपदेष्टा विद्यासागरन्यायरत्नमहाराजशांतिवि-
जय साहब जैनश्वेतांबरसंघको मजकुर तीर्थकी हिफाजत होनेके

नारेमें मदत देतेरहे ईसलिये आम जैनश्वेतांबरसंघ-महाराजका आमान मद है, औरभी कई महाशयोने तीर्थकी तरकीके लिये भाषण दिये, पोषसुदी तीजके रौज महाराजने तीर्थसमेतशिखरजी पहाडपर जाकर जियारत किई, पनरांरोज मधुवनमे ठहरे, मधुवनसे रवाना-होकर वापिस ईसरीटेशन आये, और वहांसे रेलमें सवार होकर गयाजी मोगलसराय होतेहुवे शहर ईलाहाबाद तशरीफ लेगये,

[ प्रदर्शन इलाहाबाद. ]

५९ इन दिनोंमे शहर इलाहाबादके बहार जमनाकनारे एक प्रदर्शन खूला हुवा था, प्रदर्शन अजायबघर नुमाइश या तरहतरहकी चीजोंका एक मख्जन कहो, सबएकही मतलबके नामहै. तरहतरहकी पुरानी चीजें शिलालेख और कइ अजायबी चीजे इस प्रदर्शनमें रखी हुइथी, तारिख-१-डिसेबर सन (१९१०) इस्वीके रौज यह प्रदर्शन खुला था, बहुतसे अकलमदोंका कहना था ऐसा प्रदर्शन नजीकके दिनोंमें हिंदमे नही हुवा, तीर्थंकर चक्रवर्ती-वासुदेव प्रति-वासुदेव और छत्रपति वगेरा बडे बडे राजे महाराजे जब मौजूद थे, बडे बडे प्रदर्शन होतेथे, और उनका नाम आयुधशाला बोलते थे, हिंदमे यह प्रदर्शन इन दिनोंमे अवल दर्जेका था, फेलाव इसका कइ मीलोंतक लंबाचोडा इमारते खूबसुरत दिवारें मजबूत और इसके भीतर जानेकेलिये दरवजे तीन रखे गये थे, करीब देढसालसे इसकी तयारीकेलिये काम शुरु था प्रदर्शनके दरवजेमे घुसते ही एक वडा मेदान जिसके तीनो तर्फ कइ मकानात बनेहुवे थे, दिनके ग्यारह बजेसे रातके ग्यारह बजेतक तीनों दरवजे खुले रखे जातेथे, और आठ आनेका टिकट लेकर हरकोइ शख्श इसे देख सकता था, दरवजोपर विजलीकी रोशनी और जाने आनेके लिये दरवजे अलग अलग रखे हुवेथे, इस प्रदर्शनमें उतनी चीजें रखी हुइथी जो बारां घंटे लगातार देखे पुरी न देखीजाय. इमारतोंमे इसकदर चीजें

रखीथी गोया! तमाम दुनियाका एक मख्जन था, एकरौज महाराज इस प्रदर्शनको देखने गये, पुराने शिलालेख और लिपि वगेराके देखनेसें पुराने जमानेके हाल मालुम होसकते है. तरहतरहकी बेशुमार अजनबी चीजे देखी गइ, जिसका हाल देखनेवालेही बयानकर सकते हैं, अरेबीयन समुंदरसें लायेहुवे दो कलेवर मछलीके एक मकानमे दो टेबलोंपर अलगअलग रखे हुवेथे, जिसमें एक मर्द और एक औरतके आकारका था, जैन शास्त्रोंमें फरमान है, मछोंके आकार चुडी और चौकीके छोडकर सबतरहके आकारमें होते हैं, यह बात इन-मर्द और औरतके कलेवरोकी मछली देखकर करार पाइ गइ, तीन महिनेतक यह प्रदर्शन खुला रखा गयाथा, और इस अर्सेमें लाखो आदमी इसको देखनेकेलिये आयेथे, शहर इलाहाबादमे उस वख्त बडी रौनक थी, इलाहाबादमें महाराज आठरौज ठहरे, इस मौकेपर औरभी कइ जैनमुनि इलाहाबादमें तशरीफ लायेथे, उनसे मिलना हुवा, इलाबादसें रैलमें सवार होकर कानपुर जहांसी बीना और बारनके रास्ते महाराज रियासत कोटेकों तशरीफ लेगये, कोटा चंमलकेदाहने कनारे एक आबाद शहर हैं, कइ जैनश्वेतांबरमंदिर और श्रावकोंकी आबादी अछी है, व्याख्यान हमेशा देतेथे.

फाल्गुनसुदी तीजके रौज महाराज शहरकोटेसें रैलमें सवार होकर तीर्थपरासलीकी जियारतकों गये, नागदा मथुरालाइनमें टेशन शामगढसे तीनकोश खुश्की रास्ते परासली एक पुराना जैनतीर्थ है, कस्बेके नामसे तीर्थका नामभी परासली कहागया, फाल्गुनसुदी चौथसे अष्टमीतक यात्रीयोंका वहां मेला भराथा, महाराज उस मेलेमें शरीफ हुवे. तीर्थपरासलीकी जियारत किइ, पांचरौज वहां ठहरे, एकरौज व्याख्यान दिया, परासली तीर्थसें लोटकर शामगढ टेशन आये, शामगढसे पंचपहाड टेशन उतरकर खुश्की रास्ते पांचकोश दूर भानपुर गये, आठरौज वहां ठहरे व्याख्यान

दिया, भानपुरसे वापिस टेशन पचपहाड आये और रैलमे सवार होकर महेंदपुर रोड टेशन उतरे, और वहासें खुश्की रास्ते महेंद-पुर तशरीफ लेगये. श्रावकोंने मय बेंडवाजा वगेरा जुलुसके पेंशवाइ किइ, महेंदपुरमें कइ जैनश्वेतांवरमंदिर बनेहुवे और श्रावकोकी आ-बादी कसरतसें हैं, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशा जारी था, दोमहिने-तक महाराजका कयाम महेंदपुरमे रहा. एकरौज श्रीयुत खूनचंदजी साकीन उणेल जो स्थानकवासी मजहवके एक श्रावक थे, महाराजके पास वास्ते धर्मचर्चाके आये, उसवक्त महेंदपुरके श्रावक और गेरमज-हवके कई पंडित सभामें मौजूद थे, जिनमंदिर और जिनमूर्त्तिके बारेमे बहेस हुई, वाद उनोंने अपने वतनपर जाकर तारिख २९–५–११ के रौज वजरीये जैनसमाचार क्रोडपत्रके (२२) सवाल महाराजसे पुछे, उनका जवाब महाराजने बजरीये छापेके दिया, और उस किताबका नाम सनमपरस्तिये जैन रखा, सवालकर्त्ताकों और दुसरोंकों बजरीये डाकके भेजदिई,

५० एकरौज महेंदपुरके जैनश्वेतांवर श्रावक नंदरामजी चपाला-लजी कविने गुरुभक्तिपर एक लावनी बनाकर व्याख्यान सभामे सुनाई, उसकी नकल इसतरह है–

[ लावनी, ]

उन्नीसें अडसठ अक्षयत्रीज पुरमहेंद्रपर आनचडे,
विद्यासागर न्यायरत्नमुनि शांतिविजय महाराज बडे,
विजयानंद सूरीश्वर राजा उनके हैगें वडे दिवान,
विद्यासागर विरुद धराते जानेमारा आलम जहान,
मुल्कमुल्कका दौरा करते जिनशासनका देखे काम,
धर्मक्षेत्रका करे सुधारा न्यायरत्न इनका है नाम.
बडे धीर गंभीर मुनीश्वर तोडे कुमतिके रगडे,
विद्यासागर न्यायरत्नमुनि शांतिविजय महाराज बडे. १,
करे अदालत नित्य मुनीश्वर प्रतिवादी वादी आते.

न्यायरत्नमहाराज उन्हींकों स्याद्वादसें समजाते,
पुन्य करे सो स्वर्ग जायगा पाप करे पावे गोते,
विद्यासागर देख कायदा भव्यजीवकों फरमाते,
तीनरत्नके धारी गुरुजी समताके भंडार वडे.
विद्यासागर न्यायरत्नमुनि शांतिविजय महाराज वडे. २,
विहार करते वादी डरते जैनधर्म देते डंका,
पृथवी पावन किनी वहुतेरी नजीक तो रहगइ लंका,
विद्यासागर नाम जो सुन ले वादी नही वहां रहवे रात,
सुमति सुनकर दोडाआवे पांवपडे और जोडे हाथ,
जैसा नाम गुन तैसा मुनिका धर्मरत्न शिरताज वडे,
विद्यासागर न्यायरत्नमुनि शांतिविजय महाराज वडे. ३,
धन्य हमारे भाग्य आज मुज न्यायरत्नमुनि आन मिले,
चिंतामणि प्रभुपास पसाये अशुभ कर्म सब दूर टले,
मास कल्पकी मेरी विनति हाथ जोडकर करता आज.
शेरा दिजो देर न किजो न्यायरत्न श्रीगुरु महाराज.
देश कालके ज्ञाता मुनिके चंपालाल नित चरण पडे,
विद्यासागर न्यायरत्नमुनि शांतिविजय महाराज वडे. ४,

[ शेयर ]

उन्नीसे अडसठके सालमें विद्यासागर आये.
पुर महेंद्रके श्रावक मिलकर धूमधामसें लाये,
वेंडवाजा और धजापताका श्राविका मंगल गाये,
धन्य पिता और धन्य मातके कुलमें ऐसे आये, १
विजयानंद सूरीश्वर साहव उनके हैंगें चेले,
जैनधर्मका मर्म वता वादीकी शंका खोले,
न्यायरत्नका वाजे डंका चार दिशामें फेले,
मुल्कमुल्कमे धर्म दिपावे फिर रहे आप अकेले, २
चौकी उपर सजकर वेठे जैसे उग्यों भान,

शांतिविजय महाराज मुनीश्वर पुरे है विद्वान्.
जिन आगमको खोले वोले देखो भविजन ध्यान,
कालिंगडा और भैरवी रागिनी देते मुनि व्याख्यान, ३
व्याख्यानके माही आते गरीब और धनवान्,
भिन्नभिन्न सबको समजाते रखते सबपर ध्यान,
स्याद्वाद जिनवरकी वानी वाचे चतुर सुजान,
जैसा नाम गुन तैसा मुनिका वडे गुनोकी खान, ४



६१ ज्येष्ठ महिनेमें शहर करांची मुल्क सिंधके श्रावकोंका एक खत महाराजकी खिदमतमें पेश हुवा, और उसमे लिखा था, आप हमारे शहरमे तशरीफ लावे और हमकों तालीम धर्मकी देवे, महाराजेने उनकी अर्ज मंजुर किइ, और महेद्रपुरसे रवाना होकर महेद्पुररोड टेशनसे रैलमे सवार हुवे, टेशन रतलाम चितोडगढ अजमेर मारवाड जंकशन पाली लुनी वालोतरा वाडमेर और छोर वगेरा टेशनोपर होतेहुवे टेशन सिंधहैदरावाद तशरीफ लाये, सिंध हैदरावादमे जैनश्वेतानरश्रावकोंके घर पांचसातही है, मगर कितनेक श्रावक कराचीके महाराजके सामने आयेथे, उनोने मयबेंडवाजा वगेरा जुलुसके पेंशवाइ कीइ, तीनरोज वहांपर ठहरे, व्याख्यान दिया, सदर मुकाम सिंधहैदरावाद सिंधुनदीकी उस धारापर जिसका नाम फुलाली है, दाहने कनारे वसाहुवा है, सिधुनदीकी वडीधारा वहासे तीनमील पश्चिमकों गई है. सिंधहैदरावाद एक वडा आवाद शहर है. जैनश्वेतानरमंदिर यहापर नही, सिंधहैदरावादसें रैलमे सवार होकर महाराज शहर कराची तशरीफ लेगये. जो पचास कोशके फासलेपर वाके है. आषाढ सुदी दुज वुधवारके रोज महाराज जब टेशन करांचीपर रौनक अफरोज हुवे, श्रावकोंने बेंडवाजा और धजापताका वगेरा लावजमेसें पेंशवाइ किइ, महोले रणछोडलाइन जैनश्वेतानरमंदिरके करीव एक मकानमे कयाम किया, और संवत्

(१९६८) की वारीश यहांपर गुजारी, हिंदकी पश्चिम बाजुको समुंदरके कनारेपर बसाहुवा करांची बंदर एक बडा आबाद शहर है, बडीबडी ष्टीमरे यहां आतीजाती हैं, शहर करांचीमें जैनश्वेतांबरमुनिजनोंका आना अकसर कम होता है, मुल्क गुजरात काठीयावाड और कच्छके श्रावकोंकी आबादी ज्यादा महोले रणछोड लाइनमें एक जैनश्वेतांबरमंदिर बनाहुवा है, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां जारीथा. पर्यूषणके दिनोंमें महाराजकी धर्मतालीमसे देवद्रव्यका इंतजाम अछा हुवा, जिनजिन श्रावकोंके घर देवद्रव्य जमाथा, जिनमंदिरकी तिजोरीमें लाकर रखना और मुनीम गुमास्ते रखकर जिनमंदिरका काम चलाना मुकरर हुवा, तारिख १३ मी अगष्ट सन (१९११) के जैनपत्रमें जैनश्वेतांबर श्रावक बापुलालजी निहालचंदजी चाहवाले साकीन करांचीने मुनिसमागमपर एक आर्टिकल लिखा, उसका मतलब इसतरह है—

"जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा विद्यासागर न्यायरत्न महाराज शांतिविजयजी इससाल शहर करांचीमे चौमासा ठहरे है, श्रावकोंको शास्त्र सुननेका बडा फायदा मिला, सच सच बयान फरमानेवाले और बेपरवाह हो तो ऐसे हो, हिंदके तमाम मुल्कोंमे महाराज सफर करचुके है, मुजे रुबरु मिलनेका मौका आजतक नही मिलाथा, इस चौमासेमे मिला, मुल्क सिंधमें जैनमुनिमहाराजोंका आना कम होता है, महाराजके आनेसे जैनधर्मकी अछी तरकी हुइ, श्रावकलोग चाहे जितने भाषण देवे, मगर मुनि महाराजके व्याख्यानका असर दुसराही है, मुनिमार्ग बडा है. उसकी बराबरी गृहस्थोसें नही होसकती. करांचीके चौमासेमें महाराजने महोले रणछोड लाइनमे श्रीमान् करसनदासजीके मकानमे तीनदफे जाहिर भाषण दिये," श्रीयुत बापुलालजी निहालचंदजी चाहवालोंके लिखे हुवे. आर्टिकलका मतलब थोडेमे उपर मुजब था.

करांचीके चौमासेमें महाराजके दर्शनोको शहर मुलतान हालानवा और वाडमेरके श्रावक आये, मुल्क सिंधमें नसरपुर और नगरठठा पुराने शहर है, इन दोनों शहरोंमें पेस्तर जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी कसरतसे थी, शहर उमरकोट जो सिंधहैदराबादसे थोडी दूर और छोर टेशनसे नजदीक है. पेस्तर वहां जैनश्वेतांबर श्रावकोंके (१२००) घर और (३) जैनश्वेतांबर मंदिर थे, जमाने हालमें कुछ (३०) घर श्रावकोंके और (१) मंदिर रहगया, हालांनवां जो सिंधहैदराबादसे उत्तरको करीब (३०) कोशके फासलेपर पुराना शहर है, उसमे (४०) घर जैनश्वेतांबर श्रावकोंके और (१) मंदिर अबभी मौजूद है, करांचीका चौमासा खतम करके हिंदी मृगशीरवदि पंचमीके रोज महाराज करांचीसे बमवारी रैल सिंधहैदराबाद छोड और वाडमेर वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे बालोतरा टेशन उतरे, श्रावकोंने देशी बाजे वगेरासे पेशवाइ किइ. बालोतरा एक छोटासा कस्बा है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी और जैनश्वेतांबरमंदिर यहांपर बने हुवे है, महाराज चंदरोज यहां ठहरे, श्रावकोंको तालीम धर्मकी दिइ, जसोलगांव जो बालोतरेसे करीब देढकोशके फासलेपर वाके है. वहांके श्रावक जो तेरह पंथ मजहबमें एतकात लायेथे, महाराजके पास मजहबी बहेसको आये, मूर्त्तिपूजापर बहेस हुइ, महाराजने मुताबिक जैनशास्त्रके जबाब दिया, कइ श्रावक मूर्त्तिपर फिर एतकात लाये,–

६२–बालोतरसें तीनकोशके फासलेपर खुश्की रास्ते जो तीर्थ नाकोडा पार्श्वनाथ एक बडी जैनजियारतगाह है, महाराज उसकी जियारतको गये, पेस्तर यहां एक विरमपुरनगर बसता था, आजकल छोटासा गांव रहगया, इस तीर्थका नाम नाकोडा पार्श्वनाथ इस वजहसे कहागयाकि नाकोडागामके पाससे यह मूर्त्ति निकसी थी, नाकोडागांव इस जगहसे करीब नवकोशके फासलेपर पश्चिम दखनकी कोनमें अबभी मौजूद है, नाकोडा पार्श्वनाथकी

मूर्त्ति वहांसे यहां विरमपुरमे लाईगई, वीरमपुरनगरके श्रावकोंने यहां संवत् (१५००) में वडाआलिशान शिखरबंदमंदिर तामीर करवाया, मूर्त्ति तख्तनशीन किई, और तीर्थ मशहूर हुवा, हिंदी मृगशीर वदी (१२) शुक्रवारके रौज महाराजने इस तीर्थकी जियारत किई, और वापिस लालोतरा तशरीफ लाये, मृगशीर सुदी पंचमीके रौज वालोतरेसें रैलमें सवार होकर मारवाड जंकशन नयाशहर अजमेर जयपुर देहली गाजियावाद वगेरा टेशनोंपर होते मेरटटेशन उतरे, और वहांसे खुश्की रास्ते तीर्थ हस्तिनापुरकी जियारतको गये, इन दिनोंमें देहलीमें कोरोनेशन दरवार था, देहलीके चारकोशके फासलेपर जो छोटे दादाजीकी छत्री वनीहुई है, महाराज वहां एक मकानमें चंदरौज ठहरे,

[ वयान कोरोनेशन दरवार देहली, ]

कोरोनशेनदरवार सन (१९११) डिसेंवर तारीख (१२) मीको हुवा, देहलीके वाहर वडे लंवे चोडे मेंदानमें शहेनशाही और देशी राजओंके अलग अलग लगेहुवे डेहरे तंवु सडके धजापताका वागवगीचोकी रौनक कावील देखनेके थी, देहलीकी दरवारी छावनी कहो, या कोरोनेशन दरवार कहो, वात एकही है, देहलीमें इसवख्त जितना मेंला भराथा, नजीकके वर्सोंमें नही भरा, टेशनसें लेकर कोरोनेशन दरवारी छावनीतक वडा जलसा था, हिंदके राजे युरोप एशिया और अमरिकाके कई महाशय इसवख्त यहां आयेहुवे थे, एक रौज कोरोनेशन दरवारकी जगह जहां राजे महाराजोके डेहरे तंवु लगेहुवे थे उस रास्ते निकले, हिंदकी दौलत मानों इसवख्त देहलीमें जमाहुई थी, महराज देखकर शामको वापिस अपने मकानपर चाये जहां ठहरेथे,—

देहलीसें रैलमे सवार होकर जयपुर अजमेर मारवाड जंकशन वालोतरा वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे समंदरडीटेशने उतरे, और वहांसे (११) कोश खुशकी रास्ते शहर जालोर गये, जालोरके

श्रावकोंने देशी वाजे वगेरा लवाजमेसे पेंशवाई किई, जालोर शहर वडा है, जैनश्वेतांवर श्रावकोकी आवादी कसरतसे और वडेवडे जैनश्वेतांवरमंदिर यहांपर वने हुवे है, किला जालोरका एक पहाड-परवनाहुवा वहुत मजबूत और संगीन है, उपर राजा कुमारपालका तामीर करवाया हुवा जैनश्वेतावरमंदिर वडीलागतका है, जालोरमे महाराज करीव सवादोमहिने ठहरे, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशा देते थे, जालोरसें रवाना होकर उसी रास्ते वापिस अजमेर आये और चंदरोज यहा ठहरे.

६३ संवत् (१९६९) चैतसुदी एकमके रोज अजमेरसे रेलमे सवार होकर उस जगहकी जियारत करनेके लिये रवाना हुवे जहां कनकखलतापसाश्रमके नजीक चंडकौशिकनागको तीर्थंकर महावीर स्वामीने प्रतिबोध दिया था, अजमेर फुलेरा जयपुर वादीकुई अचनेरा मथुरा हाथरस अलीगढ चंदौसी मुरादावाद और लुकसर वगेरा टेशनोपर होतेहुवे कनकखलतापसआश्रमके करीब कन-खलगावको पहुचे, कनखलगावसे उत्तरपूर्वकी तर्फ जहां तीर्थंकरमहावीरस्वामीने चंडकौशिकनागकों प्रतिवोध दिया था, महाराज उस जगहकी क्षेत्रस्पर्शना करनेको गये, यहांपर इसवख्त कोई स्थान वनाहुवा नही, सिर्फ! क्षेत्रस्पर्शना वाकी है, महाराजने इसजगहकी क्षेत्रस्पर्शना किई, और कनखलगावसे वापिस लोट-कर हरद्वार गये, यहापर गगानदीके कनारे घाट वनेहुवे है, और वैदिकमजहववाले यहा अपना तीर्थ मानते है, हरद्वारसे रेलमे सवार होकर लुक्सर मुरादावाद चंदोसी अलीगढ हाथरस मथुरा होतेहुवे शहर आगरा तशरीफ लाये, और टेशनके पास धर्मशालामे कयाम किया, आगरेके जैनश्वेतांवर श्रावकोंकों मालुम होनेसे दर्शनको आये, ओर शहरमे चलनेकी दरखास्त किइ, महाराजने कहा, मुजे इसवख्त वालापुर मुल्क वराड जाना जरुरी है, हाल यहा धर्मशालामेही चंदरोज ठहरुंगा, श्रावकलोग धर्मशालामेही

आते जातेथे, और धर्मके बारेमें सवाल जवाब करते रहते थे, आगरेसे वसवारी रैल गवालियर जहांसी भुपाल इटारसी खंडवा भुसावल होतेहुवे पारस टेशन आये, और पारससें तीनकोश खुश्की रास्ते हिंदी वैशाख वदी चौथके रौज वालापुर तशरीफ लेगये, मौशिम गर्मा वहां गुजारा, व्याख्यानमें सूत्रज्ञाताधर्मकथा, रायपसेणी और भावनाअधिकारमें शांतिनाथचरित वांचा, जब वैशाख जेठ और पहला आषाढ खतम हुवा, इन दिनोंमें आकोलेके श्रावकोंका एक अरीजा महाराजकी खिदमतमें पेश हुवा, उसमें लिखा था, आप हमारे शहरमें तशरीफ लावे और वारीश गुजारे, महाराजने उनकी अर्ज मंजुर किइ और वालापुरसें रवाना होकर पारस टेशन होतेहुवे आकोला आये, श्रावकोंने बेंडवाजा वगेरा जुलुसके पेशवाइ किइ, और संवत् (१९६९) की वारीश महाराजने आकोलेमें गुजारी, ज्ञातासूत्र और पांडवचरित व्याख्यानमे वाचा सुननेवाले कसरतसें जमा होतेथे, त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित प्रशमरतिसटीक और यशोधरचरित वतौर स्वाध्यायके वाचे, बाद वारीशके आकोलेसे वसवारी रैल अमरावती तशरीफ लेगये, मौशिम शर्द वहांपर गुजारा, अमरावतीसें रैलमें सवार होकर वर्धा हिंगनघाट वगेरा टेशनोपर होते टेशन भांडक पहुंचे, और वहासें दोकोश खुश्की रास्ते तीर्थभद्रावतीकी जियारतकों गये, पेस्तर मजकुर नगरी वडी थी, अब छोटासा कस्बा रहगया, तीर्थंकर पार्श्वनाथ महाराजकी अतिशययुक्त मूर्त्तिकी जियारत किइ, तीन रौज वहां ठहरे, भांडक टेशनसें रैलमें सवार होकर वरोरा वर्धा होते शहर नागपुर फाल्गुन महिमें गये, मौशिम गर्मा वहा गुजारा, इन दिनोंमें यहा नागपुरमें एक आर्यसमाज महाशयरिपिरामजीशर्माने जो सवाल जैनधर्मके वारेमें पुछे थे, उनका जवाब महाराजने नागपुर मारवाडी अखबारमे दिया, नागपुरमें महाराज करीब साढे-तीन महिने ठहरे, आषाढवदी तीज शनिवारके रौज नागपुरसे

रैलमें सवार होकर वर्धा वडनेरा मोर्चापुर आकोला शेहगांव और जलम वगेरा टेशनोंपर होते खामगांम तशरीफ लाये, श्रावकोंने वेंडनाजा वगेरा लवाजमेसें पेंशवाइ किड, दशरौज वहां ठहरे, खामगामसे वसवारी रैल जलम भुसावल जलगाव चालिसगाव मनमाड और कल्यान वगेरा टेशनोंपर होते पुनाटेशनपर रौनकअफरोज हुवे. चौमासेका वख्त करीव आगयाथा, पुनेके श्रावक लोग टेशनपर आये और पुनेमे चौमासा ठहरनेकी अर्ज गुजारी, महाराजने उनकी अर्ज मंजुर किइ, पुनेके श्रावकोंने वेंडवाजा वगेरा लवाजमेसें पेशवाइ किइ और संवत् (१९७०) की वारीश महाराजने पुनेमे गुजारी, व्याख्यानमें सुननेवाले लोग कसरतसें जमा होतेथे, दरमयान इस चौमासेके मौजे अमरेली जिले काठियावाडसे महाराजकी हकीकी वहेन महाराजसे मिलनेके लिये आइ, महाराजके मुखसें व्याख्यान सुना, और अर्ज करनेलगी एकवख्त मुकाम अमरेली जिले काठियावाडकोभी चलना चाहिये, महाराजने फरमाया तीर्थशत्रुंजयकी जियारतके लिये आनेपर उधरभी आसकुंगा, चौमासा खतम हुवा, वादवारीशके महाराज सदरमे गये, और मौशिम शर्द वहांपर गुजारा, वापिस पुनेमें आकर सवत् (१९७१) हिंदी वैशाखवदी छठ गुरुवारके रौज शहर पुनेसे रैलमे सवार होकर मुकाम पाचोरा खानदेश तशरीफ लेगये, करीव दो महिने वहा कयाम किया, हिंदी आषाढवदी त्रयोदशी रविवारके रौज पांचोरेसें वसवारी रैल चालीशगाव जंकशन होते जव टेशन धुलियापर रौनक अफरौज हुवे धुलियेके श्रावकोने मयवेंडवाजा वगेरा जुलुमके पेंशवाइ किइ, महाराजने संवत् (१९७१) की वारीश शहर धुलियेमें गुजारी, व्याख्यानमे ज्ञातासूत्र और शांतिनाथचरित वाचा, चौमासा खतम होनेपर श्रावकोंकी आर्जूसे मौशिम शर्द शहर धुलियेहीमें गुजारा,—

६४ माघसुदी पंचमीके रौज अपनी आंखोके चश्मोंकी तलाशीके लिये शहर धुलियेसें रैलमें सवार होकर चालिगगांव मनमाड और कल्यान वगेरा टेशनोंपर होते शहर बंबइ तशरीफ लाये, हिंदकी अकलीममें बंबइ एक नायाव और वेमीशाल शहर है, हिंदमें इसकी बराबरीका कोइ शहर नही, मुंबादेवीके नामसे शहरका नाम बंबइ कहलाया, खूबसुरत रंगरौशन कियेहुवे मकानात और बडेबडे दौलतमंद लोग यहां आबाद है. तिजारतके लिये बंबइ सबसे बढकर इंग्लांड चीन जापान फ्रांस जर्मनी रुस इटाली स्पेन नोर्वे स्वीटझ-लौंड बेलजीयम अरब इरान काबुल आफ्रिका और अमरिका जिस मुल्ककी चीज चाहो यहां मिलसकती है, तरहतरहकी पुशाक पहनेहुवे मुल्कमुल्कके मर्द औरत छोटे बडे इसकदर शौखसें चलरहे है, जैसे कोइ अमीर उमराव देखलो, हरवख्त और हरबाजारमे ऐसी भींड हुजुम देखोगें कि आदमीयोंका चलना दुसवार होगा, बंबइमें गुजराती महराठी और उर्दू जबान अकसर ज्यादह बोलीजाती है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी कसरतसें और कइ बडे आलीशान जैनश्वेतांबरमंदिर बडी लागतके बनेहुवे है, महाराज अपनी आंखोंकी बीमारीके लिये चश्मोंकी तलाशीमें बंबइ आये थे, और न्यु सरदार आश्रममे ठहरे थे, वहांपर कइ जैनश्वेतांबर श्रावक महाराजको मिलने आये, विलायतसें जो डबल ब्रीचफ्रेम सोर्टसाइडके चश्मे आयेथे, उनके नंबरकी तलाशी करना जरुरी था, वो किइ, और डाक्तरसे दवा लिइ जिससें फायदा हुवा, चंदरौज बंबइमें ठहरे, एकरौज परेल मुकामपर शेठ गोकलदास मूलचंद्रकी जैनबोर्डिंगमें जाकर धर्मकी पुख्तगीपर भाषण दिया, और बंबइसें रवाना होकर बसवारी रैल वापिस धुलिये आये, और वैशाखसुदी छठतक शहर धुलियेहीमे रहे, इन दिनोंमें सीरपुरके श्रावक आनकर अर्ज करने लगे आप हमारे शहरमे तशरीफ लावे और हमकों तालीम धर्मकी देवे, महाराजने उनकी

अर्ज कुबुल किइ, और धुलियेसें रवाना होकर खुश्की रास्ते तापीनदी उतरे, और जब सीरपुर पहुंचे सीरपुरके श्रावकोने बेंड और देशी बाजे वगेरा लवाजमोंसे पेंशवाइ किइ, दो जैनश्वेतांबरमदिर और श्रावकोकी आबादी अछी है, महाराजने सवत् (१९७२) की चारीश वहा गुजारी, व्याख्यानमे आवश्यकसूत्र और पाडवचरित बाचा, कइरौज व्याख्यानसभामें कर्म और उद्यमपर चर्चा चली, महाराजका फरमाना था तकदीर अकेली फलदेती है, तद्वीर अकेली फल नही देती, तद्वीर बेकार जाती है. मगर तकदीर फलदिखाती है, इसलिये तकदीर कौवतवाली है. धर्मशास्त्रका फरमान है निकाचित कर्मके सामने उद्यम कुछकर नही सकता, कर्म प्रकृति चाहे अछी हो या बुरी उसको कोइ शख्स उद्यम करके रोकना चाहे तो रोकनही सकता, फर्ज करो! जब आदमीका मरना नजदीक आता है, चाहे जितनी कोइ कोशिश करे मगर मरनेकी आफतसें बच नही सकता, इसलिये कर्म अकेले फल देते है, ऐसा कहना गलत नही, सीरपुरका चौमासा खतम करके हिंदी मृगशीरवदी पंचमीके रौज महाराज सीरपुरसें रवाना हुवे, तापीनदी उतरकर टेशन नलडानेसे रैलमे सवार हुवे. टेशन डोडायचा आमलनेर जलगांव भुसावल बडनेरा वर्धा और हिंगनघाट वगेरा टेशनोंपर होते भाडक टेशन उतरे, तीर्थ भद्रावतीकी जियारत किइ, और वापिस उसी रास्ते भुसावल आये, और जलगाव पाचोरा टेशनपर होते जब टेशन चालीसगांवपर रौनकअफरौज हुवे, श्रावकोंने बेंडवाजा और धजापताका वगेरा लवाजमेसे पेंशवाइ किइ, व्याख्यान हमेशा देते थे, और सुननेवाले लोग कसरतसें जमा होतेथे, चालीसगावमे महाराज वीशरौज ठहरे, चालीशगावसे रैलमें सवार होकर मनमाड इगतपुरी कसाराघाट वगेरा टेशनोंपर होते आसनगाव टेशन उतरे, और शाहपुर तशरीफ लेगये, जो टेशन आसनगावसें खुश्की रास्ते थोडी दूर है, श्रावकोंने देशीबाजे और धजापताका वगेरा लवाज-

मेसे पेशवाड किइ, शाहपुर एक छोटासा शहर है, महाराज यहां करीब एक महिना ठहरे, महाराजकी धर्मतालीमसें नया जैनमंदिर तामीर करानेकी शुरुआत हुइ, कइ वर्सोंसें यहांपर एक घरदे-रासर था,

६५ इन दिनोंमें तारिख (१२) मी मार्च सन (१९१६) के रौज महाराजके नामपर जिले हजारीबाग मुल्क बंगालसें श्रावकमहाराज बाहादूरसिंहजीका तार आया, उसमें इसतरह लिखा था,–

(Shikharji case fixed for 20th march come on that day Maharaj Bahâdursing-Hazâreebâg-)

इसका माइना यह हुवा कि–शिखरजीका केश (२०) मी मार्च सन (१९१६) के रौज है, उसपर आप जरूर पधारे, इस तारको पाकर तारिख (१७) मी मार्चके रौज शाहपुरसे आसनगांव टेशन आनकर रैलमे सवार हुवे, और मनमाड भुसावल खंडवा इटारसी जबलपुर इलाहाबाद छोंकी मोगलसराय और गयाजी वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे तारिख (१९) मी मार्च सन (१९१६) के रौज शामकों टेशन हजारीबाग पहुंचे, और तीर्थसमेतशिखरजीके कार्यकर्त्ताकों मीले, मजकुर तीर्थके बारेमें जो कुछ सलाह देना मुनासिब था दिइ, मुकाम हजारीबागमें आठरौज ठहरे, और इरादा किया तीर्थसमेतशिखरके करीब आये है, जियारत करते चले, हजारीबागसें रैलमें सवार होकर इसरी टेशनके रास्ते तीर्थसमेत शिखरजीकी जियारको गये, पहाडपर जाकर जियारत किइ, और वापिस इसरी टेशन आकर बसवारीरैल उसी रास्ते शाहपुर आये जिस रास्तेसें गये थे, शाहपुरसे चैतसुदी दुज संवत् (१९७३) के रौज रैलमें सवार होकर मनमाड चालीसगांव वगेरा टेशनोंपर होते मुकाम पांचोरा खानदेशमे तशरीफ लाये, मौशिम गर्म वहांपर गुजारा, आषाढवदी दुज शनिवारके रौज बसवारीरैल चालिशगांव कल्याण लानोली तलेगावदभाडा पुना सताररोड कराड मीरज वगेरा

टेशनोपर होतेहुवे जन कोलापुर पहुंचे. को
और देशीवाजे वगेरा लवाजमेसें पेशवाइ कि
यहांपर जैनश्वेतांबरमंदिर नही, पनरावीश
है, इधरके शहरोंमें जैनमुनियोंका आना न
इसलिये श्रावक लोग धर्मके ज्यादह प्यासे
आनेसे श्रावकोंने बडी खुशी मानी, महारा
व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देते थे,
सुननेको आते थे, और मजहबी बहेस हुव
कोलापुर पहाडोंके बीच बसाहुवा एक उम
रवाना होकर महाराज खुश्की रास्ते शहर
जो करीब (१२) कोशके फासलेपर वाके है
देशीवाजे वगेरा लवाजमेसें पेशवाइ किइ,
महाराज शहर निपाणीमे गये, और संवत्
यहांपर गुजारी, निपाणी एक छोटासा शह
गांवोंसे जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी ज्य
तांबरमंदिर यहांपर बनेहुवे हैं, जिनमे एक
बावन जिनालयका निहायत खूबसुरत बना
उमदा जलसा हुवा, व्याख्यान सभाकसरत

६६ संवत् (१९७३) (७४) का जैनधु
गढ राजपुतानावास्तव्य राजगुरु पंडित मो
महात्मा कुलगुरुकृत छपकर जाहिर हुवा था
राजको समर्पणपत्रिका दिइ थी वो इसतरह
प्रातःस्मरणीय विद्वान्शिरोमणि परमतार्किक
फेजमाब मबजने इल्म मोअले उल अल्काब

६८ दखनमथुरासे रामेश्वरतक रैलगइ है, और नजदीकभी है, इसलिये महाराजने सोचा! रामेश्वरटापुभी होतेचले, दखन-मथुरासे रैलमें सवार होकर मानामदुरा परमकुडी रामनद्मंडप और पामवन वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे रामेश्वर तशरीफ लेगये, रामनद् टेशनके आगे हजारो द्रख्त नारियल और ताडके खडे है, मंडप टेशनके आगे समुंदरकी खाडीपर करीव दो मीलतक पुल बधा-हुवा और उसपरसें रैल आगे पामवनकों जाती है, पामवनके आगे रामेश्वरटेशन उतरकर रामेश्वरगांव जायाजाता है, जो टेशनसे करीब आधमीलके फासलेपर होगा, रामेश्वरका टापु जहां व्यागारुनदी समुंदरसें मीली है उससे थोडी दूर पूरवकनारे (११) मील लंबा (६) मील चौडा आबाद है. मकान पकेबने हुवे बाजार छोटा मगर यात्रीयोंके आनेजानेकी वजहसे रौनकभी रखता है, जैनरामायणमें बयान है, जब रामचंदजी और लक्ष्मणजी लंकाकों फतेह करने गये थे यहां तशरीफ लाये थे, और उनके शाथ सुग्रीव वरविराध अंगद हनुमान और भामंडल वगेरा वडेवडे बहादूर योद्धे थे, जमाने तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीके एक जैनमंदिर यहांपर बना हुवा था, मगर वो तबदीलजमानेके अब नही रहा, समुंदरकी खाडी जो लंका और रामेश्वरके बीच पडी है, उसको रामेश्वरकी खाडी बोलते है, रामेश्वरगांवमे आजकल कोइ जैनमंदिर या श्रावकोंकी आबादी नही रही, वैदिक मजहबका एक बहुत बडा शिवमंदिर बनाहुवा है, वैदिक मजहबके यात्री यहां जियारतकों आते है और अपना तीर्थ मानते है, महाराज रामेश्वरमें तीनरोज रहे, धर्मके बारेमें पुराने शिलालेखोंकी तलाश किइ और जो कुछ सबुत मीले अपनी नोटबुकमें दर्ज किये, रामेश्वरसे रैलमें सवार होकर वापिस मदुराटेशन आये. मदुरासे बसवारी रैल त्रिचीनापल्ली इरोड जोलार-पेठ बेंगलोर हुबली बेंलगांव और मीरज होते वापिस रहमतपुर-टेशन उतरे, जहांसे गये थे,—

रहेमतपुरमें करीब पनरांरोज रहे, श्रावकोंको तालीम धर्मकी दिइ, रहेमतपुरसे रेलमें सवार होकर टेशन सतारारोड उतरे, श्रावकोंने बेंडबाजा वगेरा लवाजमेसें पेंशवाइ किइ, महोले सदाशिव पेठमे जैनश्वेतांबरमंदिरके करीब एक मकानमे ठहरे, पचास वर्स पेस्तर यहां (६०) घर जैनश्वेताबर श्रावकोंके थे आजकल सिर्फ ! पाचसात घर रहगये है, महाराजने व्याख्यान धर्मशास्त्रका दिया. कितनेक श्रावकोंने महाराजके मुखसे व्रत नियम इख्तियार किये, मुल्क महाराष्ट्रमे सतारा एक पुराना शहर है, पेस्तर बडी तरक्कीपर था, अबभी रौनकदार है, फाल्गुनसुदी दशमीके रौज सतारेसें रवाना होकर सतारारोड टेशनपर आये, और रेलमें सवार होकर वाटार टेशन तशरीफ लाये, वहासे तीनमीलके फासलेपर जो देउरगांव आबाद है, वहां गये, यहा एक जैनश्वेतांबरमंदिर और दश पनरां श्रावकोंके घर है. व्याख्यानसूत्र आवश्यकका देते थे, महाराज देउरगाबमें करीब (२८) रौज ठहरे, इन दिनोंमे तीर्थ कुल्पाक कमीटीके ओनररी सेक्रेटरी श्रीयुत पुनमचदजी छलाणी साकीन सिकदराबाद मुल्क दखनका तार आया, उसमे लिखाथा आप चैतसुदी पुनमके अर्सेपर तीर्थ कुल्पाकजीके मेलेमे तशरीफ लावे, आपकी धर्मतालीमसे इस तीर्थका जीर्णोद्धार हुवा है. तारकी नकल इस तरह हैं.—

Muni Shantivijejee Maharaj, vathar station

Pleased wire received Jatra this poonam, come urgently five days early wire starting, second telegram, *Poonamchand Chhalani, Secunderabad*

मुनि शांतिविजयजी महाराज स्टेशन वाटहार,—

महरवानी करके तार पहुंचतेही आप पुनमकी यात्राके लिये रवाना होवे, पांचरौजतक मेला रहेगां, यह दुसरा टेलीग्राफ है, आप रवाना होकर जवाव तारमें इरसाल फरमावे,— } पुनमचंद छलाणी,—
सिकदराबाद,—दखन,

६९ महाराज देउरगांवसें रवाना होकर वाटार टेशन आये और रैलमें सवार होकर टेशन पुना सोलापुर वाडी दखन हैदराबाद और सिकंदरावाद होतेहुवे आलेर टेशनके रास्ते तीर्थ कुल्पाकजी तशरीफ लेगये, जीर्णोद्धारका काम देखा, यात्रीयोंका मेला अछा भराथा, पंचतीर्थीकी रचना किइगइ थी. रथयात्राका जलसा निकला, एक रौज महाराजने वडीसभामें भाषण दिया, और पांच रौज तीर्थ कुल्पाकजीमें ठहरे, तीर्थ कुल्पाकजीसे वापिस लोटकर आलेर टेशनसें रैलमें सवार हुवे और सिकदरावाद दखन हैदराबाद चाडी सोलापुर पुना चींचवड और सेलारवाडी वगेरा टेशनोंपर होते तलेगांवदभाडा टेशन उतरे, और शहर जुनेरके श्रावकोंकी आर्जुसें जुनेर तशरीफ लेगये, तलेगांवदभाडासे खुश्की रास्ते करीव (१८) कोशके फासलेपर जुनेर एक पुराना शहर है, जुनेरके श्रावकोंने मय बेंडबाजा वगेरा जुलुसके पेंशवाइ किइ, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देते थे, मौशिम गर्म महाराजने यहा गुजारा, आषाढसुदी पंचमी रविवारके रौज जुनेरसे रवाना होकर तलेगांव दभाडा टेशन आये, और वसवारी रैल जव पुना टेशनपर निकले, पुनेके श्रावकोंकों मालुम होनेसें टेशनपर आये और शहरमें चलनेकी अर्ज किइ, चौमासेका वख्त करीव आगया था, महाराजने उनकी अर्ज कुबुल किइ, पुनेके श्रावकोंने बेंडबाजा वगेरा लवाजमेंसे पेंशवाइ किइ, और शहरमें लेगये, संवत (१९७४) की वारीश महाराजने शहर पुनेमें गुजारी, इससाल मुताबिक लौकिक पंचांगके दो श्रावण महिने थे, पर्युषण किस महिनेमे करना इसके खुलासेमें महाराजने किताब पर्यूषणनिर्णय नामकी वनाकर छपवा दिइ और वजरीये डाकके मुल्कोंमें तकसीम करदिइ, शहर पुनेमें श्रावकोंकी आवादी अछी है, नजीकके गावोंसेंभी कइ श्रावक व्याख्यान सुननेकों आते थे, पर्यूषणके दिनोंमे व्याख्यानसभा कसरतसे भरती थी. करीव (१५००) मनुष्य सभामे जमा होतेथे, तीर्थंकर महावीर-

स्वामीका जन्म अधिकार महाराजने रागरागि
सभामें सरगी तवले और हारमोनियमवज
गानेपर संगत करतेथे महाराजकी व्याख्यान
करने नही पाताथा, और उसके लिये दो च
रखतेथे, चौमासा खतम होनेपर हिंदी पोषवर्द
वदी पंचमीके रौज शहर पुनेसें रैलमे सवार हे
होतेहुवे जब दादर टेशनपर तशरीफ लाये,
वाइकों आये, दादरमें एक जैनश्वेतावरमं
आवादी अछी है, महाराज श्रीयुत हेमचंदजी
ठहरे थे, शहर बंबइ पायधोनी शातिनाथजीके
नानचंदजी और व मुकाम थाणेसें श्रीयुत य
मुलाकातको आये और धर्मशास्त्रकी बाते क
महाराजने दादरमें कयाम फरमाया बंबइ पाय
भायखल्ला वालकेश्वर और घाटकोपर वगेराके
दर्शनोको आते जातेथे, और धर्मके वारेमे स

पोषसुदी पुनमके रौज महाराजका जाना प
शेठ गोकलभाइ मूलचंदजीकी जैन वोर्डिगमें
जैन विद्यार्थी और दुसरे श्रोते जमा हुवेथे,
वारेमे दो घंटेतक वाज किया, वोर्डिंगकी व
देखकर महाराज खुश हुवे, और शामको वा
आये, एकरौज दादर मुकामसें रैलमे सवार हो
उतरे और कनेरीकी गुफा देखने गये, पहाडं
गुफाये बनीहुइ देखी और शामकों वापिस द
महाराजका ठहरना दादर मुकामपर करीब (

मशहूर हुवा है, तीर्थके मेनेजर और दुसरे यात्री मय देशीवाजे वगेरा लवाजमेसे पेंशवाइकों आये, यहांपर एक वडा आलीशान जैनश्वेतांबरमंदिर बनाहुवा है, महाराजने तीर्थकी जियारत किइ, व्याख्यान दिया, तीनरौज यहांपर ठहरे, झगडीया टेशनसे रेलमें सवार होकर अंकलेश्वर भरुच पालेज मियागांम वडोदा आनंद अहमदावाद कलोल महेसाना जोटाणा कटोसण और गहेलडा वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे तीर्थ भोयणीजीकी जियारतको गये तीर्थकी जियारत किइ, (६) रौज यहांपर ठहरे, आयेहुवे यात्रीयोकों तालीम धर्मकी दिइ, माघसुदी दुजके रौज महाराज तीर्थभोयणीसे वापिस लोटकर वसधारी रेल कलोल अहमदावाद वडोदा भरुच वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे जव सुरत टेशनपर रौनक अफरौज हुवे टेशनके प्लेट फार्मपर सुरत हरिपुराके श्रावक और रांदेरके नगरशेठ छोटालालजी नवलचंद्रजी वगेरा मय वेडवाजा वगेरा जुलुसके पेंशवाइको आये थे उनोंने पेंशवाइ किइ, और शहरमें लेगये, हरिपुरेके जैनश्वेतांबरमंदिरके दर्शन किये, और सामनेके मकानमे कयाम किया, तालीम धर्मकी दिइ उसवख्त व्याख्यानसभामें करीव (५००) श्रोता मौजूद थे, माघसुदी अष्टमीके रौज रादेरके श्रावक नगरशेठ छोटालालजी नवलचंदजीकी विनतिसें महाराज कस्बे रांदेरको तशरीफ लेगये, उनोने मय वेडवाजा वगेरा जुलुसके पेंशवाइ किइ. चाररौज वहांपर ठहरे, व्याख्यान धर्मशास्त्र वाज फरमाया, सभामें करीव (४००) श्रोते मौजूद थे, रादेरसे फिर सुरत तशरीफ लाये, और माघसुदी पौर्णिमातक सुरतमें ठहरे,

७० सुरतसे हिंदी फाल्गुन वदी एकमके रौज रेलमें सवार होकर नवसारी वलसाड दमण और दादर वगेरा टेशनोपर होते टेशन थाणेपर तशरीफ लाये, श्रावकोंने पेशवाइ किइ, और संवत् (१९७५)की वारीश महाराजने यहांपर गुजारी, व्याख्यानसभा अछी भरती थी, घाटकोपर वगेराके श्रावक श्राविका हमेशा वजरीये

रैलके व्याख्यानमें आते थे और व्याख्यान सुनकर अपने वतनको जाते थे, थाणा नगरी मुल्क कोंकनमें निहायत पुरानी है, सिद्ध चक्रजीके आराधन करनेवाले श्रीपालराजा जब शहर उज्जैनसें मुल्कोंकी सफरको निकले थे, यहा तशरीफ लाये थे, थाणेके चौमासेमे महाराजने अधिकमासनिर्णय और अधिकमासदर्पण किताब छपवाकर बजरीये डाकके मुल्कोंमे रवाना किइ, चौमासा खतम होनेपर महाराजने तीर्थ शत्रुंजयजी गिरनारजीकी जियारत जानेका इरादा किया, और उसका प्रोग्राम अखबारे जैनमे इस तरह छपा था,

[ प्रोग्राम, ]

७१ जैनश्वेतांबरधर्मोपदेष्टा विद्यासागर न्यायरत्न महाराज शांतिविजयजी शहर थाणेसें तीर्थ शत्रुंजय गिरनारजीकी जियारतको तशरीफ लेजानेवाले है. करीब (३०) वर्स होगये महाराज हिंदके बडेबडे शहरमें वास्ते धर्मतालीमके सफर करते रहे, इसीलिये उनको शत्रुंजय गिरनारतर्फ तशरीफ लेजानेका मौका नही मिला, अब मौका मिला है. इसलिये संवत् (१९७५) पौंपसुदी दुज शनिवारके रौंज शहर थाणेसे रवाना होकर बंबइ दादर सुरत वडोदा अहमदाबाद विरमगांम वढवाण लींमडी धौला और शिहोर वगेरा टेशनोपर होतेहुवे पौंपसुदी चौथ सोमवारके रौंज पालिताने टेशनपर उतरेंगें, थाणेसें पालितानेके बीचमे किसी जगह ठहरेगें नही, तीर्थ शत्रुंजयजीमें जाकर मजकुर तीर्थकी जियारत करेगें, वहासें लोटकर शिहोर तशरीफ लावेगें और वहां चदरौंज कयाम करेगें, फिर शहर अमरेली तशरीफ लेजायगें, और वहा थोडे रौंज ठहरेगें, अमरेलीसें लाठी जेतपुर जेतलसर वगेरा टेशनोपर होतेहुवे शहर जुनागढ जायगें, और तीर्थ गिरनारजीकी जियारत करेगें, तीर्थ गिरनारजीसे लोटकर राजकोट वढवाण विरमगाव होते वापिस वडोदा बचडके रास्ते मुल्क दखनतर्फ फिर पधारेगें मुल्क काठियावाडमे महाराजका कयाम करीब तीन हि

कयाम शहर अमरेलीमें करीव (१५) रौज रहा, फाल्गुनसुदी ग्यारसके रौज अमरेलीसें रेलमें सवार होकर लाठी जेतपुर जेतलसर वगेरा टेशनोंपर होते हुवे तीर्थ गिरनारजीकी जियारतके लिये गये, और जब टेशन जुनागढ पहुंचे, जुनागढके श्रावकोने वेंडबाजा वगेरा लवाजमेंसे पेंशवाइ किइ, गिरनार पहाडकी दामनमें जुनागढ एक अछा आवाद शहर है, तिजारतकी तरकी और लोग अमन चैन करते हे. जैनश्वेतांवर मंदिर श्रावकोकी आवादी और वडीवडी धर्मशाला यात्रीयोके लिये वनी हुइ है, जहां दिलचाहे ठहरे,

७३ फाल्गुनसुदी चतुर्दशीके रौज महाराज तीर्थ गिरनारजीके पहाडपर जियारतकों गये, पहाडपर जानेके लिये पथरोकी पकी सीढियां वनी हुइ है, मुल्क सौराष्ट्रका शिरोताज गिरनार पहाड समुंदरके पानीसे (३६७५) फुटउंचा खुब सुरत जैनश्वेतांवर मंदिर वडीवडी गुफायें और तरह तरहकी जडी बुंटीयां यहांपर खडी है, तीर्थंकर नेमनाथजीकी टोंकमें छोटे वडे (२२) जैनश्वेतांवर मंदिर वने हुवे, खास! तीर्थंकर नेमनाथजीका मंदिर वावन जिनालयका वडा संगीन और आलीशान शिखरवंद वना हुवा मूलनायक तीर्थंकर नेमनाथजीकी शामरंग मूर्त्ति करीव तीनहाथ वडी इसमें तख्तनशीन है, दुसरीटोंक मेकरवशीकी तीसरीटोंक संग्राम सोनीकी चौथीटोंक राजा कुमारपालकी पांचमीटोंक वस्तुपाल तेजपालकी छठीटोंक राजा संप्रतिकी गजपद कुंड और सुरजकुड वगेरा मकानात वडी लागतके वने हुवे हैं. महाराजने इन सव टोंक और आगे मंदिरोंकी जियारत किइ और पांचमी टोंक जानेके लिये रवाना हुवे. नेमनाथजीकी टोंकसे आगे पांचमी टोंककों जानेका रास्ता है, और रास्तेमें पकी सीढियांवनी हुइ है, थोडी दूर चढनेसें राजुल गुफा आयगी, इसमें सती राजीमतीकी मूर्ति वनी हुइ है. आगे गोमुखीकुंड इसके पास एकही पथरपर वनेहुवे चौइस तीर्थंकरोके चरन जायेनशीन है, आगे चढनेसे

अंबादेवीका मंदिर—असलमें यह अंबादेवी तीर्थंकर नेमनाथजीकी शासनदेवी जानना, जब करीब पांचमी टोंकके पहुंचते है, तो पहाडका चढाव निहायत सख्त है. जब खास पांचमी टोंकपर पहुंचोगें तो मालुम होगा आसानमे आगये, इसपर खडे होकर देखे तो नीचेकी जमीन पहाडका घेराव और द्रख्तोंकें झुंड दिलको अजायबकर देते हैं, पांचमी टोंकपर तीर्थंकर नेमनाथजीकी मूर्त्ति पहाडमे उकेरी हुइ और उसके नीचे लिखा है, संवत् (१८९७) आसोजवदी सप्तमी गुरुवारके रौज शेठ देवचंदजी लक्ष्मीचदजीनें इसका जीर्णोद्धार करवाया, इसमूर्त्तिपर एक छत्री बनीहुई है, मूर्त्तिके नीचे वरदत्त गणधरके चरन जायेनशीन है. महाराजने पाचमी टोंककी जियारत किइ और वापिस नेमनाथजीकी टोंकपर आये जिसको पहली टोंक कहते है, धर्मशालामें एकरात कयाम किया, दुसरे रौज सहसावनकी जियारतको गये, हजारों आम्रके वृक्ष यहांपर पेस्तर मौजूद थे, इसलिये संस्कृत जबानमे इसको सहस्राम्रवन लिखागया, नेमनाथजीकी टोंकसे सहस्राम्रवन जानेका रास्ता गोमुखीकुंडके पास बांयी तर्फको जाता है, और रास्तेमे पथरोंकी पकी सीढीयां बनीहुइ है, थोडी दूर चढाव और थोडी दुर उतार इस तरह चलते जब सहसावनके नजीक पहुंचोगे द्रख्तोकी छायामे ढकाहुवा एक वन दिखाइ देगा, तीर्थंकर नेमनाथ महाराजने यहां दीक्षा इख्तियार किइ थी, इसवरतभी यहा सेंकडो आम्रवृक्ष खडे हैं, और परींदे उनमे कलोले करते रहते हैं, तीर्थंकरनेमनाथ महाराजके चरनोकी उमदा छत्री और अतराफ इसके पक्काकोट खीचाहुवा है, महाराजने सहस्राम्रवनकी जियारत किइ और वापिस नेमनाथजीकी टोंकपर आये, तीसरे रौज पहाड गिरनारसे नीचे उतरे. और शहर जुनागढमे तशरीफ लाये, जुनागढमे महाराजका कयाम एक महिना रहा, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशा देते थे, और सुननेवाले कसरतसें जमा होतेथे, मगर चढरौजमे अशुभ कर्मके उदयसे

महाराजके शरीरमें अजीर्ण वीमारी पैदा होगइ, और तबीयतमें बेचैनी रहनेलगी. जामनगर और वेरावलके श्रावक महाराजको अपने शहरमें लेजानेके लिये आर्जु तमन्ना करने आये, मगर महाराजका जाना उधर हुवा नही, और जुनागढसें रैलमे सवार होकर जेतलसर राजकोट वढवाणकेंप विरमगांम अहमदाबाद वडौदा सुरत वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे संवत् (१९७६) चैतसुदी पुनमके रौज शहर बंबइ तशरीफ लाये, लालबागकी धर्मशालामें ठहरे, बंबइके श्रावकोंने हरतरहसे खिदमत किइ और इलाज करवाते रहे, करीब दो महिना बंबइमें कयाम रहा, इन दिनोंमें करांचीके श्रावक पोपटलाल त्रिभोवनदासजीजोकि-शहर बंबइ आये थे, महाराजके दर्शनोको आये, और उनोंने महाराजसे तबदीले आब हवाकी ख्वाहेस जाहिर किइ, और करांची मुल्कसिंधमे चलनेकी अर्जे किइ, महाराजने उनकी अर्ज मंजुर किइ, और ज्येष्ठसुदी पुनमके रौज बंबइ कोलाबे टेशनसें रैलमें सवार होकर सुरत वडौदा अहमदाबाद मारवाडजंकशन सिधहैदराबाद वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे करांची टेशनपर तशरीफ लाये, करांचीके श्रावक वेडबाजा धजापताका वगेरा लवाजमेके शाथ पेंशवाइकों आये, मगर बसबब वीमारीके महाराजके वदनमे पेंदल चलनेकी ताकात नही थी, मजबूरन महाराजको मोटारमें बेठाकर मय बेडबाजा वगेरा जुलुसके पेंशवाइ करके शहरमें लेगये, और बडी खिदमत किइ, महोले रणछोड लाइनमे करीब जैन मंदिरके कयाम किया, और संवत् (१९७६)की वारीश वहांपर गुजारी, इस चौमासेमे महाराजसे व्याख्यान वाचना नही बनसका, वीमारी दिन ब-दिन तरकीपर होतीगइ, बदन इसकदर कमजोर होगया चलने फिरनेकीभी ताकात नही रही, अनाज खाना तो दूर रहा मगर दुधभी दिनमे दश तोलेसे ज्यादा हजम नही होसकताथा, जैनश्वेतांबर श्रावक डोक्तर चिमनलालजी साकीन अहमदाबाद हाल मुकाम करांची था, उनोंने

महाराजकी बीमारीका इलाज करना शुरुकिया, दिनमें दो दफे आनकर महाराजकी तवीयतका हाल देखतेथे, चौमासेभर महाराज बीमार रहे, चौमासा खतम होनेपर एकरौज महाराजने ख्वाब (स्वप्न) देखा कि-में समुंदरको पारकर किनारेपर आ खडा हुं. दुसरे रौज दुसरा ख्वाब देखा कि-आसानसें एक देवविमान सामने उतरता हुवा नजदीक आता है. इन दोनों ख्वाबोंसें महाराजने अदाज किया मेरी बीमारी अब चदरौजमे रफा होगी, और इसीतरह हुवा, फाल्गुन महिनेसें महाराजकी तदुरस्ती अछी होती गइ, और सवत् (१९७७)के चैत महिनेमे विल्कुल दुरुस्त होगये, चैतसुदी सप्तमीके रौजसे व्याख्यान देना शुरु किया, चैतसुदी त्रयोदशीके रौज तीर्थंकर महावीर स्वामीकी जयंतीका जलसा कियागया, उसरौज सभामे करीब(५००) मनुष्य जमाथे, सभाका प्रमुखस्थान महाराजको दिया गया था, वक्ताओने भाषण दिये, अखीरमे महाराजने दो घंटेतक महावीर स्वामीकी प्रतिदिन चर्यापर वाज किया, बाद हारमोनियम तबले वगेरा साजसें गवैयोंने गायन किया, और सभा बरखास्त हुइ.

वैशाखसुदी त्रयोदशीके रौज शहर करांचीके जैनश्वेतांबरमंदिरमे शिवाय मूलनायकके दुसरी (६) जिनप्रतिमाकी प्रतिष्ठाका मुहूर्त्त था, महाराजके हाथसे प्रतिष्ठाका कामकाज होता रहा, आठरौजतक जलसा हुवा, मंडप उमदा सजाया गयाथा, करांचीके श्रावक शेठ माणकचंदजी खचंदजी महेताकी तर्फसे सब खर्च किया गया था, वैशाख सुदी त्रयोदशीके रौज दिनके नवबजे चंद्रस्वर जलतत्त्व चलते वख्त महाराजके हाथसे छह जिनमूर्त्तियोंकी प्रतिष्ठा हुइ, और वर्द्धमान विद्यासे मंत्रित करके वासक्षेप किया गया, विधि करानेके लिये मुल्क गुजरात छांणी गांवके श्रावक नगीनदासजी और मोहनलालजी वगेरा आयेथे.-

७४ ज्येष्ठ महिनेमे महाराजने शहर करांचीसें रवाना होनेकी तयारी किइ, करांचीके श्रावकोने अर्ज गुजारी इस शहरकी आनहवा

आपके वास्ते मुफीद साबीत हुइ है. इसलिये दुसरा चौमासाभी आप यहीं गुजारे, महाराजने इनकी अर्ज मंजुर किइ और आगेजानेका कस्द मौकुफ रखा, संवत् (१९७७) की वारीश शहर करांचीहीमें गुजारी, व्याख्यानमें ज्ञातासूत्र और पांडवचरित वाचा, सुननेवाले कसरतसें जमा होतेथे, वाद वारीशके माघसुदी द्वादशीतक शहर करांचीहीमें ठहरे, त्रयोदशीके रौज करांचीसे रैलमें सवार होकर सिंधहैदरावाद वाडमेर पाली मारवाडजंकशन अजमेर चितोडगढ और उदयपुर टेशनपर होतेहुवे तीर्थ केशरीयाजीकी जियारतकों गये, मजकुर तीर्थकी जियारत किइ, और जब वापिस उदयपुर आये उदयपुरके श्रावकोंने अर्ज किइ आपका तीर्थ केशरीयाजीकी जियारतके लिये दो तीन मरतवा आनाहुवा, मगर शहरमें पधारना नहीबना, अब शहरमें तशरीफ लावे और हमकों तालीम धर्मकी देवे, महाराजने उनकी अर्ज मंजुर किइ और संवत् (१९७८) चैतसुदी दुजके रौज शहर उदयपुरमें तशरीफ लेगये, श्रावकोंनें देशी वाजे वगेरा लवाजमेके पेंशवाइ किइ, चाहवाइकी धर्मशालामें क्याम किया, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशां देतेथे, और सुननेवाले कसरतसें जमा होतेथे, वैशाखसुदी चतुर्थीतक महाराज शहर उदयपुरमें ठहरे, वैशाखसुदी पंचमीके रौज उदयपुरसे रैलमें सवार होकर करेडा टेशनपर उतरे, टेशनके सामनेही करेडा पार्श्वनाथजीका वडा आलीशान शिखरबंद मंदिर दिखाइ देता है, महाराज टेशनसें उतरकर करेडा गांवको गये, यह गांव पेस्तर केलापुर पत्तनके नामसें मशहूर था, और जैनोंकी वडी आवादी थी. आजकल छोटासा गांव रहगया, यहांका मंदिर वडे घेरेमें संगीन बेंश कींमती बनाहुवा शिल्पकारी इसकी निहायत उमदा तीनमंडप नव चौकी चारसो आठ थंभे और वावनडेवरी इसमें बनीहुइ है. कोइ पुराना शिलालेख इसवख्त यहापर नही मिलता, मगर यहांके वाशिंदे कहा करते है यह मंदिर संवत् (७२४) के अर्सेका बनाहुवा

संवत् (११००) मे इसका जीर्णोद्धार कराया गया और अब करीब (२०) वर्ससे इसका पुनरुद्धार हो रहा है, महाराजने इस केलापुर पत्तन तीर्थकी जियारत किइ, दुसरे रौज रेलमें सवार होकर चितोड अजमेर और मारवाड जंक्शन वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे आबुरोड टेशन उतरे और गांवमे जाकर जैनश्वेतांबरधर्मशालामे कयाम फरमाया, दुसरे रौज महाराज आबुपहाडपर जियारतकों गये, और देलवाडेमें करीब जैनमंदिरके एक जैनश्वेतांबर धर्मशालामे ठहरे, आबुतीर्थकी जियारत किइ, मुल्क मुल्कके यात्री यहांपर आये हुवेथे, उनकी अर्जसें वैशाखसुदी चतुर्दशीके रौज महाराजने यहां व्याख्यान धर्मशास्त्रका दिया, सभा कसरतसें भरी थी, धर्मके बारेमे बडेबडे सवाल जवाब हुवे. एकरौज अचलगढकी जियारतकों गये, जो पांचमीलके फासलेपर वाके है, अचलगढकी जियारत करके शामकों वापिस देलवाडे आगये, दुसरे रौज आबु पहाडसे नीचे उतरकर रैलपर सवार हुवे और अहमदाबाद बडौदा भरुच सुरत वलसाड और विरार वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे बंबइके पास दादर टेशन तशरीफ लाये, थाणेके जैनश्वेतांबर श्रावक दादर टेशनतक पैशवाइकों आयेथे, हिंदी ज्येष्ठवदी तीजके रौज जब थाणा टेशनपर रौनकअफरौज हुवे, श्रावकोंने मयबेंडवाजा वगेरा लवाजमेके पैशवाइ किइ, और शहरमें लेगये, बारीशके दिन करीब आगयेथे, थाणेके श्रावकोंकी इल्तिजासे संवत् (१९७८) की बारीश वहांपर गुजारी, व्याख्यान धर्मशास्त्रका हमेशा देतेथे, घाटकोपर दादर मुलुंद वगेरासे श्रावक श्राविका बजरीये रैलके हमेशां महाराजका व्याख्यान सुननेकों आतेथे, और व्याख्यान सुनकर दुसरी रैलमे अपने वतनको चले जातेथे, किताब जैनमत प्रभाकर यहांपर बनाइ, कइदफे थाणेसें बसवारी रैल बंबइ जाना होताथा, और बंबइमे छापखाने वगेराका जो कुछ काम होताथा करके शामकों वापिस थाणे चले आतेथे, चौमासा खतम होनेपर

महाराज थाणेसे रैलमें सवार होकर घाटकोपर तशरीफ लेगये, वहां चंदरौज ठहरे, घाटकोपरसें दादर और दादरसे बंबइ तशरीफ लेगये, करीब विक्टोरिया टर्मिनसके लोंकागछके उपाश्रयमे ठहरे, बंबइके श्रावक हरवख्त दर्शनोंकों आतेथे, और धर्मके बारेमें सवाल पुछतेथे, बंबइसे रवाना होकर कल्याणी गये, और वहांपर चंदरौज ठहरे, कल्याणीसें वापिस थाणा आये, और मौशिम शर्द थाणेमे गुजारा, गर्मीयोंके दिनोमें थाणेसे रवाना होकर कुर्ला और कुर्लेसें मुकाम माहीम तशरीफ लाये, वहा चंदरौज ठहरे, वारीशका मौका करीब आनेपर आपाटसुदी तीजके रौज मुकाम माहीमसे रवाना हुवे, और बंबइ विक्टोरिया टर्मिनस टेशनसे रैलमे सवार होकर कल्याणी पुना डोंड सोलापुर रायचूर वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे जब आदौनी टेशनपर रौनक अफरौज हुवे. आदौनीके श्रावकोंने मयबेंडबाजा वगेरा लवाजमेके पेंशवाइ किइ, महाराज दो रौज वहां ठहरे, व्याख्यान दिया, कइ महाशयवास्ते धर्मचर्चाकों आते जातेथे.

७५ आदौनीसे रवाना होकर जंकशनगुंटकल होतेहुवे जब बलारी टेशनपर तशरीफ लाये बलारीके श्रावकोंने बेंडबाजा वगेरा लवाजमेसे पेंशवाइ किइ, चौमासेका वख्त करीब आगयाथा महाराजने यहां अय्याम वारीश कयाम फरमाया, व्याख्यान हमेशा देतेथे, सभा अछी भरतीथी. मुल्क कर्णाटकमें बलारी शहर बडा है. तिजारतकी तरकी और जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी यहांपर कसरतसे है, एक जैनश्वेतांबरमंदिर यहांपर ठीक बाजारमे बनाहुवा और एक धर्मशाला जैनमुनियोके ठहरनेके लिये तामीर है, महाराज उसीमे ठहरेथे, यहाके जैनश्वेतांबरमंदिरमे मूलनायक तीर्थंकरपार्श्वनाथमहाराजकी दृष्टि पश्चिम सन्मुख थी वो आषाढ-सुदी त्रयोदशीके रौज दिनके दशबजे अपने चंद्रस्वर चलते वख्त पूर्वसन्मुख किइ गइ. वर्धमान विद्या पढकर विधिके साथ मूलनायक वगेरा तीन जिनप्रतिमा पूर्वसन्मुख तख्तनशीन किइ, उस

रौज बडा जलसा हुवा, स्वधर्मीवात्सल्य कियागया, बलारीके श्रावकोंमे तीन वर्स हुवे टोतड पड गयेथे, महाराजकी धर्मतालीमसे आपसमे संप होगया, जो जो श्रावक धर्मश्रद्धामें कमजोर होगये थे, महाराजका व्याख्यान सुनकर हमेशाके लिये साबीत कदम होगये, पर्यूषणके दिनोंमे कल्पसूत्रका जलसा निहायत उमदा हुवा, तीर्थंकर महावीरस्वामीके जन्मका अधिकार रागरागिनीसें वाचा, उसवख्त व्याख्यानसभामे हारमोनियम तबले और फिडल वगेरा बाजे बजानेवाले महाराजके गायनकी संगत करतेथे, महाराजके बलारीमे तशरीफ लानेसे तरक्की धर्मकी अछी हुइ, ऐसे मुल्कोंमे जैनमुनियोंका आना जाना कम होनेसें श्रावकलोग धर्मके प्यासे ज्यादा बने रहते है, महाराजके आनेसें धार्मिक फायदा अछा हुवा.—

७६ बलारीका किला संगीन बनाहुवा जिसके इर्दगिर्द पहाड और तरहतरहकी वनास्पति जडीबुटीये खडी हैं. सहदेवी शंखावली काकजंघा विष्णुक्रांता लजवती अकोल केतकी और मयूरशिखा वगेरा जडी मौजूद है, जगह सोहावनी और उपजाउ एक रौज महाराज किला और इर्दगिर्दकी जगह देखने गये, मणिमंत्र और औषधियोंका प्रभाव जो शास्त्रोंमे लिखा है. जाननेवाले जानते है, नही जाननेवालोंके लिये जडीबुटीये एक तरहका घास हैं, चौमासा खतम होनेपर हिंदी मृगसीर वदी छठ शुक्रवारके रौज बलारीसे रेलमे सवार होकर महाराज जब गुंटकलजंकशन होते आदोनी टेशनपर रौनकअफरोज हुवे, आदोनीके श्रावकमहाराजकी मुलाकातकों आये, और शहरमे चलनेकी आर्जू किइ, मगर महाराजकों बंबइ जाना जरुरी था, इसलिये आदोनीमे जाना नही हुवा, आदोनीसें आगे बसवारी रेल रायचूर वाडी सोलापुर डोंड पुना कल्याणी वगेरा टेशनोंपर होतेहुवे जब बंबइ विक्टोरिया टर्मिनस टेशनपर तशरीफ लाये, थाणा माहिम और बंबइके

श्रावक टेशनपर हाजिर थे मीले, और कोटमें लेगये, लोंकागछके उपाश्रयमें कयाम किया और चंदरौज ठहरे,–

तारिख २७–११–सन (१९२२) के सांजवर्तमानमें जाहिर हुवाथा, महाराज शांतिविजयजी साहब ब–मुकाम बलारी मुल्क कर्णाटकका चौमासा खतम करके बंबइमें तशरीफ लाये है, और हाल यहां चंदरौज कयाम फरमावेगें, बंबइसें महाराज माहिम तशरीफ लेगये, और जैनश्वेतांबर मंदिरके पासके मकानमें कयाम किया, बंबइ दादर घाटकोपर और थाणेके श्रावक महाराजके दर्शनोंकों आते जातेथे, माहिमके श्रावकोंने महाराजकी बडी खिदमत किइ, महाराज हमेशां उनकों तालीम धर्मकी देतेथे, और मौसिम शर्द महाराजने वहांपर गुजारा,—

महाराजने अपनेपाससें कितनेक पुस्तक–"विद्यासागरशांतिविजयजी जैन लाइब्रेरी" मुकाम सीरपुर जिला खानदेशको बतौर भेंटके यहांसे भेजे, कोइ महाशय बांचे पढे और ज्ञानका फायदा हासिल करे, जो जो पुस्तक जरूरीके थे आपनेपास रखे, बंबइतककी सवाने उम्री खतम हुइ,–

---

संवत् १९६८ में जब महाराजने शहर करांची मुल्क सिंधमें बारीश गुजारीथी करांचीके सिंध-गेजेटमें ईसतरह अंग्रेजीमे लेख छपाथा,–

## The Sind Gazette, Tuesday, 12th September, 1911.

### JAIN FESTIVAL IN KARACHI

*(Communicated)*

The Karachi Jain community could hardly have enjoyed a more eventful period than the visit of Vidya-Sagar Nyaya-ratna Muni-Maharaj Shri Shanti Vijayji-Jain Shwetambar Sadhu The learned Jain Sadhu came to Karachi on July 28 from Mahendra-

pur, Malwa Most of the Jains received him at the Cantonment and City stations, and his arrival was made known to the public by a grand procession through the streets of Karachi next morning He was most respectfully conveyed to the Upashraya ( residence erected by the Jain community for the use of the Jain Munis ) in the Runchore Lines Since then he has been delivering from 8 30 A M to 9 30 A M his religious lectures in Avashyaka Sutra and the Jain Ramayana with admirable transliteration such as could be easily understood and grasped These were heard by males and females as well During the Paryushana Parva ( festival ) that lasted for nine days, from Aug 21 to 29 the learned Sadhu read the sacred teachings of the Paryushana Parva Mahatmya as depicted by the Tirthankaras The big lecture-hall proved too small for the people who had to wait either on the staircase or in the compound On the last day of the festival a procession headed by the Guru went round the Runchore Lines and on the evening on the same day the festival was brought to a close with prayers at the Upashraya ( residence of the Guru )

Vidya Sagar Nyaya ratna Muni Maharaj Shri Shanti Vijayji has travelled extensively all over India with the object of propagating the Jain religion He has written several books in Hindi The most important of them are, "Manava Dharma Samhita" and "The Jain Tirtha Guide" in the latter of which there is an autobiography of the author



## [ महाराज शांतिविजयजीके गुणानुवादपर एक विद्वानके-बनायेहुवे पंचकाव्य,– ]

( शार्दूलविक्रीडित, )

नादिध्यातनिराकरिष्णुरपरो भास्वानिवोद्यन् महान्.
नानाशास्त्रविचारदक्षमतिमान् सद्देशनारयातिमान्.
मुक्तिस्त्रीरतिलिप्सया गुरुतर तीव्रं तपश्चार्जयन्.
नेत्रानंदकरः शशीव भवतात् तूर्णं स मे योगिराट्,

यो मह्यामधुनाप्यनेकजनतापोपूज्यमानो मुनिः
षट्शास्त्राणि च वेत्ति धर्मनिरतः सद्धीमतामादिमः.
धर्मव्युत्क्रममंजसा परिहरन् निःसीमधर्मोपकृत्
सोयं शांतिमुनीश्वरो गुणिवरः प्राप्नोतु मे सन्नतीः, २,

( पचचामर छदः– )

कुवादकारिकोविदान् जयन् जिनागमोदितैः,
सुधाधरीकृता यथा तया गिरा मधृद्गिरा,
प्रबोधयन् मनीषिणः स्वधर्मसत्यपद्धति,
तपःसमृद्धिमंदिरं स शांतिसूरिरेधतां, ३,

( सग्धरा वृत्त,– )

वेदांतं सांख्ययोगौ वचनपटुकर पाणिनीयं सभाष्यं,
मीमांसान्यायकाव्यप्रमुखकतिपयं शासनं योध्यगीष्ट
ज्योतिःशास्त्राद्वितीयः क्षितितलअखिले ख्यातिमांस्तीक्ष्णधीमान्
शांतं दांतं महांतं नमत मुनिवर शांतिनामानमेनं. ४,

( मालिनी वृत्त )

विविधमतसमुत्थं संशयं सद्बुधानां,
परिषदि बहुयुक्त्या शुद्धशास्त्रीयरीत्या.
अपनयति मनस्वी सत्तपस्वी यशस्वी,–
गुणिजनबहुमान्यः शांतिनामा मुनींद्रः– ५,

---

[ कवि–सुरजमल्ल साकीन उदयपुर मुल्क मेवाडकी
बनाई हुई गुरुभक्तिपर शेयरदार लावनी – ]

विद्यासागर न्यायरत्न श्री–शांतिविजयजी मुनिमहाराज,
तीरथ कीने आपके जनम जनमके सुधरे काज, ( ए टेक, )
शासननायक सब सुखदायक जिनका निशदिन ध्यान धरो.
भव्य जीवोंके प्रेमहित चितसे आप कल्यान करो,
शठनर सुधरे सुनकर वानी ऐसो मुनि व्याख्यान करो,
खल अज्ञानी पशुसम उनके हिरदेमें ज्ञान धरो.

('शेयर)

आपने जिनमतको धारन करके त्यागो है कुटुंब,
उघरे पटल निज उरके मुनिजी दूरकर दिनोहै तम.
दीपायो जिनमतको स्वामी प्रकाशित भयो रविसम,
जन्म जन्मांतरकी बिगरी बात सुधरी इस जनम.

( मिलान )

करते हो सब कठिन तपस्या धन्य धन्य मुनिजी सुखसाज
तीरथ कीने आपके जनमजनमके सुधरे काज, ( १ )
पहिले समेतशिखरगिरिप्रभुके आप मुनिजी किये दर्शन,
एक महिना गिरिपर बेठ कियो प्रभुजीको भजन,
पावापुरीमे रहे तीन महिना आप मुनिजी हो धनधन,
कइ जिज्ञासु आपसे पुछे शास्तरकों बर्नन.

( शेयर )

अंतरिक्ष पारसनाथजीमें आठ दिन किनो है ध्यान,
शतरुंजाजी गिरिराजमें चौमासो कर दिनो वखान,
गिरनारजी दिन बारां रहकर दिपायो साचोहि ज्ञान,
आठ दिन आवुजीउपर विराजकर किनो है ध्यान.

( मिलान )

रानकपुरजी पाच दिवसतक आप मुनीजी रहे विराज,
तीरथ किने आपके जनम जनमके सुधरे काज, (२)
हस्तिनागपुर आप विराजे आठ दिवसमे लिखलियो हाल,
कंपिलाजीमे रहे दिन तीन आप भव्यजनके प्रतिपाल,
शौरीपुर दिन एकटीके मुनि काटयो सकलकलिमल जंजाल,
कौशांनीमे रहके मुनीश्वर तीन दिवस रिपु किये पेमाल.

( शेयर )

सावथ्थी नगरीमें एक दिन वास मुनिजन जाकर्यो,
एक दिन भदीलपुर भीतर पाप तनकों सब हर्यो.

मिथिलापुरी एकदिन टीके चहां ध्यान जिनजीको धर्यो,
राजगृही दिन पांच वसे वहां सकलपाप तनकों जर्यो,
( मिलान. )
अयोध्यामें दिन आठ विराजे मिली केइ ज्ञानीकी समाज,
तीरथ किने आपके जनमजनमके सुधर काज, (३)
मांडवगढ रहे एक दिवस वहां कर्यो आप भारी उपकार,
शंखेश्वरजी रहे दिन तीन रख्यो मनमें आचार,
तारंगाजी दिनतीन रहे वहां तसवुझाड तनकी अपार,
केशरीयाजी रहके छहदिन बोलेहैं वहां जयजयकार,
( शेयर )
फलोदी पारसनाथजीमे तीन दीन तपसा करी,
मकसीपारसनाथजीसे पखवाडे विनति खरी,
काशी दिनरहे आठ भेटे आपसे केइ शासतरी.
चंपापुरी एकमास रहकर चर्चा करी मुनि रसभरी,
( मिलान )
सुरजमल्ल कहे क्षत्रीयकुंडपर-तीनदिवस बेठे मुनिराज,
तीरथकीने आपके जनमजनमके सुधरे काज, (४)
[ गुरुभक्तिपर शेयरदार लावनी खतमहुइ.- ]

[ तालीम धर्मशास्त्र नामका साइनबोर्ड जहां महाराज जातेथे अपने मकानकी दिवारपर लगातेथे, और आनेवाले इसकों बाचकर धर्मका फायदा हासिल करते थे,- ]

( तालीम धर्मशास्त्र. )

[ कानुन धर्मशास्त्र और पेंतालीश जैनागमका सार. ]

१ जैनमजहबमें चोइस तीर्थंकर. नायब धर्महुवे, जिसमें अवल तीर्थंकर रिषभदेव और अखीरके महावीर हुवे,

२ दुनियामे कइ मजहब है, जिसमें श्वेतांबर दिगंबर स्थानकवासी तेरहपंथी सांख्य वैदिक नैयायिक वैशेषिक जैमिनीय बौध शैव सूर्योपासक रामानुज वल्लभकुली रामस्नेही आर्यसमाज ब्रह्मसमाज इस्लाम और इशाइ वगेरा मशहूर है,

३ दुनिया और ईश्वर कदीमसे है. अगर ईश्वरकों दुनियाका बनानेवाला माने तो ईश्वरकों बनानेवाला कौन? यह सवाल पैदा होगा,

४ किसीशख्शकों धर्मकी कसमखाना नही चाहिये, अदालतमें धर्मकी कसमखानापडे तो खावे, मगर सच बोले,

५ जो रकम धर्मखातेकी बोलीहो फौरनसें फौरन उसमें खर्चकर देना चाहिये, अपने चौपडेमे जमारखना धर्मका गुनाह है,—

६ किसीकी अमानत अपने घरमें जमाहो और रखनेवाले इंतकाल होजाय तो उसके दुसरे वारीशोंकों देदेना चाहिये, अगर कोइ वारीश न हो तो उसके नामसें धर्ममे खर्चकरदेना, मगर अपना नाम नही करना,

७ तकदीर अकेली फल देती है, तदबीर अकेली फल नही देती, तदबीर नकार जाती है, मगर तकदीर फल दिखाती है, इसलिये तकदीर कौवतवाली है ऐसा जानना,

८ विधिवाद धर्मके कायदे सबकों मानने काबील है, कथा कहानीकीबातें जो खिलाफ धर्मशास्त्रके हो वो काबील छोडनेके है, और यथास्थित वाद काबील जाननेके है,–

९ पूर्वकृत भलेबुरे कर्मोका फल जीव यहां भोगता है, और यहां करेगा वैसा आगेको पायगा,

१० विनाश्रद्धा और ज्ञानके इसजीवकी मुक्ति नही, विनाचारित्रके मुक्ति होसकती है, आवश्यक सूत्रमे पाठ है, देखलो,–

मिथिलापुरी एकदिन टीके वहां ध्यान जिनजीको धर्यो,
राजगृही दिन पांच वसे वहां सकलपाप तनकों जर्यो,
( मिलान )
अयोध्यामें दिन आठ विराजे मिली केइ ज्ञानीकी समाज,
तीरथ किने आपके जनमजनमके सुधर काज, (३)
मांडवगढ रहे एक दिवस वहां कर्यो आप भारी उपकार,
शंखेश्वरजी रहे दिन तीन रख्यो मनमें आचार,
तारंगाजी दिनतीन रहे वहां तप्तवुझाइ तनकी अपार,
केशरीयाजी रहके छहदिन बोलेहै वहां जयजयकार,
( शेयर )
फलोदी पारसनाथजीमे तीन दीन तपसा करी,
मकसीपारसनाथजीसे पखवाडे विनति खरी,
काशी दिनरहे आठ भेटे आपसे केइ शासतरी.
चंपापुरी एकमास रहकर चर्चा करी मुनि रसभरी,
( मिलान. )
सुरजमल्ल कहे क्षत्रीयकुंडपर-तीनदिवस वेठे मुनिराज,
तीरथकीने आपके जनमजन्मके सुधरे काज, (४)
[ गुरुभक्तिपर शेयरदार लावनी खतमहुइ.- ]

---

[ तालीम धर्मशास्त्र नामका साइनबोर्ड जहां महाराज जातेथे अपने मकानकी दिवारपर लगातेथे, और आनेवाले इसको बाचकर धर्मका फायदा हासिल करते थे,- ]

( तालीम धर्मशास्त्र. )

[ कानुन धर्मशास्त्र और पेंतालीश जैनागमका सार. ]

१ जैनमजहवमें चोइस तीर्थंकर. नायव धर्महुवे, जिसमें अवल तीर्थंकर रिषभदेव और अखीरके महावीर हुवे,

२ दुनियामे कइ मजहब है, जिसमें श्वेतांबर दिगंवर स्थानकवासी तेरहपंथी सांख्य वैदिक नैयायिक वैशेषिक जैमिनीय बौध शैव सूर्योपासक रामानुज वल्लभकुली रामस्नेही आर्यसमाज ब्रह्मसमाज इस्लाम और इशाइ वगेरा मशहूर है,

३ दुनिया और ईश्वर कदीमसे है- अगर ईश्वरकों दुनियाका बनानेवाला माने तो ईश्वरको बनानेवाला कौन? यह सवाल पैदा होगा,

४ किसीशख्शकों धर्मकी कसमखाना नही चाहिये, अदालतमें धर्मकी कसमखानापडे तो खावे, मगर सच बोले,

५ जो रकम धर्मखातेकी बोलीहो फौरनसें फौरन उसमें खर्चकर देना चाहिये, अपने चौपडेमे जमारखना धर्मका गुनाह है,—

६ किसीकी अमानत अपने घरमें जमाहो और रखनेवाले इंतकाल होजाय तो उसके दुसरे वारीशोंकों देदेना चाहिये, अगर कोइ वारीश न हो तो उसके नामसें धर्ममे खर्चकरदेना, मगर अपना नाम नही करना,

७ तकदीर अकेली फल देती है, तदवीर अकेली फल नही देती, तदवीर बेकार जाती है, मगर तकदीर फल दिखाती है, इसलिये तकदीर कौवतवाली है ऐसा जानना,

८ विधिवाद धर्मके कायदे सबको मानने काबील है, कथा कहानीकीबाते जो खिलाफ धर्मशास्त्रके हो वो काबील छोडनेके है, और यथास्थित वाद काबील जाननेके है,—

९ पूर्वकृत भलेबुरे कर्मोका फल जीव यहा भोगता है, और यहा करेगा वैसा आगेकों पायगा,

१० विनाश्रद्धा और ज्ञानके इसजीवकी मुक्ति नही, विनाचारित्रके मुक्ति होसकती है, आवश्यक सूत्रमें पाठ है, देखलो,—

११ मिथ्यात्वके उदयसें चौदह पूर्वके पाठी और यथाख्यात चारित्रके पालनेवालेभी संसारसमुद्रमें डूब जाते है. सबुत हुवा श्रद्धावडी चीज है,–

१२ जिस शख्शको जात विरादरीके गुनाहसें जात वहार कर दियां हो वो जिन मंदिरमें और व्याख्यान धर्मशास्त्रकी सभामें आसकता है, जिसने देवगुरु धर्मका गुनाह किया हो, और उसकों जैनसंघके वहार करदिया हो वो नही आसकता,–

१३ चांदसूर्य वगेरा ग्रह किसीका भला बुरा नही करते, भले बुरेके वतलानेवाले है न कि–करनेवाले.

१४ हरशख्शकों अपनी सालियाना आमदनीमेसें आधा चोथा आठमा या दशमा हिस्सा धर्मकार्यमें खर्च करना, चाहिये,

१५ किताव महानिशीथसूत्रमें लिखा है, कलंकीराजा श्रीप्रभ अणगारके वख्तमें होगा, किताव युगप्रधानयंत्रमें लिखा है, श्रीप्रभ अणगार आठमें उदयके पहले युग प्रधान होवेगें, आजकल तीसरा उदय चलता हैं. इसलिये कलंकी राजा अवतक नही हुवा, आगे होगा,–

१६ तीर्थंकर रिषभदेव महाराजने जब वार्षिक तपका पारना किया (यानी) वर्स दिनतकके उपवास कियेथे उसका पारना किया, तो एक घडे गंनेके रससें कियाथा ऐसा आवश्यक-सूत्रवृत्तिमें लिखा है, (१०८) घडे गंनेके रससें किया कहना गलत है,–

१७ व्याख्यान धर्मशास्त्र सुनते वख्त शोर गुल नही करना, सामायिक नही करना ध्यान देकर सुनना यह श्रुतसामायिक है, मालाभी नही फेरना चाहिये, दो जगह उपयोग नही रहेगा,

१८ मनविनाभी कइ लोग दुसरोंकों दिखानेके लिये धर्मक्रिया करते है, मगर ऐसी क्रियासें आत्माकों कोइ फियादा नही, विनापुन्यानुबंधिपुन्य ( यानी ) विना आला दर्जेकी तकदीरके दिलके इरादे कभी सुधरते नही,

१९ ज्ञानी मनुष्य पाप करते वख्त पश्चात्तापभी कर सकता है, अज्ञानी नही कर सकता, इसलिये उसको पाप ज्यादा है,

२० किसी हिंसक यानी जान मारनेवालेकों रुपये पैसें देकर किसी जीवको छुडवाया, और उन रुपयोंसें हिसकने बुरे कर्म किये तो उसका गुनाह उसके जुम्मे है, जीव छुडवानेवालेको तो पुन्य होगा,

२१ अपने कुटुंबकी कोइ औरत विधवा–यानी–बेवा होगइ हो, उसके जेवर–या–रुपयेपैसेपर उसका हक है, अगर उसकेपास न हो तो ब मुजब अपनी हेसीयतके देना चाहिये, मगर उसका माल लेना नही चाहिये,

२२ हरेक जैनीको हरसाल कमसेकम एक नये जैनतीर्थकी जियारत करना चाहिये.

२३ हरेक जैनको उम्रभरमें नवलाख मरतबा नमस्कार मंत्र पढना चाहिये,

२४ जैनमुनि किसीके लडकेकों विना हुकम उनके वारीशोंके दीक्षा न देवे, यानी चेला न बनावे, दीक्षा लेनेवालेका एतकात देखकर खात्री करके दीक्षा देवे,

२५ जैनमुनि व्याख्यान धर्मशास्त्रका बाचते वख्त अकेलेही तख्तपर वेठे, चाहे बडे हो या छोटे, व्याख्यान देते वख्त व्याख्यान देनेवालेही बडे है, अगर कोइ बडे साधुजी हो, तो उसवख्त व्याख्यान सभासें अलग मकानमे वेठे,

२६ हरेक जैनगृहस्थको जन्मादि सोलह संस्कार जैनशास्त्रके तरीकेसें करना चाहिये,

२७ जिनेंद्रोंके हुक्मकों धक्का पहुंचाकर दुनियादारीकी रीतरसमकों मददकरे तो वो शख्श धर्मसें दूर है,–

२८ हरेक गृहस्थकों मुनासिव है, अपने घरमें किसी देवमंदिरका पैसा न रखे, किसी जैनमंदिर या जैनतीर्थके देवद्रव्यका हिसाव अपने हस्तगत हो छपवाकर जाहिरकरे, व्याजसेभी अपनेपास न रखे, व्याजके लोभसें असली रकमभी आना मुश्किल होजाती है,–

२९ वडेवडे जैनतीर्थोंमें या जैनमंदिरोमें जहां देवद्रव्य ज्यादा हो वो दुसरे जैनतीर्थमे या दुसरे जैनमंदिरमें जहां मरम्मत होना दरकार हो, लगादेना चाहिये,

३० उजमना करके सव सामान जहां जहां जरुरत हो, भेजदेना चाहिये, अपने घरमें रखना धर्मका गुनाह है.

३१ औरतकों जिन मूर्त्तिकी पूजा करना मना नही, अटकावके दिनोंमें पांच दिन मना है,–

३२ स्नात्रपूजाका सामान श्रीफल वगेरा अपने घरसें हर हमेश नया लेजाना चाहिये, चढाइ हुइ चीजे नारियल वादाम वगेरा पैसा देकर लेना और दोवारा चढाना ठीक नही,–

३३ जिनमंदिरमें यक्ष या शासनदेवीकी मूर्त्ति होती है, उसकी पूजा आरती नही करना चाहिये, क्योंकी वे देवगुरु नही है. स्वधर्मी श्रावक है, उनके सामने जाना तो मुखसें जयजिनेंद्र कहना चाहिये,–

३४ व्याख्यान धर्मशास्त्र वांचते वख्त जैनमुनिको मुखपर मुखवस्त्रिका वांधना किसी जैनशास्त्रमें नही लिखा, हाथमें रखना औघनिर्युक्तिमें लिखा, है,–

३५ योग उपधान वहते वख्त उस जैनशास्त्र और सामायिक प्रतिक्रमणके पाठकों कंठाग्र करना चाहिये, कोरी तपस्या करनेसें योग उपधान नही होता, और पदवीलेना गलत है,

३६ सूत्र आवश्यक रायपसेणी ज्ञातासूत्र और उत्तराध्ययन सूत्रमें लिखा है, अविनयी शिष्यकों यानी बेंअदबी चेलेको वचनसे शासनदेना,

३७ जिनमंदिरकी चीज अपनें काममें नही लेना चाहिये,-

३८ कोइ शख्स जिन मंदिरकी नोकरीसें नोकरीकरे और देवद्रव्यमेसें अपनी नोकरीके दामलेवे तो उसको देवद्रव्य लेनेका दोष नही, उसकी नोकरीके दाम है, पंचाशक सूत्रमे पाठ है, देखलो!

३९ जिसके घर लडका लडकी पैदाहो तो (१०) दिनका अशौच, यानी नापाकी लडकी पैदाहो तो (११) दिनका अशौच, उस घरके मनुष्य उतने दिनतक जिन मूर्त्तिकी पूजा न करे, सामायिक प्रतिक्रमण न करे, धर्मशास्त्र न पढे, व्याख्यान सुननेमें कोइ हर्ज नही, दुसरेके घर जीमतेहो तो पूजा सामायिक बेशक! करे,

४० सगेभाइके घर लडका लडकी पैदा हो और खानपान सामील हो तो खानेवालेको (१०) दिनका अशौच, अगर खानपानमे जुदाइ हो तो अशौच नहीं, गेर मुल्कमे लडका लडकी पैदा हो तो उसका अशौच दुसरे गांममे नही.

४१ अपने घरमें अपनी दासीको यानी खिदमतगारनीको लडका लडकी पैदा हो तो (२४) प्रहरका अशौच, और गौ भेंस बकरी घोडी वगेरा अपने घरमे बच्चा जने तो एक दिनका अशौच,

४२ गौरवाली औरत यानी जापेवाली एक महिनेतक जिन मंदिरके दर्शनको न जावे, (४०) रौजतक जिन मूर्त्तिकी पूजा न करे, और साधु साधवी उस औरतके हाथसें आहारपानी न लेवे,

४३ ऋतुधर्मवाली औरत यानी अटकाववाली औरत (२४) प्रहर-तक अलग बैठे. सामायिक प्रतिक्रमण न करे, पुस्तक न बांचे और न लिखे, जिन मूर्त्तिकी पूजा न करे, उपवास वगेरा तपकरे तो मना नही,

४४ जिसके घर मौत हो बारह दिनका अशौच, उसके घरके मनुष्य (१२) दिनतक जिनमूर्तिकी पूजा न करे, दूरसे दर्शन करनेकी छुट है, सामायिक प्रतिक्रमण न करे, धर्मशास्त्र न छुवे न पढे, व्याख्यान धर्मशास्त्रका सुननेकी छुट है.

४५ मरनेवालोके घर अशौचके दिनोंमें सगे संबंधी मिलने आवे और खाना खावे तो उतने दिनका उनकों अशौच,–

४६ मुर्देको संधा देनेवाला (२४) प्रहरतक जिनमूर्त्तिकी पूजा न करे, दूरसे दर्शन करनेकी छुट है, सामायिक प्रतिक्रमण न करे, धर्मशास्त्र न छुवे, व्याख्यान सुननेकी छुट है,

४७ वेश बदलकर शाथ जानेवाला (८) प्रहरतक अशौच माने,

४८ जिसदिन बच्चा पैदा हो, और उसी दिन मरजाय तो एक दिनका अशौच,

४९ अपने घरमें कोइ जानवर मरे तो जबतक उसका मुर्दा वहार न पहुंचाया जाय, तबतक अशौच,

५० कोइ जैनसाधु या साधवी इंतकाल होजाय तो एक दिनका अशौच,–

५१ साधु साधवी श्रावक श्राविका पुस्तक जिनमंदिर और जिनमूर्त्ति इन सातक्षेत्रोमे दौलत सर्फ! करना श्रावकोका फर्ज है,–

हस्ताक्षर,– { जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा–विद्यासागर–न्यायरत्न–मुनि–शांतिविजयजी,–

[ महाराजके बनाये हुवे ग्रंथोकी तपसील निचेमुजब, ]

१ मानवधर्मसंहिता, संवत् (१९५५) में छपी. कीमत २-०-० सिलकमे नही रही,–

२ रिसालामजहबढुंढिये संवत् (१९५९) में छपी, विनामूल्य दिइ जातीथी, सिलकमें नही रही,

३ ग्रिस्तुतिपरामर्श संवत् (१९६३) में छपी, कीमत ०-८-० सिलकमे नही रही,

४ बयान पारसनाथपहाड संवत् (१९६४) में छपी,–विनामूल्य दिइ जातीथी, हाल कोइ नकल बाकी नही रही,

५ जैनतीर्थगाइड संवत् (१९६७) मे छपी, कीमत ३-०-० शेठ हवसीलालजी पानाचंदजी साकीन बालापुर मुल्क वराडने छपवाइ है, और उनहीके पास मीलती है,–

६ सनमपरस्तियेजैन संवत् (१९६७) में छपी, कीमत ०-४-० मुफ्त बाटी गइथी, हाल सिलकमें नही,

७ न्यायरत्नदर्पण, संवत् (१९७२) में छपी,–विनामूल्य दिइ-गइथी, सिलकमें नही रही,

८ हिदायतबुत्परस्तियेजैन, संवत् (१९७३) मे छपी,– कीमत ०-४-० सिलकमें नही रही,–

९ पर्यूपणपर्वनिर्णय, संवत् (१९७४) में छपी–मुफ्त दिइगइथी, हाल सिलकमें नही,–

१० अधिकमासनिर्णय संवत् (१९७४) में छपी, मुफ्त बाटीगइथी, हाल सिलकमें नही रही,

११ अधिकमासदर्पण. संवत् (१९७५) मे छपी, मुफ्त दिइगइथी, सिलकमे नही रही.

१२ जैनमत-प्रभाकर,–यह किताब महाराजका एक इल्मी खजाना है,–और इसमे तरहतरहके बयान दर्ज है, ब-खूबी देखलो,–



## [ मुल्कमुल्ककी सैर. ]

१ इसमे पुराने मुल्कोके क्या क्या नामथे ? और जमाने हालमें क्या क्या नाम है ? वहांकी रश्म रवाज पुरानी तारीखी इमारतें और दिगर चीजोका मुफस्सिल बयान, जुगराफी और इतिहासिकबातोंका एक बडा जखिरा होगा, जिसके पढनेसे घर बेठे मुल्कोंकी सैर हासिल होगी, बेठकर सैर मुल्ककी करना यह तमाशा किताबमें देखो, बडे बडे मुल्कोका पायतख्त कौन शहर था ? उर्दू-जबानकी पैदाश कैसेहुइ ? और मुल्क मुल्कका मुख्तसर हाल इसमे दर्ज है, व खूबी देखलो ! जैनलोग एक लाख जोजनका लंबाचौडा एक जंबू नामका द्वीप मानत है, जो सबद्वीपोके ठीकबीचमे है, उस जंबूद्वीपमें भारतवर्ष जिसमे फिर छहखंड तीनखंड दक्षिणार्द्धमें और तीनखंड उत्तरार्द्धमें इसतरह छहखंडोका होना जैनलोग मंजुर रखते है, वैदिकमजहबवाले नवखंडा वसुंधरा यानी पृथ्वीके नवखंड बयान करते है, और आजकल जो युरोप एशिया आफ्रिका अमरिका आष्ट्रेलिया वगेरा खंड मशहूर है, वे जैनोके माने हुवे भारत वर्षके छहखंडमें आजाते है—भारतवर्षके छह खंडमें-जो-दक्षिणार्द्धके तीनखंड है, उनमेंभी जो मध्यखंड जिसको आजकल हिंदुस्थान-या-इंडिया कहते है, चौइस तीर्थंकर बारह चक्रवर्तीराजे नववासुदेव बलदेव और नवप्रतिवासुदेवराजे इसीमें हुवे, दक्षिणार्द्ध तीनखंडमे बत्तीसहजार मुल्क और उत्तरार्द्धके तीनखडमेभी बत्तीस हजार मुल्क कुल्ल (६४) हजार मुल्क हुवे, चक्रवर्त्तीराजा चौसठहजार मुल्कोंपर अमलदारी करता है, और वासुदेवराजा बत्तीसहजार मुल्कोपर अमलदारी करता है, हिमालयपहाडकों कइलोग वैताट्य पहाड कहदेते है, मगर यहबात बहेत्तर नही, वैताढ्य पहाड अष्टापदसेभी उत्तरदिशामे है, जहां आजकल कोइ नही जा-सकता.—

२ शुरुसमय चक्रमें अवल तीर्थंकर रिषभदेव सबसे अवलराजा हुवे, जो भारत मध्यखंडकी विनीतानगरीमें अमलदारी करते थे,

विनीतानगरीका दुसरा नाम कोशला तीसरा साकेतपुर और चौथा-नाम अयोध्या है, विनीताको सबसें पुरानी नगरी कहदो कोइ हर्ज नही, तीर्थंकर रिषभदेव महाराजको (१००) बेटेथे, जिसमें अवल नंबरपर भरत और दोयम बाहुबली था, जब तीर्थंकर रिषभदेव महाराजने दुनियाको छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ भरतकों विनीतानगरीकी सलतनत दियी, बाहुबलीको तक्षशिलाकी और इसी तरह दुसरे बेटोकोभी जैसा मुनासिबथा सलतनतका हिस्सा दिया, जिस जिस बेटेको जो जो हिस्सा दिया उस उस मुल्कका नाम उस उस लडकेके नामसे मशहूर हुवा, जैसे कुरु नामके बेटेकों जो जमीन मीली, उसका नाम कुरुक्षेत्र मशहूर हुवा, अग नामके लडकेको जो जमीन मीली, उसका नाम अंगदेश कहलाया, वग नामके लडकेकों जो जमीन मीली, उसका नाम बगदेश कहलाया, कलिंग नामके लडकेकों जो जमीन दिइ गइ उसका नाम कलिंगदेश मशहूर हुवा, कोशल नामके लडकेको जो हिस्सा सलतनतका मिला उसका नाम कोशलदेश कहलाया, मगध नामके लडकेको जितनी जमीन मीली उसका नाम मगधदेश मशहूर हुवा, विदेह नामके लडकेकों जो हिस्सा मिला उसका नाम विदेहदेश कहलाया, दशार्ण नामके बेटेको जो जमीन मिली उसका नाम दशार्णदेश मशहूर हुवा, सुराष्ट्र नामके बेटेकों जो हिस्सा जमीनका मिला, उसका नाम सौराष्ट्र कहलाया, वत्स नामके लडकेको जो जमीन मीली उसका नाम वत्सदेश कहलाया, इनकेबाद और भी कइदेशोके नाम मशहूर हुवे है, जैसे गुर्जरदेश मालवदेश नयपालदेश श्रीमालदेश जहालदेश सिंहल और मरुस्थलदेश गौडदेश चौडदेश काश्मिरदेश सिंधसौवीरदेश आभीरदेश लाटदेश वगेरा इसवख्त भी मशहूर है, कुरुदेशमे हस्तिनापुर पुराना शहर है, कुशावर्तदेशमे शौरीपुर और पाचालदेशमे कापिलपुरभी पुरानी वस्ती है, जो इसवख्त फरका-बादके करीब जिसको कंपिला बोलते है, छोटागाव रहगया, पेस्तर

यहांतक पांचालदेशकी हदथी, जंगलदेशमें अहिछत्तानगरी विदेह-देशमें मिथिलानगरी जहां जनकराजा हुवा, मैथलदेश इसीका नाम है, वत्सदेशमें कौशांबीनगरी, जहां वत्स उदयनराजा जमाने तीर्थंकर महावीर स्वामीके अमलदारी करता था, आजकल कोसंबपाली नामका छोटासा गांव रहगया है, जो इलाहाबादके पास भरवारी टेशनके सातकोश दूर पपौसा गांवके पास मौजूद है, शांडिल्यदेशमें नंदीपुर मलयदेशमें भदीलपुर दशार्णदेशमें मृत्तिकावतीनगरी, चेदी देशमें सौक्तिकावतीनगरी, काश्मिरमें श्रीपुर-नगर सिंधसौवीरदेशमें वीतभयपत्तन नगर जहां तीर्थंकर महावीर स्वामीके वख्त उदयनराजा सलतनत करता था, सुरशेनदेशमें मथुरानगरी कुणालदेशमें सावथ्थीनगरी जो आजकल सहेट महेटके किलेके नामसें मशहूर और बलरामपुरके पास मौजूद है, लाटदे-शमे कोटीवर्पनगर अवंतीदेशमें उज्जेणीनगरी कुंकणदेशमें थाणा-नगरी जो बंबइके पास करीब ( १० ) कोशके फासलेपर मौजूद है, जहां श्रीपालराजा मुल्कदखनकी सफरके वख्त आयेथे, अंग-द्रेशमें चंपानगरी वंगदेशमें ताम्रलिप्तिनगरी और मगधदेशमें राज-गृहीनगरी पेस्तर बडी रवन्नकपर थी, आजकल एक छोटासा गांव रहगया है, इसीका नाम समयका हेरफेर और जमानेकी खूबी कहो मेवाडदेश विराटदेश जिसकों आजकल वराड बोलते है, पेस्तर यहा बडे दौलत मंदलोग बसते थे, अबभी अछा आबाद मुल्क है, भोटदेश मलयदेश तिलंगदेश द्रविडदेश आर्द्रदेश पुलींद्रदेश येभी पुराने मुल्क है, विंध्याचल पहाड अजनबीच्रीजोंका खजाना अर्बुदाचल हवाके लिये निहायत उमदा जगह—समेतशिखर पहाड बडा नामीग्रामी जैनतीर्थ—अष्टापद पहाड जहां बर्फकी वजहसे आजकल होइ जा नहीसकता, जो उत्तर दिशामें मुल्क सैबीरियाके है, सिंहाद्रि पहाड और हिमालय पहाड जिसको अजनबीचीजोंका खजाना कहो बडी उमदा जगह है,

२ जब सगरचक्रवर्त्ती लवण समुद्रकी खाडीकों अष्टापद पहाडकी चौतर्फ लाया बाकीकी जमीन जो दक्षिण पश्चिम और पूरवकीथी जलमय हुइ और जमीनकी सरहदमें फेरफार हुवा. चूल हिमवंत पर्वत जो मुतानिक जैनशास्त्रके फरमानसें भारतवर्षके उत्तरमें हैं, इसको हिमालय पहाड मानना कीसी सुरत नही बन सकता, चूलहिमवंतकी उत्तरमे हरिवर्षक्षेत्र होना जैनशास्त्रोमे लिखा, और हिमालयकी उत्तरमें हरिवर्षक्षेत्र है नही. बल्कि! मुल्क तिबेट है, कइ लोग विनासमजे कहदेते है विंध्याद्रि पहाडको वैताढय पहाड सजमना चाहिये, मगर यह कहनाभी बहेत्तर नही, वैताढ्य पर्वत अष्टापदसेंभी उत्तरमे है, जहाकी बर्फकी वजहसे आजकल कोइ जासकते नही, कइलोग कहा करते है, अयोध्या राजगृही विशाला सावथ्थी कोशांबी वगेरा नगरीयें जो जैन शास्त्रोंमें लिखी है, वे सायत! दुसरी होना चाहिये, क्यौंकी वे बडी बडीथी, और आजकल जो है वे छोटी है, जवाबमें॰॰॰ पेस्तरके लोगोंकी तकदीर बडी थी, उस॰॰॰ कुणालका वेटा बडीथी, मगर जब लोगो॰॰॰ जिसने हिंदमे हजाराह जैनमंदिर तमामचीजें कमहोती॰॰॰ उनमेसे कइ जैनमंदिर मौजूद है, शत्रुंजय और दौलतमें कम हो॰॰॰ तो राजासंप्रतिके बनाये जैनमंदिर कंबोजदेश बाल्हिकदेश आभा॰॰॰ जबाने मिलकर बनी है, न फारसी चेदीदेश वरुणदेश कच्छदेश ये॰॰॰! इसको एक नयी जबान समजना खुशनसीब और इकबालमंदलके वख्तसें हिंदमे उर्दूजबानने तरक्की नेके दौलत और पुन्यवानी कैमा॰॰॰ बात एकही है, मुगल तुर्क इसमें कोइ ताज्जुबकी बात नही, चढती पडती सब चीजकी होती है, हिंदमे कदीमसे सूर्यवंशी और चंद्रवंशी राजे सलतनत करते चले आये, भरतचक्रवर्त्तीका बडा वेटा सूर्ययशा राजा हुवा, इससे सूर्यवंशी राजे कहलाये, बाहुबलीजीका बडा वेटा चंद्रयशा राजा हुवा, उससे चंद्रवंशी राजे कहलाये, तीर्थकर रिषभदेव महाराजसे लेकर

चौइसमें तीर्थंकर महावीर स्वामीके जमानेतक हिंदमे आर्यराजा- ओका राज्य चलता रहा, कोइ इस वातका घमंड न करे हमही दुनियामें वडे है, दौलत दुनिया मालखजाना और चंद्रमुखीस्त्रीयें छोडकर चलेगये, कोइ किसीके शाथ नही गया, शिवाय पुन्य और पापके दुसरा कोइ शाथ नही चलता, क्या तारीफ है, तकदीरके सितारेकी जिसकी वदौलत वकरी चरानेवाला वादशाहत भोगता है, और अमीर गरीब होकर भीख मांगता है, दुनियामे किसीका घमंड नहीरहा, जिसने घमंड किया, वही चंदरोजमें गिरगया, यह धर्मशास्त्रोंका फरमान किसी सुरत गलत नही.

४ भारतमध्यखंड कहो आर्यावर्त कहो हिंद या हिंदुस्थान कहो सब एकहीके नाम है, साढे पचीस आर्यदेश इसीमे है. तीर्थंकर चक्रवर्ती वासुदेव प्रतिवासुदेवराजे इसीमें पैदा हुवे, दुसरे मुल्कके [illegible] की सफरसे या तिजारतसे दौलतमंद होगये, जमाने नगरी [illegible] की निहायत जाहोजलालीथी, गिरीहालतमेभी है, जहां श्रीपालराजा [illegible] पैदा होती है, हिदमेसे चाहे देशमे चंपानगरी वंगदेशमें ताम्रलिप्तनगरी [illegible] सालमे उतनाही गृहीनगरी पेस्तर वडी रवन्नकपर थी, आजकल [illegible] नेपर हिंद फिर रहगया है, इसीका नाम समयका हेरफेर [illegible] कबालमंदी गोया! मेवाडदेश विराटदेश जिसकों आजक आदमी जमामर्द और रहेम- वडे दौलत मंदलोग वसते थे, अवभीगर द्रख्तोकोंभी नही सताते. भोटदेश मलयदेश तिलंगदेश द्रविडदेश मददपहुचाना हिदकेलोग पुराने मुल्क है [illegible] व्योंकरण काव्य कोश न्याय और अलकार वगेरा ग्रंथोकी हिदीवानोंने इसकदर तरक्की किइ दुसरे मुल्कवाले हर्गिज! नही करसके, वंबइ और वंगालहाता हिदके दो गुलजार वाग है, इनमें वंबइ और कलकत्ता वडे आवाद शहर है, मगर वंबइकी रोनकको दुसरा नही पाता, मद्रास, त्रिचिनापल्ली, वेंगलोर, दखन हैदरावाद, कलिकोट, कोचीन, महीशूर, कराची, सिध-

हैदराबाद, मुलतान, पेंशावर, लाहोर, अमृतसर, देहली, लखनउ, आगरा, बनारस, इलाहाबाद, पटना, गवालियर, कानपुर, नागपुर, जबलपुर, अजमेर, जयपुर, जोधपुर, बिकानेर, अहमदाबाद, सुरत, भरुअछ, भावनगर, जुनागढ, पुना, सोलापुर, कोलापुर, उज्जैन, इंदोर, मथुरा, अयोध्या, ये वडे शहर हैं, इनमे दौलतमंद ऑर खुशनसीब लोग आबाद है, और तिजारतकी तरकी है, हिंदमे आबुके जैनमंदिर आलादर्जेकी कारीगीरीके नमुने देखोगे, आगरेका ताज-महेलभी एक बडी लागतका मकान हैं. इलोरेकी गुफा कनेरीकी गुफा ऑर लेनाकी गुफा काबिल देखनेकी जगह है, असलमें! हिंद एक कलाकौशल्यका घर है, ग्रीसका बादशाह सिकंदर एशियाइ, तुर्केस्तान, इरान, अफगानीस्तान और बलुचीस्तानके रास्ते इस्वीसन (३२७) वर्स पेस्तर हिंदमे आया, ऑर मुल्क पजाबमे पौरव वंशके पौरस राजासे लडा, उसवख्त शहर पटनेमे राजा चंद्रगुप्त सलतनत करताथा, और चाणाक्य जिसका दिवानथा,- चंद्रगुप्तका वेटा विंदुसार- विंदुसारका वेटा अशोक-अशोकका कुणाल और कुणालका वेटा संप्रति हुवा, संप्रतिराजा जैनथा, जिसने हिंदमे हजारोंह जैनमंदिर तामीर करवाये, आजभी उनमेसें कइ जैनमंदिर मौजूद हैं, शत्रुंजय गिरनार तीर्थपर जाकर देखो तो राजासप्रतिके बनाये जैनमंदिर अबतक खडे हैं, उर्दूजबान बहुतसी जबाने मिलकर बनी हैं, न फारसी है, न अर्बी है, न अंग्रेजी है, बल्कि! इसको एक नयी जबान समजना चाहिये, मुसल्मानी अमलदारीके बख्तसें हिंदमे उर्दूजबानने तरक्की पाइ, उर्दू कहो चाहे फौजी जबान कहो, बात एकही हैं, मुगल तुर्क ऑर अफगानवालोकी अमलदारी हिंदमे हुइ उनके फौजी आदमी जब बाजारमे सौदा खरीदने आते थे, ऑर अपनी अपनी जबानमे बातचीत करते थे, उनकी अर्बी फारसी तुर्की और हिंदीवालोकी हिंदी ये सब जबाने मिलकर एक अलग जबान कायम होगइ, जिसकों उर्दू कहदो कोइ हर्ज नही,- प्राकृत और संस्कृत जबान

वडीही उमदा–जिसमें थोडे हर्फोंसें वहुत कुछ इवारत लिखी जाती हैं, सबको मान्यथी, हिंदके पंडित इस वख्तभी संस्कृत जवानमें उमदा तौरसे बातचीत कर सकते हे, हिंदमें उर्दू जवान जाननेवाले इसवख्त (१८) करोड मनुष्य है, मेने यह जैनमतप्रभाकर किताब इसलिये उर्दू जवानमें लिखी हरजगह इसके जाननेवाले मिलसके, कइ अकलमंदोका फरमाना है, हिंद जैसा कोइ निपजाउ मुल्क नही, अनाज रुइ फल फुल तरहतरहकी धातु और रत्न-परीदे और जानवर हिंदमे पैदा होते है, हिंदकी आव हवा सबको मुआफिक न बहुत ठंडी न गर्म, धर्मके बारेमें हिदके लोग कामील एतकात और साबीतकदम होते है, यूरोप एशिया आफ्रिका अमरिका और आष्ट्रेलियामें जितने पुराने धर्मपुस्तक मिलेंगे उससे ज्यादा पुराने धर्मपुस्तक हिंदमें मिल सकेगें, इसमें कोइ शक नही,

५ दुनियामें इसवख्त सात शहर वडेआलादर्जेके गिने गये हैं, जिसमेंभी अमरिकाका न्युयोर्क और इंग्लांडका लंडन शहर ज्यादा तरकीपर है, फ्रांसकी राजधानी पेरिस और जर्मनीकी राजधानी बर्लिन येभी आलादर्जेके शहर है, मौज शौखके लिये पेरिस ज्यादा मशहूर और मारुफ है, इटालीकी राजधानी रोम और आस्ट्रियाकी राजधानी वियेना येभी बडे शहर है, इनमें दवा और पुरानी कारीगीरीके पुस्तक ज्यादा देखोगे मुल्क चीनकी राजधानी पेंकीन अवलसेही आवादीमें ज्यादा, मुल्क जापानका पायतख्त टोकियों और ओसाभी वडे आबाद शहर हैं, एशियामें सबसे अवल दर्जेका बंबइभी वडा नायाव शहर है, एशिया खंडमें सबसे बडा बंदर गिनेतो सिंघापुर जहा मुल्क व मुल्ककी ष्टीमरे आती जाती है, और वडी रौनक रखता है, दुनियाकी सात मशहूर चीजे गिने तो १ पेरिसका इफलटावर (यानी) घंटाघरका वडा मिनार, २ दुसरे नंबरमे न्युयोर्ककी इमारतें ३ तीसरे नंबर इजिप्तके पेरोमेंड ४ चौथे नंबर चीनकी दिवार, ५ पांचमे नंबर नायगराका जल-

प्रवाह जो मुल्क अमरिकामें है, ६ छठे नंबर स्वीटझर्लांडमे सेंट बारनार्डका घाट जो तीस मीलतक लंबा है, ७ सातमे नंबर आबुके जैनमंदिर और आगरेका ताजमहेल ये बडी नामीचीजें है.

६ मुल्क बर्मा जिसमें आवा अमरपुर मांडले रगुन और पेंगुन बडे शहर है, जैनशास्त्रोमे चंद्राजाकी आभापुरी जो लिखी है, वो यही आवानगरी जो उपर लिखचुके, मुल्क चीनमें रेशमी कपडे उमदा बनते है, मुल्क जापानमेंभी रेशमी काम अच्छा बनता है, मुल्क टिबेट जो हिमालयके उत्तरमे आबाद है, तीर्थंकर महावीर स्वामीके जमानेमे मुल्क टिबेटमें पृष्टचपा नगरी आबादथी, और इसका पृष्टचंपा नाम होनेकी वजह यह है कि, हिमालयकी पीठतर्फ मजकुर नगरीथी, तीर्थंकर महावीरस्वामी वहा तशरीफ लेगये थे, और वहांके राजे शाल और युवराज महाशालने इनकेपास दीक्षा इख्तियार किइ थी, आवश्यकसूत्रके अवल अध्ययनमे इसका बयान दर्ज है, देखलो,! मानससरोवर जो शास्त्रोमे सुनतेहो, हिमालय पहाडकी उत्तरमे इसी मुल्क टिबेटकी सरहद्पर था, मुल्क अफगानीस्तानमे काबुल कंदहार गजनी हिरात और जलालाबाद बडे शहर है, जमाने तीर्थंकर रिषभदेव महाराजके बाहुबलीकी अमलदारीका पायतख्त तक्षशिला नगरी इधरथी, मुल्के अफगानीस्तानमे बादाम पिस्ते अखरोड अनार सेव चिलगोजा और मनकाद्राख वगेरा मेवाजात ज्यादा और लोग यहांके ताकातवर होते है, मुल्क बलुचीस्तान इसके बडे शहर खिलात और केटा है, केटा अंग्रेजोंके ताबेमे है, मुल्क अरबस्तान इरानकी नैरुत्यकोनमे आबाद है, इसमे मक्का मदीना जदा एडन और मस्कत ये बडे शहर है, मुल्करुस और सैबिरिया बडे लबेचोडे घेरेमे बसे हुवे है. मुल्क जर्मनीमे शाल दुशाले और गालीचे उमदा बनते है, सस्कृत इल्मकी थोडे वर्सोसे यहा तरक्की हुइ है, प्रोफेसर मेक्षमुलर बुडा पेस्टके वाशिंदे और सस्कृत विद्याके कामील थे, मुल्क ग्रीस युरो-

पके तुर्कस्तानकी दखनमें पुराना मुल्क है, यहांके बादशाह सिकंदरने हिंदपर चढाइ किइ थी, इसकी राजधानी आथेन्स है, मुल्क इटाली आस्ट्रियाके पश्चिम तर्फ इसका वडा शहर रोंम ब्रिंडीसी वगेरा है, हिंदके ज्योतिषीयोने हिंदके पश्चिमकों रोमकपत्तन लिखा यही रोंम शहर है, मुल्क स्विटझर्लांड-इसका वडा शहर जनेवा यहांकी बनी हुइ जेंब घडियें मुल्कोंमें मशहूर है इसीलिये जनेवावाच बोलागया, मुल्कफ्रांस वडा आबाद इसके वडे शहर पेरिस ब्रेस्ट चेरबुर्ग मारसेल्स और आरलियन्स है, चेरबुर्गमें द्राखका सिरका रेशम जवाहिराका काम और हारमानियम बाजे अछे बनाये जाते है, मुल्क स्पेनका जिब्राल्टर शहर जहां हिंदसें विलायतकों जाती हुइ ष्टीमरे ठहरा करती है, वडा आबाद है, मुल्क इग्लांड आजकल सभ्यताके लिये ज्यादा मशहूर हुवा है चारोंतर्फ इसके समुंदर और इसके वडे शहर लंडन मानचिष्टर और बर्मिंगहाम है, स्काटलांडका वडा शहर एडिंबरो यहां नकशे ज्यादा बनाये जाते है, दुसरा शहर ग्लासगो और आयरलांडका वडा शहर डब्लीन है, इग्लांडमें लीवरपुरभी वडा शहर है, और लोहेके असबाब यहां ज्यादा बनते है, रैलकी शुरुआत इसी इग्लांडके एक साहबसें हुइ है, और सबसें पेस्तर इसी मुल्कमें जारी हुइ, टेलीग्राफ और ष्टीमरेभी यहांसेही जारी हुइ है, लंडन शहर टेम्स नदीके कनारे बसा हुवा नदीके नीचेभी रास्ता बनाया है, और उपर पुलके जरीये सडक है,—

७ मुल्क अमरिकाके दो हिस्से एक दखनअमरिका दुसरा उत्तरअमरिका यहांके लोग दौलतमंद यहांकी मशहूर चीजें रुइ तमाखू अनाज जेंबघडी टाइमपीस घासलेट कागज पेन्सीस और होलडर वगेरा है, मुल्क चीन आबादीमें ज्यादा और पुराना-पुरानी तवारीखोमें इसका बयान इज्जतके शाथ किया है, खेंती करना

रेशम बुनना और इल्मपढना इसमुल्कमें ज्यादेतर देखोगें, ख्वाह गरीब हो या अमीर लिखना पढना सबकोइ जानते हैं, मुल्क चीनमें नदीये बहुत और चाहकी पैदाश ज्यादा कपुरके पेंड यहा कसरतसें होते है, यहाकी खानोंसे सोना चादी ताना लोहा पारा और जवाहिरात निकलती है इसमुल्कमें बौधमजहब अकसर ज्यादा है, मांसखानेका रवाजभी ज्यादा–मगर लोग यहांके होशियार और कारागीर हैं, जैसी चीजदेखे फौरन बनालेते हैं, चीनकी राजधानी पेंकीनमें कनपाउ नामका एक अखबार करीब एकहजार वर्संसें जारी है, मुल्कचीनकी मशहूर चीजे चाह रेशम मीटीके वर्तन सकर दारचीनी कापुर कागज हांथीदांत और कचकडेकी चीजे गेरमुल्कोमें जाती है, मुल्कजापानकी जमीन बहुधा कोही-स्तान और पथरीली है, उंचे उंचे पहाड नदीये और झीले यहां कसरतसें देखोगें, उंठ और हाथी जापानमे बिल्कुल नही, समुंदरके कनारे मोती और मुंगा मीलता है, अंबर भी इसमुल्कमे पैदा होता है, मुल्क जापानके लोग आपसमें कभी गाली या सख्तबात जबा-नपर नही लाते, और यहाके लोग उम्रभरमें दो तीनदफे अपना नाम बदलते रहते है, मुर्दोको जलाते है और उनके नामकी छत्रीयेभी तामीर करवाते है, यहाकी भाषा निराली और मजहब बौध है, मुल्क जापानमें जबकिसी लडकेका जन्महोता है, उसीरौज एक द्रख्त बोयाजाता है, और विवाहकेरौज उसकी कुछ चीज बनाकर रखीजाती है, दुल्हा दुल्हीन उसकी बडी इज्जत करते है, मुल्क तातारकी जमीन बहुत करके विरान और पानी कम–मुल्क टिब्ब-तकी जमीन तातारकी मुआफिक मगर इसमे मेंदान कम है, हिमालय पहाड समुंदरके पानीसें (३००००) फुट उचा और टिब्बटके मुल्कसें संबंध रखता है, टिब्बटमे नमक सोहागा और हिंगलुंकीखाने मौजूद है, और सोना भी कइ जगहसे निकलता है, ठंड हदसे ज्यादा और हवा निहायत खुश्क है, टिब्बटका बडा शहर

लासा और वो चीनकेपेकीन शहरसें (१८००) मील दुर नैरुत्यकोंनको है, बौधमजहबके लामानामके गुरु इसी लासा शहरमें रहते है,—

८ मुल्करुस कुछ एशियामे और कुछ युरोपमें पडा है, सैबिरिया मुल्क रुसका एक हिस्सा है, मुल्क रुसकी खानोसें सोना चांदी तांबा लोहा सुरमा पारा सोरा गंधक लसनिया और पुखराज वगेरा कींमती चीजे निकलती है, मुल्क अफगानीस्तानकी खानोसें सोना चांदी लसनीया माणक लाजवर्द शीशा लोहा सुर्मा गंधक हरताल नमक और सोरा वगेरा निकलता है, अफगानीस्तानके घोडे बडे मजबूत और मुल्कोमे मशहूर उन रेशम खुश्क मेंवा हिंग और तमाखू यहांसे दुसरे मुल्कोमें भेजीजाती है, मुल्कइरान अफगानीस्तानकी पश्चिम तर्फ एशिया रुससे मीलाहुवा करीब (९००) मील पूर्वपश्चिमकों लंबा और (६००) मील उत्तर-दखन चोडा है, इरानकी खाडीसे मोती निकलते हैं, रेगिस्तान और पहाडोकी बहुतायत, इरानकी खानोसें चांदी शीशा लोहा तांबा शंगेमर्मर गंधक और फिरोजा निकलता है, सियामुसल्मानोंकी आबादी यहां ज्यादा, इरानके गालिचे उमदा रेशमी कपडा और कमख्वाब भी यहां उमदा बनता है, मुल्क अर्बस्तान जिसके उत्तरमें रुमकी सलतनत पूर्वमें इरानकी खाडी पश्चिममें लाल समुंदरकी खाडी और दखनमे अर्बीसमुंदर है, अर्बस्तानमें बहुतसा रेगिस्तान और कहीं कही उर्वरा धरती है, गोंद छुहारे और कालीमीर्च यहां ज्यादा होती है, गेहु-बाजरी जवार भी पैदा होती है, चावल इस मुल्कमें नही होते, अर्बी घोडा मुल्कोमें मशहूर और उंट यहां कसरतसे पैदा होते है. मुल्क एशियाइरुममें बगदाद बसरा बेतुलमुकदस ये नामी शहर है, इस मुल्कमें तुर्की इरानी युनानी शामी अरमनी और अर्बी जबान बोली जाती है. शहर बसरेमे इत्र गुलाबका उमदा बनता है, टिबेट नयपाल और जावाटापुमें पेस्तर जैनोकी आबादी थी,—

९ देहलीकेपास कुतुबमिनार (२४२) फुट उंचा जिसमें चढनेके लिये (३७८) सीढिये बनी है, इसपर चढकर देखोतो मानोंद! आसानमे आगये, इसमिनारके तीन दर्जे लालपथरके और चौथा शंगे मर्मरका बना हुवा है, सदर मुकाम पेंशावर सिंधुनदीकेपार हिंदुस्थानका सबसे परला जिला है, शहर पेंशावर बडा-बनास्पति यहा ज्यादा मुसलमानोंकी आबादी कसरतसे और तिजारतके लिये अछा शहर है, तुरान-अफगानीस्तान और इरानके सौदा-गिरलोग पेंशावरमे जाते है, राजा संप्रतिके वख्तमे यहां जैन-मंदिर और जैनोकी आबादी थी, दुनियामे अनाज कपडे पानी और नींद इन चीजोकी दरकार सबकों होती है. बगेर इन चीजोके किसीका काम नही चलता, कइ मुल्कोमे बेलोंसे हल चलाते है, और कइ मुल्कोमे भेंसोसे चलाते है, कइ मुल्कोमे हाथीयोंसे और कइ मुकोमे संचोसे हल चलाते है, कइ मुल्कोमे घाससे कागज बनाते है, कइ मुल्कोमे लकडोसे और कइ मुल्कोमे शणसे बनाते है, कइ मुल्कके लोग जादु टोना जुठा समजते है, और कइ सचा समजते है, कइ मुल्कवाले भूतोको सचा मानत है, और कइ मुल्क-वाले इस बातको बिल्कुल गलत फरमाते है, कइ मंत्रवादी गारुडी-लोग सर्पको अपने हाथोसे पकडलेते है. और कइ सर्पके मत्रको जानते हुवेभी पकडनेसें डरते है, कइलोग दियासलाइको छोटी चीज समजते है, मगर इतना नही सौचते जरा घसारा पातेही सलग उठेगी, और बडेबडे मकान जलादेगी, कइ मुल्कवाले कोट पटलून और टोपी पहनना पसंद करते है, कइ पघडी दुपट्टा और धोती पसद करते है, अछे कपडे अछे गहने और अच्छा खानपान सबको प्यारा लगता है, मगर बगेर तकदीरके अछी चीज मीलना दुसवार है, दुसरेके गेहने कपडे और खानपान देखकर अपने दिलकों तरसाना बहेत्तर नही, मुल्क मुल्कमे फिरनेवालेको ऐसी कइ तरहकी अजनबीबाते दिखाइ देती है. मगर दिलमे-वे

ताज्जुब नही लाते, जिनोने मुल्कोंकी सफर नही किइ है वे चाहे इस बातका ताज्जुब करे, कइ शख्श ऐसे नाजुक बदन है, जो दो रोटीभी नहीखा सकते, और कइ ऐसे है. जो पनरा रोटी एकही वख्त खासकते है, कइ अंधे शख्श ऐसे होशियार देखे गये जो अपने शहरके तमाम रास्तोमें फिर आते है, और हाथमे लकडीभी नही रखते, और कइ देखती आंखोंवालेभी अपने शहरका रास्ता भूल जाते है, इसमें कोइ ताज्जुबकी बात नही, अकल होशियारी पाना अपनी अपनी तकदीरके ताल्लुक है, हर शख्शको लाजिम है कोइ चीज खरीदेतो देखभालकर खरीदे, बोजा उतना उठाना जितनी अपनी ताकात हो, सन (१८१८) इस्वीमें पहल पहली रेल विलायतमें जारी हुइ, पेस्तरके जमानेमे आकाशगामी विमान विद्याधरलोग विद्याके जरीये चलाते थे, जमाने हालमें न वैसी विद्या रही, न विद्याधर रहे, आजकल जो आकाशमे चलनेवाले विमान बनाये गये है वे विद्याधरके विमानकी बराबरी नही करते, विद्याधरके विमान रातकोंभी चलते थे पुराने शिलालेख और तरह तरहकी लिपियोंके नमुने देखकर पुराना जमाना याद आता है, हंसीखुशी और खेल तमाशे देखकर कइलोग दिलकों बहेलाते है, मगर धर्मशास्त्रोंकी बातोंपर अमल करके दिल बहेलाना निहायत उमदा बात है,—

[ स्रग्धरा वृत्तम् ]

प्राणाधीशो गतो मे बहुरि-न-बगदे-शूंकरूं रे ! हवेहूं,<br>
माचे कर्मांचि गोष्टी-हिवकुणसुणसी-गांठ घेलो नहीछे,<br>
म्हारे तीरां सुणोरां-खरच बहुत है-ईहरां टाबरांरो,<br>
दिट्टी तेंडे दिलोंदी-इशक उलफते-हो तवो बीचनाडु. १

इस काव्यमें मुल्क मुल्ककी जबान और उसका अलग अलग बयान है, एकवख्त एकमर्द औरत अपने वतनसें गेरमुल्ककी सफरकों चले, एक गांवके बहार एक द्रख्तके नीचे अपनी औरतको

बेठाकर-मर्द गांवमें गया, बडी देर हुइ मगर ,जब आया नही, औरत अपने पतिकी यादगिरीमे बोलती ,है, प्राणाधीशो गतो मे यह संस्कृत जबान हुइ, बहुरि न बगदे यह मुल्क पूर्वकी जबान हुइ, शुं करुं रे हवेहुं, यह मुल्क गुजरातकी जबान हुइ, मांचे कर्मोची गोटी यह महाराष्ट्र देशकी जबान हुइ, हिव कुणसुणसी गांठ घेलो नहीछे, यह मुल्क ढुंढारकी जबान हुइ, दर असल! जयपुर अलवरकी तर्फ ऐसी भाषा बोलते हैं, म्हारे तीरां सुणोरा यह मेवाड देशकी जबान हुइ, खरच बहुत है,- यह उर्दू जबान हुइ, इहरां टाबरांरो यह मारवाडी जबान हुइ, दिट्टी तेडे दिलोंदी इशक उलफते यह मुल्क पंजाबकी जबान हुइ, होतवो वीच नाड़ यह उस मुल्ककी भाषा है, जिस मुल्कके वे मर्द औरत रहनेवाले थे, जो जो शख्श मुल्क मुल्ककी सैर कर चुके है, उनको कोइ नवीन बात नही, कइ मुल्कके लोग बहुधा मतलबी बने रहते है, कइमुल्कके कमइल्म और कइमुल्कके लोग कामीलइल्म होते है, कइमुल्कके लोग उनके शाथ नेंकी करो-तोभी वे नेंकी नही करते, कइमुल्कके लोग मुंहके मीठे मगर दिलके मीठे नही होते, कइमुल्कके लोग अपने मतलब निकालनेमे होशियार, कइ मुल्कवाले ऐसे सख्त मिजाज होते है जो जराभी सख्तबात कहो बरदास्त नही करते और लडनेको आमादा होजाते है, कइ मुल्कवाले मिलनसार और कइ मुल्कके लोग अकडमिजाज होते है, कइ मुल्कके लोग एशआराम करनेमें मशगूल और कइ मुल्कके लोग दुनियामे उमदा चीज एक धर्म समजते है, कई मुल्कके लोग रहमदिल और कइ मुल्कके बेरहम होते है, कइ मुल्कवाले कहते है, दुनियाकों ईश्वरने बनाया, धर्म धुर्म उठ गया, और नरक स्वर्ग सब गप्प है, मगर धर्मशास्त्र फरमाते है, अपने अपने पूर्वजन्मके किये हुवे भलेबुरे कर्मोका फल जगत है, इसका अवल अखीर कोइ नही, हमेशांसे आबाद और बरबाद होता चला आया, और

ऐसेही होता चला जायगा, कइयोंका यहभी खयाल है परलोक किसने देखा, जिसकेपास रसीद आइ हो-दिखलावे, और कइ फरमाते है, खाना पीना एश करना, यही मुनासिब है, बाद मरनेके कौन देखने आयगा, मगर धर्मशास्त्रका यह कौल है नरक स्वर्ग पुन्य पाप जन्म जन्मांतर सब सच है, धर्म करनेसें इस जीवकी मुक्ति होती है, और पाप करनेसें अपना जन्म जन्मांतर बढता है, अगर सुख चाहो धर्म पुन्य करो, मुल्क-ब-मुल्ककी सैरका हाल खतम हुवा,-



## [ जैन मजहबका इतिहास,- ]

१ इसमे इस कालचक्रकी शुरुआतमे पहले राजा रिषभदेव हुवे, और वे खुद तीर्थकरभी थे, उनसेलगाकर महावीर स्वामीतक चौइस तीर्थकरोका बयान-कितने वर्स बाद कौन कौन तीर्थंकर हुवे, चक्रवर्त्ती राजे-वासुदेव राजे-मांडलिक और छत्रपतिराजे कब कब हुवे, कौन कौन तीर्थकरने किस किस नगरीमें सलतनत किइ? जमाने तीर्थंकर महावीर स्वामीके कौन कौनसे राजे जैन थे? पांचमें आरेमें धर्म किसकदर पतला पड जायगा? बडे बडे नामी ग्रामी जैनाचार्य जैन उपाध्याय और जैनमुनि कब कब हुवे? उनका बयान मुताबिक जैन शास्त्रके दिया है, जिसको पढकर आमलोग खुश होगे, इस शुरु कालचक्रमे अवल तीर्थकर रिपभदेव महाराज विनीता नगरीमें हुवे. तीर्थंकर कहो या नायबधर्म कहो बात एकही है, कोशला साकेतपुर और अयोध्या ये सब विनीता नगरीकेही नाम है. पेस्तर मुल्क मुल्ककी सैरमें लिखा है, रिषभदेव महाराजके बडे बेटे भरत चक्रवर्ती और उनके बेटे सूर्ययशासे सूर्यवंशी खानदान और बाहुबलीजीके बेटे चंद्रयशासें चंद्रवंशी खानदान चला, तीर्थकर रिषभदेवके बडे बेटे भरत चक्रवर्त्तीने भारत मध्यखडमे अष्टापद वगेरा जैन तीर्थोंकी नींवडाली, शत्रुंजयतीर्थ जो

देवताओ करके पूजनीकथा जमाने भरत चक्रवर्त्तीके मनुष्योंसेंभी पूजनीक हुवा, भरत चक्रवर्त्ती खुद जैनधर्मपर पावंद था, तीर्थंकर रिषभदेव महाराजकी धर्म तालीमसें श्रावक धर्मको बयान करनेवाले चार जैनवेद बनाये, पहेला ससारदर्शनवेद, दुसरा संस्थापन-परामर्शवेद, तीसरा तत्वावबोधवेद, और चौथा विद्याप्रबोधवेद ये चारनाम जैनवेदोंके हुवे, तीर्थंकर रिषभदेव महाराजने अपने (१००) बेटोंको मुल्कोंकी वाटनी करके दीक्षा इख्तियार किइ, उनके पुंडरीक वगेरा (८४०००) चेले थे, उनमें एक चेला मरिचि नामकाभीथा, उनोसे जैनमुनिकी क्रिया बनसकी नही, अखीरमे परिव्राजकपना इख्तियार किया, उनका एक चेला कपिल नामसे हुवा, कपिलका चेला आसुरि हुवा, उसने पचविंशतितत्व बयान किये, और सांख्यमजहब चलाया,–

२ तीर्थंकर रिषभदेव महाराजके मुक्ति होनेके बाद पचासलाख कोटि सागरोपम खतम होनेके पीछे–दुसरे तीर्थंकर अजितनाथ महाराज हुवे, दुसरा सगर नामका चक्रवर्ती राजा इनहीके वख्तमें हुवा. इसने देवताओंकी मददसे समुंदरकी खाडीको पूर्व पश्चिम और उत्तर तर्फ आबादीमें फेलाइ, जिससे जमीनकी सरहद जो पहलेथी उससे बदल गइ, सगर चक्रवर्त्तीको साठहजार बेटेथे, उनमेसे बडे बेटे जन्हुकुमारने गंगानदीकी नहेर अष्टापद तीर्थकी चौफेर लेजाना चाहा, कुछ दुरतक लेभी गयाथा, गंगानदीका दुसरा नाम इसीलिये जान्हवी कहलाया, तीर्थंकर अजितनाथ महाराजने दुनिया छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ, तप किया और मुक्तिपाये, तीर्थंकर अजितनाथ महाराजके मुक्ति होनेके बाद तीसलाख कोटि सागरोपम वतीत होनेपर सावथ्थी नगरीमें तीसरे तीर्थंकर संभवनाथ महाराज हुवे, उनोने सलतनत किइ, अखीरमे दुनिया छोड कर दीक्षा इख्तियार किइ, तप किया और मुक्ति पाइ, तीर्थंकर संभवनाथ महाराजके मुक्ति होनेके बाद दशलाख कोटि सागरो-

पम काल वतीत होनेपर अयोध्या नगरीमें चतुर्थ तीर्थकर अभिनंदन महाराज हुवे, उनोने अमलदारी किइ अखीरमें दुनियाको छोडकर दीक्षा लिइ, तपकिया और मुक्ति पाइ, तीर्थकर अभिनंदन महाराजके मुक्ति होनेके बाद नवलाख कोटि सागरोपम काल वतीत होनेपर पांचमें तीर्थकर सुमतिनाथ महाराज हुवे, उनोने सलतनत किइ, अखीरमें दुनियाकों छोडकर दीक्षा लिइ, तपकिया, और मुक्ति पाइ, तीर्थकर सुमतिनाथ महाराजके मुक्ति होनेके बाद नवे हजार कोटि सागरोपम काल वतीत होनेपर कौशांबी नगरीमें छटे तीर्थकर पद्मप्रभ महाराज हुवे, उनोने सलतनत किइ, दुनियाकों छोडकर दीक्षा लिइ, तपकिया, और मुक्ति पाइ,–

३ तीर्थकर पद्मप्रभ-महाराजके मुक्ति होनेके बाद नवहजार कोटि सागरोपम काल वतीत होनेपर बनारसी नगरीमें सातमें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ महाराज हुवे, उनोने अमलदारी किइ, दुनियाकों छोडकर दीक्षा लिइ, तप किया, और मुक्ति पाइ, तीर्थकर सुपार्श्वनाथ महाराजके मुक्ति होनेके बाद नवसो कोटि सागरोपम काल वतीत होनेपर चंद्रावतीनगरीमें तीर्थकर चंद्रप्रभ महाराज हुवे, उनोंने सलतनत किइ, अखीरमें दुनियाकों छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ, तप किया, और मुक्ति पाइ, तीर्थकर चंद्रप्रभ महाराजके मुक्ति होनेके बाद नेवुं कोटि सागरोपम काल वतीत होनेपर काकंदी नगरीमे तीर्थकर सुविधिनाथ महाराज हुवे, उनोनें अमलदारी किइ, अखीरमें दुनियाकों छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ, तप किया, और मुक्ति पाइ, इनके बाद कितनेक कालतक जैन धर्म बिल्कुल नेस्तनाबुद होगया था, जैनकी द्वादशांगवानीके पुस्तक और चारो जैनवेदभी नही रहे, जैन मजहबके मुनिलोगभी नही मिलते थे, ब्राह्मण लोगोने यजन याजन करके कइ श्रुतिये बनाइ और पूज्य कहलाने लगे,—

४. तीर्थंकर सुविधिनाथ महाराजके मुक्ति होनेके बाद नवकोटि सागरोपम काल बतीत होनेपर भदीलपुरमे दसमें तीर्थंकर शीतलनाथ महाराज हुवे, उनोनें सलतनत किइ, अखीरमे दुनियाकों छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ, इनके वख्तमें फिर जैन धर्मकी तरकी हुइ, हरिवंशकी पैदाश हुइ. तप किया, और मुक्ति पाई, तीर्थंकर शीतलनाथ महाराजके मुक्ति होनेके बाद एकसो सागरोपम छासठलाख छवीश हजार वर्स कम एक कोटि सागरोपम काल बतीत होनेपर-सिंहपुरीमें ग्यारहमे तीर्थंकर श्रेयांसनाथ महाराज हुवे, उनोने अमलदारी किइ, अखीरमे दुनियाकों छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ, तपकिया, और मुक्ति पाई, तीर्थंकर श्रेयासनाथ महाराजके मुक्ति होनेके बाद चौपन सागरोपम काल बतीत होनेपर चंपापुरीमे बारहमे तीर्थंकर वासुपूज्य महाराज हुवे, उनोने दुनिया छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ, तप किया, और मुक्ति पाइ, तीर्थंकर वासुपूज्य महाराजकें मुक्तिहोनेके बाद तीससागरोपम काल बतीत होनेपर कंपिलपुरमें तेरहमें तीर्थंकर विमलनाथ महाराज हुवे, उनोनें सलतनत किइ, अखीरमें दुनिया छोडकर दीक्षा लिइ, तप किया, और मुक्ति पाइ, इनके बाद स्वयभू नामके वासुदेव राजा हुवे, तीर्थंकर विमलनाथ महाराजके मुक्तिहोनेके बाद नवसागरोपम काल बतीत होनेपर अयोध्या नगरीमे चौदहमे तीर्थंकर अनंतनाथ महाराज हुवे, उनोने अमलदारी किइ, अखीरमें दुनिया छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ, तप किया, और मुक्ति पाई, इनके बाद पुरुपोत्तम नामका वासुदेव राजा हुवा,-

५ तीर्थंकर अनंतनाथ महाराजके मुक्ति होनेके बाद चार सागरोपम काल बतीत होनेपर रतनपुरीमे पनराहमे तीर्थंकर धर्मनाथ महाराज हुवे, उनोने सलतनत किइ, अखीरमे दुनिया छोडकर दीक्षा लिइ, तप किया, और मुक्ति पाइ, इनके बाद पुरुपसिंह नामका वासुदेव राजा हुवा, इनके पीछे तीसरे मघवा नामके

चक्रवर्त्ती और इनके वाद चतुर्थ चक्रवर्त्ती सनत्कुमार नामके बडे राजे हुवे, तीर्थंकर धर्मनाथ महाराजके मुक्ति होनेके वाद पोन पल्योपम कम तीनसागरोपम काल वतीत होनेपर हस्तिनापुरमें सोलहमें तीर्थंकर शांतिनाथ महाराज हुवे, आप तीर्थंकरभी और पांचमे नंवरपर चक्रवर्त्ती राजेभी थे, उनोने मुल्क फतेह किया, सलतनत किइ, अखीरमें दुनियाकों छोडकर दीक्षा लिइ, तप किया, और मुक्ति पाई, तीर्थंकर शांतिनाथ महाराजके मुक्ति होनेके वाद आधेपल्योपम काल वतीत होनेपर इसी हस्तिनापुरमें सतराहमे तीर्थंकर कुंथुनाथ महाराज हुवे. आप तीर्थंकरभी थे और छठे नंवरके चक्रवर्त्ती राजेभी थे, उनोने मुल्क फतेह किया, अमलदारी किइ, अखीरमे दुनियाको छोडकर दीक्षा लिइ, तप किया. और मुक्ति पाइ. तीर्थंकर कुंथुनाथ महाराजके मुक्ति होनेके वाद कोटि सहस्र वर्स कम पावपल्योपम काल वतीत होनेपर इसी हस्तिनापुरमें अठारहमें तीर्थंकर अरनाथ महाराज हुवे. आप तीर्थंकरभी थे, और सातमें नंवरके चक्रवर्त्ती राजेभी थे, उनोने मुल्क फतेह किया, सलतनत किइ, अखीरमें दुनियाको छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ. तप किया, और मुक्ति पाइ. इनके वाद पुरुषपुंडरीक नामसे छठे वासुदेव राजे हुवे. इनके वाद कुरुवंशी सुभूम नामके आठमे चक्रवर्त्ती राजे हुवे. सुभूम चक्रवर्त्तीके जमानेमे यमदग्नि तापसके वेटे पर्शुरामजी हुवे,–

६ तीर्थंकर अरनाथ महाराजके मुक्ति होनेके वाद कोटि सहस्र वर्स वतीत होनेपर मिथिला नगरीमें तीर्थंकर मल्लिनाथ महाराज हुवे. उनोने दुनियाकों छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ, तप किया और मुक्ति पाइ. तीर्थंकर मल्लिनाथ महाराजके मुक्ति होनेके वाद चोपनलाख वर्स वतीत होनेपर राजगृही नगरीमें वीशमे तीर्थंकर मुनिसुव्रत महाराज हुवे, उनोने अमलदारी किइ, अखीरमें दुनियाकों छोडकर दीक्षा लिइ. तप किया और मुक्ति पाइ. आभा

पुरीका चंदराजा तीर्थंकर मुनिसुव्रत महाराजकी हयातीमें हुवा, इनके बाद हस्तिनापुरमें महापदम नामके चक्रवर्ती हुवे. इनके बाद अयोध्या नगरीमे राजा दशरथके बेटे रामचंदजी और लक्ष्मणजी बडे बहादूर शख्श हुवे, जैनशास्त्रोके फरमानसें रामचंदजी और लक्ष्मणजी जैन धर्मके अनुयायी थे. वैदिक मजहबके धर्मशास्त्र उनकों वैदिक मजहबके अवतार रुप फरमाते है, रावण सुग्रीव अंगद और हनुमान वगेरा असलमें मनुष्य थे, मगर विद्याके जोरसें तरह तरहके रुप बना लेतेथे, इसलिये उनको विद्याधर कहेगये, लंकानगरीके घरघरपर सुनहरी कलश लगे हुवे थे, सुनहरी चित्रकारीका काम बहुत हुवाथा, शुभहके वख्त सूर्य उदय होतेही झलाझल रोशनी नजर आतीथी, इसलिये सोनेकी लंका कहीगइ, दर असल! - इटचुने और पथर जो लंका नगरीके घरोमें लगेथे, सोनेके नही थे, हनुमानजी वगेरा मनुष्य थे, वानर नही थे, हा! तरह तरहके रूप बेंशक! धारसकते थे, राजा रावण जब नव हीरोका हार पहन लेते थे, तो उनके असली मुखसमेत दशमुख दिखाइ देतेथे, दर असल' मुख तो एकही था, यह बात जैन रामायणमे लिखी है, देखलो! जैनशास्त्रके फरमानसे लक्ष्मणजी आठमे वासुदेव और रामचंद्रजी आठमे बलदेव थे, श्रीपाल राजा जिनोने नव पदजीका आराधन किया था तीर्थंकर मुनिसुव्रत महाराजके शासनमेंही हुवे,-

७ तीर्थंकर मुनिसुव्रत महाराजके मुक्ति होनेके बाद छह लाख वर्स बतीत होनेपर मिथिला नगरीमे एकीसमे तीर्थंकर नमिनाथ महाराज हुवे. उनोने सलतनत किइ, अखीरमे दुनिया छोडेकर दीक्षा लिइ. तप किया. और मुक्ति पाइ. इनके बाद हरिषेण दशमे चक्रवर्त्ती और जयनामके ग्यारहमे चक्रवर्त्ती हुवे, तीर्थंकर नमिनाथ महाराजके मुक्ति होनेके बाद पाचलाख वर्स बतीत होने-पर शौरीपुरमे बाइसमे तीर्थंकर यदुवंशी नेमिनाथ महाराज हुवे. इनकी हयातीमे इनके चचेरे भाइ कृष्णजी नवमे वासुदेव और

बलभद्रजी नवमें बलदेव हुवे, जैन शास्त्रके फरमानसें कृष्णजी और बलभद्रजी जैनधर्मानुयायी थे. वैदिक मजहबवाले कृष्णजीको अपने ईश्वरावतारमानते हैं. कौरव पांडवोंका महाभारत युद्ध कुरुक्षेत्रमें इन्हीके जमानेमें हुवा. तीर्थकर नेमिनाथ महाराजने सलतनत नही किइ, दुनियाकों छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ तप किया, और मुक्तिपाइ, इनके बाद ब्रहमदत्त नामके बारहमें चक्रवर्त्ती हुवे. तीर्थकर नेमिनाथ महाराजके मोक्ष होनेके बाद (८३७५०) वर्स बतीत होनेपर बाणारसी नगरीमें तेइसमें तीर्थकर पार्श्वनाथ महाराज हुवे. उनोने अमलदारी किइ. अखीरमें दुनिया छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ, तप किया, और मुक्ति पाइ,–

८ तीर्थंकर पार्श्वनाथ महाराजके मुक्ति होनेके बाद (२५०) वर्स बतीत होनेपर क्षत्रियकुंडगांवमें चोइसमें तीर्थकर महावीर स्वामी हुवे, उनोने अमलदारी नही किइ, दुनियाकों छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ, तप किया, इनके (१४०००) चेलेथे, जिनमे ग्यारह चेले बडे थे, तीर्थकर महावीरके पहले और उनकी हयातीमे नीचे लिखे हुवे मुल्कोमें और शहरोमें जैन धर्म चलताथा, मगध देश राजगृही नगरी, अंगदेश चंपानगरी, बंगदेश ताम्रलिप्ती नगरी, कलिंगदेश कांचनपुर नगर, कोशलदेश साकेतपुर, (अयोध्या) कुरुदेश हस्तिनापुर, कुशावर्तदेश शौरीपुर, पांचालदेश कंपिलपुर, जंगलदेश अहिछत्ता नगरी, सौराष्ट्रदेश द्वारिका नगरी, विदेहदेश मिथिला नगरी, वत्सदेश कौशांबी नगरी, शांडिल्यदेश नंदीपुर, मलयदेश भदीलपुर, मत्सदेश वेराटनगर, वरुणदेश अछापुरी, दशार्णदेश मृतिकावती नगरी, चेदीदेश शौक्तिकावती नगरी, सिंधुसौवीरदेश वीतभयपत्त नगर, शूरसेन देश मथुरानगरी, कुणालदेश सावथ्थी नगरी, लाटदेश कोटीवर्ष नगर, अवंतीदेश उज्जयिनी नगरी. महाराष्ट्र कोंकण मरुस्थल मेदपाट और नयपाल वगेरा मुल्कोमें जैन धर्म चलताथा,—

९ तीर्थंकर महावीरका विहार बहुत करके राजगृही चंपा पृष्टचंपा जो हिमालय पहाडकी पीछाडी यानी मुल्क टिबेटमे थी. विशाला मिथिला कौशांबी मोराकसंनिवेश वाणिज्यगांम अस्थिकगाम भद्रिकानगरी आलंभिकानगरी, सावथ्थी वज्रभूमि पावापुरी कभी उत्तरपूरवदेशमें कभी गंगाजमनाके इर्दगिर्द कभी नयपालकी तराइमें कभी कनकखलतापस आश्रमकी आसपास हिंदके मुल्क पूरव उत्तर तर्फ हुवा. केवलज्ञान होये बाद मुल्कसौराष्ट्र तर्फभी तशरीफ लायेथे, तीर्थंकर महावीरकी धर्मतालीम नीचे लिखेहुवे राजे महाराजोने सुनी और उसपर अमल किया, मुल्क मगधका राजा श्रेणिक बिंमीसार तीर्थंकर महावीरकी धर्मतालीमको बशिरो चश्म रखताथा, राजा श्रेणिकका बेटा अजातशत्रु जिसका दुसरा नाम कोणिक था, जैनधर्मपर पसंद था, विशाला नगरीका चेडा राजा तीर्थंकर महावीरका पुरा खिदमतगार था, काशी कोशल-देशके मल्लिकजातिके (९) राजे और लछिकजातिके (९) राजे कुल्ल (१८) राजे, आमलकल्पानगरीका राजा श्वेत, वीतभय पत्तनका राजा उदयन, कौशांबीका राजा वत्स उदयन, क्षत्रीयकुंडगांवका राजा नंदीवर्धन, पृष्टचंपा नगरीके राजे शाल महाशाल, पोतनपुरका राजा प्रसेनचद्र, हस्तिशीर्ष नगरका राजा अदीनशत्रु, विजयपुरका राजा वासवदत्त, महापुरका बलराजा और साकेतपुरका मित्र नंदी राजा ये सब तीर्थंकर महावीरस्वामीके पुरे खिदमतगार और उनकी धर्मतालीमपर अमल करनेवाले थे, राजा श्रेणिकके बेटे अभयकुमारने और मेघकुमारने तीर्थंकर महावीरके पास दीक्षा इख्तियार किइथी,—

१० तीर्थंकर महावीरने अखीरका चौमासा पावापुरीमें किया. और अपने ज्ञानसे जाना कि—मेरा आयुष्य अब चदरोजका है, कातिकवदी अमाशके रोज पिछली रातके वख्त जब चंद्रमा स्वाति-नक्षत्रपर सफर करेगा, मेरी मुक्ति होगी, साधु साधवी श्रावक

श्राविका कई राजे महाराजे और दुसरे लोग पावापुरीमें जमा हुवे. तीर्थंकर महावीरने उनको दो दिनतक तालीमधर्मकी दिई, आत्माका कर्मोंका दुनियाका और मुक्तिका वयान फरमाया, मनुष्य-जन्म पाकर धर्म करना चाहिये, दुनियामें सारवस्तु धर्म है, मेरी मुक्ति होनेके वाद (३) वर्स और (८॥) साढेआठ महिने वतीत होनेपर पांचमा आरा शुरु होगा, उस वख्तसें दिनवदिन दुनियामें उमदा चीजोंकी कमी होती जायगी. पांचमे आरेमें बडेबडे शहर विरान और छोटेगांव आवाद होजायगें. देवता मनुष्योंके सामने प्रत्यक्ष न आयगें खममें दर्शाव करेगें. मनुष्य अपनी मर्यादा छोडकर चलेगें. पहले जैसे हिम्मतवहादूर लोग कम और कम हिम्मत लोग ज्यादा होगें. पुन्यके काममे शुस्त और पापके काममें होशियार अपना मतलव सुधरता हो तो दुसरेके काममें विगाड करनेमेंभी खौफ न लायगें, गौवगेरा जानवरोंकी हिंसा होना शुरु होगी, धर्मको कुछ चीज न समजेगें. सत्य वोलना कम होता जायगा. जमीनमें पैदाश कम होगी. कंजुसोके पास दौलत और दिलके दलेर शख्श तंगदस्त रहेगें. धर्मीशख्श कमउम्र और पापी लंबीउम्र पायगें. वुढे लोग वेठे रहेगें. और छोटे लडके मर जायंगे,—

[ अनुष्टुप् वृत्तम्. ]

मंत्रतंत्रौषधज्ञानरत्नविद्याधनायुषां
फलपुष्परसादीनां रूपसौभाग्यसंपदां. १,
सत्वसंहननस्थाम्नां यशःकीर्त्तिगुणश्रियां
हानिः क्रमेण भावानां भाविनी पंचमारके २,

मंत्रोंकी ताकात कम होती जायगी, तंत्रविद्याभी कम और औषधियोंकी माहितीभी लोगोंमें कम होगी. पेस्तर मनुष्य वडे ज्ञानी होतेथे, पांचमे आरेमें ज्ञानीयोका होना कम होता जायगा, जवाहिरात और दौलत पहले जैसी न रहेगी. लंबी उम्रपाना दुसवार

होगा, फलफुलमें जैसी खुशबू पहले होतीथी, वैसी न होगी. घृत तैल वगेरामे रस कस न रहेगा पेस्तरके जैसी खुबसुरती और रूपरंग न होगा. हिम्मतबहादूर शख्श कम और बातबातमे घबडानेवाले ज्यादा होगे, शरीरकी पुख्तगी कम यशः कीर्त्ति और गुणोंमेभी फर्क पडता जायगा. आलादर्जेकी तकदीरवाले मनुष्य न रहेगें तो फिर मजकुर बाते कैसे रह सकेगी. साधुलोग लोभ लालचमें पडकर अधर्मपर चलेंगे. बेटे मातपिताकी इज्जत न करेंगें, बीमारीयां इसकदर चलेगी जिससे गावगावके मनुष्य मशानमें जाकर रोवेगें मगर उनकों दिलासा देनेवाले नही मिलेंगे. गृहस्थलोक अपने घरका गुजरान मुसीबतसें चलासकेगें. व्रतनियम लेना दुसवार होगा, अगर लेयगें तोभी तोड डालेगें. देवद्रव्यकों अपने काममे लेयगें, साधुलोगोमें आत्मार्थी थोडे और लोगदिखानेकी क्रिया करनेवाले बहुत निकलेगें, इसतर पांचमें आरेका बयान फरमाकर तीर्थंकर महावीर मुक्त हुवे. किसी चेलेपर मोहब्बत नही किइ, न किसीको अपने मजहब चलानेकी हिदायत किइ, सच है वीतरागको राग क्यों हो! जिनको अपने शरीरपरभी मोहब्बत न हो वे दुसरे किसपर मोहब्बत करे? पदमासनमें बेठेहुवे जन्ममरणसें रहित हुवे. उनका अरूपी आत्मा स्वर्गसे आगे लोकांतमे जाकर अपने आत्मस्वरूपमे लीन हुवा. जैसे तुंबेपर बहुतसे मीटीके लेप लगाकर किसी जलके कुंडमे डालदो, और मीटीके लेप दूर होनेपर वो जलके उपर आजाता है, वैसे कर्मलेप दुर होनेसें आत्मा लोकाग्रभागमें आकर स्थित होजाता है. तीर्थंकर महावीरका निर्वाण होनेपर देवताओने और मनुष्योने मिलकर उनके शरीरका अग्निसस्कार किया, उनकी डाढे इंद्रदेवते स्वर्गमें लेगये, कातिकसुदी एकमके रोज गौतमस्वामीकों केवलज्ञान पैदा हुवा. तीर्थंकर महावीरके वडे चेले (११) उनमे (५) पांचमे नंबरके सुधर्मास्वामी नामके चेले थे, वे गद्दीनशीन हुवे, उनके चेले जंबूस्वामी

हुवे. इनोने दौलत छोडकर दीक्षा इख्तियार किइ, और केवलज्ञान पाकर मुक्ति पाइ, इनके बाद इस भारतवर्षसे मुक्ति होना बंद हुवा, तीर्थंकर महावीरनिर्वाणके बाद (७०) वर्स पीछे जैनाचार्य रत्नप्रभसूरिजीने ओशिया नगरीमें ओशवंश कायम किया, ओशवाल बनाये, जंबूस्वामीके पटपर जैनाचार्य प्रभवस्वामी हुवे, इनके पीछे शय्यंभवसूरि जो चार वेदके पढेहुवे ब्राह्मण थे, वैदिक मजहबको छोडकर जैनमजहबकी दीक्षा इख्तियार किइ, दशवैकालिकसूत्र जिसमें जैनमुनियोंके बारेमें बयान है, इनही जैनाचार्य शय्यंभव सूरिका बनाया हुवा है. इनके बाद यशोभद्रसूरि हुवे, फिर संभूतिविजयजी, भद्रबाहुस्वामी, स्थूलभद्रजी, आर्यमहागिरिजी, आर्यसुहस्तिजी और सुस्थितसुप्रतिबद्धजी जैनाचार्य हुवे.—

११ तीर्थंकर महावीरनिर्वाणके बाद (२९०) वर्स पीछे संप्रति राजा जैनमजहबपर साबीतकदम हुवा, तीर्थंकर महावीरनिर्वाणके बाद (३७६) वर्स पीछे श्यामाचार्य नामके जैनाचार्य बडे कामीलइल्म हुवे, जिनोने प्रज्ञापनासूत्र बनाया, तीर्थंकर महावीरनिर्वाणके बाद (४५३) वर्स पीछे कालिकाचार्य हुवे, जिनोनें गर्दभिल्ल राजाको राज्यसे खारीज किया, जो एक जैनमजहबकी साधवीजीको अपनी रानी बनाना चाहता था, इसी असेंमे आर्य मंगु जैनाचार्य, वृद्धवादी जैनाचार्य, और पादलिप्त जैनाचार्य हुवे, तीर्थंकर महावीरनिर्वाणके बाद (४७०) वर्स पीछे विक्रमादित्य राजा हुवा. जैनाचार्य सिद्धसेनदिवाकर इनके जमानेमें मौजूद थे, जिनोने उज्जेननगरीमे कल्याणमंदिरस्तोत्र बनाकर तीर्थंकर पार्श्वनाथमहाराजकी प्रतिमा जाहिर किइ, जो अवंतीपार्श्वनाथके नामसें मशहूर है. संमतितर्कग्रंथ इन्ही जैनाचार्य सिद्धसेनदिवाकरका बनायाहुवा बडा न्यायग्रंथ है, तीर्थंकर महावीरनिर्वाणके बाद (५७०) वर्स पीछे जावडशाहने तीर्थ शत्रुंजयपर उद्धार करवाया, तीर्थंकर महावीर निर्वाणके बाद

(५८४) वर्स पीछे जैनाचार्य वज्रस्वामी देहात हुवे. जिनोने गौधोकों शिकस्त दिइ, तीर्थकर महावीरनिर्वाणके बाद (६०९) वर्स पीछे शिवभूतिमुनिने दिगंबर मजहब इजाद किया, तीर्थकर महावीरनिर्वाणके बाद (६१६) वर्स पीछे दुर्वलिकापुष्पनामके जैनाचार्य हुवे. इनके वख्तमे साढेनव पूर्वका ज्ञान नेस्तनाबुद हुवा. तीर्थकर महावीरनिर्वाणके बाद (६८४) वर्स पीछे गंधहस्तीनामके जैनाचार्य हुवे. तीर्थकर महावीर निर्वाणके बाद (७७०) वर्स पीछे वीराचार्य और (८२६) वर्स पीछे जयदेवसूरि हुवे.

१२ तीर्थकर महावीरनिर्वाणके बाद (९८०) वर्स पीछे वल्लभी नगरीमे पांचसो जैनाचार्योंकी सलाहसें देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण जैनाचार्यने जैनागमोंका जो कंठाग्र ज्ञान था, पुस्तकाकार लिखा, तीर्थकर महावीरनिर्वाणके बाद (९९३) वर्स पीछे कालिकाचार्य हुवे जिनोने भाद्रपद चतुर्थीके रौज संवत्सरी पर्व मानना इख्तियार किया, कल्पसूत्रमे पाठ है अतरावियसे कप्पइ अर्थात् पंचमीके पहले संवत्सरी पर्व होसके मगर पंचमीके बाद छठके रौज संवत्सरी पर्व न होसके. पंचमीके रौज संवत्सरी पर्व करनाभी जैनागमका फरमान है. और चतुर्थीके रौज संवत्सरी पर्व करनाभी जैनागमका फरमान है. दोनोंमे कोइ जुठे नही, बल्कि! दोनों सचे है. तीर्थकर महावीर निर्वाणके बाद (१००८) वर्स पीछे जैनमुनि गांवमें रहने लगे. पहले जंगलमे या उद्यानमें रहा करतेथे, ज्यूं ज्यूं मनुष्योंकी ताकात कम होती गइ सब धर्मक्रिया कमजोर होनेलगी, तीर्थकर महावीरनिर्वाणके बाद (१०५५) वर्स पीछे जैनाचार्य हरिभद्र सूरि हुवे जिनोने कइ जैनग्रंथ बनाये, तीर्थकर महावीरनिर्वाणके बाद (११५०) वर्स पीछे, जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण हुवे, जिनोने बहुत जैनशास्त्रोंपर भाष्य बनाया है.—

१३ विक्रम संवत् (७००) मे शीलकाचार्य हुवे जिनोने जैनागम आचाराग और सूत्रकृतागपर टीका बनाइ, विक्रम संवत्सें आठसो

१४ जमाने तीर्थंकर महावीरस्वामीके राजगृहीके तख्तपर राजा श्रेणिक अमलदारी करताथा, वीतभयपत्तनके तख्तपर राजा उदयन और विशाला नगरीके तख्तपर चेडा राजा सलतनत करता था, और ये जैनमजहबपर एतकात रखते थे, श्रेणिकका बेटा जिसका नाम कौणिक वा अजातशत्रु था, वहभी जैनमजहबपर पावंद था, और इसने अपनी राजधानी चंपा नगरी कायम किइ थी, कौणिकका वेटा उदायी हुवा. इसने अपनी राजधानी शहर पटना कायम किइ, उदायीके तख्तपर नंद नामका राजा हुवा, उसकी राजधानीभी पटनाही रही, बाद उसके आठराजे नंदनामकेही पटनाके तख्तपर होते रहे, नवमें नंदको चंद्रगुप्तने शिकस्त दिइ, और पटनेके तख्तपर अमलदरामद किया, यह मौर्यवंशके खानदानका था, और जैनमजहबपर एतकात रखता था, चंद्रगुप्तका वेटा विंदुसार हुवा. यहभी जैनमजहबपर सावीत कदम था, विंदुसारका वेटा अशोक हुवा. यह बौधमजहबपर एतकात रखता था, हिंदमे जहां जहां राजा अशोकके शिलालेख जो पालीलिपिमें मिलते है, इसीके समजो, अशोकका वेटा कुणाल हुवा. और कुणालका वेटा राजासंप्रति हुवा. यह जैनमजहबपर पावंद था, हिंदमें इसने हजारां जैनमंदिर तामीर करवाये. और जैनधर्मको तरकी दिइ, तीर्थशत्रुंजय और गिरनारपर राजासंप्रतिके तामीर करवाये हुवे जैनश्वेतांवर मंदिर अवतक कायम है, जिनोने मजकुर तीर्थोंकी जियारत किइ है वखूबी देखे होगें, इसने अपनी राजधानी उज्जेन मुल्क मालवेमें कायम किइ, पुष्पमित्र वलमित्र और नरवाहन ये तीनो राजे वडे खुशनसीव थे, और जैनमजहबपर एतकात रखते थे, गर्दभिल्लराजाके वाद शकराजोकी अमलदारी तरकीपर हुइ, विक्रमादित्य उज्जेनी नगरीके तख्तपर जिसका संवत् चलता है, वडा मशहुर और मारुफ हुवा, शालिवाहनराजा-आमराजा-भोजराजा वडे वुलंद-

सितारे और आलादर्जेकी तकदीरवाले हुवे. विक्रम सवत् (८४२) पीछे वनराज चावडा वडा बहादूर राजा हुवा, योगराज, मूलराज, चामुंडराजा, भीमराजा, कर्णराजा, सिद्धराज,, कुमारपाल वगेरा वडे दौलतमंद और खुशनसीब राजे हुवे, वीरधवल अर्जुनदेव और सारंगदेव ये राजेभी किसीकदर कम नही, वडे प्रतापी और विजयी हुवे.

१५ देहलीके तख्तपर जब पृथवीराज चोहान अमलदारी करता था, सन (११९०) इस्वीमे महम्मद गहोरी हिंदपर आया, अव्वलके जंगमे पृथवीराजने फतेह पाइ, महम्मद गहोरी जब दुसरी दफे हिंदपर आया तो उसने पृथवीराजकों शिकस्त दिइ, देहली और अजमेर लेलिया और अपने नोकर कुतुबुदीनको अमलदारी सपुर्द करके अपने वतनको गया, जब महम्मद गहोरीका इंतकाल हुवा कुतुबुदीन बादशाह बना, सन (१२४६) में बादशाह नशरुदीन देहलीके तख्तपर हुवा. और अमलदारी किइ, सन (१२९०) इस्वीमे देहलीके तख्तपर बादशाह जलालुदीन हुवा और उसने सलतनत किइ, सन (१२९६) इस्वीमें बादशाह अलाउदीन हुवा. और अमलदारी किइ, सन (१३१६) इस्वीमे मुबारक बादशाह हुवा. सन (१३५१) इस्वीमे देहलीके तख्तपर बादशाह फिरोजशाह हुवा. सन (१५२६) इस्वीमे देहलीके तख्तपर बाबर बादशाह हुवा. सबने अपना अपना अमलदरामद किया, सन (१५३०) इस्वीमे देहलीके तख्तपर हुमायु बादशाह हुवा और तरकी पाइ, सन (१५५६) इस्वीमे बादशाह अखबर देहलीके तख्तपर हुवा, और उसने अपनी अमलदारी किइ, बादशाह अखबरने हिंदु लोगोंको हिफाजतसे रखे. हिंदके राजपुत राजेभी इससे खुश थे, जैनश्वेतांबराचार्य हीरविजयसूरिजीसें धर्मकी बाते सुनकर जीवदयाके फुरमान पत्र लिखदिये, बादशाह अखबरके बाद उसका बेटा जहांगीर देहलीके तख्तपर सन (१६०५) इस्वीमे बेठा, और (२२) वर्सतक अमलदारी किइ, सन (१६२७) इस्वीमे जहागीरका बेटा शाहजहा

देहलीके तख्तपर वेठा, सन (१६५८) इस्वीमें देहलीके तख्तपर वादशाह औरंगजेव हुवा. और उसने अमलदारी किइ. औरगजेवके वाद सन (१७१९) इस्वीमे देहलीके तख्तपर वादशाह महम्मद-शाह हुवा. इनके वाद मुल्क इरानसें नादीरशाह देहलीपर आया, और महम्मदशाह वादशाहसें लडकर कुछ धनमाल लेकर अपने वतनकों चला गया, सन (१७४८) इस्वीमे मुल्क अफगानीस्तानसें अहमदशाह दुरानी हिंदपर आया, और चंदरौज रहकर अपने वतनकों गया, इसके वाद आलमगीर हुवा, फिर हिंदमे महाराष्ट्रोंने तरकी पाइ, पेशवोनें मुल्क दखनमें–गायकवाडने वडोदेमें–सिंधियाने गवालियरमें–और होलकरने इंदोरमें–अमलदारी किइ, जमाने हालमें अंग्रेज सरकारकी अमलदारी तमाम हिंदमें जारी है, जिस जमानेमें जो वादशाह हो उनकी जवान लोग पसंद करते हैं, जव आर्यराजोंका राज्य था संस्कृत जवान वोलना लोग पसंद करतेथे, और इस मुल्कका नाम भारतवर्ष मशहूर था, जव मुसल्मान वादशाहोंकी अमलदारी थी. लोग उर्दू जवान पसंद करतेथे और इस मुल्कका नाम हिदुस्तान मशहूर था. जमानेहालमें तमाम हिंदमें अमलदारी अंग्रेज सरकारकी जारी है, मुल्क हिंदका नाम इंडिया मशहूर हुवा. और अंग्रेजी जवान तरकीपर है,–

[ उसूल जैन मजहव ]

१ इसमे जैनमजहवके उसूल वतलाये है, जैनमजहवमे देव किसको कहना? गुरु किसको? और जैनमजहव किस किस पदार्थको मंजुर रखता है? आत्माका हाल स्वर्ग नरक पुन्य पाप जैन लोग मानते है; जो शख्श जैसा कर्म करेगा वैसा फल पायगा, यह जैनोंकी सीधी सडक है. योग उपधान किसतरह करना? जैनमंदिर किस तरकीवसे वनाना? देवद्रव्यकी हिफाजत कैसे रखना? पुराने जैनश्वेताम्वरतीर्थोंकी मरम्मत–नियंत्रित प्रत्याख्यान विछेद होगया, पृथ्वी फिरती है या चांद सूर्य? उद्यम और कर्म–

सोलह संस्कार-दायभाग-अर्हन्नीति और स्याद्वादन्यायका बयान इसमे दर्ज है, ब-खुबी देखलो!

( अनुष्टुप् वृत्तम्.)

जिनेंद्रो देवता तत्र रागद्वेषविवर्जितः।
हत मोहमहामल्लः केवलज्ञानभास्करः १,
सुरासुरेंद्रसंपूज्यः सद्भूतार्थप्रदेशकः।
कृत्स्नं कर्मक्षयं कृत्वा संप्राप्तः परमं पदं, २,

राग द्वेष काम क्रोध वगेरा दुश्मनोंसें जिनोंने फतेह पाइ है, मोहकर्मरूप पहेलवानको जिनोंने शिकस्त दिइ है. केवलज्ञान हासिल किया है, सुर और असुर देवतासे जो पूजनीक है, सत्यपदार्थके बयान करनेवाले और सब कर्मोंको नाश करनेवाले जैनमजहबमे जिनेंद्रदेव माने गये है, उनका बयान किया हुवा जो मत है, उसकों जैनमजहब कहते है. जिसको हमेशासे लोग मानते आये, मानते है, और मानेंगें, इसलिये इसको सनातन धर्मभी कहागया, जैनोके धार्मिक कायदे ऐसे है जिसका विरोधी बनना नही होसकता, अगर कोइ जुठी दलिल करके विरोधी बन जाय तो उसकी मरजीकी बात है, दुनियामे अनतकालचक्र बतीत होगये, आगेको अनंतकालचक्र होवेगें, हरेक कालचक्रके आधे हिस्सेमें चौइस तीर्थंकर केवलज्ञानी धर्मोपदेशक होते है, वे खुद मुक्तिपाते है, और दुसरोंको मुक्तिका रास्ता बतलाते है, इस कालचक्रमें तीर्थंकर रिषभदेव-अजितनाथ और अखीरके तीर्थंकर महावीरस्वामी हुवे, तीर्थंकर रिषभदेव महाराजसे पहले इस भारतवर्षमे किसी मजहबका या दुनियादारीके इल्मका कोइ पुस्तक नही था, कोइ शहर या गांव नही था, कल्पवृक्षोंसें फल पाते थे. और उनही कल्पवृक्षमे रहतेथे, दुनियाका व्यवहार और कला-कौशल्य तीर्थंकर रिषभदेव महाराजने बतलाया, उस जमानेमे वे दुसरे दुनियादारोंसें ज्यादा ज्ञानी थे, अर्हन् वीतराग सर्वज्ञ

जिन ये सब एकही देवके नाम हैं, जो इबादतमें लिये जाते हैं, साधु साधवी श्रावक श्राविका इन चारोंको जैनमजहबमें जैनसंघ बोलते हैं, जैनमजहबमें दुनिया कदीमी है, हरेक जीवात्मा अपने अपने कियेहुवे भलेबुरे कर्मोंको भोगते हैं, ईश्वर दुनियाको पैदा नही करता, अगर ईश्वरको पैदा करनेवाला माने तो ईश्वरको किसने पैदा किया, यह सवाल पैदा होगा, सब खेल अपने अपने कियेहुवे कर्मके हैं, जो शख्श जैसा करेगा, वैसा फल पायगा, जैसे शराब पीनेवाला शख्श-नशेके जोरसे खुद गाफिल बनता है, जीव अपने कियेहुये कर्मोंसे खुद गाफिल बनता है.—

स्त्रीसंगः काममाचष्टे द्वेषमायुधसंग्रहः ।
जपमाला सर्वज्ञत्वमशौचं च कमंडलुः १

२ जिस देवके पास औरत होगी तो मालुम होगा यह देव कामी है, जिस देवके पास हथियार होगें तो जाना जायगा, यह देव द्वेषी है. जिस देवके पास जपमाला होगी तो अंदाज किया जायगा यह देव सर्वज्ञ नही, भुलनेका स्वभाववाला है जब जपमाला रखी है. जिसके पास कमंडलु होगा देखकर अंदाज किया जायगा यह अभी अशौचवाला है.—

धर्मज्ञो धर्मकर्त्ता च सदा धर्मपरायणः—
सत्वानां सर्वशास्त्रार्थदेशको गुरुरुच्यते.— १

धर्मको जाननेवाला, धर्मकरनेवाला और सत्यधर्मका उपदेशक भिक्षासें सिकमपरवरीश करनेवाला पंचमहाव्रतधारी जैनमजहबमें गुरु माना गया है, रजोहरण और मुखवस्त्रिका उनका निशान है, साधु संयमी श्रमण निर्ग्रंथ मुनि और अणगार ये सब उसके नाम हैं,—

दुर्गतिप्रसृतान् जंतून् यस्माद्धारयते ततः ।
धत्ते चैतान् शुभे स्थाने तस्माद्धर्म इति स्मृतः १

दुर्गतिजानेवाले जीवोंको बचाकर अच्छी गतिको पहुंचानेवाला

जैनमजहबमे धर्म मानागया है, आजार कामकों रोककर सवा-बके काम करे यही रास्ता धर्मका है,–

यः कर्त्ता कर्मभेदानां भोक्ता कर्मफलस्य च ।
संसर्ता परिनिर्वाता स ह्यात्मा नान्यलक्षणः १

जैनमे चेतनालक्षणवाला जीव मानागया है. वो भलेबुरे कर्मोका करनेवाला और भोगनेवालाभी है और धर्म करनेसे उसकी मुक्ति होगी.–

धर्माधर्मौ नभःकालः पुद्गलश्चेतनस्तथा,
द्रव्यषट्कमिदं ख्यातं तद्भेदास्त्वागमे स्मृताः १
जीवाजीवौ तथा पुण्यं पापमाश्रवसंवरौ,
बधो विनिर्जरामोक्षौ नव तत्त्वानि तन्मते, २
चैतन्यलक्षणो जीवः स्यादजीवस्ततोन्यथा,
सत्कर्मपुद्गलाः पुण्यं पापं दुष्कर्मपुद्गलाः ३
कषायविषया योगा इत्याद्या आश्रवा मताः,
आश्रवाद् विरमणं यत् तत्संवर इति स्मृतः ४
शुभाशुभानां ग्रहणं कर्मणां बंध इष्यते,
पूर्वोपार्जितकर्मौघजरणं निर्जरा स्मृता. ५
कर्मक्षयेण जीवस्य स्वस्वरूपस्थितिः शिवं,
एषां नवानां श्रद्धाने चारित्रात्तत्तु लभ्यते. ६

जैनमजहबमे बहिस्त मनुष्य जानवर और दोजक ये चारदर्जे मानेगये, बहिस्त यानी स्वर्गगति वो है, जो असानमे चांदसूर्य वगेराके विमान देखते हो, उनमें देवते लोग रहते हैं और–वे–खुद उनकों चलाते हैं, जो लोग विद्वानोंकों देव मानना, अविद्वानोंकों असुर पापीयोंकों राक्षस और अनाचारीयोंकों पिशाच मानना कहते हैं, यह जैनमजहबके उसूलोंसे खिलाफ है, विद्वान् अविद्वान् पापी और अनाचारी अलग हैं, देव असुर राक्षस और पिशाच अलग हैं, जो लोग कहते हैं. दुनियामे सुखी मनुष्य है, वो देव

जो दुखी है, वो नारकी है, जैन लोग इसबातसेंभी खिलाफ है, नरकगति उसकों कहते है जहां शिवाय तकलीफ और रजके दुसरी चीज नाम निशानकोंभी नही और वो नरककी जगह जमीनके नीचे है, जो अजहद पाप करता है, दोजक पाता है, बुतपरस्ति जैनलोग मानते है और तीर्थोंकी जियारत जाना अछा समजते है. कइ मजहबवाले किसी पहाडको नदीकों अपने धर्मगुरुओंके फोटोंको और अपने अपने धर्मपुस्तकोकों सन मजहबवाले मानते हैं, जो कागजपर स्याहीसे लिखेहुवे या छपेहुवे होते हैं, समजनेवाले समज सकते हैं. यह सब जडपदार्थोंकी इज्जत हुइ, और बुतपरस्तिके तरीके हुवे.–

३ अर्हन् सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु श्रद्धा ज्ञान चारित्र और तप ये नवपद जैनमजहबमें पाक और साफ मानेगये हैं, तकदीर अकेली फल देती है, तदवीर अकेली फल नही देती, तदवीर वेंकार जाती है. मगर तकदीर फल दिखाती है. इसलिये तकदीर कौवतवाली है ऐसा जानना, जैनमजहबमें तमाम वस्तु अपनी अपनी शिकलसें अस्ति और दुसरेकी शिकलसें नास्ति मानते हैं, और इसीकों स्याद्वादन्याय बोलते हैं,–

( अनुष्टुप् वृत्तम्. )

सर्वमस्ति स्वरूपेण पररूपेण नास्ति च.
अन्यथा सर्वभावानामेकत्वं संप्रसज्यते १

[ स्रग्धरा वृत्तम्. ]

त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं नवपदसहितं जीवषट्कायलेश्याः
पंचान्ये चास्तिकाया व्रतसमितिगतिज्ञानचारित्रभेदाः
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः
प्रत्येति श्रद्दधाति स्पृशति च मतिमान् यस्य वै शुद्धदृष्टिः २

जैनमजहबमें गर्भाधान जन्म उपनयन विद्यारंभ विवाह व्रतारोप और अंत्यकर्म वगेरा सोलह संस्कार मानेगये हैं, पुनर्लग्न

करना जैनमें मना है, जमीनको स्थिर और चांदसूर्यको फिरते हुवे मानते हैं. जैनमजहबमे जन्मजन्मांतर माना गया है, एक शरीरकों छोडकर दुसरा शरीर पाना इसीका नाम जन्मांतर है, और वो अपने कियेहुवे कर्मोंसे मिलता है, जब निस्पृह होकर धर्म करेगा और पूर्वकृतकर्मनाश होगे इस जीवकी मुक्ति होगी. और फिर जन्मजन्मातर न पायगा,–

४ जैनमजहबमे कर्म आठ तरहके माने गये हैं. १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ नामकर्म, ६ गोत्रकर्म, ७ आयुष्यकर्म, और ८ अतरायकर्म, कर्म कहो भाग्य कहो या तकदीर कहो, मतलब एकही है, सब जीव अपने अपने कियेहुवे भलेबुरे कर्मके उदयसे आराम और तकलीफ पाते हैं. यह जैनोकी एक सीधी सडक है, खयाल करो! एक शख्श बादशाह होकर अमलदारी करता है. दुसरा दौलतके लिये मुल्क ब–मुल्ककी सफर करता है मगर दौलत मीलती नही, बतलाइये! इसकी क्या वज है? इसकी यही वजह है एककी तकदीर बुलंद और दुसरेकी तकदीरके सितारेने जोफ खाया है. दुनियामे एक अकलमंद और एक बेवकुफ है, सोचो! ऐसे क्यों हुवा? एक मदर्सेमे दो लडके पढने गये. एक पास हुवा, दुसरा नापास, बतलाइये! इसकी क्या वजह? इसकी यही वजह है, नापास होनेवालेकी बुरी तकदीर पेंशथी. एक शख्श धर्मपर ऐसा मुस्तकीम है जो किसीके बहकानेमे नही आता, दुसरा ऐसा है जिसको चाहे जितना शास्त्र सुनाओ मगर उसका एतकात धर्मपर नही जमता, एक शख्श तानेउम्र तदुरस्त रहा, और एक ऐसा बीमार रहा, तमाम उम्र उसकी बीमारीमें गुजरी, एक कंजुस और एक सखी, एक निहायत खुबसुरत और एक बडा बदशिकल, एक महोलेमें दो लडके पैदा हुवे, एक पैदा होतेही मरगया, दुसरा साठवर्सतक जीता रहा, कहिये! इसकी क्या वजह है? इसकी यही वजह है अपनी अपनी तकदीरके खेल है, दुसरी कोइ बात नही,

जो दुखी है, वो नारकी है, जैन लोग इसवातसेंभी खिलाफ है, नरकगति उसकों कहते है जहां शिवाय तकलीफ और रजके दुसरी चीज नाम निशानकोंभी नही और वो नरककी जगह जमीनके नीचे है, जो अजहद पाप करता है, दोजक पाता है, बुतपरस्ति जैनलोग मानते है और तीर्थोंकी जियारत जाना अछा समजते है. कइ मजहबवाले किसी पहाडको नदीकों अपने धर्मगुरुओंके फोटोंकों और अपने अपने धर्मपुस्तकोकों सब मजहबवाले मानते हैं, जो कागजपर स्याहीसे लिखेहुवे या छपेहुवे होते हैं, समजनेवाले समज सकते है. यह सब जडपदार्थोंकी इज्जत हुइ, और बुतपरस्तिके तरीके हुवे.–

२ अर्हन् सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु श्रद्धा ज्ञान चारित्र और तप ये नवपद जैनमजहबमें पाक और साफ मानेगये हैं, तकदीर अकेली फल देती है, तदबीर अकेली फल नही देती, तदबीर बेंकार जाती है. मगर तकदीर फल दिखाती है. इसलिये तकदीर कौवतवाली है ऐसा जानना, जैनमजहबमें तमाम वस्तु अपनी अपनी शिकलसें अस्ति और दुसरेकी शिकलसें नास्ति मानते है, और इसीकों स्याद्वादन्याय बोलते हैं,–

( अनुष्टुप् वृत्तम्. )

सर्वमस्ति स्वरूपेण पररूपेण नास्ति च.
अन्यथा सर्वभावानामेकत्वं संप्रसज्यते १

[ स्रग्धरा वृत्तम्. ]

त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कं नवपदसहितं जीवषट्कायलेश्याः
पंचान्ये चास्तिकाया व्रतसमितिगतिज्ञानचारित्रभेदाः
इत्येतन्मोक्षमूलं त्रिभुवनमहितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः
प्रत्येति श्रद्दधाति स्पृशति च मतिमान् यस्य वै शुद्धदृष्टिः २

जैनमजहबमें गर्भाधान जन्म उपनयन विद्यारंभ विवाह व्रतारोप और अंत्यकर्म वगेरा सोलह संस्कार मानेगये हैं, पुनर्लग्न

करना जैनमे मना है, जमीनकों स्थिर और चांदसूर्यकों फिरते हुवे मानते हैं. जैनमजहवमे जन्मजन्मांतर माना गया है, एक शरीरको छोडकर दुसरा शरीर पाना इसीका नाम जन्मांतर है, और वो अपने कियेहुवे कर्मोंसे मिलता है, जब निस्पृह होकर धर्म करेगा और पूर्वकृतकर्मनाश होगे इस जीवकी मुक्ति होगी. और फिर जन्मजन्मातर न पायगा,–

४ जैनमजहबमें कर्म आठ तरहके माने गये है. १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ नामकर्म, ६ गोत्रकर्म, ७ आयुष्यकर्म, और ८ अतरायकर्म, कर्म कहो भाग्य कहो या तकदीर कहो, मतलब एकही है, सब जीव अपने अपने कियेहुवे भलेबुरे कर्मके उदयसे आराम और तकलीफ पाते है. यह जैनोकी एक सीधी सडक है, खयाल करो! एक शख्श बादशाह होकर अमलदारी करता है. दुसरा दौलतके लिये मुल्क ब–मुल्ककी सफर करता है मगर दौलत मीलती नही, बतलाइये! इसकी क्या वज है? इसकी यही वजह है एककी तकदीर बुलंद और दुसरेकी तकदीरके सितारेने जोफ खाया है. दुनियामें एक अकलमंद और एक बेवकुफ है, सोचो! ऐसे क्यों हुवा? एक मदर्सेमें दो लडके पढने गये. एक पास हुवा, दुसरा नापास, बतलाइये! इसकी क्या वजह? इसकी यही वजह है, नापास होनेवालेकी बुरी तकदीर पेशथी. एक शख्श धर्मपर ऐसा मुस्तकीम है जो किसीके बहकानेमे नही आता, दुसरा ऐसा है जिसको चाहे जितना शास्त्र सुनाओ मगर उसका एतकात धर्मपर नही जमता, एक शख्श तावेउम्र तदुरस्त रहा, और एक ऐसा बीमार रहा, तमाम उम्र उसकी बीमारीमे गुजरी, एक कंजुस और एक सखी, एक निहायत खुबसुरत और एक बडा बदशिकल, एक महोलेमे दो लडके पैदा हुवे, एक पैदा होतेही मरगया, दुसरा साठवर्सतक जीता रहा, कहिये! इसकी क्या वजह है? इसकी यही वजह है अपनी अपनी तकदीरके खेल है, दुसरी कोइ वात नही,

दो शख्श तिजारत करने चले, एक लखपति बना, दुसरा नुकशान खाकर घर आया, कहिये! तदबीर दोनोंने किइ फिर ऐसा क्यौं हुवा? जवाबमें तलब करो. ये सब भली बुरी तकदीरकेही खेल है, तकदीरके लिखेकों कोइ मीटा नही सकता,–

५ *जो शख्श इश्कबाजी करता है, रहेम बिल्कुल नही,* जीनोंकों कतल करता है, दगाबाज पुरा, घमंड बहुत और धर्मपर एतकात नही, वो अगले जन्ममें तकलीफ पायगा, जो शख्श धर्मपर एतकात रखता है, खेरात देता है. शास्त्र फरमानको व शिरोचश्म कुबुल करता है, और दिलका साफ है, वो अगले जन्ममें आराम पायगा, जो शख्श कोल करके बदलजाय, जुठ बोले, मतलब हुवा और दुश्मन बना, देवगुरुधर्ममेंभी नर्ददगाकी खेले, वो अगले जन्ममे दोजक हासिल करेगा, जहां सुखका नाम निशानभी नही, जिसने पूर्वभवमें तोते मुर्गे कबूतर चीडिया वगेराकों पींजरेमें केद किये थे, इस जन्ममें वो केद होगा, जिसने पूर्वभवमें किसी जीवको तकलीफ नही पहुंचाइ, बल्कि! तकलीफसें छुडवाये है, वो इस जन्ममें खुद मुक्तियार बनेगा, हुकमहोदा और अमलदारी पायगा, जो शख्श दुसरेके हांथ पांव तोडता है. वो अगले जन्ममें लुला लंगडा बनेगा, जो शख्श कहता है, परलोक किसने देखा? धर्म करनेसें कोइ फायदा नही, ऐसा कहनेवाला अगले जन्ममे बेंधर्म होगा, जो शख्श दुसरेकों गलाघोटकर मारता है, अगले जन्ममें बुरीमोतसें मरेगा, जो शख्श इस जन्ममे पोशिदा खेरात करता है, वो अगले जन्ममें दुसरेकी गोद जायगा, और दौलत पायगा, जो शास्त्र फरमानपर चलो तो हरेक जीवपर रहेम करो, घरसें बेंघर होकर इस दुनियासें विदाय होना है, रिस्तेदार लोग रोरोकर बेठ रहेगें. और चंदरोजमें भूल जायगें. नयीरात नवढिन याद रहेगी. ये! दानीस्तमंदो गरदीस अफुलासके कोइचारा नही. शब्र करो. अगर किसीकी दौलत फरार होगइ हो. या किसी प्यारी

चीजसें जुदाइ होगइ हो तोभी गम खाओ! जो चीज तुमारी तकदीरमें मीलनेकी है, वो विना तदबीर कियेभी आनमीलेगी, अगर जुढगीका एहवाल पुछो कइ मरतबा आफत और कइ मरतबा खुशी हासिल हुइ, मगर धर्म करना नही बना, तरह-ब-तरहके खाने खाये, किसमकिसमकी पुशाक पहेनी, दुसरोंको धर्म करनेकी हिदायत किइ, आलीशानमकानमे बेठकर तमाम दुनियाकी बातें बनाइ, मगर अपनीरुह इस चोलेसें फरारहोकर कहां जायगी, इसका कोइ जिक्रभी नही किया, बडे अपशोसकी बात है, दुनियादारीके कामोमे बडीबडी आफते ओर मुसीबते उठाइ, हसीन और खूबसुरत औरतसे सादी किइ, बेटाबेटीयोंके विवाहमे हजारों रुपये सर्फ! किये, मगर धर्मके काममें कुछभी खर्च नही करसके, बडे ताज्जुनकी बात है, तनक! खयाल करो!! किस कामका इरादा किया था और किस फेलमे मशगूल होगये, न मालुम अचानक दोजककी सफर करना पडे, क्या भरुसा है, इस देहका? जो शख्श गिरफतारे इश्क है, कमी फते हमंद न होसकेगा.–

६ व्यासप्रणीत ब्रह्मसूत्रमें एकस्मिन्नसंभवात् इस फरमानसें जैनोंके स्याद्वादन्यायका जिक्र किया है, इससे सावीत हुवा जैनमजहब उस वख्तभी जारी था, बौधमजहबके पुस्तकोंमें बयान है, गोशाला मंखलीपुत्र और सुधर्मा गणधर सामने पक्षवाले है, सुधर्मा गणधर तीर्थंकर महावीरके चेलेथे, इससे सबुत हुवा उस वख्तभी जैनमजहब मौजूद था, जैनमजहबमें दुनिया अनादि है, इसका अवल अखीर कोइ नही, लाखों करोडे मरतबा नेस्तनाबुद होचुकी, और फिर कायम कइ, जैसे कोइ शहर बरबाद और फिर आबाद होता है, यही कायदा इस दुनियाफानी सरायका है, जो जो लोग दुनियाकों ईश्वर ही बनाइ कहते है, वे इसका कुछ सबुत पेश नही करसकते, दुनियाको वो बनावे जो रहेम और गुस्सेवाला हो, ईश्वर रहेम और गुस्सेसे निहायत पाक है, ईश्वर किसीको सुखदुख देता नही, सुखदुखका

होना अपने अपने पूर्वसंचितकर्मके ताल्लुक है; जो शख्श दौलत और कामभोग भोगता नही मगर दिलमें उसकी चाहना रखता है, उसको उसका त्यागी नही कहना, जो शख्श दौलत और कामभोगकों भोगता है, मगर दिलसे उसकों बुरा समजता है, शास्त्रकारोंने उसकों त्यागी कहा, जिस शख्शकों दौलत और कामभोग नही मीलता, और दिलसेंभी उसकों त्यागना चाहता है, तो वोभी उसका त्यागी है, तमाम बातें मनपर दारमदार है, जिसके मनः परिणाम साफ तो सब साफ है, जिसका दिल सत्यधर्मपर पाबंद होगया, उसको शास्त्रकारोंने सम्यक्त्वधारी कहा, चाहे वो गेर मजहबका हो कोइ हर्ज नही, जिसका दिल जैन होगया, वो जैन है, जातिभेदके लिये चाहे वो जिस जातिका हो उसमे रहे मगर जैनधर्म पालना चाहे तो पालसकता है, वर्णाश्रम मीटा देना जैनलोग मंजुर नही रखते.

७ जैनमें चौंदह गुणस्थानक आत्मिकगुण जाहिर होनेके स्थान है, ज्यूं ज्यूं ऊपरके गुणस्थानकपर जीव पहुचता है, आत्मिकगुण ज्यादह प्रगट होतेजाते है, निर्विकल्पदशा शरीरकी हयातीमेंभी आसकती है, मगर कर्ममुक्तदशा विना मुक्ति हुवें नही आसकती, स्वरूपसाक्षात्कारमें और स्वस्वभाव उपयोगकी रमणतामें कुछ फर्क नही, शुभाशुभकर्म इस आत्माको आवर्णरूप है, निकाचित कर्म जो इस आत्माके शाथ बंधे है, वे विनाभोगे नही छुट सकते, शुभाशुभकर्म भोगते वख्त खुशी या नाराजी न लाकर समभावमें रहे तो आइंदे नये कर्म नही बंधसके, मगर जो बंधेहुवे है, वे जरुर भोगने पडेंगे, तीर्थकर महावीरस्वामीने त्रिपृष्ट वासुदेवके भवमे शय्यापालके कानमें शीशाडलवाकर जो कर्म बांधा था वो महावीरस्वामीके भवमे उदय आया, और भोगना पडा, वहांतक वो सत्तामे पडा रहा.

जीवका ज्ञानगुण जबतक अशुभकर्मके उदयसें आछादित है, केवलज्ञान नही होसकता, जब ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय मोहनीय और अंतराय ये चार घातीकर्म बिल्कुल नष्ट होजायगे स्वतः

उस जीवको केवलज्ञान होजायगा, और वे केवलज्ञानी दुनियाकी तमाम चीजोंको अपने ज्ञानसें देख सकेंगे, देवलोक वगेरा जो कदीमी चीजे है, उनमेभी समयसमयमें उत्पात और व्यय होता रहता है. मगर उसकी जो शिकल है. वो वदलती नही, उसीसें उसको कदीमी पदार्थ कहेगये. कइ लोग दुनियामे ऐसे है, जो धर्मक्रियाकों ढोंग समजते है, और साधुलोगोंकों कहते है कमानेकी ताकत नही, इसलिये साधु होगये. ऐसे लोगोंकों कहना चाहिये आपलोग जो दुनियादारीके कामकर रहे होये कोंनसे सचे और ठीक है. अगर कोइ श्रावक इस दलिलको पेंशकरे आजकल जैनमुनि शुस्त और लोभी लालची बनगये. विना इम्तिहान किये हम उनको नही मानते, और नमस्कारभी नही करते. जनाब, ऐसे अश्रद्धावाले और व्रतनियमरहित श्रावकको जैनमुनि श्रावक कब मानते है. और धर्मलाभभी कब देते है? जिस श्रावककी मरजी हो वो साधुलोगोंको माने न मरजी हो वो न माने.—

८ जैनमजहबमे आत्मा तीन तरहके मानेगये. एक बहिरात्मा, दुसरा अंतरात्मा, और तिसरा परमात्मा, खानपान और मौजशोखमें खुश रहे उसका नाम बहिरात्मा कहा, धर्मपर ज्यादा खुश और मौजशौखपर थोडा. वो अंतरात्मा, परमात्मा वो है जो संसारसे मुक्त होगया हो. आत्मा ज्ञानवान् और देह जड है. और इनका अनादि संबंध है. मोहकर्मके उदयसे जीव एशआराम करना चाहता है. अंतरायकर्मके उदयसें एशआराम मिलता नही. उसके मिलानेकी तरकीब सोचता है, मगर ज्ञानावरणीय कर्मके उदयसें तरकीब मालुम पडती नही, ऐसी हालतमे अशातावेदनीय कर्मके उदयसे बीमार पडता है, तकलीफ होती है. और फिर दुर्गति जानेका कर्म बाधता है. लाजिम है, तकलीफके वख्त देवगुरु धर्मका ध्यान करे, मगर अशुभकर्मके उदयसें वो ध्यान ज्यादा देर ठहरेगा नही, वगेर पुन्यानुबंधि पुन्यके मनके इरादे सुधरते नही.—

[ आजकलके जैनमुनिकी योगवहनकी क्रिया, ]

९ आवश्यकसूत्रके (६) दिन-दशवैकालिकसूत्रके (१२) दि दश अध्ययनके दश और दो चूलिका मिलाकर बारां दिन हुवे बाकीके समुदेश अनुज्ञा और वृद्धिके नव दिन मिलाकर (२७) हुवे उत्तराध्ययनसूत्रके (३२) दिन, आचारांगके (५८) दिन, कल्पसूत्रके (३५) दिन, महानिशीथके (५२) दिन, नंदी और अनुयोगद्वारके (७ दिन, दशपयन्नेके (१०) दिन भगवतीसूत्रके (६) महिने और (६ दिन, इतने दिन योगवहन करनेसें गणि और पंन्यासपद होगय आजकलके जैनमुनि मानते हैं. मगर पंन्यासपद किसी जैनागममें नही लिखा, पैंतालीश जैनागमके योगवहन करनेसें आचार्यपद मिलता है, मगर शर्त यह है, जिस शास्त्रका योगवहन करना शाथ शाथ उस शास्त्रकोंभी मूलपाठ और अर्थसहित पढना चाहिये, जबतक वो शास्त्र मूलपाठ और अर्थसहित पढा न जाय तबतक योगवहनकी क्रियाभी चालु रखना चाहिये, जैसे उत्तराध्ययनका चतुर्थ अध्ययन जहांतक मुखपाठ नही किया जाता तबतक उसकी अनुज्ञा नही होती. और आंबीलतप करना पडता है. वैसे सब योगमें समझना चाहिये, अर्थात् जिस शास्त्रका योग वहना शुरु हो, जब-तक वो शास्त्र मूलपाठ अर्थसहित कठाग्र न हो ततनतक उसकी अनुज्ञा न होना चाहिये, यानी उस शास्त्रका योग पुरा हुवा ऐसा नही कहना, आजकल गुरुगमसें जैनशास्त्र पढते नहीं. और कोरी तपस्या करके पदवीधर होजाते हैं, यह खिलाफ जैन आगमके है. और योगोद्वहन ऐसा होना चाहिये जिसमें आहारपानी निर्दोष लियाजाय, आजकल योगोद्वहनमें जैनमुनि निर्दोष आहारपानी लेनेमें खयाल नही रखते और पहलेसे श्रावक श्राविकाकों सूचना करते है, अमूक मुनिकों आज नीवीका तप होगा, और अमुक मुनिकों आज आंबील तप होगा, ऐसी सूचना करके आधा-कर्मी आहार लेना, शास्त्र पुरे पढना नही. और नाममात्र तपस्या

करके पदवीधर वनना, यह किस जैनशास्त्रका हुकम है. कोइ वतलावे, आचार्य उपाध्याय और गणि वनना सहज नही. ज्ञान पढना और गुण हासिल करना जब ठीक है. ज्ञान पढेनही, और कहला गये आचार्य दुसरेसें मिलनेमेभी परहेज करना, हम आचार्य ठहरे, दुसरे साधुकों मिलने कैसे जाय? पदवी लेकर मानमे आना और दुसरे पदवीरहित गुणी मुनिको मिलनेमेंभी परहेज करना, कहिये! इससें क्या फायदा हुवा? वादीप्रतिवादीकों जवाव देना वने नही, और कहलाना जैनाचार्य यह क्या बात हुइ? कायदेको पढना नही, और वकील वनना. यह मुमकीन नही,–

[ आजकलके श्रावकोंकी उपधान वहनेकी क्रिया. ]

१० नमस्कार मत्रके (१८) दिन, इर्यावहीके (१८) दिन, पुरुखरवरदीके (४) दिन, सिद्धाणं वुद्धाणंके (७) दिन, इन चारो उपधान वहाकर माला पहनाते है. फिर नमुथ्थुणंके (३५) दिन और लोगस्सके (२८) दिन ये छह उपधान श्रावक श्राविकाके है, और आज यही वहन करते है, इनमें उपर लिखेहुवे छह सूत्रोंके मूलपाठ अर्थसहित उपधान वहन कराते वख्त कंठाग्र सिखलाना चाहिये, और जवतक वे मूलपाठ और अर्थ कठाग्र न करसके वहांतक उपधानकी तपश्चर्या और क्रिया चालु रखना चाहिये, आजकल ऐसा करते नही और कोरी तपस्त्या करवाकर उपधान वहा देते है, फिर ऐसे उपधान वहे हुवे श्रावक श्राविका जब प्रतिक्रमण पौषध वगेरा क्रियामे वेठते है, तव कहते है, हमको विना उपधान वहे श्रावकोंकी क्रिया नही कल्पती है, खुद अपनेकों शुद्धपाठ वोलना आता नही शास्त्रोक्त विधिसे उपधान वहे नही, फिर दुसरे श्रावककी क्रिया हमकों कल्पती नही ऐसा कहेना किस जैनशास्त्रका हुकम है,? पाच सात या वीश पचीस रुपये नकरा ठहराना यहभी ठीक नही, सभी श्रावक श्राविका दौलतवाले नही होते, जिसकी ताकात हो देवे, जिसकी ताकात न हो न देवे,

जैसे कायाशक्ति देखकर तप करना कहा. वैसे यथाशक्ति द्रव्य खर्चना कहा, जो गरीब श्रावक है, वो तपकरके द्रव्य न खर्चे तोभी उसपर खर्चकरनेका फर्ज डालना ठीक नही;

११ में भव्यजीव हुं या अभव्य हुं, ऐसा जिसके दिलमें इरादा पैदा हो-वो भव्यहोता है, अभव्य जीवके दिलमें ऐसा इरादा पैदा नही होता, अभव्य जीव दिलसें धर्मकों सचा नही समजता. अभव्य जीव इंद्रपदवी न पावे. पांच अनुत्तरविमानकी गति न पावे, तीर्थकर चक्रवर्ती वासुदेव प्रतिवासुदेव और बलदेव न होवे, तीर्थकर गणधरोंके हाथसे दीक्षा न पावे. तीर्थकरके हाथका दियाहुवा दान न पावे, लोकांतिक देवता न होवे, श्रद्धासे सुपात्रदान न देवे. युगलिक मनुष्य न होवे, संभिन्नश्रोत्रलब्धि न पावे, आहारिकलब्धि न पावे. पुलाकलब्धि क्षीराश्रवलब्धि जंघाचारणलब्धि अक्षीणमहाणसलब्धि न पावे; जीवकों मोहनीयकर्मसे फतेह पाना मुश्किल, पांच इंद्रियोंकों वशमें लाना मुश्किल, मनको स्थिर करना मुश्किल, ब्रह्मचर्यव्रत पालना मुश्किल जवानीमें एशआराम छोडना मुश्किल ताकात होतेहुवे गम खाना मुश्किल है, जैसे समुंदरमे जहाजका सहारा दुनियामे इस जीवकों धर्मका सहारा है. जिसने धर्म छोडा उसने अपना सहारा छोडा, जब जीवकी मुक्ति होती है, फिर इस संसारमें नही आता;

[ अनुष्टुप् वृत्तम्, ]

दग्धे बीजे यथात्यंतं प्रादुर्भवति नांकुरः,
कर्मबीजे तथा दग्धे न रोहति भवांकुरः १

जैनमजहबमें अनंतधर्मात्मक वस्तु प्रमाणका विषय है, और वस्तुके एकएक धर्मपर सप्तभंगकी रचना जानने काबील है, स्याद्वादन्यायसें जिस चीजका इम्तिहान किया जाय और सहीसही उतरे वही वस्तु सत्य है, ऐसा जानो. जैनमजहबमें पृथवी थालीके आकार गोल है, नारंगीके आकार नही, जंबूद्वीप ठीक बीचमे और

उसके चौफेर घीरेहुवे असंख्यद्वीप और असंख्य समुंदर है, स्वर्ग-लोग उपर और नरकावास नीचे है, आर्तरौद्रध्यान इस जीवकों पापमें लिपटानेवाले और धर्म शुक्लध्यान इसजीवको मुक्ति देने-वाले है. जिसको धर्मपर एतकात हो आर्त्तरौद्रध्यान कम करे, प्यारेके वियोगमें आर्त्तध्यान और दुश्मनपर गुस्सा लानेमें रौद्रध्यान आता है. जहांतक बने गम खाओ और शब्र करो.—

१२ अगर कोइ कहे आजकल जैनसंघका कोइ एक नायक नही. (जवाब) जैनसघका एक नायक तीर्थकर गणधरोंके जमा-नेमेंभी नही था, तो आजकल कैसे होसकेगा? यह तो श्रावकोके बहाने है कि जैनमुनियोंमे संप नही. जैनमुनि आचारविचारमें बराबर चलते नही. ऐसा बोलकर जैनमुनियोंपर नाराजी जाहिर करना, खुद श्रावकोमेही संप नही. एक घरमे दो भाइयोंमे सप नही. कइ गांवोमे जात बिरादरीके तड पडेहुवे है. थोडे वर्स हुवे जैनश्वेतांबर कोन्फरन्स चली थी. वोभी आपसके अन बनावसे बद होगइ या कम चलती है, ऐसा कहो तोभी ठीक है, कोन्फरन्सके मंडपमे बेठकर जो जो ठहराव करतेथे घर जाकर अमलमे नही लाते थे, दर असल! तमाम जैनश्वेतांबरसंघ एक जैनमुनिके या एक श्रावकके कहनेपर चले यह संभव नही, इसलिये खुद अपने आप-काही बंदोबस्त करलेना बहेतर है, अपने घरका अगन साफ नही तो सारे शहरकी सफाइ कैसे कर सकोगे? अगर कोइ इस दलि-लको पेशकरे कि-जैनश्वेतांबरसघमे विद्याकी बहुत खामी है. (जवाब.) जैनश्वेतांबरसंघमे विद्याकी कोइ खामी नही, बडे बडे शहरोमें जहा जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी ज्यादा आबादी है, वहां जैन-पाठशाला और जैनबोर्डिंग खुली हुइ है, ससारिक विद्यामेभी जैनलोग किसीकदर कम नही, अगर कोइ इस मज मूनको पेशकरे जैनबेंक थापकर देवद्रव्यका इंतजाम करना चाहिये. (जवाब.)

जैनबैंक थापनेकी क्या जरुरत है, पुराने जैनश्वेतांबर तीर्थ और पुराने मंदिरोंमें जहां मरम्मत होना दरकार है, वहां देवद्रव्य लगा देना चाहिये, ज्यादा देवद्रव्य जमा करनाही क्यों? जिसपर ट्रष्टी मुकरर करना पडे, ट्रष्टी मुकरर किये तो वे दुसरे श्रावकोंकों गिनते नही, और अपने दिलमें समजते है जो कुछ करनेवाले है हमही है, देवद्रव्यको व्याजसे रखना यहभी किसी जैनागममें नही लिखा. तीर्थंकर गणधरोंका फरमाना बहुत ठीक है देवद्रव्य देवके काममे और जिनमंदिरोकी मरम्मतमें लगादेना, ज्यादा रकम जमा रखना नही, जिससे वहीवट कर्त्ता या ट्रष्टीयोंकी जरुरत पडे. अगर कोइ इसमजमूनकों पेश करे श्वेतांबर दिगंबर और स्थानकवासी एक होजाना चाहिये, मगर इस वातका खयाल नही करते, जिसकी मान्यतामें फर्क है, वे एक कैसे होसकेगें? श्वेतांबर कहेगे जिनमूर्त्तिको शिंगार करना चाहिये, दिगंबर कहेगे नग्न स्वरूप रखना चाहिये, श्वेतांबर कहेगें स्थविरकल्पी जैन-मुनिकों मानना ठीक है, दिगंबर कहेगे, नग्नस्वरूप जिनकल्पी जैन-मुनिको मानना ठीक है, श्वेतांबर कहेगें जैनागम जो अब मौजूद है, मानना चाहिये, दिगंबर कहेगे, पुराने जैनआगम विछेद हो गये, कहिये! इस हालतमें ऐक्यता कैसे हो सकेगी? अब श्वेतांबर और स्थानकवासीके वारेमे वयान सुनो! श्वेतांबर कहेगें जिन-मंदिर तामीर करवाना, और जिनमूर्त्तिकी पूजा करना चाहिये. स्थानकवासी कहेगें स्थानक वनाना ठीक है. और जैनमुनिकों मुखपर मुहपति वांधना चाहिये, कहिये! ऐक्यता कैसे हो सकेगी. थोडे पढेहुवे श्रावक जिनको धर्मशास्त्रकी पुरी माहिती नही है वे चाहे सो कहे, मगर जानकार श्रावक कभी नही कहेगे कि–ऐक्यता हो सकेगी. दुनयवीकारोवारमे लेनदेन चलतीही है. मगर धर्मके काममें ऐक्यता होना दुसवार है.—

१३ आजकल कइ श्रावक ऐसाभी कहने लगे है प्रतिष्ठा उद्यापन या तीर्थयात्राके लिये संघ निकालकर हजारो लाखो रुपये सर्फकर देना इससे तो गरीब श्रावकोंको उनके गुजरानके लिये मददेना ठीक है, (जवाब.) धर्मके कामको बंदकरके श्रावकोंको मददेना शास्त्र फरमानसे खिलाफ है, धर्मके कामको बंद नही करना और मददेना ठीक है, श्रावकोंके घरमें विवाह सादीके कामोमे जो हजारो लाखोंरुपये सर्फ किये जाते है, मातापिताके मरनेके बाद उनके कारजमे जो हजारो रुपये खर्च किये जाते है. उनमें कम खर्चकरके गरीब श्रावकोंको मदद दिइ जाय तो क्या हर्ज है? इन्साफ कहता है, दुनियाके कामोंमें कमखर्च करो, बगी घोडे मोटार चाहे कम रखो और उसमेसे बचाकर गरीब श्रावकोको मददकरो, इसमे कौन इनकार करता है, गरीब श्रावकोंको मदद करना सब कहते हैं. मगर करते कौन है.? और सुनतेभी कौन है? आजकल सुधारक श्रावक मुहसे कहदेते है, मगर करके बतलानेवाले कहां है? जैसा कहना वैसाकर बतलाना चाहिये. कइ श्रावक कहा करते है धर्ममें गछ और समुदायके इतने भेद क्यौ? (जवाब) अपनी जात बिरादरीमे इतने भेद क्यौं इस बातपर क्यौ नही खयाल करते? कोइ विशा है, तो कोइ दशा है, पहले इनके भेदोकों तो कोइ मीटा सकते नही, फिर गछ समुदायके भेद कैसे मीटा सकेंगे, पहले अपनी जात बिरादरीकी तो ऐक्यता करलो.—

१४ जैसे नया जैनमंदिर बनाना फायदेमंद है, वैसे पुराने जैनमंदिरका जीर्णोद्धार करानाभी फायदेमंद है, कितनेक कहते है, नया जैनमंदिर नही बनाना पुरानेका उद्धार करानाही बहेत्तर है, मगर धर्मशास्त्रफरमाते है, दोनों बाते ठीक है, जीर्णोद्धार करानेसे ज्यादा फायदा बेशक! है, मगर नया बनानेमभी कुछ कम फायदा नही. जैसा मनका परिणाम वैसा फल, बहुत छोटी उम्रवाले लडकेकों दीक्षा देना आज कलके जमानेमे जोखमका काम है, छोटी

उम्रकी लडकीकों दीक्षादेना तो ज्यादा जोखमका काम है, कइ महाशय इस दलिलकों पेशकरते हैं छोटे लडकोंको जब सामायिक प्रतिक्रमण कंठकराना तो शाथमें अर्थभी सिखलाना चाहिये, मगर छोटी उम्रके लडकेकों इतना बुद्धिबल नही जो अवलसेही अर्थको धारन करसके. इसलिये उसकों अवल सामायिक प्रतिक्रमण कंठाग्र कराना और जब उसका बुद्धिबल बढे तब अर्थ सिखलाना. अवलसेही अर्थ सिखलाओगे तो उसके खयालमें नही जमेगा, कइ श्रावक कहते हैं, जैनोकी देवभक्ति और गुरुभक्ति कम है. मगर जैनोमें देवभक्ति और गुरुभक्ति कम नही, जैनोके धर्मगुरुकी जितनी भक्ति जैन गृहस्थ करते हैं वो कम नही है, तीर्थोकी जियारतमें जैनलोग लाखोंरुपये लगाते हैं, जैनधर्मके कइ पुस्तक कल्पसूत्र वगेरा सुनहरी हर्फोंमें लिखेहुवे अवभी कइ पुस्तकालयोमें मौजूद है, शत्रुंजयतीर्थके पहाडपर जाकर देखो! तो जैनमंदिरोंका एक छोटासा शहरबसा हुवा नजर आयगा, आबुपहाडके जैनमंदिरोंकी शिल्पकारी मुल्कोंमें मशहूर है, जैनलोग जीवोंपर रहेमकरते हैं. लुले लंगडे जानवरोंकी हिफाजत जितनी जैनलोग करते हैं, साय नही! दुसरे करतेहोगे, जैनोंमें कइ ग्रेज्युएट वकील बारीष्टर और सोलीसिटरभी मौजूद है. किसी धर्मके काममे अगर रुपयेपैसोंका चंदा करना चाहो तो जैनलोग किसीकदर कम नही है;—

१५ आजकल कइश्रावक कहाकरते हैं, जमाना बदला हुवा है, समयदेखकर चलना चाहिये, इन्साफ कहता है. जमाना तो हमेशां बदलताही रहता है, और रहेगा. इससे क्याहुवा? अपना दिल धर्मपर साबीतकदम रखो; तो जमाना क्या करसकेगा? अपना दिल धर्मपर पाबंद नहो तो फिर जमाना बदलनेका बहाना क्यौं करना? अगर अपना कोइ नोकर अपने हुकममे न चलेतो उसको छोड देना चाहिये, अगर किसी गुरुका कोइ चेला गुरुके हुकममे न चलेतो उसकों अपनी समुदायसें अलगकरदेना मुनासिब है,

अगर खास अपनी औरत या वेटा अगर अपने फरमानेपर अमल न करे तो उनसें संबंध छोड देना चाहिये;–

१६ उत्पत्तिकी अपेक्षा वस्तुकी शुद्धि अशुद्धि नहीं देखीजाती; यानी पैदाशकी तर्फ देखे तो चीजकी शुद्धि या अशुद्धि मुकरर नही किइजाती, वल्कि! व्यवहार मार्गकी अपेक्षा जो चीज पवित्र समजीगइहो वो पवित्र मानना मुनासिब है, देखिये! कस्तूरी मृगकी नाभिसे पैदाहोती है, मगर व्यवहार मार्गमें वो पवित्र गिनीगइ है, सारंगी तवले वगेरा वाजे चमडेके बने हुवे है, मगर व्यवहार मार्गमे वे पवित्र समजे गये हैं, इसलिये इरादे धर्मके जिनमंदिरमे वजायेजाते है, कंवल और शाल दुशाले तिर्यचोके वालसें वनेहुवे हैं, मगर व्यवहार मार्गमें वे पवित्र समजे गये हैं, इसीलिये जिनमंदिरमें रखेजाते है, पानीमे मछ कछप मेंडक वगेरा जीवोंके अवयवभी पडेरहते हैं, जलचर स्थलचर वगेरा जीवोंका जुठाभी है, चीडिया और कबूतरकी वींठ वगेरा चीजोंसें मीला हुवाभी है, दरअसल! सच पुछो तो पानीमे अपवित्रता ज्यादा है. मगर व्यवहार मार्गमे पानीको पवित्र समजागया, इसीलिये जिनप्रतिमाके स्नानमे लायाजाता है, चमडेके भाडेमें रहाहुवा घृतभी दीपकके लिये जिनमंदिरमे लायाजाता है, मीठाइ जो जिनप्रतिमाके सामने नतौर नैवेद्यके रखीजाती है, उसमें कभी कीडे मकोडेके कलेवरभी दिखपडते हैं, मगर नैवेद्यकों व्यवहार मार्गमें पवित्र समजकरही जिनप्रतिमाके सामने रखाजाता है, इसलिये सवुत हुवा वस्तुकी पवित्रता उत्पत्तिकी अपेक्षा देखीजाय तो कोइ पता न लगे,–

१७ खानपानकी चीज तर्फ देखो तो सुके चमडेकी मशकमे लाया हुवा पानी और सुके चमडेके भांडेमे रहाहुवा घृत खानपानमे लिया जाता है. हींग चमडेमे लपेटी हुइ गेरमुल्कसें आती है, दुध वेचनेवाले जब दुध निकालते हैं तो उनके घरके पानीसे भाडे

धोते है, इन सन वातोंपर देखा जाय तो उत्पत्तिकी अपेक्षा वस्तुकी शुद्धाशुद्धि नही देखी जाती. जो चीज व्यवहार मार्गमें पवित्र समजी गइ हो वो पवित्र मानना ठीक है, दुसरा कोइ उपाव नही, वहेमकी दवा किसी हकीमके पास नही मीलती, चमडेके नगारेभी अगर खयाल किया जायतो जिन मंदिरमें नही लेजाना चाहिये, हारमोनियम बाजेके काममें सरेस लगाया जाता है. फिर मजकुर बाजाभी जिनमंदिरमें क्यौं लेजाना? चमरीगौके वालोंका वना हुवा चमरभी अपवित्र कहो, मगर नही! उत्पत्तिकी अपेक्षा वस्तुकी शुद्धि नही देखीजाती. व्यवहार मार्गमें जो पवित्र समजी गइ हो, वो पवित्र मानकर जिन मंदिरके उपयोगमे लिइजाती है. सुधारक बननेका दावा करनेवालोंके दिलमें चाहे यहबात वेठो या न वेठो जैन संघको उनकी कोइ परवाह नही करना चाहिये.–

१८ अगर कोइ इस दलिलकों पेंशकरे जैनमें जो जो मुनि आचार बराबर नही पालते उनको नही मानना चाहिये. जवाबमे मालुम हो, धर्म और प्रीति जबरन नही होती. जिसकी मरजी हो माने, जिसकी मरजी न हो न माने, मुनि जनोको इसकी परवाह नही, जों शख्श जैसी करनी करेगा, वेसा फलपायगा. दीक्षालेनेवाले शख्श सभी दौलतमंद नही होते, कोइ शख्श गरीब होता है. कोइ अमीर, दुखके वख्त दीक्षा नहीलेना ऐसा कोइ धर्मशास्त्र नही फरमाता, दीक्षा कइ सबबोंसे उदय आती है, संप्रतिराजाके जीवने पूर्वभवमें गरीबी हालतमें दीक्षा लिइ थी. अनाथी मुनिने रोगमीटनेसे दीक्षा लिइथी. अजितसेन राजाने श्रीपालराजाके सामने पराजय पाकर दीक्षा लिइथी. दशार्णभद्रराजाने इंद्रकी रिद्ध देखकर अभिमान छोडा और दीक्षा लिइथी. साबीत हुवा, तकलीफकी हालतमेंभी दीक्षालेना अछा है, दीक्षालेकर जो शख्श पंचमहाव्रत पालेगा, उसके आत्माको आराम मिलेगा, जो शख्श नही पालेगा, उसकोपर भवमें तकलीफ होगी, यह सिधी सडक है, मगर इतना जरुर याद

हे, धर्ममे जोराजोरी नही चलती, धर्म किसीका मोल लिया हुवा नही, जो शख्श धर्म करेगा उसीको फल मीलेगा, जिस जिस श्रावकको जिसजिस जैनमुनिपर श्रद्धा न हो उनको मुनि तरीके न माने, इससे ज्यादा और क्या कर सकते है, वो जैनमुनि उस श्रावकको श्रावक तरीके नही मानेंगे, धर्मपालना न पालना अपनी अपनी मरजीकी बात है, कोइ किसीसे जोराजोरी धर्मपालन नही करासकते, बस! इतना कहना बन सकता है. चाहे साधुहो या श्रावकहो जो जैसी करनी करेगा. वैसा फल पायगा,–

१९ अगर कोइ श्रावक इस दलिलको पेंशकरे त्यागी जिनेंद्रको देवद्रव्य क्यों? जबाब, त्यागी जिनेंद्रका मंदिर क्यों? रागद्वेप रहित जिनेंद्रको समवसरण क्यों? छत्र चवर क्यों? रत्नसिंहासनपर वेठना क्यों? अगर कहाजाय समवसरणकी रचना देवते बनाते है, और मंदिर श्रावकलोग बनाते है, तो फिर देवद्रव्यभी श्रावक बोलते है और इकठा करते है, इसमे रागद्वेप रहित जिनेंद्रको क्या दोप आया? देवद्रव्यकी हिफाजप करनेसें पुन्य और देवद्रव्यका नाश करनेसें पाप होना जैनशास्त्रोमे लिखा है, अगर देवद्रव्यका होना जैनागममें किसी जगह न होता तो यह अधिकार क्यों होता? ज्ञातासूत्रमे पाठ है जिन प्रतिमाकी आभूपणसे पूजा करना, इससे देवद्रव्यका होना करार पाया, कइ श्रावक ऐसा बहाना पेंशकरते है, पहले गुरु सुधरेंगें तो पीछे श्रावकभी सुधरेंगे, मगर धर्मशास्त्र फरमाते है, यह बहाना गलत है, चाहे गुरुहो या श्रावकहो जो धर्मकरेगा, उसीका सुधारा होगा, सुधरनेवाले किसीका बहाना नहीलेते, इसलिये यह कहना गलत हुवाकि–गुरुसुधरे तो श्रावक सुधरे, गुरुकी करनी गुरुपायगें तुमारी करनी तुम पाओगे, इसमे एक दुसरेका बहानालेना गलत है, अगर कहाजाय साधुलोगोमे शिथिलाचार होगया है, जबाबमे मालुमहो, श्रावकलोग कौनसे कठिन आचारवाले रहगये हें? पेस्तरके जमाने जैसे साधु नही,

वैसे पहले जैसे श्रावक नहीं, दोनोंके व्रतनियममे शिथिलता आगइ है, फिर वडाइ किसवातपर करना? श्रावकोके वारांह व्रत ग्यारह पडिमा और एकीस गुणोंमेंसें अव कितने गुण रहगये हैं? पेस्तरके श्रावक जन सामायिक प्रतिक्रमणमें वेठतेथे, अगर देवताभी उनकों चलायमान करने आवे तो अपने ध्यानसे चलायमान नही होतेथे, आजकलके श्रावक अगर एक विछु नजीकमें आजायतो डरजाते हैं. और धर्मध्यानकों छोडकर चलेजाते है,–

[ वीच वयान देवद्रव्य ]

२० अगर कोइ इसदलिलकों पेशकरेकि तीर्थंकरदेवकी पूजा आरती वगेराकी वोलीका द्रव्य साधारणखातेमें लेजानेकी कल्पना करे तो कोइ हर्ज नही है, ( जवाव ) पूजा आरती वगेराकी वोलि तीर्थंकर देवके नामसे वोली गइ है, उसमें साधारण खातेकी कल्पना होसके नही और ऐसी कल्पना करना कोइ जैनशास्त्र नही फरमाता, कोइ श्रावक जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाके सामने एक तख्तेपर जव चावलोका स्वस्तिक करे और उसपर वादाम सोपारी फल या नैवेद्य चढावे और ऐसी कल्पना करेकि–यह वादाम सोपारी मेरे वेटोंकों दुंगा, और फल नैवेद्य जैन मुनिको दुंगा तो ऐसी कल्पना वो करसके या नही? जवावमें मालुमहो, कभी नही करसके, वोली वोलनेवालोने तीर्थंकरदेवके निमित्त पूजा आरती वगेराकी वोली वोलकर अपना द्रव्य उस निमित्त दिया है, वो द्रव्य देवद्रव्यमेंही लेजाना चाहिये, साधारण खातेमें लेजानेकी कल्पना करना कोइ जैनशास्त्र नही फरमाता, एक शख्शकेनामकी वोली हुइ रकम दुसरे शख्शको देदेना यह प्रत्यक्ष विरोध है, जो वोली जिस निमित्तसें वोलीगइहो वो उसी निमित्तमे जाना चाहिये, तीर्थंकर देवके नामसे वोली वोलकर उस द्रव्यको साधारण खातेमें वदलदिया तो वोली वोलना वृथा होगया, और यहभी सौचलो! वोलीकी सनंद क्यारही? एक लडका एक शख्शके

नामसे गोदी लिया, और फिर उसमे कल्पना करके दुसरे शख्शके नामपर बेठा दिया, क्या! यहभी कोइ इन्साफ है? जो शख्श पूजा आरती स्नात्र और पालना वगेराकी बोली बोलता है, अपनी भावनासे बोलता है, उसमें दुसरी बातकी यानी साधारण खातेकी कल्पना करना बन सकता नही, दर असल! एक मयानमें दो तलवार केसे रहसकेगी? बोली बोलते वख्त साफ साफ कहाजाता है, भाइयो! चढता परिणामरखो, धर्मकाममें बोली बोलकर शुभ भावसें देवद्रव्यकी वृद्धि किइ तो उसने पुन्यानुबंधिपुन्य हासिल किया जानना, साधु साधवी श्रावक श्राविका जैन मजहबमे यह चतुर्विधसंघ कहागया है, इनमे कौन ऐसा होगा जो देव निमित्त बोली बोलकर साधारण खातेकी कल्पना करे और उस द्रव्यको अपने उपयोगमें लेवे, बोली बोलनेवाला श्रावक अपने दिलमें ऐसी भावना लाता है, मेरे कमनसीबको ऐसा योग कहांथा? आज मुजे पूजा आरती करनेका मौका मीला, रुपये पैसे आज है कल नही, इसतरह उदार दिलसें देवनिमित्त द्रव्य बोलता है. वो देवद्रव्य हुवा, वो द्रव्य जिनमंदिर और जिनमूर्तिके शिवाय दुसरे क्षेत्रमे लगसके नही. अगर कहाजाय जो क्षेत्र सिदाताहो उसमे लगाना हुकम है, जवाबमें मालुमहो, देवद्रव्य देवद्रव्यमे ही लगसके, ज्ञानद्रव्य ज्ञानमे और चतुर्विधसंघके निमित्तका द्रव्य उनही चार क्षेत्रोंमे यथाक्रमसे लगे, इनमे दुसरी तरहकी कल्पना होसकती नही, और न किसी जैन शास्त्रमे ऐसी कल्पना करना लिखा, अगर लिखाहो तो कोइ महाशय उसका पाठ बतलावे, चतुर्विधसंघ निमित्तका द्रव्य और ज्ञान निमित्तका द्रव्य देवके काममे लगसके मगर देवद्रव्य ज्ञानमें या चतुर्विधसंघके काममे नही लगसके,–

२१ जैनश्वेतांबरतीर्थोमे और मंदिरोंमें लाखोरुपये पडेरहे और पुराने जैनश्वेतांबर तीर्थ और मंदिरोंकी मरम्मत न कराइजाय यह

श्रावकोंकी भूल हैं, अपने रहनेके लिये मकान कोठी और बंगले बनाना और जिन मंदिरोंकी मरम्मत देवद्रव्यसे कराना नहीबने यह कितनी वडी भूल है. जैनमुनि श्रावकोको उपदेश देते हैं, तोभी कौन सुनता है, आजकलके श्रावक अपने काममें पुरे और धर्मके कामभे अधुरे है, इससें ज्यादा और क्या कहे? आजकलके कितनेक सुधारक श्रावकतो यहांतक कहते हैं कि-प्रतिष्ठा रथयात्रा उद्यापन और तीर्थयात्राके संघ निकालनेकी हाल जरुरत नही, गरीब श्रावकोको मदद देनेकी जरूरत है. मगर-यह नहीं मालुमकि-तुमारे धर्मशास्त्र तुमको क्या हिदायत करते है? धर्मशास्त्र हिदायत देते है. धर्मके कामको धका पहुचाकर कोइ काम करना बहेत्तर नही, धर्मके कामभी करते रहो, और गरीब श्रावकोंको मददभी करते रहो, अपने विवाह शादीके काममें मातापिताके मरनेके बाद जिमनमें बगी घोडे और मौज शौखमें कम खर्च करके गरीब श्रावककों मदद पहुंचाओ तो क्या हर्ज है? मगर इसबातको कौन सुनते है? बाते बनानेवाले बहुत निकलेगें, मगर उस मुजब बरताव करके बतलानेवाले कितने है. इसपर खयाल कीजिये,-

२२ तीर्थ शत्रुंजय गिरनार वगेरा जैनश्वेतांबर तीर्थोमे जहां लाखोंरुपये देवद्रव्यके पडे है, उनसे पुराने जैनश्वेतांबर तीर्थ और मंदिरोंकी मरम्मत क्यों नही कराइ जाय, खास तीर्थ गिरनारपर राजासंप्रतिका दिवान वस्तुपाल तेजपालका और राजा कुमारपालका बनाया हुवा मंदिर मरम्मत होना दरकार है, तीर्थंकर नेमनाथजीकी टोंकमे और सहस्राम्रवनमे कइ जगह मरम्मत होना जरुरी है, तीर्थ समेतशिखरजी पहाडपर और राजगृहीके पांचों पहाड पर कइ जैनश्वेतांबरमंदिर पुराने होगये है, उनकी मरम्मतहोना दरकार है, मुल्क पूरबमें शहर गयाजीके पास भद्दीलपुर तीर्थ नेस्तनाबुद होगया है, वहां जिनमंदिर और धर्मशाला बनना जरुरत है, शहर दरभंगाके पास शीतामढी जो छोटासा है मगर रौन-

कदार शहर है, जैनशास्त्रोंमें जिसका नाम मिथिला नगरी लिखा वहांपर जैनश्वेतांबरमंदिर और धर्मशाला बनाकर तीर्थका पुनरुद्धार कराना जरूरत है, करीब इलाहाबादके भरवारी टेशनसें सातकोश दुर कौशंबपाली गांव जिसको जैनशास्त्रोंमें तीर्थंकर पदमप्रभुकी जन्मभूमि कौशांबी नगरी लिखी, यह तीर्थभी नेस्तनाबुद होगया वहां जैनश्वेतांबरमंदिर और धर्मशाला बनाकर तीर्थकों तरकी देना चाहिये, सिकोहाबाद टेशनसें सातकोश दुर जमना कनारे बटेश्वर गांव जिसकों जैनशास्त्रोंमें शौरीपुर तीर्थ लिखा जहां चार जैनश्वेतांबरमंदिर बेमरम्मत बिना मूर्त्तिके खडे है, उनकी मरम्मत होना दरकार है, शहर अयोध्याके उत्तर तर्फ गोंडा जंकशनके आगे सावथ्थी नगरी जहां तीर्थंकर संभवनाथ महाराजका जन्म हुवा था, जिसकों आजकल किला सहेटमेट बोलते हैं वहां जैनश्वेतांबरमंदिर और धर्मशाला बनवाकर तीर्थका पुनरुद्धार कराना चाहिये, टेशन कायंमगंजसे तीनकोश दुर कंपीलपुर तीर्थ जिसकी जेरनिगरानी शहर लखनउके जैनश्वेतांबर श्रावक रखते हैं, इसके जैनश्वेतांबरमंदिरकी मरम्मत होना दरकार है, शहर मथुरा महोले घियामंडी एक जैनश्वेतांबरमंदिर बनाहुवा मौजूद है, जिसकी सार संभाल लश्कर गवालियरके जैनश्वेतांबर श्रावक रखते है, इसकी मरम्मत होना जरुरी है. तीर्थ हस्तिनापुर जो टेशन मेरटसें वीशकोश दुर है, जिसकी सारसंभाल देहलीके जैन-श्वेतांबर श्रावक रखते है. जहां श्रेयास कुमारने तीर्थंकर रिषभदेव महाराजको इक्षुरससें वार्षिक तपका पारना करवाया था, उस जगहकी मरम्मत होना जरुरी है, इस लेखका मतलब यह हुवा, अगर देवद्रव्य ज्यादा हो तो ऐसे पुराने तीर्थोंकी मरम्मतमे सर्फ करना ठीक है, मगर दुसरे काममे नही लेना चाहिये, पूजा और आरती तीर्थंकर देवके नामसें बोली जाती है, चौदह स्वप्नोंकी बोलीभी तीर्थंकरके निमित्तसें होती है, वोभी देवद्रव्यके शिवाय दुसरे खातेमे

२५

जासकती नही, पालनेमें जो श्रीफल रखा जाता है, वो तीर्थंकर देवकी स्थापनाके सबब रखा जाता है, उसकी बोलीका द्रव्यभी देवद्रव्यही है, इसलिये इसमें दुसरी तरहकी कल्पना करना कोइ जैनशास्त्र नही फरमाता, कल्पसूत्रकी बोलीका द्रव्य ज्ञाननिमित्तसे बोला जाता है, इसलिये वो ज्ञानखातेमें जाना चाहिये, प्रतिक्रमणके वख्त जो वंदितासूत्र अजितशांतिस्तव वगेराकी बोली बोलकर जो द्रव्य मुकरर किया जाय वोभी ज्ञानके निमित्तसे है, इसलिये ज्ञानखातेमें जाना चाहिये, दुसरी तरहकी कल्पना करना गलत है,—

[ देवद्रव्यकी हिफाजत, ]

२३ देवद्रव्य किसीके घर जमा नही रखना, जिनमंदिरके नामकी एक पीढी स्थापन करके उसमें रखना चाहिये, किसीके घर देवद्रव्य रखनेसें वो मानमें आकर किसीको जवाब नही देता, अगर कोइ दुसरा गृहस्थ उसकों देवद्रव्यका हिसाब पुछे तो जवाब देता है, तुमकों एकेलेकों पुछनेका क्या हक है? सब संघ मिलकर पुछेगा तो जवाब दूंगा, मगर इन्साफ कहता है, संघका एक आदमीभी जवाब पुछ सकता है? देवद्रव्यका हिसाब दरसाल छपवाकर जाहिर करना चाहिये. देवद्रव्यका और मंदिरजीका कामकाज करनेके लिये एक मुनीम रखना, देवद्रव्य पीढीकी दुकानमें या मंदिरकी तीजोरीमें रखकर सब काम चलाना चाहिये. किसी शहरमें कोइ श्रावक गुजराती मारवाडी कच्छी पंजाबी दक्षिणी या मुल्क पूरबवाले आकर बसे हो तो उनमेंसें एकएक आदमीकी चुटनी करके पांच या आठ आदमी मुकरर करके एक सभा बनाना. उन सबकी राय लेकर बहुमतसे मंदिरका और देवद्रव्यका काम चलाना. वो सभा तीन वर्सके बाद बदल देना, हमेशांके लिये वही श्रावक अधिकारी बनाये रखना ठीक नहीं, चाहे कोइ दौलतमंद हो या गरीब हो धर्मके काममे सब समान है, जो मंदिर सत्र

संघका है, उसमे सबका हक है, कोइ एक शख्श उस मंदिरमें अपना अधिकार चलाना चाहे तो नही चल सकता, देवद्रव्य बढ जाय तो जीर्णोद्धारमे लगादेना चाहिये, एक मंदिरका पैसा दुसरे मंदिरमे नही लगसके ऐसा कोइ नियम नही, धर्मशास्त्र फरमाते है, सब मंदिरमे जिनेंद्रदेव तख्तनशीन है, अगर कोइ ऐसा कहे यह मंदिर हमारा है, यह दुसरोंका है, तो ऐसा कहनाभी नही बनसकता, क्यौंकी जिसमे सब संघका पैसा लगा हो वो एकका नही, उसमें संघकी सलाहसें काम करना चाहिये,–

२४ जिनमंदिरकी पीढीके नामसें जो मुनीम रखना उसका फर्ज है, मंदिरकी आमदनी और खर्चका नामा तयार रखे, पूजारीपर नोकर चाकरोंपर और मंदिरकी चीजोंपर देखरेख करे, केशर चंदन सोने चांदीके वर्क और इत्र वगेरा पूजनकी चीजें दुकानमें रखी हो और पूजाके लिये कोइ श्रावक मूल्य देकर खरीद करना चाहे तो उसको देवे, मुनीमकों और पूजारी वगेरा नोकर चाकरोकों तनखाह, उसके गुजरान मुजब देना चाहिये. पुरी तनखाह नही देनेसे वे ध्यान देकर नोकरी कैसे करेंगे? पूजारीका काम है, जिनमंदिर साफ रखे, जिनप्रतिमाका स्नान और पूजन करे, अंग लुहना धोवे, शामकों दिया बत्ती और आरती करे, मुनिमका और पूजारीका फर्ज है. सवेरसें बारांबजेतक फिर दो बजेसे चारबजेतक और फिर छहबजेसें नवबजेतक जिनमंदिरमे हाजिर रहे, मुनीम और पूजारी वगेरा मंदिरके नोकर सब संघके नोकर है, इसलिये उनकों लाजिम है, सब श्रावकका हुकम माने, अग्रेसरी या वहीवटकर्त्ता श्रावककेही कहनेमे चलना और दुसरे श्रावकोंके कहनेपर अमल नही करना बहेत्तर नही, क्यौंकि वे सब संघकी तर्फसे तनखाह पाते हैं. वहीवटकर्त्ता या अग्रेसरी श्रावक अपने घरसें उनकों तनखाह नही देते, मंदिरकी दुकानके मुनीम पूजारी या नोकरोसें कोइ श्रावक अपने घरका काम न लेवे, सबब कि–वे जिनमंदिरके

नोकर है, तुमारे घरके नोकर नही, जिनमंदिरमे या उपाश्रयमें कोइ कोठरी या मकान पूजारीकों या नोकर चाकरोकों रहनेके लिये नही देना चाहिये, मंदिरमें रहनेके लिये कोठरी देनेसे बाद चंद-रौजके वे मालिक जैसे बनकर खाली नही करते, कइ जगह ऐसा बनाव देखा गया है, अग्रेसरी या वहीवटकर्त्ता श्रावक उसका पक्ष करे तो अखीरमें सब संघमें अनबनाव बढता है, इसलिये पूजारी और नोकर मंदिरसें अलायदे मकानमें रहे और नोंकरीके वख्त मंदिरमें हाजिर रहे. जिनमंदिरकी चीज—छत्र, चवर, म्याना, पालखी, सारंगी, तबले, वाजा, हंडी, तख्ते, धजापताका, जाजम, सतरंजी वगेरा कोइ सामान श्रावक अपने घरके काममें न लेवे, देवमंदिरकी चीज अपने काममें लेना गुनाह है,–

[ जिनमंदिर किस तरकीबसें बनाना. ]

२५ जिनमंदिर उस जगहपर तामीर करना चाहिये, जिस जगहपर बीज डालनेसें जल्दी फल पैदा होताहो. हाड चाम जिस जमीनमें दबेहुवे निकसे उस जगह जिनमंदिर बनाना बहेत्तर नही. फटी हुइ जमीनमें या सर्प वगेराके बीलवाली जगहपर जिनमंदिर बनाया जाय तो बनानेवालेको तकलीफ होगी, सवाल पैदा होनेकी जगह है, जिनमंदिर एक अछी चीज है, फिर उसके बनानेसें तकलीफ क्यों ? ( जवाब. ) जिस तरकीबसे बनाना कहा, उसके खिलाफ बनावे फिर तकलीफ क्यों न होगी जरुर होगी. जितना उंचा मंदिर हो उतने घेरमें पुख्ता कोट बनवाना चाहिये, वगेर कोटके मंदिरकी रौनक नही आती. जो जो पुराने मंदिर बनेहुवे है, देखलो ! अतराफ उनके कोट बनाहुवा जरूर मिलेगा, चाहे किसी मंदिरमें जो मूलनायक प्रतिमा हो उसकों प्रतिष्ठाके रौजसे चुना वगेरा मसालेसे जमा रखना चाहिये, पूजनके वख्त या स्नान कराते वख्त उठाना नहीं, जो लोग हमेशा उठाते है, उनसे दरयाफ्त करना चाहिये, प्रतिष्ठाका मुहूर्त्त तुमारा

कहां रहा? बल्कि! उसका फल बिल्कुल चला गया, असलमे! जितनी पाषाणकी प्रतिमा जिनमंदिरमें हो सब चुना वगेरा मसालेसें अचल करदेना चाहिये, याते खंडित होनेका खौफ न रहे, कइ मुल्कोंमे देखा गया है,- मूलनायककी प्रतिमाको पूजाके वख्त उठाकर एक थालमे रखकर नवण कराते है, मगर ऐसा करना बहेत्तर नही, अगर कोइ इस दलिलकों पेंशकरे अगर मूर्ति अचल किइ जायगी तो खौफके वख्त उठानेमें देर होगी, (जवाब) कोइ देर न होगी, तुर्त उठ सकती है, सौचो! फिर बडीबडी जिनमूर्त्ति बनाना क्यों मंजुर रखागया? खौफके वख्त उठानेके लिये दश आदमी कहांसे आयगें? मगर यह सब दलिले कमजोर हैं, दर असल सब मंदिरोंमे मूर्त्तिये अचल रखनाही अछी बात है, जिस शख्शके हाथसें जिनमूर्त्तिके हाथ पाव वगेरा कोइ अंग उपाग खंडित होजाय उसके लिये बुरे दिनोंकी निशानी है, जिसके हाथसें जिनमूर्त्तिकी गर्दन खंडित होजाय उसके लिये सबतर-हसे बुरा है, मूलनायक प्रतिमाकी दृष्टि किसतरकीबसें रखना उसका खुलासा इसतरह है, मंदिरके मूलगर्भद्वारकी जितनी उचाइ हो, उसके आठ भाग करना, उनमेसें उपरका आठमा भाग और नीचेके छह भाग छोड कर जो सातमा भाग रहा; उसके सात भाग करना, उन सात भागोंमेंसें नीचेके सात भाग छोडकर उपरका जो एक भाग रहा, उस भागमे ठीक मीलाकर मूलनायक-प्रतिमाकी दृष्टि रखना चाहिये, इससें उंची नीची दृष्टि रखना अछा नही,—

२६ जिस जिनमंदिरका जीर्णोद्धार कराया जाय और अगर मूलनायकप्रतिमा न उठाइ गइ हो, तो दुसरी दफे प्रतिष्ठा करानेकी कोइ जरुरत नही, अगर उठाइ गइ हो तो दुसरी दफे प्रतिष्ठा कराना जरुरत है, जिस रंगके पथरकी मूर्त्ति हो उसीरंगकी कोइ रेखा उसमे दिखाइ देती हो कोइ हर्जेकी बात नही, मगर

करते वख्त दिलसें पश्चात्ताप भी करसकता है, इसलिये उसको निकाचित कर्म नही बंधसकता, सम्यक्त्वपूर्वक ज्ञानी मनुष्य दुसरेकी रिद्धि देखकर दिलमें नाराजी नही लाता, और सौचता है, इस जीवने पुन्यकिया है, इसी सबब इसे आराम और चैनमिला है, ज्ञानकी तारीफ है, जिसके उदयसें जीव संसारका स्वरूप समजता है, श्रेणिकराजा, संप्रतिराजा, आमराजा, वनराज, सिद्धराज, कुमारपाल वगेरा राजोने—वाग्भट्ट, अंबड, वाहड, वस्तुपाल, तेजपाल वगेरा मंत्रीयोने और झांझड, पेंथड, झगडुशा वगेरा शेठसाहुकारोनें जैनधर्मकों तरक्की दिइ, और परलोकका रास्ता साफ किया, जैनमजहबके जो छह कर्मग्रंथ हैं, वगेर सर्वज्ञके ऐसा बारीक बयान कोइ नही करसकता,—

जीवके (५६३) भेद इसतरह है,

१४ चौदह भेद नारकीके—
४८ अडतालीश भेद तिर्यंचगतिके,
३०३ तीनसो तीन भेद मनुष्यगतिके,
१९८ एकसो अठानवे भेद देवगतिके,
इनसबकों मिलानेसें (५६३) भेद जीवोंके होते हैं,—

अलोकमें अजीवके दो भेद, आकाशका देश और प्रदेश, आकाशका स्कंध वहां नही, सबब स्कंध जब हो लोकालोक मीले, देवलोकमें अजीवके भेद दश, धर्मास्तिकायका देश और प्रदेश, अधर्मास्तिकायका देश और प्रदेश, आकाशास्तिकायका देश और प्रदेश, पुदगलास्तिकायके स्कंध देश प्रदेश और परमाणुं कुल्ल दश भेद हुवे, अढाइ द्वीपमें अजीवके भेद (११) उपर दिखलाये हुवे दश और एक भेद कालका कुल्ल ग्यारह हुवे, सृष्टिमें जीवके भेद (१२) सूक्ष्म पांच स्थावरके पर्याप्ते अपर्याप्ते दश हुवे. बादर वायुकायके पर्याप्ते अपर्याप्ते कुल्ल बारह हुवे, और सन्नीमनुष्य

पर्याप्ताका एक भेद सब मीलकर तेरह हुवे, उडती माखीकी टांगमें जीवके भेद तेरह, और बेठी मांखीकी टांगमेंभी जीवके भेद तेरह, थंभेमे जीवके भेद बारह, पांच स्थावरके दश पर्याप्ते अपर्याप्ते, और बादर वायुकायके दो पर्याप्ते अपर्याप्ते. कुछ बाहर हुवे, दुनियामें आठ चीजे अनत है, १ अभव्यजीव अनंते, २ सम्यक्त्वके प्रतिपाती अनंते, ३ सिद्ध अनंते, ४ संसारीजीव अनंते, ५ पुदगल परमाणु अनंते, ६ तीनकालके समय अनंते, ७ आकाशास्तिकायके प्रदेश अनते, ८ केवलज्ञानके पर्याय अनंते,—

२९ बालः पश्यति लिंगं मध्यमबुद्धिर्विचारयति वृत्तं,
आगमतत्वं तु बुद्धः परीक्षते सर्वयत्नेन, १—

अर्थः कमपढेहुवे शख्श बाह्यक्रियाको देखा करते है, मध्यम बुद्धिवाले शख्श व्रतनियमको देखकर अनुमान करते है फलां शख्श धर्मी है या अधर्मी ? उत्तमबुद्धि शख्शज्ञान दृष्टिसें दुसरेके ज्ञानकों देखकर धर्मीपनेका अनुमान करते है. देवमंदिर और धर्मशास्त्रकी व्याख्यानसभामें औरतोकेलिये जो पर्देकी रसम मुल्कपूरब और मारवाडमें चलती है, वो ठीक नही, पर्देकी वजहसें धर्मके काममें हानि पहुंचती है, तीर्थंकरोके समवसरणमेभी पर्दा नही था, जब कि—मुसल्मान बादशाहोंकी अमलदारी हिंदमें तरकीपर थी, पर्देकी रसम जारी हुइ, अमलदारी दुसरी होगइ, मगर पर्देकी रसम अबतक छोडते नही, मुल्क गुजरात तर्फ पर्देकी रसम बिल्कुल नही, चहां धर्मकी कितनी तरकी होरही है जाकर देखलो,

[ नियंत्रित प्रत्याख्यान आजकल विछेद होगया. ]

३० नियंत्रित प्रत्याख्यान किसकों कहते हैं, पेस्तर इसका हाल मालुम करना चाहिये, महिनेमहिने या फलाफला रौजमे यह तप करुंगा. जैसे पांच वर्स और पाच महिनेतक हरमहिनेकी सुदी पंचमीके रौज उपवास करुंगा, अष्टमी एकादशी चतुर्दशी अमाश और

पौर्णिमाके रौज-में इतने वर्स और इतने महिनेतक उपवास करुंगा, रोहिणीनक्षत्रके रौज उपवास करुंगा, नवपदजीकी ओलीका तप करुंगा, ऐसा जो प्रत्याख्यान गुरुके पास उच्चरते हैं, या अपने मनमें धारते हैं, इसका नाम आवश्यकसूत्रके प्रत्याख्यान अध्ययनमें नियंत्रित प्रत्याख्यान कहा, वो प्रत्याख्यान आजकल विछेद होगया, उसका पाठ आवश्यकसूत्रके प्रत्याख्यान अध्ययनसें यहां देते हैं, सुनिये!

मासे मासेय तवोमुगो अमुगदिवसंमि एवइओ,
हठेण गिलाणेण व कायवो जावउसासो,
एवं पच्चखाणं नियंटियं धीरपुरिस पन्नत्तं,
जंगिन्हंतणगारा अणि सियप्पा अपडिबद्धा,
अणिस्सियप्पा अनिसृतात्मानो निदानाः
अप्रतिवद्धाः क्षेत्रादिषु एतच्चप्रत्याख्यानं न
सर्वदा क्रियते किं तर्हि!
चउद्दसपुव्वी जिणकप्पिएसु पढमंमिचेवसंघयणे,
एयं वुछिन्नं खलु थेरावि तया करेसीय, स्पष्टा,
नवरं तदा स्थविरा अप्यकार्षुः

( माइना ) महिने महिने या फलांफलां रौज अमुकतप में जरुर करुंगा चाहे तंदुरस्त रहु या बीमार, जहांतक मेरे शरीरमें श्वास है मजकुरतप जरुर व जरुर करुंगा, इसका नाम नियंत्रित प्रत्याख्यान हुवा, धीरपुरुषका फरमाया हुवा ऐसा प्रत्याख्यान सर्वकालमें नही किया जाता, बल्कि! जब चौदह पूर्वके पाठी जिनकल्पी मुनि तथा वज्र रिषभ नाराच संहननवाले थे, उसवख्त कियाजाताथा. स्थविरकल्पी मुनिभी जो वज्र रिषभ नाराच संहननवाले होते थे वैसा तपकर सकते थे, आजकल यह प्रत्याख्यान विछेद होगया, वज्र रिषभ नाराच संहनन नही रहा, जिनकल्पी मुनि नही-रहे, और चौदह पूर्वके पाठी नही रहे, फिर वैसा तप कैसे

होसके? पेस्तरके मनुष्य जानते थे; यह तप मे करता हुं. मगर मेरेसें पुरा होगा या नही? उतनी उम्र मेरी है या नही? आचकल वैसा ज्ञान नही, वैसी ताकात नही. फिर व्रतभंग होनेका दोष लगेगा या नही? अगर वो तप करना हो तो जमाने हालमें इतनी छुटररवकर करसकते हो, जैसे किसीने पांच वर्स और पांचमहिनेतक पंचमीके रौज उपवास करनेका शुरु किया और बीचमें किसी शुक्ल पंचमीके रौज भारी बीमारी होगइ तो उस पंचमीकों छोडकर अगले महिनेकी शुक्लपंचमीके रौज उपवास करना. मगर वो व्रत टुट गया वैसा नही समजना. पांच वर्स और पांच महिनेकी जगह चाहे ज्यादा अर्सा लगजाय तोभी कोइ हर्ज नही, जैसी ताकात हो, वैसा करे, नवपदजीकी ओली नवदफे करना शास्त्रोंमें कहा, फर्ज करो! किसीको दुसरी या तीसरी ओलीमें कोइ सख्त बीमारी आगइ, और नवपदजीकी ओलीका तप न होसका. तो अगली ओलीके वख्त करे, मगर वो तप टुट गया ऐसा न समजे, नव ओली पुरी करदेवे, इसीतरह रोहिणीतप करनेवालेको कोइ रोहिणीका दिन खाली गया तोभी वो रोहिणीतप टुट गया नही समजना, अगली रोहिणीनक्षत्रके रौज उपवास करे, कोइ हर्ज नही,–

३१ कोइ जैनमुनि व्याख्यानसभामें धर्मशास्त्रका व्याख्यान वांच रहेहो उसवख्त सुननेवाले श्रावकश्राविकाको लाजिम है, ध्यान लगाकर व्याख्यान सुने, व्याख्यान सुनतेवख्त माला न फेरे, और सामायिक न करे. एकसमय दो बातमें मनका उपयोग न रहेगा. जैनशास्त्रोंमें सामायिक चार तरहके फरमाये, १ सम्यक्त्वसामायिक २ श्रुतसामायिक ३ देशविरतिसामायिक और ४ सर्वविरतिसामायिक ध्यानलगाकर व्याख्यान सुनना यह श्रुतसामायिक है, सामायिकका काल दो घडीका है, चलते व्याख्यानमें सामायिक पारे तो उतनी देर शास्त्रसुननेका अंतराय पडेगा, अगर सामायिक न पारे तो दो घडीसें ज्यादा वख्त सामायिकमे बेठनेसे तीर्थंकर गणधरोके हुकम.

अदुलीका दोष लगेगा, व्याख्यानके वख्त व्याख्यानसभामें वेठकर कइ श्रावक श्राविका सामायिक करते हैं, यह ठीक नही. जैनमुनि उनका लिहाज रखकर मना नहि करते और यह रवाज चलने देते है, इसमे वेभी दोषके भागी बनते हैं. सच बात कहनेमें लिहाज क्यौं रखना? अगर कोइ जैनमुनि दिलमें ऐसा समजे कि यह एक शुभप्रवृत्ति है, इसकों रोकना ठीक नही, मगर यह समजना उनका गलत है, चाहे जितनी शुभप्रवृत्ति क्यौ न हो? जहा तीर्थकर गण धरोंकी हुकम अदुली हुइ तो वो शुभप्रवृत्ति किसकामकी? कइ जैन-मुनि व्याख्यान वाचतेवख्त अगर कोइ श्रावक वंदनाकरे तो मुखसे उसकों धर्मलाभ देते है, मगर व्याख्यानमें धर्मलाभ देना मना है; उसवख्त शास्त्र सुना रहे है, वही धर्मलाभ देरहे हैं, श्रावकश्राविकाकोंभी चलतेव्याख्यानमें सीर झुकाकर सिर्फ! स्फेटा वंदन करके सभामें जहां जगह देखे वहां वेठजाना चाहिये. तीन वंदना चलते व्याख्यानमें नही करना, जो श्रावक आगे आवे वो आगे वेठे पीछे आनकर आगे आनेका इरादा न करे. अगर कोइ श्रावक या श्राविका व्याख्यानकी शुरुआतसे पेस्तर पौषधव्रत लेकर व्याख्यान-सभामें वेठे तो कोइ मना नही. चलते व्याख्यानमें वेठकर पौषधव्रत लेना मना है, शास्त्र सुननेमें उतनी देर खलल पडेगा. पौषध-व्रत चार प्रहरका या आठ प्रहरका होता है, व्याख्यानमें पारनेकी जरुरत नही रहती, इसलिये पौषधव्रत व्याख्यानकी शुरुआतसे पहले लेवे तो कोइ मना नही,–

३२ अगर कोइ इसदलिलकों पेशकरे कोइ जैनमुनि श्रद्धामें पक्के है, ज्ञान पढेहुवे और सचे उपदेशक है, मगर चारित्रमे शिथिल है, तो उनकों वंदन करना या नही? (जवाब.) श्रद्धा ज्ञान और चारित्र इन तीनोंमें श्रद्धा और ज्ञान वडे हैं, चारित्र न हो और श्रद्धा तथा ज्ञान गुण हो तो मुक्ति होसकती है, मगर श्रद्धाविना मुक्ति नही होसकती, इसलिये श्रद्धागुण सबसे वडा, दुसरे नंबर ज्ञानगुण

और तीसरे नंबर चारित्र कहा, और चारित्र न हो तोभी मुक्ति होना फरमाया. इसलिये कोइ जैनमुनि चारित्रमें शिथिल हो तोभी श्रद्धा और ज्ञानगुणकी अपेक्षा वंदन करना चाहिये. ज्ञानगुण सर्व आराधक कहा, और क्रिया देश आराधक कही, वोभी श्रद्धापूर्वक हो तो विनाश्रद्धा क्रियाभी आत्मिकगुणको कोइ फायदा देनेवाली नही.-

३३ कितनेक अनजानमुनि और श्रावक कहदेते है, शामकों प्रतिक्रमण किये बाद रातके वख्त जिनमंदिरमें देवदर्शनकों नही जाना चाहिये. उनसे पुछाजाय कि-यह बात किस जैनशास्त्रके आधारसें कहते हो, कोइ जैनशास्त्र इसकी मना नही फरमाता, इसलिये प्रतिक्रमण कियेबाद रातकों जिनमंदिरमें देव दर्शनको जाना कोइ मना नही. सौचो! इसमे पाप क्या है? पापके कामकी मना है, धर्मके कामकी मना नही होती. अगर कोइ इस मजमूनको पेश करे पौषध या सामायिकमें वेठे हो उस वख्त कोइ श्रावक अपने पिताकों पिता कहकर बोलावे या नही? (जवाब) पौषध या सामायिकमें दुनियादारिके संबंधको छोडकर वेठे है, उस वख्त अपने सगे संबधीकों और दुसरोंकों समान गिनना चाहिये, और बोलते वख्तभी आप यह चीज लीजिये या दीजिये! ऐसा कहना, मगर पिता या चाचा वगेरा संसारी संबंध उच्चारण करके नही बोलना चाहिये.-

३४ मर्दोंकी सभामे जैन साधवीजीको व्याख्यान धर्मशास्त्रका वांचना हुकम नही. औरतोंकी सभामे वाचना हुकम है, तीर्थंकर मल्लिनाथजी स्त्री थे. उनकी सभामें स्त्रीये आगे वेठती थी, शास्त्रोंमे नवरस आयगें, उसमें शिंगाररसभी अयगा. मर्दोंके सामने उसका वाचना यथातथ्य बनेगा नही. अगर उस रसकों छोडदेवे तोभी ठीक नही. जैनसाधवीजी बहुत वर्सकीभी दीक्षित हो, और जैनमुनि एकदिनकाभी दीक्षित क्यौं न हो? तोभी वो छोटासाधु अपनेसें

दीक्षामें वडी साधवीजीको वंदन नही करेगा, वल्कि! वो वडी साधवीजी उस छोटे साधुजीकों वंदन करेगी. ऐसा जैनशास्त्रका हुकम है, पुरुषका पुन्य वडा औरतका पुन्य छोटा है, श्रावक लोगभी जैन साधवीजीकों तीन दफे जमीनपर सीर झुकाकर खोभ वंदन न करे, किंतु! खडेखडे सीर झुकाकर स्फेटा वंदन करे, आजकलके श्रावकोंकों चाहे यह वात नापसंद हो या किसी जैनसाधवीजीकों यह वात नागवार गुजरे उसकी कोइ परवाह नही. जो कुछ धर्मशास्त्र फरमावे उसको साफसाफ कहदेना अछा है, जैनशास्त्रोंका फरमान है, छद्मस्थसाधु ( यानी ) जिसको केवलज्ञान नही हुवा हो, ऐसा साधु केवलज्ञान पाइहुइ साधवीजीको वंदन न करे, और केवलज्ञान पाइहुइ साधवीजी छद्मस्थ साधुकों वंदन न करे, मगर जिसजिस साधवीजीकों केवलज्ञान नही हुवा है ऐसी चाहे कितनीही वडी क्यौं नहो, छोटेसे छोटे साधुजीकोंभी वंदना करे, समजनेवाले समज सकते हैं, इस फरमानसें क्या सावीत हुवा?

३५ जो लोग पृथवीकों गेंदकी तरह गोल मानते हैं, उनका फरमाना है, पृथवीरूपी गोला सूर्यके आसपास फिरता है. जव सूर्य मध्यमें आजाय दुनियाके आधे भागमें उजाला और आधे भागमें अंधेरा होजाता है, मगर जैनशास्त्र फरमाते है, पृथवी स्थालीके आकार सपाट और गोल है, सूर्य फिरता है पृथवी नही फिरती. जव भारतवर्षके मध्यखंडमे ठीक दिनके वारावजे तव पूरव और पश्चिमके खंडोंमें पाच साढेपांच घंटोंका फर्क होसकता है, ज्यादा नही. क्योंकि सूर्य अनुक्रमसें पूरवसें पश्चिमकों वढता है, लोकप्रकाशग्रंथमें वयान है,—

यावत्क्षेत्रं स्वकिरणैश्चरन्नुद्योतयेद्रविः
दिवसस्तावति क्षेत्रे परतो रजनी भवेत् १

इसका मतलव यह हुवा, सूर्य अपने किरणोंसें जितनी जमीनपर प्रकाशकरता है, उतनी जमीनमें दिवस और जितनी जमीनको

अपने प्रकाशसे रहित करता है, उतनी जमीनमें रात्री जानना, जैसे बंबइ शहरमें दिनके बारांबजे उस वख्त इग्लांडके लंडन शहरमें सवेरके सातबजकर आठमिनिट होसकती है, और जब लडन शहरमे दिनके बारांबजे तब बंबइमे शामके चार बजकर बावन मिनिट होसकती है, इसीतरह पूरब पश्चिम सब शहरमे और सब मुल्कमे इतना फर्क समजलो, मगर बारांघंटोंका फर्क किसीजगह नही होसकता. जैसे भरतखंडके छहो खंडोंमे किसी शहरमे दिनके बारां बजे हो, और दुसरे शहरमे रातके बारां बजे ऐसा नही होसकता. चार पांच घंटोका फर्क होसकता है, जैसा कि–उपर बतलाया गया, सूर्यका प्रकाश प्रतिपरमाणुं आगे बढता है. और पीछाडी प्रतिपरमाणुं घटताजाता है, मेरेपास इस वख्त तमामसुल्क और बडेबडे शहरोंका सूर्योदयचक्र मौजूद है, मुताबिक उसके यहां मजकुर बयान लिखागया है, जैनमजहबमें पृथवीको स्थिर मानी गइ है, अगर पृथवीकों फिरतीहुइ माने तो एक गांवसे दुसरा गांव जिस दिशामें है, बदल जाना चाहिये, और बदलता नही. इसलिये सबुत हुवा पृथवी स्थिर है, बारीशके दिनोंमे दो घंटेतक एकजगह बारीश होतीरही. और उधर दो घंटेमें जमीन फिरती हुइ आगेकों चलीगइ बतलाना चाहिये एक गांवका तालाव पानीसे कैसे भरसकेगा. जहां बारीश हुइ वो जगह तो फिरनेवालोंके मतसें आगे चलीगइ, एक वृक्षके मालेसें एक परींदा आसानमें उडा. और वो समजो एक घंटेतक आसानमेही फिरता रहा. इधर पृथवीके शाथ लगा हुवा वृक्ष आगेको चलागया, सबब कि–पृथवीकों फिरती माननेवालोंके मतसे पृथिवी हर वख्त फिरती रहती है, बतलाइये! फिर वो उडता हुवा परींदा अपने मालेकों कैसे पासकेगा, पृथवीके फिरनेका वेग पक्षीके उडनेके वेगसे ज्यादा है, चाद सूर्य स्थिर है पृथवी फिरती है, ऐसा माननेवालोकोंभी बतलाना होगा, अमावास्याके रौज चाद सूर्य एकराशिपुर और पौर्णमाके रौज एक दुसरेके सामने क्यों कर

आजाते है? एकराशिपर अनेक ग्रहोंका मिलना और जुदे होजाना जो नजरके सामने दिखाइ देरहा है, वो क्योंकर साबीत होगा?

३६ सुदेव सुगुरु और सुधर्मपर एतकात रखना इसका नाम जैनमजहबमें सम्यग्दर्शन है, भैरव भोपा शितला वगेराको मानना पूजना मिथ्या प्रचार है, मरेहुवेके पीछें गमकरना रोना शोकसंताप करना मिथ्या है. मरेहुवे शख्श पीछे आते नही, फिर नाहक! शोकसंताप क्यौं करना? देव गुरु धर्मके काममें तीर्थयात्रामे और व्याख्यान धर्मशास्त्र सुनने जानेमें शौंक रखना नही. जैसे मरुदेवी माताके इंतकाल होनेपर भरतराजाने शौंक नही किया. और तुर्त तीर्थंकर रिषभ देव महाराजके समवसरणमें जाकर धर्म सुना. शौंक उठा दिया, उसीदिनसें उठमणेकी रसमजारी हुइ, इसीतरह हरेक शख्शको लाजिम है, शौंककों जल्दी उठादेवे. किसी औरतका खाविंद इंतकाल होजाय तो बारहदिन अशौच पालकर तीर्थयात्रा जाय, देवदर्शनकों जावे, धर्म गुरुके पास जाकर व्याख्यान सुने, वर्सदिनतक घरके कोंनेमें बेठर हनेकी रसम थोडे रौजसे चली है, धर्मशास्त्र नही फरमाते इसतरह घरमें बेठीरहे. विधवा औरत अपने ललाटमें लालकंकु वगेराका तिलक न करे. और नाकमें नथ न पहने, दुनियाको कहना हमारे घर शौंक है. और घरमें दूध सकर मिठाइ वगेरा खाना. आजकल बहुधालोग ऐसा शौंक पालते है. स्वधर्मी वात्सल्यके जीमनमें और परभावना लेनेदेनेमे शौंक नही रखना चाहिये, धर्मचुस्त मनुष्य शोकसंतापकों कभी पसंद नही करते, दुनिया चाहे सो बोले उसकी परवाह न रखकर धर्म करते है,—

[ अनुष्टुपवृत्तम्— ]

औमिति कुर्युः श्रेष्ठा अश्रुपातं च मध्यमाः
अधमाश्च शिरोघातं शोके धर्मं विवेकिनः १
नष्टं मृतमतिक्रांतं नानुशोचंति पंडिताः
पंडितानां च मूर्खाणां विशेषोयं यतः स्मृतः २

(माइना) अछे शख्श शोकके वख्त सिर्फ! ओकारमात्र शब्द बोलकर शोकको जाहिर करते है. मध्यमबुद्धि शख्श रोकर और अधमबुद्धि शख्श शिरपर घातकरके शोककों दिखलाते है, मगर उत्तमबुद्धि विवेकी शख्श शोकके वख्त धर्मको ज्यादा तरक्की देते है. जो चीज अपने हाथसे चलीगइ, जो मनुष्य मरगये और जो वख्त चला गया उसका शौचफिक्र करना क्या फायदा? बेशक! शौचफिक्र आता रहेगा. मगर उसकों हठानेकी कोशीश करना यही पंडित शख्शोंका काम है, बस! पंडित और मूर्ख शख्शोमे यही तफावत समजो, हरवख्त खयाल करना इस जीवको नरदेह पाना दुसवार था, सो मीला. मगर उसकी कदर नही किइ, आर्यदेशमे जन्म पाचो इन्द्रिय सपूर्ण और लबी उम्र पाना दुसवार था वे चीजेभी मीली, मगर दुनयवीकारोबारमे पडकर उसकीभी कदर नही करसके.

२७ पेस्तरके जैनमुनि गांवके बहार वनखंडमें या उद्यानमे रहाकरते थे, आजकल वैसी ताकात नही रही, इसलिये गावमे और शहरमे रहते है, पेस्तरके जैनमुनि दिवसके तीसरे प्रहर भिक्षाको जातेथे, दिनमें नींद नही लेतेथे, उत्सर्गमार्गकी अपेक्षा विहारके वख्तभी जैनमुनिको किसी श्रावक या नोकर चाकरकी सहायता लेना मना है, मगर आजकल अपवादमार्गकी अपेक्षा नोकर चाकरोंकी सहायता लेते है. उत्तराध्ययनसूत्रके छठे अध्ययनकी टीकामे लिखा है,--

सनथ्थसंजमं संजमाओ अप्पाणमेव रखिज्जा.
मुचति अतिवायाओ पुणोविमोही तयाविरई. १

जैनमुनिको अवल सयमकी हिफाजत करना फर्ज है. और संयमसेभी अपने आत्माकी हिफाजत करना ज्यादा फर्ज है. आत्माकी हिफाजत किइ जायगी तो संयमभी हासिल होसकेगा.

और विशुद्धिभी मीलसकेगी. अगर आत्माही न रहेगा तो धर्मध्यान कैसे होसकेगा? शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनं,-

[ बीच बयान तकदीर और तद्‌बीर - ]

३८ जैनमजहबमें जिसको कर्म कहा है, उसीको कइलोग भाग्य नसीब तकदीर होनहार विधि विधाता कृतांत और पुन्य कहते है. बात एकही है, उद्यमवादी कहते है, विना उद्यमकिये कर्मकी क्या मालुम होसगी? इधर कर्मवादी कहते है, उद्यम करो हजार भाग्य बिन मीले न कोडी,

[ उद्यम-वादी. ]

उद्यमेन हि सिध्यंति कार्याणि न मनोरथैः
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशंति मुखे मृगाः १
आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः
नास्त्युद्यमसमो बंधुः कृत्वायं नावसीदति. २
उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः
दैवं प्रधानमिति कापुरुषा वदंति,
दैवं विहाय कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः. ३

उद्यमवादी बयान करता है, उद्यम करनेसें सब काम फतेह होते है, सिर्फ! दिलमें इरादे करते रहना क्या फायदा? देखो! केशरी सिंह जंगलमें सोता रहे, और शिकारकेलिये न फिरे तो क्या! मृग जानवर खुद आनकर उसके मुहमें गिरेगें? कभी नही! इसीलिये कहाजाता है, उद्यम करना ठीक है, सुस्त होकर बेठरहना अछा नही, उद्यमकी बराबर कोइ दोस्त नही, ब-दौलत जिसकी सब तकलीफें रफा होसकती है, उद्यम करनेवालेको दौलत मीलती है, कर्मको बडे माननेवाले खुद नामर्द है, इसलिये कर्मका सहारा छोडकर उद्यम करना चाहिये, उद्यमकरतेहुवेभी काम फतेह न हो तो उसमें क्या दोष?

[ कर्म-वादी. ]

सुखस्य दुःखस्य न कोपि दाता परो ददातीति कुबुद्धिरेषा,
अहं करोमीति वृथाभिमानः स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः १

दैवे विमुखतां याते न कोप्यस्ति सहायवान्,
पिता माता तथा भार्या भ्राता वाथ सहोदरः २

वने जने शत्रुजलाग्निमध्ये महार्णवे पर्वतमस्तके वा,
सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा रक्षंति पुण्यानि पुराकृतानि ३
धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे भार्या गृहद्वारि जनः श्मशाने,
देहश्चितायां परलोकमार्गे कर्मानुगो गच्छति जीव एकः ४

अचिंतितानि दुःखानि यथैवायाति देहिनां,
सुखान्यपि तथा मन्ये दैवमत्रातिरिच्यते. ५

अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति,
तस्मान्न शोचामि न विस्मयो मे यदस्मदीयं नहि तत्परेषां ६
माधाव माधाव विनैव दैवं नो धावनं साधनमस्ति लक्ष्म्याः
चेद्धावनं साधनमस्ति लक्ष्म्याः श्वाधावमानोपि लभेत लक्ष्मीं
यः सुंदरस्तद्वनिता कुरूपा या सुंदरी सा पतिरूपहीना,
यत्रोभयं तत्र दरिद्रता च विधेर्विचित्राणि विचेष्टितानि ८
विधौ विरुद्धे न पयः पयोनिधौ सुधौघसिंधौ न सुधा सुधाकरे
न वांछितं सिध्यति कल्पपादपे न हेमहेमप्रभवे गिरावपि ९

भीमं वनं भवति तस्य पुरं प्रधानं
सर्वो जनः सुजनतामुपयाति तस्य,
कृत्स्ना च भूर्भवति सन्निधिरत्नपूर्णा
यस्यास्ति पूर्वसुकृतं विपुलं नरस्य १०

जातः सूर्यकुले पिता दशरथः क्षोणीभुजामग्रणीः
सीता सत्यपरायणा प्रणयिनी-यस्यानुजो लक्ष्मणः
दोर्दंडेन समो न चास्ति भुवने प्रत्यक्षविष्णुः स्वयं,
रामो येन विडंबितोपि विधिना चान्ये जने का कथा ११

नीचैर्गोत्रावतारश्चरमजिनपतेर्मल्लिनाथेबलात्व-
मांध्यं श्रीब्रह्मदत्ते भरतनृपजयः सर्वनाशश्च कृष्णे,
निर्वाणं नारदेऽपि प्रशमपरिणतिः स्याच्चिलातिसुते वा,
त्रैलोक्याश्चर्यहेतुर्जयति विजयिनी कर्मनिर्माणशक्तिः १२

भग्नाशस्य करंडपीडिततनोर्म्लानेंद्रियस्य क्षुधा,
कृत्वाखुर्विवरं स्वयं निपतितो नक्तं मुखे भोगिनः
तृप्तस्तत्पिशितेन सत्वरमसौ तेनैव यातः पथा,
लोकाः पश्यतु दैवमेव हि नृणां वृद्धौ क्षये कारणं १३

कांतं वक्ति कपोतिकाकुलतया नाथांतकालोधुना,
व्याधोधो धृतचापसज्जितशरः श्येनः परिभ्राम्यति,
इत्थं सत्यहिना सदष्ट इषुणा श्येनोपि तेनाहतः
तूर्णं तौ तु यमालयं प्रतिगतौ दैवी विचित्रा गतिः १४

छित्वा पाशमपास्य कूटरचनां भंक्त्वा बलाद् वागुरां,
पर्यताग्निशिखाकलापजटिलान् निर्गत्य दूरं वनात्,
व्याधानां शरगोचरादपि जवादुत्प्लुत्य धावन्मृगः,
कूपांतः पतितः करोतु विधुरे किंवा विधौ पौरुषं १५

३९ जीवकों आराम और तकलीफ देनेवाले अपने अपने पूर्वसंचित कर्म है, फलाना काम मेने किया यह कहना वृथा है, तुम क्या करोगें पूर्वसंचित कर्म अछे थे वो काम बनगया, १–अगर तकदीर फीरी हुइ हो–तो–कोइ मददगार नही होता, चाहे माता पिता भ्राता दोस्त या अपनी औरत कोइ हो तकदीर फीरनेसें सब फीर-जाते है, इसमें कोइ शक नही, २, गांवमें या जंगलमें दुश्मनोके सामने जलमें वलतीहुइ आगमें या पहाडके शिखरपर चाहे जहा हो, इस जीवकों अपनी तकदीरही बचाती है, दुसरा कोइ बचानेवाला नही, सोतेहुवे बेठेहुवे या गर्दीशमें पडेहुवेको बचानेवाले अपने अपने पूर्वसंचित कर्म है, ३, जमीनमे दौलत गडी है, मगर तुमारी तकदीरमें नही है, तो हर्गिज! नही मिलेगी, घरमें हाथी घोडे धरे

रहेगें जब मरना नजीक आयगा, औरतभी शाथ नही चलेगी, जिस शरीरकों खास ! अपना समजते हो, वोभी यहांही रहेगा, आत्मा अकेलाही परलोक जायगा, सिर्फ ! अपने कियेहुवे भलेबुरे कर्म शाथ चलेगें ४, जैसें अचानक तकलीफ आनपडती है, वैसे अचानक आराम चैनभी आजाता है, दर असल ! ये सब तकदीर-हीके खेल है, ५, जिस शख्शकी कोइ हिफाजत करनेवाला नही, चाहे जंगलमे क्यों न पडाहो, अगर उसकी उम्र लंबी हो, उसका कोइ कुछ नही कर सकता, और बीमारीसे फतेह पाकर शहरमे चला आता है, राजासाहब जैसे अमीरआदमी महेलोंमें बेठे हुवेभी अगर तकदीर फीरी हुइहो तो तकलीफ पाते है, दवा-कार नही करती और मरजाते है, उस वक्त उद्यम कोइ काम नही आता, इसलिये किसी चीजका सोंचफिक्र करना कोइ जरुरत नही, जो चीज अपनी तकदीरमे मीलनेवाली है, वो मीली रहेगी, ६, दौलतके लिये चाहे जितना दोडो मगर बगेर तकदीरके नही मीलती, ऐसे तो श्वान एक घरसें दुसरे घर दोडा फिरता है, मगर इससे क्या हुवा ? दुनियामे सब चीजे मौजूद है, मगर विनाभाग्यके मीलती नही, ७, जिसका मर्द खुबसुरत उसकी औरत खुबसुरत नही, जिसकी औरत खुबसुरत उसका मर्द खुब-सुरत नही, अगर औरत मर्द दोनों कमालहुस्न और मुबारक चहेरेवाले है, तो आपसमें बनाव नही, लडकेका सुख नही या कोइ ऐसेभी है, जिनको खाना पीना हजम नही होता, हमेशा वैद्य और डाक्तरोंकी तलाश करते रहते है, ये सब तकदीरके खेल देखो ! ८, तकदीर फीरीहुइ हो तो जहां पानीके लिये जाओ पानी नही मीले. अमृतकी जगह अमृत न मीले, जब युगलीक मनुष्योंकी तकदीर कमजोर आइ कल्पवृक्ष फलदेनेसे बंदहोगये अगर तकदीर उल्टी हो तो सोनेकी खान समजकर सोना लेनेजा-ओ, वहांसे पथर मीले, समजमको तो समजलो ! तकदीर क्या

चीजहै ? ९, भाग्य अछेहो तो भयंकर वनभी उसके लिये शहरकी तरह फायदेमंद होजाय, दुश्मन दोस्त होजाय जिस जमीनपर लात मारो वहांसें दौलत मीले, मगर शर्त यह है अगर तकदीरका सितारा जिसका बुलंद हो, १०, रामचंद्रजी जैसे सूर्यवंशीराजे जिनके वालीद दशरथ राजा बडे नसीवेदार जिनकी महारानी शीता लक्ष्मणजी जैसे बहादूर और जमामर्द जिनके भाई, लंका युद्धमें जिनोने फतेह पाइ, मगर तकदीरके खेल देखो उनकोंभी वनवास जानापडा, ऐसे भाग्यवानोकोभी कर्मने नही छोडे तो दुसरोकी कौन चलाइ, ११, तीर्थंकर महावीरस्वामीकों नीचगोत्रमें जन्म लेना पडा, तीर्थंकर मल्लिनाथजीके जीवने पूर्वभवमें माया-कपट किया तो स्त्रीपना प्राप्त हुवा, ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्तीजीकों पीछली उम्रमें अंधा होना पडा, भरतचक्रवर्त्ती एक बाहुबलीजीके शिवाय दुसरोके सामने हमेशां फतेहपातेरहे, और कृष्णजीकी द्वारिका जलगइ, अकलमंदोकों खयाल करना चाहिये तकदीर कितनी कौवतवाली है, जिसके सामने किसीका जोर नही चलता, सौचो! नारदजी जैसे कुतुहलीकाभी निर्वाण हुवा, चिलातीपुत्र इतना हिंसक था मगर उपशम विवेक संवर ये तीनपद सुनकर रास्तेपर आगया, दरअसल! ये सब तकदीरके खेल है, १२, एक लकडेके करडियेमें किसीकों मालुम नही उस हालतमें सर्प आनकर बेठा, उस करडियेके मालिकको मालुम नही और कपडे अंदर रखकर उसपर ताला लगादिया तीनदिन होगये मगर उस करडियेकों खोलनेका काम नही पडा. चौथेरौज एक उंदरेने आनकर उस कर-डियेको कतरा, और एक सुराख बनाया, जब सुराखके रास्ते उंदर उस करडियेमें घुसने लगा, सर्प उसकों पकडकर खागया, देखिये! उद्यम करनेवाले उंदरका क्या हाल हुवा? और उद्यम नही करनेवाले सांपको विना उद्यम घरबेठे खाना मिला, और कर-डियेमेसें बहार निकल आनेका रास्ताभी मीला, देखलो! तकदी-

रकी तोफगी जिसके सामने तदवीरका कोइ जोर नही चलता, १३, एक द्रख्तपर एक कबूतर और एक कबुतरी बेठे थे, उसवख्त एक शिकारी वहां आया, और तीरकमान चढाकर कबूतर कबूतरीको मारनेकी तयारीमें खडा है, उपरसे एक सिकरा आनकर कबूतर कबूतरीकों मारनेपर आमादा हुवा, इतनेमें बनाव ऐसा बना कि उसद्रख्तके नीचेसे एक साप निकल आया, और शिकारीके पांवमे काटा, शिकारी गिरा, और तीर अचानक छुटा, वो जाकर उपरके सिकरेको लगा, और वो मरगया, देखिये! तकदीरके खेल जिनको मरनेका संभव था वे बचगये, और जिनकों मरनेका संभव नही था वे मरगये, समजसको तो समज लो तकदीरके लिखेको कौन मेट सक्ता है? १४, एक गृहस्थके घर एक हिरनपाला था, और वो हमेशां एक खुटेके शाथ बधा रहता था, एकरोज उसने अपने दिलमें सोचा! इसतरह कहातक बंधेरहेगें, जोरसे रसा तोडकर भगा, गांवके बहार आया, वहांसेभी भगा, रास्तेमें शिकारी मीले उनके फंदेसेंभी बचा, और कुदता हुवा अगाडी चला, अखीरमे उसरोज उसकी तकदीरमे मरना लिखा था, आगे भागते भागते एक जंगलमें एक कुवा आया, उस कुवेकों कठहरा नही था, हिरन भागता हुवा बेखबर उस कुवेमें जागिरा और ऐसी चोट आइ जिससे कुवेमेंही मरगया, देखिये! वो हिरन किस इरादेसे घरसें भगा था, और कैसाहाल रास्तेमें हुवा? आदमी चाहे जितने इरादे बांधे, मगर होगा वही जो तकदीरमें लिखा है, चाहे उद्यमवादी इस बातको माने या न माने, उद्यम बेंकार जाता है, तकदीर बेंकार नही जाती, चाहे कोइ उद्यम करे या न करे, जो चीज जिसकी तकदीरमें लिखी है, विना उद्यम किये आनमिलेगी, उसकों उद्यम करना नही पडेगा और दुसरा कोइ लाकर उसकों देगा.—

४० तकदीरकी पुख्तगीपर एक मिशाल है, जब द्वारिका नगरीका दाह होनेवाला था.—तो उसको कोइ रोक न सका, तीर्थंकर

नेमिनाथ महाराजने फरमाया था, मेरे केवलज्ञानमें दिखाइ देता है, नवमे वासुदेवका मरना जराकुमारके हाथसें होगा, इस बातकों सुनकर जराकुमार द्वारिका छोडके जंगलमें रहनेगया, मगर होन-हार चाहे जितने उपाव करो मिटता नही, जब द्वारिका नगरी जलगइ, कर्मवशात् नवमे वासुदेवका वहां जाना हुवा और जरा-कुमारके बाणसेंही उनका मरना हुवा, देखिये! पूर्वकृत कर्मके उदयके आगे किसीका जोर नही चलता और जो कुछ होनेवाला हो वो होकरही रहेता है, कोइ उसको रोंक नही सकता.-

एक शख्शने एक औरतसें मीलनेकेलिये दिनमें कोशीश किइ, दोंनोंने बातचित करके मुकररकिया, आजरातकों नववजे फलां मकानमें आपन दोंनों मिलना, औरत उस टाइमपर उस मकानपर जा बेठी, मर्द रातके आठवजे उस मुकरर कियेहुवे मकानमे औरतको मीलनेकेलिये अपनेघरसें चला, जब आधेरास्ते गया तो अचानक ऐसा बनाव बनगया एक मकानकी दिवार उसपर गिरी, और वो शख्श वहांही दबकर मरगया, देखलो! तकदीरके खेल, रचना क्या रखीथी और बनाव क्या बनगया? इसीलिये कहाजाता है, तकदीर बडीचीज है, निकाचित बंधेहुवे कर्म उद्यमसेभी नही टुट सकते, तीर्थंकर देवोंकोंभी निकाचित कर्म उदय आनेपर भोगने पडे तो दुसरोंकी कौन गिनती? केवलज्ञानी खुद जानते है, जीव बचाना धर्म है, मगर होनहार और ज्ञानिदृष्ट भावके आगे कि-सीका जोर नही चलता.-

(दोहा.)

को सुख को दुखदेत है, देत कर्म झकझोर,
उझंत सुझंत आपही, धजा पवनके जोर. १
परालब्ध पहेले बनी पिछे बना शरीर,
तोभी यह आश्चर्य है मनुष्य न धारे धीर. २

उदयराज उद्यम किया, भाग्यविना फलनांय
उंदर कुर्कट करंडकों, पडा सर्प मुख मांय. ३
शक्ति मरोडे जीवकी, उदय बडो बलवान्
क्रोड उपावकरे कोइ, फलेकृत कर्म निदान. ४

४१ धर्मशास्त्रका फरमान है, सब जीव अपने अपने पूर्वकृत-कर्मके उदयके अनुसार सुखदुख पाते है, इसलिये कर्म बलवान है, अगर उद्यम बलवान होता तो सब जीव उद्यम करते है, सब लख-पति क्रोडपति क्यों नही बनसकते? हरशख्श मरतेवख्त बचनेका उद्यम करता है, तरहतरहकी दवा खाता है, मगर कोइ शख्श मौतसे बचता नही, दुनियामें सब जीव सुखी नही, वैसे सब दुखी नही, थोडे सुखी थोडे दुखी सब जगहपर है, इसीसे कहागया अपने पूर्वकृतकर्म बलवान है, और वो पूर्वकृतकर्मभी उससे पहलेके कर्मके अनुसार उदयमे आनकर फलदेते है, जो निकाचितकर्म इस जीवके शाथ बंधे हुवे है, वे विनाभोगे छुट सकते नही, शुभा-शुभ कर्म भोगते वख्त खुशी या नाराजी न लाकर समभावसे सहन करे तो आइंदे नये कर्म न बंधे, आत्माका और कर्मका अनेक-कर्मकी अपेक्षा अनादि और एक कर्मकी अपेक्षा सादी संबंध है, दुनियामें तरहतरहकी चीजे मौजूद है, मगर विनाभाग्यके अप-नेको वो मीलती नही.

[ दोहा. ]

जातमात्र जल वाहिया, कर्णकस निजमाय
फुन ते शुभकर्मोदये, हुवा बडेरा राय. १
दुर्जन रुठा शुं करे, जेहना पुन्य अंकूर
मयंगल जहां संचरे, त्यां त्यां वाघेनूर २

(माइना.) कर्ण और कंसकी माताने अपने बेटोंको जन्मतेही पानीमे बहादिये थे, मगर वे अपने शुभकर्मके उदयसें बडेबडे राजे कहलाये, जिनके पुन्य बडे है, दुश्मन लोग उनपर नाराज रहे

तोभी क्या हुवा? हाथी जहांजहां जायगा वहांवहां उसकी कद्र होगी, क्योंकि उसकी ब-निस्बत दुसरे जानवरोके तकदीर बडी है.-

[ अनुष्टुप्-वृत्तम् ]

अवश्यंभाविभावानां प्रतीकारो भवेद्यदि
तदा वनं न गछेयुः नलरामयुधिष्ठिराः ?

अगर अवश्यभावी पदार्थका कोइ फेरफार करनेवाला होता तो नलराजा रामचंद्रजी और पांच पांडव वनवासको क्यौं जाते? एक शख्श हल खेडता है, और सलतनत पानेकी कोइ कोशीश नही करता, मगर उसकी तकदीरसे उसकों सलतनत मिलती है, फर्ज करो! किसी शख्शने कोइ चीज खरीद किइ चंदरौजमें उस चीजके भाव वढगये, और उस चीजके वेंचनेसें उसकों फायदा हुवा, किसी शख्शने कोइचीज खरीदी, मगर तकदीरके फेरसें उसचीजके भाव फौरन घटगये, फर्जकरो! नुकशानके लिये तो उसने सोदा नही किया था, मगर तकदीरके फेरसें नुकशान हुवा, दुनियामें कोइ शख्श अपनेकों तकलीफ होना नही चाहता, मगर अचानक तकलीफ आनपडती है, कहिये! इसकी क्या वजह है? इसकी यही वजह है, उसकी वुरी तकदीर पेंश थी, एक शख्शने दुश्मनपर मुकदमा पेशकिया, दुश्मनकी तकदीर बुलंद थी, इसलिये उसकी फतेह हुइ और मुकदमा पेश करनेवाला खुद हारा, हारनेवालेने अगली कोर्टमे अपील किइ अपीलमेंभी वो हारा, देखिये! दोनों वख्त तदवीर खालीगइ, और तकदीरवालेकी फतेह हुइ-

[ तकदीरकी तेजीपर एक मिशाल. ]

४२ दो शख्श एक वादशाहके दरबारमें नोकरीकेलिये गये, एक कहता था, तकदीर वडी, दुसरा कहता था तदवीर वडी, वादशाहने कहा, अछा! तुमारे दोनोंका इम्तिहान लेकर नोकरीकी जगह दुंगा, आजकी रात तुम दोनों एक कोठरीमें वंदरहो, गरज! वादशाहने दोनोंकों रातके वख्त एक कोठरीमें वंद रखे, आधीरात

हुइ, तदवीरको वडी कहनेवाला बोला, देख! में तदवीर करता हुं, और इसकोठरीके तमाम आलोंमें हाथ फेरता हुं, अगर कोइचीज मीलगइ तो अछा है, तकदीरको वडी माननेवाला बोला! में कुछ कहता नही, तेरी मरजीमे आवे तुं कर! बादशाहने इनके इम्तिहानके दो लाडु एकमें सोनामहोर रखीहुइ और एक खाली था, अवलसें एक आलेमे रखवादिये थे, मकानमे बिल्कुल अंधेरा था, चिराकतकभी नही रखा था, तदवीर वडीचीज कहनेवालेने अधेरेमे उठकर इधरउधर हाथ फेरा, तो एक आलेमेसे दो लाडु मीले, उनको लेकर तकदीर-वालेके पास आया, और कहने लगा, देख! मेने तदवीर किइ तो मुजे दो लाडु मीले, ले! तुजे एक देताहुं और एक मे खाताहुं, ऐसा कहकर एक उसकों दिया, एक आप खाया, तकदीरवालेके लाडुमें सोनामहोर निकली, तदवीरवालेके लाडुमें कुछ नही निकला, अखीरमें तदवीर वडी माननेवाला बोला, तदवीर कैसी वडीचीज है, अगर तकदीरके भरुसे बेठेरहते तो लाडु कहांसे मिलते! जवा-बमें तकदीर वडी माननेवाला बोला मेने कोनसी तदवीर किइ थी, जो मुजे सोनामहोर मीली, इस बातकों सुनकर तदवीरवाला चुप होगया, और अपने दिलमें कहनेलगा, बेशक! तकदीर वडीचीज है, सबेर हुइ जब बादशाहने दोनोंको अपने दरबारमे बुलवाये, तलाश किइ तो तकदीर वडी कहनेवाला तेजरहा, बादशाहने खुद फरमाया, देखो! तकदीर कितनी वडीचीज है, ब-दौलत जिसकी वगेर तदवीर किये सोनामहोर मीली, और तदवीर करनेवाला खाली रहा, सरे दरबार तकदीरकी तारीफ हुइ.–

४३ काल स्वभाव नियति उद्यम और कर्म ये पांच बाते हर कार्यमें सामील है; मगर पूर्वकृतकर्म सबसे वडे है. पहलेकी चार चीजे मीले तोभी क्या हुवा? जबतक पूर्वसंचित कर्म अछे नही हो तो सब मीली हुइ चीजे किसीकामकी नही, और अगर पूर्वसंचित-कर्म अछे है तो सबचीजे खुद-ब-खुद आनमीलती है;–

चंद्रस्वर और उसमेंभी जलतत्व चलना अछा फरमाया, दीक्षाका वेश चेलेके हाथमें देतेवख्त और वासक्षेप करतेवख्त गुरुका चंद्रस्वर चलना अछा, जिनप्रतिमाकों वेठातेवख्त और वासक्षेप करतेवख्तभी गुरुका चंद्रस्वर चलना अछा है,

[ दायभाग मुताविक अर्हन्नीतिके कायदेसें. ]

४७ जो शख्श इंतकाल हुवा उसकी दौलतपर किसका हक है? सुनो!

( दायभाग अर्हन्नीतिः- )

पत्नी पुत्रश्च भ्रातृव्याः-सपिंडश्च दुहित्रजः
बंधुजो गोत्रजश्च स्व-स्वामी स्यादुत्तरोत्तरं. १
तदभावे च ज्ञातीया-स्तदभावे महीभुजः
तद्धनं सफलं कार्य-धर्ममार्गे प्रदाय च. २

(माईना.) खाविदके इंतकाल होनेके वाद उसकी कुलजायदादकी मालकीन उसकी औरत है, औरतकी हयातीमें वेटेका कोइ हक नही, औरतके मरनेके वाद वेटेका हक है, जिसशख्शके औरत या वेटा दोनों नही है, उसकी जायदादके मालिक भतीजे है, भतीजेके न होनेपर सातमी पीढीतकका भाई है, उसके न होनेपर वेटीका वेटा मालिक है, और [illegible] तो
पीढीतकका भाई मालिक है, उसके [illegible]
मालिक है, गोत्रजके लोग न हो तो [illegible]
ज्ञातिवाले न हो तो [illegible] उस [illegible]
मरनेके वाद विधवा [illegible]
ताल्लुकमें रखे, [illegible]
खर्च करसके. [illegible] हो [illegible]
मिल्कतका दान [illegible]
तके. सबब [illegible]
चाहे करसकती है, [illegible]

चाहिये. अगर औरतका हक मेटकर लडका हकदार बने तो औरतकों निहायत तकलीफ होगी, इधर खाविद इंतकाल होगये, लडकेने धनमाल अपने कबजेमें लेकर उसकी हकुमत छीनलिइ, बतलाइये! यह कौन इन्साफ हुवा, अगर कोइ शख्श बीनऔलाद मरनेके वख्त अपनेघरका बंदोबस्त करना चाहे और वशीहत नामा लिखे तो उसके नाम लिखसकता है, जो अपनी औरतके हुक्मकी तामील करनेवाला हो, खाविदके मरनेके बाद अगर वशीहत नामावाला शख्श बदनियत होजाय तो विधवा औरत उस वशीहत नामेको खारीज करसकती है, और दुसरा वशीहतनामा लिखसकती है, धर्मकाम या ज्ञाति व्यवहारके लिये खाविदकी मीलकत गीरवी रखसकती है, और वेचभी सकती है, मातापिताको अपने आत्मज पुत्रपरभी इख्तियार है अगर खिलाफ हुक्मके चले या धर्मभ्रष्ट होजाय तो घरसे निकालदेवे, इसीतरह दत्तक पुत्रभी खिलाफ हुक्मके चले तो उसकोभी निकाल सकते है, चाहे उसका विवाहभी करदियाहो, और कुछ इख्तियार घरका देदियाहो तोभी कुछ परवाह नही, मातापिताको इख्तियार है निकालदेवे, मातापिताकी मौजूदगीमें आत्मज पुत्रभी कोइजायदादको गिरवी या विक्री नही करसकता, क्यौं कि-उसवख्त उसका हक नही है.

४८ जिस शख्शकी औरत बदचलन होजाय या अपने हुक्मसे खिलाफ चले, तो खाविद उसको अपने-घरसे निकालदेवे, बदचलन औरतके लिये रोटीकपडेकाभी दावा नही, कोइशख्श विनावेटे मरगया और उसकी औरतने कोइवेटा गोदलिया-वो कवाराही मरगया तो दुसरा वेटा अपने नाम ले सकती है, उस मरेहुवे वेटेके नाम नही ले सकती, सासुकी मौजूदगीमें मरेहुवे वेटेकी वहुको कुलागत द्रव्यमें शिवाय रोटीकपडेके दुसरा हक नही, वेटा गोदलेना वगेरा कुछकाम सासुके फरमाने मुताबिक करना होगा, सबब उसवख्त सासुका इख्तियार है, सासु जब इतकाल होजाय

बहुका इख्तियार चलसकता है, पहले नही, मातापिताके मरने
बाद बेटे अपने अपने हिस्से अलग करना चाहे तो सबके हि
एकसरीखे होने चाहिये, अगर जीतेजीव पिताके हिस्सा चाहे
मुताबिक मरजी पिताकी होगा, अगर कोइ भाई कवारा हो अ
हिस्से करनेका मौका आजाय तो लाजिम है उसका विवाहकरके
उसके खर्चेका हिस्सा अलग रखकर बाकीकी दौलतके हिस्से बरा
बांटलेना, अगर कोइ बहेन कवारी हो तो उसके विवाह खर्चके लि
सबभाई अपने अपने हिस्सेसे चोथा हिस्सा निकालकर विवाह करदे
कोइभाई अपने पिताकी दौलत खर्च न करके नोकरीसे इल्मसे
फोजमें बहादूरी बतलाकर दोलत हासिलकरे उस दौलतमें दुस
भाइयोका हक नही पहुंच सकता, विवाहमे सुसरालसें जो कु
दौलत मीले. या दोस्तसे इनाम पावे, उसमेंभी भाईयोका हक न
हो सकता, अपने कुलका डुबाहुवा धन न पिता और न भाईनिकाल
संके बगेर किसी भाईकी मदद अपनी ताकतसे निकाललावे
उसमें किसी भाईका हक नही चलता, विवाहके वख्त या पी
जिस औरतकों मातापिताने गेहने कपडे गाव नगर या जमी
जहागीरी जो कुछदियाहो, उसकों कोइ पीछा नही ले सकत
उसपर सबहक उस औरतका है, चाचेने बडी बहेनने भूवा
मासीने भाईने सासु-सुसराने या उसके खाविंदने जो कुछ दियाह
सब उस औरतका है, शिवाय खाविंदके दुसरा कोइ मांगनह
सकता, खाविंदभी उस हालतमें मांग सकता है, अगर दुष्का
पडाहो, या मुसीबतका वख्तहो, शिवाय ऐसे सबबके हर्गिज! नह
मांगसकता, जो कुछ फरमान जैनमजहबका था, मुताबिक अर्हन्नी
तिके लिखागया, आम जैनोको मालुम रहे–

[ बयान-स्याद्वादन्याय. ]

४९ जैनलोग फरमाते है, एकही पदार्थमें दो विरोधी ध
अपेक्षा भिन्नसे रहसकते है, इसबातकों बगेर समजे जो लोग कह

देते है, स्याद्वादन्याय ठीक नही उनकी भूल है, स्याद्वादन्यायका किसीसे खंडन नही हो सकता, सबब कि–वो सचा है, व्यासजी शंकराचार्यजी या दयानंदसरस्वतीजी चाहे सो कहे, स्याद्वादन्यायकी कोइ हानि नही, जिस अपेक्षा वस्तु अस्तिरूप है, उसी अपेक्षा वो नास्तिरूप है, ऐसा जैनलोग कब कहते है, बल्कि! दुसरी वस्तुका इसमे असद्भाव बतलाकर नास्तिरूप कहते है, जैसे एक शख्श अपने बेटेकी अपेक्षा बाप है, तो अपने बापकी अपेक्षा बेटा है, देखिये! दो विरोधी धर्म अपेक्षाभिन्नसें एक शख्शमें रहगये या नही? ऐसेही गुरु और चेला स्वामी और सेवक जिसपर उतारना चाहो उतर सकते है, नैयायिकोंने पृथवीको दो तरहकी बयान किइ, परमाणुरूप पृथवी नित्य और कार्यरूप पृथवी अनित्य, देखिये! एकही पृथवीमे दो विरोधि धर्म अपेक्षाभिन्नसें रहसके या नही? एक द्रव्यमे सामान्य विशेष दो विरुद्ध धर्म अपेक्षाभिन्नसे रहते है, यहभी स्याद्वादन्यायकी साबीती देता है, वेदांती लोग आत्माकों व्यवहारसें बद्ध और परमार्थसे अबद्ध मानते है, कहिये! एक आत्मामें बद्ध और अबद्ध ये दो विरोधी धर्म अपेक्षाभेदसे रह सके या नही? स्याद्वादन्यायकों कोइ नामंजुर नही कर सकता,

१ स्यादस्ति, २ स्यान्नास्ति, ३ स्यादस्ति नास्ति, ४ स्यादवक्तव्यः, ५ स्यादस्ति अवक्तव्यः ६ स्यान्नास्ति अवक्तव्यः ७ स्यादस्ति नास्ति अवक्तव्यः–

( शार्दूलविक्रीडितं. )

या प्रश्नाद् विधिपर्युदासभिदया बाद्श्रुता सप्तधा,<br>
धर्मं धर्ममपेक्ष्य वाक्यरचना नैकात्मके वस्तुनि.<br>
निर्दोषा निरदेशि देव भवता सा सप्तभंगी यया.<br>
जल्पन् जल्परणांगणे विजयते वादी विपक्षं क्षणात् १

तत्रच स्यात् कथंचित् स्वद्रव्यक्षेत्रकालभावरूपेणास्त्यैव सर्वं घटादिद्रव्यं, न पुनः परद्रव्यक्षेत्रकालभावरूपेण तथाहि, घटो द्रव्यतः

पार्थिवत्वरूपेणास्ति,-नास्ति जलादिरुपेण,, क्षेत्रतः पाटलीपुत्रकत्वेन अस्ति,-नास्ति कान्यकुब्जकत्वेन, कालतः शैशिरत्वेन अस्ति,-नास्ति वासंतिकत्वेन भावतो रक्तत्वेन अस्ति,-नास्ति पीतत्वेन, एवं सर्वमन्यदपि ज्ञातव्यं स्वद्रव्यादिचतुष्टयापेक्षया कथंचिदस्ति, परद्रव्यादिचतुष्टयापेक्षया नास्ति च घट इत्युल्लेखः-अन्यथा इतररूपापत्त्या स्वरूपहानिप्रसंग इति अवधारणं चात्र भंगेनाभिमतार्थव्यावृत्त्यर्थमुपात्तं, अन्यथा अनभिहिततुल्यतैवास्य वाक्यस्य प्रसज्येत्, प्रतिनियतस्वार्थानभिधानात् ( तदुक्तं ).

वाक्येऽवधारणं तावत् अनिष्टार्थनिवृत्तये,
कर्तव्यमन्यथानुक्तसमत्वात् तस्य कुत्रचित्-१

तथाप्यस्त्येव कुंभ इति एतावन्मात्रोपादाने कुंभाद्यस्तित्वेनापि सर्वप्रकारेणास्तित्वप्राप्तेः प्रतिनियतस्वरूपानुपपत्तिः स्यात् तत्प्रतिपत्तये स्यादिति शब्दः प्रयुज्यते, स्यात् कथंचित् स्वद्रव्यादिभिरेवायमस्ति न परद्रव्यादिभिरपीत्यर्थः-यत्रापि चासौ न प्रयुज्यते तत्रापि व्यवच्छेदफलैवकारवत् बुद्धिमद्भिः प्रतीयते एव,-

( अनुष्टुप् वृत्तम्. )

सोऽप्रयुक्तोऽपि वा तज्ज्ञैः सर्वथा तत्प्रतीयते,
यथैवकारो योगादिव्यवच्छेदप्रयोजनः १

तत एवकारस्यात्कारयोः सप्तस्वपि भंगेषु ग्रहणं कर्तव्यं इति प्रथमो भंगः अथ द्वितीयो भंगःप्रदर्श्यते-स्यान्नास्त्येव घटादि द्रव्यं स्वद्रव्यादिभिरिव परद्रव्यादिभिरपि वस्तुनो सत्वानिष्टौ हि प्रतिनियतस्वरूपाभावात् वस्तु प्रतिनियतिः-नस्यात् न चास्तित्वैकांतवादिभिः अत्र नास्तित्वमसिद्धमिति वक्तव्यं कथंचिद् वस्तुनि तस्य युक्तिसिद्धत्वात्, नहि क्वचिदनित्यत्वादौ साध्ये सत्वादिसाधनस्यास्तित्वं विपक्षे नास्तित्वमंतरेणोपपन्नं तस्य साधनत्वाभावप्रसंगात् तस्माद्वस्तुनोस्तित्वं नास्तित्वेनाविभूतं नास्तित्वंच तेनेति विवक्षावशात् चानयोः प्रधानोपसर्जनभावः एवमुत्तरभंगेष्वपि ज्ञेयं,-

यह बयान भगवतीसूत्रवृत्ति नयप्रदीप और स्याद्वादमंजरी ग्रंथके आधारसें यहां लिखागया है, जो शख्श पुरा तार्किक होगा इस न्यायकों समजेगा, जिसने न्यायके ग्रंथ नही पढे वो इसकों हर्गिज! नही समज सकेगा,–

( अनुष्टुप् वृत्तम्. )

अनादिनिधने द्रव्ये स्वपर्यायाः प्रतिक्षणं,
उन्मज्जंति निमज्जंति जलकल्लोलवज्जले, १

हरेक द्रव्यमे क्षणक्षणप्रति-पर्याय उत्पन्न होते है, और नाशभी होते रहते है, जैसे जलमे कल्लोल पैदा होकर उसीमे समाजाते है, जैनशास्त्रोमें १ नैगम, २ संग्रह, ३ व्यवहार, ४ रिजुसूत्र, ५ शब्द, ६ समभिरूढ, और ७ एवंभूत, ये सात नय कही. १ नाम, २ स्थापना, ३ द्रव्य, और ४ भाव ये चार निक्षेपे बयान किये, एक पदार्थमें जुदी जुदी अपेक्षासें नित्यत्व अनित्यत्व वगेरा विरुद्ध धर्मभी रहसकते है, यह स्याद्वादन्यायका फरमान है, इस फरमानकों बगेर समजे अगर कोइ कहे जैनोका स्याद्वादन्याय ठीक नही, तो उसकी कोइ परवाह नही, मगर इन्साफसें कोइ नही कहसकता स्याद्वादन्याय गलत है, हर अकलमंद कुबुल रखते है, अपेक्षा भिन्नसें दो विरोधी धर्म एकपदार्थमे रहसकत है, कहिये! इससे ज्यादा फिर और क्या साबीती होगी.–

इमां समक्षं प्रतिपक्षिसाक्षिणा-
मुदारघोषामवघोषणां ब्रुवे,
न वीतरागादपरोऽस्ति दैवतं,
न चाप्यनेकांतमृते नयस्थितिः १–

जैनाचार्य हेमचंद्रसूरी अपनी द्वात्रिंशिकामे बयान करते है. मे प्रतिपक्षी शख्शोके सामने घंटानादसे कहताहुं, दुनियामे वीतरागसमान कोइ देव नही. और स्याद्वादन्यायसमान कोइ न्याय नही जो निहायत सचा है, जिसकों कोइ अकलमंद गलत नही कहसकता,

पार्थिवत्वरूपेणास्ति, नास्ति जलादिरुपेण, क्षेत्रतः पाटलीपुत्रकत्वेन अस्ति,—नास्ति कान्यकुब्जकत्वेन, कालतः शैशिरत्वेन अस्ति,—नास्ति वासंतिकत्वेन भावतो रक्तत्वेन अस्ति,—नास्ति पीतत्वेन, एवं सर्वमन्यदपि ज्ञातव्यं स्वद्रव्यादिचतुष्टयापेक्षया कथंचिदस्ति, परद्रव्यादिचतुष्टयापेक्षया नास्ति च घट इत्युल्लेखः—अन्यथा इतररूपापत्त्या स्वरूपहानिप्रसंग इति अवधारणं चात्र भंगेनाभिमतार्थव्यावृत्त्यर्थमुपात्तं, अन्यथा अनभिहिततुल्यतैवास्य वाक्यस्य प्रसज्येत्, प्रतिनियतस्वार्थानभिधानात् ( तदुक्तं ).

वाक्येऽवधारणं तावत् अनिष्टार्थनिवृत्तये,
कर्तव्यमन्यथानुक्तसमत्वात् तस्य कुत्रचित्—१

तथाप्यस्त्येव कुंभ इति एतावन्मात्रोपादाने कुंभाद्यस्तित्वेनापि सर्वप्रकारेणास्तित्वप्राप्तेः प्रतिनियतस्वरूपानुपपत्तिः स्यात् तत्प्रतिपत्तये स्यादिति शब्दः प्रयुज्यते, स्यात् कथंचित् स्वद्रव्यादिभिरेवायमस्ति न परद्रव्यादिभिरपीत्यर्थः-यत्रापि चासौ न प्रयुज्यते तत्रापि व्यवच्छेदफलैवकारवत् बुद्धिमद्भिः प्रतीयते एव,—

( अनुष्टुप् वृत्तम्. )

सोप्रयुक्तोऽपि वा तज्ज्ञैः सर्वथा तत्प्रतीयते,
यथैवकारो योगादिव्यवच्छेदप्रयोजनः १

तत एवकारस्यात्कारयोः सप्तस्वपि भंगेषु ग्रहणं कर्तव्यं इति प्रथमो भंगः अथ द्वितीयो भंगःप्रदर्श्यते-स्यान्नास्त्येव घटादि द्रव्यं स्वद्रव्यादिभिरिव परद्रव्यादिभिरपि वस्तुनो सत्वानिष्टौ हि प्रतिनियतस्वरूपाभावात् वस्तु प्रतिनियतिः-नस्यात् न चास्तित्वेकांतवादिभिः अत्र नास्तित्वमसिद्धमिति वक्तव्यं कथंचिद् वस्तुनि तस्य युक्तिसिद्धत्वात्, नहि क्वचिदनित्यत्वादौ साध्ये सत्वादिसाधनस्यास्तित्वं विपक्षे नास्तित्वमंतरेणोपपन्नं तस्य साधनत्वाभावप्रसंगात् तस्माद्वस्तुनोस्तित्वं नास्तित्वेनाविभूतं नास्तित्वंच तेनेति विवक्षावशात् चानयोः प्रधानोपसर्जनभावः एवमुत्तरभंगेष्वपि ज्ञेयं,—

यह बयान भगवतीसूत्रवृत्ति नयप्रदीप और स्याद्वादमंजरी ग्रंथके आधारसें यहां लिखागया है, जो शख्श पुरा तार्किक होगा इस न्यायकों समजेगा, जिसने न्यायके ग्रंथ नही पढे वो इसकों हर्गिज! नही समज सकेगा,–

( अनुष्टुप् वृत्तम्. )

अनादिनिधने द्रव्ये स्वपर्यायाः प्रतिक्षणं,
उन्मज्जंति निमज्जंति जलकल्लोलवज्जले, १

हरेक द्रव्यमे क्षणक्षणप्रति-पर्याय उत्पन्न होते है, और नाशभी होते रहते है, जैसे जलमे कल्लोल पैदा होकर उसीमें समाजाते है, जैनशास्त्रोमे १ नैगम, २ संग्रह, ३ व्यवहार, ४ रिजुसूत्र, ५ शब्द, ६ समभिरूढ, और ७ एवंभूत, ये सात नय कही. १ नाम, २ स्थापना, ३ द्रव्य, और ४ भाव ये चार निक्षेपे बयान किये, एक पदार्थमें जुदी जुदी अपेक्षासें नित्यत्व अनित्यत्व वगेरा विरुद्ध धर्मभी रहसकते है, यह स्याद्वादन्यायका फरमान है, इस फरमानकों बगेर समजे अगर कोइ कहे जैनोंका स्याद्वादन्याय ठीक नही, तो उसकी कोइ परवाह नही, मगर इन्साफसें कोइ नही कहसकता स्याद्वादन्याय गलत है, हर अकलमंद कुबुल रखते है, अपेक्षा भिन्नसें दो विरोधी धर्म एकपदार्थमे रहसकते है, कहिये! इससे ज्यादा फिर और क्या सानीती होगी.–

इमां समक्षं प्रतिपक्षिसाक्षिणा-
मुदारघोषामवघोषणां ब्रुवे,
न वीतरागादपरोऽस्ति दैवतं,
न चाप्यनेकांतमृते नयस्थितिः १–

जैनाचार्य हेमचंद्रसूरी अपनी द्वात्रिंशिकामे बयान करते है. मै प्रतिपक्षी शख्शोके सामने घटानादसे कहताहुं, दुनियामे वीतरागसमान कोइ देव नही. और स्याद्वादन्यायसमान कोइ न्याय नही जो निहायत सचा है, जिसकों कोइ अकलमद गलत नही कहसकता,

१ [ तालीम धर्मशास्त्र, ]

इसमे तरहतरहके दोहे श्लोक और धर्मशास्त्रकी दलिले दर्ज है, दुनियाको समुंदरकी ओपमा–धर्मशास्त्रके पढेहुवे गीतार्थ जैनमुनि धर्मकों तरकी देनेवाले है, कमअकल किसकों कहना? और इंगित आकारकों देखकर दुसरेके दिलका इम्तिहान कैसे करना? वगेरा अकलकी बातें मिलेगी,–

( दोहा. )

जीवदया गुण वेलडी रोपीरिषभजीनंद,
श्रावक कुलमंडप चढी सींची भरत नरींद, १
धर्मकरत संसारसुख धर्मकरत निर्वाण,
धर्मपंथ साधन विना नरतिर्यच समान. २
श्रावकको कुल पायके लियो न प्रभुकों नाम,
जैसे कुवा जलविना खुद्या तो कौन ही काम, ३
समकीती जीवकोढी भलो जाके देह न चांम,
विनाभक्ति भगवानके कंचन देह निकाम, ४
समकीतवंता प्राणिया करे कुडुंब प्रतिपाल,
अंतर्घट न्यारा रहे धावखिलावत बाल, ५
जैसे ज्वरके जोरसें भोजनकी रुचिजाय,
वैसे कुकर्मके उदय जिनवाणी न सुहाय, ६
सर्पडसा तब जानिये नींब प्यारसें खाय,
कर्मडसा तब जानिये जिनवानी न सोहाय. ७
धर्मकरता धन बढे धन बढ मन बढ जाय,
मन बढतां मनसा बढे बढत बढत बढजाय, ८
धर्म घटंता धनघटे धनघट मनघट जाय,
मनघटतां मनसा घटे घटत घटत घट जाय. ९
कर्मकरता सोहिला भोगवतां दुख होय,
जैसा बांध्या जीवने वैसा भुगते सोय. १०

पान खरता इम कहे सुन तरुवर वनराय,
अवके विछडे कवमीले दूर पडेगें जाय, ११
तरुवर उत्तर इमकहे सुनो पात एक वात,
यह घर याहीरीत है, एक आवत एकजात, १२
धनदे तनको राखिये तनदे राखिये लाज,
तनदे धनदे लाजदे एक धर्मके काज, १३
भिक्षा दे रथकारजी वहोरे श्रीमुनिराय,
भावना भावे हिरणलो घडी पहुंची आय, १४
डुंटी शाख तरुवर तणी चंपाणा ते तीन,
स्वर्ग पाचमें जइ वस्या सुरसुखमें लयलीन. १५
जिन भाषे भवीजन सुनो एहनो एह विचार,
दानशीलतपने विषे भावना मोटी सार, १६
जगमां मोटी भावना भावो हृदय मझार,
भावथकी भवनिधितरे पामे भवनो पार, १७
लूण विना जिमरस्मवती भोजनविन तंबोल,
दानविना कमला जिसी साचविना जिम बोल. १८
श्रीमरुदेवा स्वामिनी रिषभ देवनी मात.
भावनले भवजलतरी ये प्रगट अवदात, १९
श्रीभरतेश्वर भावना भावे केवल लिध,
तिमही अष्ट पटोधरा भावनाये थयासिद्ध. २०
पुत्र एलाची जोड ल्यो किण विधसार्या काज,
एम दृष्टांत अनेक छे प्रत्यक्षदिसे आज, २१
दूध जामन भावना कांजी क्षुद्रसमान,
मानना छे भवनाशिनी लाभ घणो विनदाम. २२
एकमन वैरी आपना दुजा कुसंतान,
तीजी.वेरण भूख हैं नितउठ करती हान, २३

चौथा वेरी कुटुंब है धंधेहीमें धाय,
पंचम वेरी धन कहा, आठो पहर सताय. २४
छठी वेरण नींद है भजने न दे जगदीश,
सप्तम वेरी काल है द्वार खडा निशदीश, २५
समज वडी संसारमें समजु टारे दोष
समज समज कर प्राणीया गया अनंता मोक्ष. २६
अपने अपने पंथकों पोषत सकल जहान,
वैसे ये मत पोषना मत समजो मतिमान, २७
सहस्रों डुंबकी में लही मोती न आयो हाथ.
सागरकों क्या दोष है हीन हमारे भाग्य. २८
चलना है रहना नही चलना विसवावीश,
थोडे जीवन कारणे कौन गुथावे शीश, २९
ज्ञानीको विसय नही परनिंदक संसार,
हस्ती तजे न चालनिज भुंकत श्वान हजार, ३०
मनलोभी मनलालची मनचंचल अरु चौर,
मनके मते न चालिये पलक पलक मन और. ३१
हमरे तो तुम एक हो तुमरे और अनेक.
हंसा सरोवर एक है सरोवर हंस अनेक, ३२
पुन्यथकी अणचिंतव्यां आवी मले सवीवात.
पुन्यविहूणाने होवे अणचिंतित उपघात, ३३
सम्यग् दर्शन अंक है और कृत्य सब शून्य,
अंक जतन करी राखीये सुन्न सुन्न दस गुन्न. ३४
पापछिपाये नाछीपे छिपे तो मोटाभाग,
दाबी दुबी ना रहे रुइ लपेटी आग, ३५
चलत कलम सुकत असर यही नेहका मूल,
नेह छांड नीलो रहे ताके मुखपर धूल, ३६

नशा न नरको चाहिये द्रव्य बुद्धि हरलेत,
एक नशेके कारणे सब जगतालीदेत. ३७
सज्जन समय न चुकीये कहत गुणीजनकुक,
चतुरनकों वरकत हिये समय चुककी हुक. ३८
चतराइकी बातमें बात बातमें बात,
ज्यूं केलेके पातमें पात पातमे पात. ३९
मुख श्रवण दृगनाशिका मनहीके एक ठोर,
कहवो सुनवो देखवो चतुरनको कछु ओर. ४०
राग समो पावक नही राग समो नही पाप,
राग समो शत्रु नही ये सम नही सताप. ४१

२ ज्ञानीयोने दुनियाको समुंदरकी ओपमा दिइ है, समुंदरमें जैसे अथाह पानी है, दुनियामे मोहनी कर्मरूप अथाह पानी है, समुंदरमें जैसे कीचड भरा है, दुनियामे कामभोगरूप कीचड भरा है, समुंदरमें जैसे पानीकी कलोले उठती है, दुनियादारोके दिलमे तृष्णारूप कलोले उठती है, समुंदरमें जैसे छोटे बडे मच्छ है, दुनियादारोंकों बेटा बेटी है,-समुंदरमे जैसे पहाड है,-दुनियादारोंकों आठ कर्मरूपी पहाड है, समुंदरमे जैसे मोती है,-दुनियामे तीर्थयात्रारूप मोती है, समुंदरमें जैसे टापु है,-दुनियामें श्रद्धारूप टापु है, समुदरको जैसे कनारा है,-दुनियादारोको मोक्षरूप कनारा है, जहा सपदा है,-वहां विपदा है, जहा आराम वहा तकलीफ-जहा खुशी वहा नाराजी-दोस्त कभी दुश्मन और दुश्मन कभी दोस्त बनजाते है, सुखदुखका चक्र हमेशा चलता रहेगा, पेस्तरके लोग जैसे ज्ञानवान थे, वैसे अब नही रहे, पहले जैसे धर्मपावद अब नही, पहले जैसे दौलतमद अब नही. पेस्तरके जैसे जमामर्द नही, पेस्तर जैसी उम्रे थी, अब-वैसी उम्र नही, देवगति मनुष्यगति तिर्यचगति और नरकगति, इन चारोगतिमें जीव फिरता है, मनुष्य जन्ममे आकर धर्मकरनेसे इस जीवकी मुक्ति होती है, कोइ जीव स्वर्गमे देवगति पावे तोभी

क्या हुवा? मनुष्यजन्ममें आकर धर्म करेगा जभी मुक्ति होगी, दरअसल! देवतेभी मनुष्यजन्मकी तारीफ करते है.

३ धर्मशास्त्रके पढेलिखे जैनमुनि धर्मकी हिफाजत करनेवाले है, विना गीतार्थ मुनिके अगीतार्थोंकों अकेले विहार करनेका हुकम नही, जैसे विना घाटके तालावका पानी नही रह सकता, विना गीतार्थके अगीतार्थका संयम नही रह सकता, जैसे गाडीमें वैल जुडे है, मगर विना चलानेवालेके वो गाडी न मालुम किस खाडेमें जागिरेगी, चाहे जितनी क्रिया करनेवाला कोइ क्यौ न हो? वगेर गीतार्थके यानी विना धर्मशास्त्र पढे उसकों असंयमी कहा, क्रिया अंधी और ज्ञान लोचन है, अंधेकों वही रास्तेपर लायगा, जो लोचन-वाला होगा, ज्ञानका दर्जा पहले है, क्रिया दोयम दर्जेपर है, क्रिया देशआराधक और ज्ञान सर्वआराधक कहा, अगीतार्थ पंचमहाव्रत-धारी क्रियापात्र जैनमुनि ज्ञानवान् मुनिसें कमदर्जेपर है, अगर कोइ गीतार्थ जैनमुनि क्रियामें कम प्रगति करतेहो तोभी अगीतार्थ पंचमहाव्रतधारी क्रियापात्र मुनिकों वे पूजनीक कहे, यानी गीतार्थ जैनमुनि वडे दर्जेपर है, हरशख्शकों धर्मपर खयाल करना चाहिये मेरा स्वरूप क्या है? में दुख क्यो भोगरहाहुं, मेरे जीवने कौनसे पापकर्म कियेथे, जिससे मेरे इरादे पुरे नही होते, धर्म क्या चीज है, पठन पाठन तप धैर्य क्षमा और त्याग मुजसे क्यौ नही वनसकते? इस जीवकों तरहतरहकी कल्पना रागसें पैदा होती है, रागसें आदमी दिवाना बनता है, एक गांवसे दुसरे गांवकों गयाहुवा शख्श रागरूप वंधनसे खीचाहुवा फिर वापिस चलाआता है, कामराग ऐसा दुसवार है जिसकों छोडना बहादूर शख्शोंका काम है, कामराग समान कोइ इस जीवका दुश्मन नही, जिसकों मुक्तिकी चाह है दुनियादारीके कामोंमें उसका मन कभी न लगेगा, दौलतमंद होतेहुवेभी उसमें ममता न रखेगा और दिलमें सोचेगा धर्मही मेरेसाथ चलेगा, दौलत यहां रहेगी, हरेक शख्शको लाजिम

है, पापके कामोसें वचना, कुडुंबपरिवार मतलबके शाथी है, जहांतक बने पांच इंद्रियोंकों काबुमे रखना. ज्यादा दौलत तकलीफकी निशानी है, ससार असार और धर्म सार है, धर्मकी वातमें दुनियादारीका पक्ष नही करना. धर्मकरनेवालेकों कोइ हसे तो उसकी परवाह नही, कमअकल लोग चाहे सो कहे अकलमंद लोग उसपर खयाल नही करते.–

४ जानवरोंकों वडीवडी मुसीबतें उठाना पडती है, अपना दुख वे किसीकों कह नही सकते, चाहे ठंडहो या गर्मी उनको तो सहनही करना पडती है, ठंडमें ऐसा नही कहसकते हमको ठंड लगती है, गर्मीमें गर्मी लगती है, ऐसा नही कहसकते, हमको खाना दो-या-प्यास लगी है, पानी दो ऐसाभी नही वोल सकते, कइजानवरोके नाकमे छेद कियेजाते है, कइयोके पाव बांध दिये जाते है, कइयोंकी पीठपर वोजा डालकर चलाते है, यह सब उनकी फुटी तकदीरकी निशानी है, उनोने पूर्वजन्ममे ऐसा पापकर्म क्यों किया? जिससे वे जानवर बने, जिनके घर हाथी घोडे गौ भेंस वेल तोता मेंना चिडिया या कबूतर हो तो उनकों चारीवारी देनेका ध्यान रखे, किसी जानवरकों पींजरेमें डालकर रखना उनकेलिये केदखाना है, ऐसे जानवरोको रखनाही क्यों जो शिवाय पींजरेके खुले न रहसकते हो, किसी जानवरको मारना कुटना बाधना या वहुत चलाना ठीक नही, जो शख्श नरकगति भोगकर मनुष्यलोगमें आया होगा वो ज्यादेतर बदशिकल होगा, वदन उसका शाम–हमेशां वीमार रहे, गुस्सा ज्यादा रातके वख्त अधेरेमे वहुत डरे, और उसके शरीरसे वदवू छुटती रहेगी, जो शख्श जानवरोंकी गति भोगकर मनुष्य हुवा हो उसकों भुख ज्यादा लगे, लोभलालच वहुत छलकपटमे पुरा धर्मपर एतकात नही, साधु लोगोकी वुराइ करे और व्रतनियमकों ढोंग समजे, जो शख्श मनुष्यगतिको भोगकर दुसरीवारभी मनुष्य हुवा हो वो साफ दिल हो, खुशमिजाज छलकपट रहित मीठी जबान

बोले, दिलका दलेर, और कामील इल्म हो, जो शख्श स्वर्गलोगसें आनकर मनुष्य हुवा हो, वो हमेशां सच बोले, हिम्मतबहादूर हो दौलतमंद हो, देवगुरुकी खिद्मत करनेवाला हो, खूबसुरत और कमालहुस्न हो, खुद इल्मदार और इल्मदारोंसें दोस्ती रखनेवाला हो.

५ जो शख्श दुसरेकों पानीमें डुबाकर मारदेवे वडा पापी है, कोइ किसीकों जलतीहुई आगमें धकेल देवे, गला घोटकर मारदेवे या तलवारसे कतलकर डाले वो वडा पापी होकर दोजककी सफर करेगा, लुलेलंगडेको सताना या अंधेकी हंसी मश्करी करना वडा पाप है, चोरी यारी आप करे और दुसरेपर तोहमत देवे, खुद, ब्रह्मचर्य न पालता हो और दुसरोके सामने कहे में ब्रह्मचारी हुं. वडा गुन्हा है, साधुओंकी घात करे, धर्मी शख्शोंकी निंदा बोले, धर्मशास्त्र बनानेवाले वडे ठग थे, जिनोने आकाशपातालकी बाते लिख डाली, नरक स्वर्ग कौन देख आया, ऐसा कहनेवाला धर्मसे दूर है, देवमंदिरोको तोडडाले, धर्मशास्त्र जला देवे और धर्मशाला वगेरा धर्मके मकानोकों गिरा देवे वो शख्श वडा पापी है, मंत्रशास्त्र जाने नही, और दुसरोंकों कहे मे मंत्रवादी हुं, देवता अपने पास न आताहो और कहे मेरे पास देवता आता है, यह वडा जूठहुवा, ऐसा जूठ बोलनेवाला अगले जन्ममें धर्म कभी नही पायगा, जिसने दुसरोकों धर्मके काम करते रोके हो, वो अगले जन्ममे रोटीयोसेभी मोहताज होगा, जिसने पूर्वभवमे तप किया हो, जीवोंपर रहेम किइ हो, वो इस जन्ममें दौलतमंद और खूबसूरत होगा, जिसने पूर्वभवमे दान दिया नही, और इस भवमें खानपानका सुख चाहे तो कहांसे मिले? जो शख्श अछी बात कहनेवालोंपरभी गुस्सा करे उसके जैसा कोइ कमअकल नही, जिसकों पहिचानते नही उसका जामीनदार बनना कोइ जरुरत नही, जहां दोशख्श बाते कररहे है, वहा विनाबुलाये जावे वो कमअकल है, लोग मेरी तारीफ करेंगे इस इरादेसे पुन्य करे

वोभी कमअकल है, सभाका काम खतम हुवा नही और बीच-मेंसे उठकर चलेजाना कमअकलोका काम है,-

६ अवाज चले नहीं, और सभामें बेठकर गाना शुरु करे उसकी हांसी होगी, अपने मुखसें अपनी तारीफ बोलना कोइ जरुरत नही, दोस्तके शाथ नर्द दगाकी खेले उसके जैसा कोइ कमअकल नही. शरीर तंदुरस्त बना है, फिर दवाखाना क्या जरुरत? बेटोंकों दौलत देकर सुखकी चाहना रखे वो कमअकल, खाना खाते वख्त लडाइ लडे वो कमअकल, और कीमियागिरीके फंदेमे पडकर दौलत लुटावे वोभी कमअकल है, अगर तुमारी तकदीरमे दौलत नही तो चाहे जितना सट्टा करो, लोटरीकी टीकीट लो घोडेकी रेसमें शर्त लगाओ मगर कुछ नही मिलेगा, चाहे जितनी कोइ तदवीर करे मगर तकदीरके लिखेको कोइ मेंट नही सकता, अगर तुमारी तकदीरमे दौलत मीलना लिखा है तो दुसरा शख्श आनकर कहेगा हमने व्यापार किया था उसमे तुमारा हिस्सा रखा था, उस हिस्सेमे इतने रुपये आये है, लेलो,-

७ मातापिताकों गाली बोलना कमअकलोंका काम है. विना मतलब दुसरेके घरजाना क्या जरुरत? तेरना आता नही और गहेरे पानीमे कुदना मरनेकी निशानी है, खौफकी जगह अकेले जाना मुनासिब नही. हांसी खुशीमे गुस्सा करना कमअकलोंका काम है, पुन्य करनेसे स्वर्ग और पाप करनेसे नरकगति मिलती है, आदमी आज महेलमे है, न मालुम कल कहां होगा? दौलत विद्याकी दासी है, इसका घमंड करना कमअकलोका काम है, जिसवख्त जिस राजे महाराजोकी अमलदारी हो उनकी विद्या जरुर पढना चाहिये, जीव परभवसे जीतनी उम्र बांधलाया होगा उतनी ही भोगेगा. हरशख्शकों थोडासा पसीना आजाय उतनी महेनत जरुर उठाना चाहिये, गार्दीतकीयेके नोकर बनेरहना ठीक नही. बरताव ऐसा रखो जो हमेशा एकसरीखा चलसके, हरहमेश मिठा-

महाव्रतिसहस्रेषु वरमेको हि तात्विकः
तत्तात्विकसमं पात्रं न भूतं न भविष्यति. ३
साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः
तीर्थं फलति कालेन सद्यः साधुसमागमः ४
अन्नं पानं च वस्त्रं च आलयः शयनाशनं.
सुश्रूषा वंदनं तुष्टिः पुण्यं नवविधं स्मृतं. ५
पंचैतानि पवित्राणि सर्वेषां धर्मचारिणां,
अहिंसा सत्यमस्तेयं त्यागो मैथुनवर्जनं. ६

१ अपनी तारीफ और दुसरोंके अवर्णवाद बोलनेवाले दुनियामें बहुत है, मगर अपना अवर्णवाद और दुसरोंकी तारीफ करनेवाले थोडे निकलेगें. १ हजार मिथ्यादृष्टि शख्शोसे एक अणुव्रतधारी शख्श अछा, हजार अणुव्रतधारीयोसें एक महाव्रतधारी अछा, हजार महाव्रतीयोसें एक तत्वज्ञानी अछा, दुनियामें तत्वज्ञानी-समान कोइपात्र नही, २-३ साधुवोके दर्शनसे पुन्य होता है, साधु एक तरहके जंगम तीर्थ है, स्थावरतीर्थ कालांतरसें फल देता है, साधु महाराजका समागम तुर्त फलदायक होता है, ४ अनुकं-पासें किसीकों अन्न देना, पानी पिलाना, वस्त्र देना, ठहरनेके लिये मकान देना, सोनेके लिये बिस्तर देना अनुकंपासें किसीको खाना खिलाना, गुरुकी वैयावच करना, वंदन नमन करना और उनकों संतोष पहुंचाना इन नव सबबोसे जीवको पुन्य मिलता है, और पुन्यसें आइंदे सुख होगा, ५ अहिंसाव्रत त्यागव्रत और मैथुनविर-मणव्रत ये पांचपवित्र व्रत सब मतवालोने मंजुर रखे है.-

शतेषु जायते शूरः सहस्रेषु च पंडितः
लक्षेषु जायते दाता वक्ता कोटिषु दुर्लभः १
शकटं पंचहस्तेन दशहस्तेन वाजिनं.
हस्तिनं शतहस्तेन देशत्यागेन दुर्जनं २

आकारैरिंगितैर्गत्या चेष्टया भाषणेन च,
नेत्रवक्रविकारैश्च गृह्यतेंतर्गतं मनः ३
यस्य कार्यं न कर्त्तव्यं तस्य देयं किमुत्तरं,
अद्य सायं पुनः प्रातः सायंप्रातः पुनः पुनः ४
मौनं कालविलंवश्च प्रयाणं भूमिदर्शनं,
भ्रूकुट्यन्यमुखी वार्ता नकारः पड्विधः स्मृतः ५

सेकडो आदमीयोमे शूरवीरआदमी एक निकलेगा, हजार आदमीयोंमे पंडित पुरुष एक लाखोमे दातार एक और करोडोमें वक्ता एक निकलेगा, १. हरेक शख्शको मुनासिब है, इक्का-बगीसें पाच हाथ दुर चले न मालुम किस वख्त कोइ आफत आजाय, घोडेसे दशहाथ दूर, हाथीसे सोहाथ और दुर्जनसे दूरही दुर होकर चलना चाहिये २. दूसरे शख्शका मन अपनेपर कैसा है, या वे इस वख्त खुशीमें है, या नाराजीमे, इसका इम्तिहान करना हो तो इस तरह करो, पहले उनके चहेरेपर इंगित आकार देखो. खुशीका चेहरा जुदा होता है. नाराजीका जुदा, उनकी चेष्टादेखकर चालदेखकर और उनकी बोली सुनकर अदाज करलो, उनका मुख चढा हुवा है, या खुशमिजाज है. उनकी आखे गुस्सेमें भरी है, या शांत है, इतनी बाते देखकर अनुमान करलो ३. जिसका काम न करना हो तो चतर आदमी मुखसे नांकार नही बोलते, मगर सवेर शाम आजकल परसु ऐसा कहकर वख्त निकालदेते है ४. कोइ शख्श किसी कामकेलिये आया और उसका काम न करनाहो तो चतर आदमी उस वख्त चुपहोजाते है, थोडी देर उसकेलिये विलंब करते है, विना सबब चलनेकी तयारी करने लगते है, नजर नीचीकर लेते है, या नजर फेरकर दुसरी दुसरी बाते बनाना शुरु करते है. असलमें यह सब नाकारकेही भेद है ५.

वैद्या वदंति कफपित्तमरुद्विकारं
ज्योतिर्विदो ग्रहगतिं परिवर्त्तयंति,

भूताभिभूतमिति भूतविदो वदंति
प्राचीनकर्म वलवन्मुनयो वदंति, १

ज्ञानस्य ज्ञानिनां चैव निंदाप्रद्वेषमत्सरैः,
उपघातैश्च विघ्नैश्च ज्ञानघ्नं कर्म वध्यते, २

आचारः कुलमाख्याति देशमाख्याति भाषणं,
संभ्रमः स्नेहमाख्याति वपुराख्याति भोजनं. ३

१० वैद्यलोग वीमारकी नाडीदेखकर वात पित्त कफका विकार वतलाते हैं. नजुमीलोग शुभाशुभ ग्रहोंकी चाल देखकर सुखदुखका होना वयान करते हैं, मंत्रवादी भूतपिशाचका उपद्रव वतलाते हैं. मगर ज्ञानीमुनि इनसववातोंका सार पूर्वकृत कर्मका फलही वयान करते हैं १. ज्ञानकी या ज्ञानीकी वेंअदवी करना, उनपर द्वेष मत्सर लाना, उनके अवर्णवाद वोलना, ज्ञानका या ज्ञानीका उपघात करना, और तरहतरहके विघ्न डालना, ये सव ज्ञानावरणी कर्म वांधनेके सवव हैं २. आदमीका आचार विचार देखकर उसके कुलका अनुमान किया जाता है, उनकी वोली सुनकर उनके मुल्कका अनुमान किया जाता है, जिसके घर आपन गये और उनकों खुवखुशी हासिल हुइ, हजार काम छोडकर अपनी खिदमतमें हाजिर रहे तो जानना इनका स्नेह ज्यादा है, जिसके शरीरपर नूर तेज और रोशनी ज्यादा है, तो जानना चाहिये इनकों खानपानका सुख है.—

सुखार्थं सर्वभूतानां मताः सर्वाः प्रवृत्तयः,
सुखं नास्ति विना धर्मं तस्माद्धर्मपरो भव १

दुनियामें सव प्रवृत्ति सुखकेलियेही किइजाती है, मगर विनाधर्मके इस जीवको सुख नही, इसलिये धर्मपर पावंद होना जरूरी है. यह शरीर मीटीका पुतला न मालुम किसरोज गिरजायगा. चाहे गरीव हो या अमीर सवकों मरना है, जैसे दुश्मनसें डरतेहो पापसे

डरते रहो, क्या ही उमदा बातहो ? सब अपने मतलबके, गरजी है, विनामतलबके कोइ किसीके पास नही जाता,-

( दोहा )

**अपनी अपनी गरजकों लर्जत हैं सब ठोर**
**विना गरज लर्जत नही जंगलकाभी मोर. १.**

११ रागद्वेषरूपी दुश्मनोसे फतेहपाये उसका नाम जिन और उनके फरमायेहुवे मजहबको जैनमजहब बोलते है. साधु साधवी श्रावक ओर श्राविका इन चारतरहके समाजकों कायम करे उनका नाम तीर्थंकर है. जैनमजहबमें ऐसे चौइस तीर्थंकर इस कालचक्रमे हुवे. और इसीतरह हरकालचक्रमें होते रहेंगें, अनंते कालचक्र दुनियामे होते रहे और आगेकों होयगे, इसीलिये जैनमजहबवाले दुनियाको अनादि अनंत मानते है, जमाने हालमे यहा भरतक्षेत्रमें कोइ तीर्थंकर मौजूद नही. महाविदेहक्षेत्रमें वीश विहरमान तीर्थंकर मौजूद है, तीर्थकरोको ईश्वरतरीके माननेका सबब यह है उनसे मनुष्योंको ज्ञानमिलनेका फायदा हुवा है,-

१२ सब मजहबवाले अपने अपने धर्मप्रवर्तकोकों ईश्वरतरीके मानते है, मगर वो ईश्वर राग द्वेष काम क्रोध मोह लोभ वगेरा षड रिपुओंसे फतेह पानेवाले और केवल ज्ञानवान होने चाहिये. अगर वैसे न हो तो वे सिर्फ ! नाममात्र ईश्वर है, पेस्तरके जमानेमे वडी तकदीरवाले और ज्ञानी मनुष्य होतेथे, इसलिये उनको ज्यादेतर कंठाग्र ज्ञान रहताथा, शास्त्रलिखनेकी जरूरत नहींथी. मगर जब वैसे आलादर्जेके ज्ञानी रहेनही, शास्त्रलिखनेकी जरुरत हुइ. आज ऐसे कमजोर अकलवाले होगये है, बहुतदीनकी बात यादभी नही रख सकते,-

१३ धर्मकी तालीम देनेवाले सत्यवक्ता वेपरवाह और धर्मपर कामील एतकात होने चाहिये. धर्मशास्त्रकी सत्यबात कहनेमें किसीकी परवाह न रखे, किसीकों सत्यबात नागवार गुजरे तो

घरबेठे, धर्म जोराजोरीसे नही होता. सत्यवक्ता उपदेशक शिवाय देव गुरु धर्मके किसीकी परवाह नही रखते. सुननेवालोको असर हो या न हो उनके कर्माधीनकी बात है, तीर्थकरदेवोंका उपदेशभी किसीकिसीकों असर नही करता था, कोइ शख्श समाजमें या जात विरादरीमें बडा कहलाता हो और उसको धर्मपर श्रद्धा नही तो क्या हुवा? वो उस बातको चाहे न माने, इससे धर्मगुरुओंकों कुछ परवाह नही, धर्ममें बडा वो है, जो खुद! धर्मको समजे और उसपर श्रद्धा लावे, हां! अगर किसी बातपर शक हो तो गुरुलो-गोंसे पुछे और समजे, धर्मकी तालीम देनेवाले गुरु मुताबिक धर्मशास्त्रके सच कहे.–

१४ मातापिताको हमेशां शुभहके वख्त मुजरा करना और उनके फरमानपर अमल करना बेटेका फर्ज है, औरतके स्नेहमें पडकर मातापिताके हुक्मकी अदुली करना ठीक नही, मुसाफरीकों जाना तो मातापिताको मुजरा करके जाना, और जब घर आना तोभी मुजरा करना, मातापिताका बेटेपर बडा आसान है, चक्रवर्त्ती वासुदेव प्रतिवासुदेव और छत्रपति वगेरा बडेबडे राजे महाराजेभी मातापिताकी इज्जत करतेथे, तो तुम उनके सामने कोन गिनतीमें हो? अधर्मी शख्शोकी सोबत नही करना इससे अपने धर्ममें खलल पहुंचेगा, सत्यधर्मपर एतकात रखना हरेकका फर्ज है, जिसकों धर्मपर एतकात नही उसकों धर्मकी बाते समजाना दुसवार है, कमएतकातवालोने धर्मको नही माना तो क्या हुवा? जिनप्रति-मापर फुल चढानेवालोका इरादा धर्मका है, इसलिये उनकों पाप नही, जिनप्रतिमाके सामने फल चढाना या इरादे धर्मके गीतगान और नृत्यकरनाभी पाप नही.–

१५ जैनमुनिको लोभ लालच करना हुकम नही, खानेकों रोटी पहननेको कपडे और ठहरनेकेलिये मकान मिलजाय तो और क्या चाहिये, हरजगह धर्मशाला वगेरा ठहरनेके मकान बनेहुवे है,

उनमें ठहरजाओ, जो जो शख्श धर्म सुननेको आवे धर्मसुनाओ,वाचने पढनेकेलिये धर्मपुस्तक हरजगह मिलते है, वांचते रहो, आप धर्म करना और दुसरोको धर्मका रास्ता बतलाना मुनिजनोका फर्ज है, पेस्तरके जमाने जैसी धर्मक्रिया आजकल रही नही, पेस्तरके जैनमुनि उद्यानमे बागबगीचोमें और बनखंडमें रहतेथे, आजकल वैसी ताकात नही रहनेसे गांव नगरमें रहते है, पेस्तर नवकल्पी विहार करतेथे, आजकल ज्ञानपढनेके इरादेसे या दूसरे धार्मिक कामके लिये नवकल्पी विहार नही करके एक जगह ज्यादे अर्सेतकभी रहते है, पेस्तरके जमानेमें जैनमुनि दिवसके तीसरे प्रहरमें भिक्षालेने जाते थे आजकल पहले दुसरे प्रहरमे जाते है, पेस्तरके जमानेमे दिनमे एक दफे आहार खाते थे, आजकल दिनमे दो दफे खाते है, पेस्तरके जमानेमे जैनमुनि अपने विहारमे श्रावक श्राविका नोकर चाकर शाथचले ऐसी मदद नही लेतेथे, लुखा सुका आहार लेतेथे, दिनमे सोते नही थे, विना गुणहासिल किये आचार्य उपाध्याय वगेरा पदवी नही लेतेथे, अमुक श्रावक हमारेगछ समुदायका है, वैसा पक्ष नही करते थे, और चाहे गरीब हो या अमीर सबको एकसरखी धर्मतालीम देते थे, श्रावक लोगोकी धर्मक्रियापर खयालकरो तो पेस्तरके श्रावक धर्मपर कामील एतकात थे, श्रावकके (२१) गुण और (१२) व्रत उमदातौरसे पालते थे, ज्यादा शोक संताप नही रखते थे, बेटाबेटी और धनकुटुंबपर मोह कम करते थे, धर्मके बोले हुवे रुपये पैसे तुर्त खर्च देतेथे, व्यापारमे जो कुछ धर्मादा निकालते थे वोभी उसीरोज खर्च देतेथे, लोभकरके अपने चोपडेमें जमा नही रखते थे, हरसाल एक जैनतीर्थकी जियारतको जाते थे, आजकल कई श्रावक उम्रभरमे एक दो जैनतीर्थकी जियारतकोंभी नही जाते,कितनेक श्रावकको रात्री भोजनकाभी त्याग नही, हरहमेश सामायिक प्रतिक्रमण करना दूर रहा, व्याख्यान धर्मशास्त्रका सुनना पर्यूषणपर्वमेभी बडी मुश्किलसे होता है, और बाते बडी

भोगतारहे और आगें ज्यादा कर्म न बांधे तो धीरेधीरे उस जीवकी मुक्ति होसकती है,–

१९ स्फटिक रत्नके पिछाडी अगर शामरंगका पत्ता रखे तो शामरंग दिखाइ देता है, लालरंगका पत्ता रखे तो लाल दिखाइदेवे. इसीतरह जीव असलमें साफ और निर्मल है. मगर जबतक उपाधिरूप शामपत्ता पिछाडी लगा है, तबतक मलीन है. कर्मरूप उपाधि अलगहुइ फौरन! साफ होगा, मेरा घर, मेरी दौलत, मेरे रिस्तेदार मेरे बेटे, मेरी औरत और मेरी जमीन जहांगीर, जबतक इस खयालमे यह जीव पडा है मुक्तिके रास्तेसे दूर है जमानेहालमें इस भरतक्षेत्रमें मुक्ति होना बंद होगया, मगर तोभी मोह कमकरना अछा है, जैसे कपडेकों मेल लगा और उसपर साबु लगानेसे साफ होता है, इसीतरह जीव निर्विकल्पतासे साफ होकर मुक्ति पाता है, दुनियाके एशआराम थोडे अर्सेके है, धर्म हमेशांके लिये है,–

२० पुन्यका उदय इस जीवको धर्मके नजदीक करता है. तीर्थंकरपदवी बडेही पुन्यके ताल्लुक है, इसलिये जबतक मुक्ति नही मीली पुन्य छोडनेके काबील नही, हां! मुक्ति होनेके बाद बेशक! छोडने काबील है, असलमें! जीव अजर अमर है, मरता नही, एक शरीरकों छोडकर दूसरे शरीरमें जाना इसका नाम मृत्यु है, देवगति मनुष्यगति तिर्यंच और नरकगतिमे फिरना इसका नाम संसार और इससे छुटकारा पाना इसका नाम मुक्ति है. जीवके आत्मप्रदेशोंका संकोच विकाश होना स्वभाव है, जैसा शरीरहो वैसा छोटाबडा दिखाइ देना यह एक कुदरती बात है, जैसे हाथीका शरीर बडा और कुंथुका शरीर छोटा है, मगर आत्मा छोटा बडा नही, शरीरकों देखकर छोटा बडा चाहे कहदो, दीपकको जमीनपर रखकर उपरसें छोटा बर्तन ढांके तो उतनेमें चांदना करेगा और बडा बर्तन ढांके तो बडेमे चांदना करेगा, इसतरह जीवका संकोच विकाश होना स्वभाव है, असलमें जीव अरूपी है, मगर पुद्गलोंके साथ फसा है, इसलिये रूपी है.

२१ पूर्वभवमें जिस जीवने जैसे कर्म किये हो वैसे उदय आते है, इसमे कोइ कमीवेसी नही करसकता, रातको सोते वख्त नींद आनेसें पेस्तर सोनेवालेके जैसे मनःपरिणाम होगें नींदमेभी वैसे पुन्यपापबंधेगें, इसीलिये सोतेवख्त देवगुरु धर्मको याद करके सोना चाहिये, इस भवमे जीव जिसके घर पैदा हुवा हो उसमुजब धर्म मानता है, मगर हरेक शख्शको तलाश करना चाहिये कोंनसा धर्म सचा है. देव किसको गुरु किसको और धर्म किसको समजना इनबातोकी तलाश नही किइ तो क्या किया? कितनेक शख्श तकलीफ आन पडनेपर कहा करते है, हे! भगवान्!! मेने आपका क्या! बिगाडा था जो मुजे इसकदर तकलीफ दिइ? मगर इतना नही सोंचते भगवान् किसीको आराम और तकलीफ देते नही, जो कुछ तुमने पूर्वजन्ममे भलेबुरे कर्म कियेथे उनका फल यहा तुमको मीला है, भगवानको दोष क्यो देते हो? अपने कियेहुवे पापकर्मको दोष दो, कितनेक शख्श ऐसे है जो बीमारी आनपडे और मीटे नही तो वैद्य डाक्तर और हकीमोंपर गुस्सा करते है, और कहते है, उनोने अछी दवा नही दिइ. हमारी बीमारी बढादिइ, मगर इतना नही सोंचते बीमारी घटानेबढानेवाले तुमारे पूर्वसं-चित कर्म है, दुसरोपर गुस्सा करना कोइ जरुरत नही, कितनेक शख्श ऐसे है, बिमारीकी हालतमे अपने घरके मनुष्योपर गुस्सा लाते है, मगर ऐसा करनाभी बहेत्तर नही. जबतक तुमारे पापक-र्मका उदय है, बिमारी मिटेगी नही. और जब पुन्यकर्मका उदय आयगा तो आपही बीमारी मिट जायगी, दवाकी कोइ जरुरत न होगी, कइ जगह देखा गया है, कइलोग बीमारीमे तकलीफ पाकर दवा लेना छोड देते है, और अपने पुन्यकर्मके उदयसें बिमारी खुद ब खुद मिट जाती है, दर असल! बिमारीकी हालतमे समता-भावसे कर्मभोग लेने चाहिये, जिससे आगेको नयेकर्म न बंधे,—

२२ ज्ञानके पुस्तककी बेअदबी करना. पुस्तकपर पांव रखन उसपर थुकना, ज्ञानके पुस्तकोकों जलादेना, ज्ञान पढते हुवेन रोकना, पढे गुने शख्शोपर एतराज करना, ये सब बातें ज्ञानकी बे अदबीमें दाखिल है, किसी औरतकों रितुधर्म आनेपर तीनदि दुर बेठी हो उस हालतमें ज्ञान पुस्तककों बांचना या छिना न चाहिये, ज्ञानकी बेअदबी होगी, कोइ शख्श अपने घरके भा बर्तनोंपर अपना नाम कोतरावे तो ज्ञानकी बेअदबी होनेसे पा है, जबजब वो भांडा अग्निपर रखा जायगा वगेरा सबबोंसें ज्ञान की आशातना होगी, धर्मी शख्श लिखेहुवे या छपेहुवे कागजोक बुरी जगहपर नही डालते. यहांतक कि-लिखेहुवे कागजमें पुडिय बाधकरभी नही देते, जो शख्श ज्ञानको कुछ चीज नही समजते इस बातकों पसंद नही करेगें उनकी मरजीकी बात है, मगर धर्म शास्त्रकी बात बतलादेना ग्रंथकर्त्ताका फर्ज है, वो अदाकरनेके लि इतना लिखा है, जो शख्श ज्ञानकी बेंअदबी करेगें अगले जन्म उनको ज्ञान हासिल न होगा, धर्मशास्त्रोमें बयान है, देवताओक अवधिज्ञान होता है, जिससे वे स्वर्गमें बेठेहुवेभी मंत्रपढनेवालोवे बोलेहुवे मंत्राक्षरोसें जान सकते है फलां! शख्श हमकों याद करत है, फिर देवता आनकर स्वप्नमे या अदृष्ट रहकर कहता है, अमूक चीज तुमारे कर्ममें नही है, या अमूक चीज तुमको अमुक दिन मिलेगी, आजकलके जमानेमें मनुष्योकी तकदीर कमजोर होगइ इसलिये नजरके सामने प्रत्यक्ष देव आना मुश्किल बात है,-

२३ कितनेक शख्श ऐसे है मुहके मीठे और दिलके कडवे, कितनेक लोभमे पडकर दुसरोके कहे हुवे सख्त लब्ज सहन कर लेते है, और कहते है हमारा क्या विगडा? हमको तो अपने मत- लबसें काम है, कितनेक जब व्यापारमें नुकशान जाय तो जराभी शौचफिक्र नही करते और कितनेक जब अपनी रकम दुसरेके घर

पापकर्म बांधते है, उसवख्त दिलको धीरज देना और शौचफिक्र कमकरना मुनासिब है, कइ शख्श ऐसे गुस्सेवाज है जो जींदगी-तक गुस्सा नही छोडते. और मरते वख्तभी अपने लडकेको कह-जाते है, तुमभी फला शख्शके शाथ बोलना नही. ऐसे गुस्सेवालो-की परभवमेंभी अछी गति नही होनेवाली, राजगृही नगरीमे रहनेवाले एक लोहखुरे नामके चौरने मरतेवख्त अपने बेटेको कहाथा तुं! महावीर तीर्थंकरका धर्मोपदेश सुनने मतजाना, ऐसे अधर्मी शख्शोकी अछी गति नही होती.-

२४ अगर कोइ इस दलिलको पेंशकरे हमारे सगेसबंधी पाप कर्म करके अगर नरकगतिको गये हो तो वे आनकर हमको कहते क्यौ नही? और अगर पुन्यके सबब स्वर्गमे गये हो तोभी आनकर बयान क्यौं नही करते? ( जबाब ) स्वर्गमे जानेवाले वहांके आराम चैन और नाटक रगरागमे मशगुल होजाते है, इस लिये आना चाहते हुवेभी आसकते नही, और नरकमे जानेवाले जीव पराधीन है नरकमें जो परम अधर्मी देवते है, उनके तावेमे उनको रहना पडता है, वे उनको आने नही देते. तकलीफके सबब वे खुदभी आसकते नही, अगर कोइ कहे जीव मरकर जाते वख्त दिखाइ क्यौं नही देता? ( जबाब ) जीव अरूपी है, दिखाइ कैसे देवे? माताके गर्भमे आता है, उस वख्तभी दिखाइ नही देता. सबब कि-वो अरूपी है, जबतक श्वासोच्छ्वास चलते रहे मालुम होता है, जीव है. जैसे वायुरूपी है और दरख्तको हीलाता है मगर नजर नही आता, ठंडके दिनोमे ठड लगती है और कहा जाता है ठड बहुत है, मगर ठडके परमाणुं आखोंसे नजर नही आते, जब किसी तरहके इत्रफुलेलकी सुगंध आती है तो नासिका इद्रियसे जाना जाता है सुगंध आइ मगर सुगंधके परमाणुं नजरसें दिखाइ नही देते, इसी तरह कर्म दिखाइ देते नही, मगर जब उद-यमे आतेहै तो उसका फल मालुम देता है, एक सुखी और. एक

दुखी यह सन अपने अपने कियेहुवे भलेवुरे कर्मोका फल है, आठकर्मके पुदगलपरमाणुं चारस्पर्शी है, वायुकायके शरीरका पुदगल, ठंडके परमाणुं और सुगंधके परमाणु आठ स्पर्शी है-चाहे आठ स्पर्शी पुदगल हो या चारस्पर्शी हो पुदगलपरमाणु ज्ञानीयोके ज्ञानमें रूपी है, जब रूपीपरमाणुंभी हमारे तुमारे नजर नही आते तो अरूपी जीव नजरसे कैसे आवे?-

२५ सब जीव आरामकों चाहते है कोइ तकलीफ होना नही चाहते, मगर कर्मके उदयसे तकलीफ आन पडती है, अपने कुटुंबकेलियेभी जो जो पापकर्म करते हो तुमकोंही भोगना पडेगा, बडेबडे राजे महाराजे जब बीमार पडते है, तकलीफ उनकोंभी उठाना पडती है, दवाकी और हकीमोंकी किसीकदर कमी नही, मगर तकदीरकी कमी होनेपर किसीका जोर नही चलता, और उनका आत्मा-देह छोडकर चलाजाता है, जीव अकेला आया और अकेला जायगा, कोई किसीके शाथ जाता नही, समज सको तो समज लो, जो कुछ धर्मपुन्य करलोगे वही तुमारे शाथ चलेगा, मनकों जनतक सवरभावनामें न लाओगे पाप आते अटकेगें नही, जीवअदत्त, स्वामीअदत्त, गुरुअदत्त और तीर्थंकर अदत्त इन चारतरहके अदत्तकों समजना चाहिये, किसी जीवने तुमको कहा नही तुम हमको मारो, पृथवी पानी वनास्पतिसे लेकर जिसजिस जीवकी हिंसा करते हो यह सब जीव अदत्त हुवा और इसका तुमको पाप है, वगेर हुक्मके किसीकी चीज लेना इसका नाम स्वामी अदत्त हुवा, किसीके घर या दुकानपर गये और विना हुकमके उनकी कोइ चीज तुमने लिइ यहभी स्वामी अदत्त है, वगेरहुक्मके गुरुकी कोइ चीज अपने काममे लेना यह गुरु अदत्त हुवा, तीर्थंकरोके हुक्मकी अदुली करना उनके फरमानपर अमल नही करना, यह तीर्थंकर अदत्त हुवा, अगर तुम धर्मकों सच मानतेहो धर्मके कायदेपर चलो.-

२६ आवश्यकसूत्रनिर्युक्तिमें और उपदेशमालाग्रंथमे तेहरीर है तीर्थयात्राजानेसें श्रद्धाकी पाबंदी होती है, उतने दिन दुनियादारीका काम छुटेगा और धर्ममे दिल लगेगा, जो जो तीर्थंकर महाराज वहासे मुक्ति पाये होगे उनकी यादी आयगी, धर्मध्यानकी तरकी और दुनियादारीकी उपाधि कम होगी, ये सब तीर्थयात्राके फायदे है, गौतमगणधरभी तीर्थ अष्टापदकी जियारतको गये थे, और वहा जाकर तीर्थंकरदेवोंकी इबादत किइथी, कितनेक जैनश्वेतांबर श्रावक जैनमुनिजनोकी क्रियापर टीका करते है, मगर अपनी धर्म क्रियातर्फ खयाल नही करते, अपनेमे कितने गुण और व्रत है उसपर निगाह नही करते, कितनेक शख्श ऐसे है जो द्रख्तकों काटकर फल लेते हैं, और कितनेक ऐसे है, जो दख्तकों इजा न पहुंचाकर नीचे गिराहुवा फल लेते है, इसीतरह अछे शख्शोकों लाजिम है अपना कामभी करना मगर दुसरोको इजा नही पहुंचाना.–

२७ हरसाल पर्यूपणपर्वमें कल्पसूत्र इसलिये वाचाजाता है, उसमे तीर्थकरोका बयान है, उनोने किसकिसतरहके तप किये, मुक्तिपानेकेलिये कैसी तकलीफे उठाइ? किस बहादूरीसें परिसह सहन किये और किसकदर तकलीफ देनेवालोंपरभी रहेम किया, इसतरहके बयान सुननेसें सुननेवालोको ज्ञानका फायदा हासिल होगा, जिनमदिरकी प्रतिष्ठा कराना जैनाचार्योंका काम है, सूरिमंत्रपढकर अपने चद्रस्वरमे जलतत्व चलतेवख्त जिनप्रतिमाकी प्रतिष्ठा करना और उनपर वासक्षेप डालना अछा है, आचार्य मौजूद न हो तो दुसरे नबरमे उपाध्याय वर्द्धमानविद्या पढकर जिनप्रतिमाकी प्रतिष्ठा करे, आचार्य उपाध्याय न हो तो तिसरे नंबर साधुमहाराज वर्द्धमान विद्या पढकर प्रतिष्ठा करे, उपरके कामकाजमे चाहे श्रावक सामील रहे मगर असलकाम प्रतिष्ठाका आचार्य उपाध्याय और साधुमहाराजका है, श्रावकका- नहीं,

सहस्रारदेवलोकवालोंकों शब्द सुननेसे कामवासना पुरी होती है. आनत प्राणत आरण और अच्युत ये चार देवलोकवालोकों मनमे याद करनेसे कामवासना पुरी होजाती है, नव ग्रैवेक और पांच अनुत्तर विमानके देवताओंको कामवासना बिल्कुल नही होती. औरतकों विवाहनेसे मर्दकों एकतरहका पगबंधन होता है, विवाह हुवा तो औरतके लिये गेहने कपडे चाहिये, गेहने कपडोके लिये रुपये पैसोंकी जरुरत होगी. उसके कमानेके लिये तिजारत करना पडेगी, तिजारतके लिये गेरमुल्कोकी सफर करना होगी, लडका लडकी पैदा होनेपर उनके विवाहका फिक्र होगा, जात बिरादरीकी रीत रशम करना पडेगी, दिनरात उसीतर्फ ध्यान लगा रहेगा, और धर्मको भुलजाओगे,–

३२ इस जीवने अपना असली स्वरूप नही जाना इसीलिये कहता है मेरा घर, मेरा खजाना, मेरी दौलत, मेरे बेटा बेटी, और मेरी औरत ये सब वृथा अभिमान है. दरअसल! अपना कोइ नही बेसमजसे पराइ चीज अपनी मानलिइ है, समजना चाहिये अखीरमें यह शरीरही अपना नही तो दुसरा अपना कौन होगा? आत्मा पराइ चीजकों अपनी मानरहा है. जैसे दिवाना शख्श अपने होशको भुलाहुवा है. वैसे आत्मा कर्मकी उपाधिसे भूलमें पडकर परवस्तुकों अपनी मानता है, कर्मरूपी उपाधि लगी है तबतक आत्मा मलीन है, मेरा मकान उमदा है. फरनीचर कैसे उमदा लगते है? खिलौने और किसकदर उमदा पलंग बीछा है? इसतरहकी चीजे देखकर खुशी मानता है. आत्मा ज्ञानवान् और ये चीजें जडपदार्थ है, इनको अपनी मानना भूल है. इनकों छोडकर एक रौज जाना है. मुमकीन है जहांतक बने उपाधि कम करना, और देवगुरुधर्मपर एतकात लाना. जिनोने आत्मस्वरूप जाना है वे तकलीफसे नाराज नही होते, ध्यानमे बेठेहुवेको जब डांस मछर काटे तो दिलमें सौचे! यह उपाधि शरीरकों है, आत्माकों

नही. आत्मा शरीरसें जुदा है, ऐसी भावना लावे तो इस जीवको मुक्ति नजीक है, अगर तकलीफ आनपडे तो सोचे यह सब तकलीफ शरीरकों है, आत्माको नही, चाहे बुरी चीज मीले या अछी दोनोमे समभाव रहे इसीका नाम आत्मज्ञान है, जैसे गजसुकमालजीको एक सौमील नामके ब्राह्मणने सीरपर मीट्टीकी पाल बांधी थी, और उसपर अग्निके अंगारे धरेथे तोभी वे अपने आत्मध्यानसे चलायमान नही हुवे थे, और आत्मभावनामें लीन रहे थे, इसलिये उनकी मुक्ति हुइ थी.—

३३ सम्यक् ज्ञानविदून इस जीवकों सकाम निर्जरा नही होती. चोथे गुणस्थानसे लेकर चौदहमे गुणस्थानतक इस जीवकों सकाम निर्जरा होना ज्ञानीयोने फरमाया, कितनेक शख्श ऐसे है जो देवगुरुधर्मको मुखसे बडे कहते है, मगर दिलसे बडे नही समजते, जैसे नाटक देखते वख्त शरीरको तकलीफ होती है, मगर देखनेकी खुशीके आगे उसको खयालमे नहीलाते, विवाहसादीमे कइतरहकी मेहनत उठाते है, मगर विवाहकी खुशीमे वो तकलीफ खयालमे नही आती, गेहने कपडे पहनते हो, उसका बौजा अपनी खूबसुरतीके आगे गिनतीमें नही लेते, इसतरह जीव संसारमे मशगूल हो रहा है, इसलिये उसकों संसारके काममे खुशी पैदा होती है, एक शख्शने दुसरेको कहा, विवाहसादीमें आपको बडा खर्च करना पडेगा, उसने जबाव दिया, कमाते है किसलिये? देखिये! धर्मकाममें खर्च करना बतलाया जाय तो चुप खेंचलेते है, और दुनियाके काममे चाहे जितना खर्च करडाले कुछ परवाह नही, व्यापारमे कइतरहकी मेहनत उठाना पडती है, मगर फायदेके सामने उस तकलीफकों गिनतीमें नहीं लेते, इसीतरह धर्मके काममेभी खयाल करे तो कितनी उमदा बात हो. चैतवैशाखकी करडी धूपमे अगर कोइ कहे चलो! तीर्थयात्राको जावे तो कहेगें बडी धूपमे बीमार पडजायगें, और अगर किसीकी बरातमे जाना

हो तो उसीवख्त तयार होजाते है, और कोइ मतलब हो तो दूर-दूरके मुल्कमेंभी सफर करनेकीभी तकलीफ नही गिनते.-

३४ अगर कोइ सवालकरे मुक्तिमें सुख क्या है? (जवाब.) मुक्तिमें ज्ञानमय अतींद्रिय अव्याबाध सुख है, जन्म-मरणकी तकलीफ छुटगइ, और ज्ञान हासिल हुवा जो सबसे बढकर था, अगर कोई कहे मुक्तिमें खानापीना और एशआराम नही है, फीर सुख क्या हुवा? जवाब मुक्तिमे आत्मिकसुख सत्-चित्-आनंदरूप मौजूद है, वहां शरीर है नही-तो फिर खानपान और एशआरामकी क्या जरूरत? जब आत्मिक सुख मीले तो शरीरजन्यसुख कौन चाहे?-

३५ कितनेक थोडे पढेहुवे श्रावक कहते हैं, जिनमूर्तिके सामने फलफुल चढानेमें पाप है, मगर इतना नही सोचते फल फुल चढानेवालोका इरादा क्या है? अगर इरादा धर्मका है तो पाप कैसे? कितनेक कमइल्म श्रावक कहा करते है, जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाकी आरती किये बाद मंदिर तुर्त बंदकर देना चाहिये, चिरागोंकी रोशनी गीतगान नाचरंग करनेसे पाप होगा, (जवाब.) पाप जब होवे अगर इरादा पांच इंद्रियोकी विषय पुष्टिकाहो, जहां इरादा देवभक्तिका है, वहां पाप कहांसे आया? अगर इरादे धर्मकेभी पाप होता हो तो फिर जिनमंदिर बनानेभी पाप कहो, स्थानकवासी मजहबवाले स्थानक बनाते है, इसमेंभी पाप मानो, दीक्षामहोछवमें बाजा बजवाना धामधुम करना इसमेभी पाप कहो, अगर कहाजाय दीक्षामहोछवमे और स्थानकबनवानेमें इरादा धर्मका है, इसलिये पाप नही तो यहि बात जिनमंदिर बनवानेमें और जिनमूर्त्तिकी पूजामेभी क्यों नही समजना? जहां मनःपरिणाम धर्मके है, वहां पाप बंधन कैसे होसके! इसबातकों सोचो! भरतचक्रवर्त्ती अयोध्यानगरीसे रवाना होकर तीर्थशत्रुंजयजीकी जियारतकों आये, शाथमें हाथी घोडे रथ डंके निशान और तरहतरहके बाजे थे, उनका इरादा

तीर्थकी जियारतका था इसलिये पुन्यानुबंधिपुन्य और अशुभकर्मकी निर्जरा हुइ पाप बिल्कुल नही हुवा था, जहां इरादा शुभहो वहां भावहिंसा नही और विना भावहिंसाके पाप नही.

३६ जिनप्रतिमाके और ज्ञानपुस्तकके सामने खानपान एशआराम हास्यकुतुहल और कामक्रीडा करना जिनप्रतिमाकी और ज्ञानपुस्तककी बेअदबी है, ज्ञान शरीरके सबभागोमें व्यापी है हृदयमें या मस्तकमेंही ज्ञान है ऐसा नही जानना, सब शरीरव्यापी चैतन्य ज्ञान है, एसा जानना, एकही जगह ज्ञान रहता हो तो पावमें काटा लगनेसें मस्तकतक ज्ञान होना कैसे बनसके! अगर कोइ जैनमुनि अपनी धर्मक्रियाकी तारीफ करे और कहे हम जो कुछ धर्मक्रिया करते है, सबसे आला दर्जेकी है, तो यह कहना मुमकीन नही, आजकल उत्सर्गमार्गपर चलना नही बनसकता, अपवादमार्गपर सबको आना पडता है, जैनमुनिको उत्सर्गमार्गमें तीसरे प्रहर भिक्षाको जाना और लुखा सुखा आहार लेना कहा, आजकल दिवसके पहले दुसरे प्रहरमे भिक्षाको जाते है, घी दूध मिठाई वगेरा चीजें इरादे संयम रक्षाके लेते है, यह अपवादमार्ग है उत्सर्गमार्ग नही.–

३७ पांचमे आरेमे भरतक्षेत्रके मनुष्योंकी उम्र ( १२० ) वर्सकी होना तीर्थंकर देवोने फरमाइ, कभी हिंद चीन जापान रुशिया यूरोप अमरिका वगेरा किसीभी मुल्कमे कोइ मनुष्य ( १२५ ) वर्स या ( १५० ) वर्सकी उम्रका या इससेभी ज्यादा उम्रवाला निकल आवे तो उसमें आश्चर्यकी बात नही, लाखो करोडोमे पांच सात दश मनुष्य ( १२० ) वर्ससे ज्यादा उम्रवाले निकल गये तो इसमें ताज्जुन करना कोइ जरुरत नही. लाखो करोडों मनुष्योंकी अपेक्षासे एकसो वीश वर्सकी उम्र तीर्थंकरोने फरमाइ है, ऐसा जानना, जैसे एक औरतकों गर्भमें एक लडका या लडकी पैदा होना ज्ञानियोने फरमाया, कभी कभी किही औरतके गर्भमें एक

दो तीन चार पांच या सात आठ लडका लडकी एकशाथ पैदा हो, और जन्म जाय तो जन्म सकते है, मगर लाखों या करोडोंकी गिनतीकी अपेक्षा एकही लडका या लडकी होना बहुमतसे कहागया, तीर्थंकरोंके पांच पवित्र दिनोंका नाम कल्याणिक है. जिस रौज तीर्थंकर गर्भमे आवे, उनका जन्म हो, दीक्षा लेवे उनको केवलज्ञान पैदा हो, और मोक्ष जाय ये पांचदिन वडे पवित्र समजे गये है, तिथिमे दुज पंचमी अष्टमी एकादशी चतुर्दशी पौर्णिमा और अमवास्या ये छह तिथि एक परवाडेमें और दुसरी छह तिथि दुसरे परवाडेमे कुछ बारा तिथि धर्मशास्त्रोमें बडी समजी गइ है. इन दिनोमे धर्मध्यान ज्यादा करना चाहिये-

३८ केवलज्ञान विनापाये इस जीवकी मुक्ति नही, पहले केवल ज्ञान पीछे मुक्ति, मुक्तिहुवे बाद अरिहंतभी सिद्ध कहेजाते है. चाहे सामान्य केवली हो या अरिहंत हो मुक्ति हुवेबाद सिद्धमे सब एक सरीखे है. उत्तराध्ययनसूत्रमें श्रद्धा बडी चीज कही गइ, विना श्रद्धाके चाहे जितने व्रतनियम कियेजाय कारआमद नही होते, हरेक चौविशीमें और हरेक कालमें नमस्कारमंत्र वोही है, इसमें फेरफार नही होता. जैनमजहबकी द्वादशांग वाणी कदीमसे है. कथा कभी दुसरी कही जाय मगर पदार्थ ज्ञानमे फर्क नही, शत्रुंजयतीर्थ हमेशांसे है. लंबाइ चोडाइ उंचाइ वगेरामें कभी वेसी हो सके, मगर छठे आरेमेंभी सात हाथकी टेकरी देवताओसे पूजनीक बनी रहेगी. महाविदेह भरत और ऐरावर्त्त वगेरा जो पनराह कर्मभूमि क्षेत्र है, उनमे इस भरतक्षेत्रको छोडकर बाकीके चौदह क्षेत्रमें शत्रुंजय जैसा तीर्थ नही, उर्द्ध अधः और तिर्यक ये तीन भुवनमें इस तीर्थको छोडकर दुसरा ऐसा तीर्थ नही, हर चौविशीमें यह तीर्थ बना रहता है, इसलिये इसकी तारीफ ज्यादा बयान किइ गइ,-

३९. भरतक्षेत्रका मनुष्य अपनी ताकातसे महाविदेह क्षेत्रमे नही जासकता, देवता लेकर जावे तो वेशक! जासकता है. मरेबाद अपने कर्मानुसार महाविदेह वगेरा सब क्षेत्रमे जाकर जन्म पा सकता है. भरतक्षेत्रके तीर्थंकर महाविदेह क्षेत्रमे नही जाते, और महाविदेह क्षेत्रके तीर्थंकर भरतक्षेत्रमें नही आते, उधरही उनको धर्मोपदेश देनेके लिये स्थान बहुत है, मेरुपर्वतपर कदीमी जिन प्रतिमा मौजूद है, उनके दर्शनोको लब्धिधारक जैनमुनि आसानके रास्ते जासकते है, आजकल इस भरतक्षेत्रमे वैसे लब्धिधारक मुनि रहे नही. जंबूद्वीप धातुकीखंड और पुष्करार्द्ध ये अढाइ द्वीपोमें मनुष्योकी पैदाश है. शिवाय इसके बहुतसे दुसरे द्वीपभी है. मगर वहा मनुष्योकी पैदाश नही,–

४० इद्रभूति गौतम गणधर तीर्थंकर महावीरके चेलेथे, गौतमबुध बौधमजहबके प्रवर्त्तक जुदे है. गौतमरिपि वैदिक मजहबमे अलग हुवे है. और नैयायिक मजहबमें गौतम दुसरे है. इसतरह गौतम नामके चारमहाशय जुदेजुदे हुवे है, जैनश्वेतांबर मजहबमें कइतरहके गछोके भेद है. हरेक मजहबमे शाखा प्रशाखा होती चलीआइ इसमे चकित होना कोइ जरुरत नही.–

४१ किसी मर्द या औरतने पहले बहुतसे पापकर्म कियेहो और अगर उसवख्त अशुभ परिणामसे उसको दुर्गतिका बंध न पडगयाहो और पीछेसे धर्मकरनी करे. पहलेके पापकर्मकों छोडे तो उसकों अछीगति मील सकती है. अगर पेस्तर दुर्गतिका बंधन बंधगयाहो तो वो भोगना पडेगा, और पीछेसे धर्मकरनीका फलभी मिलेगा, पुन्यानुबंधि पुन्य जैनशास्त्रोमे उसका नाम है जो पूर्वभवमे अछी करनी करके यहा सुखी हुवे है, और यहाभी पुन्य करते है. पापानुबंधि पुन्य उसका नाम है जो पूर्वभवमे मिथ्यात्वके कार्य करके यहा दौलत पाइ मगर आगेकों पुन्य नही करते, पुन्यानुबंधि पाप उसको कहते है जैसे पूर्वके पापकर्मके उदयसे यहा दुखी

सूर्यप्रज्ञप्ति ये दोनों शास्त्र जैनमजहबके ज्योतिषविद्याके बडे आला-दर्जेके ग्रंथ है, खगोलविद्याका ज्ञानभी इनमें उमदा है, उत्तराध्यायन-सूत्र इसमे बडीबडी उमदा कथाये है, नंदीसूत्रमे पांचतरहके ज्ञानका बयान और अनुयोगद्वारसूत्रमें षट्द्रव्यवगेराका ज्ञान दर्ज है.–

४६ जैनमजहबमें जीव दो तरहके मंजुर रखेगये है, एक भव्य जीव (यानी) मुक्ति पानेके योग्य और दुसरा अभव्यजीव (यानी) मुक्ति पानेके योग्य नही, सबब उसकों धर्मपर श्रद्धा नही बेठती, धर्मक्रिया चाहे जितनी करे. ज्ञान पढे, दुसरोकों तालीम धर्मकी देवे, मगर अपने खुदके दिलमें धर्मश्रद्धा नही, इसलिये उसकी मुक्ति कभी नही होगी, पंचइंद्रियजीवोकी हिंसा करे, शराब पीवे मांस खावे, चोरी करे जुआ खेले, परस्त्री और वेश्यागमन करे शिकार खेले विश्वासघात करे, दोस्तको दगा देवे, धर्मशास्त्रके खिलाफबात बयान करे, जिनमंदिर और तीर्थोंका द्रव्यभक्षण करे, इनइन कामोसें जीव नरकगति पाता है, इसलिये इन पापकर्मोसें बचना चाहिये, धूर्त्तता करे, मुखसे मीठा बोले और दिलमें कपट रखे, दुसरोको कलंक देवे. दिलमे हरवख्त बुरे बुरे इरादे करता रहे, लोकदिखावा तपजप वगेरा धर्मक्रिया करे अपनी मान्यता कम होजायगी और लोगमें हांसी होगी, इस सबबसें अपने कियेहुवे कुकर्म गुरुके पासभी साफसाफ बयान न करे, बातबातमें जुठ बोले, व्यापारमें कम देवे और ज्यादा लेवें गुणवानकी अदेखाइ करे दिलमे मायाप्रपंच रखे इन सबबोसे जीव तिर्यंच यानी जान-वरकी गतिमें जाता है.–

४७ जंघाचारणमुनि उसकों कहते है, जिसकी जंघामे आसा-नमे उडनेका ताकात पैदा हुइ हो, और आसानके जरीये तीर्थ यात्रा जाते आतेहो, वैसे जंघाचारण मुनि उचाइमें मेरु पर्वतके शिखरतक जासकते है, और जमीनपर तिर्यग ( यानी ) तिरछा [illegible] जासकते है, विद्याचारण मुनि उसको कहते है,

जिनको वे-जरीये विद्याके आसमानमे उडनेकी ताकात पैदाहुइ हो. वैसे विद्याचारण मुनि उंचाइमे मेरु पर्वतके शिखरतक और जमीन पर तिरछा आठमे नदीश्वर द्वीपतक जासकता है. वैक्रियलब्धि-वाले मुनि उनको कहते है, जो तरह तरहके रूप बनासके और थोडे वख्तके लीये अपना रूपभी परावर्त्तन करसके. छोटा और बडा रूपभी करसके, मगर आजकल वैसे लब्धिधारक जैनमुनि रहे नही. पेस्तरके जमानेमे थे. जैसा जमाना है मुताबिक उसके सब वरताव रहगया,–

४८ जैनमजहबवाले जिसको कर्म कहते है; सांख्यमजहबवाले उसको प्रकृति कहते है, वेदांतिक मजहबवाले माया कहते है, नया-यिक और वैशेषिक मजहबवाले अदृष्ट कहते है, बौधलोग वासना कहते है, और कोइ कोइ ईश्वरकी लीला कहते है, पेस्तरके जमानेके राजे महाराजेभी जैनधर्मके श्रावकव्रतमे कायम रहतेथे. जिनेंद्र देवोकी पूजा करतेथे. अष्टमी चतुर्दशी तिथिके रोज पौषधव्रत करते थे, स्वधर्मीकी इज्जत करते थे, तीर्थयात्रा जाते थे. जैनमुनियोकी व्याख्यानसभामे शास्त्र सुनने आते थे और अपने हाथसे प्रभावना बाटते थे. धर्मके काममे शोक संताप नही रखते थे. आजकलके श्रावक धर्मध्यान करसकते नही. जैनमुनिजनोके वरतावपर टीका करते है, अपने वरतावपर खयाल करते नही. जिनमंदिर बनवाना ज्ञानभंडारोका उद्धार कराना तो अलग रहा, मील प्रेस वगेरा आरंभके काममे तयार है, और धर्मके काममे शुस्त है,–

४९ अंतरायकर्म पांच तरहके है. १ दानांतराय, २ लाभांतराय, ३ भोगांतराय, ४ उपभोगांतराय, ५ और वीर्यांतराय, दानांतराय उसको कहते है दौलत होतेहुवेभी दान नही करसके, लाभांतराय उसको कहते है देनेवाले दातारके पास मागने जाय मगर उसके लाभांतराय कर्मके उदयसे चीज होतेहुवेभी उसको न मीलसके. व्यापार और कलाकौशल्यमे बडी चतराइ, करे और

दौलतकमानेके लिये बडी बडी कोशिश करे. मगर फायदा न हो, सटा करने जाय फायदा हुवा तो दलाल या वेपारी बदल जाय और फायदा न मीले, यह सब लाभातराय कर्मकी बात है. भोगातराय कर्म उसकों कहते है जिसके उदयसे खानपानकी चीजे होते हुवेभी रोगादिकके सबबसे खानेपीनेमें न आसके. जिस कर्मके उदयसे गेहने कपडे औरत बगी घोडे मोटार और मकानात होते हुवेभी उनका उपभोग न करसके, उसका नाम उपभोगांतराय है, जिसकर्मके उदयसे व्रतनियममें या धर्मक्रियामें ताकात न चलासके शरीरकी कमताकातसें कोइभी कार्य तुर्त न करसके उसका नाम वीर्यांतराय कर्म है,-

५० जैनमजहबमें नियंठे यानी निर्ग्रंथ पांचतरहके है, १ निर्ग्रंथ, २ स्नातक, ३ पुलाक, ४ बकुश, ५ और कपायकुशील ये पांच तरहके नियंठे है. इनमेसे पहलेके तीन तरहके निर्ग्रंथ मुनि जमानेहालमें नही रहे, बकुश और कषाय कुशील निर्ग्रंथ आजकल मौजूद है, आजकल मुक्ति रही नही तो वैसे उमदा चारित्र पालनेवाले मुनि कहासे रहे? न वैसे बारां व्रतधारी श्रावक रहे, जैसा जमाना है वैसे साधु श्रावक मौजूद है,-

५१ जैनमजहबमें चोइस तीर्थंकर धर्मके नायब हुवे उनके नाम इसतरह है, अवल तीर्थंकर रिपभदेव हुवे, आदीश्वर आदिनाथ प्रथम तीर्थंकर प्रथमजिन और प्रथम भिक्षाचर ये सब इनहीके नाम है, दुसरे अजितनाथ, तीसरे संभवनाथ, चौथे अभिनदन, पाचमे सुमतिनाथ, छठे पद्मप्रभु, सातमे सुपार्श्वनाथ, आठमे चंद्रप्रभ, नवमे सुविधिनाथ, इनका दुसरा नाम पुष्पदंतभी है, दशमे शीतलनाथ, अग्यारमें श्रेयांसनाथ, बारहमे वासुपूज्य, तेरहमे विमलनाथ, चौदहमे अनंतनाथ, इनका दुसरानाम अनंतजित् है. पनरमा धर्मनाथ, सोलहमा शांतिनाथ, सतरमा कुंथुनाथ, अठारमा अरनाथ, उन्नीसमा मल्लिनाथ, वीशमा मुनिसुव्रतनाथ, एकीसमा नमिनाथ,

वाइसमा नेमिनाथ, तेइसमा पार्श्वनाथ. और चौइसमा महावीरस्वामी, इनके दुसरे नाम चरमतीर्थंकर वर्द्धमान देवार्य ज्ञातपुत्र और श्रमणनिर्ग्रंथ है, जैनमजहबमे ये चौइस तीर्थंकर बडे ज्ञानी हुवे है.–

५२–१ क्षत्रिय, २ ब्राह्मण, ३ वैश्य, ४ और शूद्र ये चार वर्ण है, इनमे शूद्र व्यवहारमार्गमे अंत्यज है. क्षत्रिय ब्राह्मण और वैश्योसे इनका रोटीव्यवहार और बेटीव्यवहार कदीमसे अलग होता चला आया और अलगही होना चाहिये. मगर जैनधर्म पालन सब कोइ करसकते है. अमुक जातिवाला जैनधर्मपालन करसके और अमुक जातिवाला न करसके ऐसा नियम नही, इसीतरह अत्यजलोग स्वजातिमे रहकर जैनधर्म पालना चाहे तो पालसके, उसमे कोइ धर्मविरुद्धकी बात नही, मगर हा! इतना जरुर है अंत्यजोके शाथ जातिसबंधी रोटी और बेटी लेनेदेनेका व्यवहार नही करसकते, पेस्तरके जमानमेभी अत्यजलोग जैनधर्म पालतेथे और हरिकेशी मुनि चाडालजातिके थे. जैनकी दीक्षा लिइथी, मगर वे अलग विचरतेथे, और अलग रहते थे. वे अलग रहकर चाहे जिसतरह धर्मपाले अलग जिनपूजा करे. अलग सामायिक प्रतिक्रमण करे कोइ हर्ज नही, जैनमंदिरके बहार खडे होकर दर्शन करे तो कोइ हरकत नही.

५३ जिस गावमे जिनमंदिर बनाहुवा हो तो श्रावक उसमे जाकर जिनप्रतिमाकी पूजा करे कितनेक श्रावक घरमे बेठकर चित्रामकी बनीहुइ जिनप्रतिमा या सिद्धचक्रजीके यत्रपर वासक्षेप पूजा करलेते है, मगर यह बात खिलाफ हुकम जैनशास्त्रके है, जिन-मंदिरमें जाकर पूजा करना चाहिये, घरमे बेठकर पूजा करनेसे दुनियादारीके कामोमे ध्यान लगा रहेगा, पूजामे ध्यान नही जमेगा, घरमे दो घटे बेठेरहो और जिनमंदिरमे चाहे आधा घंटा रहो ज्यादा फायदा होगा, जिस गावमे जिनमंदिर न हो, वहा

चाहे घरमें बेठकर पूजा करो कोइ मना नही, श्रावकको इतने ग्रंथ जरूर कंठाग्र करना चाहिये, नवतत्व जीवविचार दंडक कर्मग्रंथ क्षेत्रसमास पंचप्रतिक्रमण नवस्मर्ण स्नात्रपूजा तत्वार्थसूत्र गुणस्थान-क्रमारोह और रिपिमंडल वगेरा हरवख्त हिज्‌याद होगा तो धर्मका फायदा होगा, उपदेशमाला प्रवचनसारोद्वार त्रेशठशलाका-पुरुषचरित प्रबंधचिंतामणि श्रीपालका रास, चंदराजाका रास, जैनरामायण और पांडवचरित इतने ग्रंथ जरुर वाचलेना चाहिये, याते जैनधर्मकी माहिती रहे, कल्पसूत्रका भाषांतर बांचनेका श्रावकोंको हुक्म है, पर्यूषणपर्वके दिनोंमें अगर धर्मगुरुका योग न हो व्याख्यानके तख्तके नीचे बेठकर एक श्रावक दुसरे श्रावक-श्राविकाको सुनाना चाहे तो सुना सकता है.—

५४ जिनप्रतिमाके सामने चावलोंसे स्वस्तिक बनानेका सबब यह है मेरी चारगति छुट जाय और में श्रद्धा ज्ञानचारित्र पाकर मुक्तिपद हासिल करूं, कितनेक श्रावक या श्राविका स्वस्तिक कर-नेसे पहले चावलका पुंज करते है, मगर यह ठीक नही, पहले स्वस्तिकसेही शुरुआत करना चाहिये, फिर श्रद्धा ज्ञानचारित्रके तीन पुंज बनाकर अखीरमें मुक्तिकी सिद्धशिलाका आकार बनाना चाहिये, शत्रुंजय तीर्थपर तीर्थकर रिषभदेव महाराज पूरव नना-णुंदफे तशरीफ लाये थे, इसी सबब ननाणुं यात्रा करनेका अनुक-रण चलता है, पूर्व एकतरहकी गिनतीकी संख्याका नाम है, तीर्थकर रिषभदेव महाराजकी उम्र चौरासीलाख पूर्वकी थी, शत्रुं-जय तीर्थपर रिषभदेव महाराजके मंदिरकी पिछलीतर्फ जो राय-णका द्रख्त खडा है वो उस तीर्थकर रिषभदेव महाराजके वख्तका अबतक बनारहा है ऐसा नही जानना, वनास्पतिके जीवोकी आयुष्य दशहजार वर्ससे ज्यादा नही होती, जबजब शत्रुंजयतीर्थके मंदिरोका उद्धार कराया जाय रायणवृक्षभी नया रोपा जाय ऐसा नियम है.—

५५ मेरुपर्वत एकलाख योजनका उंचा और अष्टापद पर्वत आठ जोजनका उंचा है, मेरुपर्वतपर कदीमी जिनप्रतिमा मौजूद है, अष्टापद पर्वतपर कदीमी नही, भरतचक्रवर्त्तीके बनाये हुवे जिनमंदिर और जिनमूर्त्तिये मौजूद है, नंदीश्वरद्वीपमे कदीमी जैन-मंदिर बनेहुवे है, और वे देवताओंके जरीये पूजे जाते है, मनुष्योकी आबादी वहा नही, दुनियामे सबसें बडे देव गुरु धर्म है, दुसरे दर्जेपर मातापिता, और तीसरे दर्जे औरत और बेटा बेटी है, जिनोने पूर्वजन्ममे पुन्य कियाथा वहा आरामतलब हुवे है, जिनोने पाप कियाथा वहा गरीब और रोटीयोके मोहताज है.–

५६ स्वरोदयज्ञानका बयान जैसा जैनमजहबके शास्त्रमे कहा है दुसरे मजहबमे कम देखागया, चाहे कोइ थोडे पढेहुवे जैनमुनि या श्रावक ऐसा समजे जैनमजहबमे ध्यानसमाधि कम है तो उनकी भूल है, कइ लोग कर्णपिशाचिनी देवीको साधनकरके दुसरे लोगोंकों जबाब देते है, इसमे कोइ ताज्जुबकी बात नही, देवता अगर निर्मल अवधिज्ञानी होवे तो भविष्य बतला सकते है, जैनके ज्योतिषशास्त्र और मंत्रशास्त्रसे तथा जैनमजहबके देवदेवीयोंकी मददसे अगर कोइ भविष्य जानना चाहे तो जानसकते है, मगर विद्याभ्यास और साधन करनेकी मेहनत उठाना चाहिये.–

५७ दुखी और लुले लगडे अंधे मनुष्योंकों अनुकंपासे दान देना पुन्य है, और परभवमे अछीगतिमिलनेका सबब है, इसलिये दुखी-पर अनुकंपा जरूर करना चाहिये, देखो! तीर्थंकर महावीरस्वामीने एक निर्धन मनुष्यको अपने बदनका कपडाभी दे दिया था, जैन-श्वेताम्बर मजहबमे तेरहपंथ मजहबवाले इस बातको मजुर न करे तो उनकी भूल है, जैनशास्त्र फरमाते है अनुकंपा जरूर करना चाहिये.–

५८ जिन्होने जैनरामायण और जैनका पाडवचरित नही वाचा है. उसको अन्यमजहबकी, रामायण और, महाभारत सुननेसे बेशक!

रखते है. जमाना क्या! आजही बदलता है? वो तो हरवख्त समय समयपर बदलताही रहता है. तीर्थंकर रिषभदेव महाराजका जमाना अजितनाथजीके वख्त बदला, इसीतरह सब तीर्थंकरोके बाद जमाना बदलताही रहता है, इसमे कोइ नयी बात नही, अगर आप लोग अपने मनको काबुमे रखो. मनको न बदलो तो जमाना क्या करसकता है? जमाना चाहे जितना बदले, तुमकों इससे क्या? तुम अपने धर्म और कर्त्तव्यपर कायम रहो.–

६३ न्यूसपेंपरोके लिखनेवालोंकों मुनासिब हैं, अपने सामनेवाले न्युसपेपरके लेखपर समीक्षा करे तो गुस्सेकों शातकरके लेखलिखे, अपने लेखमें अपशब्द न लावे, प्रतिपक्षीके लेखकों इन्साफसे तोड देना इसीमें बहादूरी है, अपशब्द लिखनेमे बहादूरी नही, हरेक शख्शकों लाजिम है, अपने बरतावपर खयाल करे, दुसरोंको नाराजी पैदा हो वैसा बेइन्साफी लेख न लिखे, फर्ज करो! लेखमे एक शख्शने दुसरेको मायावादी कपटी वगेरा लिखा, सामने उनोनेभी ऐसा लिखा, देखिये! ऐसे लेखोंसे क्या फायदा होगा? सुशब्दोसे इन्साफी लेख लिखना और जबाब देना सबकों फायदेमद है, अगर कहाजाय समाजमे कुरवाज दाखिल होगये है, उनको निकालनेके लिये कठिनशब्द लिखने पडते है, जबाबमे तलब करो, समाजका कुरवाज क्या! कठिन शब्दोसे निकल सकता है? हर्गिज! नही, आपलोग अपने बरतावको सुधारो, धर्मपर कामील एतकात बने-रहो, और दुसरोके बहेकानेमे न आओ, ऐसा कियाजाय तो अपनाभी सुधारा होगा और समाजकाभी सुधारा होगा.–

६४ जब जवानी तशरीफ लाती है आदमी गाफिल बनजाता है सबब कि–उसकों अपनी खुबसुरतीका घमड आजाता है, मगर दुनियामें एकसे एक ज्यादा खूबसुरत मौजूद है, चालबाज औरत जब उसकों किसी तरहकी आफत आवे. जभी ठीकानेपर आती है. बगेर आफत आये चाहे जितनी उसको हिदायत करो अपने

खयाल शरीफमे नही लाती, हरेक मर्द या औरतकों याद रखना चाहिये अपनी करनी आपपर आयगी, गुनेहगारोंकों माफी देना गुनाहोकों बढाना है, गुनेहगारोंपर न मालुम किस वख्त आफत गुजरेगी. जिसका दिल नापाक उसकी इबादत जुठी, अगर किसी श्रावकने धर्मशाला बनवाइ और फिर उसको अपने मतलबके काममे लेवे तो धर्मविरुद्ध है. सगेसंबंधीको सांसारिक कामके लिये देवे तोभी अछा नही, धर्मका गुनाह है.–

६५ श्रावक जब रात्रीको शयन करे तो देवगुरुधर्मका स्मर्ण करके सोवे. दिनभरमें जो जो पापकर्म किये हो उसका मिथ्या दुस्कृत देवे. सब जीवोके शाथ मनवचनकायासें क्षमापना करे. किसीके शाथ वैर विरोध न रखे,–

खामेमि सव्व जीवे सव्वे जीवा खमंतु मे.
मित्तिमे सव्व भूयेसु वेर मझ न केणइ. १

सोतेवख्त चारोतरहके आहारका त्याग करे. और अपनी तमाम चीजोपरसे मोह छोडदेवे. प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति, अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशल्य, इन अठारे पापस्थानोका त्याग करे. और घर हाट हवेली कुटुंब परिवारको मनवचनकायासे अपना न समजकरके मनमे ऐसा विचार करे,

एगोहं नत्थि मे कोइ नाहमन्नस्स कस्सइ,
एवं अदीण मणसो अप्पाण मणुसासई, १
एगोमे सासओ अप्पा नाणदंसण संजुओ,
सेसा मे बाहिरा भावा सव्वेसंजोगलक्खणा. २
संजोगमूला जीवेण पत्ता दुखपरंपरा.
तह्मा संजोगसंबंधं सव्वंति विहेण वोसिरे,-३

जं जं मणेण बद्धं जं जं वायेण भासियं पावं.
जं जं काएण कयं मिच्छामि दुक्कडं तस्स, ४

यह चार गाथा पढकर सोते वख्त तीन नमस्कार मंत्र पढे, और देवगुरुधर्मका स्मर्ण करके सोजावे. अगर रात्रीमें अकसात उस शख्शका मरना होजाय तोभी उसकी अछीगति होगी, अगर कोइ शख्श धर्मकों न माने और इसबातपर हांसीकरे तो उनकी कोइ परवाह नही करना. जमाने तीर्थंकर देवोके भी कइ लोग धर्मकों नही मानतेथे और उनपर एतकात नही लातेथे, जो लोग देवगुरु धर्मकों पुन्यपापकों नरकस्वर्गकों और परलोककों न माने उनकों कोइ क्या! कहे? धर्म जोराजोरी नही होता; जिनकी मरजी हो धर्म करे,-

६६ रातके वख्त कमसेकम छहघंटे नींद जरुर लेना चाहिये. जिस रौज कमनींद लीइ होगी उस रौज बदहजमी होकर तमाम दिन बेचैनी बनी रहेगी, दिनमें नींद लेना ठीक नहीं, कितनेक कहाकरते है, अगर दिनमें हम न सोवे तो हमकों तकलीफ होती है. मगर यह सब कहनेकी बाते है, अपना दिल काबुमें नही और तकलीफका बहाना, हरशख्शकों लाजिम है सूर्योदय होनेसे पेस्तर बिछोनेसे उठजावे, उठतेही देवगुरुधर्मको याद करे और अपना जो स्वर चलता हो उस तर्फका पांव बिछोनेसे नीचे रखे, हरहमेश दंतमंजनके शाथ दातून करना मनुष्योका कर्तव्य काम है, दातून दश अंगुलसे कम लंबा न होना. पूरब या उत्तर दिशातर्फ मुखकरके दांतकों साफकरना और गरम या ठंडेपानीसे नहाना शरीर साफ होनेका सबब है, स्नान करनेसें पेस्तर बेला या चमेलीका तेल शरीरपर मसलना फायदेमंद है, कंजुस और गरीबोंकेलिये खोपरेल तेल या धूपेलही काफी समजो,-

६७ ठंडके दिनोमें बरफवाले या ठंडेमुल्कमें जाना ठीक नही. गर्मीके दिनोमें गर्म मुल्कमें जाना अछा नही. बारीशके दिनोमें

सफर करना ठीक नही, तकलीफ होगी. साधुजनोकोंभी चौमासेके दिनोमें सफर करना शास्त्रकारोनें मना फरमाया. जिस मुल्कमें या शहरमे सख्त बीमारी चलती हो, कमहिम्मतवालोंकों जाना ठीक नही. जिस मुल्कमे दुकाल पडा हो. राजाओकी लडाइ चलतीहो, ऐसी खौफकी जगह जाना अछा नही, जानका जोखम और दौलतका नुकशान होगा. दुश्मनभी अगर अपने घर आवे तो मान देना. मगर वो साफदिलसें अपनी भूल कुबुल करे और उसमुआफिक वरतावभी करे तो माफ करना ठीक, अगर भूल कुबुल न करे और वरतावभी ऐसा न करे तो जानना कोरी वाते है, छोटे गांवमे रहना फायदेमंद नही खानपान या अछा कपडा मिलेगा नही. धर्मशास्त्र सुननेका योग नही. और सत्संग मिलनाभी दुसवार होगा. इसलिये शहरमे रहना अछा है, दुकानमें वेठक पूरव उत्तर सन्मुख रखना कहा, मालिककी गादीपर मुनीम गुमास्ते नोकर चाकर कोइ वेठे नही, खुद मालिकही वेठे, अगर मालिक दुकानमे न हो या गेरमुल्ककी सफरको गयेहो, तो उतनी जगह खाली रहे, मगर दुसरा कोइ उसपर वेठे नही,–

६८ पेस्तर जब भारतवर्षमे युगलीक मनुष्य आबाद थे, वे लोग कल्पवृक्षोंसें जरूरी चीजे पाते थे, खानपानकी चीजे वगेरा कल्पवृक्षोमे पैदा होती थी, और उनके पुन्योदयसे उनको मिलती थी, अपने अपने युगलके शाथ अपनी कल्पतरुवाटिकामें रहते थे, जब उनका पुन्योदय कम होनेलगा कल्पवृक्षभी कम फल देनेलगे, जब सातमें कुलकर नाभिराजा और उनकेबाद जब अवल तीर्थंकर रिषभदेव राजाहुवे खेतीवाडी और वाणिज्य व्यापार शुरू हुवा, पूर्वकृतकर्मके उदयानुसार इसजीवकी बुद्धि होती है, शास्त्रोमे सुनते हो **बुद्धिः कर्मानुसारिणी,** हर मनुष्य अपने पूर्वकृतकर्मके मुताबिक नफा नुकशान पाता है, किसीकों ठोकर लगी और गिरगया, व्यापार किया और नुकशान पाया यह सब पूर्वकृतकर्मकाही

फल है, पूर्वकृतकर्म उसका नाम है, जो फल मिलनेसें पहले किया हो, चाहे इसी भवमें किया हो, या परभवमे, हरेक जीव अपनी अपनी करनीके मुताबिक फल पाते है, इसमे कोइ शक नही, जैसे जैसे मनःपरिणामसें पाप या पुन्य बंधे होगें, वैसे वैसे भोगने पडेगें, किसीका कोइ व्रत नियम टुट गया हो उसका दंड प्रायश्चित्त किसी पढेलिखे मुनिसें मीलकर पुछना चाहिये, पढेलिखे शास्त्रज्ञ मुनि मुताबिक धर्मशास्त्रके उसका प्रायश्चित्त उसको बतलावे, वो शख्श उसमुजब प्रायश्चित्त करे अगर अनिकाचितकर्म बंधे हो तो उस पापसें छुटसकेगें.

६९ स्वतंत्रता दौलत स्त्री कुटुंब परिवार और इज्जतपाना पूर्वकृतकर्मके उदयानुसार है, पूर्वभवमें पुन्य किया नही जिससें यहां दुख मिला, और यहां पुन्य करते नही, फिर आइंदे सुख कैसे मिलेगा, इस बातकों सोचो! मनुष्यका जन्म पाना बडेही पुन्यके ताल्लुक है, मनुष्यजन्म पाया मगर सत्यधर्मपर श्रद्धा बेठना इससेभी ज्यादा पुन्यके ताल्लुक है, हरशख्श्कों लाजिम है धर्मशास्त्रकों सीखे पढे और मुताबिक उसके बरताव करे, दुनियाके कारोबार तो ऐसेंही चलते रहेगें, जो कुछ परलोकका रास्ता साफ करलिया वही आगेकों फायदेमंद होगा, जो शख्श खानपानमें कंजुसाइ नही करता, और मुताबिक अपनी ताकातके धर्म करताहै, वो बेशक! ठीक है, तकलीफके वख्त कोइ जामीन न होगा, और जब उम्र पुरी होगी कोइ उसको लंबी करसकेगा नही, दौलत यहांही पडी रहेगी, कोइ किसीके शाथ जाता नही, समजसको तो समजलो! दुनियामें सारवस्तु एक धर्म है.

७० कोइ शख्श दुनियादारीके काममें लगरहा है, मगर मन उसका संसारसें नाराज है उसकों सम्यक्दृष्टिजीव समजना, आराममें तकलीफ और तकलीफमें अचानक आराम पेंशहोना यही शुभाशुभकर्मके उदयकी साबीती है, सम्यक्दृष्टिजीवकों पापमें

रसबंध कम पडता है, और पुन्यके कामसें ज्यादा पडता है, सामान्य उपयोगका नाम-दर्शन और विशेष उपयोगका नाम ज्ञान है, ज्ञानदर्शनके उपयोगकी एकाग्रता होना उसका नाम भावचारित्र है, व्यवहारसे व्रतनियम करना उसका नाम द्रव्यचारित्र है, पुन्यानुबंधिपुन्यके उदयविना मनके इरादे सुधरते नही, किसीकों बेठेहुवे अचानक दिलमें खोफ पैदा होजाना यह मोहकर्मका उदय जानना, किसी कामकेलिये तयारी करो सामग्री मिलाओ और वो सामग्री बिखरजाय, तयारी न किइ हो सामग्रीभी न मिलाइ हो और कार्य बनजाय यही शुभाशुभकर्मका उदय समजना, जैनलोग जो वनस्पतिमे जीवोंका होना मानते है, आजकल सायन्सवालेभी इस बातको मंजुर रखते है, बयान तालीमधर्मशास्त्र खतम हुवा.—



## [ सवाल-जवाब—मजहबे जैन ]

इसमे मुश्किल मुश्किल सवालोंके जवाब दर्ज है, ईश्वर किसकों कहना? कर्म जीवके शाथ किस संबंधसे रहते है, वगेरा बयान मिलेगा.

१ सवाल, ईश्वर किसकों कहना?

(जवाब.) जिसकों रागद्वेष हास्य रति अरति भय शोक काम जुगुप्सा नींद और अज्ञान वगेरा दोष न हो, उसको ईश्वर कहना चाहिये, सर्वज्ञ परमात्मा वीतराग देवाधिदेव अरिहंत तीर्थंकर जिनेंद्र सच्चिदानंद निर्विकार अजर अमर ये सब उसीके नाम है.

२ सवाल, मुक्तजीव मोक्षस्थानको किसतरह जाते है?

(जवाब.) जैसे मीटीके लेपसें वजनदार तुंबा पानीमें डुबाहुवा रहता है, मगर उस तुंबेकी मीटी छुटनेसे वो पानीके उपर आजाता है, वैसे कर्मबंधन छुटनेसे जीव लोकके अग्रभागमे मोक्षस्थानपर आजाता है, और जन्म-मरणसें रहित होजाता है, मुक्तिपाकर फिर दुनियामें आये तो वो मुक्ति क्या हुइ,

३ सवाल, कर्म जीवके शाथ किस संबंधसें रहते है?

(जबाव.) कर्म इस जीवके शाथ संयोगसंबंधसे रहते है, और वो संयोगसंबंध एक कर्मकी अपेक्षा सादी और अनेक कर्मकी अपेक्षा अनादि है, जैसे मीटी और सोनेका संबंध अनादि है, मगर उपाव करनेसें मीटी और सोना अलग हो सकता है, वैसे सम्यग्दर्शन ज्ञान और चारित्रसे जीव कर्मसें अलग हो सकता है, चौदहपूर्वके पढेहुवे और यथाख्यात चारित्रके पालनेवालेभी मिथ्यात्वके उदयसे संसारसमुद्रमें डुबजाते है, सबुत हुवा, श्रद्धागुण बडा है, अगर द्रव्यचारित्र न हो तोभी श्रद्धा और ज्ञानसें जीवकी मुक्ति हो सकती है.–

४ सवाल, सृष्टि किसकों कहना?

(जवाब.) जो उत्पत्ति विनाश और स्थिति करके सहित हो उसका नाम सृष्टि है, सृष्टि कहो, चाहे दुनिया कहो, बात ए कही है, दुनियामें एक पदार्थ एक आकारसें बदलकर दुसरे आकारमें होगया. और दुसरा पदार्थ योगानुयोग मिलनेसें तीसरे आकारमें होगया, इसीतरह प्रवाहरूपसें दुनिया अनादि है, और सब जीव अपने अपने कियेहुवे भलेबुरे कर्मोंसें सुख दुख पाते है, यह एक सिधी सडक है,–

५ सवाल, स्त्री मोक्ष पासकती है, या नही?

(जवाब.) स्त्री अगर सम्यग्दर्शन ज्ञान और चारीत्रका पालन करे तो मुक्ति क्यौ न पासके? जरुर पासके. चाहे पुरुष हो या स्त्री जो धर्म करे उसकेलिये मुक्ति मिलसकती है,–

६ सवाल, जीव साकार है या निराकार?

(जवाब.) जबतक जीव देहधारी है, साकार है. जब मुक्त होगा निराकार है.–

७ सवाल, व्याख्यान वांचते वख्त या तमामदिन जैनमुनिको मुखपर मुखवस्त्रिका बांधना किस जैनशास्त्रमे लिखा है?
( जवाब. ) किसी जैनशास्त्रमें नही लिखा. अगर लिखा हो तो कोइ पाठ बतलावे. बल्कि! हाथमें रखना ओघनिर्युक्ति-शास्त्रमे लिखा है.—

८ सवाल, कस्तूरी सचित है या अचित?
( जवाब. ) कस्तूरी अचित है.—

९ सवाल, जीवका लक्षण क्या? और ईश्वरके शाथ उसका क्या संबंध है?
( जवाब. ) चेतनालक्षणो जीवः चेतनायुक्त होना यह जीवका लक्षण है, जीवका ईश्वरके शाथ कोइ संबंध नही, जीवमें ईश्वर होनेका सामर्थ्य है, जब धर्मकरके मुक्ति पायगा. यही जीव ईश्वर बनेगा, दरअसल! ईश्वर एक नही, जो जो मुक्त होते है, ईश्वर कहलाते है. सामान्यरूपसें एक ईश्वर मगर व्यक्तिरूपसें अनंत ईश्वर है. जिसजिस जीवने धर्म करके मुक्ति पाइ—वे सब ईश्वर है,—

१० सवाल, वसुधारा और घंटाकर्णमंत्र जैनाचार्योंका बनाया हुवा है या दुसरोंका?
( जवाब. ) जैनाचार्योंका बनाया हुवा नही. बल्कि! बौध-मजहबके आचार्योंका बनाया हुवा है.—

११ सवाल, केवलज्ञानी न देखे ऐसी चीज दुनियाभे कोइ है—
( जवाब. ) केवलज्ञानी दुनियाके सब पदार्थ अपने ज्ञानसें देखते है, मगर उनकों संसारी जीवकीतरह स्वप्न नही आता. दर्शनावरणीय कर्मका उनको बिल्कुल नाश होगया है. जब नींद नही तो स्वप्न कहां? हा! दुसरेकों कोइ स्वप्न दिखाइ देरहा है, उसके स्वप्नकों केवल ज्ञानी देखते है, मगर खुदकों नींदही नहीआती तो स्वप्न कैसे दिखाइदे? इसलिये केवलज्ञानी खुद स्वप्न नही देखे ऐसा कहना बनसकता है,—

१२ सवाल, जैनमुनिकों चौमासेमें एकगांवसे दुसरे गांव जानेकी छुट है या नही?

(जवाब.) सबब आनपडनेसें जैनमुनिकों चौमासेमें-एकगांवसें दुसरे गांव जानेकी छुट है. कभी हेजे वगेराकी बीमारी चले कभी ऐसा मौका आनपडे, उस गांवमें भिक्षा न मीले, राजकी तर्फसें कोइ इजा हो. या कोइ अपनेकों सख्त बीमारी आनपडे तो चौमासेमेंभी विहार करसके, ऐसा कल्पसूत्रवृत्तिमें पाठ है,-

अशिवे भोजनाप्राप्तौ राजरोगपराभवे,
चातुर्मासिकमध्येपि विहर्तुं कल्पतेन्यतः १

१३ सवाल, तीर्थंकर महावीरका और गौतमवुधका कभी रुवरु मिलना हुवा था या नही?

(जवाब.) जैन्न और बौधमजहवके शास्त्र देखनेसें पाया जाता है, दोनोंका रुवरू मीलना नही हुवा, न धर्मचर्चा हुइ. दोनों मुल्कमगधमें विचरतेथे, इतना सवुत वेशक! मीलता है, गौतमनामसें चार महाशय हुवे, तीर्थंकर महावीरके अवल नंबरके चेले गौतम गणधर, दुसरे गौतमवुध, तीसरे वैदिक मजहबके गौतमरिषि, और चोथे नैयायिकमजहके गौतमरिषि,

१४ सवाल, जीव अनंत है, और उनमेसे मुक्ति जानेवाले जीव कम होते जायगें, फिर कभी बिल्कुल अंतभी आजायगा.

(जवाब.) जितने जीव मोक्ष जायगें उतने वेशक! घटेगें. मगर अनंतका अंत नही आसकता. अगर अंत आजाय तो फिर उसका नाम अनंत कैसे होसके? जो जो मजहबवाले दुनियामें जीवोकों अनंत नही मानते, और अमुक संख्यायुक्त मानते है, उनसे पुछाजाता है. यातो दुनिया कभी खाली हो जाना चाहिये, या मुक्तिमेसें वापिस आना चाहिये, संसार और मुक्ति हमेशांसें है, एक खाली होजाय और एक भरजाय ऐसा होसकता नही.

१५ सवाल, तीर्थंकर रिषभदेव महाराजकी मूर्त्तिको लंकामे राजा रावणने पूजी जब रामचंद्रजीने लंकाकों फतेह किइ, उसमूर्त्तिकों उत्तरा खडमे लाये, जो हाल मुल्क मेवाडमें केशरीयाजीके नामसे मशहूर है, सवाल पैदा होनेकी जगह है, इतने कालतक पाषाणकी मूर्त्ति कैसे कायम रही?

(जवाब.) जिस मूर्त्तिको अधिष्ठायकदेव हिफाजत करनेवाले बने वो मूर्त्ति असंख्यात कालतक कायम रहसकती है,–

१६ सवाल, तीर्थंकर महावीरस्वामीके पांवको चंडकोशिक सर्पने काटाथा, वो बनाव मुल्क मारवाडमे बनाथा? या पूर्वमें?

(जवाब.) छद्मस्थ हालमे तीर्थंकर महावीर स्वामी मुल्क मारवाडमें तशरीफ नही लाये, चंड कौशिक सर्पने मुल्क पूरबमे उनके पांवको काटाथा. कल्पसूत्रमें साफ बयान है, जिनको शक हो, देखलेवे, मुल्क मारवाडमे नादिया गांवके पास उसकी स्थापना किइगइ है, असल बनाव मुल्क पूरबमे श्वेतांबिका नगरीके रास्तेमे बनाथा,–

१७ सवाल, हरेक कालचक्रके अर्धभागमे तीर्थंकर देव चौइसही होते है, तेइस या पचीस क्यों नही होते?

(जवाब.) उतनेही तीर्थंकर अपने तीर्थंकर नाम कर्मके फलको भोग सकते है, पचीसमा कोइ शख्श जो तीर्थंकर नाम कर्म हासिल करनेके काबील हो, वो हासिल करसकता है, मगर उसका फल भोगनेके वख्तसे पहले कालचक्रका आधाहिस्सा खतम होजाता है. बस! चौइस तीर्थंकर होनेका यही सबब है, दुसरा नही.

१८ सवाल, सामान्यकेवली और तीर्थंकरमें फर्क क्या?

(जवाब.) केवलज्ञानकी अपेक्षा दोनो समान है, मगर पुन्यकी अपेक्षा तीर्थंकरके पुन्य ज्यादा है. तीर्थंकरकेलिये देवता समवसरणकी रचनाकरे, सामान्यकेवलिकेलिये समवसरणकी रचना नही करे,

१९ सवाल, जिनमंदिरके दियेकी रोशनीसें दुनियादारीके कागज पत्र वाचना मुनासिव है?

(जवाब.) देवद्रव्यकी चीजसें दुनियादारीका काम लेना मुनासिव नही.

२० सवाल, एक जैनतीर्थका देवद्रव्य दुसरे जैनतीर्थमें और एक जैनमंदिरका देवद्रव्य दुसरे जैनमंदिरमें लगाना चाहे तो लगसके या नही?

(जवाब.) एक जैनतीर्थका या एक जैनमंदिरका देवद्रव्य दुसरे तीर्थ और मंदिरमें लगसके, सब जैनतीर्थोंमें और मंदिरोमे तीर्थंकर देव एक समान है.—

२१ सवाल, नागरवेलके पान बहुतदिनोंतक हरे बनेरहते है, उनको वनास्पतिमें गिनना या नही?

(जवाब.) जबतक हरेबनेरहे वनास्पतिमें गिनना चाहिये, केले नारीयल अनार अंगुर आम वगेरा जबतक हरे बनेरहे तिथिके रोज श्रावककों खाना मुनासिब नही.—

२२ सवाल, बरसातकी पैदाश कैसे होती है? चौमासेमें ज्यादा और दुसरी रुतुमें कम क्यों? किसी जगह ज्यादा और किसी जगह कम होनेका सबब क्या है?

(जवाब.) अपकायके जीवोका पीड जो आसानमें बंधाता है, जिसको जाहिरातमे बदल कहते है, उनहीके परिपक्व होनेसे बरसातकी पैदाश है, चौमासेके दिनोंमें ज्यादा और दुसरी रितुमें कम होनेका सबब उनउन रुतुका यही स्वभाव है, किसी जगह ज्यादा और किसी जगह कम गिरनेका सबब जिस जगहके जीवोंके पुन्य ज्यादा वहा वारीश ज्यादा और जिस जगहके जीवोंके पुन्य कम वहां वारीश कम होगी ऐसा जानना.—

२३ सवाल, शत्रुंजयतीर्थपर जो रायण वृक्ष है, तीर्थंकर रिषभदेवके वख्तका है या दुसरा?

( जवाब. ) दुसरा है, तीर्थंकर रिषभदेव महाराजके वख्तका वृक्ष आजतक नही रहसकता. सबब वनास्पतिकायका इतना वडा आयुष्य नही, एक वृक्ष गिरा दुसरा पैदा हुवा, जैसे एक मंदिर पुराना हो कर गिरा. किसी खुशनसीबनें दुसरा नया बनाया. जबजब तीर्थका उद्धार कराया जाता है. सब चीज नयी बनाइ जाती है.-

२४ सवाल, खास जिनमंदिरमें या रंगमंडपमे घासलेट ग्यास या विजलीकी रौशनी करना चाहिये या नही?

( जवाब. ) खास जिनमंदिरके गर्भद्वारमे या रंगमंडपमे घृत तेल या खोपरेलकी रौशनी करना चाहिये, रंगमंडपके बहार घासलेट ग्यास या विजलीकी रौशनी करे तो कोइ हर्ज नही.-

२५ सवाल, तीर्थंकरके समवसरणमे सामान्यकेवली आवे तो तीर्थंकरको नमस्कार करे या नही?

( जवाब. ) सामान्यकेवली जब समवसरणमे आवे तब तीर्थंकरोंको तीन प्रदक्षिणा देवे, और नमो तीथ्थस्स ऐसा कहे, आवश्यकसूत्रकी निर्युक्तिमे ओर टीकामे लिखा है, केवलिनः- जिन त्रिप्रदक्षिणीकृत्य तीर्थप्रणामं च कृत्वा नमः तीर्थाय इति उपनिपीदंति,

२६ सवाल, जीन सावद्य या निर्वद्य?

( जवाब. ) जिसवख्त आश्रवमें वर्ते सावद्य जब संवरमें वर्त्ते निर्वद्य कहना,-

२७ सवाल, पहले वृक्ष हुवा या बीज? पहले मुर्गी या अंडा पहले स्त्री या पुरुष?

( जवाब. ) वृक्ष और बीज मुर्गी अंडा या स्त्री पुरुष अनादि है, इनमें एक दुसरेकों पहले पीछे कहना नही बनसकता,-

२८ सवाल, केवलज्ञानी जो समुद्घात करते है, - इसका क्या सवव हे? और उसमें कितना असो लगता है?

(जवाव.) वेदायुषः स्थितिन्यूना सकाशाद् वेद्यकर्मणः
तदा तत्तुल्यतां कर्तुं समुद्घातं करोत्यसौ, १
दंडत्वं च कपाटत्वं मंथानत्वं च पूरणं
कुरुते सर्वलोकस्य चतुर्भिः समयैरसौ, २
एवमात्मप्रदेशानां प्रसारणविधानतः
कर्मलेशान् समीकृत्योत्क्रमात् तस्मान्निवर्तते, ३

केवलज्ञानीकों जव वेदनीयकर्मकी स्थितिसे आयुष्यकर्मकी स्थितिकम रहजाय तव उसकों समान करनेकेलिये समुद्घात करनेकी जरूरत पडती है, पहले समय अपने आत्मप्रदेश निकालकर उर्द्धअधोलोकांततक दंडआकार रचना करे, दुसरे समय पूर्वपश्चिम समुद्रतक कपाटके आकार रचना करे, तीसरे समय उत्तरदक्षिणसमुद्रतक मथानके आकार रचनाकरे, और चौथे समय अंतरापूर्णकरके चतुर्दशरज्वात्मक लोककों अपने आत्मप्रदेशोंसें व्याप्तकरे, पांचमे समय अंतरापूर्त्ति संहरणकरे, छठेसमय मंथानका संहरण करे, सातमें समय कपाटका संहरण करे, और आठमे समय दंड आकारका संहरण करे, इसका नाम केवलीसमुद्घात है,

२९ सवाल, ग्रहोंका उदय अस्त क्या चीज है?

(जवाव.) ग्रह जव सूर्यके शाथ एक राशिपर आवे तो अस्त हुवा, और जव दुसरी राशिपर चलाजाय उदय हुवा कहना, यह एक स्थूल वात लिखीगइ है, वारीक वात नजुम पढनेसें मालुम होसकेगी.–

३० सवाल, देवद्रव्य किसको कहना? और किसकिस काममे लगसके?

(जवाब.) देवद्रव्य उसकों कहना जो देवके निमित्त बोलागया हो, और वो जिनमंदिर और जिनमूर्त्तिके काममे ही लगसके, दुसरे किसी काममें नही लगसके, देवद्रव्यसें मकान हाट हवेली या शस्ते भाडेकी चाली बनाकर भाडे देना ठीक नही. देवद्रव्यसे अपना फायदा लेना बहेत्तर नही, जिसको देवपर श्रद्धा कम हो-वे-ऐसी सलाह देते है, पुराने जैनतीर्थ और पुराने जैनमंदिर जहां मरम्मत होना दरकार है, उसमे देव-द्रव्य क्यों न लगायाजाय, तीर्थ और मदिर बने रहेगें तो जैनधर्मभी बना रहेगा, आजकलके कितनेक साधु और श्रावक बाते बनाते है, देवद्रव्यसें शस्ते भाडेकी चाली बनाना और जैनोकों भाडे देना, मगर पुराने जैनतीर्थ और पुराने मदिरोंकों सुधारनेकी बात क्यों नही बोलते? क्या! देवद्रव्यसे अपना मतलब लेना यहभी कोइ जैनशास्त्र फरमाता है? अगर नही फरमाते तो फिर मनघडंत बात क्यों पेंशकरना?

३१ सवाल, जिनमंदिरके द्रव्यसें जिनमंदिर बनवाया हो, उसमे जाकर साधु महाराज दर्शन करे और श्रावक पूजाकरे तो दोष लगे या नही?

(जवाब.) दोष नही लगे, जहा इरादा धर्मका हो, वहा दोष कैसे लगे, मंदिरमे बेठकर दुनियादारीका काम करे तो बेशक! दोष है, पूजन या दर्शन करनेमें कोइ दोष नही.—

३२ सवाल, जमाने हालमे इस भारतवर्षसें मुक्ति होना बद क्यों हुवा?

(जवाब.) पूर्ण धर्मध्यान और शुक्लध्यानका होना बद हुवा. इसलिये इस भरतक्षेत्रसें मुक्ति होनाभी बद हुवा.—

३३ सवाल, पृथवी पानी अग्नि वायु और वनास्पतिकायके जीवोंसें जो जो मनुष्य और जानवर आराम पाते है, उसका पुन्य पृथवी पानी वगेराके जीवोंकों होवे या नही?

(जवाब.) पृथवी पानी वगेराके जीवोंका इरादा नही, हमसे ये सुखपावे, इसलिये उनको पुन्य नही, जब वे मरकर एकेंद्रिय हुवे तब उनके मनःपरिणाम अशुभ थे, अशुभपरिणाम अबतक बदले नही, इसलिये उनकों समयसमयमे पापकर्म बंध रहा है.—

३४ सवाल, प्रमाण अंगुल, आत्म अंगुल, और उत्सेध अंगुल किसको कहना?

(जवाब.) उत्सेध अंगुलके प्रमाणसें पांचसो धनुष्यके उंचे मनुष्यकी एक अंगुलकों प्रमाण अंगुल कहना, आत्मअंगुल हरेक तीर्थंकरके जमानेमें हरेक मनुष्यकी अगुलसें जानना, उत्सेध अंगुल चक्रवर्त्तिके कांकणीरत्नसमान लंबाचोडा जानना, अनुयोगद्वारसूत्रमें अंगुलसीतिरीप्रकरणमे और लोकप्रकाशमें इनके भेदानुभेद लिखे है, देखलो!

३५ सवाल, मद कितनी तरहके होते है?

(जवाब.) जातिमद, लाभमद, कुलमद, ऐश्वर्यमद, बलमद, रूपमद, तपमद और ज्ञानमद ये आठतरहके मद होते है, जो शख्श जातिका मद करता है, अगलेजन्ममें नीचजातिमे पैदा होता है जो शख्श लाभका मद करता है, अगले जन्ममें निर्धन होता है, जो शख्श कुलका घमंड करेगा, अगले जन्ममें नीचकुलमे पैदा होगा, ऐश्वर्यका घमंड करेगा, अगले जन्ममें ऐश्वर्यसें रहित होगा, बलका घमंड करेगा, निर्बल होगा, रूपका मद करेगा, अगले जन्ममें बदशिकल होगा, तपका मद करेगा, तपरहित होगा, और जो शख्श ज्ञानका मद करेगा, अगले जन्ममे ज्ञानरहित होगा.—

जातिलाभकुलैश्वर्य-बलरूपतपःश्रुतैः
कुर्वन्मदं पुनस्तानि-हीनानि लभते नरः १
अंतरायक्षयादेव-लाभो भवति नान्यथा,
ततश्च वस्तुतत्त्वज्ञो-नो लाभमदमुद्वहेत् २

अपने अपने अंतराय कर्मके क्षयसेंही इस जीवकों फायदा होता है, अगरचे अंतराय कर्मका क्षय न हुवा हो तो चाहे जितनी कोशीश करो कभी फायदा न होगा, इसलिये शास्त्रके जानने वाले पुरुष किसी बातका घमंड नही करते, और अपने पूर्वकृत कर्मके उदय तर्फ खयाल करते है,–

६ सवाल, जिनमंदिरमें जो चक्रेश्वरीजी, पद्मावतीजी, या माणिभद्रजी वगेरा अधिष्ठायक देवदेवीकी मूर्त्ति होती है, उसको केशर चंदन धूपसें पूजा करते है, उनकी आरति उतारते है. उनके सामने चावलोका स्वस्तिक करते है, और धनदौलत मागते है, यह बात उनकों लाजिम है, क्या,?

(जवाब.) लाजिम नही. बल्कि! मुताबिक जैनशास्त्रके यह सब बाते खिलाफ है, चक्रेश्वरीजी पद्मावतीजी गोमुख यक्ष और माणिभद्रजी ये तीर्थंकर देवोके शासनके रक्षकदेव है, उनकी पूजा आरति नही करना चाहिये, उनके सामने चावलोंका स्वस्तिक नही करना, न धनदौलत मांगना, सिर्फ! जिनमूर्त्तिके दर्शन किये बाद अधिष्ठायक देवोंसें जयजीनेंद्र कहकर चलेजाना. पूजा आरति तीर्थंकरदेवोकी होती है, अधिष्ठायक देवोंकी नही होती, धनदौलत और सुखदुख होना अपने अपने पूर्वसंचित कर्मके उदयानुसार है, जैनमजहब कर्म प्रधान है, इसमें सुखदुख देनेवाला शिवाय कर्मके दुसरा कोई नही,–

२७ सवाल, महाविदेहमें जो विहरमान तीर्थंकर होते है, उन सबके पाच पांच कल्याणिक होते है या कमी वेंसी?

( जवाब. ) महाविदेहमें विहरमान तीर्थंकरकेभी पांचपांचही कल्याणिक होते है, कमीवेंसी नही होते.–

३८ सवाल, एक विहरमान तीर्थंकर दुसरे विहरमान तीर्थंकरसें मीले या नही?

( जवाब. ) नही मीले, क्यौकि उनकी पैदाश जुदीजुदी विजयमें होती है, भरत ऐरावर्त और महाविदेहकी बत्तीस बत्तीस विजयमें मीलाकर ज्यादहसें ज्यादह विहरमान तीर्थंकर (१७०) होते है, मगर एक दुसरोंका रुवरु मीलना इसलिये नही बनता कि–सब अलग अलग विजयमें पैदाहोते है,–

३९ सवाल, मनुष्यके हाथसें देवताका मृत्यु होसके या नही?

( जवाब. ) नही होसके, अपनी पुन्यवानीके सबब मनुष्य देवताकों अपना तावेदार बनासके, मगर उसकों जानसे नही मारसके,–

४० सवाल, अगर कोइ जीव माताके गर्भमेंही मरजावे तो वो परभवका आयुष्य कब बांधे?

( जवाब. ) माताके गर्भमेंही वो जीव अपनी मृत्युसें पहले परभवका आयुष्य बांधकर मरे,–

४१ सवाल, अगर कोइ कहे किसी श्रावककों सामायिकसूत्र न आता हो तो उसको सामायिक उचराना ठीक है, मगर उसके सामायिकका वख्त खतम होनेपर पारनेका पाठ बोलकर उसका सामायिक पराना नही, सबब कि–वो उक उठकर किसीकामका आरंभ करेगा तो उसका पाप अपनेकों लगेगा,

( जवाब. ) उसके कियेहुवे पाप या पुन्यका फल उसको है, सामायिक परानेवालेको नही, क्यौंकि सामायिकपूर्ण करानेवालेका इरादा मजकुर व्रत पूर्ण करानेका है, थोडे पढे हुवे इसबातको न समजे तो उनके कर्मका दोष है, जैनशास्त्र साफ साफ बयान करते हैं जैसा मनःपरिणाम वैसा फल,–

४२ सवाल, कौन कौनसे जीव किसकिस इंद्रियके वशमे पडकर तकलीफ पाते है?

(जवाब.) स्पर्श इंद्रियके वशमें पडकर हाथी तकलीफ पाता है, जिव्हा इंद्रियके वशमें पडकर मछली तकलीफ उठाती है, नाशिका इंद्रियके विषयसें भमरा, नेत्रइंद्रियके विषयसें पतंगीये और कानइंद्रियके विषयसे हिरन तकलीफ पाता है, एक एक इंद्रियके विषयसे यह हाल है तो पांचोंइंद्रियोंके वशमें पडनेसें न मालुम क्या हाल होगा? अकलमंद लोग खुद सोच लेवे.-

४३ सवाल, किस किस वख्त मनुष्य दिवाना बनजाता है.-

(जवाब.) छोटेलडकेकों खेल करातेवख्त मनुष्य दिवाने जैसा बनजाता है, लडकपनके दोस्तोसें मिलतेवख्तभी दिवाना बनता है, शराब पीनेकेबाद नशेमे आतेवख्त-आरीसेमें मुख देखतेवख्त-विवाह सादीमें औरतोंके गीत सुनतेवख्त-होलीके दिनोंमें गानागातेवख्त-इतनीजगह मनुष्य दिवाना बनजाता है.

४४ सवाल, अनित्य अशरण वगेरा बारा भावना किसकिसने अमलमें लाइ?

(जवाब.) अनित्य भावनाका पुरेपुरा अमल भरतचक्रवर्तीने किया, और उससे उनकों केवलज्ञान पैदा हुवा, अशरण भावनासें अनाथी मुनिकों धर्म उदय आया, संसार असार भावनासें धन्ना शालिभद्रजीकों वैराग्य पैदा हुवा, एकत्वभावनासें नमिराजाजीकों चारित्रधर्म मीला, अन्यत्वभावनासें मृगापुत्रकों धर्म प्राप्त हुवा, अशुचिभावनासें सनत्कुमार चक्रवर्तीकों संयम उदय आया, आश्रवभावनासें समुद्रपालकों धर्मकी पाबंदी हुइ, संवरभावनासें जैनाचार्य केशीकुमारकों और गौतमगणधरकों धार्मिक फायदा हुवा, निर्जराभावनासें अर्जुनमालीकों धर्म प्राप्त हुवा, लोक स्वरूपभावनासें शिवराज

रिपिकों अवधिज्ञान पैदा हुवा, धर्मभावनासें धर्मरुचि अणग
रकों और वोधिवीजभावनासें तीर्थंकर रिषभदेवमहाराज
(९९) वेटोंकों धर्म प्राप्त हुवा.–

४५ सवाल, आजकल जो लोग मातापिता वगेराका श्राद्ध करते
जैनमजहवमे इसतरह करना हुक्म है, या नही?
(जवाव.) नही है, जिसजिस महिनेमें मातापिताका मृत्यु हु
हो, उस तिथिके रौज जैनगृहस्थको देवपूजनमें वृद्धि करन
धर्मशास्त्र सुनना, स्वधर्मिवात्सल्य करना हुक्म है, मरनेव
लोके पीछे गौदान शय्यादान वस्त्रदान और अन्नदान करन
और कहना ये चीजे उन मरनेवालोको परलोकमें पहुंचेग
ऐसा जैनशास्त्र नही फरमाते.

४६ सवाल धर्म और पुन्यमें क्या फर्क है?
(जवाव.) धर्म अरूपी और पुन्य रूपी है, आत्मिकगुण पैद
होना उसका नाम धर्म है, और शुभकर्मके पुदगलोंका संच
होना उसका नाम पुण्य है.

४७ सवाल, शुक्लपक्षी और कृष्णपक्षी जीवका लक्षण क्या है?–
(जवाव.) जिसको अर्द्धपुदगल परावर्त कालतक संसार
जन्म-मरण करना वाकी है, उसकों शुक्लपक्षी जीव कहन
जिसको इससें ज्यादा जन्म-मरण करना वाकी है, उसक
कृष्णपक्षी जीव कहना, कृष्णपक्षी जीव दुर्लभवोधी और शुक्लपक्ष
जीव सुलभवोधी होता है, सुलभवोधी जीवको तालीम धर्मक
दो फौरन! असर होगा, कृष्णपक्षी जीवकों असर न होगा.

४८ सवाल, जैनमजहवमें पंचांगी किसकों कहते है? और प्रकरण
ग्रंथ उसमें सामील जानना या जुदे?
(जवाव.) सूत्र भाष्य टीका निर्युक्ति और चूर्णि इनपांचोके
जैनमजहवमें पंचांगी कहते है, और प्रकरणग्रंथ पंचागीके अंत

४९ सवाल, अगर शास्त्र बाचते किसीतरहका शक पैदा हो तो किससें पुछना?

(जवाब.) पढेलिखे जैनमुनिजनोंसें पुछना और अपना शक-रफा करना, या खुद इल्म पढकर शास्त्र देखना, और शक मिटाना, अगरदेव आराधनकरके विहरमान तीर्थंकरोसें पुछना हो तो वोभी शक मिटानेका एक रास्ता है.—

५० सवाल, जैनमजहबमे जो आठतरहके कर्म माने है, उनकी अलग अलग ताहसीर क्या समजना?

(जवाब.)

गाथा—पडपडिहारसिमज्ज-हडचित्तकुलालभंडगारीणं
जहएएसिंभावा-कम्माणवि जाण तहभावा, १

ज्ञानावरणीय कर्मकी ताहसीर ऐसी है जैसे किसी शख्शकी आखोंपर कपडेका पाटा बांधदियाजाय और वो पाटा उसकी नजरकों रोके वैसे ज्ञानावरणीय कर्म इस जीवके ज्ञानकों रोकता है, वो शख्श पढना चाहे मगर पढा न जाय, दर्शनावरणीय कर्मकी ताहसीर इसतरह है जैसे किसी राजाको मीलना हो मगर पहरेदार जाने न दे तो मीलना न होसके, इसीतरह दर्शनावरणीय कर्मके उदयसें इस जीवकी श्रद्धा धर्मपर न बेठे, चाहे जितना शास्त्र सुनाओ मगर असर न होगा वेदनीय कर्मकी ताहसीर ऐसी है जैसे कोइ शख्श तलवारपर सहेत लगाकर अपनी जबानसे चाटे तो पहले सहेतका सवाद मीले. मगर तलवारकी धारसे जबान कट जानेका जोखम है, ज्यादा भोगविलाससे बदनमे तकलीफ होनेका खौफ होगा. मोहनीय-कर्मकी ताहसीर इसतरहकी है जैसे किसीने शराब पीइलिइ हो और नशेमें चकचूर होकर अपना होश भूल जाता है. वैसे मोहनीयकर्मके उदयसें जीव परवश होकर तकलीफ पाता है. इश्कके फंदेमे पडकर दौलत खोदेता है, और पीछेसे

पस्ताता है, आयुष्यकर्मकी ताहसीर इसतरहकी है. जैसे किसी शख्शका पांव लकडेके खोडेमें बंदकर दिया जाय और वो चलसके नही, इसीतरह जबतक आयुष्यकर्म बंधा है दुखसें छुटना चाहे तोभी छुट नही सकता. नामकर्मकी ताहसीर ऐसी है, जैसे चित्रकार तरहतरहके चित्र बनाता है, नामकर्मके उदयसें तरहतरहके स्वरूप बनते हैं, कोइ शख्श काला कोइ गोरा कोइ खूबसुरत कोइ बदसुरत ये सब नामकर्मके उदयकाही सबब है, गोत्रकर्मकी ताहसीर ऐसी है, जैसे कुंभार तरहतरहके बर्तन बनाता है, गोत्रकर्मके उदयसें जीव उंच नीच गोत्र पाता है, अंतरायकर्मकी ताहसीर ऐसी है, जैसे राजाका खजानची न हो तो एकदफे रुपये पैसेके लिये ठहरना पडता है, अंतरायकर्मके उदयसें इस जीवको हरेक चीजके मीलनेमें अंतराय आनपडती है, ये बनाव सब अपने अपने पूर्वसंचित कर्मके उदयसेही बनते है, इसीलिये जैनलोग कर्मकोंही प्रधान मानते है,-

५१ सवाल, विनामरजी किसीके जोर शोरसें अन्यदेवकों अन्य गुरुकों और अन्यधर्मकों वंदन नमन करना पडे, तो अतिचार लगे या नही?

(जवाब.) आवश्यकसूत्रके छठे अध्ययनमें बयान है, **नन्नथ्थ रायाभियोगेणं गणाभियोगेणं बलाभियोगेणं देवयाभियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं राजाभियोगादिना अन्यतीर्थिकपाषंड्यादिषु दानादिकुर्वतोपि न सम्यक्तकस्यातिचारः**-विनामरजी किसी अन्य देवकों अन्य गुरुकों और अन्य धर्मकों राजा साहबके हुकमसे वंदन नमन करना पडे तो अपनी धर्मश्रद्धामें खलल नही आसकता, अपनी समुदायके दबावसें या किसीके बलात्कारसें वंदन नमन करना पडे तोभी अपनी धर्मश्रद्धामें खलल नही

आता, किसी देवताके दबावसे या अपने गुरुके निग्रहसें या दुष्काल वगेराके सबब आजीविका न चलती हो ऐसे संकटके वख्तमें विना अपनी मरजीके किसी अन्यदेवगुरुधर्मकों वदन नमन करना पडे तो अपनी धर्मश्रद्धामे अतिचार वगेरा दोष नही लगसकता, हां! अगर अपनी मरजीसें अन्यदेव गुरु धर्मकों वंदन नमन करे तो वेशक! दोष है,–

५२ सवाल, जिसजिस प्रत्याख्यानमें अन्नथ्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ये चार आगार आते है, उसका अर्थ क्या! समजना?

(जवाव.) उसका अर्थ आवश्यकसूत्रके छठे अध्ययनमें इस-तरह लिखा है कि–अन्नथ्थणाभोगेणं सहसागारेणं अत्र पंचम्यार्थे तृतीया, अन्यत्रानाभोगात् सहसाकाराच्च अनाभोगो अत्यंतविस्मृतिः सहसाकारो गवादिकं दुहतो घृतादिमथतो मुखे सहसा तत्छटाप्रवेशः– महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं महत्तरं प्रत्या-ख्यानानुपालनादपि वहुतरनिर्जरानिमित्तं पुरुषांतरा-साध्यं ज्ञानचैत्यसंघादिकार्यं तदेवाकारोपवादो महत्त-राकारः–तेन अर्वागपि भुंजानस्य न भंगः–सर्वसमा-धिर्गाढातंकादिरहितत्वं गाढातंकादौच तत्प्रत्ययः आकारः प्रत्याख्यानापवादो भवति, अयमभिप्रायः आकस्मिकतीव्रशूलादिदुःखोद्भवात्संरौद्रध्यानोपश-मनाय सर्वेंद्रियसमाध्यर्थं पथ्यौषधादिकुर्वाणस्यापूर्णा-यामपि पौरुष्यां न भंगो जायते,

अन्नथ्थणाभोगेण इसका अर्थ यह है कि–बिल्कुल याद न रहे. और कोइ चीज मुखमें डालदिइजाय, पीछेसे याद आवे मुझे अमुक व्रत था वडी भूल हुइ इसतरह पश्चात्ताप करके वो चीज छोड दिइ जाय तो व्रतभंग नही होसकता, सहसागारेणं

( यानी ), गौ भैंसको दोहते वख्त या घी मथन करतेहुवे मुखमें कोइ छिटा आन पडे तोभी व्रतभंग नही हो सकता, सबब उसका इरादा व्रततोडनेका नही, महत्तरागारेणं यानी जिनमंदिर जिनमूर्त्ति-ज्ञान या जैनसमाजका कोइ जरुरी काम आनपडे और वो काम दुसरेसें न बनसकता हो और उस कामकों जानेवालेकों पौरसी वगेरा किसीतरहका व्रतनियम हो. उससे पहले खाना खाकर जाना पडे तोभी उसका व्रतनियम-भंग नही हो सकता, क्यौंकि–व्रतनियमके फायदेसें उस काम करनेमें ज्यादा फायदा है. सव्वसमाहि वत्तिया गारेणं इसका अर्थ यह है कि–अकस्मात शरीरमें कोइ शूल वगेरा रोग पैदा हो जाय, या कोइ मरणांत कष्ट आन पडे, उस हालतमें आर्त-ध्यान रौकनेके लिये कोइ दवा वगेरा लेना पडे तोभी उसका व्रतखंडन नही होसकता, क्यौ कि–उसवख्त वो वेहोश होगया, उसकी समाधि नही रही, और उसका पहलेसे आगारभी है, यानी उतनी छुट रखी है तो फिर व्रत कैसे टुटे? अगर कोइ सवाल करे, कोइ शख्श व्रतधारी मनुष्य व्रतमें शिथिल होजाय और खानेकों मांगे तोभी नही देना चाहिये, व्रत तोडानेका दोष लगेगा, ( जवाबमे मालुम हो. ) जब वो वेहोश है, उनको समाधि बिल्कुल नही है, तो उसका व्रत कहा रहा? फिर व्रत तोडनेका दोष कहांसे आया? वो वीमार शख्श अन्न अन्न जल जल पुकारता है, और सुनकर तुमको अनुकंपा नही आइ, तो फिर धर्म कहां रहा? अनुकंपाको छोडदेना ऐसी जिनाज्ञाभी नही, वीमार शख्शके मनःपरिणामही बदल गये तो तुम उसका व्रत कैसे रख सकते हो? रायाभियोगेणं वगेरा छह छींडी और अन्नथ्थणाभोगेणं वगेरा चार आगार काबीले गोर है, अगर थोडे पढेहुवे शख्श न समजसके तो उसके कर्मका दोष जानना, अगर कोई इस सवालकों पेश करे कि–मरणांतकष्ट

आनेपरभी व्रतभंग नही करना ऐसाभी शास्त्रका पाठ है, (जवाब.) उसमें छह छीडी और चार आगारभी हैं, इन आगारोसे उनउन सबबोंपर उतनी छुट भी है, इस बातको समजना चाहिये, इतनेपरभी समजमें न आवे तो किसी गीतार्थ जैनमुनिको मीलकर पुछ लेना या खुद धर्मशास्त्र पढकर निश्चय करलेना चाहिये, आवश्यकसूत्रका छठा प्रत्याख्यान अध्ययन देखो, उसीमे सब बातका खुलासा दर्ज है.—

५३ सवाल, तीर्थंकरोके समवसरणमे स्वर्गसें आये हुवे देवताको मनुष्य देखसके या नही, ?

(जवाब.) देख सके, सबब देवता जब तीर्थंकरोके समवसरणमें आते है तो अपने असलीरुपकों बदलकर आते हैं, अगर वे असलीरुपसे आवे तो मनुष्य उनके तेजको बरदास्त न करसके.—

५४ सवाल, कोइतरीका ऐसा है जो भव्य जीव खुद जानसके मे भव्य हुं ?

(जवाब.) हां ? एकतरीका ऐसा है वो खुद जानसके, मे भव्यजीव हुं या अभव्य ऐसा जिस जीवके दिलमे शक पैदा हो वो खुद भव्यजीव होता है, अभव्य जीवके दिलमें ऐसा शक पैदा नही होता, सबब वो अभव्य जीव धर्मको सच नही मानता.—

५५ सवाल, जिनमंदिरमे कोइ मुनीम गुमास्ता पूजारी नोकर चाकर सिलावट या चितेरा नोकरी रहकर जिनमंदिरका काम करे और देवद्रव्यमेंसे अपनी नोकरीके दाम लेवे तो उसको देवद्रव्य लेनेका दोष या नही ?—

(जवाब.) उसको देवद्रव्यलेनेका दोष नही, क्यौं कि—उसने अपनी नोकरीके दाम लिये है, हा ! नेकीसे नोकरी न करे और दाम लेवे तो पाप है, पंचाशकसूत्रमे इसका खुलासा दर्ज हैं, जिनकों शक हो देख लेवे.—

५६ सवाल, कोई श्रावक ज्ञानपुस्तक लिख जानता हो, और ज्ञानपुस्तक लिखकर ज्ञान खातेमेसे दाम लेवे या कोई श्रावक ज्ञानपुस्तक छापकर व्याजबी किम्मतसें वेचे और ज्ञानखातेमेसे दाम लेवे तो उसकों ज्ञानद्रव्यलेनेका दोष है?

(जवाब.) इसमें उस श्रावकको ज्ञानद्रव्यलेनेका दोष नही, सबब कि–उसने अपनी मेहनतके दाम लिये है, मेहनत न करे और दाम लेवे तो दोष है.–

५७ सवाल, कोई श्रावक अविधिसे धर्मक्रिया करता है, और कोइ श्रावक बिल्कुल धर्मक्रिया नही करता, इसमें ज्यादा प्रायश्चित किसकों है?

(जवाब.) जो श्रावक बिल्कुल धर्मक्रिया नही करता ज्यादा प्रायश्चित उसकों है, जो श्रावक अविधिसें धर्मक्रिया करता है उसको थोडा प्रायश्चित है, श्रद्धापूर्वक धर्मक्रिया करना हरेक जैनशास्त्र फरमाते है, विनाश्रद्धा लोककों दिखानेके लिये धर्मक्रिया करे तो ठीक नही, अविधिसे धर्मक्रिया करना इससे नही करना अछा ऐसा कहनेवाले मुताबिक धर्मशास्त्रके फरमानसे खिलाफ है.–

५८ सवाल, अछीगतिपानेकेलिये कौनकौनसें ध्यान है? और बुरीगतिपानेके लिये कौनकौनसे है?

(जवाब.) रौद्रध्यानसे जीव नरकगतिकों पाता है, आर्तध्यानसे तिर्यंचगतिको–धर्मध्यानसें मनुष्यगति और देवगतिको और शुक्लध्यानसें मोक्षगतिकों पाता है, आजकल इस क्षेत्रसें मोक्ष होना नही बनसकता, इसलिये शुक्लध्यान आना मौकुफ होगया.–

५९ सवाल, पशु पक्षी मनुष्यकी भाषा साफतौरसे बोल सके या नही?

(जवाब.) नही बोल सके, सीखलाये हुवे तोते मेंना दोचारशब्द बोलदेवे वो गिनतीमें नही, वोभी साफतौरसे नही बोल

सकते, पेस्तरके जमानेमे जब स्वर्गके देवी देवता इस मनुष्य क्षेत्रमे आतेथे, कोइ देवता किसी पशु पक्षीके शरीरमें प्रवेश करके मनुष्यकी भाषा बोले तो साफतौरसें बोलसकते है, खास! अपनी ताकातसें पशु पक्षी मनुष्यकी भाषा साफतौरसे नही बोलसकते,–

६० सवाल, इस जीवको परलोक जाते रास्तेमें प्राण कितने पाइये?
(जवाब.) अकेला परभवका बंधा हुवा आयुष्यबल प्राण पाइये.

६१ सवाल, कइ तीर्थोमें या दुसरी जगह गर्म पानीके कुंड दिखाइ देते है. इसका क्या सबब?
(जवाब.) जैनशास्त्रकी रायसें उसके नीचे उश्न योनि पृथवी कायके जीवोंकी पैदाश ज्यादा है, ऐसा जानना,–

६२ सवाल, वनास्पतिकायके जीव किस दिनोंमें ज्यादा और किस दिनोंमें कम आहार लेते हे?
(जवाब.) वनास्पतिके जीव चौमासेके दिनोमें ज्यादा आहार लेते है. ठंडके दिनोमे उससे कम और गर्मीयोके दिनोंमे उससेभी कम लेते है,–

६३ सवाल, स्वर्ग मनुष्य और पातालमे जो जो चीजे शास्वती है, वो सचित जानना या अचित?
(जवाब.) जहां जहा जो जो चीजे शास्वती है, वे सब पृथवीकायमय और सचित है,–

६४ सवाल, जो कोइ शख्श विनागुरुके आपही आप दीक्षा लेवे गुरु धारे नही उसकी दीक्षा प्रमाणिक है या नही?
(जवाब.) दीक्षालेना तो गुरुके पास जाकर लेना चाहिये. वही दीक्षा प्रमाणिक है, जैसे कोइ यतिजी या स्थानकवासी मजहबमेंसें जुदे होकर श्वेतांबर आम्नायमे दीक्षा लेना चाहे किसी विद्यमान गुरुके पास जाकर दीक्षा लेवे, पंचाशकसूत्रमे

वयान है, सर्वविरतिचारित्र विद्यमानगुरुके पास लेना चाहिये,

६५ सवाल, जिनप्रतिमाकी पूजामे अल्प पाप और ज्यादा पुन्य कहना या पुन्यानुवंधिपुन्य और अनिकाचित अशुभ कर्मकी निर्जरा कहना?

( जवाव. ) जिनप्रतिमाकी पूजामें पूजक पुरुषके मनःपरिणाम पाप करनेके नही, इसलिये अल्प पाप नही, विना अशुभ परिणामके पाप कैसे हो? वल्कि! मनःपरिणाम शुभ होनेसे पूजक पुरुषकों पुन्यानुवंधिपुन्य और अशुभ अनिकाचित कर्मकी निर्जराका फायदा है, ऐसा कहना. सब बात मनःपरिणामके ताल्लुक है, जैसा परिणाम वैसा फल,–

६६ सवाल, जैनमुनिकों रातके वख्त सफर करनेका हुकम है?

( जवाव. ) हां! अगर जरुरत पडे तो रातके वख्तभी सफर करजाना हुकम है,–

६७ सवाल, किसी पुरुषके शरीरमें बतीस लक्षण होते हुवेभी उसका फल न हो इसकी क्या वजह?

(जवाव.) इसकी यही वजह है उस पुरुषमें सत्वगुण न होगा. सत्वनाम हिम्मतका है, वगेर हिम्मतके सवलक्षण बेकार है,–

६८ सवाल, कइ लोग कहते है, सिंह वाघ चीता सांप विछुवगेरा सख्तमिजाजवाले जीवकों मार डालना चाहिये. क्योंकि दुसरोकों ये इजापहुंचानेवाले है.

( जवाव. ) अगर दुसरोकों इजापहुंचानेवालेकों मार डालना कहतेहो तो फिर मनुष्यभी दुसरोंकों इजा पहुंचानेवाला है, उसके लिये क्या जवाव है.? दर असल! जैसे अपनेकों अपनी जान प्यारी है, वैसे उनकों उनकी जान प्यारी है, उनसें अपना वचाव हो और उनकी जानमी न मारी जाय वैसा वरताव करना ठीक है.–

६९ सवाल, कइ कहते है, वीमार जानवरको गोलीसे मारदेना चाहिये, वो तकलीफसें जल्दी छुट जायगा.

( जवाब. ) तकलीफसे क्या छुटेगा, बल्कि! ज्यादा तकलीफ पायगा. बीमारीसें मरनेकी तकलीफ ज्यादा है, देखो! जब आपनलोग बीमार पडते है, तब अछाहोना चाहते है, मरना नही चाहते, इसीतरह जानवरोंकेलियेभी समजो, वेभी मरना नही चाहते,–

७० सवाल, कइलोग कहते है, नजुम और शकुन जुठे है.–

( जवाब. ) नजुम और शकुन भले बुरेके बतलानेवाले है. जुठे नही, किसी कामके लिये तुम चले और उसवख्त नजुमके सितारे अछे स्थानपर है, शकुनभी अछेहुवे तो समजलो! काम फतेह होगा, काम होना न होना तकदीरके ताल्लुक है, मगर नजुम और शकुन पेस्तरसे बतलानेवाले है, जिसको इस बातपर एतकात हो–माने न एतकात हो न माने, शास्त्रकारोने इनको जुठे नही फरमाये,–

७१ सवाल, सबब मिलनेसें आयुष्य टुट जाता है, यह बात सच है क्या?

( जवाब. ) वेशक! सच है, तलवारके घावसें तोपके गोलेसें सापके काटनेसें कुवे या समुदरमे गिरजानेसें आगमे पडनेसे ज्यादा खाना खानेसे ज्यादा भुखे रहनेसे या ज्यादा लेहरसें वगेरा सबबोसें आयुष्य टुट जाता है, तीर्थंकर चक्रवर्त्ती वासुदेव, बलदेव और प्रतिवासुदेव निरुपक्रम आयुष्यवाले होनेसें उपर दिखलाये हुवे सबबोसेभी नही मरते, यहा उनके शिवाय दुसरे लोगोंकी बात कहीगइ है, ऐसा जानना,–

७२ सवाल, जो लोग कहते है, गुरु सुधरे तो चेला सुधरे यह बात ठीक है क्या?

(जवाब.) यह बात ठीक नही, चाहे गुरु हो या चेला! जैसी

करनी करेगें वैसा फल पायगें, एक दुसरेका बहाना बतलाना बहेत्तर नही, आजकल कई श्रावक कहने लगते है, पहले मुनिवर्ग सुधरे तो श्रावकवर्गभी सुधरे, मगर यह कहना एक तरहकी अपनी भूलको छुपानेका सबब है, मुनि न सुधरे और श्रावकही सुधर जाय तो कौन मना करता है? कितनेक श्रावक इस दलिलकोभी पेंश करते है, जो शख्श खुद पानीमें डूबता हो, वो दुसरोकों कैसे तार सकेगा? (जवाब.) उपदेशके जरीये दुसरेकोंभी वो तार सकता है, जैसे कोइ शख्श एक सरोवरमें डूब रहा है, मगर उसतर्फ आनेवाले दुसरे शख्शकों कह सकता है, में डूबता हुं तुम इधर मत आओ, डूब जाओगे, कहिये! उस डूबतेहुवे शख्शने दुसरेको बचाया या नही?-

७३ सवाल, छह आरेमें तीर्थंकरदेव किसकिस आरेमें होते है?-
(जवाब.) तीर्थंकरदेव तीसरे औ चौथे आरेमेंही होवे, पहिले दुसरे पांचमे छठेमे नही होते.-

७४ सवाल, नयी बनाई हुई जिनप्रतिमापर नाम या लंछन प्रतिष्ठा किये बाद कोतरावे तो कुछ हर्ज है?
(जवाब.) प्रतिष्ठा करानेके अवलही जिनप्रतिमापर नाम और लंछन कोतरा लेना चाहिये, प्रतिष्ठा कियेबाद जिनप्रतिमापर टांकी लगानेसें बेंअदवी होगी,-

७५ सवाल, नयी बनी हुइ अप्रतिष्ठित जिनप्रतिमाकी पूजा करना या नही?
(जवाब.) नयी बनीहुई अप्रतिष्ठित जिनप्रतिमाकी पूजा नही करना, पूजा प्रतिष्ठितप्रतिमाकीही किईजाती है, अप्रतिष्ठितप्रतिमा किसी मकानमें हिफाजतसे रखदेना, प्रतिष्ठाकियेबाद पूजना.-

७६ सवाल, कईश्रावक दिवालीकी पीछली रातकों वसुधारा सुनते है, यह बात मुताबिक जैनशास्त्रके फरमानसे ठीक है?

(जवाब.) श्रावकोकों दिवालीके रौज पीछली रातको यानी कातिक सुदी एकमकी सवेरको रिषिमंडलस्तोत्र और गौतमरास गुरुके मुखसें सुनना चाहिये, अगर गुरुका योग न हो तो आप खुद रिषिमंडलस्तोत्र और गौतमरास पढलेना निहायत फायदेमंद है, वसुधारा बौधाचार्य रचित है, जैनाचार्यरचित नही.—

७७ सवाल, विना उद्यमकिये कर्म अकेलेभी फलदेसकते हैं क्या?

(जवाब.) निकाचितकर्म विना उद्यमकियेभी फल देसकते है, उदयकर्मकों कोइ रौक नही सकता, अचानक दौलत मिलजाती है, कभी अचानक तकलीफ आन पडती है, कहिये! यह कर्मके उदयकी बात है या-नही? तकलीफ पानेकों कौन चाहता है, मगर अचानक तकलीफ पेश हो जाती है, भाषण देते हुवे हृदयबंद हो जानेसे एक शख्श खुर्शीपर बेठगये, और तुर्त इंतकाल होगये, नजरसे देखेगये है, बतलाइये! यह कर्म उदयकी बात है या कोइ दुसरी? इसीलिये कहागया निकाचितकर्म विना उद्यम कियेभी फलदेते है.—

७८ सवाल, जो जो तीर्थंकर उसी भवमे चक्रवर्त्तीपदवीभी पाये हो जैसे कि—इस चौवीशीमे शांतिनाथ कुंथुनाथ और अरनाथ हुवे उनकों मुल्कसाधन करतेवख्त मागध वरदाम वगेरा तीर्थोके देवताकों आराधन करनेकेलिये तेलेका तप करनापडे या नही?—

(जवाब.) उनके पुन्य दुसरे चक्रवर्त्तियोसें तेज होते है, इसलिये उनकों तेलेका तप करनेकी जरुरत नही.—

[ सवाल जवाब मजहबे जैन खतम हुवे. ]

## [ चार तरहकी औरतोंका बयान. ]

१ पदमनी चित्रिणी हस्तिनी और शंखिनी ये चार भेद दुनियाभरकी औरतोंपर दाखिल है, १ पदमनी औरतकी बोली मीठी, आंखोमें शर्म, मुह चंद्रमाकी तरह गोल, नाक तोतेकी चांचसमान खूबसुरत, शरीरकी चमडी सुकुमार, दांत अनारकी कली, केश पतले, शरीर चंपेवरन, नाभि उंडी, हृदय खूबसुरत, अंगुली लंबी, नख लाल, निलार पांच अंगुल उंचा, होठ पतले और लाल, पसीनेमे चंदनकी तरह खूशबू, हंसिनीकी तरह अछीचाल, नींद कम, कामविकार थोडा, घमंड बिल्कुल नही, इत्रफुलेल बहुत चाहे, रातकों पदमनीके शरीरकी झलक बिजलीकी तरह चमके, शिंगारपहनना ज्यादा पसंद, दिलकी दलेर, रुपयेपैसेकों कंकरकी तरह समजे, अवाज करके हसे नही, पदमनीके ओढनेकी खूशबु महेकती रहे, ओढना धोकर सुकावे तो खूशबुकेमारे भमरे उसपर आन बैठे, पदमनीका खजाना हमेशां तर रहे, देवदर्शन और तीर्थयात्रामे खुश, धर्मश्रद्धामें साबीतकदम, साधुलोगोंकी खिदमत करे, धर्मी शख्शकों मदद देवे, पुस्तक बांचना और शास्त्र सुनना बहुत चाहे, खर्चके काममें मर्दोंकोंभी मात करे, पतिके दिलकों नाराज न करे, नोकर चाकरसें लडे नही, उसका बोलना सबकों अछा लगे, बामे अंगपर उसके अछे लक्षण मौजूद रहे, रसोइ बनानेमे चतर, पानबीडीखाना बुहुत चाहे, ये सब पदमनी औरतके लक्षण हैं, पदमनी औरत चोसठ कलाकी जानकार होती है.—

२ चित्रिणी औरतकों रगबरंगे कपडे अछे लगे, शरीर खूबसुरत, हिरनीकी तरह नेत्र उसके चकित रहे, खर्च करनेमे दलेर, अपनी चतराइसें दुसरेका दिल मोहित करे, मुख चंद्रमाकी तरह गोल, शरीर गौरवर्ण, ललाट चार अंगुल उंचा, भ्रू तीक्षण, फूलोंका शिंगार बहुत चाहे, केश लंबे, चित्रकारीके काममें होशियार, दांत खूबसुरत, होठ पतले, बोली मीठी, बनास्पति खाना

ज्यादा पसंद, कामकलामे चतर, खाविंदके दिलकों नाराज न करे, नाचरगमे बडी होशियार, गाना उमदा गावे, वीणा बजानेमे मर्दोकों मात करे, स्नेहकरना पदमनीसेभी चित्रिणीको ज्यादा याद, इत्रफुलेलसें हमेशां खूशबुदार बनीरहे, वामे अगमे उसके अछे लक्षण हो, तरहतरहके पाक बनावे, जवाहिरातके गेहने चाहकर पहने, देवदर्शन और तीर्थयात्रामे खुश रहे, साधु लोगोंकी खिदमत करे, धर्मशास्त्र सुननेमे खुश रहे, चौसठकलामे चित्रिणीभी माहितगार, पदमनी औरत स्वभावसें भोली, चित्रिणीचालाक होती है,–

३ हस्तिनी औरत पदमनी चित्रिणीसें कमदर्जे मगर फिरभी अछी होती है, शरीर उसका मोटा ताजा, हस्तिनीकी तरह मंदमंद चाल चले, बोली मीठी, नेत्रोंमे लज्जा, शरीर खूबसुरत, मुख चंद्रकी तरह गोल, होठ पतले, नाभि उडी, सीर बडा, नख लाल, हाथपावकी अंगुली लंबी, शिंगार पहनना बहुत चाहे, नेत्र बडे, भ्रू तीक्षण, इत्रफुलेलसें खुश, शरीरका रंग गेहुंवर्णा, देवगुरुकी खिदमत करे, धर्मश्रद्धामें साबीत कदम, शास्त्र सुनना बहुत चाहे, दिलकी दलेर, नोकरचाकरोकों खुश रखे, कामकलामें होशियार, पतिके दिलकों खुश रखे, जैसी संगत मीले वैसा बरताव करे, रिस्तेदारोसें मिलकर चले, और बडोंका लिहाज रखे, ये सब हस्तिनी औरतके लक्षण है,–

४ शंखिनी औरत स्नेह क्या चीज है जाने नही, दिलकी कंजुस, शरीरका रंग शाम, लिखना पढना जाने नही, लिहाज बिल्कुल नही, बेशर्म होकर हसे, नींद बहुत, अछे लोगोंकी संगत उसको पसंद नही, उसकी बोली दुसरोंकों अछी न लगे, सबसें लडती रहे, अपनी भूल देखे नही, खानाखातेवख्त लडाइ करे, शरीर कठोर, हाथपांवकी अगुली बांकीटेडी, नख काले, होठ मोटे, सीर छोटा, चाल अछी नही, गेहने कपडे चाहे जितने उमदा पहने मगर अछे लगे नही. कपडे मेले भ्रू छोटी, शास्त्र सुनना पसंद नही, साधु

लोगोकों पापंडी कहे, देवगुरुधर्मपर एतकात नही, खाविंदकों दुश्मन समजे और उनके दुश्मनोंसे मिलापरखे, हरबातमें जुठ बोले, खाविंदसे लडती रहे, नोकरचाकरोंसें बने नही, सासुसुसरेकी इज्जत करे नही, दिलमें रहेम बिल्कुल नही, पडोसीयोंसें लडती रहे, ये सब शंखिनी औरतके लक्षण है.-

५ जमाने हालमें पदमनी औरत दुनियामें कम, चित्रिणीभी कम समजो, हस्तिनी ज्यादा और शंखिनी उससेभी ज्यादा है, जिनोने पूर्वजन्ममें देवगुरुधर्मकी इज्जत किइ है, तीर्थयात्रा किइ है, सर्वविरति या देशविरतिव्रत पालन किया है, उनकों इस जन्ममे आरामचैन मिला है, उमदा मकान, हाथी घोडे, म्याना, पालखी, रथ, वगी, गेहने कपडे इत्रफलेल और खूबसुरत दिलपसंद औरत मीली है, औरतकों दिलपसंद मर्द मीला है. खानपानसे सुखी और खजाना उनका-तर, ख्वाह मर्द हो या औरत खूबसुरतरूप पाना अछी तकदीरके ताल्लुक है, और धर्मपाना निहायत उमदा तकदीरके ताल्लुक है, पदमनी चित्रिणी हस्तिनी और शंखिनीके भेदानुभेद गिने तो एक एकके सोलह भेद होते है, चारोके भेदानुभेद चौसठ हुवे, जाति लक्षण और गुण तरहतरहके है, शिवाय ज्ञानीके पुरा हाल कौन बयान करसके, औरतकों इल्म पढाना जरुरी बात है, सोलह शिंगारोमे चतराइसे बोलना आलादर्जेका शिंगार है,

६ सोलह शिंगारोके नाम १ स्नानकरके पाक और साफहोना पहेला शिंगार, २ उमदा कपडे पहनना दुसरा शिंगार, ३ इत्र फलेल लगाना, ४ ललाटमें तिलक करना, ५ आंखोमें सुरमा, ६ कानोंमें कुंडल, ७ नाकमे नथ, ८ गलेमें मोतीयोंका हार, ९ भुजापर बाजुबंध, १० हाथमे कंकन, ११ कमरमें कंदोरा, १२ अंगुलीयोंमे अंगुठी, १३ शरीरपर चंदनका लेप, १४ पांवमे नेंवर, १५ मुखमें तंबोल, १६ और चतराईसे बोलना, सोलहमा शिंगार हुवा. पनरां शिंगार पहेनलिये मगर चतराईसें बोलना नही आया तो सब वृथा

है, इसीलिये इल्मकी हरजगह तारीफ बयान किइ गई, दुनियामे इल्मबराबर कोइ चीज नही, फर्जकरो! कोइ मर्द या औरत खूबसुरत है, मगर बगेर इल्मके-उनकी खूबसुरती किसी कामकी नही, अगर जाहिली मिटानेका दुनियामे कोइ उपाव है तो एक इल्म है,–

७ वेश्या और पराइ औरतसें मोहब्बत करनेवालोकी दुनियामें इज्जत नही. औरत अगर पराये मर्दसे मोहब्बत करे उसकीभी इज्जत न होगी. दौलतकी पायमाली और परलोकमे दुर्गति होगी. दरअसल! इश्क आफतसें भरा है नतीजा इसका बुरा है. उसके रिस्तेदारोंसे नाइत्तिफाकी और मातापितासें दुश्मनाइ होगी,–

[ सूत्र उत्तराध्ययनके चतुर्थ अध्ययनमें पाठ है. ]

चारीगयाण जालं, तिमीण हरिणाण वग्गुरा चेव,
पासाण सउणयाणं नराण बंधथ्थमिथ्थीयो, १

(अर्थः) जैसे हाथीयोकों शृंखला एक तरहका बंधन है, मछोंको और हिरनोंकों जाल परींदोंको पिंजरा और इसीतरह मर्दोंको औरत एक तरहका बंधन है. औरतकों मर्दभी एकतरहका बंधन है, मगर मर्दोंकी तकदीर बडी और औरतोंकी तकदीर छोटी है, धर्मशास्त्रोमे मर्दोंका दर्जा बडा कहा,–

८ अगर किसी मर्दको किसी औरतसे स्नेह बंधा या किसी औरतकों किसीमर्दसे स्नेह बंधा, दोनोंकों तकलीफकी निशानी है, जितना सुख मानागया है उससे तकलीफ ज्यादा है, धर्मशास्त्रका फरमान देखो! जहां स्नेह है वहा दुख जरुर है, जबतक स्नेह छुटकर एक दुसरेको भुलेगें नही. बडा दुख होगा, एक शहरमें रहते हो या गेरमुल्कमें दोंनों जगह दुख होता रहेगा, अगर एकही शहरमे रहते हो और अगर स्नेह टुट गया जबजब नजरके सामने आयगें दुख होगा, अगर गेरमुल्कके रहनेवाले हो और अपने अपने वतन चले गये तो वहांभी एकदुसरोकी यादी आयगी, हां! इतना जरुर है,

गेरमुल्कमें चलेजानेसे बडी मुदतके बाद वेशक! स्नेह कम होसकता है, और एक दुसरोंकों भुलजानेसे तकलीफ रफा हो सकती है, मगर बहुत अर्सेके बाद—एकदम नही, इसीलिये शास्त्रोंमें स्नेहको दुखका मूल कहा,—

९ कामविकारकी दशतरहकी हालत शास्त्रोंमें सुनी होगी, एक दुसरेके गुणोंकों याद करनेपर मिलनेका इरादा होता है, और नही मिलनेपर दुखहोता है, चाहे मर्द हो या औरत इस बातकी तकलीफ दोनोंको बराबर होगी, अगर एक तर्फी स्नेह होगा तो कमीबेसीभी होसकेगी, मगर तकलीफ जरुर होगी, एक दुसरोंकी तस्वीर देखनेसें या एक दुसरोंके जुदे पडनेसें खान पान छुट जायगा, और तकलीफ होगी. धर्मशास्त्रोमे सुना होगा, कइ मर्द और औरत इस तरहके खयालमे पडकर घरबार छोडकर चलेगये हैं. स्नेहीके वियोगमें कइयोनें कुवेबावडीमे पडकर अपनी जान खो दिइ है, कइ दफे आपसमे शतरज चौपड खेलते हुवे कहदेते हैं, देखो! हम आपसे जीत गये, इसतरह हास्यखेलमे दिन चले जाते हैं, मगर मालुम नही होता दिन किधर गया, तारीफ करो! उन बहादूरशख्शोंकी जीनोंने काम विकारसे फतेह पाइ. जंबूस्वामीने धन्ना शालिभद्रजीने और सुदर्शनशेठ वगेरोने बडी बहादूरी किइ जीनोंने कामविकारकों शकिस्त दिइ,—

१० कइ मर्द और औरत एक दुसरोंकी हांसी करते है, एक दुसरोपर कंकर डालकर हसते है, और खुश होते है, मगर उसका नतीजा अछा नही, इन बातोसें कभी आपसमें नाराजी पैदा होगी, इसीलिये नेंक मर्द और नेंक औरत इसतरह हांसी नही करते, धर्मशास्त्रोंका फरमान है, हांसी करतेहुवे जीव समयसमय पर सात या कभी आठ तरहके अशुभ कर्म बांधते है, और परभवमें बडी तकलीफ उठाते है, इसलिये हास्यकुतुहल नही करना चाहिये, बदचलन औरतके लक्षण बतलाये जाते है, जो औरत रास्तेचलतेवख्त

इधर उधर देखतीरहे, स्नेहके वचन कहकर मर्दोंको हसावे, और विना अपने घरके कोइभी आदमीको शाथ लिये घरघर फिरती रहे. अपने घरकी बारीमे या झरोखेमे खडी होकर रास्ते चलतेहुवे आदमीयोंको देखे, चेष्टा करे, बातबातमे मर्दोंकी हांसी करे, मर्दोंकी गर्दीमे अकेली बेधडक चलीजाय, घरमें अपने पतिसे नाराज रहे, और बहार खुश होकर फिरे, अपने पतिका कहना सुने नही, और पतिसे अनबनाव करके जुदे मकानमे रहे, ये सब बदचलन औरतके लक्षण है, इन्सान कामील वो है जो अपने दिलको कावुमें रखे, जब कोइ शख्श पराइ औरतके शाथ इश्कमे लग जाता है तो उसकी अकल खत्म होजाती है. अगर उसवख्त उसके अछे दोस्त-नें कसलाह न देवे तो वो शख्श दुनियामें जलील और खार हो जाता है, यादरहे! जान जाय, मगर आन न जाय, जिस औरतसे नाइत्तिफाकी हो जाय तो दिलमे समजना अछाहुवा मे एक तरहकी तकलीफसे छुटा, इज्जतदारोंको इश्कके फंदेमे पडना दोनों तरहसे नुकशान है, अगर मन कावुमे न रहे तो उस हालतमें धर्म-पुस्तक बाचते रहना. और अपना दिल दुसरी तर्फ लगानेकी कोशीश करना,—

११ दुनियामें अपना कोइ दुश्मन नही, बलिक! अपना फैलही अपना दुश्मन है, अपना फैल मिटाकर चाहे जिस मुल्कमे चले जाओ कोइ दुश्मन न होगा.—

(दोहा.) वैरी अपना को नही-वैरी अपना फैल,
अपना फैल मिटायके चार दिशामें खेल. १

मगर जिसकी जो आदत पडगइ हो, मुश्किलसे जाती है, सादा पुशाक पहनना और लुखाभोजन जिमना अछा, मगर मौजशोख और इश्कमे पडकर इज्जत और दौलतको खो बेठना बहेत्तर नही. एक तर्फका स्नेह उसको बोलते है, जो एक चाहे और एक न चाहे, एक औरतपर एक मर्दको स्नेह आता है, मगर उस

मर्दपर उस औरतकों स्नेह नही आता, यह एक पूर्वसंचित कर्मकी बात है, अगर कोई कहे, जिसकों आपन यादकरे तो वोभी आपनकों याद करते होगें, मगर यह कहना गलत है, सबब एकतर्फका स्नेह होगा तो याद न करेगें, दोंनोतर्फका स्नेह होगा जभी दोंनों एक दुसरेको याद करेगें, दोंनोंकों पूर्वसंचित कर्मके उदयसे असली स्नेह होगा तो बेशक! दोंनोंकों यादी आती रहेगी, इसका खुलासा ज्ञानी जान सकते है, दुसरे नही जान सकते, जिसको आपसमे पूर्वभवका वेर है, उसको देखकर दुश्मनाइ पैदा होगी, और जिसको पूर्वभवका स्नेह है, उसको देखकर खुशी पैदा होगी, दुश्मनाइ या दोस्ती पूर्वभवके संबंधसें हुइ या नयासंबंध लगा, इसका खुलासा बगेर ज्ञानीके दुसरे नही कह सकते.—

१२ कामविकार इस जीवकेलिये एक बडा रोग है, चाहे मर्द हो या औरत इसमें पडकर मोहित हो जाते है, जिस औरतकों जिस मर्दपर स्नेह है, उसका फरमाना उसकों पसंद होगा, इसीतरह जिस मर्दकों जिस औरतपर स्नेह है, उसका फरमाना उसकों अछा लगेगा, दरअसल! मोहकर्म बडा सख्त है, तारीफ करो! जिनजिन शख्शोंने मोहकर्मसें फतेहपाइ, दौलत दुनिया मालखजाना और घरद्वार छोडकर धर्म किया और मुक्ति पाइ, एक दफेकी बात है, एक मर्द अपने दोस्तको कहने लगा, मेरी खूबसुरत औरत मरगइ, मेरा घर टुट गया, इसतरह हजारा बाता कहने लगा, मगर जब चंदरौज बतीत हुवे, दुसरी औरत ब्याही और उसके स्नेहमे पडगया, पहलेवाली औरतकों भुलगया, यही किस्सा है, इस दुनियाका, दरअसल! कोइ किसीका प्यारा नही, सब अपने मतलबके गरजी है, एक औरतका खाविंद मर गया, और वो लखपति था, औरत खाविंदके वियोगमें कहने लगी, मुजे अब क्या! करना है! घरका मालअसबाब बेचकर तीर्थभूमिमे जावेठुंगी, और धर्म करूंगी मगर जब खाविंदके मरनेपर चार छ महिने होगये, वही रगराग

और खानपान होने लगा, और वो बात भुलगइ, जो खाविंदके मरनेके वख्त कहतीथी, इसीलिये ज्ञानीयोंने कहा है, कोइ किसीका प्यारा नही, सब अपने मतलबके प्यारे है.–

१३ एक शख्शने एक औरतके शाथ पुनर्लग्न किया, और उसके सामने इकरार किया मे तुमको कभी नही छोडुंगा, वो मर्द लिखा पढा था, दोसोरुपयोंकी तनखाह पाताथा, तीनवर्सतक उस-मर्द और औरतका संबंध रहा, सुख चैनमे रहे, मगर तकदीरके सितारेने जोफ खायाथा, मर्दके बदनमें तकलीफ पैदा हुइ, सख्त-बीमार हुवा, इलाज मारूजा किया, मगर तकदीरके सामने तदबीर क्या करसकती है? आखीरकार! उसका इंतकाल हुवा, और उसकी रूह इस दुनियाफानी सरायसे रूकसत हुइ, औरत उसके मुर्देकेपास बेठकर रोती हुइ कहने लगी आप मुजे कहते थे, तुजे कभी नही छोडुंगा अब छोडकर कैसे चलेगये? इसका रोना सुन-कर पडोंसी लोग उसकेपास आये, और कहनेलगे, वे जीतेहोते तो तुमकों कैसे छोडते? हम नजरसे देखते थे, तुमारेपर उनका स्नेह बहुत था, मगर होनहारके आगे किसीका जोर नही, अमरलाचा-रिका है, शब्र करो! दुनियाफानीका यही हाल है, दरअसल! औरतकों निहायतरज हुवा, उनके वियोगसें दिलकों बडा आघात लगा, खानपान छोड बेठी, और उनकों याद करती रही, इन्सा-नकों इसकदर दुर्ध्यानसें बडे पापकर्म बंधते है, अगर देवगुरूधर्मकी सेवामे इसकदर शुभध्यान लगावे तो कितनी उमदा बात हो, आखीर-कार वो औरत उनके मरनेपर निहायततंग हुइ, चार छ महिने बीत-नेपर वो बात भुलगइ, और उमदा खानापीना नाटकरगराग देखना शुरू हुवा, समजसको तो समज लो! दुनियामें कोइ किसीका नही, सब अपने मतलबके गरजी है, अकलमंदशख्शकों लाजिम है इश्कके फदेमे न फसे, और इससें परहेज करे.–

दूरस्थोपि समीपस्थो-यो यस्य हृदये स्थितः
समीपस्थोपि दूरस्थो-यो यस्य हृदये नच, १

१४ जो शख्श गेरमुल्कमें है, मगर अपने दिलमें अगर उसपर स्नेह हो, तो वो नजीकही है, ऐसा जानना, जिसपर अपना स्नेह नही, वो अगर नजीक है, तोभी दूर है, ऐसा समजो, जैनशास्त्रोंमे सुनते हो, एक धनदत्त शेठका बेटा, एलाचीकुमार एकनटनीको देखकर मोहित होगयाथा, और घर छोडकर उसके शाथ नट होगयाथा, गाना बजाना सिखा, नाच मुजरेमे होशियार हुवा, और नटोंके शाथ मुल्कमुल्कमे फिरा, जब वो नाचकरनेके वख्त रंगभूमिपर आताथा, नटनी उसके सामने गातीथी, और इसकदर रंग जमातेथे, देखनेवाले चकित रहजाते थे, एकरोज खेलकरते वख्त एलाचीकुमार बांसपर चढाहुवा, उसकी नजर एक बडे घरपर पडी. एक जैनमुनि उस घरपर आहारके लिये तशरीफ लायेथे. शेठानी उसके सामने खडी होकर आहार देरहीथी, जैनमुनि उस औरतपर नजर-तक नही डालते थे, और अपने आहारलेनेके खयालमे थे, बांसपर नाचते हुवे एलाचीकुमारने देखा! और दिलमे सोचा! में किसहालतमें पडा हुं, और एक नाचीज नटनीपर मोहित होकर घरघर डोलता फिरताहुं, लानत है! मेरी काररवाइपर, ऐसे खयालातमें उसको बांसपर नाचते हुवेभी ज्ञान होगया, और दुनियासे निस्तार पाया, असलमें नटनी उनकी पूर्वभवकी औरत थी, उसकोभी ज्ञान हुवा, और दुनियासे निस्तार पाई, तारीफ करो! उनकी जो क्षणभरमें सुधर गये, एक आर्द्रकुमार मुनिपर एक श्रीमती कन्या मोहित हुइथी, जो उनकी पूर्वभवकी औरत थी, इसीलिये उस कन्याकों उस मुनिपर स्नेह पैदा हुवा था, तीर्थंकर शांतिनाथ महाराजके चरितमें अमरदत्त और मित्रानंदकी एक कथा सुनी होगी, अमरदत्त कुमार एक रत्नमंजरी राजकुमरीकी पुतली देखकर मोहित होगये थे, दरअसल! वो रत्नमंजरी उस अमरदत्तकुमारकी पूर्वभवकी औरत थी, जभी

उसके आकारकी बनीहुइ पुतलीको देखकर स्नेह पैदा हुवा था, यहभी एक पूर्वसचित कर्मकी वात समजो, 'पूर्वसंचित निकाचित-कर्म वगेर भोगे कभी नही छुटते,–

१५ आवश्यकसूत्रके अवल अध्ययनमें पाठ है, ज्यादा स्नेहसें वियोगके वख्त आयुष्य टुट जाता है,–

एकस्य वणिजो यूनः प्रेयसी प्रौढयोवना,
द्वयोरपि तयोः स्नेहः कोपि वाचामगोचरः १
स वाणिज्याय गत्वाथ प्रत्यावृत्तः समेष्यति
एकाह्नेन निजावासं यावत्तावत्परस्परं. २
वयस्याश्चिंतयामासुः स्नेहः सत्योनयोर्नवा,
पूर्वमेकस्ततो गत्वा तस्य कांतामवोचत ३
मृतस्तव पतिर्भद्रे श्रुत्वा वज्राहतेव सा
सत्यं सत्यमिदमिति पृष्ट्वा वारत्रय मृता, ४
तत्स्वरूपं च वणिजः कथितं सोपि तत्क्षणात्
एकोपि प्राप पंचत्वमेवं प्रेम्णायुषः क्षयं, ५

( अर्थः ) एक शहरमें एक वणिक रहता था, और वो जवान उम्रका था, उमकी औरतभी जवान थी, दोनोका स्नेह ऐसा था जो वचनसें कहा न जाय, एकरोज वो वणिक कार्यप्रसंगसे दुसरे शहरको गया, जिस रोज वो आनेवाला था, उनके दोस्तोने उसकी औरतके पास जाकर बतौरइम्तिहानके जुठ कह दिया, तुमारा खाविंद मरगया, औरत इसबातको सुनकर वज्रकाघात लगे इसतरह गिर-पडी ओर तुर्त मरगइ, दोस्तोंने यह माजरा देखकर सोचा! बुरा हुवा, हांसी करते इसकी तो जान चलीगइ, चलो! अब उसके खाविंदको जो आज शामको आनेवाला है, जाकर खबर देवे, शहरसे कोश दो कोश सामने गये, ओर मिलनेपर कहा, तुमारी औरत आज मरगइ, सुनतेही उसके खाविंदका जीव घवडाया, और वहांही गिरकर मरगया, देखिये! स्नेह कैसी चीज है, जिससे दोनोंकी

जान चलीगइ, जहांतक बने स्नेह कम करना चाहिये, दोंस्तोंकों दोंनोंकी जान मारनेका पाप लगा, ऐंसी हांसी करना मुनासिब नही, स्नेह दो तरहका कहा, एक सचा स्नेह दुसरा नकली स्नेह,-

चक्षुर्दद्यात् मनो दद्यात् दद्यात् वाणीसुभाषितं,
उत्थाय चासनं दद्यात् एतत्स्नेहस्य लक्षणं १

१६ चाहे मर्द हो या औरत स्नेहका इम्तिहान करना चाहे तो इसतरह करे, अगर किसीके पास कोइ शख्श गया, और उसने खुश होकर खातिर तवजाकिइ. अछी नजरसे देखा. अछीतरह बाते किइ. और उठकर आसन दिया तो जानना उनके दिलमें अपने लिये जगह है, मगर दिलमें सचा स्नेह है या नही यह बात ज्ञानी जाने, दुनियामें मर्दका दर्जा बडा है, स्नेहसें जितना सुख मिलता है, दुख उससें ज्यादा मिलेगा, दिलमें फीक्र बना रहेगा, खानपान अछा नही लगेगा, बदनमें जलन होगी. नींद नही, उसी तर्फ ध्यान लगा रहेगा, और कोइ काम नही सुझेगा, अंतराय कर्मके उदयसें चीज मीले नही, मोहनीकर्मके उदयसें दिल घब-डाय, पूर्वभवका एकतर्फी स्नेह होगा तो एककों दुख होगा, एककों न होगा, दुतर्फी स्नेह होगा, तो दोनोंकों दुख होगा, अगर दोनोंकों स्नेह न होगा, तो दोनोंकों दुख न होगा, स्नेहका दुख मिटना ज्ञानी-योने दुसवार फरमाया, जबतक जिस जीवके पूर्वसंचित रागकर्मके परमाणुं उदयमें है, तबतक स्नेह छुट सकेगा नही, जब रागकर्मके परमाणुं उदयमें आयेबाद भोगलिये जाय तभी स्नेह छुट सकेगा, दुसरा रास्ता स्नेह छुटनेका नही, व्यवहारनयकी अपेक्षा कहसकते हो, स्नेह छोडनेकी कोशिश करना, परदेश चले जाना, उस स्नेहीके शाथ पत्रव्यवहार छोड देना, धर्मशास्त्र वांचते रहना, मगर निश्चय-नयकी अपेक्षा कर्मका उदय बलवान है, उदयमें आइहुइ कर्मप्रकृ-तिकों कोइ रोक नही सकता, वो भोगनेपरही छुट सकती है, अक्लमंदोंको लाजिम है, पापकर्मको पहले पीछे और बीचमें

बुरा समजे, और अपने आत्माकी भुल कुबुल करतारहे जिससें आइंदे अशुभ कर्म न बंधे, अगर कोइ मर्द चाहे में फलानी औरतकों अपने दिलसे भुलजाउ, या कोइ औरत चाहे मे फलाने मर्दकों अपने दिलसे भुल जाउ, मगर जबतक पूर्वसंचित रागकर्मके परमाणुं क्षय नहीहुवे भुल कैसेसके? धर्मशास्त्रमे सुनतेहो. भावी बलवान है. हानिलाभ, जीवनमरण, संयोग और वियोग कर्मके ताल्लुक है, कर्मोदयके आगे किसीका जोर नही चलता,–

१७ जिनके घर दो औरते विवाहीहुइ हैं, उनको आजकल निहायत तकलीफ रहेगी, वैसी आलादर्जेकी तकदीरवाले आजकल नही रहे जिनके घर आठ आठ और बत्तीस बत्तीस औरते होते हुवेभी टंटे झगडेका कुछ काम नही, वे औरते कभी आपसमे अनबनावभी रखतीथी, मगर खाविंदके आनेपर इसकदर बरताव करतीथी कि–उनकों मालुम न पडे इनका अनबनाव हुवा है, यानी उनकी कोइ औरत खाविंदके दिलको नाराज नही करतीथी, आजकल वैसी तकदीरवाले नही रहे, जभी उनकी औरतें उनके कहनेमे नही चलती, आजकल दो औरते विवाहना घरमे विरोध पैदा होनेका सबब है, औरतकों बेटोको नोकरको और चेलोको अवलसेंही अपने हुकममें चलाओगे तो अछा है, अगर इस खयालमे रहोगे पीछेसे हुकममें करलेयगें, यह खयाल बहेत्तर नही, कइ मर्द ऐसे है जो स्नेहके सबब औरतके सामने ज्यादा बोल सकते नही, और कइ ऐसे बेपरवाह है औरतकी परवाह नही रखते,–

१८ अगर कोइ औरत अपने खाविंदको वशमे करना चाहे, पतिव्रता होकर रहे, और उसके हुकममे चले, मगर पतिका और अपना धर्म जुदा हो तो पतिके कहनेसे अपना धर्म न छोडे, हां! सत्यधर्म किसका है? पतिका या अपना? इसका जरुर इम्तिहान करे, और सत्यधर्मपर पाबंद होजाय, जो शख्श औरतके स्नेहमे पडकर मातापिताकी इज्जत करना भूलजाय उसके समान कोइ

कम अकल नही, मातापिताका दर्जा हमेशां बडा है, औरतकों कामविकार व निस्वत मर्दके ज्यादा फरमाया, विषयसमुद्र अथाह है, इसका पारपाना कमहिम्मतवालोकों दुसवार है, तारीफ करो! उनकी जिनोने इससे फतेह पाइ, ज्यादा काम सेवनसे आंखोंकी रोशनी कम होगी, कानोंसें बहेरे होना और दम चढना इसीके बुरे नतीजे है, जो शख्श कामविकारसे बचना चाहे, औरतके शाथ एकांतमें बेठकर बातें न करे, तप करना जंगलवासी बनना और हजारो शख्शोके सामने होकर बहादूरीसे लडना मुश्किल नही, मगर जवानीमे कामविकारसें लडना मुश्किल है,–

१९ सुगंधो वनिता वस्त्रं गीतं ताम्बूलभोजनं,
मंदिरं वाहनं चैव अष्टौ भोगाः प्रकीर्तिताः,–१

खुशबुदार चीजें, औरत, कपडें, गीतगान, तांबूल, भोजन, मकान, और सवारी ये आठ भोगविलासकी चीजे है, जिस औरतकी बोली अछी न हो, जिसका रुप सोहावना न हो, उससे विवाह करना ठीक नही, मर्दको अछी औरत और औरतको अछा मर्द मीलना निहायत दुसवार है, मातापिताकों लाजिम है, पहले अपने बेटाबेटीकों पुछलेवे या उनके दोंस्तोंसें पुछवालेवे, फिर सगाइ करे, औरत मर्दका तावेउम्र संबंधरहेगा, विनामरजी देखे संबंध मिलाना बहेत्तर नही, पुनर्लग्न करना जैनशास्त्रोमें नही लिखा, पुनर्लग्नसे फायदा कम और नुकशान ज्यादा है. एक औरतका एक मर्दके शाथ स्नेह था, औरतके पास दौलत थी, मर्द गरीबी हालतका था, मगर दोंनोका स्नेह बहुत जिससें औरतने उस मर्दकों कहा, मेरेपास चारहजार रुपयोके मोंती मौजूद है, और मोतीयोंके भाव आजकल तेज है, आप लेजाइये! और बाजार भाव बेंचलाइये!! फायदा होगा, मर्दने कहा, मेरे भरुसे इतनी रकमकी चीज देतेहो, अगर मेरी नियत बदल गइ, और फर्जकरो! मेनेही दबालिइ तो क्या करोगे? औरतने कहा, खुशीसे दबा लेना, आपसे मोती क्या ज्यादा है? दरअसल! वो मर्द नकली स्नेहवाला नही था,

सच्चा था, मोती बेंचकर सब दाम उस औरतको लाकर सोपदिये, न किसी तरहका दगा किया, न उसमें दलाली खाइ,–

[ दोहा ]

कज्जल तजे न शामता मोती तजे न सेत.
दुर्जन तजे न कुटिलता सज्जन तजे न हेत. १

२० कज्जल अपनी शामताकों नही छोडता मोती अपनी सफेदीकों नही छोडता, इसीतरह बुराशख्श अपनी कुटिलता नही छोडता, अच्छा शख्श अपनी मोहब्बत नही छोडता. इसीलिये अछे शख्शोकी हमेशां तारीफही होती है, जहातक बने नेंकी करो, नेकीका नतीजा भला है, वसंतपुरनगरका एक राजा जिसके पांचसो और एक रानीये मौजूद थी. उनमे एक रानीपर राजासाहबका ज्यादा स्नेह था. बाद चंदरौज बीमारी होनेपर वो मरगइ, राजासाहब उसके स्नेहमें दिवाने जैसे बनगये, और कहने लगे वो मरी नही है, मुजपर नाराज होकर रुस गइहै, तीनरौज होगये मगर राजा उसके मुर्देकों जलाने देता नही. दिवानमुसद्दीयोने कहा! महाराज!! आपकी रानीसाहिबा इतकाल होगइ, हुकम दिजिये, उसके मुर्देको जला दिया जाय, राजासाहब उनपर गुस्से हुवे जिसकी औरत मरगइ हो वो ऐसा करे, अखीरमें राजासाहबने उसके मोहमें पडकर खाना पीना छोडदिया, दिवानमुसद्दीयोने राजासाहबकी नजर चुकाकर उस औरतके मुर्देको जंगलमे छुडवा दिया, राजासाहबको मालुम होनेसे गुस्सेहुवे और कहनेलगे उसको दिखलाओ! वरना! सजा दूंगा, दिवानलोगोने कहा वो खुद जंगलमे चलिगइ है, राजासाहब वहां गये, और देखते है, उस औरतके मुर्देका यह हाल है कि–

तत्र च प्रसरत् पूति क्लिन्नं कृमिकुलाकुलं,
गृध्रविक्षिप्तवक्षोजं वायसाकृष्टलोचनं १
आकृष्टांत्रं शृगालीभिरावृतं मक्षिकागणैः
विश्रुश्रियो वपुर्वीक्ष्याऽध्यासीदिति महीपतिः २

अहो! ह्यसारे संसारे सारं किंचिन्न दृश्यते,
मया त्वसौ सारमिति ध्याता मूढेन धिक् चिरं. ३

अर्थः—उस औरतके मुर्देमेंसें पींप वहता था, कीडे पडगये थे, गीध्र पक्षीयोने वक्षस्थल विदारण करदिया था, कौवोने आंखें खींचकर निकालडाली थी, गींदडोंने आंतरडे निकाल दियेथे, और मख्खीयां चारोतर्फ अवाज कररही थी, उस औरतका नाम विश्वश्रिया राजासाहब उसके मुर्देका यह हाल देखकर अपने दिलमे कहने लगे—में असारचीजकों सारमान रहा था, वडी भूल किइ, दरअसल! दुनियामें कोइ किसीका नही, सार वस्तु एक धर्म है, हरेक शख्शको लाजिम है स्नेहीके वियोगमें फिक्र कमकरे और धर्मपर साबीत कदम रहे, देखो! राजा किसकदर उस औरतपर मोहित थे मगर अखीरमें सुधरगये, इश्कके फंदेमें पडकर कइ मर्द और औरत शराबपीना इख्तियार करलेते है, धर्मशास्त्रका फरमान है, शराब मत पियो, शराब पीनेसे दिवानापन वढता है, आत्मज्ञान और ज्ञानतंतुओकों नुकशान पहुंचता है, ताकात कम होती है, भूख मारी जाती है, मग्ज खाली हो जायगा, और तरहतरहकी बीमारीयां दरपेश होगी. शराबपीनेसें यादवकुमारोंने द्विपायनरिषिकों सताया, द्वारिकानगरीका नाशहुवा और वडेवडे नुकशान हुवे ये सब शराब पीनेके नतीजे है,—

चित्ते भ्रांतिर्जायते मद्यपानात् भ्रांते चित्ते पापचर्यामुपैति.
पापं कृत्वा दुर्गतिं यांति मूढाः तस्मान्मद्यं नैव पेयं न पेयं,१

२१ शराब पीनेसें मनमें एकतरहकी भ्राति पैदा होगी, और इससें पापचर्या बढेगी, पापकरनेसे दुर्गति होगी और वडी तकलीफ पाओगे, इसलिये शराब पीना लाजिम नही, शराब पीनेसें मांस खानेका इरादा होगा, दुसरे जीवोंके प्राणोंका नाशकरना और उनका मांस खाकर अपने शरीरकी तंदुरस्ति चाहना कौन इन्साफकी बात है? जीवोंकों मारे विदून मांस नही मिल सकता,

और जीवोंका मारना अधर्म है, इश्कके फदेमे पडकर कइ मर्द औरत व्रतनियम तोडदेते है, अगर उनको कोइ कहे इश्क बुरीचीज है, तो कभी मानेगे नही, वेश्या या पराइ औरतके स्नेहमे पडकर दौलत चलीजाय, खानपानकी मुश्कली हो, और चारोतर्फसें आफत आवे जब कुछ अकल ठिकानेपर आसके, और दुसरोका कहनाभी असर हो सके, औरतभी जब दुसरे मर्दके स्नेहमे पडकर खानपानसे तंग हो, बीमारपडे, या कोइ दुसरी आफतमे फसे, कुछ अकल उसकी ठिकाने आवे और उसवख्त दुसरोंकी दिइहुइ नसीहतपर कुछ असर होंसके, दुसरा कोइ उपाव नही, अगर दोनो स्नेहीयोमें जुदाइ हो जाय, गेरमुल्कमे जानापडे, पत्रव्यवहारभी न होसके, तो स्नेह टुट सकता है, अगर कोइ अहलेहिम्मत और कामील इल्म हो और धर्मको पहिचानने वाला हो वेशक' स्नेहको छोड सकता है,–

अर्थार्थी भजते लोकः न कस्य कस्यचित्प्रियः
वत्सो क्षीरक्षयं दृष्ट्वा स्वयं त्यजति मातरं, १

२२ दुनियामे सब अपने मतलबको देखते है, दर असल! कोइ किसीका प्यारा नही, देखिये! गौका बचा जब अपनी माताके पास दूध नही देखता तो तुर्त छोडकर चला जाता है, परींदाभी हरे द्रख्तपर आकर बेठेगा, सुके द्रख्तपर कोइ नही बेठता, सुना गया है पतिके मरनेके बाद कइ औरते पतिके मुर्देके शाथ जलमरी है, मगर इसतरह मोहमे पडकर जलजाना कोइ धर्मशास्त्र नही फरमाता, कइ लोग ऐसाभी बयान करते है उस औरतको सत चढ जाता है, मगर यह बात गलत है, सती उसको कहना जो अपनी पाचो इद्रियोको काबुमे रखे और शिवाय अपने पतिके दुसरे मर्दको ख्वाबमेभी न इछे, पतिके मुर्देकेशाथ जलमरनेसे सतीपना नही कहाजाता,–

२३ धर्मशास्त्रोमे बयान है, जब इस जीवके बहुतसे पापकर्म इकट्ठे हो, औरतका जन्म पावे, मर्दका इंतकाल हो जाय तो औरतको

विधवा पनेके कपडे पहनना पडे, इससे सावीत हुवा, औरतकी तकदीर कमजोर है, औरतको तमाम उम्र दुसरेके तावेमे रहना पडता है, लडकपनमें मातपिताके जवानीमे पतिके और जइफीमें लडकोके इसतरह औरतके जन्मका हाल है, मर्दकी तकदीर देखो! अगर उसकी औरत इंतकाल हो जाय तो दुसरी सादीभी करसकता है, मगर औरत दुसरी सादी नही करसकती, अगर कोइ औरत मर्यादा छोडकर पुनर्लग्नकरे वो बात निराली है, यहां धर्मशास्त्रकी मर्यादापर चलनेवाली औरतका वयान है, कइ पढीलिखी औरतें इस बातकों मंजुर करती है, मर्दकी अकल होशियारीकों औरत नही पहुंच सकती, मर्द मर्दही है, उनकी तकदीर बडी है, औरत चाहे जितनी पढीलिखी या दौलतवाली हो मगर मर्दकी बातकों नही पहुंच सकती.

२४ जैनशास्त्रोमे पुनर्लग्नकरनेकी इजाजत नही, जिसमे थोडा फायदा और ज्यादा नुकशान हो वो काम अकलमंदोने मंजुर नही रखा, सोचो! पुनर्लग्नसें वडेवडे खानदान नेस्तनाबुद हो जायगें, फर्ज करो! कोइ लखपति इंतकाल होगये, उनकी औरतने पुनर्लग्न किया, पहलेवाले पतिकी दौलत लेजानेकी वो कोशिश करेगी, और वो दौलत दुसरेके तावेमें हो जायगी, अगर कोइ कहे जैनमजहबके अवल तीर्थंकर जब दुनियादारी हालतमें थे उन्होने पुनर्लग्न कियाथा, (जवाब.) यह बात गलत है, अगर किसीके पास कोइ सबुत हो तो जैनशास्त्रका पाठ बतलावे, विनासबुतके कोइ बात कहना लाजिम नही, तीर्थंकर रिषभदेव दुनियादारी हालतमें सुनंदा नामकी जो कन्या विवाहे थे, पहले उस कन्याकी सादी नही हुइथी, पुनर्लग्न उसका नाम है जिसकी पहले सादी हुइ हो और फिर दुसरी दफे सादी किइजाय, सुनंदाका युगल मनुष्य बालकपनेमें मरगयाथा,—

२५ मुल्क मारवाड राजपुताना और पूरवतर्फ जैनश्वेतांबर श्रावककोंके घर अपनी औरतोके लिये पर्देमें रहनेका रवाज जारी

है, इससें जिनमंदिरोमे जैनतीर्थोमे और धर्मगुरुओंकी व्याख्यान सभामे आनेजानेके लिये कम होनेकी वजहसें धर्ममे खलल पहुचता है, जिससे धर्ममे खलल पहुंचे उस रवाजकों छोड देना चाहिये, मुल्क गुजरान काठियावाड कछ मालवा और दखनतर्फ जहा जैनश्वेताम्बर श्रावकोकी औरतोंको पर्देमे रहनेका रवाज नही है, वहां देखलो! धर्मकी कितनी तरक्की हो रही है, जैन तीर्थोमे और जैनमंदिरोमे कितना धर्म होरहा है,–

२६ जिस शख्शकी तकदीर तेज हो, जहां जाय एशआराम और सुखचैन पावे, ख्वाह वो मर्द हो या औरत? तकदीर एक बडी चीज है, अगर वो तकदीरवाला शख्श पढालिखा ज्ञानवान हो तो ज्यादा इज्जत पावे, एकतर्फ दौलतमद और एकतर्फ विद्वान् दोनोंमे विद्वान् बढकर है, अगर वो तकदीरवाला विद्वान शख्श सत्यवक्ता हो फिर तो क्याही उमदा बात है, सच बोलनेसे अपनेपर दुसरोका स्नेह बढता है, और जूठ बोलनेसे स्नेह घटता है, दुनियामे मिशल मशहूर है, "जूठ किसीका सगा नही, साचकों आच नही,"–दुश्मनभी सचबोलनेवालोंकी तारीफ करते है और दोस्त बनजाते है, अगर कोइ कहे विनाजुट बोले आजकल काम नही चलता तो यह कहना गलत है? थोडे रोज सच बोलकर देखलो कितना फायदा होता है,? दिलमे इरादा दुसरी तरहका और मुहसें बोलना दुसरी तरहका इससे क्या फायदा? तरहतरहके अभिग्रह धारना, छलकपट करना और दुसरोंको हेरान परेशान करना–इसका अखीर नतीजा अछा नही, सच बोलना और धर्मपर एतकात रखना सबसें अछा है, कितनेक धर्मके काममें धर्मपुस्तकके बारेमे और देवमदिरके काममें जूठ बोलदेते है, मगर यह ठीक नही, धर्मका बडागुनाह है, चाहे मर्द हो या औरत सच बोलना सबके लिये फायदेमद है, चारतरहकी औरतोंका बयान खतम हुवा,–

[ दरबयान सांख्य मजहब,– ]

१ दुनियामें धर्म बडी चीज है, सचेधर्मकी तलाश करना आम लोगोका फर्ज है, इसलिये तरहतरहके मजहबोंका बयान देता हुं सुनिये! कइ कहते है, स्वर्ग नरक सब गप्प है, परलोक किसने देखा? धर्म कुछ चीज नही, और खानापीना एश करना यही मुनासिब है, मगर यह सब गलत है, धर्म सचा और सचेधर्मकी तलाश करना जरुरी है. बदौलत धर्महीके सुखचैन पाया और आइंद पाओगे. दुनियाका सारा तमाशा सुपनेकीसी माया है, जैसे कोइ आदमी सुपनेमें लखपति बना, मगर जब आखेखुली कुछ नही देखा, इसतरह दुनियाका खेल है, असल पुछो तो इसमे धर्मही उमदा चीज है,–

२ सांख्य मजहबके पंचविंशतितत्व तत्वकौमुदी गौडपाद आत्रेय तंत्र और सांख्यसप्तति वगेरा धर्मशास्त्र मंजुर रखेगये है, प्रत्यक्ष अनुमान और शाब्द ये तीनप्रमाण सांख्यमजहबमें माने है, उनकी केफीयत इसमे होगी, भरतचक्रवर्तीके बेटे मरिचीके चेले कपिल सांख्यमजहबकी नींवडाली, इस शुरुकालचक्रमें तीर्थंकर रिषभदेव महाराजसे जैनमजहब इजाद हुवा, उसके बाद सांख्य-मजहब शुरुहुवा, इस मजहबमें कपिल और आसुरिके बाद एक संखनामके आचार्य हुवे, उनके नामसें सांख्य मजहब कहलाया, पेस्तर इसका नाम कपिलमत था, सांख्योका फरमान है, जो शख्श हमारे मानेहुवे पंचविंशति तत्वोकों जाने उसकी मुक्ति जरुर होगी,

पंचविंशतितत्वज्ञो यत्रकुत्राश्रमे वसन्
जटी मुंडी शिखी वापि मुच्यते नात्र संशयः १

जो शख्श पचीस तत्वोंकों समज लेवे फिर चाहे वो आश्रममें रहे या दुसरी जगहपर रहे, सीरपर जटा रखे या न रखे, या चोटी रखे उसकी मरजीकी बात है, मगर उसकी मुक्ति जरूर होगी, सांख्यमजहबके दो भेद है, एक ईश्वरवादी, दुसरे अनी-श्वरवादी.

३ कपिल, आसुरि, भार्गव, पचशिख और वरकृष्ण ये सांख्य-मजहबके धर्माचार्योंके नाम है, साख्यसप्तति, तत्वकौमुदी, गोडपाद, आत्रेयतंत्र और माठर ये साख्यमजहबके धर्मशास्त्र है, प्रत्यक्ष अनुमान और शाब्द ये तीन प्रमाण सांख्यमजहबमें मानेगये है, जैनचार्य हरिभद्रसूरि अपने बनायेहुवे षट्दर्शनसमुचयग्रंथमें साख्यमजहबके बारेमे इसतरह बयान करते है,–

सांख्या निरीश्वराः केचित् केचिदीश्वरदेवताः
सर्वेषामपि तेषां स्यात् तत्वानां पंचविंशतिः ३४
सत्व रजस्तमश्चेति ज्ञेयं तावद् गुणत्रयं,
प्रसादतोपदैन्यादि कार्यलिंगं क्रमेण च ३५
एतेषां या समावस्था सा प्रकृतिः किलोच्यते,
प्रधानाव्यक्तशब्दाभ्यां वाच्या नित्यस्वरूपिका ३६

साख्यमजहबमें कितनेक निरीश्वरवादी और कितनेक ईश्वरवादी है, पचीस तत्वोंके बारेमें दोनोका मानना एकसरखा है, सतोगुण, रजोगुण और तमोगुणकी साम्यताका नाम प्रकृति-प्रकृतिका दुसरा नाम प्रधान और अव्यक्तभी है,–

ततः सजायते बुद्धिः महानिति यकोच्यते,
अहंकारस्ततोपि स्यात् तस्मात् षोडशको गणः ३७
स्पर्शनं रसनं घ्राणं चक्षुः श्रोत्रं च पंचमं,
पंचबुद्धींद्रियाण्याहुः तथा कर्मेंद्रियाणि च. ३८
रूपात्तेजो रसादापो गंधाद् भूमिः स्वरान्नभः
स्पर्शाद् वायुस्तथैवं च पंचभ्यो पंचभूतकं ३९
एवंचतुर्विंशतितत्वरूपं निवेदितं सांख्यमते प्रधानं,
अन्यश्च कर्त्ता विगुणश्च भोक्ता तत्वं पुमान् नित्यचिदभ्युपेत

४ साख्यमजहबमें मानागया है, प्रकृतिसें बुद्धि, बुद्धिसे अहंकार, और अहंकारसे षोडशगण पैदाहोता है, १ स्पर्शन, २ रसन, ३ घ्राण, ४ चक्षुः और ५ श्रोत्र, ये पाच बुद्धिइंद्रिय हुइ,

६ पायु, ७ उपस्थ, ८ वचः, ९ हाथ, १० पांव ये पाच कर्मइंद्रिय हुइ, ११ रूप, १२ रस, १३ गंध, १४ स्वर, और १५ स्पर्श, ये पांच तनुमात्र और १६ मन, ये षोडशगण हुवा, पांचतनुमात्रसें पंचभूत पैदा हुवे, रूपतनुमात्रसें तेज, रसतनुमात्रसें जल, गंधतनुमात्रसें पृथवी, शब्दतनुमात्रसें आकाश, और स्पर्शतनुमात्रसें वायु पैदा हुवा, प्रकृति-बुद्धि अहंकार और अहंकारसें पांच बुद्धीद्रिय, पांच कर्मइंद्रिय, पांच तनुमात्र और मनः इन सबकों मिलानेसे (१९) तत्व हुवे, इनमें पंचभूत मिलानेसें (२४) तत्व हुवे, और उनमे पुरुष (यानी) आत्मा मिलानेसे (२५) तत्व सांख्यमतके हुवे,–

अमूर्त्तश्चेतनो भोगी नित्यः सर्वगतोक्रियः
अकर्त्ता निर्गुणः सूक्ष्मः आत्मा कापिलदर्शने, १

५ सांख्यमजहबमे आत्मा अमूर्त, ज्ञानवान् भोगी नित्य सर्वव्यापी अक्रिय अकर्त्ता निर्गुण और सूक्ष्म है,–

प्रकृतेर्विरहो मोक्षस्तन्नाशे स स्वरूपगः
बध्यते मुच्यते चैव प्रकृतिः पुरुषो न तु, १

प्रकृतिके विरहका नाम मोक्ष है, और उसके विरहसें आत्मा अपने स्वरूपकों पाता है, प्रकृतिही बंधाती और छुटती है, पुरुषका बंध मोक्ष नही, इसतरह सांख्यमजहबका फरमान है, सांख्यमजहबके साधु गेरवेरंगके कपडे पहनते है, हाथमें त्रिदंड और बिछानेके लीये मृगचर्म, ब्राह्मणके घरका भोजन लेते है, उनके भक्तलोग ॐ नमो नारायणाय ऐसा कहकर उनकों नमस्कार करते है, और उनके जवाबमें सांख्यमजहबके साधु नारायणाय नमः कहते है, सांख्यमजहबकी कारिकाकों बहुतलोग पुरानी बयान करते है, मगर उनकी रचना करनेवाले ईश्वरकृष्णाचार्यजीने उसमें संवत् बतलाया नही. इसलिये क्या कहाजाय? बयान सांख्यमजहबका खतम हुवा,–

[ बयान वैदिक मजहब,– ]

१ इसमें चारवेदोंका बयान, वेदोंपर किस किस महाशयने भाष्य बनाया? स्मृति और पुराण वगेराकी हकीकत पुरीतौरसें दिइगइ है, च–खूबीदेखलो! शुक्लयजुर्वेदकी महीधरभाष्यमे बयान है,–

तत्र ब्रह्म परंपरया प्राप्तं वेदं वेदव्यासो मंदमतीन्–मनुष्यान् विचिंत्य तत्कृपया रिग्यजुःसामाथर्वाख्यान् चतुरो वेदान् पैलवैशंपायनजैमिनिसिमंतुभ्यः क्रमादुपदिदेश,–

( अर्थः ) ब्रह्माजीकी परंपरासें चले आतेहुवे वेदोंकों व्यासजीने इकठे करके उनके चार हिस्से बनाये, अवल हिस्सेका नाम रिग्वेद और वो पैलनामके चेलेको दिया, दुसरे हिस्सेका नाम यजुर्वेद वो दुसरे नंबरके चेले वैशंपायनकों दिया, तिसरे हिस्सेका नाम सामवेद वो तिसरे नंबरके चेले जैमनिकों दिया, चौथे हिस्सेका नाम अथर्ववेद, और वो चौथे नंबरके चेले सिमतुकों दिया, रिग्वेद भाग दुसरा मंत्र (७) में लिखा है, वेद परमेश्वरसे आये, इसलिये कावील तारीफके है, यजुर्वेदके शतपथमे बयान है, चारो वेद परमेश्वरके श्वाससे निकले, मनुस्मृति अध्याय पहेला श्लोक (२३)में लिखा है ब्रह्माजीने अग्नि वायु और सूर्यसें रिग्वेद यजुर्वेद और सामवेद आकृष्टकिया, और ये तीनों वेद सनातन है, शारीरीकभाष्य अध्याय पहला पाद तीसरा सूत्र (१९) में लिखा है, वेद अनादि है, महाभारत और दयानंदसरस्वतीकी बनाइहुइ रिग्वेदादिभाष्य भूमिकामे लिखा है, जब प्रलय होगा, वेद परमेश्वरमे लीन हो जायगें और फिर जब दुसरी सृष्टि होगी, रिषिलोग तप करेंगें वेदोंको पायगें, रिग्वेदसहितामे लिखा है, वेदमंत्र रिषियोने उत्पन्न किये, ऋषेमंत्रकृता स्तोमैः कश्यपो द्धर्थयन्गिरः,

२ वैदिक मजहबमें गायत्रीमंत्रका जपकरना सबसें बडा कहा, गायत्रीमंत्र पढनेसे मनुष्य मुक्ति पाता है, चाहे दुसरी कोइ धर्म-

क्रिया उससे बने या न बने, सिर्फ! गायत्रीमंत्रकों पढे वो आकाश और वायुकी तरह साफहोकर परब्रहममें लीन होजायगा, और मुक्ति पायगा, उपनिषदोमें बयान है, जो शख्श सूर्यके सामने बेठकर गायत्रीमंत्रका जापकरे निडर होजाय, गायत्रीमंत्रके प्रभावसें एक क्षत्रिय ब्रहमरिषि हुवे.–

[ गायत्री-मंत्रः ]

ॐ भूर्भवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य–
धीमहि धियो-यो-नः-प्रचोदयात्,–

(अर्थः) भू-पाताल स्वर्ग हम सूर्यकी बडी ज्योतिका ध्यान करते है, वो हमारी बुद्धिको प्रेरणा करे, वेदोकों मुहजबानी यादरखे उनकों वैदिक कहते है, यज्ञकराना जानते हो, उनकों श्रोत्रिय, और जो गृहस्थोके उपनयन, विवाह वगेरा संस्कार कराना जानते हो, उनकों याज्ञिक कहते है, जिनोने यज्ञ कियाहो उनकों दीक्षित कहते है.–

३ वेदोंपर सायनाचार्य, माधवाचार्य, औवट और महीधराचार्यने भाष्य बनाये, सायनाचार्य आजसे करीब (५००) वर्स पहले मुल्क कर्णाटकके विजयनगरमें बुक्क नामके राजाके आश्रित थे, और संन्यासी हुवे बाद इनका नाम विद्यारण्यस्वामी कहलाया, अजामेध, गोमेध, अश्वमेध, अग्निहोत्र, राजसूय और वाजपेय ये सब यज्ञोंके नाम है, रिग्वेदकी पांचशाखा इसतरह है, १ सांख्यायिनी, २ शाकल, ३ बाष्कुल, ४ आश्वलायनी, और ५ मांडूक, कृष्णयजुर्वेदकी पांचशाखा, १ आपस्तंबीय, २ हिरण्यकेशी, ३ मैत्राणि, ४ सत्याखाड, और ५ बौधायनी, शुक्लयजुर्वेदकी तीन शाखा इसतरह है, १ कण्व, २ माध्यंदिनी, और ३ कात्यायिनी, सामवेदकी तीन शाखा, १ कौथुमी, २ राणायणी, और ३ गोभिल, अथर्ववेदकी दो शाखा इसतरह है, १ पीप्पलाद, और २ शौनिकी.

४ वेदोंके गीतोका दुसरा नाम सूक्त कहते है, और दरेक गीतोंकी कलिकों रिचा बोलते है, वेदोंके पढनेसें मालुम होता है, शुरुआतमें

लडाइके वख्त धनुष्य बाण और वज्र ज्यादा काममे लेतेथे, और योद्धेलोग कवच पहनतेथे, जब दस्युलोगोके शाथ आर्योंकी लडाई होतीथी, आर्य लोग बहादूरीसे लडतेथे, सोमपीनेका बयानभी शास्त्रोंमे आता है, असलमे सोम एकतरहकी लताका रस था, जो बदनमें ताकातको देनेवाला था, वैदिकमजहबमे बयान है वेद मानवधर्मशास्त्र और पुराण ये आज्ञासिद्ध है, इनको दोषित कहना नही बनसकता.–

५ ऐतरेयोपनिषत्, अष्टाविंशति उपनिषत्, शिक्षादिवेदांगचतुष्टय, मनस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृति, योगवासिष्ठ, विदुरनीति, महाभारत, श्रीमद्भागवत, वाल्मीकिरामायण, गीता, विष्णुसहस्रनाम, शिवसहस्रनाम, दुर्गासप्तशती, शिवपुराण और एकादशीमाहात्म्य, वगेरा वैदिकमजहबके धर्मशास्त्र है, वैदिकमजहबमे बयान है, जब पृथवीपर पाप बढजाय और अधर्मकी तरकी हो, ईश्वर दुनियामें आनकर अवतार लेवे, और अधर्मियोंकों शिक्षा देवे.–

मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नरसिंहोथ वामनः
रामो रामश्च कृष्णश्च बुधः कल्की च ते दश, १

१ मत्स्यावतार, २ कूर्मावतार, ३ वराहअवतार ४ नरसिंहअवतार, ५ वामनअवतार, ६ पर्शुरामअवतार, ७ रामावतार, ८ कृष्णावतार, ९ बुद्धावतार, और १० कल्कीअवतार, ये दश अवतार वैदिकमजहबमे बडे माने है.–

६ वैदिकमजहबके एक विद्वान्ने तमाम महाभागवतका मतलब एकही काव्यमें इसतरह दर्ज करदिया है, सुनिये!

[ शार्दूलविक्रीडितं. ]

आदौ देवकिदेवगर्भजननं गोपीगृहे वर्द्धनं,
मायापूतनजीवितापहरणं गोवर्द्धनोद्धारणं,
कंसच्छेदनकौरवादिहनन कुंतीसुतापालन,
एतद् भागवतः पुराणकथनं श्रीकृष्णलीलास्पदं, १

(अर्थः) अवल देवकीरानीकी कुक्षीसें श्रीकृष्णजीका जन्म हुवा,

गोपीयोंके घरपर चढे, मायापूतनाकों मारडाली, गोवर्द्धनपर्वत उठाया, कंसका छेदन किया, कौरवोंका नाश और पांडवोंकी रक्षा किई. बस! इतनाही महाभारतका सार है, जो एकही काव्यमें आगया?

७ एक विद्वान्ने तमाम रामायणका सार एकही काव्यमे बयान कर दिया है, देखिये!

[ शार्दूलविक्रीडितं. ]

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं कांचनं,
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसंभाषणं,
वालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनं,
पश्चाद् रावणकुंभकर्णहननं चैतद्धि रामायणं. १

(अर्थः) रामचंद्रजीका वनवासको जाना, कांचनमृगका हणना, शीताजीका हरण होना, जटायुका मरना, सुग्रीवके शाथ संभाषण होना, वालीका निग्रह करना, लंकापुरीकों जलाना, और कुंभकर्ण तथा रावणका नाश करना. बस! सारी रामायणका सार इतनाही है, जो एक काव्यमें आगया, समजनेवाले समजलो!

८ वैदिकमजहबमें साधुजनोंकों भिक्षामांगकर सिकम परवरीश करना कहा, गृहस्थके घर बेठकर भोजनजीमना मना है, चाहे कोइ गृहस्थ लखपति हो या गरीब, साधुजनोंकों सब समान है, वैदिकमजहबके धर्मशास्त्रोमें ब्राहमणके लक्षण इसतरह है, सुनिये!

[ अनुष्टुप् वृत्तम् ]

सत्यं ब्रह्म तपोब्रह्म ब्रह्म चेंद्रियनिग्रहः
सर्वभूतदया ब्रह्म ह्येतद् ब्राह्मणलक्षणं, १
न योनिर्नापि संस्कारो न श्रुतं नापि संततिः
कारणानि द्विजत्वस्य व्रतमेव तु कारणं, २
ब्राह्मयस्वरूप कल्याणि समः सर्वत्र दृश्यते,
निर्मलं सकलं ब्रह्म यत्र तिष्ठति स द्विजः ३

(अर्थः) सत्यबोलना, तपकरना, पाचो इंद्रियोंकों काबुमे

रखना, और सब जीवोपर रहेम करना, ब्राहमणपनेके लक्षण है, उत्पत्ति, संस्कार, विद्या या संतति ब्राहमण होनेके हेतु नही, ब्राहमण होनेके हेतु व्रतनियम और सदाचार है, जिसमें निर्मल ब्रह्मस्वभाव है, वही ब्राह्मण है,–

ब्रह्मचर्येण सत्येन तपसा संयमेन च,
मातंगर्षिर्गतः शुद्धिं न शुद्धिस्तीर्थयात्रया, १
अग्निहोत्रं वने वासं स्वाध्यायो दानसत्क्रिया,
तान्येवैतानि मिथ्या स्युर्यदि भावो न विद्यते, २

१ (अर्थः) ब्रह्मचर्य पालनेसें सत्यबोलनेसे तपकरनेसे और संयम पालनेसे मातंगरिपि शुद्ध हुवे, विना ब्रह्मचर्य और विना सयम चाहे जितनी तीर्थोकी जियारत करो, मगर शुद्धि न होगी, १ अग्निहोत्र करना, वनमें रहना, शास्त्र पढना दानपुन्य वगेरा सत्क्रिया करना ठीक है, मगर दिलमें भाव नही तो कुछभी नही, अछीगति होना अपने शुभभावके ताल्लुक है, बयान वैदिकमजहबका खतम हुवा,–

[ दरबयान मीमांसक मजहब, ]

१ मीमासक मजहबका दुसरा नाम जैमिनीय है, इनके दो भेद, एक कर्ममीमासक, दुसरा ब्रह्ममीमांसक, वेदातिक लोग ब्रह्ममीमासक है, और भट्ट प्रभाकर कर्ममीमांसक है, इनके साधुलोग गेरुके रंगेहुवे वस्त्र पहनते है, त्रिदंड मृगचर्म और हाथमे कमंडलु रखते है, कितनेक मीमासक वेदोको परमतत्व कहकर ईश्वरको नही मानते, मीमांसकमजहबमें सर्वज्ञआदि विशेषणवाला कोइ ईश्वर नही, वेदोकोही नित्य मानते है, और उसीसें तत्वोंका निर्णय करते है, वेदोको हमेशा पढते रहना कहते है, मीमांसकमजहबवाले जब एक दुसरेके सामने मिलते है, सन्यस्तं संन्यस्त ऐसा शब्द बोलते है,–

२ वेद कठवल्लिका भागवत और पुराण वगेरा मीमांसकमजहबके धर्मशास्त्र है. मीमांसकमजहबका संप्रदाय जमाने हालमे कम रहगया,—

"एते सांख्यानुगा वेशात् तत्वे तु महती भिदा."

मीमांसकमजहबके साधुवेशमें सांख्यकी तरह होते है, और तत्वोंमें वेशक! भेद है, १ प्रत्यक्ष. २ अनुमान, ३ शब्द, ४ उपमान, ५ अर्थापत्ति, और ६ अभाव ये छह प्रमाण भट्ट मीमासकवाले मानते है, और प्रभाकर नामके मीमांसकवाले अभावकों छोडकर बाकीके पांच प्रमाण मंजुर रखते है, मिमांसक मजहबके साधु ब्राह्मणही होते है, और शूद्रके घरका अन्न नही खाते, वेदोंकों अनादि मानते है, पुरुषकृत नही,

३ मीमांसकमजहबके साधुओके चार भेद इसतरह है, १ कुटीचर, २ बहूदक, ३ हंस, और ४ परमहंस, इनमें कुटीचर मठमेंही रहा करते है, बहूदक साधु नदीके कनारेपर रहते है, और निरस भोजन लेते है, हंस नामके मीमांसकसाधु मुल्कमुल्कमे सफर करते है और तप करते है,—

हंसस्य जायते ज्ञानं, तदा स्यात् परमो हि सः,
चातुर्वर्ण्यप्रभोक्ता च, स्वेच्छया दंडभृत्तदा. १

हंसनामके तिसरे भेदके साधु जब धर्मक्रियामें आगे बढे तो परमहंसपदवी पावे. और वे चारोवर्णका भोजन लेवे,—

एकमेवाद्धितीयं स्यात् ब्रह्मतत्वं महाफलं,
प्रपंचः स्तंभकुंभादिस्तेषां मते निरर्थकः १

(अर्थः) एक अद्धितीय ब्रह्मतत्वही दुनियामें सत्य है, बाकी सब पदार्थका प्रपंच निरर्थक है, बयान मीमासकमजहबका खतम हुवा.—

## [ बीच बयान नैयायिकमजहब.– ]

१ योग, शैव, अक्षपाद और नैयायिक ये नैयायिकमजहबके नाम है, इस मजहबमें १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान, ३ उपमान, और ४ शाब्द ये चार प्रमाण माने गये है, १ प्रमाण, २ प्रमेय, ३ संशय, ४ प्रयोजन, ५ दृष्टांत, ६ सिद्धांत, ७ अवयव, ८ तर्क, ९ निर्णय, १० वाद, ११ जल्प, १२ वितंडा, १३ हेत्वाभास, १४ जल्प, १५ जाति, और १६ निग्रह, ये सोलह पदार्थ नैयायिकमजहबमें मंजुर रखेगये है.–

२ नैयायिकमजहबके साधु कंबल ओढते है, सीरपर जटा रखते है, हमेशां मुखशोधन करके शरीरपर भस्म लगाते है, नीरस भोजन खाते है, हाथमे तुंबा रखते है, और बहुतकरके वनमे रहाकरते है, कंदमूल और फल वगेरा खाते है, अतिथिका सत्कार करते है, कितनेक पंचाग्निताप करके सामने बेठकर ध्यान करते है, उनके सेवकलोग हाथ जोडकर नमस्कार करते वख्त ॐ नमः शिवाय कहते है, उनके जवानमे साधुलोग शिवाय नमः कहते है.–

३ नैयायिकमजहबमे शंकरको देव मानते है, और वो सृष्टिके संहारक है, १ नकुलीश, २ कौशिक, ३ गार्ग्य, ४ मैत्र्य, ५ कोरुप, ६ ईशान, ७ पारगार्ग्य, ८ पलांडक, ९ मनुष्यक, १० अपरकुशिक, ११ अत्रि, १२ पिंगलाक्ष, १३ पुष्पक, १४ बृहदाचार्य, १५ अगस्ति, १६ संतान, १७ राशिकर, और १८ विद्यागुरु ये अठारा इनके बडे आचार्य है.–

४ दुःखका आत्यंतिक वियोग होना उसका नाम नैयायिकमजहबमे मोक्ष माना गया है, अगर कोई शख्श नैयायिकमजहबकी दीक्षा लेकर बारा वर्सतक पाले और अगर फिर छोडभी देवे तोभी उसकी मुक्ति होसकेगी, जयंताचार्यका बनायाहुवा न्यायतर्कग्रंथ बडा है, नैयायिकमजहबमे एक उदयनाचार्यभी हुवे, जिनोने न्यायके बहुतसे ग्रंथ बनाये है.–

५ नैयायिकमजहबमें एक सर्वज्ञनामके बडे नैयायिकाचार्य हुवे, जिनोने न्यायसारतर्कसूत्र बनाया है, और उसपर अठारांतरहकी टीका हैं, उनमें न्यायभूषण नामकी टीका ज्यादा मशहूर हैं, बयान नैयायिकमजहबका खतम हुवा.

[ बयान बौधमजहब. ]

१ इसमे बौधमजहबके प्रवर्तक गौतमबुधका जीवनचरित बतौर इंतिखावके लिखागया है, जैन और बौधमजहबको कितनेक महाशय एक समजते है, मगर एक नही, जुदे जुदे है, इसमे बौधमजहबके शास्त्र और उनके मुनि कैसे होते है? उनका तपसीलवार तस्किरा दियागया है, गौतमबुधका जन्म मुल्क नेपालकी तराइमें सुंसमारपर्वतके पास कपिलवस्तुगांवमे हुवा, उनके वालिदका नाम शुद्धोदन और माताका गौतमी था, गौतमबुधकी औरतका नाम यशोधरा और बेटेका नाम राहुल था, गौतमबुधने (३०) वर्सकी उम्रमे दुनिया छोडकर मुनिपना इख्तियार किया, एकरोज गौतमबुध महेलमें सोनेगये, उनकी औरत सोतीथी, मनमें वैराग आया दुनिया जुठी है, दरवजेसेही पिछे लोटे. और घोडेसवार होकर अंधेरेमे चले, रातभरकी सफरके बाद सवेरको अपने इमानदार नोकरके शाथ घोडा और गहना अपने वालिदको भेजदिया, और अपने लंबे केशोको काटकर साधुपनेका वेश पहना और आगे जंगलकी राह लिइ, जवानीमें दुनियाका सुखचैन छोडा औरत और बेटेसे मोह नही किया, राजकुमार होकर जंगलवासी बने, हकीकतमे सहज बात नही.—

२ कपिलवस्तु गांवसे चलकर गौतमबुधने पहला चौमासा शहर बनारसमे किया, बनारससे चलकर राजगृही आये और आनंद देवदत्त उपाली और अनुरुद्ध ये चार चेले यहा किये, इनदिनोंमे कपिलवस्तुगांवसे राजा शुद्धोदनका गौतमबुधको बुलाना आया,

गौतमबुध चेलोंकों लेकर कपिलवस्तु गये, राजासाहबने भोजनके लिये निमत्रणा किई, भिक्षाके लिये गौतमबुध अपने घर गये, रिस्तेदारोसे मिले, यशोधरा स्त्रीकोभी मिलने गये, दुरसे अपने खाविंदकों देखकर यशोधराने रोदिया, पांवमें गिरकर बहुत रोने लगी, तब गौतमबुधने उपदेश दिया धीरज रखो, दुनिया जुठी है, और धर्म करना अछा है, फिर गौतमबुध भिक्षालेकर अपने मठकों आये, और जब कपिलवस्तुसे जानेलगे यशोधराने अपने बेटे राहुलकों राज्यभाग मांगनेके लिये भेजा, एक दो पडाव चले गये बाद एक आश्रममें राहुल गौतमबुधसे जा मिला, गौतमबुधने अपने चेलोंको कह रखाथा, राहुलकों साधु बनालेना, उनोने उसीतरह किया, राजा शुद्धोदन इसबातसे बहुत नाराज हुवे और गौतमबुधसें मिलकर इकरार करवाया कि—मातापिताके विना हुकम किसीकों साधु करना नही. अखीरमें गौतमबुधकी औरत यशोधराभी साधवी हुइ.—

२ गौतमबुध राजगृही आये, और मुल्कबमुल्कमे सफर करते रहे, गौतमबुध तीर्थंकर महावीर स्वामीके वख्त हयात थे, मगर उनका कभी रुबरुमिलना हुवा नही, तीर्थंकर महावीरस्वामीको निर्वाण हुवे आज ( २४५० ) वर्स हुवे सबब इसपुस्तकके लिखते वख्त सवत् ( १९८० ) चलता था, उसमे ( ४७० ) वर्स मिलानेसे उपरलिखे मुजब वर्स होते है, तीर्थंकर महावीरस्वामीके चेले गौतम गणधर जुदेथे और गौतमबुध जुदेथे ऐसा जानना, कितनेक महाशय जैनबौधको एक और कितनेक एक दुसरेकी शाखा समजते है, लेकिन! जैनबौध एक नही, न एक दुसरेकी शाखा है कितनेक कहते है, एक दुसरोकी पुस्तकोपरसे नकल किइ है, कितनेक कहते है, दोंनोने वैदिकमजहबके पुस्तक बौधायनसे नकल किइ है, मगर यह बात गलत है, सबब जो बात जैनपुस्तकोंमें है, वो बात बौधायनमे नही, और जो बौधायनमें है वो जैनमें नही, जो

बात बौधपुस्तकोंमें है वो जैनपुस्तकोमे और बौधायनमें नही, कितनेक कहतेहै, जैनबौधके इतिहासकी बातें एक मिलती है, इसलिये दोनों एक है, लेकिन! इतिहासकी बाते कहां मिलती है? जैनमजहबमे चौइस तीर्थंकर है, बौधमजहबवाले सात मानते है, चौइसमे तीर्थंकर महावीर और बौधमजहबके आचार्य गौतमबुध एकवख्तमें हुवे, मगर इससे एक नही कहसकते जैनबौध एक है, दोनोंके धार्मिक कायदे जुदे जुदे है, एक दो बातें मिलनेपर एक नही होसकते.-

४ बौधमजहबमें सौगतदेव मानेगये है. और उनके साधु लाल कपडे पहनते है, तारादेवी नामकी एकदेवी बौधमजहबमें एकबतौर मददगारके मानीगइ है, बौधमजहबमें जो सात तीर्थंकर माने गये है, उनके नाम, १ विपश्यी, २ शीखी, ३ विश्वभू, ४ ककुछंद, ५ कांचन, ६ काश्यप, और ७ शाक्यसिंह, बौधमजहबमें प्रत्यक्ष और अनुमान दो प्रमाण मानेगये है, विज्ञान, वेदना, संज्ञा, संस्कार और रूप ये पांचस्कंध बौध मजहबमें लिखे है, सब पदार्थ क्षणिक ऐसा बौधोंका मानना है, जैनलोग बौधोके तत्वोकों मंजुर नही रखते और बौधलोग जैनोके तत्वोंकों मंजुर नही रखते, इसलिये दोंनो एक नही, बल्कि! जुदे है, बौधमजहब गौतमबुधसे चला, इसके पहले बौधमजहब नही था, अगर कोइ कहे था तो इसकी सानीती बौधग्रंथोंसें कोइ बतलावे, तीर्थंकरमहावीर जैनके चौइसमें तीर्थंकर हुवे, उनके पेस्तर रिषभदेव अजितनाथ संभवनाथ वगेरा तेइस तीर्थंकर होचुके है, तीर्थंकरमहावीरने नया मजहब जारी नही किया, तीर्थंकर महावीरने साढेबारह वर्सतक तप किया, और गौतमबुधने छह वर्सतक तप किया, तीर्थंकरमहावीरके इंद्रभूति गौतम वगेरा ग्यारह चेले बडे थे, छोटे चेले बहुत थे, गौतमबुधके मौदगलायन शौरीपुत्र आनंद देवदत्त-उपाली और अनुरुद्ध वगेरा चेले थे,-

५ गौतमबुधका देवदत्त नामका जो चेलाथा उसका और गौतमबुधका एकदफे तकरार हुवा, और उसने गौतमबुधके खिलाफ होकर नया मजहबभी जारी कियाथा, मगर वो कमउम्रमे मरगया, इसलिये उसका मजहब ज्यादा चला नही, तीर्थंकरमहावीरका फरमाना था किसी जीवकों मारना नही, और मास खाना नही. गौतमबुधका फरमान था जिस मुल्कमे जैसा मिले वैसा खाना, अनाज मिले तोभी खाना, और मांस मिले तो भी खाना, बोधमजहबमें ईश्वरकों कर्त्ता नही मानते, बौधमजहबवाले क्षणिकवादी होनेसे जन्मजन्मांतर नही मानते, लेकिन! गौतमबुधने बयान किया है मेने बहुत जन्मजन्मांतरमें भ्रमण किया, गौतमबुधके तीसरे चौमासेका बराबर हाल नही मिलता, चौथे चौमासेका हाल इतना मिलता है विशालानगरीमे किया, विशालानगरीसे रवाना होकर गौतमबुध कपिलवस्तुगांव तर्फ आये, राजा शुद्धोदनका जब इतकाल हुवा गौतमबुध कपिलवस्तुमे थे, कितनीक औरतोकों यहां बोधमजहबकी साधवी बनाइ, फिर वत्सदेश कौशांबीनगरीमें आये, कौशावीसे रवाना होकर महावनमे कुतागारविहार आनकर पाचमा चौमासा किया, कुतागारविहारसे रवाना होकर गौतमबुध महाकुलमे गये, और वहां छठा चौमासा किया. इस चौमासेमें गौतमबुधने सौचा मेनें छह वर्सतक तप किया, लेकिन! कुछ न हुवा, इसलिये तप करना छोडदेना चाहिये, जो है, सो ज्ञानमेही है, दुसरे लोगोकों धर्मोपदेश देकर धर्ममें पावंदकरना यही अछी बात है, महाकुलसे रवाना होकर गौतमबुध राजगृही आये, राजाश्रेणिककी औरत्त क्षेमाको बुधधर्मकी दीक्षा दिइ, फिर सावथ्थीनगरीमें आनकर राजा श्रेणिककों कितनेक चमत्कार बतलाये, मगधदेशका राजा श्रेणिक पेस्तर जैन नही था, पीछेसे तीर्थंकरमहावीरकी धर्मतालीम पाकर जैन हुवा,—

६ सातमा चौमासा गौतमबुधने जेतवनविहारमें किया, जेतवनविहारसे चलकर गौतमबुध सुंसमारपर्वत जो कपिलवस्तुके पास था उसपर गये, और वहा आठमा चौमासा किया, सुंसमार पर्वतसें गौतमबुध कौशावी आये, यहां मौदगलायनके शाथ तकरार हुवा, और गौतमबुध गुस्सेहोकर पारिलेयकवनमें चले गये और वहां नवमा चौमासा किया, मौदगलायन और शौरीपुत्र ये दो गौतमबुधके लाडकवर चेले थे, बौधपीठकोमें इनका नाम बहुत जगह देखनेमें आता है, दसमा चौमासाभी गौतमबुधने पारिलेयकवनमेंही किया, पारिलेयकवनसे रवाना होकर गौतमबुध राजगृहीके पास भारदवाजगांवमें गये, और ग्यारहमा चौमासा वहां किया,

७ भारद्वाज गांवसें रवाना होकर गौतमबुध कोशलदेशमें वेंरंजगांव गये, और वहां बारहमा चौमासा किया, वेंरजसे चलकर दखनमें मंतलतक लंबी सफर किइ, मंतलसे लोटकर कोशलदेशमें शहर बनारसकों आये, बनारससे विशाला होते सावथ्थी गये, यहां राहुलपुत्रको महाकुलनामका सूत्र रचकर सुनाया, जब राहुल अठारां वर्सका होचुका था, सावथ्थीसे रवाना होकर चालिया-गाव गये और तेरहमा चौमासा वहां किया, बाद चौमासेके फिर सावथ्थी गये, सावथ्थीके जेतून विहारमें गये, और वहांपर चौदहमा चौमासा किया, पनरहमा चौमासा करीब सावथ्थीके निग्रोधगृहमे किया, शुद्धोदनकी गादीपर भद्रक राजा हुवा और उसकी गादीपर जो महानामका राजा हुवाथा उसकों यहां धर्मो-पदेश दिया, निग्रोधगृहसे चलकर सोलहमा चौमासा अलवी गांवमें किया, यहां एक राक्षसको प्रतिबोध दिया, सतराहमा चौमासा राजगृहीमें किया, यहां एक श्रीमती वेश्याकों प्रतिबोध दिया, राजगृहीसे सावथ्थी, सावथ्थीसे अलवीगांव अलवीगांवसे चालियागांव आनकर अठारमा चौमासा किया, चालियागांवसें

राजगृही गये, राजगृहीसे फिर उन्नीसमा चौमासा वेलूवनविहारमे किया, वेलूवनविहारसे मुल्क मगधकी सफर किइ, और विशमा चौमासा सावथ्थीमें किया, सावथ्थीसें चालियागांव गये, वहां वनमें एक चौरकों प्रतिबोध दिया, जिसका नाम एंगुलीमाल था, बाद इसके गौतमबुधके चौमासोंकी हकीकत बराबर नही मिलती,

८ इनदिनोमे देवदत्त नामके चेलेके शाथ गौतमबुधका तकरार हुवा, जो चाचेका बेटा था, नाराज होकर राजगृही गया, श्रेणिकके बेटे अजातशत्रु (कौणिक) के दियेहुवे मकानमें ठहरा, बाद चंदरौजके गौतमबुधभी राजगृही गये, देवदत्तने क्रिया उद्धार करनेकी आज्ञा मागी. मगर गौतमबुधने आज्ञा नही दिइ, जिससे देवदत्तने नया मजहब निकाला, इसवख्त गौतमबुधको दीक्षा लिये (३७) वर्स होचुके थे, देवदत्त नया मजहब निकालनेकी कोशीशमे था उसवख्त नीचे लिखेहुवे चार कायदे गौतमबुधसे मंजुर कराना चाहता था,—

१ साधुको शहर छोडकर वनमे रहना,
२ गृहस्थके उतरे हुवे कपडे लेना,
३ भेजाहुवा आहार नही लेना, और आमंत्रण करे उसके घरभी नही जाना, भिक्षा मागकर आहार लाना,
४ मास खाना बंद करना,

गौतमबुधने जवाब दिया इस बातमें में नाखुशभी नही और खुशभी नही, एकसरखे कायदे बालवृद्ध ग्लानपर—में जारी नही करसकताहुं साधुओकेलिये शहर और वन दोनों ठीक है, कपडोके बारेमे जैसा मिले वैसा करना, आहारके लिये जहां जैसा योग हो वैसा लेना, मासके बारेमे जिस मुल्कमे जैसा मिले वैसा खाना, मगर स्वादकेलिये नही खाना, अगर एकसरखे कायदे सबपर चलाये जाय तो मुक्तिका रास्ता बंध किया ठहरे, मेरा इरादा यह है कि—सबको मुक्ति मीले, देवदत्तने नयामजहब निकाला,

अजातशत्रुने उसकों मदद दिइ, मगर देवदत्तकी उम्र कम होनेकी वजह उसका मजहब ज्यादा चला नही, अजातशत्रुने सावथ्थीपर अपना कब्जा किया, और कपिलवस्तु गांवको उजाड किया, यह सब बयान बौध मजहबके महापरिनिवाण सूत्रमे है,–

९ एकीसमें चौमासेसें लगाकर तयालीसमें चौमासेतक गौतमबुधकी दिनचर्या बराबर नही मिलती, चौआलीसमा चौमासा सावथ्थीके पास जेतवनविहारमें किया, बाद वारीशके जेतवन विहारसे चलकर बलचर टेकरी, बलचर टेकरीसें पाटलीपुत्र पाटलीपुत्रसे अंबपाली, और अंबपालीसे वेलुग्राम आनकर पैंतालीशमा चौमासा किया, वहां गौतमबुध बीमार हुवे, तमाम उम्र गौतमबुध मुल्कोकी सफर करते रहे, अवध, ममालिक, मगरबी, और शिमालीके जिलोमें ज्यादा सफर किइ और तालीम धर्मकी दिइ, तीसवर्स दुनियादारीमें रहे, करीब छह वर्स तप किया, चौमालीस वर्ससे कुछ ज्यादे अर्सेतक दुनियाको अपने मजहबकी तालीम दिइ, दुनिया क्षणविनाशी है, मेरी धर्मतालीम क्षणविनाशी नही, जो शख्श जैसा बीज बोता है वैसा पाता है, शरीरकों विनातकलीफ दिये मुक्ति नही, जिसका संयोग है, उसका वियोग है, खुद आत्माभी क्षणविनाशी है, अकेला ज्ञान क्षणसंततिके शाथ सहचारी है, जो शख्श बौधधर्मके आचारक्रियामे दृढ रहेगा, उसका ज्ञान निर्मलहोगा, उसीका नाम मुक्ति है, भावना पाच है, १ मैत्री, २ मुदित, ३ करुणा, ४ अशुभ, और ५ उत्प्रेक्षा, आयतन (१२) है, स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु, श्रोत, स्पर्श, रस, गंध, रूप, शब्द, मन और धर्मायतन ये बारां आयतन हुवे, शिवाय इसके जाति जरा मरण भव उपादान, तृष्णा पट् आयतन नाम रूप विज्ञान संस्कार और अविद्या येभी आयतन है, और ये सब वस्तु क्षणिक है, धर्म बुध और संघ ये तीन रत्न है,–

१० गौतमबुधके उपदेशसे श्रेणिक अजातशत्रु शुद्धोधन भद्रक

और महा वगेरा राजे बौधमजहमें पावद थे, राजाश्रेणिक पीछली उम्रमे तीर्थंकर महावीरस्वामीकी धर्मतालीम पाकर जैनमजहबपर पावंद हुवा था, अजातशत्रु मुताबिक जैनशास्त्रके लेखसे जैन था, बौधमजहबके शास्त्रानुसार बौध था, जैनशास्त्रोमे ऐसाभी बयान है, कि–श्रेणिक राजाकी रानी चेलनाके शाथ श्रेणिकका वादानुवाद होता था, जो अजातशत्रुकी माता थी, और पहलेसेही वो जैन-धर्मपर साबीत कदम थी, गौतमबुध वेलुग्राममे बीमार हुवे, और अपने चेलोको इकट्ठे किये, और कहा सबको सुख हो उस मुताबिक तुम बरताव करना, मेरी उम्र अब तीनमहिने बाकी है, दिल साफ रखना और ज्ञानकी हिफाजत करना यही सार है, मुताबिक इसके जो कोइ बरताव करेगा सुखी होगा, इसतरह चेलोको उपदेश करके पावापुरी गये, वहा चंदसोनीने उनकी सेवा किइ और भोजनमें चावल और डुकरका मास दिया, वहा तीन प्रहर रहकर पावापुरीसे बनारस होते कुसीनार जानेको रवाना हुवे, कुसीनार बनारससे (१००) मील और कपिलवस्तु गावसे (८०) मील दुर था, कुसीनारपहुचनेपर उनकी बीमारी बढगइ, प्यास ज्यादा लगी, आनंदनामके चेलेके पास पानी मगवाकर पिया, और कहा कि–चंदसोनीसें जब तेरा मिलना हो कहना, हे! चंद!! मेरी सेवाका फल तुजे अगले जन्ममें मिलेगा, इतकाल होनेके पहले गौतमबुधने आनदनामके चेलेको कितनाक बौध दिया, जब आनंद रुदन करने लगा गौतमबुधने उसको पास बुलाकर दिलासा दिया, और कहा, दुनिया जुठी है, तुजेभी निर्वाण मिलेगा, जिसका सयोग है उसका वियोग है, इसलिये हिम्मत रखो, इतना कहकर दुसरे चेलोतर्फ नजरकरके आनंदके बारेमे जो कुछ कहना था कहा.

११ उसबख्त कुश्वनगरका एक सुभद्रनामका विद्वान् गौतमबुधसे प्रश्न पुछने आया, आनंदने उसको अदर आनेकी मना किइ, गौतमबुधने कहा, आने दो, सुभद्र विद्वान् अदर आया और प्रश्न

किया, श्रमणनिर्ग्रंथ जो कुछ कहते है सच है या जुठ? गौतमबुधने कहा, ऐसी चर्चाका इसवख्त समय नही, में तुजको अपना मंतव्य कहताहुं, सुनले! ऐसा कहकर अपना मंतव्य सुनाया, सुनकर सुभद्रविद्वान् चलागया, गौतमवुधने अपने चेलोको उपदेश दिया जो मेरे कायदे है सो खुद! मेंही हुं, ऐसा जानना, जिस वातका शक हो फिर पुछलो! पांचस्कंध मेने तुमको जो वतलाये है वोही ठीक है, श्रमणनिर्ग्रंथ वगेरा जो कुछ तुमको वौधकरेंगे इनही पांचस्कंधोमे आजायगा, तुम अपने अछे रास्तेकों छोडना नही. ऐसा कहते कहते वेंहोश हुवे, और काल किया.-

१२ गौतमवुध जहां जहां फिरेथे उनके जमानेमे वहांवहां वौधमजहव चलता था, महावनसूत्रमे लिखा है, गौतमवुधके निर्वाण हुवे पीछे (३३०) वर्सवाद तीन पीठिका लिखीगई, संवत् (१६१) में काश्मिरका मेघवाहन राजा वौधमत पालता था, मुल्क चीनमेंभी इसी अर्सेमें इसका फेलाव हुवा, संवत् (४५७) मे मुल्क चीनके राजे वौधमजहव मानने लगे, ओरिया टापुमें संवत् (४२९) मे वौधमजहव मानना शुरु हुवा, संवत् (४८७) मे वौधाचार्य वुधघोषने धम्मपादसूत्रकी टीका सिलोनमें वनाई, संवत् (५०७) मे वर्मामें, संवत् (६०९) के अर्सेमें जापानमें और संवत् (६९५) में मुल्क शाममें वौधमजहव चलना शुरु हुवा, मुल्क जापानमें पहले ऐसा मजहव चलता था कि-स्वभावकी शक्तिसे दुनियामे सव वनाव वनता है, संवत् (१२५७) में कावुल और काश्मिरके पास लदाकमेसे मुसल्मानोने वौधमजहव निकाल दिया, जो थोडे अर्सेसे शुरु हुवा था, जावा टापुमे वौधमजहव कवसे चला इसका पता नही मिलता, लेकिन! इतना जरुर है संवत् (१३५७) मे यहांका राजा वौध था, संवत् (४५७) में जव चीनामुसाफिर फाहियान हिदुस्तानमे आयाथा, उसने अपनी कितावमें लिखा है, जव में मगधदेशमे गया, मुजे वौधमजहवके साधु मिले, जैनके

और वैदिकमजहबके मदिर बहुत देखे, संवत् (४६७) में चीना-मुसाफिर फाहियान सिलोन गया, सिलोनके बयानमे उसने लिखा है यहा बौधमजहब कसरतसें चलता था, व्हाक्तसाग चीनामुसाफिर सवत् (५८५) मे हिंदुस्तानमें आया, उसने लिखा है, गंगाजमुनाके इर्दगिर्दके मुल्कोंमे बौध जैन और वैदिकधर्म ज्यादा था, राजगृही नगरीके नालंद महोलेमे मुजे कितनेक विद्वान् मीले और बातें हुइ, मुल्क काश्मिरकों जब मुसल्मानोने फतेह किया, बौधमजहब कम होता गया.–

१३ बौधआगमपीठिकाके सूत्रोके कितनेक नाम, १ विनय-पीठिकासूत्र, २ महावग्गसूत्र, ३ कुलवग्गसूत्र, ४ परिवारपाठसूत्र, ५ दिग्घिकायसूत्र, ६ परिनिवाणसूत्र, ७ मध्यमनिकायसूत्र, ८ सूत्रनिपात, ९ विमानवथ्थुसूत्र, १० पियवथ्थुसूत्र, ११ थिर-गाथासूत्र, १२ जातक इसमे कइ कथाये है, १३ निदीशपीठिका शौरिपुत्रकृत, १४ पाटीसहिता, १५ अपादान, १६ बुधव्यास, १७ प्रियपीठिका, १८ धर्मसग्रहणी, १९ कथावथ्थु, २० पठाण-सूत्र इसमे जीवकास्वरूपवर्नन है, २१ शृगालवाद, इसमे गौतम-बुधके शाथ शृगालपुरुषका सवाल जवाब है, ये बौधमजहबके आगम पीठिका वगेरा सूत्रोके नाम हुवे, बौधपीठिकामे लिखा है, कि–निर्ग्रंथज्ञातपुत्र और अग्निवेशायनगोत्रका सुधर्मा अपने प्रतिपक्षी है, और पके दुश्मन हैं, इससे कहसकते हो बौधोंको जैनोका कुछ खौफ रहता था, फिर यहभी लिखा है निर्ग्रंथज्ञातपु-त्रने पावापुरीमे काल किया, गोशाला मंखलीपुत्र अभयकुमार और अजातशत्रु वगेराके नाम बौधपुस्तकोमे कइजगह लिखा है, मगर यह नही लिखा निर्ग्रंथज्ञातपुत्र नयेहुवे, इससे पाया जाता है जैनमजहब नवीन नही, बौधोमे ललितविस्तराग्रंथ पुराना मानते है, लेकिन! इससेभी द्वादशांगवानीके आचारागसूत्रकृतागवगेरा ज्यादापुराने साबीत होते है, मवब कि–इनमे जो आर्याछंद लिखे

है वे (२२००) वर्सकी रचनासे पुराने है, चंद्रप्रज्ञप्ति सूर्यप्रज्ञप्ति जैनागम ग्रीक लोगोके हिंदुस्तानमे आये पहलेके है. सबब ज्योतिष्संबंधी जो जो हकीकत इनमें है वो ग्रीक लोगोके ज्योतिषशास्त्रमें नही,–

१४ कितनेक माहाशयोंका फरमाना है बौधोंकी पालीभाषा जैनोकी प्राकृतभाषासे पुरानी है, लेकिन! सौचनेकी बात है जैनागम जो अब है वे तीर्थकर महावीरनिर्वाणके बाद (९८०) वर्सके पीछे लिखेगये, उसअर्सेमे बोली जरुर बदली होगी, शिवाय इसके जैनोके चौदहपूर्व विछेद गये, कितनेक महाशय कहते है बौधमजहबकी पैदाश कपिलके सांख्यपर है, मगर यह बात गलत है, सबब कि–सांख्य और बौधोके तत्वोमे जमीन आसानका फर्क है, कोलनूक अंग्रेज गौतमबुधको जैनके तीर्थकर महावीरके चेले कहते है, और वेबर जरमन कहते है, दोनो अलगथे, यानी महावीरका चेला गौतम अलग और गौतमबुध अलग, इनमें वेबरजरमनका कहना ठीक है, इंद्रिभूति गौतम तीर्थकर महावीरके चेलेथे, गौतमबुध बौधमजहबके गुरु थे, गौतमरिषि वैदिक मजहबमे अलग हुवे, और सोलह पदार्थ बयान करनेवाले नैयायिक गौतम अलग हुवे, ये चारों महाशय अलग अलग हुवे है, बौधपीठिकाओमे निर्ग्रथोको बौधोके वादी लिखे है, इन बातोसे कहसकते है जैन बौध एक नही.

१५ बौधके मंदिरोकों बौधाढक बोलते है, कतावजामे गोलाकार होते है, बुधकी मूर्त्तिके सीरपर जटा बटीहुइ यज्ञोपवीतके आकार वस्त्र लिपटाहुवा, दाहना हाथ उपदेशदेनेकी तरह उंचा कियेहुवा, पदमासन वेठीहुइ मूर्त्ति होती है, बौधमजहबके पदवीधर साधुओकों लामा और साधारण साधुओकों पुंगी बोलते है, और लालकपडे पहनते है, टिबेट देशमे लामाकी मूर्त्ति पूजीजाती है, बौधमजहबके साधुओकों ठहरनेकी जगहका नाम मठ या आश्रम कहते है, बौधोंमें देवमंदिर बनानेका रवाज कम, ज्यादेतर गुंबज

छत्रीयें और मठ बनानेका रवाज है, इतिहासकारोने गौतम
लाशके बारेमें लिखा है, जब इस्वीसन (४७७) वर्स पहले गौ
देहात हुवे, उसवख्त बौधमजहबके राजाओने चाहा
लाशको अपने अपने मुल्कोमें लेजावे, और इसबातके लिये
नेकोंभी आमादा हुवे. तब गौतमबुधके चेलोने उस ल
जलाकर थोडी थोडी हडीयें और राख बाट दिइ, और
रोका, निदान! बौधराजोने उस हडीये और राखको अपने
इलाकेपर जमीनमे गाडकर गुंबज बनादिये, फिर उनके
मरनेपर उनकी हडीये और राखपरभी उसीतरह गुंबज बने
उनकी पूजा करनेलगे, इसी सबब बौधोमे देवमंदिर बन
रवाज थोडारहा, भिलसा मानिकयाला वगेरा कइ जगह बौ
ओके गुबज मौजूद है, बर्मा सिंहलद्वीप टिबेट और मुल्क
बौधलोग धातु पथर और मीटीके गुंबज बनाकर पूजते है, बन
एक बौधोकी पूज्य जगह है, जिसको वहांके लोग सारन
धमेख बोलते है, और उसमे उनके कोइ महापुरुषकी
बतलाते है, मुल्क नेपालमे जो अब शिवधर्म चलता है वो
मजहबके शिवपार्वतीका नही. बल्कि! अवलोकितेश्वर
पेशावरके असंगनामके शख्सका चलाया हुवा बुधशिव न
धर्म है, एशियाखंडमे बौधमजहब राजा अशोकके वख्त
हुवा, राजा अशोकका इरादा यह ज्यादा रहताथा, फिर
बौधमजहब मुल्कोमे ज्यादा फेले, कनिष्कराजा इस्वी सन (
अदाज हुवा, राजा अशोकके वख्तसे बौधमजहब राजधर्म हो

१६ ज्ञानाद्वैतवादी और शून्यवादी ये शाखा
बौधमजहबमे है, वैदिकमजहबसे जैन और बौध दोनो मजह
है, तीर्थंकर महामहावीरको ज्ञातपुत्र इसलिये कहते है कल्प
इनके वालिदको ज्ञातक्षत्रीय कहकर लिखा है, बौधके स
फलसूत्रमे निर्ग्रंथज्ञातपुत्रको अग्निवेशायन लिखा है, मग

अग्निवेशायन गोत्रके नही थे. सुधर्मा गणधर जो तीर्थंकर महावीरके पांचमें नंबरके चेलेथे, वे अग्निवेशायन गोत्रके थे, गौतमबुधने अपने चेलोको कहाथा श्रमणनिर्ग्रंथ जो कुछ तुमको बोध करेगे वो मेरे बतलायेहुवे पांच स्कंधोमें आजायगा, जैन और बौधमजहबके शास्त्रोंमें सबुत है, तीर्थंकर महावीर और गौतमबुध राजाश्रेणिक और अजातशत्रुके वख्तमे थे,-

१७ बौधमजहबके साधु अंतर्वसन, मध्यवसन, और उत्तरीयवसन ये तीन तरहके कपडे रखते है, कटीबद्ध भिक्षापात्र सुई और जलछाननेका पात्र वगेरा दुसरे उपकरण है, बौधमजहबमें जीवके छह भेद इसतरह है, १ देव, २ मनुष्य, ३ असुर, ४ पशु, ५ प्रेत और ६ नारकी, जैनबौधके बारेमें यहां मेने जो कुछ लिखा दोंनोंके शास्त्रोसे और प्राचीन इतिहासकी किताबोसें देख कर लिखा है, अगर इसमें कोइ गलत बात हो पाठकवर्ग उसको गलत समजे, सुधारनेको मुजे इत्तिलादे, नयीबात जानपडे जरुर लिखे, दुनियामें एकसें एक ज्यादा अकलमंद मौजूद है, इन्सानको यह खयाल नही रहना चाहिये मेरे लेखमें गलती न आवे, बयान बौधमजहबका खतम हुवा.-

---

[ वैशेषिक मजहब. ]

देवताविषये भेदो नास्ति नैयायिकैः समं,
वैशेषिकाणां तत्वेषु विद्यतेसौ निदर्श्यते, १
द्रव्यं गुणस्तथा कर्म सामान्यं च चतुर्थकं,
विशेषसमवायौ च तत्वं षट्कं च तन्मते, २
तत्र द्रव्यं नवधा भूजलतेजोनिलांतरिक्षाणि,
कालदिगात्ममनांसि च गुणाः पुनः चतुर्विंशतिधा, ३
स्पर्शरसगंधरूपाः शब्दः संख्याविभागसंयोगौ,
परिमाणं स पृथक्त्वं तथा परत्वापरत्वे च, ४

बुद्धिसुखदुःखेच्छा धर्माधर्मौ प्रयत्नसंस्कारौ
द्वेषः स्नेहगुरुत्वे द्रव्यत्ववेगौ गुणा एते, ५
उत्क्षेपणापक्षेपाकुंचनं प्रसारणं च गमन च,
पंचविधं कर्मैतत्परापरे द्वे तु सामान्ये, ६

१ देवके बारेमे नैयायिक और वैशेपिकका कुछ फर्क नही, तत्वोमें बेंशक! फर्क, है, द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेप और समवाय ये छह पदार्थ वैशेपिकमजहबमें मंजुर रखे है, भू, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा और मन ये नव द्रव्य माने है, स्पर्श, रस, रूप, गंध, शब्द, संख्या, विभाग, संयोग-परिमाण, पृथक्त्वं, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुःख इच्छा, धर्म, अधर्म, प्रयत्न, संस्कार, द्वेप, स्नेह, गुरुत्व, द्रव्यत्व, और वेग, ये पचीस गुण माने है, उत्क्षेपण, अपक्षेपण, आकुंचन, प्रसारण, और गमन, ये पांच कर्म, परसामान्य और अपरसामान्य-

इहायुतभावानां आधाराध्येयभूतभावानां,
संबंध इह प्रत्ययहेतुः स च भवति समवायः ७

इह प्रत्ययका हेतु समवाय है और वो नित्यद्रव्यमे रहनेवाला है, प्रत्यक्ष और अनुमान ये दो प्रमाण वैशेपिकमजहबमें मंजुर रखे गये है, श्रीधराचार्य रचित न्यायकदली, प्रशस्तकरभाष्य, किरणावली और उदनाचार्यरचित उपदेशपट्सहस्री, श्रीवत्साचार्यरचित लीलावती और आत्रेयतंत्र ये वैशेपिकमजहबके धर्मशास्त्र है.-

( नयान वैशेपिक मजहबका खतम हुवा. )

## [ नास्तिक-मजहब. ]

१ नास्तिकमजहबमें पुण्यपाप स्वर्गनरक नही मानेगये, और कहते है, स्वर्गनरक कौन देख आया? यह लोक मीठा परलोक किसने देखा? दरअसल! पांचतत्वोका पुतला मरेबाद खाख हो जाता है, परलोक जाता आता कोइ नही.-

[ दोहा. ]

माटीमें माटी मिली पवनमे मिलगइ पौन,
में तुज पुछुं हे! सखि! इनमें मुआ कौन, १

हरसुरतसे शरीरको आराम पहुचाना, खानापिना और एश करना यही मुनासिब है.—

[ अनुष्टुप्-वृत्तम्, ]

यावज्जीवं सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पीवेत्
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः १

( अर्थः ) जहांतक जींदगी बनीरहे मजेमे रहना, कर्ज करकेभी मिष्टान्न खाना, शरीरको तकलीफ नही देना, भस्मीभूतदेहका फिर आना कहा धरा है? इसतरह नास्तिकोका मानना है, दरअसल! खाना पीना मोज मजा करना किसकों अछा नही लगता? इसलिये कइलोग इस मजहबमेभी सामील हो जाते है, इस मजहबका दुसरा नाम चार्वाक्भी कहते है, तीसरा नाम लोकायितमजहब शास्त्रोंमें लिखा है.—

२ आचार्य हरिभद्रसूरिजीने अपने बनाये हुवे षट्दर्शन समुच्चयग्रंथमे लिखा है.—

लोकायिता वदंत्येवं नास्ति देवो न निवृत्तिः
धर्माधर्मौ न विद्येते न फलं पुण्यपापयोः १
एतावानेव लोकोयं यावानिंद्रियगोचरः
भद्रे वृकपदं पश्य यद् वदंति बहुश्रुताः २
पिव खाद चारुलोचने यदतीतं वरगात्रि तन्न ते,
नहि भीरु! गतं निवर्तते समुदयमात्रमिदं कलेवरं ३
लोकायितमतेप्येवं संक्षेपोयं निवेदितः
अभिधेयतात्पर्यार्थः पर्यालोच्यः सुबुद्धिभिः ४

(अर्थः)—नास्तिकमजहबवाले कहते है न देव है, न मोक्ष है, न धर्म है, न अधर्म है, पुण्यपापका फल कौन देख आया?

नजरके सामने जो कुछ दुनिया दिखलाइ देरही है, उतनी है, स्वर्ग नरक किसने देखा? एक नास्तिकने अपने गांनके पास रेतमे पीछलीरातके वख्त वाघके पजेका आकार बनाया, पाचदश कदमतक ऐसेही पंजे बनाता चलागया, जब सवेर हुई गामके लोग ढिशाजंगल जाने लगे, और एक दुसरेको कहने लगे देखो! यहा पीछली रात वाघ जानवर आया दिखता है, उसके पजे देखलो, पंजेके आकार बनानेवालाभी वहां खडाथा, कहने लगा, बेशक! बात सच है, एक शख्शने कहा मेने रातके वख्त वाघकी अवाजभी सुनीथी, दुसरेने कहा मेने गावमें आता देखाथा, तिसरेने कहा एक छोटा जानवरभी उठा गया है, ऐसी ऐसी बाते चलने लगी, नास्तिक लोग इस मिशालको आगेकरके दुसरोको कहते है, जैसी यह बात कहने मात्र है वैसी स्वर्ग नरककीभी बाते है, असलमे! सच नही,–

२ एक नास्तिक एक औरतको कहता है, खाओ पिओ! एश-आराम करो, यह खुबसुरत शरीर फिर मिलना दुसवार है, कौन कहसकता है, कल क्या होगा? पाचतत्वोका बनाहुवा पुतला शरीर है, जो कुछ मोजमजा करलोगे, वही उमदा बात है, मगर यह सबबाते खिलाफ धर्मशास्त्रके है, पुन्यपाप स्वर्गनरक न होना यह शिवाय नास्तिकके दुसरे कोइ नही फरमाते,–

[ बयान नास्तिक मजहबका खतम हुवा. ]

[ दिगंबर मजहबका बयान ]

इसमें श्वेतांबर दिगंबरमजहबके बारेमे उमदा चर्चा लिखीगई है, औरतकी मुक्ति होना और केवलज्ञानीको खानपान होना श्वेतांबरमजहबवाले मानते है, दिगंबरमजहबवाले नही मानते वगेरा तस्किरा लिखा गया है, ब खूबी देखिये,–

१ दिगंबरमजहब एक शिवभूति मुनिसें जारीहुवा, आवश्यक-सूत्र वृत्तिमें उनका बयान है, शिवभूति मुनि जैनश्वेतांबर कृष्णा-

चार्यजीके चेले थे, उनोने तीर्थंकर महावीरस्वामीके निर्वाणके बाद (६०९) वर्स पीछे रथवीरपुर नगरमें दिगंवरमजहव निकाला, शिवभूति मुनिका दुनियादारी हालतमें सहस्रमल नाम मशहूर था, आवश्यकसूत्रकी हरिभद्रसूरिरचित बृहत्वृत्तिमें पाठ है,-

छवाससएहिं नवुत्तेरहिं तइयासिद्धिंगयस्स वीरस्स
तो बोडियाणदिठ्ठी रहवीरपुरे समुप्पन्ना,
रहवीरपुरं नयरं दीवगमुज्जाण मज्झकन्होय,
सिवभूइस्सुवहिंमिउ पुछा थेराण कहणाय, १

(अर्थः)-रथवीरपुरनगरके दीपकनामके उद्यानमें जैनश्वेतांवर आर्यकृष्णाचार्य तशरीफ लाये, उस नगरमें शिवभूति सहस्रमल नामसें एक मशहूर गृहस्थ रहता था, उसने मजकुर कृष्णाचार्यजीके पास दीक्षा इख्तियार किइ, और मुल्कोकी सफर करने लगे, बाद कितनेक वर्सोंके फीरभी गुरुजीके शाथ शिवभूति मुनिका रथवीर पुरनगरमे आनाहुवा, पेस्तर लिखचुके है, शिवभूति मुनि इसी नगरके वाशिंदे थे, जब शहरमें आये, राजासाहवने उनकों एक रत्नकंबल दिया, रत्नकंबल लेकर शिवभूति मुनि जब अपने गुरुके पास आये, गुरुजीने फरमाया ऐसे रत्नकंवलसे अपनेकों क्या जरुरत है? शिवभूति मुनि इस बातसें नाराज हुवे, एक रौज गुरुजी जिनकल्पि मुनियोंका बयान करते थे, शिवभूति मुनिने गुरुजीसे पूछा, आपनलोग वैसे क्यौं नही होते,? वस्त्र पात्र वगेरा उपधि क्यौ रखते है? जिससे जिनकल्पमार्ग नही बनआता, गुरुजीने जवाव दिया, जमाने हालमें जिनकल्पमार्ग नही रहा, विना उपधिके रहना मुश्किल है, शिवभूति मुनिने कहा, कैसे मुश्किल है? में जिनकल्पमार्ग इख्तियार करुंगा, मोक्षार्थी जीवकों उपधि-परिग्रहसें क्या जरुरत? उपधिके होनेसें कषाय मूर्छा वगेरा दोष पैदा होते है, शास्त्रमें अपरिग्रही रहना कहा, गुरुजीने जवाव दिया, जैसे उपधिके होनेसे कषाय मूर्छा वगेरा दोष होते है, तो शरीर

होनेसे भी कपाय मूर्छा वगेरा दोप क्यौ न होगें? इससे तो शरीर-भी छोडदेना, और आहारपानी वगेरामी नही लेना चाहिये, क्योंकि इससे शरीरकी पुष्टि होगी, लेकिन! यह एक तरहकी समजका फर्क है, शास्त्रोमे जो अपरिग्रही रहना बयान किया वह धर्मके उपकरणोकीभी मूर्छा नही रखना इस अपेक्षासें है,–

२ जिनेंद्रदेवभी देवदुष्यवस्त्र मुनिपनेकी हालतमें रखतेथे, इस-तरह गुरुजीने शिवभूतिमुनिकों बहुत समजाये, मगर उनके खयालमे नही आया, गुरुजीसें अलग होकर वस्त्रपात्र वगेरा सब उपकरण छोडदिये, और अकेले सफर करने लगे, गावके बहार वनखंडमे रहते रहे, इधर शिवभूतिमुनिजीकी संसारी हालतकी बहेन उत्तरा नामकी जो साधवी होगइथी एकदफे शिवभूतिमुनिजीको वंदन करने गइ, और उनके मजहबमे सामील होगइ, शिवभूतिमुनि-जीकों कौडिन्य और कोटिवीर्य नामके दो चेले हुवे, इसीतरह शिष्यपरपरा बढती गइ, दिगंबरमजहबवाले कहते है, धवल, जयधवल, महाधवल ये तीन शास्त्र अवलके है, इनके पहले कोइ शास्त्र नही था, द्वादशांगवाणीमेसे एक दृष्टिवादकों छोडकर बाकीके जो ग्यारह अंगशास्त्र आचारागसूत्र कृतांग वगेरा मौजूद है, जैनश्वेतांबरमजहबवाले मानते है, दिगंबरमजहबवाले कहते है, विछेद होगये, जैनश्वेतांबरमुनि वंदन करनेवाले गृहस्थको धर्मलाभ शब्द कहते हैं, दिगंबरमुनि धर्मवृद्धि कहते है, श्वेतांबरमुनि भिक्षाको गौचरी जाना कहते है, दिगंबरमुनि भिक्षाको भ्रामरी कहते है, श्वेतांबरमुनि रजोहरण रखते है, दिगंबरमुनि मोरपीछी रखते है,–

दिगंबराणां चत्वारो भेदा नाग्न्यव्रतस्पृशः
काष्ठासंघो मूलसंघः संघौ माथुरगोप्यकौ, १
पिच्छिका चमरीवालैः काष्ठासंघे प्रकीर्तिता,
मूलसंघे मयूराणां पिच्छैर्भवति पिच्छिका, २

पिच्छिका माथुरे संघे मूलादपि हि नादृता
मयूरपिच्छिका गोप्या धर्मलाभं भणंति ते. ३
धर्मवृद्धिगिरः शेपा गोप्याः स्त्रीमुक्तिभाषिणः
गोप्यादन्ये त्रयः संघाः प्राहुर्नो निर्वृतिं स्त्रियः ४
शेपास्त्रयश्च गोप्याश्च केवलिभुक्तिं न मन्वते,
नास्ति चीवरयुक्तस्य निर्वाणं सद्व्रतेपि हि, ५

(अर्थः)—दिगंबरमजहबके चार भेद इसतरह है, १ काष्ठासंघ, २ मूलसंघ, ३ माथुरसंघ और ४ गोप्यसंघ, काष्टासंघवाले दिगंबरमुनि चमरी गौके वालोंकी वनाइहुइ पिछी रखते है, मूलसंघवाले दिगंबरमुनि मोरके पिछोसें वनाईहुई पिछी रखते है, माथुरसंघवाले दिगंबरमुनि विल्कुल पिछी नही रखते, गोप्यसंघवाले दिगंबरमुनि मोरके पिछोंसें बनीहुइ पिछी रखते है, गोप्यसंघके दिगंबरमुनि वंदन करनेवाले शख्शको श्वेतांवरमुनिकी तरह धर्मलाभ शब्द कहते है, और बाकीके तीन संघवाले धर्मवृद्धि कहते है, गोप्यसंघवाले दिगंबर औरतकों उसीभवमे मुक्ति होना मानते है, वाकीके तीनसंघवाले नही मानते, केवलज्ञानीकों आहार करना चारोसंघवाले नही मानते, और कपडे पहननेवाले मुनिकों मुक्ति होना नही मानते.—

३ दिगंबरमजहबवाले इतनी बाते आश्चर्यकारक हुइ मानते है, १ सवतीर्थंकरोंका जन्म अयोध्यानगरीमेंही होना चाहिये, मगर इस हुंडा अवसर्पिणी कालमें दुसरी जगह हुवा, यह एक आश्चर्य है, २ सब तीर्थंकरोंकी मुक्ति समेतशिखरजीमेही होना चाहिये, मगर इस हुंडा अपसर्पिणी कालमें दुसरी जगहसें हुइ यहभी एक आश्चर्य है, ३ सब तीर्थंकरोंके घर वेटे होना चाहिये, तीर्थंकर रिपभदेव महाराजके घर ब्राह्मी सुंदरी वेटी पैदा हुइ यहभी एक आश्चर्यकी बात हुइ, ४ चक्रवर्त्तीका मानभंग कभी नही होता, मगर भरतचक्रवर्त्तीका मानभंग वाहुवलिजीने किया, यहभी एक आश्चर्यकी वात हुइ, ५ तीर्थंकरदेवोंको कभी उपसर्ग नही होता,

मगर तीर्थंकर पार्श्वनाथजीकों हुवा, यहभी एक आश्चर्य है, ६ तीर्थंकर महाराज छदमस्थ हालतमे अवधिज्ञानकों जाहिर करे नही, मगर तीर्थंकर रिषभदेवजीने किया, यहभी एक आश्चर्य है, ७ वासुदेवजीका मरना भाईके हाथसे न हो, मगर नवमे वासुदेवका मरना जराकुमार नामके भाइसें हुवा, यहभी एक आश्चर्य है, ८ ब्राह्मणकुलकी पैदाश दुसरे कालमें नही होती, मगर इस अवसर्पिणीकालमे हुइ, यहभी एक आश्चर्य हुवा, ९ रुद्र और नारद दुसरे कालमें पैदा नही होते, इस अवसर्पिणीकालमे हुवे, यहभी आश्चर्य है, १० कलंकी और अर्द्धकलंकी राजे आगेकों होंगे, यहभी एक तरहका आश्चर्य होगा, यह दश आश्चर्योंका बयान ग्रंथसिद्धांतसार त्रैलोक्यप्रज्ञप्ति और भाषामयपार्श्वपुराणसें लिखा है, दिगंबरमजहबवाले श्वेतांबरोंके मानेहुवे दश आश्चर्योको नही मानते, मगर उपर बतलाये हुवे आश्चर्य मानते है.–

४ दिगंबरमजहबमें १ काष्ठासंघ, २ मूलसंघ ३ माथुरसंघ ४ गोप्यसंघ, ५ वीशपंथ, ६ तेरहपंथ, और ७ समैयापथ वगेरा भेद है, वीशपंथमजहबवाले जिनमंदिरमे क्षेत्रपाल, देव देवी वगेराकों स्थापन करते है, तेरहपंथ मजहबवाले नही करते, वीशपंथवाले पंचामृतसें जिनमूर्त्तिका स्नान कराते है, तेरहपंथ मजहबवाले नही कराते, वीशपंथवाले जिनमूर्त्तिपर फुल चढाते है, तेरहपंथवाले नही चढाते, वीशपंथवाले जिनमूर्त्तिकी आरती करते है, तेरहपंथवाले नही करते, फक्त आरतीका पाठबोल लेते है, वीशपंथवाले जिनमूर्त्तिकी पूजामे हरे फल चढाते है, तेरहपंथवाले नही चढाते, विशपंथवाले जिनमंदिरमें जब बडी पूजाका विधान होता है, जवारा आरोपण करते है, तेरहपंथवाले नही करते, वीशपंथवाले उनके धर्मगुरुओंकी छत्रीयें बनवाते है, तेरहपंथवाले नही बनवाते, वीशपंथवाले प्रतिष्ठामें नवग्रहोकी पूजा करते है, तेरहपथवाले नही करते, वीशपथवाले निर्ग्रंथगुरुओंकों भट्टारकोंकों और पंडितोंकोभी

गुरु मानते है, तेरहपंथवाले भट्टारकोंकों और पंडितोंकों गुरुतरीके नही मानते.-

५ दिगंबरमजहबवाले जब रथयात्राका जलसा करते हैं, जिन-प्रतिमाकों रथमें बेठाते है, सवाल पैदा होनेकी जगह है, दीक्षा इख्तियार किये बाद जिनेंद्र देव कभी रथपर चढे नही थे, अगर कहा जाय अपनी भक्ति है, तो श्वेतांबरलोगभी अपनी भक्तिसें जिनप्रतिमापर सोने जवाहिरातके गेहने पहनाते है.-

दिगंबरमजहबवाले केवलज्ञानीकों आहार करना नही मानते, देहधारीमुनि केवलज्ञानी हुवेबाद तावेउमर खानपान न करे और उनके शरीरकी बढवारी हो यह संभव नही, पेस्तरके जमानेमें जब बडी बडी उम्रे थी शरीर उनके बडे बडे थे, खयाल करो! किसी मुनिकों छोटी उम्रमे केवलज्ञान पैदा हुवा, और उसके बाद उनोने आहार लिया नही. बतलाईये! फिर उनके शरीरकी बढवारी कैसे हुइ?

६ दिगंबरमजहबके शास्त्रधवल, जयधवल, और महाधवल, ये तीनही शास्त्र सबसे पुराने हैं, जो तीर्थंकरमहावीरनिर्वाणके बाद (६८३) वर्स पीछे बनाये, गोमटसार, त्रिलोकसार, आदि-पुराण, हरिवंश पुराण, वसुनंदीश्रावकाचार, मोक्षमार्गप्रकाश वगेरा धवल जयधवल महाधवलसें पीछेके बनेहुवे है, गोमटसारग्रंथ संवत् (११३२) में सिद्धांतचक्रवर्त्ती नेमिचंद्रजीने चामुंडरायके पढनेके लिये बनाया.-

७ अगर कोइ सवाल करे जैनश्वेतांबरमुनि चादर, पछेडी, झोली, पात्रे और कंबल वगेरा रखते हैं, इससे ममत्वभाव पैदा होगा. (जवाब) जैनदिगंबरमुनि पीछी कमंडल रखते है, इससेभी ममत्वभाव पैदा होगा, अगर कहा जाय पीछीं कमंडल संयमकी हिफाजतके लिये है, तो चादर पछेडी और कंबलभी संयमकी हिफाजतके लिये क्यों नही? अगर कहाजाय दिगंबरमुनि निर्लोभी

है, सवाल पैदा होनेकी जगह है फिर पीछीं कमंडलभी क्यौं रखते है,? जहा बेठेहो वहा छोडदेना. चलते वख्त उठानेकी जरुरत क्या? अगर उठाया तो ममत्वभाव पैदा होगा, फिर निर्लोभी कहना कैसे बनसकेगा? अगर कहाजाय इरादे धर्मके पीछीं कमंडल उठाया इसलिये ममत्वभाव नही, तो फिर इसीतर श्वेतांबरमुनि चादर पछेडी वगेरा उपकरण इरादे धर्मके रखते है, ऐसा कहना कौन बेइन्साफ हुवा, दिगंबरमजहबके ज्ञानार्णव नामके शास्त्रमे लिखा है,—

शय्यासनोपधानानि शास्त्रोपकरणानि च,
पूर्वं सम्यक् समालोक्य प्रतिलेख्य पुनः पुनः १
गृह्णतोस्य प्रयत्नेन क्षिपतो वा धरातले,
भवत्यविकला साधोरादानसमितिः स्फुटं, २

(अर्थः)—शय्या आसन वगेरा संयमके उपकरण और ज्ञानके उपकरणकों जैनमुनि यतनासे देखभालकर पडिलेहन करे, और रखे, इससे सावीत हुवा संयम और ज्ञानकी हिफाजतके लिये उपकरण रखना जैनमुनिका फर्ज है, दिगंबरमजहबकी साधवीजी जो सोलह हाथकी लंबी साडी पहनती है, यह संयमकी और शरीरकी हिफाजतका साधन है या नही? इसका कोइ जवाब देवे, दिगंबरमजहबवाले कहते है, जैनमुनिको अपने ही मजहबवालोके घरसे आहार लेना चाहिये, श्वेतांबरमजहबवाले कहते है, क्षत्रीय ब्राह्मण और वणिक वगेराके घरसे जहासें शुद्ध मिले वहासे लेना चाहिये, मगर शर्त यह है, मांस मदिरा वगेरा अशुद्ध चीज न होना, दिगंबरमजहबके एक दर्शनसारनामके ग्रंथमें देवसेनाचार्य लिखते है श्वेतांबर मजहब चलानेवाले जिनचंद्र नामके आचार्य हुवे. दर्शनसारप्रकरणग्रंथ संवत् (९९०) मे देवसेन आचार्यजीने बनाया उस वख्त न अवधिज्ञान था, न मनःपर्याय या केवलज्ञान था.

८ अगर कोइ दिगंबर महाशय इसदलिलकों पेशकरे, श्वेतांबर-मजहबमें कइतरहके गछ और समुदाय फेलें हुवे है, (जवाब.) क्या! दिगंबरमजहबमें काष्ठासंघ, मूलसंघ, माथुरसंघ, गोप्य-संघ, वीशपंथी, तेरहपंथी, और समैयापंथी वगेरा भेदानुभेद नही फेले है? दिगंबरमजहबके प्रश्नचर्यासमाधान नामके ग्रंथमे लिखा है, श्रीयुत भूतबलीजी और पुष्पदंतमुनिजीने तीर्थंकर महावीरनिर्वाणके बाद (६८३) वर्स पीछे जेठसुदी पंचमीके रौज (७००००) हजार, श्लोकका धवल नामका शास्त्र, (६००००) हजार श्लोकका जयधवलशास्त्र, और (४००००) हजार श्लोकका महाधवलशास्त्र बनाया, सवाल पैदा होनेकी जगह है दिगंबर-मजहबमें गणधरोके बनाये हुवे क्या! कोइ शास्त्र नही है,? अगर है तो उनके नाम बतलावे, अगर कोइ इस सवालको पेशकरे राग-द्वेपरहित जिनेंद्रदेवको गेहने आभूपण चढाना कहां लिखा है,? (जवाब,) दिगंबरमजहबके हरिवंशपुराणमें बयान है–

"णाविउण खीरसागर जलेण भूसिओ आहरण उज्जलेण."

खीरसमुद्रके पानीसें स्नान कराके जिनेंद्र देवकों उमदा गेहने आभूपण पहनाये, इसपर अगर कोइ दिगंबर महाशय कहे, हम गेहने आभूपण पहनाना जन्मकल्याणिकके वख्तही मानते है, फिर नही. जवाबमें मालुम हो, हरहमेश जिनप्रतिमाका स्नानकरानाभी छोडदेना चाहिये, सबब इंद्रोने जन्मकल्याणिकके वख्त स्नान कराया था, फिर हमेशां स्नान क्यौं कराना! और रथयात्राके वख्त जिनप्रतिमाकों रथपर चढाकर शहरमे क्यौं फिराना! क्यौं कि-दीक्षालिये बाद जिनेंद्रदेव रथपर नही चढेथे, अगर कहाजाय भक्तिभावसें रथपर चढाते है, तो इसीतरह श्वेतांबरलोगभी भक्ति-भावसे गेहने आभूपण पहनाते है, इसमें क्या हर्ज हुवा? दिगंबर-मजहबके भावसंग्रह ग्रंथमें जिनप्रतिमाके चरणोंपर चंदनका लेप करना लिखा है, अगर कोई दिगंबरमजहबवाले तेहरीरकरे हम

जिनेंद्रके समान जिनप्रतिमाकों मानते है, उसलिये सोना, चांदी वगेराके चक्षु नही पहनाते, जबानमें मालुम हो, जब जिनेंद्रसमान जिनप्रतिमा मानते हो तो जिनेंद्रकी भ्रू शामरंगकी थी, वैसी शाम क्यों नही बनाते ? नेत्रोंके कोने लालरंगके थे वैसे लाल क्यों नही बनाते ? जिनेंद्रोंके नेत्रोंकी कीकी शामरंगकी थी आपलोग अपने दिगंबर-मजहबकी जिनप्रतिमाकी-कीकी वैसी शामरंग क्यों नही बनाते ? जिनेंद्रोके हाथपांवके तलवे लालरंगके थे आप लोग वैसे लालरंगके तलवे क्यौं नही बनाते ? असलमे जिनेंद्रकी प्रतिमाकों आप लोग जिनें-द्रसमान नही बनासकते, श्वेतांबर मजहबवालोंकी जिनमूर्त्ति देखो ! कैसी तदाकार है, अगर निर्वाण कल्याणिककीही जिनमूर्त्ति मानते हो तो तीर्थंकर पार्श्वनाथ महाराजको छद्मस्थ हालतमेही सर्पकी फणोंका आकार धरणेंद्रने किया था, आपलोग निर्वाणकी हालतमें क्यौं सर्पकी फणोंका आकार बनाते हो ? दिगंबरमजहबकी वसु-नंदी जिनसंहितामें लिखा है.—

अनर्चितपदद्वंद्वं कुंकुमादिविलेपनैः।
बिंबं पश्यति जैनेंद्रं ज्ञानहीनः स उच्यते, १

(अर्थः)—केशर वगेरा विलेपनसे रहित जिस जिनेंद्रके बिंबका जो शख्श दर्शन करता वो ज्ञानहीन है.—

९ दिगंबरमजहबवाले केवलज्ञानीको आहारलेना नही मानते, मगर तत्वार्थसूत्रमे उमास्वातिजी मूलसूत्रमें साफ फरमाते है, एका-दश जिने-अर्थात् क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण, डंसमशक चर्या, शय्या, वध, रोग, तृणस्पर्श, और मल, ये ग्यारह परिसह, तेरहमे गुण-स्थानवालोंकोंभी होवे इससे साबीत हुवा केवलज्ञानीकोंभी वेदनी-कर्म बाकी रहनेसे क्षुधा तृषा होना चाहिये, उमास्वातिजीकों दिग-बरमजहबवाले मानते है, मगर न मालुम क्षुधा तृषा परिसहसें क्यौं इनकार करते है ? दिगंबरमजहबके कुंदकुंदाचार्य रचित मूला-

चारग्रंथमे लिखा है, जैनमुनिकों ज्ञानउपधि संयमउपधि और अन्यउपधिभी रखना कहा, उसका पाठ इसतरह है.–

"नाणुवहि संयमुवहि तउव्ववहि अन्नमविउवहिं."

ज्ञानउपधि संयमउपधि और अन्यउपधि रखना जैनमुनिकों फरमाया, भगवती आराधनासारमें जैनमुनिकों कंबल रखना कहा, जो जो महाशय कहाकरते है, जैनमुनिकों पीछी कमंडलही रखना, दुसरा कुछभी नही रखना, उनको उपर लिखाहुवा पाठ देखना चाहिये.–

१० कइ दिगंबरमजहबवाले कहते है, धर्मकी हानिकरनेवालोकोंभी जैनमुनि न रोके, जवाबमें मालुम हो, कोइ शख्श जिनमंदिर तोडता हो, देवमूर्त्तिकों खंडन करताहो, धर्मीजीवकों तकलीफ देता हो, धर्मपुस्तक जलाताहो उसको जैनमुनि रोके और उसपर गुस्सा करे तोभी कुछ हर्ज नही, और उसका प्रायश्चित्तभी नही, दिगंबरमजहबवाले कहते है, जैनमुनिकों नग्न रहना चाहिये, मगर इसपर खयाल नही करते, नग्न रहना किसतरहकी लब्धिवाले जैनमुनिकों फरमाया है, जो जैनमुनि नग्न होते हुवेभी दुसरोकों नग्न न दिखाई देवे, ऐसे जिनकल्पी मुनिकों नग्न रहना लाजिम हैं, वज्ररिषभ नाराच संहननवाले हो, कमसें कम नवमेपूरवकी तिसरी आचार वस्तुतक और ज्यादह दशपूरवतक पढे हुवेहो, दिवसके तिसरे प्रहर गौचरी जाते हो, पांवमें कंटक लगे तोभी निकालते न हो, रास्तेमे केशरी सिंह सामने आजाय तोभी पीछे हठनेवाले न हो, बीमारपडे तोभी दवा न लेते हो, नवकल्पी विहार करनेवाले हो, छह महिनेतक आहार न मिले तोभी नाराजी न लावे, और तरहतरहकी लब्धिओंकों प्राप्तकरनेवाले हो और जंगलमे रहते हुवे तरहतरहके उपसर्गको सहन करनेवाले हो, ऐसे जिनकल्पी मुनिको नग्न रहनाभी कोइ हर्ज नही क्यौं कि–वे दुसरोकों नग्न दिखते नही, आजकल इनकी बराबरी करनेवाले कौन

है? सबबात मनःपरिणामपर दारमदार है, जबतक इच्छारूप बडा-भारी ममत्व नही छुटा तो क्या हुवा, जैनशास्त्रोंमे बयान है, मूर्छा-परिग्रहः जहां लोभलालच है, वहां परिग्रह है.—

११ अगर कोइ इस मजमूनको पेंशकरे, जहां आहार होगा वहां नींद जरूर होगी. इसलिये केवलज्ञानीकों आहार न होना चाहिये, (जवाब.) दर्शनावरणीयकर्मके उदयसे नींद आती है, और वेदनी कर्मके उदयसे क्षुधा लगती है, दर्शनावरणीय कर्म केवलज्ञानीको रहा नही, फिर नींद कहांसे आई? जैनश्वेतांबरमजहबमे तीर्थंकर महाराजसे लगाकर आजतक स्थविरकल्पी जैनमुनि गणधर आचार्य उपाध्याय वगेरा होते चले आये, स्थविरकल्पी मुनिको आसन कंबल चादर पछेडी रजोहरण मुखवस्त्रिका पात्रे वगेरा चौदह उपकरण संयमकी हिफाजतके लिये रखना कहा, खुद तीर्थंकर देवभी देवदुष्य वस्त्र धारण करते थे,आजकलभी उसीतरह श्वेतांबर जैनमुनि बरताव करते है, जिनकल्पी मुनि जंबूस्वामीके निर्वाण हुवेबाद रहे नही.—

१२ अगर दिगंबरमजहब श्वेतांबरमजहबसे पुराना होता तो उनके मंदिर और मुर्त्तियेंभी पुरानी होती, शत्रुंजय गिरनार तीर्थपर राजासंप्रतिके बनाये हुवे जिनमंदिर श्वेतांबरआम्नायके है, समेत-शिखरतीर्थपर पुराने जैनमदिर श्वेतांबरआम्नायके है, अगर दिगं-बरमजहब श्वेतांबरसे पुराना होता तो पुराने जैनतीर्थोंपर श्वेतांबर-मंदिरसे पुराने दिगंबर मंदिरभी होते, संप्रतिराजा जैनश्वेतांबरमज-हबका था, संग्रामसोनी जैनश्वेतांबर श्रावक था, वस्तुपाल तेजपाल दिवानभी जैनश्वेतांबर श्रावक थे, उनके बनायेहुवे जैनश्वेतांबर मदिर गिरनार आबुपहाडपर अबतक मौजूद है विमलशाहशेठभी जैनश्वेतांबर श्रावक थे, उनका बनाया हुवा जैनश्वेतांबरमदिरभी आबुपहाडपर अबतक कायम है, तारगातीर्थपरभी पुराना जैन-श्वेतांबरमंदिर राजा कुमारपालका तामीर करवाया हुवा अबतक मौजूद है, राजगृही तीर्थके पाचो पहाडपर पुराने जैनश्वेतांबर-

**मुनिसुव्रतकों गणधरघोडो एसो कहे सो जाने थोडों,–**
**कौन गणधर इहां घोडो भाख्यो जुठोआल इसीविध दाख्यो**

सुलसा श्राविकाको वत्तीस लडके हुवे श्वेतांवरलोग मानते है, दिगंवरलोग इसबातको नही मानते मगर इतना खयाल नही करते पांच पांच सात सात लडके तो इस जमानेमेभी एकशाथ जन्मते है, इसमे कोइ ताज्जुबकी बात नही, पृथवी पहाड देवविमान और द्वीपसागर वगेरा शास्वतें पदार्थोंका मापा-प्रमाणअंगुलके मापसे श्वेतांवरलोग मानते है, पांचसो धनुष्य उंचीकायावालोंकी एक अंगुलकों प्रमाण अंगुल कहना, यह श्वेतांवर मजहबके अनुयोगद्वार-सूत्र लोकप्रकाश और अंगुलसीतीरीप्रकरणमें लिखा है, उपवास-व्रतमें चारतरहके आहारका त्याग है, अगर वीमारीके सबबसे उपवासव्रतवाला वेंहोश होजाय उस हालतमे अणहारीचीज बतौर औषधके देवे तो कुछ हर्ज नही, उसका उपवासव्रत भंग नही होता, नींव, राख, उपलेट, धमासा, गुंगल, एलियो, कुंदरु, मजीठ, कुवार, अफीम, जहेरीनारियेल वगेरा अणाहारी चीजे हैं, इनमेसें कोइ चीज वतौर औषधके लिइजाय तो उपवासव्रत नही टुट सकता,–

१५ श्वेतांवरमजहववाले वारां देवलोक मानते है, दिगंवर मजहववाले सोलह देवलोक मानते है, दिगंवरमजहववाले कहते हैं, केवलज्ञानी महाराज सब पदार्थके जाननेवाले होते है, दुनियामें तरहतरहके जीवोंका मरना देखतेहुवे भोजन कैसे करसके? (जवाव.) तरहतरहके जीवोंका मरना देखनेसे क्या हुवा? इससे केवलज्ञानी आहार क्यौं छोडे? संसारी जीवोंकी तरह केवल-ज्ञानीकोंभी क्या फिक्र पैदा होना मानते हो? केवलज्ञानी जानते है, होनहारवस्तु होतीरहती है, इससे उनका क्या संवंध? अगर कोई इस दलिलको पेंशकरे, सम्यक्त्वधारी जीव स्त्रीकी गति हासिल-करे या नही? इसपर मालुम होता है, सम्यक्त्वकी हालतमें स्त्रीगति

पानेका कर्म न बांधे; अगर कोई जीव जिसवख्त वो मिथ्यात्वगुण-स्थानपर हो उस वख्त स्त्रीपना बांधलेवे और बाद उसके चतुर्थगुण स्थान हासिल करके शुभभावसे तीर्थंकर गोत्र बांधे तो बांध सकता है, उपाध्यायजी श्रीयुत यशोविज्यजीमहाराज दिगंबरके चौरासी बोलोंके जवाबमे फरमाते है.—

(दोहा.)—तीर्थंकर स्त्रीवेदको क्यौं एकनको बंध,
गुणस्थानक आकर्पथी यही हमारी संध. १

१६ दिगंबरमजहबवाले अगर इसमजमूनको पेंशकरे केवलज्ञानी महाराजको आहार कौनसा है? इच्छासहित या रहित? जवाब. केवलज्ञानी महाराजको कवल आहार हैं और जबतक वे शरीरधारी है तबतक शरीरका धर्म आहार करनेका है, मगर केवलज्ञानी पाच इंद्रियोंकी पुष्टिहोनेकी इच्छासें आहार नही लेते. बल्कि! मूर्छारहित आहार लेते है, केवलीको वेदनीय कर्मका उदय है, और क्षुधा तृषा वेदनीयकर्मके उदयसे होती है, इसलिये केवलज्ञानीको आहारका लेना साबीत होता है, अगर कोई सवाल करे चांडालकों मुक्ति होसके या नही? जवाब. क्यौं न होसके? आत्मा चांडाल नही है, जिसके मनःपरिणाम शुद्ध हो उनकी मुक्ति होसकती है, अगर कोई बयान करे जिनप्रतिमाका स्वरूप वीतरागका है, गेहनेपहनाकर सरागभाव क्यो करते हो? (जवाब.) गहनेपहनानेसे वीतरागभाव चलानही जाता, दिगंबरमजहबवाले अपनी दिगंबर जिनमूर्त्तिकों सोनेचांदीके सिंहासनपर बेठाते है? रथपर चढाते है? और सीरपर छत्र धराते है? क्या! इससे सरागभाव पैदा नही होता? अगर कोई तेहरीर करे श्वेतांबरमुनि दंडा क्यौं रखते है? (जवाब.) संयमकी हिफाजतके लिये रखते है, फर्जकरो! विहार करतेवख्त रास्तेमें नदी आगइ और उसके पारजानेकी जरूरत हैं, उसवख्त उसनदीका पानी कितना उंडा है, देखनेके लिये दंडा काम देगा, जैन-शास्त्रोंमे जैनमुनिको घरघर जाकर भिक्षाटन करना कहा, दिगंबर-

मुनि एकही गृहस्थके घर आहार करलेते है, श्वेतांबरमुनि पात्र रखते है, इसलिये उनको तरह तरहके धार्मिक फायदे मिलते है, उसपात्रमें आहार लाकर गुरुकी भक्ति करसकते है, वीमार साधुकों आहार देकर वैयावृत्य करसकते है, तपस्वी बालवृद्धमुनिकी आहार लाकर खिदमत करसकते है.—

१७ श्वेतांबरमुनिजनोंमें जैसे श्रीपूज्यजी और यतिजी वगेरा है, वैसे दिगंबरमजहबमे भट्टारक क्षुल्लक है, भट्टारकजी लालकपडे पहनते है, श्वेतांबरके श्रीपूज्यजी सफेदकपडे पहनते है, अगर कोई इस दलिलकों पेंशकरे औरतका शरीर अशुद्ध है, इसलिये उसकी मुक्ति कैसे होसके? (जवाब.) शरीरकी अशुद्धि जैसे मर्दकी है, वैसी औरतकी है, मुक्तिका संबंध भावचारित्रके शाथ है, शरीरकी अशुद्धिके शाथ नही, जिसकों भावचारित्र होजाय उसकी मुक्तिका इनकार करना खिलाफ जैनशास्त्रके है, दिगंबरमजहबवाले बयान करते है केवलज्ञानीकों राग न होनेसे बोलनेकीभी उनकों कोई जरुरत नही, समवसरणमें धर्मोपदेश देतेवख्त केवलज्ञानी खुद नही बोले, बल्कि! सुननेवालोकी पुन्यप्रकृतिके उदयसें केवलज्ञानीके मस्तकमेंसे खुद एकतरहका नाद पैदा होता है.—

(दोहा.)—दिग्पट जिनबोले नही सिरसे उठे नाद,
क्रिया विना घटध्वनिपरे तामे कौन संवाद. १

वो पैदा होया हुवा नाद निरक्षरी होता है, अक्षररूप वाणी नही, बल्कि! एक बडा भारी अवाज जानना. (जवाब.) अक्षररूप वाणी नही माननेका क्या! सबब है? क्या! भाषापर्याप्ति नामकर्मका उदय केवलीकों नही है, जो निरक्षर अवाज पैदा हो, इसलिये केवलज्ञानी मुखसे न बोले ऐसा कहना गलत है, केवलज्ञानी तालीम धर्मकी देतेवख्त मुखसे बोलते है, तीर्थंकर महावीरस्वामीका गर्भापहार श्वेतांबरलोग मानते है, दिगंबरमजहबवाले नहीं मानते, श्वेतांबरमजहबके साधुलोग वस्त्रपात्र रखते हुवेभी अगर

मूर्छारहित हो तो मुक्ति होना मानते है, दिगंबरमजहबवाले कहते है वस्त्र पात्र वगेरा धर्मोपकरण छोडे विना मुक्ति नही, मगर इसपर खयाल नही लाते, दिगंबरमुनि पीछी कमंडल रखते है यह धर्मके उपकरण है, या नही,? इस बातको सोचे, तीर्थंकर मल्लिनाथ स्त्री हालतमें हुवे ऐसा श्वेतांबर लोग मानते हैं, दिगंबर लोग नही मानते, श्वेतांबरमुनि जैनमंदिरमें खानपान करते हैं और मलीनता करते है, यह आक्षेप करना दिगंबरोंका गलत है, श्वेतांबरमुनि जिनमंदिरमे उतरते नही, और मलीनता करते नही. मंदिरकी बाजुमें अलग मकानमे उतरते है, इससे मंदिरमें उतरना कहना नही बनसकता,–

१८ श्वेतांबरलोग दुनियादारी हालतमेंभी अगर किसी जीवकी भावना शुद्ध होजाय तो मुक्ति होना मानते है, दिगंबरमजहब-वाले नही मानते, और कहते है द्रव्यचारित्र लेना चाहिये, ब्राह्मी सुंदरी दो बहने थी, भरतचक्रवर्त्तीको आरिसाभुवनमे अनित्य भावनासे केवल ज्ञान पैदा हुवा, श्वेतांबरलोग मानते है, दिगंबर-मजहबवाले इस बातको मंजुर नही रखते, चक्रवर्त्तीको (६४०००) स्त्रीये होना श्वेतांबर लोग मानते है, दिगंबर लोग (१९२०००) मानते है, एक एक रानीके शाथ दोदो सखीया होना मंजुर रखते है, तीर्थंकर महाराज जब दुनियाको छोडकर दीक्षा इख्तियार करते है, एक वर्सतक संवत्सरीदान देते है, ऐसा श्वेतांबर लोग मानते हैं, दिगंबर मजहबवाले नही मानते, तीर्थंकर महावीर स्वामीकी अवल धर्मतालीम खालीगइ श्वेतांबर लोग मानते है, दिगंबर लोग नही मानते, तीर्थंकर महावीरस्वामीको केवलज्ञान हुवे बाद उपसर्ग हुवा श्वेतांबरलोग मानते है, दिगंबरमजहबवाले नही मानते, तीर्थंकर महावीरस्वामीके समवसरणमें चंद्रमा और सूर्य अपने मूलविमानसें आये थे, ऐसा द्वादशांगवाणीके पुस्तकोका फरमान है और यह एकतरहका आश्चर्य हुवा श्वेतांबरलोग मानते

है, दिगंवरलोग नही मानते, चमरेंद्रका क्रोधसें पहले देवलोग-तक जाना हुवा यह एकतरहका उत्पात श्वेतांवरलोग मानते है, दिगंवरलोग नही मानते, तीर्थंकर महावीरस्वामीके सताइस भव और तीर्थंकर नेमनाथजीके नवभव इन दोनोंमें श्वेतांवरदिगंवरका मतभेद है,–

१९ आचारांग सूत्रकृताग स्थानांग वगेरा द्वादशांगवाणीके सूत्र जो जमानेहालमें मौजूद है श्वेतांवरलोग इनकों मानते है, दिगंवरलोग कहते है विछेद होगये, और धवल जयधवल महाधवल गोमटसार त्रिलोकसार वगेरा जो पीछेसे वनाये हुवे है, उनकों मानते है, वीशस्थानक सतरांभेदी चौसठप्रकारी ननाणुं प्रकारकी अष्टप्रकारी वगेरा तरहतरहकी पूजा श्वेतांवरलोग मानते है, दिगंवरलोग एक अष्टप्रकारीही पूजा मानते है, तीर्थंकर रिषभदेव महाराजने जव दीक्षा इख्तियार किइथी चारमुष्टिक लोच कियाथा, ऐसा श्वेतांवरलोग कहते है, दिगंवरलोग पंचमुष्टिक लोच किया कहते है, द्रोपदीजीको पंचपांडव पति हुवे मंजुर रखते है, दिगंवरलोग मंजुर नही रखते, पांच पांडवोकी मुक्ति हुइ श्वेतांवरलोग मानते है, दिगंवरलोगोका इस वातमें मतभेद है, युगलीक मनुष्यसें हरिवंशकी उत्पत्ति हुइ श्वेतांवर लोग मानते है, दिगंवरलोग इसवातकों मंजुर नही रखते, यादव लोग मांस खातेथे श्वेतांवरमजहबवाले इसबातकों मंजुर रखते है, मांसखानेसें पाप लगता है, मगर सम्यक्तमें हानि नही होती, श्रद्धा अलग चीज है और व्रतनियम लेना अलग चीज है, दिगंवर लोगोंका इस वातमें मतभेद है, भरतक्षेत्रके मध्यखंडमे साढेपचीस आर्यदेश होना श्वेतांवरलोग मंजुर रखते है, दिगंवर लोग इसवातको मंजुर नही रखते,–

२० राजीमती सतीथी, और उसकी मुक्ति हुइ श्वेतांवरलोग मानते है, दिगंवरलोग नही मानते, श्वेतांवरलोग जीवतत्व

अजीवतत्व वगेरा नवतत्व मानते है, दिगंबरलोग साततत्व मानते है, परमेष्टिमहामंत्रके दिगंबरलोग पांचपद कहते है, श्वेतांबर नवपद कहते है, श्वेतांबरजैनमुनि स्थविरकल्पमार्गमे चलते है, श्वेतांबरलोग उदयतिथि मानते है, जैसे पौर्णिमा तिथि सूर्योदयके वख्त शुरु हुइ चाहे वो शामतक न पहुंचीहो तोभी सारादिन पौर्णिमा मानना, चौदशके दिन शामको अगर घडियोकी गिनतीमें पौर्णिमा आगइ हो तो उसरोज पुनम नही मानना. चौदश ही मानना, दिगंबर लोग इसमे कुछ तफावत बतलाते है, इसतरह कइ बातोमें तफावत है, मगर यहांपर थोडेमें लिखा है, ऐसा जानना, दिगंबरमजहबका बयान खतम हुवा,–

## [ खरतरगच्छसमीक्षा ]

१ इसमें खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजीके बनाये हुवे बृहत्पर्यूषणानिर्णयका माकुल जवाब और खरतरगछके पंन्यास श्रीयुत केशरमुनिगणिजीने जो कुछ तपगछ और खरतरगछके बारेमे दलिले पेश किइ है उनका माकुल जबाबभी इसमे दर्ज है, तीर्थंकर महावीरस्वामीके पंचकल्याणिक जैनशास्त्रोंमे लिखे है, छह कल्याणिक नही लिखे, अधिक महिना वार्षिक चातुर्मासिक और कल्याणिक पर्वकी अपेक्षा गिनतीमे लेना नही साबीत करदिखाया है, आजकल तीर्थंकर गणधर मौजूद नही. पूर्वधारी मुनिभी नही रहे, सिर्फ! धर्मशास्त्र मौजूद है, उन्हीसे हरबातका निर्णय किया जाता है, जमानेहालमे कइ गछ और समुदाय मौजूद है, उपकेशगछ जिसको आजकल कवलगछ बोलते है, तपगछ, खतरगछ, अंचलगछ, पायचंदगछ, विजयगछ, सागरगछ लोंकागछ वगेरा हालके जमानेमें जारी है,–

१ संवत् (१२०४) मे श्रीयुत जिनवल्लभसूरिजीने चितोडगढमे छह कल्याणिककी प्ररूपना करके खरतरगछ निकाला,

अंचलगछकी पटावलीमें खरतरगछकी पैदाश संवत् वारांसोचार सालमें हुई लिखी है, इसके पेस्तरके बनेहुवे ग्रंथोमें किसीजगह खरतरगछका वर्नन नही आता, इसलिये मजकुरवात सचकरार पाईजाती है, खरतरगछके मुनिभी पीले कपडे पहनते है, जैसे तपगछके मुनि पहनते है, पीले कपडे पहनना धर्मशास्त्रके खिलाफ नही, निशीथसूत्रमें वयान है.–

"जे भिख्खु णवइमे वथ्थे लद्धे तिकट्टु बहुदिवसएणं कथ्थेणवा लोधेणवा कक्केणवा पउमचुन्नेणवा वन्नेणवा, उल्लोलेज्जवा उवदेज्जवा उल्लोत्तमंवा उवदंतंवा, इत्यादि.

(अर्थः)—जैनमुनिको कोई नयाकपडा मीले तो उसकों कथा पदमचूर्ण लोध वगेरासे रगलेवे और फिर पहने, तीर्थंकर महावीरस्वामीके साधुजनोंकों सफेद कपडे पहनना कहा, इसलिये श्वेताबर नाम मशहूर है, मगर जब श्वेतकपडेधारी जैनमुनियोंमें शिथिलता होनेलगी तब क्रियाउद्धार करना पडा, और उपर बतलाये हुवे निशीथसूत्रके पाठसें कपडे रगे.–

३ अगर कहाजाय संवत् (१०८०) में दुर्लभराजाकी सभामें श्रीजिनेश्वरसूरिजीको खरतरविरुद मिला, मगर उस संवत्में दुर्लभराजाका होना साबीत नही होता, फिर खरतर विरुद किससे मिला, ग्रंथप्रबंधचिंतामणि, गुर्जरदेशभूपावली, और फारबससाहबकी बनाइहुइ रासमाला वगेरा इतिहासिक कितावोंमें लिखा है, संवत् (१०६६) में दुर्लभराजा राजगदीपर बेठा, और ग्यारावर्स छह महिनेतक सलतनत किई, और संवत् (१०७७) मे उसका इंतकाल हुवा, संवत् एकहजार असीकी सालमे खुद दुर्लभराजा मौजूद नही था, फिर खरतरविरुद किससे मिला? इसका कोई जवाब देवे.–

४ अगर कोई तेहरीर करे करेमिभंतेका पाठविना बोले इरियावही पाठ नही बोलना चाहिये, (जवाब.) महानिशीथसूत्रके तिसरे अध्य-

यनमें पाठ है कि—"गोयमा! अपडिक्कंताए इरियावहियाए न कप्पइ चेव काउं किंचिवि, चिइवंदणसज्झाय झाणाइय." तीर्थंकर महावीरस्वामी गौतमगणधरकों फरमाते है गोतम! विना इरियावही पडिक्कमे कोईभी चैत्यवंदन सज्झाय ध्यानवगेरा धर्म-क्रिया नही करना चाहिये, दशवैकालिकसूत्रकी वडीटीकामे पाठ है. इर्यापथप्रतिक्रमणं अकृत्वा नान्यत् किमपि कुर्यात् तदशुद्धापत्तेः—इर्यापथिका विना पढे कोईभी धर्मक्रिया नही करना, इससे साबीत हुवा, इरियावहीका पाठ पेस्तर बोलकर पीछे करेमि भंतेका पाठ कहना, धर्मरत्नप्रकरणग्रंथमेंभी यही बात है, पंचाशकसूत्रकी चूर्णिमेभी सामायिकके अधिकारमें पाठ है, श्रावक पीछलीरातको उठकर पेस्तर इर्यावहीपडिक्कमे और बाद उसके मुख-वस्त्रिकाकी प्रतिलेखना करे, फिर करेमि भंतेका पाठ बोले, विवाहचूलिकासूत्रमे लिखा है.—

देवड्ढीकुसुमसेहर मुचइ दव्वाहिगारमज्झंमि,
ठवणायरियं ठविउं पोसहसालाए तोसिंहो १

(अर्थः)—सिंहनामके श्रावकने रिद्धिफुलमाला और गेहनेवगेरा छोडकर पौषधशालामें स्थापनाचार्य जाघेनशीन किये, और इर्या-पथिका पाठ पढकर पीछेसे मुखवस्त्रिकाकी प्रतिलेखना किइ, इसपाठसेभी साफ जाहिर होता है इर्यावहीका पाठ पेस्तर बोलना चाहिये.—

५ खरतरगछवाले तीर्थंकर महावीरस्वामीके पांचकल्याणिककी जगह छह कल्याणिक मानते है, और दुसरे तमाम समुदायवाले पांचकल्याणिक मानते है, पांचकल्याणिक मानना मुताबिक जैनशास्त्रोंके सच है, छहकल्याणिक कहना गलत है, जबसे चितो-डगढमुकामपर श्रीजिनवल्लभसूरिजीने छहकल्याणक बयान किये उसके पहलेके जैनशास्त्रोंमे किसीजगह छह कल्याणकका बयान नही मिलता, गणधरसार्द्धशतकग्रथमे साफ लिखा है श्रीजिन-

वल्लभसूरिजीने छहकल्याणिक माननेकी शुरुआत किइ, और तीर्थंकर महावीरस्वामीके गर्भापहारकी बातको छठा कल्याणिक कहना शुरुकिया, मजकुर गणधरसार्द्धशतकग्रंथको खरतरगछ-वालेभी मानते है, अगर कोइ खरतरगछवाले ऐसा कहे श्रीमान् अभयदेवसूरिजी खरतरगछमें हुवे, मगर यह बात गलत है, सबब कि-उनोने पंचाशकसूत्रकी जो टीका बनाइ है, उसमें तीर्थंकर महावीरस्वामीके पांच कल्याणिक माने है, और उनकी पांच तिथियें बतलाइ है, अगर अभयदेवसूरिजी खरतरगछमें होते तो छह कल्याणिक क्यौं नही बतातें! पंचाशकसूत्रके बनानेवाले आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिजी हुवे जो पूर्वधारी ज्ञानीयोके वख्तमे थे, उनोने पंचाशकसूत्रमें जहां तीर्थंकर महावीरस्वामीके कल्याणिकोकी तिथि बयान फरमाइ है, उसमें लिखा है.-

[ पंचाशकसूत्रका पाठ. ]

आसाढसुद्ध छठी चित्ते तह सुद्धतेरसीचेव,
मगसिर किन्नदसमी वइसाहे सुद्धदसमीय,
कत्तियकन्ने चरिमा गब्भाइदिणा जहाकमं एते,
हथ्थुत्तरा जोएणं चउरो तह साइणा चरमो,

(टीका.) आषाढमासे शुक्लपक्षस्य षष्ठीतिथिरेकं दिनं, चैत्रमासे तथेति समुच्चये शुद्धत्रयोदश्येवेति द्वितीयं, तथा मार्गशीर्षकृष्णदशमीति तृतीयं वैशाखशुद्धदशमीति चतुर्थं, चशब्दः समुच्चयार्थः कार्त्तिककृष्णे चरिमा पंच-दशीति पंचमं, एतानीत्याह गर्भादिदिनानि, गर्भ १ जन्म २ निष्क्रमण ३ ज्ञान ४ निर्वाणदिवसा यथाक्रमम्,-

इस पंचाशकसूत्रके मूलपाठ और उसकी टीकाका अर्थ यह हुवा कि-तीर्थंकर महावीरस्वामी आषाढसुदी छठके रौज माताके गर्भमे पैदा हुवे, चैतसुदी त्रयोदशीके रौज जन्मे, मृगसीरवदी दशमीके रौज दीक्षा इख्तियार किइ, वैशाखसुदी दशमीके रौज उनको केव-

लज्ञान पैदा हुवा, और कार्तिकवदी अमावास्याके रौज मुक्ति पाये, देखिये! इसपाठमें हरिभद्रसूरिजीने और अभयदेवसूरिजीने तीर्थंकर महावीरस्वामीके पांचही कल्याणिक बयान फरमाये, छह कल्याणिक नही फरमाये, अगर ये दोनो जैनाचार्य छह कल्याणिक माननेवाले होते तो पांच कल्याणिक क्यौं फरमाते? अगर इसपर कोइ ऐसा कहे यह बात सामान्य तौरसे कही गइहै तो बतलावे, मजकुरपाठमे ऐसा बयान कहा है! विना सबुतके कोइ कैसे मजुर करे.–

७ खरतरगछवाले कहते है कल्पसूत्रके मूलपाठमे तीर्थंकर महावीरस्वामीके छह कल्याणिक लिखे है, मगर यह बात गलत है.—

[ देखिये! कल्पसूत्रका पाठ यहां देताहुं ]

तेणं कालेणं तेणं समएणं, समणे भगवं महावीरे पंच, हथ्थुत्तरे होथ्था, तंजहा. हथ्थुत्तराहिं चुएचइत्तागभ्भं वक्कंते हथ्थुत्तराहिं गभ्भाओ गभ्भं साहरिए, हथ्थुत्तराहिं जाए, हथ्थुत्तराहिं मुंडे भविता आगाराओ अणगारियं पवइए, हथ्थुत्तराहिं कसिणे पडिपुन्ने निवाघाए निरावरणे अणंते केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने साइणा परिणिव्वुए भयवं,

इसमें गर्भापहारकों छठा कल्याणिक कहां लिखा है,? अगर लिखा है तो कल्याणिक शब्द पाठमे बतलाइये! अगर इसीपाठसे छह कल्याणिक खरतरगछवाले मानते है तो खरतरगछ निकलनेके पहलेकी कोइ कल्पसूत्रकी टीकाका पाठ बतलावे, खरतर गछ संवत् (१२०४) मेजिनवल्लभसूरिजीने निकाला, इसके पहलेकी –कोइ कल्पसूत्रकी पुरानीटीका हो तो उसका पाठ बतलाइये! श्रीमान् हरिभद्रसूरिजी पंचाशकसूत्रके पाठमे और श्रीमान् अभयदेवसूरिजी टीकामें तीर्थंकर महावीरस्वामीके पांचकल्याणिक बतलाते है, अगर छह होते तो क्यौं नही बतलाते? क्या! कल्पसूत्रका पाठ उनके देखनेमे नही आयाथा?

८ अगर पंचहथ्थुत्तरे साइणा परिणिव्वुए इस कल्पसूत्रके पाठसे तीर्थंकर महावीरस्वामीके छहकल्याणिक मानतेहो तो तीर्थंकर रिषभदेव महाराजकेभी छह कल्याणिक मानना पडेगा, क्योंकी जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रमें तीर्थंकर रिषभदेव महाराजके बयानमेंभी लिखा है, पंच उत्तरासाढे अभिइ छठे होथ्था, ऐसा पाठ है,–

[पाठ जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिका यहां देता हुं.]

उसभेणं अरहाकोसलीए पंचउत्तरासाढे, अभीइ छठे होथ्था, तंजहा, उत्तरासाढाहिं चुएचइत्ता, गभ्भं वक्ंते, उत्तरासाढाहिं जाए, उत्तरासाढाहिं रायाभिसेयंपत्ते, उत्तरासाढाहिं मुंडे भविता आगाराओ अणगारियं पव्वइए. उत्तरासाढाहिं अणंते जाव समुप्पन्ने, अभिइणा परिणिव्वुए.

[जंबूद्वीपसूत्रकी टीकाका पाठ,– ]

वृषभोर्हन् पंचसु च्यवनजन्म राज्याभिषेकदीक्षाज्ञान-लक्षणेषु वस्तुषु उत्तराषाढानक्षत्रे चंद्रेण भुज्यमानं यस्य स तथा, अभिजिन्नक्षत्रं षष्ठे निर्वाणलक्षणे, वस्तुनि यस्य यद्वा निर्वाणलक्षणं वस्तु यस्य स इति अभिजिति नक्षत्रे षष्ठं,–

देखिये! इसपाठका अर्थ यह हुवा उत्तराषाढानक्षत्रके रौज तीर्थंकर रिषभदेव महाराज मरुदेवामाताकी कुक्षिमे आये, उत्तरा षाढा नक्षत्रके रौज जन्मे, उत्तराषाढा नक्षत्रके रौज राज्याभिषेक हुवा, उत्तराषाढा नक्षत्रके रौज दीक्षा इख्तियार किइ. और उत्तरा-षाढा नक्षत्रके रौज केवलज्ञान पैदा हुवा. ये पांचवस्तु उत्तराषाढा नक्षत्रमें हुइ, और अभिजित् नक्षत्रके रौज निर्वाण हुवा, देखिये! जंबूद्वीप प्रज्ञप्तिसूत्रका मूलपाठ और टीका क्या कहती है? उसपर खयाल कीजिये! जैसा पाठ कल्पसूत्रमें तीर्थंकर महावीरस्वामीके बयानमे है, वैसा तीर्थंकर रिषभदेवजीके बयानमें जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति

सूत्रका है, खरतरगछवाले तीर्थंकर महावीरस्वामीके छह कल्याणिक मानते है फिर रिषभदेवजीके छह कल्याणिक क्यों नही मानते? यह वडीभारी दलिल है,–

जैसा पाठ कल्पसूत्रमे छह कल्याणिकका कहते हो, वैसाही आचारांगसूत्रमेभी है, आचारागसूत्रके पाठसेभी खरतरगछवालेकों छह कल्याणिक मानना चाहिये, आचारांगसूत्रकी टीका बनानेवाले शैलंगाचार्य अभयदेवसूरिजीसें पहले हुवे है, उनोने आचारागसूत्रकी टीकामें तीर्थंकर महावीरस्वामीके छह कल्याणिक क्यौं नही फरमाये? इसलिये छह कल्याणिककी प्ररूपणा नयी देखनेमे आती है,–

९ अगर कोई खरतरगछवाले इस दलिलको पेशकरे औरतकों जिनप्रतिमाकी पूजा नही करना चाहिये, सबब औरतका शरीर नापाक है, (जबाब.) शरीरकी नापाकी जैसी औरतकी है, वैसी मर्दकीभी है, हा! रितुधर्मके दिनोमें पाचदिन जिनप्रतिमाकी पूजा न करे, क्योंकि–उन दिनोमे नापाकी रहती है, हमेशांकेलिये मना नही, जैनशास्त्र ज्ञातासूत्रमे बयान है, द्रौपदीजीने जिनप्रतिमाकी पूजा किई, श्रीपालचरितमे लिखा है, मयणासुंदरीजीने जिनप्रतिमाकी पूजा किई, आवश्यकसूत्रकी टीकामे फरमान है, उदयनराजाकी पटरानी प्रभावतीजीने जिनप्रतिमाकी पूजा किई, औरतको जिनप्रतिमाकी पूजा करना हुकम है, मना नही.–

१० अगर कोई खरतरगछवाले इसमजमूनकों पेंशकरे श्रीमान् अभयदेवसूरि जैनाचार्य खरतरगछमें हुवे, (जबाब.) श्रीमान् अभयदेवसूरिजी खरतरगछमे नही हुवे, सबब स्थानांगसूत्र समवायांगसूत्र वगेरा नवांगशास्त्रकी टीका श्रीमान् अभयदेवसूरिजीने बनाई, मगर किसीपीठिकामे या अखीरमे खरतरगछका नाम निशानभी नही है, देखलो! स्थानांगसूत्रकी टीकाका पाठ यहा देता हु पढलीजिये!–

**श्रीबुद्धिसागराचार्यस्य चरणकमलचंचरीककल्पेन श्रीमत् अभयदेवसूरिनाम्ना मया महावीरजिनराजासंतानवर्तिना इति.**

इसपाठमें अभयदेवसूरिजीने अपना गछखरतर नही लिखा, दरअस उसवख्त खरतरगछ नही था तो लिखे कहांसे? मजकुर स्थानांगसूत्रकी टीका श्रीमान् अभयदेवसूरिजीने संवत् (११२०) मे बनाई, उसवख्त खरतरगछ नही था और खुद अभयदेवसूरिजी महाराज खरतरगछी नही थे, अगर होते तो लिखते.–

११ जैनशास्त्र फरमाते है दुज, पंचमी, अष्टमी, एकादशी चतुर्दशी पौर्णिमासी और अमावास्या ये छह पर्वतिथि है, इनको अखंड रखना चाहिये, सबब इनदिनोमें व्रत नियम किये जाते है, अगर पंचांगमें ये छह पर्वतिथियोमेसें कोई तिथि टुट जाय तो पर्वतिथि न तोडकर पहलेकी अपर्वतिथि तोड देना, अगर पर्वतिथि बढजाय तो दोनोंमेंसें अगलीपर्वतिथि मानना, खरतरगछवाले जब चतुर्दशीपर्वतिथि टुट जाय तो त्रयोदशीमे चौदश न मानकर पुनममें चले जाते है, इसतरह करनेसे एक महिनेमे बारां पर्वतिथिकी जगह ग्यारह होगई, एक पर्वतिथिके व्रतनियम तोडनेका दोष आता है, तपगछवालोकों यह दोष नही आता, क्यौ कि–बारां पर्वतिथियोंमेंसें किसी पर्वतिथिको तोडते नही और जैनशास्त्रके प्रमाणपर चलते है.–

१२ खरतरगछवाले बयान करते है, श्रावकश्राविकाकों सामायिक और प्रतिक्रमणमें तीनदफे करेमिभंतेका पाठ बोलना चाहिये, (जवाब.) किसी जैनशास्त्रमे सामायिकप्रतिक्रमण करतेवख्त तीनदफे करेमिभंते बोलनेका पाठ नही है, जो व्रतनियम यावत् जीवतक करनेके हो उन्हीकों तीनदफे बोलना कहा, जैसे सम्यक्त्वका पाठ, दीक्षा लेनेका पाठ, और बारां व्रत उचरनेका पाठ तीनदफे बोलना कहा. मगर सामायिकप्रतिक्रमणमे परिमितकाल होनेसे तीनदफे बोलना किसी जैनशास्त्रमे नही लिखा, तीनदफे

करेमिभंते बोलनेका पाठ इस शर्तका होना चाहिये जो खरतरगछ निकलनेसे पेस्तरके बनेहुवे शास्त्रमे हो.–

१३ खरतरगछवाले प्रतिक्रमण करतेवख्त जैनाचार्य जिनदत्तसूरि और जैनाचार्य जिनकुशलसूरिजीका कायोत्सर्ग करते है, और कहते है, ये दोनों जैनाचार्य बडे प्रभाविक हुवे है, जवाबमे मालुम हो क्या! दुसरे जैनाचार्य प्रभाविक नही हुवे है, जैसे गणधर गौतमस्वामी, सुधर्मास्वामी, जंबूस्वामी, भद्रबाहुस्वामी, स्थूलभद्रजी, वज्रस्वामी, सिद्धसेनदिवाकर देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण–हरिभद्रसूरि अभयदेवसूरि और हेमचंद्राचार्य वगेरा महाप्रभाविक हुवे है, उनका कायोत्सर्ग क्यों नही करते? अपने गछके आचार्योंका पक्ष करना कौन इन्साफ हुवा? दुसरी यहभी बात है कि–जब जिनदत्तसूरिजी और जिनकुशलसूरिजी नही हुवे थे, तब किसका कायोत्सर्ग करते थे? और वे दोनो आचार्य प्रतिक्रमण करतेवख्त किसका कायोत्सर्ग करते थे? इसका कोई जवाब देवे.–

१४ जिस जिस शहरमे श्रीजिनदत्तसूरिजी और जिनकुलसूरिजीके चरणोंकी छत्रीये बनी हुई हो उनके सामने जाना तो गुरुभावनासे तीनदफे वंदन करना, और अब्भुठियो अभ्यंतरका पाठ पढकर नमस्कार करना चाहिये, मनुष्यभवमे उनोने जो सम्यक्दर्शन ज्ञान और चारित्रपाला था उसभावनासे उनकों धर्मगुरु मानना ठीक है, देवभवकी अपेक्षासे धर्मगुरु नही. मनुष्यभवकी अपेक्षासें धर्मगुरु मानना, दुनियादारीकी चीजोकी चाहना करके किसी तरहकी मन्नत नही करना, सोमवार या पुनमके रौज उनके दर्शनकों जाना ऐसा कोई नियम नही, चाहे हरहमेशा जाओ कोइ मना नही, उनके सामने किसी तरहकी मन्नत करके कोई चीज चढाना, किसी जैनशास्त्रमें नही फरमाया, फक्त गुरुभावनासे वंदना करके चले आना फरमाया, मन्नत करके कोई चीज चढाना, या उनके नामका प्रसाद बाटना मुनासिब नही,

अगर गुरुभक्तिसे कोई चीज चढाना हो तो संपूर्ण चढादेना चाहिये, उसमेसे आप लेना नही, और खाना नही, सबब कि-वो गुरुद्रव्य हो गया, गुरुद्रव्य खाना जैनशास्त्रोंमें मना है.-

१५ महाजनवंश मुक्तावली किताबके पृष्ठ ( ३२ ) पर लिखा है भुरेजीकी औलाद भणसालीभुरा कहलाये, पुंगलसे उठे सो भणसाली पुंगलीया कहलाते हैं, मूलगछं इनका खरतर है.-

(जवाब.) श्रीरत्नप्रभसूरिजी जो तीर्थंकर महावीरस्वामीके निर्वाण पीछे (७०) वर्स बाद हुवे, उनोने ओशियानगरीमे औशवालवंशकी स्थापना किइ उसवक्त खरतरगछ था नही, तरहतरहके गछभेद पीछेसे हुवे, फिर भणसालीभुरा पुंगलीया वगेराका मूलगछ खरतर कहना कैसे बनेगा ?

खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी तर्फसें बृहत्पर्यूषणानिर्णय किताबका पूर्वार्द्ध भाग जो संवत् ( १९७८ ) मे जाहिर हुवा है, उसके पृष्ठ ( १ ) पर वे लिखते है, कितनेक मुनिमहाशय पर्यूषणापर्वके व्याख्यानमें अधिकमहिनेके बारेमें और छह कल्याणिकके बारेमें चर्चा उठाते है, ( जवाब. ) क्या ! खरतरगछके मुनिमहाराज पर्यूषणापर्वमें अपने खरतरगछके आचार्योंकी बनाई हुई कल्पसूत्रकी टीका बाचते वख्त छह कल्याणिककी चर्चा नही उठाते ? अगर उठाते है तो फिर सबकेलिये यह बात हुई ? दूसरोंपर आक्षेप करना क्या सबब है ? तीर्थंकर महावीरस्वामीके पांचही कल्याणिक जैनशास्त्रोमे फरमाये, छह नही फरमाये, जमालिजीकी तरह किसकी धर्मश्रद्धा ठीक नही, इसका खयाल खुद करलेना चाहिये, चौमासेके चारमहिनोमें संवत्सरीके पहले ( ५० ) दिन और पीछे ( ७० ) दिन रखना कल्पसूत्र और समवायांगसूत्रमें कहा.-

१६ आगे मुनि श्रीयुत मणिसागरजी किताब बृहत्पर्यूषणानिर्णयकी प्रस्तावनाके पृष्ठ (९) पर लिखते है, पंचाशकसूत्रमें सब तीर्थंकरकी अपेक्षा सामान्यतासे तीर्थंकर महावीरस्वामीके पांच कल्याणिक कहे

है, फिर खरतरगछके पंन्यास श्रीयुतकेशरविजयजीगणीने शास्त्रार्थ-दर्पण किताब जो सिर्फ! (१६) पृष्ठकी बनाइ है, उसमेभी सामान्य विशेषवगेरा बाते लाये है, (जवाब.) पंचाशकसूत्रमें तीर्थंकर महावीरस्वामीके पांचकल्याणिक सामान्यकी अपेक्षासे कहे है, ऐसा पाठ बतलाइये! विना पाठ बतलाये इसबातको कोइ कैसे मंजुर रखेंगे.–

१७ फिर खरतरगछके मुनि श्रीयुत मणिसागरजी किताब बृहत्पर्यूषणानिर्णयकी प्रस्तावनाके पृष्ठ (९) पर इसमजमूनको पेंश करते है, श्रीजिनवल्लभसूरिजी महाराजने छठे कल्याणिककी नयी प्ररूपणा किई, पहले नही थी, ऐसा कहना व्यर्थ है.–

(जवाब.) व्यर्थ नही सच है, बेशक! चितोडगढमें श्रीजिनवल्लभसूरिजीने छह कल्याणिककी प्ररूपणा किई, क्यों कि–इनके पहलेके बनेहुवे शास्त्रमे किसीजगह छह कल्याणक नही लिखे, अगर लिखे हो तो कोई बतलावे.–

१८ आगे मुनि श्रीयुतमणिसागरजीने किताब बृहत्पर्यूषणानिर्णय प्रस्तावनाके पृष्ठ (१२) मे लिखा है, शांतिविजयजीने जैनपत्रमे विनयविजयजीकी सुखबोधिकामे, कांतिविजयजी अमरविजयजीने जैनसिद्धात समाचारीमे, श्रीआत्मारामजी महाराजने जैनतत्वादर्शमे, धर्मसागरजीने कल्पकिरणावलीमें जो छह कल्याणिक निषेधसंबंधी शंका किई और अधुरे अधुरे पाठ बतलाकर भोलेजीवोकों उल्टे मार्गपर चढाये हैं.–

(जवाब.) शांतिविजयजीने या दुसरे महाशयोने जो जो बाते छह कल्यणकके बारेमे लिखी है, सब सच लिखी है, उसका खंडन आपलोगोसें नही बनसका, श्रीमान् अभयदेवसूरिजीने तीर्थंकर महावीरस्वामीके पाचकल्याणिक बयान किये, उसका जबाब आपलोग क्या देते हो? और दुसरी बात यह है, श्रीजिनवल्लभसूरिजीसे पेस्तरके बनेहुवे शास्त्रोमें छह कल्याणिक बतलासकते हो या नही? अगर बतलासकते हो तो बतलाइये, कोरीबातोसे काम नही चलेगा.–

१९ फिर श्रीयुतमणिसागरजी किताब बृहत्पर्यूषणानिर्णयके पृष्ठ (८) पर लिखते है, वर्तमान समयके अनुसार परंपरा रूढीको त्यागना और सत्यको ग्रहण करना सब सज्जनोंकों प्रिय है.–

(जवाब.) परंपरा और रुढीकों छोडना प्रिय है, तो आपलोग प्रतिक्रमणमें श्रीजिनदत्तसूरिजी और श्रीजिनकुशलसूरिजीका कायोत्सर्ग करतेहो, यह शास्त्रोक्त बात है या रुढी? अगर रुढी है तो पेस्तर इस रुढीकों छोडना चाहिये.–

२० आगे श्रीयुतमुनिमणिसागरजी किताब बृहत्पर्यूषणानिर्णय किताबके पृष्ठ (९) पर बयान करते है, मेने बंधइसे पर्यूषणानिर्णयके शास्त्रार्थकरनेसंबंधी विज्ञापन छपवाकर जाहिर किया था, उसपर श्रीयुत आनंदसागरजी और शांतिविजयजी आडी आडी बातें निकालकर चुप बेठ गये.

(जवाब.) चुपहोकर कौन बेठगये? इसबातको श्रीयुतमणिसागरजी खुद सोचे, मेने उसी अर्सेमे किताब पर्यूषणानिर्णय अधिकमासनिर्णय और अधिकमासदर्पण छपवाकर जाहिर किइ थी, उसका जवाब श्रीयुतमणिसागरजीने क्या दिया? तीसरी किताबमें मुकाम थाणेसे मेने जाहिर कियाथा, सभा किई जाय, वादी प्रतिवादी सभादक्ष दंडनायक और साक्षी उस सभामें बेठे, और अधिक महिनेके बारेमे चर्चा हो, उसवख्त चुप होकर कोन बेठ गये थे! श्रीयुतमणिसागरजी खुद सौच लेवे, श्रीयुतआनंदसागरजीनेभी सभा होनेकेलिये चेलेज दिया था, मगर किसीने सभा किई नही, यह बात सच है या नही? श्रीयुतमणिसागरजी इसबातकों सौच लेवे.–

२१ फिर मुनिश्रीयुत मणिसागरजी किताब, बृहत्पर्यूषणानिर्णयके पृष्ठ (१२) पर बयान करते है अधिक महिनेको निशीथचूर्णिआदिशास्त्रोंमें शिखारूप कालचूला कहा, और दिनोकी गिनतीमेभी लिया है,

(जवाब.) अगर अधिक महिनेकों गिनतीमें लिया है तो जब दो आषाढ महिने आवे तब पहले आषाढमें चौमासा क्यों नही बेठाते? और जब दो पौष महिने आवे तो तीर्थंकर पार्श्वनाथ महाराजका जन्म कल्याणिक किसमें मानतेहो? अगर दोनो पौषमे जन्म कल्याणिक मानतेहो तो जन्म कल्याणिक दो होजायगें, अगर एक पौषमहिनेमे जन्म करतेहो, तो एक पौषमहिना खुद आपलोगोंने छोडदिया, साबीत होगा, इसका माकुल जबाब दीजिये, अन्यमतके पंचांगकी रुसें जब दो चेत महिने आवे तब आपलोग नवपदजीका तप एक चैतमे करोगे या दोनोंमे? जब दो वैशाख आवे तब अखात्रीज एक वैशाखमें करेंगे या दोनोंमे? इसका जबावदीजिये!

२२ आगे मुनि श्रीयुतमणिसागरजी किताब बृहत्पर्यूषणानिर्णयके पृष्ठ (२७) में तेहरीर करते है, जब दो पौष महिने हो तो तीर्थंकर पार्श्वनाथजीका जन्म कल्याणिक चार पखवाडीयेमेसे दो पखवाडियेमें करना.

(जवाब.) फिरभी दो पक्षके तीसरोज तो कल्याणिकव्रतकी अपेक्षा छोडनेपडे. अब आपलोगोंका वो प्रमाण कहा चलागया कि– अधिक महिना गिनतीमे लेना, इसका जबाब श्रीयुतमुनिमणिसागरजी या दुसरा कोइ खरतरगछवाला देवे,–

२३ फिर मुनि श्रीयुतमणिसागरजी किताब बृहत्पर्यूषणा निर्णयके पृष्ठ (५७) पर बयान करते है, धर्मसागरजीकी अधपरावाले उनकी देखादेखी वर्तमानिक न्यायांभोनिधिजी, विद्यासागर न्यायरत्नजी–पंन्यासजी वगेरा सब ऐसे अनर्थ करतेहुवे चले जाते है,–

(जवाब.) अनर्थ करनेवाले उपर लिखेहुवे महाशय नही है, लेकिन! जिनवल्लभसूरिजीने छह कल्याणिककी प्ररूपणा करके अनर्थ किया है, अब अनर्थ करनेवाले कौन ठहरते है, लेखक खुद सोचलेवे, श्रीमान् अभयदेवसूरिजी खुद तीर्थंकर महावीरस्वामीके पाच कल्या-

णिक बयान करते है तो श्रीजिनवल्लभसूरिजी छह कल्याणिक किस आधारसे कहसकेगे? न्यायांभोनिधि और न्यायरत्नके लेखोंका जवाब देना सहज नही, कल्पसूत्रकी टीका सुखबोधिका हकीकतमे सुखबोधिकाही है, उसके लेखोंकों कोइ रद नही करसकते,–

२४ आगे मुनिश्रीयुतमणिसागरजी किताब बृहत्पर्यूपणानिर्णयके दुसरे भागकी पीठिका पृष्ठ (७३) मे तेहरीर करते है, न्यायरत्नशांतिविजयजीसंबधी थोडासा लिखता हुं. जिसमे तीनवर्स पहले दो भाद्रपद महिने होनेसे पर्यूपणापर्व प्रथम भाद्रपदमे करे या दुसरे? बंबइशहरमें इस विषयकी चर्चा जोरसे चलीथी, उसवख्त मेनेभी लघुपर्यूपणानिर्णयका प्रथम अंक नाम छोटीसी पुस्तक बनाकर जाहिर करवाई थी.–

(जवाब.) मेने उसके जवाबमें पर्यूपणपर्वनिर्णय और अधिकमासनिर्णय किताब दो बनाकर जाहिर किइथी जिसका माकुल जवाब आजतक किसीने नही दिया, शास्त्रार्थ करनेके लिये तीसरी किताब अधिकमासदर्पणमें सूचनाभी दिइथी. उसका जवाबभी नही मिला, में उस चौमासेमें व मुकाम पुनेमें था, पुनेसे आनकर बंबइके पास दादर मुकामपर करीब वीशरोज ठहरा, मगर किसीने शास्त्रार्थके लिये सभा नही किइ,

२५ फिर मुनिश्रीयुतमणिसागरजी बृहत्पर्यूपणानिर्णय किताबके पृष्ठ (७३) पर लिखते है, विज्ञापन नंबर सात, न्यायरत्न शांतिविजयजी! सावधान!! शास्त्रार्थके लिये जल्दी तयार हो,

(जवाब.) शांतिविजयजी शास्त्रार्थके लिये सावधान है और तयार है, शास्त्रार्थके लिये सभा करना दोनो पक्षोंके संघका काम है, क्योंकि अधिक महिनेकी चर्चा दोनोंको फायदेकी है, अकेले बेठकर चर्चा करना क्या फायदा? सभामे वादी प्रतिवादी सभादक्ष दंडनायक और साक्षी वगेरा वेठेहो जभी सबकों फायदा मिले, और दोनोंमेंसे कोइ पक्षवाला इनकार करसके नही,–

२६ आगे मुनि श्रीयुतमणिसागरजी किताब बृहत्पर्युषणा-निर्णयके पृष्ठ ( ८६ ) पर बयान करते है, अब हम खरतरगछसमीक्षाके विषयमें थोडासा लिखते हैं, न्यायरत्नजी खरतरगछसमीक्षा नाम किताब छपवानेसंबंधी वारवार जाहिरखबर लिखते है, यह किताब आज लगभग बारा तेरा वर्स हुवे उनोने बनाई है, जब हम संवत् ( १९६५ ) मे तीर्थ अतरिक्ष पार्श्वनाथजीकी जियारतको मुल्क बराडमें गये थे, व मुकाम बालापुरमे न्यायरत्नजी मीले थे, उसवख्त उस किताबकी नकल उनोने मेरेकों बताई थी, मेने उसवख्त महानिशीथ वगेराका प्रमाण मांगा था, तब न्यायरत्नजीने कहाथा, इसवख्त मेरेपास महानिशीथसूत्र मौजूद नही.–

( जवाब. ) कौन कहता है, महानिशीथसूत्र उसवख्त मेरेपास नहीथा, उसवख्त मजकुरसूत्र मौजूद था, और पाठभी बतलाया था, याद करो! मेंने उसवख्त जो जो पाठ बतलाये थे,–वे सब सच थे, मे जो खरतरगछसमीक्षा किताबकेलिये बारबार जाहिर खबर देता था वोभी सच थी, देखलो! खरतरगछसमीक्षा हिस्सा अवल इस जैनमतप्रभाकर किताबमे छपगया है, जिसकों आप लोग बांच रहे हो, इसपर कोई महाशय लिखाण करेगे तो उनके जवाबमे खरतरगछसमीक्षा हिस्सा दुसराभी तयार होजायगा, न्यायरत्नजी किसीके लेखका जवाब न देवे वैसा कभी नही समजना, देखलीजिये! आपके लेखोंका जबाब मिलता रहता है, या नही? न्यायरत्नके ज्ञानरूपी खजानेमे माकुलजवाबोंकी कमी नही, मे इसचर्चामें खरतरगछ तपगछके निकलनेसे पहलेके शास्त्रोंके सबुतोंकों पुख्ता समजता हुं, और उनकेही प्रमाण देता हुं.–

२७ फिर मुनि श्रीयुतमणिसागरजी अपने विज्ञापननंबर सातमे तेहरीर करते है, आपकी बनाईहुई पर्युषणापर्वनिर्णयकी किताब शास्त्रकारोंके अभिप्रायविरुद्ध जिनाज्ञा बहार और भोलेजीवोकों उन्मार्गमे लेजानेवाली है.–

(जवाब.) मेरी बनाई हुई किताब पर्यूषणापर्वनिर्णयमें कौनसी बात शास्त्रकारोंके अभिप्रायोंसे विरुद्ध थी? बतलाया क्यों नही! आपको मुनासिब था मेरी किताबका लिखाण पूर्वपक्षमें लेकर उत्तरपक्षमे जैनशास्त्रका पाठ देते, आपने ऐसा किया नही, और लिखदिया जिनाज्ञाविरुद्ध है. ऐसा कहनेसे क्या होसकता है? जबतक आप ऐसा करे नही तबतक मेरी किताबकों शास्त्रविरुद्ध कहना बेहत्तर नही, शांतिविजयजी किसीके लेखका जबाब न देवे और चुपकरके बेठरहे ऐसा कभी बनसके नही.—

२८ आगे मुनि श्रीयुतमणिसागरजी किताब बृहत्पर्यूषणानिर्णयके पृष्ठ (७३) पर लिखते है, आपने बंबईमें शास्त्रार्थ करनेका मंजुर किया था, फिर दुसरोंपर डालकर मौन क्योंकर बेठे?

(जवाब.) मौन कौन कर बेठे है? मेने शास्त्रार्थकेलिये वादी प्रतिवादी वगेरा शास्त्रके कायदेसें सभाकरनेका मंजुर करलिया था, और अबभी मंजुर हुं, में शहर पुनेका चातुर्मासकरके संवत् (१९७४)के पौषमहिनेमें दादर मुकामपर आया था, और शेठ हेमचंदजी अमरचंदजीके बंगलेमें ठहरा था, बंबई वालकेश्वरसे आपने एक आदमीके शाथ चीठी भेजी थी, उसमें लिखा था मेने आपका आना दादरमें सुना है, आप अधिक महिनेके बारेमें शास्त्रार्थ विना किये जाना नही.—

(जवाब.) मेने उस आदमीके शाथ कहलादिया में शास्त्रार्थके बारेमें ब-जरीये छापेके जवाब देना लेना मुनासिब समजताहुं, इसलिये आप ब-जरिये छापेके छपवाकर जो कुछ पुछना हो पुछे, फिर दुसरे रौज मुनि श्रीयुतमणिसागरजी दादर मुकामपर आये, रुबरु मिले और बातें हुई, सभा होनेके लिये में मुकाम दादरपर (२०) रौज ठहरा, दोनोपक्षकी सलाहसे सभा नही हुई, मुनि श्रीयुतमणिसागरजीने मेरेको रुबरुमे "अभिवड्ढीयंमि विसा," इसका अर्थ क्या करना पुछा था, मेने कहा था, शास्त्रार्थकेलिये जब सभा होगी उसवख्त खुलासा होजायगा.—

२९ फिर मुनि श्रीयुतमणिसागरजी किताब बृहत्पर्यूषणानिर्णयके पृष्ठ (७९) पर लिखते है, न्यायरत्नजी शांतिविजयजी हार गये.–

(जवाब.) खूब कहा, सभा हुई नही, शास्त्रार्थ हुवा नही, फिर हार गये कैसे कहते हो? इन्साफ कहता नही, आप चाहे सो कहे! इससे क्या हुवा? आगे मुनि श्रीयुतमणिसागरजी विज्ञापननंबर नवमे बयान करते है, शास्त्रार्थ आपका और मेरा है, इसमें बंबईके श्रावकसंघका क्या काम है? दुसरोंकों बीचमें लानेकी जरूरत नही, जवाबमे मालुम हो, शास्त्रार्थ करना और फिर श्रावकसंघकी जरूरत नही यह कैसे बनसके? श्रावकसंघकी मौजुदगी विना चर्चा करना क्या फायदा? इन्साफ कहता है, चर्चा जैनसंघके फायदेकी है, किसी एककेलिये नही, फिर श्रावकसंघकी जरूरत क्यों नही? अकेले बैठकर चर्चा किई तो श्रावकसंघको क्या फायदा हुवा? हार जीतका साक्षी कौन होगा? अगर श्रावकसंघकी जरूरत न माने तो विज्ञापनपत्र वगेराके लेख किनकों दिखलानेके लिये छपवाये जाते है? जाहिरचर्चाके विषयकी हस्ताक्षरसे लिखीहुई खास चीठियोंका जवाब देना में गेरइन्साफ समजताहुं, इसीलिये आपकी रजीष्टरी चीठियोंका जवाब मेने नही दिया था, बजरीये छापेके जो कुछ पुछा होता तो मेंभी उसीतरह छापेमे जवाब देता.–

३० आगे मुनि श्रीयुतमणिसागरजी विज्ञापननंबर (९) मे लिखते है, ताकात हो तो बंबईकी पुलीसचौकीमें शास्त्रार्थ करनेको आओ.–

(जवाब.) पुलीसचौकीमें शास्त्रार्थ करना श्रीयुतमुनिमणिसागरजी ठीक समजते होगें, मुजे तो बंबईके जैनसंघकी रुबरु धर्मस्थानमे शास्त्रार्थ करना मुनासिब दिखाइ देता है, मेरी बनाइ हुइ किताब पर्यूषणपर्वनिर्णय और अधिकमासनिर्णय छपे आज कइ महिने होगये, दोनो किताबोंके पृष्ठ (५६) है, इनके दरेक बया-

नका पुरेपुरा जवाव दीजिये, इनका जवाव नही देते इसकी क्या वजह है? एक दो विज्ञापनपत्र छपवा दिये, इससे मेरी किताबोंका जवाव नही होसकता, श्रीयुतमुनिमणिसागरजीके भेजेहुवे विज्ञापन-नंबर सात आठके जवाव मेने देदिये है,–

३१ बंबई वालकेश्वरमें जब आपकी और आपके गुरुजीके शाथ मेरी मुलाकात हुइ थी उसवख्त जो कुछ वाते हुइ थी, वो इसतरह है, में जब दादर मुकामसें वालकेश्वरके जैनमंदिरोंके दर्शनोंको आया था, उसवख्त बाबुजीके मंदिरपास आपका और आपके गुरुजीका मीलना हुवाथा, उसवख्त लोंकागछके यतिजी श्रीयुतमनसुखलालजी और श्रावक चुनीलालजी कालुनी साथमें थे, मेने आपको कहाथा मे पुनेसें इधर आया हुं और तीर्थ पानसर भोयनीकी जियारतकों चलाहुं, अधिक महिनेकी चर्चाके लिये अगर शास्त्रके कायदेसें सभा हो, तो में उसमें आनकर चर्चा करनेको तयार हुं, फिर जैनमुनिजनोंके वारेमेभी उत्सर्ग और अपवाद मार्गके संबंधमे वाते हुईथी, फिर मेरा आना दादर मुकामपर वापिस हुवा. और वीशरोजतक ठहरा, अधिक महिनेके वारेमे सभा होनेका कुछ संभव देखा नही, फिर मेरा जाना, मुल्क गुजरात तर्फ पानसर भोयनी तारंगाजी वगेरामे हुवा

३२ खरतरगछके पंन्यास श्रीयुतकेशरमुनिगणीजीके वनायेहुवे प्रश्नोत्तरविचार और प्रश्नोत्तरमंजरीके लेखोंके जवाब इसमें सब आगये है, और आगेकोंभी आते जायगें, अवलसे अखीरतक यह लेख पढनेसें मालुम होसकेगा, मेरे लेखमें माकुल जवाव आते है, उलट सुलट किसी जगहभी नही, आगे मुनि श्रीयुतमणिसागरजी किताव बृहत्पर्यूषणानिर्णयके पृष्ठ (८५) में तेहरीर करते है, सभा करनेका मंजुर किये विना व्यर्थ निष्प्रयोजन विषयांतरके वितंडावादवाले लंबेचोडे लेखोंका जवाव आजसे नही दिया जायगा,

(जवाब.) क्या! इतनेमें थक गये? दुसरेके लेखोंका जवाब देनेमें इनकार क्यौं करना? सभा करनेकी कोशिश करना, और जवाबभी देते रहना यह इन्साफ है, भूल किसकी है,? और पायछित लेना किसको मुनासिब है? सोचलो! न्यायरत्नजी सच बातका कभी निषेध नही करते और अर्थका अनर्थ नही करते, किसी जगह किया हो तो जाहिर कीजिये, महानिशीथ और दशवैकालिकसूत्रवृत्तिमें प्रथम करेमिभंते और पीछे इर्यावही करना नही फरमाया, मुनि श्रीयुत मणिसागरजीने पाठ क्यौं नही लिखा? अधुरे अधुरे पाठ किसने लिखे है? इस बातकी तलाश किइजाय, न्यायरत्नजी ऐसे लेखोंसें डरनेवाले नही, चाहे जितने लिखते रहो, जवाब मिलता रहेगा, व्याख्यानके वख्त जैनमुनिको मुखपर मुखवस्त्रिका बाधना किसी जैनशास्त्रमे नही लिखा और जैनमजहबकी साधवीजीकों मर्दोंकी सभामे व्याख्यान धर्मशास्त्रका देनाभी मना है, तीर्थंकर मल्लिनाथजीके समवसरणमें जब बारातरहकी वेठक श्रोताजनोंकी होती थी, तबभी आगे मर्द नही वेठतेथे, बल्कि! औरतें बेठतीथी, क्योंकी तीर्थंकर मल्लिनाथजी औरत थे, इस लेखमें कल्याणिकके लिये माकुल जवाब दिया गया है. जैनशास्त्रोंमे हरेक तीर्थंकरके पांच कल्याणिक होना फरमाये, छह कल्याणिक किसी जैनशास्त्रमे नही फरमाये, हरशख्शको लाजिम है अपने लेखमे अपशब्द न लावे, और इन्साफसे शास्त्र सबुतके शाथ लेख लिखे, लेख लिखना उसका नाम है जिसको पढकर प्रतिपक्षीभी तारीफ करे, जब सवत्(१९७५) का चौमासा मेरा ब-मुकाम थाणा मुल्क कोकनमे हुवाथा, उसवख्त खरतरगछके मुनि श्रीयुतमणिसागरजीके शाथ जो बजरीये छापेके सवाल जवाब हुवेथे, उनमेसें इस्तिहारनंबर दुसरेकी नकल यहा देताहुं, पढलीजिये, जो बंबई निर्णयसागर प्रेसमे छपा था,

[ श्रीजिनाय नमः ]

## इस्तिहार नंबर–दो,–

( खरतरगच्छके मुनि–मणिसागरजीके इस्तिहारनंबर दसका जवाब– और–शास्त्रार्थके लिये दुसरी दफे–जाहिर सूचना,– )

कलम पहेली,–आम जैनश्वेतांबरसमाजको मालुम होगा,–मेने– अधिक महिनेके बारेमे शास्त्रार्थकरनेके लिये पनरांह रोजकी मुदत देकर एक इस्तिहार छपवाया था, और शहर बंबइमें बांट दिया था, हिंदके बडे बडे शहरमें बजरीये डाकके रवाना करके मुस्तहेर करवा दिया था, और अखबारे 'जैन'में उसकी जाहिरातभी दे दिइथी, जिससे आम जैनश्वेतांबरसमाजको मालुम हो गया होगा, अधिकमासके बारेमें सभा हुइ नहीं, शास्त्रार्थ हुवा नहीं. फिर किसीकी हार जीतका कहना अकलमंदोंके नजदीक गेरमुमकीन है.

कलम दुसरी,–मेरा कयाम चौमासेभर थानेमें रहेगा, चुनाचे! दुसरे दो–शहरोंके श्रावकोंकी आर्जू थी, मगर मेने यहां थानेमेंही बारीश गुजारना मुकरर किया है, दुसरा सबब–थानेके जैनश्वेतांबरश्रावकोंका इरादा है कि–यहां जो थानेमें पुराना जैनतीर्थ जमाने श्रीपालजीके था, वो जमीनदोस्त हो गया, उसका फिर उद्धार कराना, इसलियेभी मेरा कयाम यहां रहेगा, जो जो सवाल तप- गच्छ–खरतरगच्छके बारेमें मेरे नजदीक पेश होंगे,–में–उनका माकुल जवाब देता रहुंगा,—

कलम तीसरी,–आगे खरतरगच्छके मुनि–मणिसागरजी अपने इस्तिहारनंबर दसमें बयान करते है, आप बंबइमें हरवख्त आते जाते है, फिर शास्त्रार्थके लिये खडे क्यों नही होते? जवाबमें मालुम हो–वादी–प्रतिवादी–सभादक्ष–दंडनायक और साक्षीके जरीये दोनों पक्षके संघकी सलाहसे अगर सभा होवे, और संघका मेरेपर बुलाना आवे तो मे शास्त्रार्थके लिये आनेकों खडा हुं, और यह बात मेने अवलके इस्तिहारमेंभी जाहिर कर दिइ है, फिर

शास्त्रार्थके लिये खडे क्यौं नही होते! एसा कहना किसीको लाजिम नही, मुताबिक मेरी सुचनाके अगर सभा किइ जाय ओर में-उसमे हाजिर-न-हु तो मुजे आप लोग कुछ कह सकते हो, यू तो चश्मोकी तलाशीके लिये डोकतरकी मुलाकात लेनेको ओर-जो-पुस्तक छपता है, उसके प्रुफ देखनेको मेरा आना बंबइमे होता रहेता है, मगर वो-काम करके शामकों वापीस थाने लोट आता हूं-

कलम चोथी-फिर खरतरगच्छके मुनि-मणिसागरजी अपने इस्तिहारनंबर दसमे तेहरीर करते है, सभा करनेका मजुर किये विना किसीके लंबे चोडे लेखका जबाब नही दिया जायगा-

(जबाब) यह लेख जाहिर करता है, जबाब देनेवाले अब जबाब देनेसे इनकार करते है, मैं-पुछता हु! इतनेहीसे क्यौं थक गये, खेर! अब नीचे लिखेहुवे सवालोंके जबाब अगर आप दे सके तो देवे, जिससे आपके ओर-मेरे दरमियानी बहेससे वाच-नेवालोंकोभी फायदा पहुंचे,-

कलम पांचमी, खरतरगच्छके मुनि मणिसागरजीसे दरयाफ्त किया जाता है, अगर आप अधिकमहिना गीनतीमें लेनेका पक्ष पकडते हो-तो-बतलाइये! आपलोग जब दो-आषाढ आते है, पहले आषाढकों चौमासीव्रत नियमके लिये गिनतीमें क्यौं नही लेते? इसका माकुल जबाब मुताबिक जैनशास्त्रके दीजिये! अगर कहा जाय, पहेला आषाढ गृष्म रुतुमें (यानी) गर्मीकी फसलमे चलागया-तो-जबावमे मालुम हो-उधर फाल्गुन चौमासा पांच महिनेका हो गया, दरअसल! चौमासा चार महिनेका होना चाहिये, इसका क्या जबाब देते हो.

कलम छठी, अगर कभी-दो-पौषमहिने आवे तब तीर्थंकर पार्श्वनाथजीका जन्मकल्याणिक एक पौषमे करते हो-या-दोनोमें? अगर एक पौषमें करते हो-तो-एक पौषको आप लोगोने गिनतीमेंसे क्यौं छोडा! इसका जबाब-मुताबिक जैनशास्त्रके दीजिये, अन्यमतके

पंचांगकी रुहसे जब दो-चैतमहिने आवे, तब आप लोग नवपदजीकी ओलीका तप एकचैतमें करते हो,-या दोनोंमें! अगर एकचैतमें करते हो,-तो-नवपदजीकी ओलीके तपकी अपेक्षा एक चैतको क्यौ छोडा! चैत्री पुनमकी सिद्धाचलकी यात्रा-और-तीर्थंकर महावीरजयंती एक चैतमें करोगे-या-दोनोंमें? अगर एक चैतमे करोगे-तो-आप लोगोने एक चैतको गिनतीमेंसे क्यौं छोडा! जब कभी दो-वैशाख महिने पेंश होवे, अखात्रीजका तहेवार एक वैशाखमें करते हो या-दोनोंमे? अगर एक वैशाखमे करते हो तो साबीत हुवा, एक वैशाखको आपलोगोंने गिनतीमेंसे छोडा! इसका जवाब मुताबिक जैनशास्त्रके पेंश कीजिये! आप लोग तो अधिक महिना गिनतीमें लेनेका पक्ष करते हो,-तो उपर लिखे मुजब आषाढ-पौष-चैत और वैशाख वगेरा महिने क्यों छोड देते हो? फिर पर्यूषणाके लिये पक्षपात क्यो! अगर कहा जाय, पचास दिनकी गिनती मिलानेके वास्ते पचासमें रौज संवत्सरी करते है,-तो फिर बाद संवत्सरीके सितेर दिन बाकी रखना कहा-उसकी गिनती कैसे मिलेगी! इधर उधर फिरकर तपगच्छवालोंकी सडकपर आना, और फिर कहना, हम अधिकमहिना गिनतीमें लेते है यह कौन इन्साफ हुवा?

कलम सातमी, अगर अधिकमहिना गिनतीमे लेना मानते हो, तो बतलाइये! गये वर्ष दो भादवे मानकर पांच महिनेका चौमासा क्यौं माना था! और चौमासी प्रतिक्रमण पांच महिनेके अतरेसे क्यौं किया था? अधिकमहिना गिनतीमें लेकर एक महिने पहलेही चौमासीप्रतिक्रमण कर लेना था, और चौमासा पुरा होगया मानकर विहारकर जाना था, सोचो? उसवख्त अधिकमहिना गिनतीमे लेनेका पक्ष कहां चला गया था! जैसा कहना वैसा बरताव करना चाहिये.-

कलम आठमी, हरेक महिनेके तीस दिन गिने जाते है, और उसी गिनतीपर धर्मक्रिया किइ जाती है, मगर किसी महिनेमे

तीस दिन आते है, किसीमे नहीं आते अन्यमतके पंचागकी रुसे कोइ पखवाडा सोलह दिनका आता है, और कभी कोइ पखवाडा चौदह दिनकाभी आता है, उसवख्त कमी वेंसी दिनको गिनतीमें क्यौं नहीं लेते? और पुरे पनरांह दिन मानकर पाक्षिक प्रतिक्रमण क्यौं कर लेते हो! एसे मुदेके जवाब देसको तो दो, जिससे पढनेवालोको भी फायदा मिले,—

कलम नवमी, फिर खरतरगच्छके मुनि मणिसागरजी अपने इस्तिहार नंबर दसमे तेहरीर करते है, यह विवाद साधुओंका है, (जवाब) अकेले साधुओंका नही, बल्कि! सब जैनसमाजका है, और यह चर्चा सब जैनसंघके फायदेकी है, इसीलिये कहा जाता है–सभा करना, सब जैनसंघका काम है, कोइ अकेला कहे कि–मे सभा करुं तो यह बात नहीं हो सकती, जब गये वर्ष पोष महिनेमें मेरी और मुनि मणिसागरजीकी मुलाकात दादरमे हुइ थी,–दुसरी दफे वालकेश्वरमें भी मीले थे, मेने वही बात कही थी,–जो उपर लिख चुका हूं,—

कलम दसमी, मेने जो खरतरगच्छसमीक्षा किताब बनाई है, उसकी जाहिर खबर अधिकमासनिर्णय किताबमें छपीहुइ है, आपने पढी होगी, उसमें खरतरगच्छवालोकी तर्फसे बनीहुइ किताब प्रश्नोत्तरविचार–हर्षहृदयदर्पण–और प्रश्नोत्तरमंजरीका जवाब दर्जकर दिया है! आप जो बृहत्पर्यूषणानिर्णयग्रथ बनाते थे, उसका क्या हुवा? कइ वर्स हो गये अबतक जाहिर क्यौं नही किया! जब आपका मजकुरग्रंथ जाहिर होगा, फोरन? मेरा बनाया हुवा, खरतरगच्छसमीक्षा छपकर जाहिर हो जायगा, आप ऐसा हर्गिज–न–समजे तपगच्छके मंतव्यपर कोइ आक्षेप करे और शांतिविजयजी उसका जबाब–न–देवे—

कलम ग्यारहमी–आप मेरी दोनों किताबोंकी एक भी भूल बतला सके नही, चारा तेरा भूले बतलाना तो दुररहा,. आपके

विज्ञापन नंबर सातमेंका जवाब मेरी तीसरी किताबमे छप रहाहै, मेरी दोनों किताबोंके दरेक बयानका पुरा जवाब आप देते नहि, सभामें देयगे ऐसा कहकर बातको लंबाते हो, मगर इन्साफ कहता है, जवाबभी दिजिये, और सभा होवे जब शास्त्रार्थ भी किजीये; सभा होगी तब जवाब देयगे, ऐसा कहकर जबाब-न-देना ठीक नही,—

कलम बारहमी-फिर खरतरगच्छके मुनि मणिसागरजी अपने इस्तिहार नंबर दसमे इस मजमूनको पेश करते है, कि-आपकी दोनों किताबोंमें जैसी उत्सूत्रता भरीहुइ है, वैसी तीसरी किताबमे भी भरी होगी—

(जवाब) कुछ शास्त्र सबुत दे सकते हो-या-कोरी बाते ही बातें है! शास्त्र सबुत देना नही, और दुसरेके लेखको कहदेना उत्सूत्र प्ररूपणा है; यह कौन अकलमंद मंजुर करेगा? इन्साफ कहता है, शास्त्र सबुत देकर जबाब दिया करो—

कलम तेहरमी-अब-मे-यहां थानेमे चौमासेतक मुकीम हूं, बा-कायदा सभाके जरीये शास्त्रार्थ करना-या-ब-जरीये छापेके सवाल-जवाब करते रहना दोनोंमेसें किसीतरह मेरा इनकार नही, चाहे जिसतरह पेश आइ ये,—

| | |
|---|---|
| शाह छोटालाल पीतांबरदास,<br>साकीन-भावनगर,<br>हालमुकाम बंबइ. | मुकाम थाणा-(मुल्क-कोंकन).<br>ब-कलम-जैनश्वेतांबरधर्मोपदेष्टा विद्यासागर<br>न्यायरत्न-मुनि-शांतिविजयजी,- |

३३ आगे श्रीयुत मुनि मणिसागरजी किताब बृहत्पर्यूपणानिर्णयके दुसरे खंडमें लिखते हैं, जैनपंचाग न होनेसें ऐसा करना पडता है. (जवाब.) जैनपंचांग बनायाजाय वैसी कोशिश करो, और ऐसी कोशिश करना सब जैनोंका फर्ज है. फिर श्रीयुत मुनि मणिसागरजी किताब बृहत्पर्यूपणानिर्णयके पृष्ठ (६६) पर बयान करते है, तपगछके उपाध्याय श्रीयुत धर्मसागरजीने-कल्पकिर-

णावलीमें दुसरे श्रीयुत जयविजयजीने कल्पदीपिकामे और तीसरे श्रीयुत उपाध्याय विनयविजयजीने सुखबोधिकामें चौथे न्यायांभोनिधिजी श्रीआत्मारामजीमहाराजने जैनसिद्वांत समाचारी पुस्तकमे पाचमे न्यायरत्नजी शांतिविजयजीने मानवधर्मसंहितापुस्तकमें अपनी इच्छानुसार पूर्वाचार्योंसे विरुद्ध होकर खरतरगछवालोंपर तरहतरहके आक्षेप किये है,-

(जवाब,) उपर लिखेहुवे महाशयोंने सचबात लिखी है, पेस्तर जब श्रीजिनवल्लभसूरिजीने तीर्थंकर महावीरस्वामीके छह कल्याणिककी प्ररूपणा किइ तो उनके जवाबमे उपाध्याय श्रीधर्मसागरजी महाराजको कल्पसूत्रकी टीका कल्पकिरणावलीमे छह कल्याणिककी चर्चा लिखनी पडी. कल्पदीपिकामे महाराजश्री जयविजयजीको और सुखबोधिका नामकी टीकामें उपाध्याय श्रीविनयविजयजी महाराजकोभी छह कल्याणिकके बारेमें चर्चा लिखनी पडी, इसीतरह न्यायांभोनिधि महाराज श्रीविजयानंदसूरिजीको जैनसिद्धांत समाचारीमे और न्यायरत्नजीको किताब मानवधर्मसंहितामे इसबिषयपर लेख लिखना फर्ज हुवा, खरतरगछवाले कहते है, अधिक महिना गिनतीमें लेना, तपगछवाले कहते है, वार्षिक चातुर्मासिक और कल्याणिक व्रतनियमकी अपेक्षा अधिक मासकों गिनतीमे नही लेना. खरतरगछवालेभी जब दो आषाढ महिने आते है तो एक आषाढको गिनतीमे नही लेते, चौमासा दुसरे आषाढमें बेठाते है, चौमासेमे अन्यमतके पंचागकी रुसें जब अधिक महिना आता है तब खरतरगछवाले पचासमे रोज संवत्सरी करके पीछे (१००) दिन बाकी रखते है, उसवख्तभी अधिक महिना चातुर्मासिक व्रतनियमकी अपेक्षा गिनतीमे नही लेते, अधिक महिनेमे तीर्थंकर देवोंके कल्याणिकभी दो दफे नही करते, फिर अधिक महिना गिनतीमे लिया कहा सबुत हुवा,? अभिवर्द्धित संवत्सर (१३) महिनेका होता है यह सबकोइ जानते है, मगर

वार्षिक चातुर्मासिक और कल्याणिक व्रत नियमकी अपेक्षा गिनतीमें लेना किस जैनागमका फरमान है इसका जवाब श्रीयुत मुनि मणिसागरजी देवे, खरतरगछवाले चौमासा वेठनेके वाद पचासमें रोज संवत्सरी पर्व करते है, मगर वाद संवत्सरीके जो (१००) दिन वाकी रहजाते हैं, इसपर खयाल नही करते, जैनागम समवायांगसूत्र फरमाता है, संवत्सरी पर्व किये वाद (७०) दिन वाकी रखना, अगर अधिकमहिना वार्षिक चातुर्मासिक व्रतनियमकी अपेक्षा गिनतीमें न लेवे तो कल्पसूत्र और समवायांगसूत्रके मुजव वरताव किया सवुत होसकता है, एक शास्त्रके पाठकों मानना, और एक शास्त्रके पाठको न मानना ठीक नही, जैनशास्त्रोंमें जैन मुनिकों नवकल्पिविहार करना फरमाया, मगर जव अधिक महिना आजाय तो दशकल्पिविहार करना नही फरमाया.—

३४ फिर मुनि श्रीयुतमणिसागरजी किताव बृहत्पर्यूपणानिर्णयके खंड दुसरे पृष्ठ (२११) पर लिखते है, न्यायरत्नके नामसे विशेष समीक्षा करनेमें आयगी, (जवाव) चाहे जितनी समीक्षा कीजिये, न्यायरत्न उसपरभी समीक्षा करनेको तयार है, मेने जो किताव मानवधर्मसंहितामें लिखा था अधिकमास कालपुरुषकी चोटी होनेसे गिनतीमें लेना नही, जैसे किसी पुरुषका शरीर उंचाइमें मापा जाय तो चोटीकी लवाई उसमें नही गिनीजाती, इसीतरह कालपुरुषकी चोटी जो अधिकमास कहा वो गिनतीमें नही लिया जाता वहुत ठीक वात है, दो श्रावण हो तोभी क्या हुवा? एक श्रावणको पर्यूपणपर्वके व्रतनियमकी अपेक्षा गिनतीमें नही लेना, इसमे गलत क्या लिखा है, जैनशास्त्रोंमें मेरुपर्वतकी लाखयोजन उंचाई लिखी, मगर एकलाख और (४०) योजनकी नही लिखी, क्यों कि—चूलिका यानी चोटी गिनतीमें नही, आगे मेने जो लिखा है वर्सभरमें तीनचातुर्मासिक प्रतिक्रमण किये जाते है, अगर अधिक महिना चातुर्मासिकव्रत नियमकी अपेक्षा गिनतीमें लेवे तो पंचमा-

सिक प्रतिक्रमणपाठ बोलना पडेगा, और जैनशास्त्रोंमे ऐसा बोलना लिखा नही, सोलह दिनका पखवाडा हो या चौदहदिनका हो तोभी पनरांही दिनका पखवाडा बोला जाता है, इसीतरह अधिकमहिनेके बारेमेंभी समज लीजिये, शांतिविजयजी जो कुछ लिखते है, सौच समजकरही लिखते है.–

३५ आगे मुनि श्रीयुतमणिसागरजी किताब बृहत्पर्यूषणानिर्णय खंड दुसरेके पृष्ठ (३१९) से आगे (३२८) तक जो श्रीमान् न्यायांभोनिधि विजयानंदसूरि अपर नाम आत्मारामजी महाराजके बारेमे श्रीयुत मणिसागरजीने जो उत्सूत्रभाषण बतलाये है, और उनका खंडन करनेकी इच्छा जाहिर किई है, (जवाबमे मालुम हो.) शौखसे खडन करे में उनका जवाब दुंगा, अपने गुरुजीके कोई शख्श विरुद्ध लेख लिखे उसका जवाब शांतिविजयजी न देवे ऐसा कभी न होगा, शांतिविजयजीके दफतरमें माकुल जवाबोंकी कमी नही है.–

३६ अधिक महिनेमें दीक्षा प्रतिष्ठा और दुनियादारीके विवाह वगेरा अछेकाम नही किये जाते तो फिर पर्यूषणपर्व जैसे उमदा पर्व कैसे किये जाय? इसबातको सौच लीजिये, अगर कोई कहे तपगछके उपाध्याय श्रीधर्मसागरजी मिथ्यात्वके सार्थवाह थे, जवाबमें मालुम हो, उपाध्याय श्रीधर्मसागरजी सम्यक्तके सचे सार्थवाह थे, पक्षपातसे चाहे सो कोई कहे इससे क्या हुवा? तीर्थंकर देवोंकोंभी कई लोग इंद्रजालीक कहते थे, सौचो! इससें तीर्थंकर देवोंका क्या नुकशान था? श्रीयुत मुनिमणिसागरजीने अपनी किताबमें तपगछके जैनाचार्य जैनउपाध्याय और साधुवगेराको सख्त लब्ज लिखे यह मुनासिब नही था, इन्साफसे शास्त्रसबुतोंके शाथ प्रतिवादीके लेखका जवाब देना वादीका काम है, मेने इस लेखमे किसीको अपशब्द नही लिखा, इन्साफसे शास्त्रसबुतोंके शाथ माकुल जवाब दिया है, इसपर कोई महाशय कुछ लिखाण करेगे, में उनका माकुल जवाब देता रहुंगा, बयान खरतरगछ समीक्षाका खतम हुवा.–

## [ बयान-मजहब-स्थानकवासी ]

१ जैनमजहबमें जिनमंदिर और जिनमूर्त्तिका मानना कदीमसें चलाआया, भरतराजाजीने तीर्थ अष्टापदपर चौईस तीर्थकरोंके जिनमंदिर बनवाये, और जमाने तीर्थंकर महावीरस्वामीके गौतमगणधर उनकी जियारतकों गये, जैनमजहबमें मूर्त्तिका मानना मना होता तो ऐसा पाठ क्यों होता? तीर्थ शत्रुंजय गिरनार समेतशिखर केशरीयाजी और अंतरिक्षजी वगेरामें पुरानी जैनमूर्त्तियें मौजूद है, तीर्थंकर महावीरनिर्वाणके (२९०) वर्स पीछे एक संप्रतिनामका राजा कामील एतकात हुवा. जिसके तामीर करवाये हुवे जैनमंदिर हिंदमें कइजगह अबतक मौजूद है, शेठ विमलशाह और दिवान वस्तुपाल तेजपालके बनवाये हुवे जैनमंदिर आबुपहाडपर अबतक कायम है, राजा कुमारपालका बनवाया हुवा जैनमंदिर तीर्थतारगाजीपर किसकदर मजबूत और पायबंद बना है, जिसकी तारीफ बेमिशाल है.-

२ स्थानकवासी मजहब लोंकागछके यतिजी बजरंगजीके शिष्य श्रीयुत लवजीस्वामीने संवत् ( १७११ ) के अर्सेमें निकाला, और मुखपर मुखवस्त्रिका बांधना शुरु किया, जिनमूर्त्तिको मानना मना फरमाया, जमाने हालमे जो पैंतालीस जैनआगम मौजूद है उनमेसे (३२) जैनागम मानने लगे, लवजीस्वामीके शिष्य सोमजीस्वामी हुवे, सोमजीस्वामीके शिष्य धर्मदासजी हुवे, धर्मदासजीके चेले धनाजी और धनाजीके शिष्य भुदरजी हुवे, इसतरह शाखा प्रतिशाखा चलने लगी, भगवतीसूत्रके मूलपाठमें लिखा है जंघाचारण मुनि रुचकद्वीप नंदीश्वरद्वीप वगेराके जैनमंदिरोकों वंदन करने जावे, आवश्यकसूत्रकी निर्युक्तिमे बयान है भरतचक्रवर्त्तीने अष्टापद पर्वतपर जैनमंदिर बनवाये और उनमें चौइसमूर्त्ति तीर्थंकरोंकी तख्तनशीन किई, जैसा उनका रूपरंग था, भगवतीसूत्रमें लिखा है निर्युक्तिको मानना चाहिये, सूत्रकृतांगके दुसरे श्रुतस्कंधकी निर्युक्तिमें लिखा

है, आर्द्रकुमारने जिनमूर्त्तिको देखकर प्रतिबोध पाया, उवाईसूत्रमें तीर्थंकर महावीरस्वामीके रुबरु अंबडजी श्रावकने अरिहंतकी मूर्त्तिको वंदना नमस्कार करना कुबुल किया, आनंदश्रावकके पाठसे साफ जाहिर है वो तीर्थंकर महावीरके सामने गया और उसनेभी यही नियम इख्तियार किया जो उपर लिखा गया है.-

[ उवाइसूत्रका पाठ अंबडश्रावकके बारमे ]

अंबडस्सणं परिवायस्स नोकप्पइ अन्नउत्थियएवा अन्नउत्थियदेवयाइंवा अन्नउत्थिय परिग्गहियाइ अरिहंत चेइआइंवा-वंदित्तएवा-नमंसित्तएवा-नन्नथ्थ अरिहंते वा अरिहंत चेइयाणिवा,-

[ उपासकदशांगसूत्रका पाठ, आनंदश्रावकके बारमें ]

नो-खलु-मे-भंते ! कप्पइ अज्जपभिइंचणं अन्नउत्थिय वा-अन्नउत्थियदेवयाणिवा-अन्नउत्थिए परिग्गहियाइंवा -अरिहंतचेइयाइंवा-वंदितएवा नमंसितएवा--

२ असुरकुमार देवता जब उपरके स्वर्गको जाता है, तो अरिहंत अरिहंतकी मूर्त्ति और भावित आत्मा अणगार इन तीनोमेसे किसीकाभी आश्रयलेकर जा सकता है, वैसा भगवतीसूत्रमे पाठ है, वो पाठ इसतरह है.-

[ सूत्रभगवतीका पाठ. ]

नन्नथ्थ-अरिहंते वा- अरिहंत चेइयाणि वा-भावीअप्पणो अणगारस्स वा-णिस्साए-उढं-उप्पयंति-जाव सोहम्मो कप्पो,

महानिशीथसूत्रके मूलपाठमें बयान है, जिनमंदिर बनानेवाला श्रावक बारहमे देवलोकतक जावे, उसका पाठ इसतरह है.-

( महानिशीथसूत्रका मूलपाठ, )

काउंपि जिणायणेहिं-मंडिया सव्वमेयणिवटं,
दाणाइ चउक्कयेणं-सढोगच्छेज्जञ्चुयं जाव, १

देख लो! इसपाठमें साफ लिखा है, जिनमंदिर बनवानेवाला श्रावक बारहमें देवलोकतक गतिकों पावे, अगर कोई इस दलिलकों पेंशकरे महानिशीथसूत्र बत्तीससूत्रमें नही इसलिये इसकों हम नही मानते, (जबाब.) अवल तो बत्तीससूत्रही मानना ऐसा कोई जैन-शास्त्र नहीं फरमाता, इतनेपरभी बत्तीससूत्रकाही इकरार है, तो बत्तीससूत्रमें नंदीसूत्र माना गया है, उस नंदीसूत्रमें महानिशीथ-सूत्रकी साक्षी दिई है, इसलिये महानिशीथसूत्रका माननाभी जाईज हुवा, और जिनमंदिर जिनमूर्त्तिका मानना मुताबिक जैनशास्त्रके साबीत हुवा.–

४ अगर कहाजाय जिनमंदिर बनवानेमें पृथवी पानी वगेराजी-वोंकी विराधना होगी इसलिये पाप लगेगा, तो बतलाना चाहिये, स्थानक बनानेमें पुन्य है या पाप? अगर कहाजाय इरादा धर्मका है, इसलिये पुन्य है पाप नही तो इसीतरह जिनमंदिर बनवानेमेंभी इरादा धर्मका है, पुन्य क्यौं नही? अगर कोई जैनमुनि किसी शख्शकों दीक्षा देवे और उसवख्त कोई श्रावक उस दीक्षाका जलसा करे उसमें पुन्य होगा या पाप? दीक्षाका जलसा करना इरादे धर्मके है, इसलिये उसमें पुन्य है, अगर पाप हो तो श्रावक दीक्षाका जलसा क्यौं करे? जैसे दीक्षाके जलसेमें पुन्य है वैसे रथ-यात्रा वगेराके जलसेंभी पुन्य है, सबब दोनोंका इरादा धर्मका है, कुछ जैनशास्त्रका फरमान है जहां मनःपरिणाम शुभ हो वहां भाव-हिंसा नही, और विना भावहिंसाके पाप नहीं, किसी जैनमुनिको कोई श्रावक अपने शहरमें या दुसरे शहरमें वंदन करनेकों जावे तो उसमें पुन्य होगा या पाप? इरादा शुभ होनेसे पुन्य होगा, पाप नही, इसीतरह शत्रुंजयजी गिरनारजी समेतशिखरजी वगेरा ती-र्थोंकी जियारत जानेवालोकोंभी इरादा शुभ होनेसे पुन्य होगा.–

५ अगर कोई इसदलिलकों पेंशकरे मूर्त्तिपूजा अछी चीज है तो जैनमुनि खुद क्यौं नही करते? (जबाब.) जैनमुनि भावपूजा करते

है, गणधर गौतमस्वामी तीर्थअष्टापदजीकी जियारतकों गये यह भावपूजा नही तो और क्या है? जैनमुनि सचित्त वस्तुके त्यागी है, इसलिये द्रव्यपूजा नही करते, अगर कोई इस मजमूनको पेंश करे, पूजामे फल ज्यादा या सामायिक करनेमे फल ज्यादा? (जवाब.) जिसमे जिसकी भावशुद्धि ज्यादा हो, उसमे फल ज्यादा जानना, जैसे उनके मनःपरिणाम हो वैसा फल होगा, अगर कोई बयान करे मूर्त्ति देखकर किसने प्रतिबोध पाया? (जवाब) एक आर्द्रकुमारने जिनमूर्त्ति देखकर प्रतिबोध पाया है.–

६ आचारांगसूत्रमे बयान है, अगर कोई जैनमुनि मुल्कोंकी सफर करतेवख्त किसी गहेरे खाडेमें गिरपडे तो घास लता वेलडी या द्रख्तकी शाखा पकडकर उपर आजावे, खयाल कीजिये! इसमे वनास्पतिकायके जीवोंकी हिंसा होगी या नही? अगर कहाजाय होगी तो जैनमुनियोंकों तीर्थंकर गणधरोंने वनास्पतिको पकडकर उपर आना क्यौ फरमाया? इसमें इरादा धर्मका होनेसे पाप नही, फिर इसी आचारांगसूत्रमें लिखा है, जैनमुनिको एकगांवसे दुसरे गांव जाते रास्तेमे अगर कोई नदी आजाय तो एगं पायं जले किच्चा, एगं पायं थले किच्चा, इसीतरह एक पांव पानीमें एक पांव उपर करते हुवे नदीके पार जावे, यहांपरभी इरादा धर्मका होनेसें पाप नही, अगर पाप होता तो तीर्थंकर गणधर जैनमुनिकों नदी उतरनेका हुकम क्यौ देते? फिर स्थानांगसूत्रमें लिखा है, जैनधर्मकी कोई साधवीजी नदीके पूरमे खिचातीहुई चलीजाती हो और उसवख्त अगर कोई जैनमुनि नदीके कनारेपर हाजिर हो तो उस साधवीजीकों बहार निकाले, अगर न निकाले तो शास्त्रके हुकम अदुलीका गुनाह है, खयालकरनेकी जगह है साधवीजीके शरीरका स्पर्श करना क्या! मुनासिब था? मगर इरादे धर्मके मुनासिब हुवा, सब बात मनःपरिणामपर है.–

७ जैनमुनि विहार करते है, भिक्षाकों जाते है, अपने कपडोंकी

प्रतिलेखना करते है, इन कामोंमें वायुकायके जीवोंकी हिंसा होती है, बतलाईये! इस हिंसाका जैनमुनिकों पाप लगा या नही? अगर कहाजाय वायुकायकी हिंसाका पाप लगा तो दीक्षा लेकर एकजगह चुपचाप बेठेरहना चाहिये, चलना फिरना क्रियाकरना क्या! जरुरत? अगर कहाजाय इरादे धर्मके भावहिंसा नही, तो फिर यही दलिल मंदिर मूर्त्ति और तीर्थयात्राके लिये क्यों न समजी जाय, अगर कहाजाय जिनप्रतिमामें जिनेंद्रके चोतीश अतिशय और पेतीस वाणी वगेराके गुण न होनेसे वंदनपूजनकरनेके काबिल नही, (जवाब.) कागज स्याहीके बनेहुवे आचारांग वगेरा पुस्तकोमें जिनवाणीके पेतीसगुणोमेंसे कौनसा गुण है? खयाल करो! जैसे कागजस्याहीके बनेहुवे पुस्तक जड है, वैसे पथर या धातुकी बनीहुई मूर्तिभी जड है, जैसे मूर्त्तिमें जिनेंद्रोंके गुण नही, वैसे धर्मशास्त्रोंमें वाणीके गुण नही, जब मूर्त्ति मानना छोड दी तो धर्मपुस्तक माननाभी छोडदेना चाहिये, क्यों कि-गुणविना आकार आपलोगोंके खयालसे वंदन पूजनके काबिल नही, अगर कहाजाय धर्मशास्त्रके वांचनेसे ज्ञान पैदा होता है, तो जवाबमें मालुम हो मूर्त्तिके देखनेसेंभी ज्ञान पैदा होता है.-

८ अगर कोई इसदलिलकों पेंश करे जिनेंद्रदेव अमोल थे तो उनकी मूर्त्ति मूल्य देकर क्यौं वेंची जाती है? (जवाब.) जिनवाणी अमूल्य है, तो फिर जिनवाणीके पुस्तक मूल्यसे क्यौ वेचे जाते है? अगर कोई स्थानकवासी मजहबवाले इस सवालकों पेंशकरे जिन-मूर्त्ति जड है, या चेतन? सूक्ष्म है या वादर? जिनमूर्त्तिमे गुणस्थान कितने पाईये? (जवाब.) धर्मशास्त्र जड है या चेतन? सूक्ष्म है या वादर? उसमें गुणस्थानक कितने पाईये? इसका जवाब दीजिये! अगर कोई इस सवालको पेंशकरे स्वधर्मिवात्सल्य करनेमें रसोई बनातेवख्त पानी वनास्पति और अग्निके जीवोंकी हिंसा होगी इसलिये पाप होगा, (जवाब.) किसी श्रावकने दुसरे श्राव-

कको अपनेघर बुलवाकर उसके उपवासतपका पारना करवाया? उसकेलिये रसोई बनानेमें पानी वगेरा जीवोकी हिंसा हुई, बतलाइये! इसका पाप किसकों लगा? अगर कहाजाय इरादा धर्मकी पुख्तगीकेलिये था, इसलिये पाप नही लगा तो इसीतरह स्वधर्मिवात्सल्य करनेमेंभी इरादा धर्मका होनेसें पाप नही, ऐसा मानना कौन हर्ज है,?—

९ दो शख्श एक रास्तेसे चलेजाते थे, उसरास्तेमे बहुतसे कीडे मकोडे फिरते थे, दोंनोमेंसें एक शख्श जीवको बचानेके इरादेसे देखता हुवा चलता था, दुसरा शख्श वगेर देखे बेरहेम होकर चलता था, कुदरतसे ननाव ऐसा बनगया देखकर चलनेवालेके पावनीचे एक कीडा दबकर मरगया, वगेरदेखे चलनेवाले शख्शके पावसे एकभी कीडा नही मरा, बतलाईये! इनदोंनोंमें पापी और पुन्यवान कौन? दरअसल! दोनोंमे देखकर चलनेवाला पुन्यवान् था, ऐसा समजना, क्यौ कि—उसके दिलका इरादा जीवबचानेका था.—

[ दशवैकालिकसूत्रके चतुर्थ अध्ययनमें पाठ है. ]

जयं चरे जयं चिठ्ठे जयं आसे जयं सये,<br>
जयं भुंजंतो भासंतो पावकम्मं न बंद्धइ.

देखिये! इसपाठमें क्या लिखा है? इसमे साफ लिखा हैं, हरेक काम—यतनासें कियाजाय तो पाप न बंधे, यतनासे चले और उसके पावसे कोईभी सूक्ष्मजीव मरे तो उसका इरादा जीवबचानेका है, इसलिये उसकों पाप नही लगता.—

१० कोई स्थानकवासी श्रावक अपने मजहबके जैनमुनिको वंदन करने जाय तो यह गुरुयात्रा हुइ, जब गुरुयात्रामें पुन्य मानते हो तो फिर देवयात्रामे पुन्य क्यौं नही,? जैसे देवलोकके चित्र, नरकके चित्र, जंबूद्वीप वगेराके नकशे देखकर उन चीजोंका ज्ञान होता है वैसे मूर्त्तिदेखकर उसदेवका ज्ञान क्यौं न होगा? बल्कि! जरुर होगा, खास! तीर्थंकरोंके समवसरणमे पूर्व दिशाके

सामने खुद तीर्थंकरदेव तख्तनशीन होतेथे, और तीनदिशामे तीर्थंकर देवकी मूर्त्ति बनाकर देवता जायेनशीन करतेथे, सबुत हुवा खास तीर्थंकर देवोंकी हयातीमेंभी देवताओंकी बनाइहुइ जिनमूर्त्ति मानी जाती थी, फिर जिनमूर्त्ति माननेमें इनकार क्यों! जिनमूर्त्तिकी पूजा करना श्रावकोंका कर्तव्य है, और जैनशास्त्रोंमे लिखा है, जैनमुनि अगर इस बातका उपदेश देवे तो क्या हर्ज है? धर्मका रास्ता बतलाना मुनिका फर्ज है,–

११ हरहमेश जैनमुनिको मुखपर मुखवस्त्रिका बांधना किसी जैनशास्त्रमें नही लिखा, जैनागमविपाकसूत्रमें जो मृगापुत्रका अधिकार चला है, जब उसके घर गणधर गौतमस्वामी गयेथे उस वख्त ब–सबब बदबूआनेके मुख और नाशिकापर कपडा बांधना पडा, अगर पहलेसे मुहपर मुखवस्त्रिका बंधीहुइ होती तो फिर मुख बांधनेकी क्या जरुरत थी? जैनागम ओघनिर्युक्तिमे साफ बयान है जैनमुनि बोलते वख्त मुखवस्त्रिका मुखके सामने रखे, आजकल कइ संवेगी साधुभी व्याख्यान वांचते वख्त मुखपर मुखवस्त्रिका बांधनेका पक्ष करते है, और कहते है, शास्त्रकी आशातना वगेरा दोष मिटानेकेलिये कानमे लगाकर बांधना चाहिये, (जवाब.) जो बात किसी जैनागममे नही लिखी, टीकाभाष्यनिर्युक्ति चूर्णि वगेरामेभी जिस बातका सबुत नही. फिर किस सबुतसे कोइ मंजुर रखेगें? शास्त्रकी आशातनाका सहारा लियाजाय तो व्याख्यानके वख्तकाही क्या! सबब रहा? जबजब शास्त्र वांचना तबतब बांधना चाहिये, मगर इतना नही सौचते तीर्थंकर गणधरोंने जिस बातका हुकम नही दिया उस बातको चलाना कितना गुनाह है, परपरा रूढी और आचरणाका सहारा लेना गलत है, तमाम जैनोंको तीर्थंकर गणधरोंके फरमानपर अमल करना चाहिये, आचारांगसूत्रके दुसरे श्रुतस्कंधके दुसरे अध्ययनमे तेहरीर है, श्वासोच्छ्वास लेते वख्त, खांसी आतेव्ख्त, छींक लेतेवख्त और उबांसी आतेवख्त

जैन मुनि अपने मुखकों अपने हाथसे ढांके, सोचो! अगर मुखपर मुखवस्त्रिका बांधनेका हुकम होता तो हाथसे मुख ढांकनेका क्यों! बताते? मूर्त्तिके बारेमें पांडवचरितमे बयान है, एक भीलने द्रोणाचार्यजीकी मूर्त्तिबनाकर उस मूर्त्तिकों गुरुसमान मानी. और उससे धनुर्विद्याका इल्म हासिल किया, देखलो! ब दौलत उस मूर्त्तिके उस भीलकों कितना फायदा हुवा? इसतरह कोई शख्श जिनेंद्रकी मूर्त्तिकों जिनेंद्रसमान माने और उसके सामने स्तुति या भक्ति करे तो उसकों धर्मका फायदा क्यों न होगा?—

१२ अगर बत्तीससूत्रही मंजुर रखे जाय तो बतलाना होगा तीर्थंकर महावीरके सताइस भवोका बयान किस सूत्रमे है? पर्यूषण-पर्वके तेहवारका बयान बत्तीससूत्रमें नही. फिर पर्यूषणपर्व मानना कैसे मंजुर रखागया, चंद्रगुप्तराजाने सोलह स्वप्न देखे, सीमंधर स्वामी वगेरा वीशविहरमान तीर्थंकरोंका बयान किस सूत्रमे लिखा है? तीर्थंकर रिषभदेव भगवानने धंनासार्थवाहके भवमें जैन-मुनिको घृतका दान दिया, बत्तीससूत्रमें किस जगह लिखा है? तीर्थंकर नेमनाथजीके नवभव और उनके शाथ राजीमतीका संबंध बत्तीससूत्रमे किसजगह पाठ है? सोलह सतीयोंके नाम, सुभद्रा सतीने चंपानगरीके तीन दरवजे खोले, अरिहंतोंके बारह गुण, सिद्धमहाराजके आठ गुण, आचार्यके छत्तीस गुण, उपाध्यायके पचीस गुण, साधुमहाराजके सताइस गुण, और सामायिक व्रतके बत्तीस दोष बत्तीससूत्रमे किस जगह लिखे है,? सम्यक्तके (६७) बोल, अठाइस लब्धियोंके नाम, भरतचक्रवर्त्तीको आरीसे भुवनमें केवल-ज्ञान होना, सनत्कुमार चक्रवर्त्तीका रूप देखनेकों देवता आये, कौरवपांडवोंका युद्ध हुवा, वगेरा बयान बत्तीससूत्रमे मिलता नही, फिर ये बाते स्थानकवासी मजहबमें कैसे मंजुर रखी गइ?—

१३ कितनेक स्थानकवासी मजहबके मुनि—विहार करते वख्त रास्तेमें नदी उतरकर प्रायश्चित एक या दो उपवासका लेते है,

अगर यह बात किसी जैनआगममें नही लिखी, फर्जे करो! जिस कामकेलिये तीर्थंकर गणधरोंने हुकम दिया हो उसकी तामीलमें दंड किस बातका? अगर कोइ इस दलिलकों पेश करे जिनमूर्त्ति माननेकी क्या! जरुरत है? तीर्थंकरदेव किसीकों कुछ देते नही, और किसीका भलाबुरा करते नही, (जवाब.) फिर तीर्थंकर देवोंका नामभी क्यौ लेना? जैसे कहते हो, मूर्त्ति माननेकी जरुरत नही तो फिर नाम लेनेकी क्या? जरुरत है? अक्षर ज्ञानकी मूर्त्ति है, जिनोने अक्षरमय शास्त्रोंकों माने उनोने मूर्त्तिभी मानी साबीत हुई, अगर दयापालनेसे मुक्ति होना कहते हो तो जमालिजीनामके जैन-मुनिने गौतम गणधर जैसी क्रियाकरके दया पाली, संयम आराधन किया, फिर उसकी मुक्ति क्यौ नही हुई,? अगर कहाजाय उनकी श्रद्धा ठीक नही थी तो फिर सौच लो! बात क्या सबुत हुई? व्यवहारसूत्रमें लिखा है, जैनमुनि जिनप्रतिमाके सामने अपने कियेहुवे पापकर्मोंका प्रायछीत लेवे, सोचो! अगर जैनमजहबमें जिनप्रतिमाका मानना मंजुर न होता तो ऐसा बयान क्यौ होता? नंदीसूत्रमें (८४) जैनागम वगेरा (१४०००) पयन्नेसूत्र मंजुर रखना फरमाया. फिर बतलाइये! बत्तीससूत्रही मानना किस जैनआग-ममें लिखा है, बयान मजहब स्थानकवासीका खतम हुवा,–

## [ बीच बयान मजहब तेरह पंथ ]

१ जैनश्वेतांबरमजहबमें जैसे स्थानकवासी मजहब है, वैसे एक तेरहपंथ फिरकाभी मौजूद है, करीब (१८१५) के अर्सेमें श्रीयुत भीखमजीस्वामीने तेरहपंथ मजहब इजाद किया, तेरह साधु मीलकर इस मजहबपर पाबंद हुवे इसलिये तेरहपंथ नाम जाहिर हुवा, जैसे स्थानकवासीमजहबवाले मूर्त्तिकों नही मानते और तीर्थोंकी जियारतकों नही जाते, वैसे तेरहपंथवालेभी मूर्त्तिकों नही मानते और तीर्थोंकी जियारतकों नही जाते, जैसे स्थानकवासी मजहब-

वाले बत्तीससूत्र मानते है, तेरहपंथवालेभी बत्तीससूत्र मानते है, और मुखपर मुखवस्त्रिका बाधते है, फिर तेरहपंथवाले कहाकरते है, जीवकों बचानेसे एकजीव बचानेका पुन्य होगा, मगर वो जीव बचेवाद अठारा पापस्थान सेवेगा उसका पाप जीवबचानेवालेकों लगेगा. मगर जीवबचाने वालेका इरादा जीवदयाका है इसलिये उसकों पुन्य है, वो बचाहुवा जीव जो कुछ पुन्य या पाप करेगा, उसका फल उसीकों है, बचानेवालेको नही, यही बात तेरहपंथ- वालोनें उल्टी समजी, तीर्थंकर शातिनाथ महाराजके जीवने जब मेघरथजीके भवमे थे, एक कबूतरकों बचाया था, तीर्थंकर नेमनाथ महाराज जब दुनियादारी हालतमें थे और विवाहने गये उसवख्त पशुओकों बचाये थे, सौचो! अगर जीव बचानेमे पाप होता तो क्यों बचाते? वो पशुपक्षी छुटेबाद चाहे सो बरताव करे, उसका पुन्यपाप उनको है, बचानेवालेको नही.–

२ तीर्थंकर पार्श्वनाथ महाराजने एक जलतेहुवे सर्पकों बचाया तीर्थंकर पार्श्वनाथमहाराज तीनज्ञानके धरनेवाले थे, अगर जीव बचानेमे पाप होता जानते तो क्यो बचाते? हरेक तीर्थंकर जब दीक्षा इख्तियार करते है पेस्तर एकबर्सतक संवत्सरीदान देते है, उसदानसे लेनेवाले चाहे सो कामकरे, उसका पुन्यपाप करनेवालोंपर है, तीर्थं- करदेवोंने अनुकपासे दान दिया, और उनको जो कुछ पुन्य हुवा वो उनोने उसीभवमे भोगा, जैनागम रायपसेणीसूत्रमे परदेशीराजाका बयान है, जब वो जैनाचार्य केशीकुमार महाराजके पास जैनधर्मपर एतकात लाया तब जेनाचार्य केशीकुमारजीने उसको उपदेश दिया, हे! परदेशी राजा रमणीक होकर अरमणीक मत होना, तुं जो दान- शाला वगेरासे दानपुन्य करता है वो छोडना नही, परदेशीराजाने अपने राज्यकी आमदनीका चौथा भाग दानशाला वगेरा कामके- लिये मुकरर किया था, सौचो! दानदेनेसे पाप होता तो परदेशी राजाकों दानशाला जारी रखनेका उपदेश जैनाचार्यकेशीकुमारजी

क्यौं देते? तीर्थंकर महावीरस्वामीने गोशालेपर शीतललेश्या छोडकर बचाया था, क्या! उनकों पाप हुवा कहना? बिल्कुल नही.–

३ दुसरी बात यहभी कहते हैं किसी मकानमें गौ भैंस बैल वगेरा जानवर बंद किये हो और उसके इर्दगिर्द आग लगे तो उनकों छोडाना नही, सबब कि–बाद छुटनेके वे जानवर जो जो पाप करेंगें उसका पाप छोडानेवालेको लगेगा, वे छोडायेहुवे जानवर हरा घास खायेगें, पानी पीयेगें, द्रख्तकों तोडेगें, उसमे थावरजीवोंकी हिंसा होगी, और वो छोडानेवालोंको लगेगी, मगर यह बात खिलाफ जैनशास्त्रके है, जैनशास्त्रोंमें मनके परिणामोंपर बंध कहा, जिस जीवके जैसे मनपरिणाम हो वैसा कर्मका बंध पडता है, छोडायेहुवे जीव जो कुछ पुन्यपाप करेगें उनका फल वे भोगेगें, छोडानेवालोकों पाप कहना जैनशास्त्रोंके खिलाफ है, फर्ज करो! किसी शख्शने एक दुसरे शख्शको नदीमें डूबते हुवेको बचाया और बहार निकाला, फिर वो संसारमें चाहे सो पुन्य पाप करे उसका फल उसके जुम्मे है, नदीमेंसे निकालनेवालोंको तो इरादा जीव बचानेका था उनको पुन्यही हुवा, तेरहपंथवाले इसपर खयाल करे, जीवकों कोई शख्श मारता हो तो उसकों जहांतक बने छोडाना चाहिये, जीवोंपर रहेम करना तीर्थंकरदेवोंने किसी जैनशास्त्रमें मना नही फरमाया, जैनशास्त्रोंमें दानके पांच भेद जहां फरमाये है, उनमे अनुकंपाभी सामील है, फिर जीवकों बचाना कैसे पाप हुवा? इस बातकों सौचो किसी शख्शने एक दुसरे शख्शको खानपानमें जहर दिया, दुसरे शख्शने उसको दवा देकर जहर उतारा, जहर उतारनेवालेकों जीव बचानेका इरादा था इसलिये पुन्य हुवा पाप नही, किसी गरीबको खाना खिलाया, कपडे दिये तो उसको पुन्य है पाप नही.–

४ मेघकुमारने हाथीके भवमें एक खरगोसकों बचाया था, छुटेबाद उस खरगोसने फर्ज करो! पाप किया? बतलाईये! उसका

पाप किसको लगा, (जवाब.) बचानेवालेको नही लगा, जो करे उसको लगे यह सीधी सडक है, सडक छोडकर आडे रास्ते क्यों चलना? अगर कोई इस दलिलको पेंशकरे पुस्तक लिखवानेमे या छपवानेमें पाप है तो यह कहना गलत है, पुस्तक लिखवाना या छपवाना ज्ञानवृद्धिका सबब होनेसे पुन्य है, पाप नही, कबूतर या चीडियाकों कोइ शख्श जवार डाले या पानी पिलावे तो उसको पुन्य है, क्योंकि-उसने उनपर रहेम किया, इसमे कोइ पाप हुवा कहे तो उनकी भूल है, जैनशास्त्रोंमें अभयदान सबसें बडा फरमाया, सूत्रकृतांगशास्त्रमे बयान है एक वसंतपुरनगरके राजाकी एक रानीने एक चौरको अभयदान दिया. उसका उसको पुन्य हुवा. क्योंकि-उसने एक जीवकी जान बचाइ, खयाल करो! वो चोर छुटेबाद जो कुछ पाप पुन्य करेगा, उसका फल उसको मिलेगा. छोडानेवालोंको तो इरादा जीवबचानेका होनेसे पुन्यही है, बयान तेरहपंथमजहबका खतम हुवा.-

---

## [ बयान त्रिस्तुति मजहब. ]

१ सवत् (१९२५) के अर्सेमे श्रीपूज्यजी धरणेंद्रसूरिजीसें जुदे होकर श्रीयुत राजेंद्रसूरिजीने त्रिस्तुतिमजहब इजाद किया, शुरु समयचक्रमे तीर्थंकर रिषभदेव महाराजसे लगाकर आजतक जैन-समाज प्रतिक्रमण करतेवख्त चारस्तुतिका पाठ पढता चला आया. इनोने त्रिस्तुति पढना मंजुर रखा, अगर कोई बयान करे जैनाचार्य श्रीधर्मकीर्तिसूरिजीने चारस्तुति स्थापन करनेके लिये संघाचार-वृत्ति बनाइ, (जवाब.) चारस्तुति तीर्थंकर गणधरोसे चलीआती है, इसका कोइ स्थापन क्यों करे? संघाचारवृत्ति आम जैनसघके फायदेकेलिये बनाई है, इसमे कोई नयीबात स्थापन नही किई,

२ अगर कोई इस दलिलको पेंशकरे प्रतिक्रमणमे देवी देवताका सहारा नही लेना चाहिये, इसलिये चतुर्थस्तुति नही बोलते,

(जवाब.) फिर शुभह शामके प्रतिक्रमणमें जब श्रमणसूत्रका पाठ बोलते हो उसमे देवाणं आसायणाए, देवीणं आसायणाए, यहां में देवता देवीयोंकी बेंअदबीसें पिछा हठताहुं, साँचो! ऐसा पाठ हरहमेश क्यौं बोलना इसका जवाब कोइ देवे, और इस पाठको सच मानते हो या जूठ? अब देवीदेवताका सहारा नही लेना यह बात कहां रही? अगर विनासहारेके धर्मानुष्ठान करना और सब चीजोमे निस्पृहता रखना मंजुर हो तो मजकुर पाठ प्रतिक्रमणमे क्यौ बोलना? चतुर्थस्तुति पढना छोडदी, तो इस पाठकोभी पढना छोडदो, अगर कोइ त्रिस्तुति पढनेवाले तेहरीर करे त्रिस्तुतिमजहब प्राचीन है, (जवाब.) त्रिस्तुतिमजहब प्राचीन नही, प्राचीन मजहब चारस्तुतिका है, सबुत इसका देखलो! जैनाचार्य श्रीहरिभद्रसूरिजीकी बनाइहुई संसारदावाकी चारस्तुति अबतक मौजूद है,–

२ एक सत्पक्षग्राहीके नामसे जो राजेंद्रसूरिजीकी तीन स्तुति या चारस्तुतिकी चर्चा इस्तिहार सुरत विकटोरिया प्रेस तारिख (२५–७–१९०३) के रौज छपाथा, उसमे लिखा है, राजेद्रसूरिजीने सब जैनसूत्र-निर्युक्ति–भाष्यचूर्णि–वगेरा ग्रंथके आधारसे चैत्यवंदनमे त्रिस्तुति करनेका पुनरुद्धार करना मंजुर रखा है, (जवाब.) पुनरुद्धार करना मंजुर रखा है, तो बात क्या हुई? चैत्यवंदनमे त्रिस्तुति करनेका पुनरुद्धार करना यह तो मंजुर रखा, मगर किसी जैनसूत्र या पंचांगीमें नही लिखा प्रतिक्रमणमे त्रिस्तुति करना, अगर लिखा है तो पाठ बतलावे, और यहभी बतलावे श्रुतदेवी और क्षेत्रदेवीका कायोत्सर्ग करते हो या नही? अगर करते हो तो उसका क्या सबब है? और यहभी बतलाना चाहिये दीक्षा देते वख्त जो विधि कराइ जाती है, उसमे शासन देवीका और वैयावृत्त्यकरादिकोका कायोत्सर्ग क्यौ करते हो? आप लोगोके खयालसें यहभी नही करना चाहिये,–

४ स्थानांगसूत्रमें फरमान है, सम्यक्तधारी देवोंका अवर्णवाद बोलनेसें इस जीवकों दुर्लभबोधिपना होता है, इसपर खयाल करना चाहिये, अगर कोइ इस सवालकों पेंशकरे जैनमुनि छठे सातमे गुणस्थानपर है वे चतुर्थ गुणस्थानवाले देवोंकी स्तुति क्यों करे? (जवाब.) चतुर्थ गुणस्थानवाले देवोंकी स्तुति याने तारीफ करना कौन दोषकी बात है? श्रद्धामे जो जो देवते कामील एतकात है, उनकी श्रद्धापर तारीफ करना कोइ हर्ज नही, महानिशीथसूत्रमे बयान है सफर करतेवख्त रास्तेमे जैनमुनिको अगर किसीतरहकी आफत आनपडे तो महाविद्याका पाठ करे, महाविद्याकी अधिष्ठायिका देवी होती है, सोचो आफतके वख्त, देवीकी मदद लेना क्यों फरमाया? व्यवहारसूत्रकी चूर्णिमे लिखा है, जैनमुनिको अगर प्रायछीत लेना हो और उस वख्त गुरुका योग न हो तो तेलेका तप करके देवताका आराधन करे और उसकी सहायतासे प्रायछीत लेवे,-

[ व्यवहारसूत्रकी चूर्णिकापाठ, ]

बहूणि पायच्छित्ताणि दिज्जमाणाणि देवयाण
दिट्ठाणि तओ देवयाओ अठमभत्तं काउं आ
कंपिया आलोए,-

(अर्थः) देवताओंकी उम्र लंबी होनेसे उनोने तीर्थंकरोंकी हयातीमे बहुतसे मनुष्योंकों पायछित देते देखे है, इसलिये उनका आराधन करके प्रायछित लेवे, फिर निशीथसूत्रके (१६) मे उद्देशेका पाठ है,-ताहे दिसिभागममुणंता बालवुड्ढगच्छस्स रक्खणट्ठा वणदेवयाणकाउसग्गं करंति सा आकंपिया दिसिभागं पंथं करेज्जा,-(अर्थः) जंगलमे कोइ जैनमुनि सफर करते हुवे रास्ता भुलजाय तो वनदेवीका ध्यानकरे, और वो आनकर रास्ता बतलावे ऐसा निशीथसूत्रका फरमान है, देखिये! जैनागमोंमे क्या! लिखा है? उनमे साफ लिखा है, जैनमुनि सम्यक्तधारी देवताकी सबब आन पडनेपर मदद लेवे,-

५ देखिये! जैनागमके भाष्यकारोने चारस्तुतिका बयान फरमाया है, उसका पाठ,–

अहिगयजिणपढमथुइ बीया सवाण तइयनाणस्स
वेयावच्चगराणं उवओगथ्थं चउथ्थ थुइ. १

(अर्थः)–सबतरहकी स्तुतियोंमें पहली स्तुति एक तीर्थकरकी होती है, दुसरे नंबरकी स्तुतिमें चोईस तीर्थकरोंका गुणानुवाद होता है, तीसरे नंबरकी स्तुतिमें ज्ञानका बयान होता है, और चोथे नंबरकी स्तुतिमें सम्यक्तधारी देवताओंका बर्नन होता है, देखिये! इसमें चारस्तुति माननेका सबुत है, जिसको कोई अकलमंद गलत नही कहसकता, खयाल करनेकी जगह है, पहेली दुसरी तीसरी स्तुतिमें वंदणवत्तीयाका पाठ बोलकर कायोत्सर्ग कहना कहा, और चतुर्थस्तुतिके वख्त सिद्धाणंबुद्धाणंका पाठ बोलकर वंदणवत्तीयाका पाठ बोलना नही कहा, सबब तीर्थकर देवोंकों और उनके ज्ञानको वंदनीक पूजनीक समजकर वंदणवत्तीया पाठ कहा, चतुर्थस्तुतिमें शासनदेवदेवीयोंकों वैयावच्च करनेवाले समजकर वैयावचगराणं पाठ कहा, वंदणवत्तीयाका पाठ नही कहा, देखलो! तीर्थकर गणधरोंने अवलसेही फरमादिया है, कि–तीर्थकर और ज्ञान वंदनीक पूजनीक है, और शासन देव वैयावृत्त्य करनेवाले हैं, यह बात त्रिस्तुति मत प्रवर्तककों क्यों नापसद हुई?

६ अगर कोई इस दलिलकों पेंशकरे, जिसजगह चारस्तुति पढनेकी है उस जगह पढते है, (जवाब.) फिर वात क्या हुई? बात यही हुई है, चारकी जगह चारस्तुतिभी पढते हो तोभी तीन चारका भेद क्यों पेंश करते हो? दीक्षाविधिमें शासनदेवताका स्मर्ण वैयावृत्त्यकरोंका कायोत्सर्ग देववंदनमे श्रुतदेवीका कायोत्सर्ग वगेरा स्थानोंपर देवताका स्मर्ण कायोत्सर्ग मंजुर रखा, फिर प्रतिक्रमणमें चारस्तुति पढनेमें क्या हर्ज था? अगर कोई बयान करे तीर्थकर गणधररचित चारस्तुति कौनसी-है? होवे तो माने

(जवाब.) प्रतिक्रमणमें जो वेयावच्चगराण संतिगराण सम्मदिट्ठी समाहिगराणं पाठ है, यह पट्ट आवश्यकमे होनेसे तीर्थंकर गणधररचित है, इस पाठसे चतुर्थस्तुतिभी सावीत हुई? सबब कि-चतुर्थस्तुति इनहीके लिये है, सम्यक्तधारीदेव चतुर्विधसघसे जुदे नही, चतुर्विधसंघके अंदर है, और चतुर्विधसंघ जैनमजहबमे मान्य है, इसलिये सम्यक्तधारी देवोंकी मदद लेना कोई हर्ज नही.-

७ अगर कोई तेहरीर करे महाराजश्रीविजयानंदसूरि अपरनाम आत्मारामजी महाराजके बनायेहुवे जैनतत्वादर्शग्रंथमे तीनस्तुति लिखी है, (जवाब.) वहा जिनमंदिरकी बात है, प्रतिक्रमणकी नही, अगर लिखी हो तो बतलावे, जिनमंदिरकी बात इसतरह है, एक पंचायतीमंदिर, दुसरा एक शख्शका बनाया हुवा, स्वतत्रमंदिर इसप्रकार दो तरहके जिनमंदिरमे अगर साधुमहाराज दर्शनको जावे वहा किसी मंदिरमें एक स्तुति पढे तोभी कोई हर्ज नही किसीमे तीन पढे तोभी हर्ज नही, बात जिनमंदिरके लिये है, प्रतिक्रमणके लिये नही, त्रिस्तुतिमजहबके जैनमुनि सफेद कपडे पहनते है.-

[ बयान त्रिस्तुति मजहबका खतम हुवा. ]

---

## [ श्रीमद् राजचंद्र कितावके लेखपर समीक्षा ]

१ इसमे श्रीमद् राजचंद्र कितावके कितनेक लेखोपर समीक्षा लिखी गई है, उनके लेखोंसे उनकी मान्यता क्या क्या सावीत होती है, मजकुर लेख पढनेसे व-खूबी मालुम होगा. श्रीमद् राजचंद्रकितावके पृष्ठ (१२५) पर एक शख्शकी पत्रिकाके जवाबमे उनोंने लिखा है, हजी मारा दर्शनने जगतमा प्रवर्त्तन करवाने केटलोक वखत छे, हुं ससारमां तमारी धारेली मुदत करता वधारे रहवानो छु.

(जबाब.) इस लेखसे सावीत होता है, श्रीमद् राजचंद्रजी अपने दर्शनको दुनियामे प्रवर्तन करना चाहते थे, मगर वो दर्शन कौनसा था उसका खुलासा नही लिखा.

२ आगे इसी पृष्ठपर लिखते है, दुनिया मतभेदना बंधनथी
पामी शकती नथी, साचुं सुख अने सत्यानंद तेओमां नथी, ते
पन थवा एक खरो धर्म चलाववा माटे आत्माये झंपला-
छे.—

(जवाब.) इस लेखसे जाहिर होता है, श्रीमद् राजचंद्रजी एक
ा धर्म चलाना चाहते थे, दुनियामें मतभेद कदीमसे चले आये,
सी जमानेमें मतभेद नही था, ऐसा कभी बनसकता नही,
ाने तीर्थकरोकेभी कई मतभेद मौजूद थे, तीर्थकर देवोंने दुनि-
कों सत्यधर्मका उपदेश दिया, मगर नही माननेवालोने नही
ना, सबजीव अपने पूर्वकृत कर्मके उदयानुसार सुखदुःख पाते हैं
लमें! सचा सुख और सचा आनंदतो मोक्षमे है, अगर दुनि-
में सचा सुख होता तो बडेबडे ज्ञानी इसकों छोडकर दीक्षा क्यों
? दोलत दुनिया माल खजाना और खूबसुरत औरतें छोडकर
लवासी क्यों बनते? सबुत हुवा दुनियामें उमदा चीज धर्म है.—

३ फिर श्रीमद् राजचंद्र किताबके पृष्ठ (४२४) पर लिखा है,
कालमां मोक्षनो साधनिषेध नथी, जेम आगगाडीनो रस्तो छे
ी मारफते वेलां जवाय, ने पगरस्ते मोडां जवाय, तेम आकालमां
क्षनो रस्तो पगरस्ता जेवो होय तो तेथी न पहुंचाय एम कांई
थी, वेलां चाले तो वेला जवाय, कांई रस्तो बंध नथी, आरीते
क्षमार्ग छे, तेनो नाश नथी.—

(जवाब.) मोक्षका रास्ता पांचमे आरेकी अखीरतक चलता
गा, मगर जमाने हालमें इस भरतक्षेत्रसे मोक्ष होना बिल्कुल
पेध है, चाहे कोई जल्दी चले या आहिस्ते इससे क्या हुवा!
र्गगति मील सकती है, मगर जमाने हालमे यहांसे मोक्ष
ही मीलसकता, जंबूद्वीपके महाविदेहक्षेत्रसें मोक्ष जासकते है,
माने तीर्थंकरोंके यहांसेभी जासकते थे, जो चीज जमाने हालमें
हां मौजूद नही, वो कहांसे मीले? आजकल इस भरतक्षेत्रमे

वज्ररिषभ नाराच संहननवाले मनुष्य रहे नही. केवलज्ञान होना बंद होगया, फिर मोक्ष कैसे होसके? इस बातकों सोचो!

४ आगे श्रीमद् राजचंद्र किताबके पृष्ठ (४२४) पर लिखा है, अज्ञानी अकल्याणना मार्गमा कल्याण मानी स्वछंदे कल्पना करी जीवोने तरवानुं वध करावीदेछे, अज्ञानीनां रागी बालाभोलाजीवो अज्ञानीना कह्या प्रमाणे चालेछे, अने तेवा कर्मना बाधेला बंने माठीगतिने प्राप्त थायछे, आवो कुटारो जैनमतोमां विशेष थयोछे,

(जबाब.) जैनमजहबमे ऐसा कुटारा नही होसकता, सबब कि, जैनमजहब सर्वज्ञोका फरमाया हुवा है, जिस जैनमजहबमे कर्मको प्रधान माने है, जैसा करोगे वैसा पाओगे ऐसी हिदायत दिइगइ है, उसमे अगर कोइ गलती करे तो उस गलती करनेवालेंका दोष है, जैनमजहबका दोष नही. अज्ञानी अकल्याणके मार्गपर चलते है, और भोलेजीव उनके कहनेपर रजुहोते है, ऐसा कहना जब बनसके पहले उनको अज्ञानी साबीत कर बतावे, और उनके मार्गको अकल्याणका मार्ग सिद्धकर देवे, अगले जन्ममे किसीकी अछी गति होगी, या बुरी, इसबातको शिवाय केवल ज्ञानीके दुसरा कौन कहसके? ससारसें तीरनेका रास्ता कोई बंद नही करसकता, जितना जिससे बने उतना धर्म करे यह सब धर्मशास्त्रोका फरमान है,

५ फिर श्रीमद् राजचंद्र किताबके पृष्ठ (५६६) पर लिखा है, अवश्य कर्मनो भोग छे भोगववो अवशेष रे, तेथी देह एकज धारीने जाशुं स्वरूप स्वदेश रे,-

(जबाब.) एक देह धारकर स्वरूप स्वदेश जानेका निश्चय आजकल कोई किस ज्ञानसे करसके? जमानेहालमें इस भरतक्षेत्रमे केवलज्ञान मौजूद नही. सातमे गुणस्थानसे आगेके गुणस्थान नही, फिर मजकुर बातका निश्चय कोई कैसे बतलासके? अगर कोई इस दलिलकों पेशकरे, केवल आत्मस्वरूपनुं अखंड वरते ज्ञान, कहिये केवलज्ञानने देहछतां निर्वाण, (जबाबमे मालुम हो,) शरीर होते

हुवे निर्वाण (यानी) मोक्ष नही हो सकता, केवलज्ञान हुवे बाद इस जीवके चारकर्म बाकी रहते है, जब वे चारकर्म पुरे भोग लिये जाय तब इस जीवका निर्वाण होसके. आजकल इस भरतक्षेत्रमें जीवोंको अखंड आत्मज्ञान होसकता नही. फिर निर्वाण होना कैसे बनसके?–

६ आगे श्रीमद् राजचंद्र किताबके पृष्ठ (५६६) पर लिखा है, आवी अपूर्ववृत्ति अहो, थशे अप्रमत्त योगरे, केवल लगभग भूमिका स्पर्शीने देह वियोग रे,–

(जवाब.) जमाने हालमें केवलज्ञान लगभगके गुणस्थान इस भरतक्षेत्रमें नही रहे, फिर केवल लगभग भूमिका स्पर्श कैसे होसके? इसका कोइ खुलासा करे,–

७ अगर कोई इस मजमूनको पेशकरे, जैनमजहबमें जो श्वेतांबर दिगंबर स्थानकवासी मजहब वगेरा भेदानुभेद है, उनको ऐक्य करके अविभक्त जैनमार्ग चलाया जाय तो बहेत्तर होगा,–

(जवाब.) जिनके मानेहुवे धर्मतत्वोमे फर्क हो, धर्मके बारेमें उनकी ऐक्यता कैसे होसकेगी? इस बातपर खयाल करो, श्वेतांबर मजहबवाले जमाने हालमें जो (८४) जैनागम मौजूद है, उनको मानते है, स्थानकवासी मजहबवाले (३२) जैनागम मानते है, दिगंबर मजहबवाले कहते है, पहले जितनी संख्यावाले जैनागम नही रहे. अधुरे रहे है, इसलिये उनको कैसे मंजुर रखे? धवल जयधवल महाधवल गोमटसार त्रिलोकसार वगेरा धर्मशास्त्र मानते हैं, श्वेतांबर मजहबवाले जिनमूर्त्तिको गहने आभूषण पहनाते है, दिगंबर मजहबवाले जिनमूर्त्तिको गहने आभूषण नही पहनाते. और स्थानकवासी मजहबवाले जिनमूर्त्तिको मंजुर नही रखते. जिनके मंदिर मूर्त्ति और धर्मशास्त्रके मजुर रखनेमें फर्क है, उनकी धर्मके बारेमे ऐक्यता कैसे होसकेगी? और अविभक्त जैनमार्ग कैसे चलसकेगा?

८ श्रीमद् राजचंद्र किताबकी शुरुआतमें उनकी तस्वीरके आगे

वडे हर्फोंसें अंतिम वचनो ऐसा लिखकर बयान किया है, घणील-राथी प्रवास पुरो करवानो हतो, त्यां वचे सहरानुंरण संप्राप्त थयुं, माथे घणो बोजो रहयो हतो, ते आत्मवीर्यें करी जेम अल्पकाले वेदी लेवाय तेम प्रघटना करतां पगे निकाचित उदयमान थाक ग्रहण कर्यो, जे स्वरूपछे ते अन्यथा थतुं नथी, एज अद्भूत आश्चर्य छे, अव्यावाध स्थिरता छे, प्रकृति उदयानुसार काईक अशाता मुख्यत्वे वेदी शाता प्रत्ये.–

राजकोट फागणवद ३ }
शुक्रवार १९५७ } ॐ शांति.

(जवान.) इसतरह हरेक महाशय कहसकते हैं, हमको प्रवास जल्दी पुरा करना था, मगर निकाचितकर्मके उदयसे नही होसका, कर्मप्रकृति चारस्पर्शी पुदगलमय फरमाई, इसका असली स्वरूप जानना शिवाय केवलज्ञानीके होसकता नही, कर्मप्रकृतिके उदयानुसार इस जीवकों आराम और तकलीफ होना कुदरती बात है, जैनशास्त्रोंका फरमान है, जैसा करेगा वैसा फल पायगा. प्रकृतिरुदयं याति निग्रहं कः करिष्यति कर्मप्रकृतिके उदयको कोई रोक सकता नही, तीर्थंकर गणधर–चक्रवर्त्ती वासुदेव प्रतिवासुदेव बलदेव और छत्रपति राजे इस दुनियामें होगये, जिनोने निस्पृह होकर धर्म किया उनोंने मोक्ष पाया, और अबभी जो शख्श धर्म करेंगे, महाविदेहक्षेत्रमें पैदा होकर मोक्ष पासकेंगे, मगर जमाने हालमे भरतक्षेत्रसे मोक्ष होना नही रहा, हरशख्श अंतिमअवस्थामे धर्मको याद करते हैं, फिर श्रीमद् राजचंद्रजीने अंतिम वचनोंमे नयी बात क्या फरमाई,?–

९ फिर श्रीमद् राजचंद्र किताबके पृष्ठ (११६) पर लिखा है, ये मतप्रवर्तनमां मुख्यकारणो मने आटला संभवे छे, १–पोतानी शिथिलताने लिधे केटलाक पुरुषोयें निर्ग्रंथदशानी प्राधान्यता घटाडी होय, २–परस्पर वे आचार्योंने वादविवाद, ३–मोहनीकर्मनो

उदय–ने तेरूपे प्रवर्तन थई जवुं, ४–ग्रह्या पछी ते वातनो मार्ग मलतो होय ते दुर्लभ बोधितानेलिधे न ग्रहवो, ५–मतिनीन्यूनता, ६ जेनापर राग तेनां छंदमां प्रवर्त्तन करनारा घणां मनुष्यो, ७ दुपमकाल अने शास्त्रज्ञाननुं घटीजवुं.–

(जवाब.) दुपमकाल और शास्त्रज्ञानका घटजाना ज्ञानीयोंने ज्ञानमें जैसा देखा था वैसा कहा, इसका कोई क्या करे? चौदह पूर्व विच्छेद होगये, एक पूर्वका ज्ञानभी पुरा नहीरहा, फिर पहले जैसा ज्ञान कहांसे मिले? मोहनीकर्मका बिल्कुल नाश होजाय वैसा जमाना तीर्थकरोंके वख्तमें था, आजकल किसीकों कम किसीकों ज्यादा मगर मोहनीकर्मका उदय सबकों लगा है, दो आचार्योंका धर्मचर्चामें वादविवाद होना यहभी हमेशांसें होता चला आया, जमाने तीर्थकरोंकेभी वादविवादका होना मौजूद था, तीर्थकर महावीरस्वामीकी हयातीमें जमालिजीनामके मुनिने तीर्थकरका फरमानभी कुबुल नही रखाथा, निर्ग्रंथदशामें कमजोरी होजाना सबब इसका पहले जैसा पुन्य नही, ताकात नही, और पहले जैसा ज्ञानभी नही रहा, इसलिये सम्यक् दर्शन ज्ञान और चारित्रमें कमी होती रही, श्रावकोंमें इसीतरह धर्मश्रद्धामे ज्ञानमें और व्रतमें कमी होगई है, देखलो! पहले जैसे दोलतमंद और आरामतलब गृहस्थ कहां है? पहले जैसा धर्मध्यान कहां है? दरअसल! जैसा जमाना है, वैसे साधु श्रावक मौजूद है, धर्म करनेवाले बनपडे उतना धर्म करते है, धर्ममे कोई वादानुवाद करे तो अपनेको क्या? करेगा वैसा फल पायगा, अपने आत्माकों पापसें बचाना अपना फर्ज है.

१० आगे श्रीमद् राजचंद्र किताबके पृष्ठ (१६१) पर लिखा है, कदापि कोईरीते तेमानुं कांई करीये तो तेवुं स्थान क्यां छे के ज्यां जईने रहिये, अर्थात् तेवा संतो क्यां छे के ज्या जइने ए दशामा तेवुं पोषण पामीये, त्यारे हवे केम करवुं.–

(जवाब.) जितना बने उतना धर्म करना, यही कर्तव्य है,

गणधर गौतमस्वामी जैसे धर्मगुरु रहे नही, आनंद और कामदेव जैसे धर्मपावंद श्रावक रहे नहीं, मगर ऐसा नही कहा जासकता धर्मगुरु और श्रावक विल्कुल नही रहे, जैसा वख्त है, वेसा धर्म धर्मगुरु और श्रावक मौजूद है, शास्त्रोंमें लेख है, "बहुरत्ना वसुंधरा."–

फिर श्रीमद् राजचंद्र किताबके पृष्ठ (५३२) पर लिखा है, अमुक वस्तुओ विछेद गई, एम कहेवामां आवेछे, पण तेनो पुरुषार्थ करवामां आवतो नथी, तेथी विछेद गई कहे छे, जो तेनो साचो जेवो जोईये तेवो पुरुषार्थ थाय तो ते गुणो प्रगटे, एमां काई शंसय नथी.–

(जबाब.) चाहे जितना पुरुषार्थ करो मगर जो जो चीजे इस जमानेमे विछेद गई है, वे कभी मिल सके नही, फर्ज करो, केवलज्ञान इस जमानेमें भरतक्षेत्रसे विछेद होगया है, मोक्ष होना बंध हुवा, यथाख्यातचारित्र विछेद गया है, बतलाईये! इनकेलिये कोई उद्यम करे तो क्या! जमाने हालमे मिलसके? हर्गिज! नही, तीर्थंकर देवोंने अपने केवलज्ञानमे देखा कि–पांचमे आरेमे ये ये चीजे भरतक्षेत्रसें विछेद होजायगी, वो बात जाहिरमे दिख रही है, चाहे जितना कोई पुरुषार्थ करे मगर मीलसके नही, फिर कैसे कहाजाय पुरुषार्थ करनेसे वैसे गुण हासिल होसके,

११ अगर कोई इस दलिलको पेशकरे, श्रीमद् राजचंद्रजी शतावधान करते थे, और कवि थे.–

(जबाब.) शतावधान करनेवाले अबभी कई जैनमुनि और दुसरे गृहस्थ मौजूद हैं, संतीकर स्तोत्रबनानेवाले जैनश्वेताम्बराचार्य मुनिसुंदरसूरिजी सहस्रअवधान करते थे, आजकल कई शीघ्रकवि ऐसेभी है, जो चलते हुवे कविता बनालेते है, कई महाशय ऐसे देखेजाते हैं, जो पढेलिखे कम मगर सभामें भाषण इस खूबीसें देते है, जो पढेहुवेभी न देसके, कई महाशय ऐसे हैं, जो धर्मशास्त्र

अछीतरह पढे है, मगर भाषण देना उनसें बनसकता नही, भाषणभी देसके और धर्मशास्त्रके जानकारहो जब तारीफकी बात है, धर्मशास्त्रके जानकार होना और फिर देवगुरु धर्मपर श्रद्धा पाना सबसें ज्यादा मुश्किलकी बात है, श्रीमद् राजचंद्र किताबके लेखपर समीक्षा खतम हुई.–

[ किताब लालन आत्मवाटिकाके
लेखका जवाब.– ]

१ इसमें श्रीयुत पंडित लालनने मेरे बारेमें जो कुछ लिखा है, उसका माकुल जवाब दिया है,

२ किताब लालन आत्मवाटिकाके पृष्ठ (१९८) पर श्रीयुत पंडित लालन लिखते है, चालुमासनी तारिख १०–३–१२ ना–विख्यातपत्रना अंकमां जैनश्वेतांबरधर्मोपदेष्टा–विद्यासागर–न्यायरत्नमहाराज–शांतिविजयजीये लघुतम–लालन–शाथे लगभग दोढ वर्सना लांबा वख्तसुधी जे धर्मचर्चा चलावी हती, तेनो तेओश्रीये उपसंहार कर्यो छे.–

( जवाब ) देढवर्सकी लंबीचर्चाका उपसंहार पहले मेने नही किया था. मेरी तर्फसे लेख लिखना जारी था, जो शख्श मुताबिक धर्मशास्त्रके माकुल जवाब देसकता हो, वो चर्चाका उपसंहार पहले क्यौ करे? अध्यात्मज्ञानका फल वो है, जिससे इस-जीवके रागद्वेष कम होते जाय, जैनशास्त्रोंका फरमान है.–

३ तज्ज्ञानमेव न भवति यस्मिन्नुदिते विभाति रागगणः
तमसः कुतोस्ति शक्तिर्दिनकरकिरणाग्रतः स्थातुं. १

( अर्थः )–ज्ञान हुवे बाद इस जीवके रागद्वेषरूप दोष कम पड-जाना चाहिये, जैसे सूर्यके उदयहोनेसे अंधेरा नही रहसकता, वैसे ज्ञानकेसामने दोष नही ठहरसकते, अगर रागद्वेष कम न हुवे, फिर ज्ञानसे क्या फायदा हुवा? अध्यात्मज्ञान धरानेवालोंकों इसपर ख्याल करना चाहिये, श्रीयुत पंडित लालन अछीतरह जानतेहोगे,

भाव अध्यात्मज्ञान किसको कहना? पापसे बचाव करनेकी बुद्धि पैदा हो जभी अध्यात्मज्ञान होनेका फायदा हुवा समजना, मोक्षप्राप्तिमें चारित्रसे और ज्ञानसेभी श्रद्धा अवल दर्जेपर है.–

४–[उत्तराध्ययनसूत्रमे चार चीज पाना दुर्लभ फरमाया]

**चत्तारि परमंगाणि, दुल्लहाणिय जंतूणो,**
**माणुसत्तं सुइ सद्धा, संयमंमिय वीरियं.** १

(अर्थः)–इस जीवको मनुष्यका जन्म पाना दुर्लभ है, धर्मशास्त्रका सुनना दुर्लभ, सुदेव सुगुरु और सुधर्मपर श्रद्धा पाना दुर्लभ और चारित्रमें फतेहमंद होना दुर्लभ है, सबुत हुवा, चारित्रसें पेस्तर श्रद्धा गुण चाहिये, जैनशास्त्रोमे चारतरहके सामायिक फरमाये, अवल सम्यक्त सामायिक, दुसरा श्रुतसामायिक, तीसरा सर्व विरति–और चौथा देशविरतिसामायिक सम्यक्तसामायिक उसका नाम है, देवगुरुधर्मपर श्रद्धा बेठना, श्रुतसामायिक उसका नाम है, खयालरखकर धर्मशास्त्र सुनना, सर्वविरतिसामायिक उसका नाम है जो दुनियाको छोडकर साधु होना, और देशविरतिसामायिक उसको कहना जो गृहस्थ धर्मके व्रतनियम इख्तियार करना, इनमे अवल दर्जे सम्यक्तसामायिक, दोयमदर्जे श्रुतसामायिक, तीसरेदर्जे सर्वविरति और चोथे दर्जे देशविरतिसामायिक है.–

५ आगे लालन आत्मवाटिका किताबके पृष्ठ (२००) पर श्रीयुत पंडित लालन तेहरीर करते है, आपना लखाणने आप फरीथी विचारपूर्वक जोशो तो आपनेज वदतोव्याघात जणाई आवशे, अग्निनी सघडी माथे मुकवाछतां गजसुकुमाले क्रोध न कर्यो, कारणके प्रथमथी तेमने आत्मज्ञान हतुं.–

(जवाब.) गजसुकमालकी तरह कोई अपने आत्मापर वैसा वरताव करके बतलावे तब सचा अध्यात्मज्ञान कहना ऐसा मेरा अवलसेही कहना था, कहिये! इसमे वदतोव्याघात दोष क्या आया? ऐसा बरताव करसकना नहीं और अध्यात्मज्ञानी बनना

कैसे होसके? इसबातकों श्रीयुत पंडित लालन सौचे! और वदतोव्याघात दोप किसतर्फ आता है? इसबातपर खयाल करे, गजसुकमालजीने अपने शरीरपर ममता नही किई, जब अध्यात्मज्ञानी कहलाये, चाह-दूध, मेवा-मिठाई, फुल-गजरे, वगी-घोडे और उमदा कपडोंकी चाहना मीटी नही, और अध्यात्मज्ञान पैदा हुवा कहना इसबातकों जैनशास्त्रमंजुर नही रखते, मेने पेस्तरभी यही वात कही थी, फिर इसमें गलती क्या थी,? श्रीयुत पंडित लालन दलिलतो पेंश करते है, मगर इसपर खयाल क्यों नही लाते? विना ममत्वभाव छोडे अध्यात्मज्ञान नही होसके.–

६ फिर लालन आत्मवाटिका किताबके पृष्ठ (२०१) पर श्रीयुत पंडित लालन इस मजमूनकों पेंश करते है, ज्ञान उपयोगथी जेप्रमाणें गजसुकमालजीने अग्नि सहन थई, तेप्रमाणे आत्मउपयोग थी, चाह दूध विगेरे सहन थई शके छे, जेम गजसुकमालजीने अग्निनी गरज नही हती, परंतु अग्नि पूर्वपापना उदय वडेज खेंचाई आवीहती, तेमप्रमाणे अध्यात्मज्ञानीने चाह दूधके अछा कपडानी गरज होती नथी, परतु तेवोज तेना पूर्वपुन्यना उदयवडे खेंचाई आवे.–

(जवाब.) तीर्थकरदेवोके पुन्यसे चाह दूध तो क्या? मगर बत्तीसतरहके खानपान खेंचाई आतेथे. धन, दोलत, कुटुंब, परिवार, अमलदारी और पदमनी औरतें मौजूद थी, इसीतरह चक्रवर्त्तीराजे महाराजोकों धन्ना शालिभद्रजीको और जंबूस्वामी वगेराकों उनकी पुन्यप्रकृतिसें सब चीजें हाजिर थी, बतलाइये! फिर उनोने आत्मज्ञानके लिये ये चीजे क्यों छोडी? और दीक्षा क्यों इख्तियार किई? क्या उनकी पुन्यप्रकृतिसे खानपान और एशआरामकी चीजे खेंचाकर नही आती थी? श्रीयुत पंडित लालन इस लेखपर खयालकरे, शांतिविजयजीकी दलिल मोतीचूरके लाड्ड नही है, जो तोड सको, लोहेके चने है.

७ श्रीमान् आनंदघनजीके और चिदानंदजीके बनाये हुवे अध्यात्मज्ञानके पद कोई शख्श रागरागिनीसे गावे, और दुनिया-

दारीकी चीजोंसे ममता कम न करे तो क्या? उनको अध्यात्मज्ञानी कहसकतेहो? हर्गिज नही, जैसा मुखसे कहे वैसा बरताव करें, उसका नाम अध्यात्मज्ञानी है, भाषाके जैनग्रंथ जैनसिद्धांतोकी बराबरी नही करसकते. आजकल कई श्रावक भाषाके जैनग्रंथ खुद बाचलेते है, गुरुमुखसे नवतत्व, जीवविचार, दंडक, कर्मग्रंथ जैनभूगोल (क्षेत्रसमास) नयचक्र वगेरा ग्रंथ पढते नही, और धर्मके बारेमें भाषण देने लगते है, जब कोई उनको कठीन सवाल पुछे जबाब देसकते नही, इससे तो गुरुमुखसे पढना और फिर भाषण देना अछा है.—

८ पेस्तर मेने लिखाथा विद्यासागर अपने घरके पुरे भेदी है, और बारीकीसे हरेक बातकी तलाश करनेवाले हैं, कोई बतलावे इसमें मेने क्या गलत लिखा था, इसपर लालन आत्मवाटिका किताबके पृष्ठ (२०२) पर श्रीयुत पंडित लालन बयान करते है, लघुतम लालनना सद्भाग्य-के जैनशास्त्ररूप घरना पुराभेदी गुरुरत्न तेने मल्या, आगे फिर ऐसाभी लिखा है, एटलुं छतांपण आत्मरूप प्रकाश ए महेलमांतो छेज, ते छता वस्तु न देखाय तो नानाभाई लालनने कहवुं पडे के मोटाभाई अतरचक्षु उघाडो.—

(जबाब.) आत्मरूप महेलमा रहीहुइ वस्तु वडेभाइकों नही दिखाई देती या छोटे भाईकों पहले इसबातको, सौचो! अध्यात्मज्ञान किसको कहना इसकी फिर तलाशकरो और जैनशास्त्रके पुरे भेदी बनो, विद्यासागरन्यायरत्नशांतिविजयजी श्रीयुत पंडित लालनको अध्यात्मज्ञानके बारेमे कहते है, अपना अतर् चक्षु खोलो, दरअसल! अध्यात्मज्ञान वो है, जिसके पानेसे एश आरामकी चीजोंपर ममत्वभाव कम होजाय, और धर्मपर निगाह बढे, ऐसा न हो तो फिर वो अध्यात्मज्ञान कहनेमात्र है, असली नही.—

९ आगे लालन आत्मवाटिका किताबके पृष्ठ (२०३) पर श्रीयुत पंडित लालन इस मजमूनकों पेंश करते है, जेवो तेवो पण जे आपनो शिष्य भले ते भापाना ग्रंथ वाचतो होय, पण आपना सुंदरनाममांथीज ते शांति सीख्यो होवाथी ते सामे तो शुं परतु जरा पासे उभवाने पण प्रयत्न करे, अंगुली पकडे ने सुतर्कना पण उत्तर मागे.—

(जवाब.) भापाके ग्रंथ वांचनेवाले सुतर्कके उत्तर क्या मांग सकेंगे, अंगुली पकडना या पासमें खडे होना, जब बनसके अगर गुरुगमसे जैनागम पढेहो, शांतिविजयजीने पेस्तर सुतर्कके उत्तर दिये है, देते है, और अगर कोई फिर पुछेगा तो आगेकोभी देयगे, मगर इतना यादरहे! भापाके ग्रंथ जैनागमके सूत्रसिद्धांतकी बराबरी नही करसकते, भापाके ग्रंथ वांचने पढनेवालोंमे कइजगह गलती होजाती है, जैसे, महानिशीथसूत्रमे लिखा है, कलंकिनामका राजा श्रीप्रभअणगारके वख्तमे होगा, युगप्रधानयंत्रमे लिखा है श्रीप्रभअणगार आठमे उदयके पहले युगप्रधान होवेंगे, आजकल इस भरतक्षेत्रमे तीसरा उदय चलता है, इसलिये सूत्रसिद्धांतके फरमानसे कलंकीनामका राजा अबतक नही हुवा, इधर भापाके ग्रंथ बनानेवालोने पांचमें आरेकी सज्झायमें लिख दिया, ओगणीसे चौदोतरामें होशे कलंकी राय, यह बात महानिशीथसूत्रके फरमानसे विरुद्व है, दुसरी बात, तीर्थंकर रिपभदेवमहाराजने जब वार्पिक तपका पारणा किया, तब ईक्षुरसके एक घडेसें कियाथा, ऐसा आवश्यकसूत्रकी टीकामे लिखा है, (१०८) इक्षुरसके घडोंसें पारणा किया कहना गलत है, देखिये! भापाके ग्रंथ बनानेवालोंमें गलती होजाती है या नही, तीसरी बात, भापाकी कविता बनानेवालोंने माणिभद्रजीकी आरती बनाकर चलादिइ, आरती तीर्थंकरोंकी होती है, चौथी बात, एक लावनी बनानेवाले कविने जोड दिया कि—तीर्थंकर पार्श्वनाथमहाराजने एक जलतेहुवे

लकडेमेसें नाग नागिनी दो निकाले, मगर शास्त्रोंमें लिखा है, एकीला नाग जलताहुवा निकाला था, बस! इसीतरह भाषाके ग्रंथोमे गलती होजाती है, भाषाके ग्रंथ सूत्रसिद्धातकी बराबरी नही करसकते, इसीतरह भाषाके ग्रंथ बांचनेवाले सूत्रसिद्धात पढेहुवेकी बराबरी नही करसकते, श्रीयुत पंडितलालनकों मालुम हो आप सूत्रसिद्धातके पढेहुवेके नजीकमे खडे होनेकी उमेद रखते हो, मगर वो पार पडना दुसवार है, छोटा जहाज समुंदरके किनारेपर फिर सकता है, बडे समुंदरमे सफर नही करसकता, मगर बडेबडे जहाज बडे समुंदरमेभी सफर करसकते है, इसलिये सूत्रसिद्धातके पढेहुवे जैनमुनि धर्मशास्त्रकी माहितीमे भाषाके ग्रंथ पठनेवालोसे ज्यादा जानकार होते है, ऐसा समजो.–

१० आगे लालन आत्मवाटिका कितावके पृष्ठ (२०५) पर श्रीयुत पंडित लालन इस दलिलको पेंश करते है, आत्मज्ञान विनाना सघला ज्ञान विभाविक होवाथी शुभ होय ने अशुभ पण होय.–

(जवाब.) आत्मज्ञान मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्याय और केवलज्ञानमे आजाता है, जुदा नही, तीर्थंकर गणधरोने जैनशास्त्रोमे पाच ज्ञान फरमाये, श्रीयुत पडित लालन आत्मज्ञानको पाच ज्ञानमे शुमार करते है, या जुदा? इसका खुलासा करे, मे पेस्तर लिखचुका हुं असली आत्मज्ञानी दुनियादारीकी चीजोको देखकर उसमे लीन नही होते, बल्कि! उनसे छुटनेकी ख्वाहेस रखते है.–

११ फिर लालन आत्मवाटिका कितावके पृष्ठ (२०८) पर श्रीयुत पंडित लालन बयान करते है. आटला प्रमाणोपकारना बदलामा आत्म प्रमाणरूप गोचरी लघुबंधु लालन वहोरावे ते शुं बडील बंधु अंगीकार करवानी कृपा नही करे?

(जवाब.) वडील बंधुकों शास्त्रोक्तप्रमाणरूप आहार मीलगया है, फिर उनको कल्पित प्रमाणवाली गोचरी लेनेकी क्या जरुरत ? जैनशास्त्रोंमें प्रमाण दोतरहके मानेगये हैं, एक प्रत्यक्षप्रमाण, दुसरा परोक्षप्रमाण, नैयायिकवैशेषिकमजहबमें चार प्रमाणभी मंजुर रखे हैं, अवल प्रत्यक्षप्रमाण, दुसरा अनुमानप्रमाण, तीसरा उपमानप्रमाण, और चौथा शाब्दप्रमाण, इनसें जुदा आत्मप्रमाण श्रीयुत पंडितलालन किधरसें लाये ? विद्यासागर शास्त्रोक्त प्रमाणकी बात मंजुर करसकते हैं, विना शास्त्रसवुतकी बात मंजुर नही करते, किसीकी बुद्धिमें या किसीके अनुभवमें कोई बात न उतरे उनके कर्मोदयकी बात है, शांत्यादिगुण चाहे जितने पैदा करो, मगर विना श्रद्धाके-वे-कारआमद नही होसकते.-

१२ आगे लालन आत्मवाटिका किताबके पृष्ठ (२०९) पर श्रीयुत पंडित लालन इस मजमूनकों पेश करते है, पोतानी नानी बहेन सुंदरीने एम लाग्युं के मारा मोटाभाई बाहुबलिजी आटलुं आटलुं कष्ट करेछे, आखा शरीरे वृक्षलताओ विटाइ गइछे, पोतानी तपश्चर्यानुं फल पामता नथी, त्यारे नानीबहेन सुंदरीने उपयोग आपवो पड्यो के-वीरा गजथकी उतरो.-

(जवाब.) बाहुबलिजीकी नानीबहेन सुंदरी उपयोग क्या देसकेगी ? तीर्थंकर रिषभदेव महाराजने अपने केवलज्ञानसें जानकर कहाथा, जब उसको मालुम पडा था, बात क्या थी, और श्रीयुत पंडित लालनने किस तरकीबसे लिखी, आजकलके कितनेक श्रावक अपने दिलमें शुमार कररहे हैं, जैनमुनिजनोंमें संप नही, धर्मक्रियामें कमजोर होगये है, मगर उन श्रावकोंको अपने बरतावपर खयाल नही, हम धर्मक्रियामें किसतरह चलरहे हैं, ? हमारेमें संप कैसा है ? पर उपदेशमें कुशल बनना इससे तो अपने बरतावपर खयाल करना जरुरी है, भावित आत्माअणगार बाहुबलिजी महामुनि थे, उनकी भूल सुंदरीसाधवीजी क्या निकाल

सकेगी ? इसीतरह शांतिविजयजीकी भूल श्रीयुत पंडित लालन क्या निकालेगें ? पहले अपने ज्ञानदर्शनचारित्र गुणमे खयाल करे, आजकल जैनमुनि हिंदके हरेक भागमे सफर कररहे है, श्रावकोंकों मुताबिक जैनशास्त्रके तालीमधर्मकी देते हैं, देवद्रव्यके लिये जैनश्वेतांबर तीर्थोंके लिये और धर्मसुधारेके लिये कहते है, मगर सुननेवाले उसपर अमल न करे, उसमे जैनमुनिका क्या दोष ? मुनिजनोंकी भूल निकालनेवाले श्रावक दीक्षा लेकर धर्मको तरक्की देवे, बडा फायदा होगा.-

१३ फिर लालन आत्मवाटिका किताबके पृष्ठ ( २०९ ) पर श्रीयुत पंडित लालन इस मजमूनको पेंश करते है, बाहुबलिजीनुं अनुकरण करतां नानीवहेन जेवो लालन कहे छेके अंतर्चक्षु उघाडी आत्मगुणने आत्मगुणीने जोयो के तरतज उपशम आकाशमां आत्मचंद्रनी दिव्य प्रभाना दर्शन थशे.-

(जवाब.) आत्मचंद्रकी दिव्यप्रभाका दर्शन जमानेहालमें नही होसकता, सबब इसवख्त केवलज्ञान नही रहा, आत्मा अरूपी है, उसकी प्रभा कहांसें आसके ? प्रभा छायावगेरा गुण पुद्‌गल परमाणुंके हैं, आजकल संपूर्ण धर्मध्यान नही रहा, शुक्लध्यान आनेकी तो बातही कहां रही ? जमानेहालमे मनुष्योंकों ज्यादा आर्तध्यान ज्ञानीयोंने फरमाया, वे अरूपीआत्माकी प्रभा कैसे देखसकेगें ? श्रीयुत पंडित लालन अध्यात्मज्ञानके बारेमें अंतर्चक्षु खोलकर देखे, और उसपर बरताव करे, केशरका तिलक करनेसें या सभामे भाषण देनेसें आत्मज्ञान होजाय यह बात शिवाय केवलज्ञानीके दुसरा कौन कहसके, अवल जिज्ञासुमें श्रद्धागुण होना चाहिये, जैनशास्त्रका ज्ञान हासिल करना श्रावकके ( २१ ) गुण और ( १२ ) व्रत इख्तियार करना आत्मगुण पैदा होनेका सबब है, वाग्विशारद बनना इससे शास्त्रविशारद बनना ज्यादा जरुरत है.-

१४ आगे लालन आत्मवाटिकाके पृष्ठ ( २१५ ) पर श्रीयुत पंडित लालन तेहरीर करते है, विद्यासागरना दफतरमां जवापनी भरतीरहे, अने ते पण मुद्दासर, एम न थाय त्यारे तो लघुतम बंधुने कहेवुं पडे के वीरा गजथकी उतरो ने आत्मसागरमां डुबकी मारी पछी दफतरमां जुवो, एटले सागर पण नही खुटे एवो अने मीठो थई रहशे.

( जवाब. ) वीरा गजथकी उतरो यह कहना इसलिये बेकार है, यहां इसका कोई संबंध नही, आत्मसागरमें डुबकीमारनेकी जरुरत जबपडे अगर उनके पास जवावरूपी कींमती मोती मौजुद न हो, विद्यासागरका दफतर उनके हाथमें है, जो शख्श जिसतरहका जवाब मांगे उसतरहका जवाब देते हैं, फिर सागरमें डुबकी मारनेका क्या काम है ? विद्यासागरने जो कुछ जवाब दिये मुद्दासर दिये है, जिनकों शक हो, फिर पुछे, जवाब देता रहुंगा,

१५ तारिख ४ जून सन ( १९११ ) ईस्वीके जैनपत्रमें श्रीयुत पंडित लालनने तेहरीर किया था, गृहस्थ होवाछता परमात्माये उपदेशेला शांत्यादिगुणोंवडे गुरूपणुं होवुं ए लालननी दृष्टिमा साधुगुरु करतां उच्चतर लागेछे.-

( जवाब. ) श्रीयुत पंडित लालनकी दृष्टिमें गृहस्थके शांत्यादिगुण साधुगुरुसें उच्चतर दिखाई देवे इससें क्या हुवा ? तीर्थंकर गणधरोंकी दृष्टिमें गृहस्थके शांत्यादिगुण साधुमहाराजके पंचमहाव्रतरूप गुणके सामने उच्चतर नही दिखाई देते, तीर्थंकर गणधरोंका फरमान हैं, जैनमजहबमे पंचमहाव्रतधारी जैनमुनि धर्मगुरु हो सकते हैं, गृहस्थ चाहे जितने शांत्यादिगुणवाले होजाय क्या हुवा ? जबतक संसार छोडकर पंचमहाव्रतरूप वडागुण हासिल नही करसकते धर्मगुरु नही बनसकते, इसलिये कहा जाता है, गृहस्थके शांत्यादिगुण साधुमहाराजके पंचमहाव्रतरूप बडे गुणके सामने उच्चतर नही.-

[जैनआगम आवश्यकसूत्रके वंदनाअध्ययनमें
पाठ है –]

**समणं वंदिज्ज मेहावी, संजयं सुसमाहियं,**
**पंचसमयं तिगुत्तं, असंयमं दुगंछगं, १**
**असंजयं न वंदिज्जा, मायरं पियरं गुरुं,**
**सेणावयं पसथ्थारं, रायाणं देवयाणि च, २**

(अर्थः) पंचमहाव्रतधारी मुनिकों धर्मगुरूमानकर वंदन करना चाहिये, गृहस्थ पंचमहाव्रतधारी नही, इसलिये वे जैनमजहबमें धर्मगुरु नही कहे जासकते, और न उनको धर्मगुरु समजकर वंदन किया जासकता, चाहे माता, पिता, सेनापति, प्रशस्तार, राजे, महाराजे या देवता क्यों न हो ? जैनमजहबमे पंचमहाव्रतधारी मुनि धर्मगुरु होसकते है, माता पिता वगेरा दुनयवीकारोबारमे बडे हैं,–बेटाका फर्ज है, उनको उसहालतमे बडे समजकर नमन करे, किसी गृहस्थने दुसरे गृहस्थसे व्यावहारिक विद्या पढि हो तो वे विद्यागुरु होसके मगर धर्मगुरु नही होसके, यहां धर्मगुरुका बयान चला है.–

१६ तारिख ४ जून सन (१९११) के जैनपत्रमें श्रीयुत पंडित लालनने लिखा था, मुनिमहाराज अमने क्षमाकरो, तमारा उपदेशथी अमे एवुं सिख्या छिये के गुणीनो राग करवो.–

(जवाब.) गुणी शख्शोंका राग करना मुनिजनोसे सीखे हो तो अछी बात है, इसीतरह दुसरे श्रावकभी सीखे होंगे, मगर उस बातका यहा क्या संबंध था ? यहा सबंध चला है धर्मगुरु मानने न माननेका, इसपर खयाल किजिये ! जैनमजहबमे अरिहतको और सिद्धमहाराजको देवतरीके मानेगये, आचार्य उपाध्याय और साधुकों धर्मगुरु माने हैं, मगर गृहस्थको धर्मगुरु मानना किसी जैनशास्त्रमे नही फरमाया.–

१७ तारिख १ अकटोबर, सन (१९११) इस्वीके जैनपत्रमें श्रीयुत पंडित लालनने इसदलिलकों पेंश किइथी, गृहस्थनां गुणो जो साधुओथी सहन न थता होय तो साधुने शांत्यादिगुणो गृहस्थपासेथी सीखवा.–

(जवाब.) जैनमुनियोंके पंचमहाव्रतरूपी गुण जिसजिस श्रावकसें सहन न होसकते हो–वे–खुद दीक्षालेकर पंचमहाव्रतरूप गुण हासिल करे, या जैनमुनिके पास रहकर सीखे, नवतत्व, जीवविचार, दंडक, कर्मग्रंथ, क्षेत्रसमास और नयचक्र वगेरा षट्द्रव्यकी चर्चाके ग्रंथ गुरुगमसे पढे, फिर सभामें भाषण देनेकों तयार होवे दुनियादारीकी विद्या पढनेसें या मुल्कमुल्ककी मफर करनेसें जैनशास्त्रका ज्ञान हासिल होगया, ऐसा कहना नहीं वनसकता, कितनेक जैनश्वेतांबरश्रावक ऐसाभी कहा करते है, हम धर्मक्रियामें शिथिल आचारवाले जैनमुनियोंकों धर्मगुरुतरीके नहीं मानते, (जवाब.) कौन कहता है, मानों, जिसकी मरजी न हो न मानें, जैनमुनियोको श्रावकोंकी क्या परवाह है, ? जैनमुनि ऐसे संशयमे पडेहुवे श्रावकोंकों श्रावकतरीके नही मानेगें, और व्याख्यान धर्मशास्त्रका भी नही सुनायगें, जो कमहिंमतवाले जैनमुनि है, वे चाहे श्रावकोंके कहने मुताविक चले, मगर जो पढेलिखेहुवे हिम्मतवहादूर जैनमुनि है वे श्रावकोंके कहनेंमे कैसे चलेंगे ?

१८ आगे श्रीयुत पंडित लालन बयान करते है, तपगछ अंचलगछ खरतरगछवाले पोतपोतानां उपाश्रयमां सामायिक प्रतिक्रमण करे छे, तेओ जिनदया तथा सामान्यकेलवणी विगेरेमां ऐक्यता शामाटे न करसके ?

(जवाब.) जिनदया और सामान्यकेलवणीमे ऐक्यही है, मगर तपगछ अंचलगछ खरतरगछ वगेरा कइ वर्सोंसे चले आते है, आजतक किसीने ऐक्यता नही करवताई, अगर कोई करके वतलावे तो अछी बात है, संप करना सव कहते है, जैनश्वेतांबर

कोन्फरन्सके मंडपमे संपकरनेका ठहरावभी कियाथा, मगर उस-मुजब किसीने संपकरके वतलाया नहि, जैसा कहना वैसा कर वतलाना वहादूर शख्शोंका काम है.–

१९ अगर कोई श्रावक इस दलिलको पेशकरे, हमकों दुनियादारीके काम वहुत रहते है, इसलिये देवपूजा, शास्त्रश्रवण, व्रतनियम, सामायिक प्रतिक्रमण तीर्थयात्रा वगेरा धर्मके काम हम नही करसकते.–

(जवाब.) क्यौ नही करसकते ? जैसे संसारके काममे वख्त मिलता है, धर्मके काममेंभी वख्त निकालकर धर्मकाम करते रहो, भरतचक्रवर्त्ती जैसे वडे राजे होगये, जिनकों अनहद कामकाज था, मगर वेभी देवपूजा तीर्थयात्रा व्रतनियम और धर्मगुरूओंकी खिदमत करते थे, उनके जैसा तो तुमको कामकाज नही, नाहक ! वहाना क्यौ करना, संसारके काममें पुरे और धर्मके काममे अधुरे.–

२० जमाने हालमें सरागसंयम रहा है, वीतरागसंयम नही रहा, सराग प्रकृतिवालोंको असंयमी कहना नही वनसकता, सरागसंयमी और वीतरागसंयमीके भेदोंकों अपने खयाल शरीफमें लाओ, और मुताविक उसके अमल करो, पहले जैसे धर्मपावंद जैनमुनि नही रहे, वैसे पहले जैसे धर्मपावंद श्रावक नही रहे, जैसा जमाना है, वैसे साधु श्रावक मौजूद है, अगर कोई श्रावक दीक्षा लेकर धर्म करे तो उसकी तारीफ होगी, किताब लालन आत्मवाटिकाके लेखका जवाब खतम हुवा.–

---

## [ बयान आर्य समाज, ]

१ इसमें वयान आर्यसमाज और उसको स्थापन करनेवाले श्रीमद् दयानदसरस्वतीजीका जीवनचरित्त, उनके उसूल वतलाये है, दयानंदसरस्वतीजीने जो सत्यार्थप्रकाश ग्रथके वारहमे समुल्लासमे जैनमजहबपर आक्षेप कीये है, उनका जवाबभी इसमे

दर्ज है, जिसको पढकर हरशख्श खुश होगे, इसमें कोई बात गलत हो और उसपर कोई कुछ लिखना चाहे शौखसें लिखे, माकुल जवाब दियाजायगा, दयानंदजीका जीवनचरित और उनकी तर्फदारीके लेख पढनेसे जाहिर होता है, वे मुल्क गुजरात काठियावाडकी सरहद्पर राज्य मोरवी इलाकाके रहनेवाले ब्राह्मण थे, और दुनियादारीकी हालतमे उनका नाम मूलशंकर था, श्रीमद् दयानंदजी अपने बारेमे लिखते है, जब में घरसें चला संवत् ( १९०३ ) विक्रमी था, उनके फरमाने मुजब वे कई साधु संन्यासीयोंसे मीले, इल्म पढे और संन्यासी बने, श्रीमद् दयानंदजी संस्कृतविद्याका जानकार पंडित थे, और चारवेदकों मंजुर रखते थे, मगर मूर्त्तिपूजासें उनकों इनकार था.–

२ संवत् (१९२५) के अर्सेमें दयानंदसरस्वतीजीने आर्यसमाज स्थापन किया, वेदोंमें मूर्त्तिपूजा दुरुस्त फरमाई, मगर ये मूर्त्तिपूजाकों मंजुर नही रखते थे, संवत् ( १९२६ ) के अर्सेमे जब श्रीयुत दयानंदजी ब मुकाम काशी तशरीफ लेगयेथे स्वामी विशुद्धानंदजी तथा बालशास्त्रीजीके शाथ उनका धर्मचर्चाके बारेमें वादानुवाद हुवा, स्वामी विशुद्धानंदजी और बालशास्त्रीजी सनातन वैदिक मजहबके थे, और मूर्त्तिपूजाकों मंजुर रखते थे, संवत् ( १९३१ ) के अर्सेमें श्रीमद् दयानंदसरस्वतीजीका बनायाहुवा सत्यार्थप्रकाश ग्रंथ छपकर जाहिर हुवा, उनका फरमाना था वेद सत्यविद्याओका पुस्तक है, और इनका पढना पढाना सब आर्योंका धर्म है, संवत् ( १९३१ ) और (१९३२) के अर्सेमें दयानंदसरस्वतीजी बंबई होकर शहर पुनातर्फ तशरिफ लेगये, और फिर वहांसे वापिसलोटकर देहली पंजाब लुधिहाना अमृतसर लाहोरतर्फभी सफर किई, शहर लाहोरमें जब दयानंदसरस्वतीजी व्याख्यान देते थे, सनातन वैदिक मजहबवाले इनसे विरुद्ध थे, सबब सनातन वैदिक महजबसें इनका व्याख्यान जुदी तरहका था.–

३ संवत् (१९३९) के अर्सेमें श्रीमद् दयानंदजीकों अपनी पूर्वोक्त संपूर्ण रचना तथा व्याख्यानोंका खयाल छोडकर नवीन सत्यार्थप्रकाश लिखना पडा, जो पहलेके सत्यार्थप्रकाशसें तफावतवाला था, मेरेपास इसवख्त तीनतरहके सत्यार्थप्रकाश मौजूद है, पुराना सत्यार्थप्रकाश और नवीन सत्यार्थप्रकाश चतुर्थ आवृत्ति वैदिकयंत्रालय संवत् (१९४८) अजमेरका छपाहुवा सत्यार्थप्रकाश मेरेपास मौजूद हैं, किताब सत्यार्थप्रकाशके पृष्ठ (४१०) पर श्रीमद् दयानंदसरस्वतीजी लिखते हैं, जैनलोग कहते हैं, जीवही परमेश्वर होजाता है, अपने तीर्थकरोंहीकों केवली मुक्ति और परमेश्वर मानते हैं, अनादि परमेश्वर कोई नही.—

(जवाब.) परमेश्वर अनादि हो तो दुनियाभी अनादि क्यौं नही. अगर दुनिया ईश्वरने बनाइ तो ईश्वरकों किसने बनाया यहभी एक सवाल पैदा होगा, जैनलोग इस बातकों मंजुर रखते हैं, जीव निस्पृह होकर धर्म करे तो ईश्वर होसके, अगर जीव ईश्वर न होसकता हो तो उसकों धर्मकरनेकी क्या जरुत ? नाहक! दुनिया छोडकर साधु होना तप करना इतनेपरभी मुक्ति मिले नही, फिर धर्मकरनेसे क्या फायदा हुवा ? जैनलोग राग, द्वेष, काम, क्रोध. मोह, वगेरा षट्‌रिपुकों जीतनेवालोंकों ईश्वर बोलते है, उनहीका नाम तीर्थकर है, इसमें गलत बात क्या थी.—

४ आगे किताब सत्यार्थप्रकाशके इसी (४१०) पृष्ठपर श्रीमद् दयानंदजी तेररीर करते हैं, सर्वज्ञ, वीतराग, अर्हन्, केवली, तीर्थकृत् जिन, ये छह नास्तिकोंके देवताओंके नाम हैं.—

(जवाब.) बतलाना चाहिये, नास्तिक मजहबके कौनसे ग्रंथमे ये छह नाम लिखे है, बडे ताज्जुबकी बात है, जो लोग देव नही मानते, वे सर्वज्ञ वीतरागकों क्यौ मानने लगे थे, दरअसल! ये नाम जैनमजहबके देवोंके हैं, नास्तिकोंके नही.—

५ फिर सत्यार्थप्रकाशके पृष्ठ ( ४३६ ) पर श्रीमद् दयानंदजी बयान करते हैं, जितना मूर्त्तिपूजाका झगडा चला है, सब जैनोंके घरसें चला है.–

( जवाब. ) मूर्त्तिपूजाका रवाज जैनोंके घरसें नही चला, बल्कि! दुनियामें कदीमसें चला आता हैं, सनातन वैदिकमजहबवाले मूर्त्तिपूजाकों मंजुर रखते हैं, मेने श्रीमद् दयानदसरस्वतीजीकी फोटोग्राफकी बनीहुई संन्यासीपनेकी तस्वीर देखी है, फर्ज करो! आपकी तस्वीर आपको माननेवाले शख्श आईनेमे लगाकर अपने मकानमें इज्जतसे रखे तो यह मूर्त्तिकी इज्जत किई समजी जाय या नही, ? मूर्त्ति कहो या तस्वीर कहो बात एकही है, इसी-तरह कोई वैदिकमजहबके अवतारोंकी या रिषियोंकी तस्वीर कोई माने और उनकी इज्जत करे तो क्या! हर्ज है, ?

६ आगे सत्यार्थप्रकाशके पृष्ठ ( ४३७ ) पर श्रीमद् दयानंद-सरस्वतीजी लिखते हैं, जैनलोग पुराने मंदिरोकों बनवाने और सुधरवानेसे मुक्ति होना मानते हैं.–

( जवाब. ) इसमें क्या शक है, जिस शख्शका धर्मपर कामील एतकात होगा वही जिनमंदिर बनवायगा, या पुराना जिनमंदिर सु-धरवायगा, जिसका धर्मपर कामील एतकात हो उसकी मुक्ति क्यों न होगी? एकशख्शने पांचकोडीके फुलसे पूर्वभवमें जिनमूर्त्तिकी पूजा किई थी, और अगलेभवमें उसने अठारां देशका राज्य पा-याथा, उसका नाम कुमारपालराजा था. यह बात जैनलोग बेशक! सच मानते हैं, पांचकोडीके फुलपर सवाल नहीं है, उस शख्शकी मनोभावनापर सवाल है, जिस शख्शकी धर्मपर मनोभावना अछी हो, उसको फायदा क्यों न हो? अगर कहाजाय जैनलोग लाखोंरुपये जिनमंदिर बनवानेमें लगादेते हैं, इससे संसारका क्या उपकार होगा, ( जवाब. ) यज्ञशाला और हवनकुंड बनाकर उसमे कीमतीचीजोंका हवन करना इसमे संसारका क्या उपकार है, जैन-

लोग परमेष्ठिमहामंत्रको और वैदिक मजहबवाले गायत्रीमहामंत्रको बडा मानते है, जैनलोग रागद्वेष वगेरा अठारा दोषरहितको देव पंचमहाव्रत पालनेवालेको गुरु और केवलज्ञानीयोंका फरमाया हुवा अहिंसापरमो धर्म मानते है, इसमें गलत बात क्या थी? जैनोंके मानेहुवे तत्व ऐसे नही जिसपर कोई आक्षेप करसके,

७ फिर सत्यार्थप्रकाशके, पृष्ठ (४४९) पर श्रीमद् दयानंदजी इसदलिलको पेश करते हैं. जैनोके तीर्थकरोंकी उम्र इतनी लंबी है, जो आपलोग कभी मानसकेंगे नही, बडे तीर्थकर रिषभदेव हुवे, उनकी उम्र (८४०००००) लाख पूरवकी अजितनाथ तीर्थकरकी (७२०००००) पूरवकी इसतरह तीर्थकरोंकी बडीबडी उम्र जैनलोग मानते हैं, यह कभी संभव नही होसकता.–

(जबाब.) क्यों नही संभव होसकता? पेस्तरके मनुष्य बडीबडी उम्रवाले होतेथे, जानवर और परींदेभी बडेबडे होते थे, इसीतरह मकान कोट किलेभी बडे थे, वैदिक मजहबमें, सत्य, द्वापर, त्रेता, और कलियुग ये चारयुग मानेगये हैं, जैनलोग एक कालचक्रके (१२) आरे मानते हैं, जिसमें छह आरे चढते और छह आरे उतरते, इसमें कोटाकोटि सागरोपम काल बतीत होजाता है, चोथे आरेमे चौइस तीर्थकरोंका होना जैनलोग मानते हैं, (१००) वर्स पेस्तर जैसी लंबी उम्रवाले मनुष्य थे अब कहा है? हजार वर्स पहले और इसतरह लाख वर्स पहले क्रोडवर्स पहले बडी उम्रवाले मनुष्य क्यों नहोगें? जिस बातको इन्साफ कुबुल करसकता है, उसको कोई असभव कैसे कहसके पेस्तर बडीबडी उम्र और बडी बडी ताकातवाले मनुष्य होते थे, इसमे कोई असंभव नही.–

८ आगे सत्यार्थप्रकाशके पृष्ठ (४५६) पर श्रीमद् दयानंदजी तेहरीर करते हैं, जैनलोग कुरुक्षेत्रमे (८४) हजार नदीयें मानते हैं, (समीक्षक) भला! कुरुक्षेत्र बहुत छोटा देश है उसकों न देखकर एक मिथ्या बात लिखनेमे इनकों लज्जाभी न आई.–

(जवाब.) श्रीमद् दयानंदजी जिसकों कुरुक्षेत्र कहते हैं, जैनलोग उस कुरुक्षेत्रमें (८४) हजार नदीयोंका होना नही कहते, जैनलोग उस कुरुक्षेत्रकी बात कहते हैं, जो जंबूद्वीपके मेरुपर्वतकी नजीकमें कुरुक्षेत्र नामका देश है, उसमें (८४) हजार नदीयोंका होना बतलाते हैं, लज्जा उनकों आनाचाहिये जो दुसरे मजहबके शास्त्रकी बात विनासमजे लिखे, जिनको इस बातका शक हो, जैनमजहबका जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति शास्त्र देखे.–

९ जैनलोग जो समय, आवली, दिवस, पक्ष, मास, वर्ष पल्योपम, और सागरोपम वगेरा कालकी संख्या मानते हैं इसपर श्रीमद् दयानंदजी सत्यार्थप्रकाशके पृष्ठ (४१७) पर लिखते हैं, जैनोंका पल्योपम सागरोपम मापा ठीक नही.–

(जवाब.) क्यौं ठीक नही! जब पेस्तरके लोग बडी उम्र और बडे शरीरवाले थे तो उनका गणित और मापाभी बडा होना कौन ताज्जुबकी बात है? जहां जिसजमानेमें मनुष्य बडे हो वहां सभी चीजें बडी होना चाहिये, मकानात द्रख्त फल फुल सब बडे होना संभव है, मुल्क दखनमें नजदीक दोलताबादके इलोरेकी गुफा जो पहाडमें उकेंरी हुई है, जाकर देखो! कितनी बडी बनीहुई है, तीर्थोंमें कई बडेबडे मंदिर और मकानात मौजूद है, चितोडगढके किलेमे देखो! बडेबडे मिनार खडे हैं, पुराने मकानोंकी इंटे जो जमीनसें निकलती है, आजकलके मकानोंकी इटोंसें तीन चारगुनी बडी देखते हो, सोचो! फिर पेस्तरके वख्तका गणितभी क्यौं न बडा होगा? जो बात इन्साफ कुबुल करे उसको कोई कैसे इनकार करसकेंगें?

१० फिर सत्यार्थप्रकाशके पृष्ठ (४४७) पर श्रीमद् दयानंदजी लिखते हैं, जैनलोग हरीत शागपात और कंदमूल खानेमें जीवोंका मरना मानते है, यह अविद्याकी बात है.–

(जवाब.) हरीत शाग कंदमूल वगेरा वनास्पतिमे बेशक! जीवोंका होना जैनलोग मंजुर रखते है, यह बात सही है, वनास्पतिपर पानी सींचनेसें उसकी वृद्धि और नही सींचनेसें हानी देखी जाती है, अगर उसमें जीवोंका होना न हो तो ऐसा क्यौं होता? दुसरी बात यह है, लजवती वनास्पतिके पेंडकों हाथ लगादो तो वो संकोच होजाती है, और हाथ उठालो तो विकाशमान होती है, सोचो! उसमें जीव न होते तो ऐसा बनाव क्यौं बनता? असली हालतमें बनी रहती, सबुत हुवा हरीत शाक वगेरा वनास्पतिमे जीव जरुर है. और काटनेसें या खानेसें उसके जीव जरुर मरते है, इसमें जैनोंने कोई गलतबात नही फरमाई,

११ अगर कोई इस मजमूनको पेंश करे, नास्तिकमजहबसें जैनमजहब सबंध रखता है, और जैन बौध एक है,

(जवाब.) जैन और बौधमजहब एक नही और नास्तिक मजहबसें जैनमजहबका कुछ संबध नही, नास्तिकमजहबवाले पुन्य पाप स्वर्ग नरक आत्मा और ईश्वरकों नही मानते, जैनलोग मानते हैं, अगर कोई कहे, बौधलोग स्याद्वादन्यायकों मंजुर रखते हैं, मगर बौधलोग स्याद्वादन्यायको मंजुर नही रखते, जैनलोगही मजकुर न्यायको मंजुर रखते है, अगर कोई कहे, जैनलोग दशहजार कोशका एक जोजन मानते हैं, जवाबमे मालुम हो, जैनलोग ऐसा नही मानते, कहनेवालोंकी गलती है, अगर कोई इस सवालकों पेंश करे जैनमजहब (२५०००) वर्स हुवे चला और चीन वगेरा मुल्कोसे हिंदुस्थानमे आया, जवाबमे तलब करे, जैनमजहब तीर्थंकर रिषभदेवमहाराजसे चला है, जिसको आज करिब एक क्रोडाक्रोडी सागरोपम काल वतीत हुवा.—

१२ अगर कोई इस दलिलकों पेंश करे, पुराने वैदिक आचार्य औव्हट सायनाचार्य और महीधर वगेराके बनाये हुवे भाष्य ठीक नही, अंधकार बढानेवाले है, मूर्त्तिपूजा और तीर्थोमे जाना कोई

"मुक्ति" अर्थात् सर्वदुःखोंसें छुटकर बंधरहित सर्वव्यापक ईश्वर और उसकी सृष्टिमें स्वेच्छासें विचरना नियतसमयपर्यंत मुक्तिके आनंदको भोगके पुनः संसारमें आना.–

(जवाब.) मुक्तिमें गये हुवे फिर संसारमें आवे तो वो मुक्त कैसे कहा जाय, और मुक्ति और संसारमें फर्क क्या रहा ?

१८ फिर सत्यार्थप्रकाशके इसी पृष्ठपर श्रीमद् दयानंदसरस्वतीजी कलम (२०) मे बयान करते हैं, "देव" विद्वानोंको और अविद्वानोंकों "असुर" पापीयोंकों "राक्षस" अनाचारियोंको "पिशाच" मानता हुं.

(जवाब.) जब श्रीमद् दयानंदजी विद्वानोंकों देव और अविद्वानोंको असुर मानेते थे तो स्वर्गका मानना इस खयालसे गलत हुवा, वेदोंमें स्वर्गका मानना मंजुर रखागया है, इसलिये विद्वान् मनुष्य इस दुनियामें मौजूद है, और देव स्वर्गमें अलग है, इसमें कोई शक नही.–

१९ आगे सत्यार्थप्रकाशके पृष्ठ (५७९) पर श्रीमद् दयानंदसरस्वतीजी (२४) मी कलममें तेहरीर करते हैं, "तीर्थ" जिससे दुःखसागरके पार उतरेकि-जो सत्यभाषण, विद्या, सत्संग, यमादि, योगाभ्यास, पुरुषार्थ, विद्यादानादि शुभकर्म है, उसीको तीर्थ समजता हुं, इतर जलस्थलादिकोंकों नही.–

(जवाब.) सनातन वैदिक मजहबमें गंगा, प्रयाग, काशी, हरद्वार, जगन्नाथपुरी, द्वारिका, सुदामापुरी, सेतुबंधरामेश्वर और मथुरा वगेराको तीर्थ माने हैं, मगर, श्रीमद् दयानंदसरस्वतीजी तेहरीर करते हैं ये तीर्थ नही, यह बात सनातन वैदिक मजहबके शास्त्रोंसे खिलाफ है.–

२० फिर सत्यार्थप्रकाशके पृष्ठ (५७९) पर श्रीमद् दयानंदजी इस दलिलको पेश करते हैं, "यज्ञ" उसको कहते हैं कि–जिसमें विद्वानोंका सत्कार यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि–पदार्थ

विद्या उससे उपयोग और विद्यादि शुभगुणोंका दान अग्निहोत्रादि जिनसे वायु वृष्टि जल औषधोंको पवित्रता करके सब जीवोंको सुख पहुंचाना है, उसको समजता हु.–

(जवाब.) सनातन वैदिक मजहबके शास्त्रोंमे यज्ञ करनेका विधिविधान जुदीतरहका फरमाया, और श्रीमद् दयानंदजी फरमाते है, विद्वानोंका सत्कार करना. पदार्थविद्या उससे उपयोग और विद्यादि शुभगुणोंका दान अग्निहोत्रादि जिनसे वायु वृष्टि जल औषधोंकी पवित्रता करके सबजीवोंको सुखपहुचाना इसका नाम यज्ञ है.–

२१ फिर सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ (५७७) पर श्रीमद् दयानंदजी लिखते है, अनादि पदार्थ तीन है, एक ईश्वर, द्वितीय जीव, तीसरा प्रकृति, अर्थात् जगतका कारण इन्हीको नित्यभी कहते है, जो नित्यपदार्थ है उनके गुण–कर्म–स्वभावभी नित्य हैं.–

(जवाब.) जब–ईश्वर, जीव और प्रकृति–ये–तीनपदार्थ नित्य-माने–तो–फिर अनादि जगत् माननेमे क्या फर्क रहा? जैनलोग जगतको अनादि मानते हे वही बात इसमें पाइगई.–

[ बयान आर्यसमाजका खतम हुवा ]

---

## [बयान मजहब इस्लाम.]

१ इसमें इस्लाम मजहबका बयान, कुरानशरीफ और पेगंबर साहबोंकी केफियत, हज्ज मक्का, और जियारते मदीना, वगेराका मुख्तसर बयान है, इस्लाम मजहबकी किताबोंमें लिखा है, हजरत आदमसें पेस्तर मनुष्य नही थे, और जिन्न थे, सबसे अवल पेगंबर आदम हुवे, उम्र उनकी (९३०) वर्सकी थी, शीश, इद्रिस, नूह, हुद, सालेह, इब्राहीम, लूत, इसाईल, इसहाक, याकुब, युसुफ, सोएब, मुसा, हारुन, इलियास, अलीसय, समयूल, दाउद, सुलेमान, यन्स, जकरिया, यहिया, इशा, और अखीरके पेगंबर महम्मदसाहब

हुवे, इनकों सबसें अफजल मानते हैं, कुरानशरीफ आसानसे इन्हींके लिये उतरा.–

२ मुल्क अरबस्तानके मके शरीफमें इस्वीसन (५७१) अर्सेमें पेगंबर महम्मद साहब पैदा हुवे, और इस्वीसन (६११) में लोगोंकों मजहबी तालीम देने लगे, खुदातालाकों एक मानना, रसूलकों जानना, बुतपरस्तिकों छोडना, पांचदफे नवाज पढना, सालभरमें एक महिनेतक रोजे रखना, अगर ताकातहो तो उम्रभरमें एक दफे मके शरीफ जाकर हज्ज करना हुकम है, शराब पीना, जुआ खेलना वगेरा बुरी बातोंसे बचना और नेकीसे चलना फरमान है, कुरानशरीफकों मुसल्मान लोग कलामे इलाही मानते हैं, और सबका उसपर इमान है.

३ मुल्क अरबस्तानमें मका और मदीना इस्लाम मजहबकी जियारतगाह है, मकेशरीफमे मुसल्मानोंका काबा हज्ज करनेका मुकाम है, कुरानशरीफ सिपारा (४) में लिखा है, हरीमें काबेमें किसी जानवरका मारना जाइज नही, अगर कोइ भूलसे मारदेवे तो उसके बदलेंमें अपना पाला हुवा जानवर उसजगह छोड देवे, या दो भले आदमी उस जानवरकी कींमत ठहरावे उतनी कींमतसें गरीबोकों खाना खिलावे, दरमयान मकेके चोखूटी चारदिवारोंके अंदर काबा एक मकान है, जिसके कोनेंपर मिनार बने हुवे है, मुसल्मानोंकी एक जियारतगाह है.–

४ मकेसे मदीना करीब (२००) मील उत्तर वायुकोनकों बसा हुवा है, वहांकी मशजिद बहुत बडी (४००) खंभे शंगमुसाके बने हुवे है, (३००) चिराग हमेशां जलते है, बीचमें पेगंबर महम्मद साहबका मजार बना हुवा है, कइ पुस्तक अरबी जबानमे लिखे हुवे मके शरीफमें मौजूद हैं, मजहब इस्लाममे गुरुकों पीर या मुर्शद कहते है, और चेलेकों मुरीद कहते है, पेगंबर महम्मद साहब उनकी बेटी फातिमा दामाद अली और उनके दो बेटे हसन और हुसेन ये पंचतन पाक मानते है,–

५ रमजानमहिनेकी ( २७ ) मी तारिखकों कुरानशरीफ आसानसे उतरा, तारिख ( १३ ) रबीउल अवल सन (११) हिजरीके रौज पेगंबर महम्मद साहबका इंतकाल हुवा, उस रौज मुसल्मान लोग रौंजे रखते हैं, पेगंबर महम्मद साहबका हिजरीसन मुसल्मानोमें ज्यादा मानागया है, मोलवी, हाफिज, मुल्लां, काजी इनके मजहबी बुजुर्ग है,

६ शहर अजमेर शरीफमे जिस ख्वाजेसाहबकी दर्गाह है, हिजरीसन (६०७) में आप वहां तशरीफ लाये, अखीरसन (६२८) हिजरीमे अजमेरहीमें उनका इंतकाल हुवा, उनकी वहा दर्गाह बनाइ गई, हरसाल वहां उनका उरस होता है, यानी उनकी जियारतकेलिये हजारां आदमी जमा होते है, और खेरात करते है उसवख्त वहां बडा जलसा होता है, और बडी रवन्नक होती है, हिजरीसन इसवख्त ( १३४१ ) चलता है.–

[ एक शेयरबनानेवाले कामीलने खुदातालाकी तारीफमें कहाहै,– ]

न गोहरमेंहै और न है शंगमे
पर वो लेकिन ! चमकताहै सबरंगमे, १,

[ बयान इस्लाम मजहबका खतम हुवा ]

---

## [ धर्मके बारेमें हिदायत ]

१ दुनियामें कईतरहके मजहब हैं, सचे मजहबकी तलाशकरना सबका फर्ज हे, दुनियामे धर्म एक आलादर्जेकी चीज फरमाई, ब–दौलत धर्महीके सुखचैन पाया, और आइंदे पाओंगे, यह चोला न मालुम किसवख्त गिरजायगा, जो कुछ धर्मकीराहपर करोगे वही आइंदे फायदेमंद होगा, दौलत दुनिया-माल खजाना कोई शाथ

नही चलता, जो कुछ पुन्य करोगे वहीशाथ चलेगा, जीवकेशाथ पुन्यपाप हमेशां लगे रहते हैं, जब निस्पृह होकर धर्म करोगे, सब कर्मोंसें छुटकर मुक्ति पाओगे.–

## [ अंगस्फुरन निमित्त. ]

१ अंगं स्वप्नः स्वरश्चैव भौमं व्यंजनलक्षणे,
उत्पातमंतरिक्षं च निमित्तं स्मृतमष्टधा.

जैनशास्त्रोंमें निमित्तज्ञान आठतरहके फरमाये, इसीलिये इसका नाम अष्टांगनिमित्त कहागया, अष्टांगनिमित्त चौदहपूरवके ज्ञानसें जुदा नही, लेकिन! पूरवोका ज्ञान आजकल रहा नहीं, एकपूरव ज्ञानके पढेहुवेभी अब नहीं रहे, जितना अब मौजूद हैं, उतना भी समज लियाजाय बहुत कुछ है, निमित्तज्ञानके कई शास्त्र देखनेंमे आये, मगर जो अंगविद्या नामका शास्त्र आठहजार श्लोकका है, उसकी बराबरी कोई नहीं करसकता, अंगविद्याशास्त्र हिंदके जैनपुस्तकालयोंमें तलाश करते हैं, तो बहुतकम मिलते हैं, सबब कठिनशास्त्रके पढनेवालेही कम रहे फिर ज्यादा कहांसें रहसके? अंगविद्याशास्त्र प्राकृतभाषामें हैं, हरेकके समजमें नहीं आता, ऐसी विद्याये और आम्नाय इसमें दर्ज है जो बहुत कमलोगोके जाननेंमें होगी.–

२ पहला अंगस्फुरन निमित्त, दुसरा स्वप्नशास्त्र, तीसरा स्वरविज्ञान, यानी मनुष्य जानवर और परीदोंकी बोली सुनकर आगेका हाल जानना, चौथा भूमिकंपनिमित्त, पांचमा व्यंजननिमित्त, छठा रेखाविज्ञाननिमित्त, सातमा उत्पातनिमित्त और आठमा अंतरिक्ष-निमित्त, इन आठोंनिमित्तोंसें जोजो बातें काबील जाननेंके है, आगे सबका खुलासा लिखाजायगा, पेस्तर अंग फुरकनेका बयान सुनिये!

३ [ जैनशास्त्र उत्तराध्ययनके आठमे अध्ययनकी टीकामें पाठ हैं ]

**सिरफुरगे किररज्जं, पियमेलो होइ बाहुफुरणंमि,**
**अच्छिफुरणंमि अ पियं, अहरे पियसंगमो होई, १**

(अर्थ) दाहनी तर्फका मस्तक फुरके तो अमलदारी मिले, दाहनी तर्फका हाथ फुरके तो प्यारेका मिलापहो, दाहनी आंख फुरके तो प्रियवस्तु मिले, और नीचेका होठ फुरके तो स्नेहीका मिलापहो, यह बात मर्दके लिये कही गई है, इस अंगफुरकन निमित्तमें जोजो बात मर्दकेलिये दाहनें अगकी कहीजाय वो औरतकेलिये बामे अगकी जानना, और जो मर्दकेलिये बामे अगकी कहीजाय वो औरतकेलिये दाहने अगकी जानना, सबब अंगफुरकनेमें मर्दका दाहना और औरतका बामा अग अच्छा कहा.–

४ दाहनीतर्फका मस्तकफुरके तो हरतरहसे फायदा मीले, और इसीतरह दाहनीतर्फका निलारफुरके तोभी फायदा हो, और हुकम होदा मिले, निमित्तज्ञानके ग्रंथोंमे लिखा है.–

"शिरस. स्यंदने राज्यं स्थानलाभो ललाटके"

५ दाहनीतर्फका कानफुरके तो अपनी तारीफ सुनाई दे, और बामा कानफुरके तो बुराइकी बाते पेश हो.–

६ दाहनी भ्रूफुरके तो खुशीपैदा हो, बामी भ्रू फुरके तो दोस्तोंसें लडाई हो, दोनो भ्रूओंके बीच फुरके तो स्नेहीका मिलाप हो.–

७ दाहनी आख उपरसे फुरके तो इरादा पूर्ण हो, अगर नीचेसे फुरके तो मुकदमा हार जाय, निमित्तज्ञानके ग्रंथोंमे लिखा है.–

"नेत्रस्याधः स्फुरणमसकृत् संगरे भंगमाहुः
नेत्रस्योर्द्धं हरति सकलं मानुषं दुःखजालं,–"

सरक जाना, हवाखोरीको जाना, और आसानमें उडना, वगेरा वनाव स्वप्नमें ज्यादा देखता है, यहभी प्रकृतिके विकारका स्वप्न हुवा इसलिये फल न देगा, वृथा है, इसतरह कफ विकारसे आयाहुवा स्वप्नभी गलत है, स्वभावसे स्वप्न आता है, वोभी गलत, और सौचफिक्रसें स्वप्न आता है, वोभी गलत है, देवताकी प्रेरणासें जो स्वप्न आवे वो सचा जानना और उसका फल जरूर होगा, अपने सतधर्मके प्रभावसें जो स्वप्न आवे वोभी सचा जानना, और उसका फलभी होगा, पापके उदयसे जो स्वप्न आवे, वोभी सचा जानना, उसका फलभी उसशख्शकों जरूर मिलेगा.—

४ रात्रेश्चतुर्षु यामेषु दृष्टः स्वप्नः फलप्रदः<br>
मासैर्द्वादशभिः षड्भिस्त्रिभिरेकेन च क्रमात् ४<br>
निशांत्यघटिकायुग्मे दशाहात् फलति ध्रुवं,<br>
दृष्टः सूर्योदये स्वप्नः सद्यः फलति निश्चितं. ५<br>
मालास्वप्नोन्हि दृष्टश्च तथाधिव्याधिसंभवः<br>
मलमूत्रादिपीडोत्थः स्वप्नः सर्वो निरर्थकः ६

(अर्थः)—रातकेवख्त पहले पहेरमें देखाहुवा स्वप्न बारां महिनेमें फलदेगा, दुसरे पहरमें देखाहुवा स्वप्न छह महिनेमे, तीसरे पहरमें देखाहुवा स्वप्न तीन महिनेमें और चौथे पहरमें देखाहुवा स्वप्न एक महिनेमें फल देगा, दो घडी रातरहते वख्तका देखाहुवा स्वप्न दशरौजमें फल देगा, और सूर्योदयके वख्तका देखाहुवा स्वप्न जल्दी फल देगा, दिनमें सोतेहो और कोई स्वप्न आया वो गलत है, कई शख्शोकों दिनमें सोते हुवे स्वप्न आते हैं, कभी उसका फल मिलभी जाता है, मगर शास्त्रकारोंने वो बात प्रमाणमें नही गिनी, रातभर एकपीछे एक स्वप्न आते रहे उसको मालास्वप्न बोलते है,

शरीरकी पीडासे और तरहतरहकी हाजतसें जो जो स्वप्न आते है, वे सब गलत समजना, उसका कुछ फल न होगा.–

[ आर्या वृत्तम्, ]

५ इष्टं दृष्ट्वा स्वप्नं न सुप्यते नाप्यते फलं तस्य,
नेया निशापि सुधिया जिनराजस्तवनसंस्तवतः ७
स्वप्नमनिष्टं दृष्ट्वा सुप्यात् पुनरपि निशामवाप्यापि,
नायं कथ्यः कथमपि केषांचित्फलति न स तस्मात् ८
धर्मरतः समधातुर्यः स्थिरचित्तो जितेंद्रियः सदयः
प्रायस्तस्य प्रार्थितमर्थं स्वप्नः प्रसाधयति ९

(अर्थः )–अछा स्वप्न देखा और नींद खुलगई तो फिर सोना नही, जागते रहना चाहिये, याते फिर कोई बुरा स्वप्न आकर पहलेका फल बिगाड न डाले, बुरा स्वप्न देखकर जाग गये और रात बाकी रही हो तो फिर सोजानाभी बहेत्तर है, लेकिन! अफशोस है, भलेबुरेकी पहिचान सबलोग नहीं जानते, पहले अछा स्वप्न देखा और पीछेसे बुरा देखा तो अछेका फल गलत होजायगा, और बुरा स्वप्न फल देगा, सबब वो पीछेसे आया है, पहले बुरा देखा और पीछेसे अछा देखा तो पीछला अछा फल देगा, सबब पीछला स्वप्न पहलेवाले स्वप्नका फल रद करदेता है, जो शख्श साफदिल हो, जितेंद्रिय और रहेमदिल हो उसको आयाहुवा अछा स्वप्न ज्यादा फल देता है.–

६ अछा या बुरा जैसा स्वप्न आया सवेरे जिनप्रतिमाके सामने जाकर बयान करदो, मगर जिनप्रतिमाके सामने खाली हाथसे नही जाना, फल नैवेद्य रुपया पैसा या सोना महोर जैसी अपनी ताकात हो, लेकर जाना, और दर्शन कियेबाद जिनप्रतिमाके सामने खडे होकर मनमे बोलदेना, फला स्वप्न मुजे आजरातको दिखाई दिया, अगर अपनें शहरमे निर्ग्रंथमुनि मौजूद हो तो उनके सामने जाकर वंदन नमन करना और अदबके साथ आयाहुवा

स्वप्न सुनाना, और जो कुछ वे फरमावे उसपर अमल करना, निर्ग्रंथमुनि रुपये पैसे रखते नहीं, द्रव्यके त्यागी होते हैं, उनकों ज्ञानके पुस्तकमें या वस्त्र पात्र कंबल वगेरामें सहायता करना.–

७ अगर आपनें शहरमें जिनमंदिरका योग न हो, या निर्ग्रंथमुनि मौजूद न हो और अष्टांगनिमित्तकों जाननेवाला कोई निमित्तज्ञ मौजूद हों, तो उसके सामने जाकर आयाहुवा स्वप्न बयान करना, और मुताबिक निमित्तज्ञानके उसका फल पुछना मगर उसके सामनेभी खाली हाथसें नही जाना, रुपया नारियल या ताकात हो तो सोना महोर लेकर जाना, और पेस्तर उनके सामने भेटकरके फिर स्वप्नका फल पुछना, कितनेक कंजुस आदमी कह-देते हैं, ये तो हमारे घरके पंडितजी हैं, उनके सामने द्रव्यरखनेकी क्या जरुरत ? मगर नहीं, जरुर नारियल या कमसें कम रुपया दो रुपया रखना चाहिये, पेस्तरके जमानेमें पूर्वगत आम्नायके जानने-वाले निमित्तज्ञ मौजूद थे, भूत भविष्य वर्तमानकी बातें अमुक वर्समें महिनेमें या फलाने रौज हुई, होती हैं, और होगी, बतला देते थे, जमाने हालमें वैसे निमित्तज्ञानी रहे नहीं, जैसे मौजूद हैं, उनहीसें दरयाफ्त करना चाहिये, पहले जैसे दिलके दलेर गृहस्थ नहीं रहे, वैसे पहले जैसे निमित्तज्ञानीभी नहीं रहे, जैसा जमाना हैं, वैसा सबकुछ मौजूद हैं.–

८ स्वप्नमें जो शख्श हाथीपर चढकर समुंदरमें चला जाय चंदरौजमें सलतनत पावे, और राजा बने, सफेद हाथीपर सवार होकर जो शख्श स्वप्नमें नदीकनारे चावलोंका खाना खावे वोभी चंदरौजमें अमलदारी पावे, और राजा बने, स्वप्नमें जो शख्श अपने हाथोंसें समुंदर-तीर जाय, वोभी थोडे रौजमें राजा बने.–

९ स्वप्नमें देवगुरुका या तीर्थभूमिका दर्शन होना अछा है, इरादा पूर्ण होगा, देखीहुई चीजका स्वप्न आना गलत फरमाया,

रहना अछा हैं, इसलिये उसका स्वप्नआनाभी अछा फरमाया, स्वप्नमें कोई शख्श फुल गजरे पहनें या उसपर फुलोंकी वर्सा हो तो उसकों चंदरौजमे दौलत मीले.–

१० स्वप्नमे जो शख्श पानीसें भराहुवा सरोवर नदी कुंड या समुंदर देखे उसको चंदरौजमें दौलत मीले, मगर शर्त यह हैं, मजकुर स्वप्न अगर पित्तप्रकृतिके विकारसे देखा हो तो फल न होगा, स्वप्नमें आसानमे उडना अछा हैं, उस शख्शकों फायदा होगा, मगर इसमेंभी शर्त यह है, मजकुर स्वप्न वायुप्रकृत्तिके विकारसें देखा हो तो उसका फल न होगा, सबब वायुप्रकृतिके विकारसें भी ऐसा स्वप्न आता हैं.–

११ स्वप्नमें सूर्योदयका देखना, विनाधुवेकी जलती हुई आग देखना, ग्रह नक्षत्र दिखाई देना, जिनमंदिरके शिखरपर या राजमहेलपर चढगये देखना, फायदेमंद हैं, इरादा पूर्ण होगा, स्वप्नमे अपने शरीरपर चंदनका लेप होना, जवाहिरातके गेहनें पहनना या दुसरेकों शिंगार पहनेहुवे देखना अछा हैं, फायदा होगा.–

[ जैनशास्त्र उत्तराध्ययनके आठमे अध्ययनकी
टीकामे लिखाहै, ]

अलंकृतानां द्रव्याणां वाजिवारणयोस्तथा,
वृपभस्य च शुक्लस्य दर्शने प्राप्नुयाद् यशः १

( अर्थः ) शिंगारेहुवे हाथी घोडे दिखाई देना, या दुसरी कोई चीज शिंगारीहुई दिखाई दे तो अछा हैं, फायदा होगा, सफेद रंगका बैल दिखाई दे तो उमदा हैं, इज्जत बढेगी.–

१२ स्वप्नमे जिसका घोडा रथ आसन गाडी या वस्त्र चौर लेजाय उसका मानभंग हो, स्वप्नमे जो शख्श केशरी सिंह व्याघ्र हाथी या घोडे जोडेहुवे रथपर सवारहोकर मुसाफरी करे उसको चंदरोजमे सलतनत मीले, और फायदा हो, स्वप्नमे घोडेपर सवार होकर सफर करे, चंदरौजमे उसका इरादा पूर्ण हो, स्वप्नमे जिसकों

मोंतीयोंके भरेहुवे थाल दिखाई दे उसकों फायदा होगा, और वो धर्मकी तरक्की करेगा, स्वप्नमें जिसकों छत्र चमर दिखाई दे राज्यकी तर्फसें उसकों फायदा मीले, और जातबिरादरीमें इज्जत बढे.–

१३ अगर कोई बीमार शख्श बीमारीकी हालतमें चांद सूर्यका स्वप्न देखे तो अछा है, चंदरौजमे बीमारी रफा होगी, स्वप्नमें अपने घर-जलसा हुवा देखे तो खुशी पैदा होगी, स्वप्नमें अगर अपनेपर बिजली गिरी देखे उसकों केद होगी, स्वप्नमें बीणा और आरिसा दिखाई देना अछा हैं, चंदरौजमें फायदा होगा, स्वप्नमें जिसकों बीणा इनाम मिले उसकों औरतकी तर्फसें फायदा हो, स्वप्नमें धजा पताका जिसकों इनाममें मीले थोडे रौजमें उसकी इज्जत बढे, और सुखचैन पावे.–

१४ स्वप्नमें अगर कोई मीटीके बनेहुवे हाथीपर सवार होकर समुंदरमें प्रवेश करे और डूबे नहीं, वो चंदरौजमें राजा बनें, जहागिरी पावे, स्वप्नमें सोने-चांदीके थालमें खीरका भोजन जीमे उसकों खुशखबरी मिले, स्वप्नमें पकाहुवा फल दिखाई देना अछा हैं, फायदा हो, स्वप्नमें जहाजपर चढकर समुंदरमें सफरकरे तो दौलत मीले, अगर बीमारीकी हालतमें ऐसा देखे तो बीमारी रफा हो.–

१५ स्वप्नमें नाचरग दिखाई देना अछा हैं, खुशी पैदा होगी, मगर खुद नाचकरना अछा नहीं, स्वप्नमें गायनकरना अछा नहीं, मगर जिनमंदिरमें देवके सामनें गायन कियाजाय अछा हैं, स्वप्नमें कालेरंगकी चीजें दिखाई देना अछा नहीं, मगर हाथी घोडे गौ या देवीदेवता कालेरंगके दिखाई देवे तोभी अछे हैं, स्वप्नमें सफेद रंगकी चीज दिखाई देना अछा हैं, मगर कार्पास और नमक देखना अछा नहीं.–

१६ स्वप्नमें जिस शख्शकी औरतकों चोर लेजाय उसको नुकशान हो, स्वप्नमें जिसका पलंग या जुते चोर लेजाय उसको तकलीफ पेश हो, स्वप्नमें अपने आपकों मरगया देखे तो यह देखाव

जाहिरमें अछा नही हैं, मगर निमित्तशास्त्र फरमाते हैं, इसका फल अछा हैं, सुखचैन मिलेगा, स्वप्नमें उंठ बकरे या रासभपर सवार हुवा देखे तो बुरा हैं, दिलगीरी पैदा होगी, स्वप्नमें चदन कपूर नागरवेलके पान या सफेद फुल देखाई देना अछा हैं, फायदा होगा, स्वप्नमें कनेर या केशुके द्रख्तपर चढना बुरा हैं, रंज पैदा होगा.—

१७ स्वप्नमे जो शख्श गलेतक कीचडमे फसजाय उसका मरना नजदीक आया जानना, स्वप्नमे जिसके हाथ पान लंबे चढगये दिखाई दे उसकी इज्जत चढे, स्वप्नमें गांव नगर मकान या पहाड अग्निसें जलरहे हैं, और उसके शिखरपर कोई शख्श सहीसलामत खडा हो, ऐसा देखे तो उसको चंदरौजमें खुशी हासिल होगी, स्वप्नमे जिसके सोना चादी जवाहिरात या हथियार चोर लेजाय उसकी इज्जतमे धका पहुंचे.—

१८ स्वप्नमें गेहने आभूषण कपडा मकान सवारी या आसन जिसकों इनाममे मीले अछा हैं, खुशी पैदा होगी स्वप्नमें शिगारे हुवे मकान और हाथी घोडे दिखाई देना अछे दिनोंकी निशानी हैं, स्वप्नमे जिसकों कालेकपडे पहनीं हुई कालेरंगकी औरत दखन-दिशातर्फ घसीटकर लेजाय उसको मरनेकी आफत आवे.—

१९ स्वप्नमें जिसके मस्तकपर खजुरका द्रख्त उगगया दिखाई दे चंदरौजमें उसको मरणांत कष्ट हो, स्वप्नमें जो शख्श कालेकपडे पहनकर कालेघोडेपर सवार होके दखनदिशामें जाय उसको बुरे-दिन भोगने पडे, स्वप्नमें केलेके द्रख्तपर चढगया दिखाई दे चंदरौ-जमें उसकों दौलत मिले, स्वप्नमें जो शख्श गर्म जलताहुवा पानी पिया देखे, उसको बीमारी पैदा हो.—

२० स्वप्नमें सूर्य या चंद्रमाकों अपने हाथोंसे स्पर्श करे उसकों हुकम होदा मिले, स्वप्नमें जिसको मेंवा मिठाई बतौर इनामके मीले उसकों खुशी पैदा हो, और बीमारीसें आराम पावे, स्वप्नमें जिसकों

जवाहिरात लगीहुई अंगुठी इनाममें मिले, उसकों फायदा हो, और जिसकी अंगुठी गुमजाय तो नुकशान हो, स्वप्नमें जिसकों आसानके सितारे चमकते हुवे दिखाई दे उसपर राजा महेरबान हो, और इनाम देवे.–

२१ स्वप्नमें कोई शख्श मोतीयोंके भरेहुवे थाल दुसरोंकों बांट दे वो चंदरोजमें दौलत पैदा करेगा और धर्मकों तरकी देगा, स्वप्नमें जिसकों मिश्रीके भरेहुवे थाल दिखाई दे उसको खुशी पैदा हो, स्वप्नमें बागनगीचे और हरी वनास्पति दिखाई दे उसको हरसुरतसें फायदा मिले, स्वप्नमें जिसके मस्तकके बाल खिरजाय और दांत गिरपडे उसकों तकलीफ पेंश हो, स्वप्नमें श्मशानके लकडेपर या धनुष्यपर अपने आपकों चढा हुवा देखे, उसे मरनेकी आफत आवे.–

२२ स्वप्नमें अपने आपकों गिरफतार करनेंके लिये कोई आदमी आते हैं दिखाई दे उसकों राजकी तर्फसें जरीमाना हो, स्वप्नमें रींछ जानवरका दिखाई देना बुरा हैं, तकलीफ पेंश होगी, स्वप्नमें कुत्तोंका भोंकना देखे तो रज पैदा हो, स्वप्नमें जिसके पेटपर द्रख्त उगे उसकों बीमारी पैदा हो, स्वप्नमें लंबे शिंगवाले जानवर जिसकों भगाये फिरे सुअर या बंदर जिसकों डरावे उसकों राज्यकी तर्फसें खौफ पैदा हो, स्वप्नमें कालेपीले रंगके आदमी आनकर डरावे उसको मरनेकी आफत पेंश हो.–

२३ स्वप्नमें पानीसें भरेहुवे सरोवरमें बेठकर जो शख्श खीरका भोजन जिमे, वो चंदरोजमें सलतनत पावे और राजा बने, स्वप्नमें जो शख्श अपने शरीरके आंतरडोंसे किसी गांव या शहरकों लपेटदेवे वो अमलदारी पावे और राजा बने, स्वप्नमें अपनेकों कोई केदमें डाले, या गिरफतारकरके रस्सोसें बंधन बांधे अछा हैं, फायदा होगा, स्वप्नमें कोई शख्श ऐसा देखे मेनें तेलसें अपने शरीरपर मालीश करवाई उसकों बुरेदिन भोगने पडेंगें.–

२४ स्वप्नमें जो शख्श अपनी ताकातसे पहाडकों उखेड डाले वो चंद्रौजमें अमलदारी पावे, स्वप्नमें जो शख्श चूहा, बिलाव, गोह, या मुंगस ( नोलिया ) देखे तो अछा नही, तकलीफ पेंश होगी, स्वप्नमें जो शख्श अपने सिरसे लोहीकी धारा गिरती देखें वो चंद्रौजमें सलतनत पाकर हकुमत करे, स्वप्नमें जिसको जलताहुवा चिराग दिखाई दे उसका इरादा पूर्ण हो, स्वप्नमें जो शख्श आमके द्रख्त फल लगेहुवे देखे उसकों फायदा मीले.–

२५ स्वप्नमें हजार पांखडीके कमलपर बेठकर जो शख्श खीरका भोजन जिमे वो सलतनत पाकर राजा बने, स्वप्नमें बडेजोरके पवनसे अंधीआई देखे उसको चंद्रौजमें आफत पेंश हो, स्वप्नमें जिसके दांत सोनेके बनजाय उसको एशआराम मीले, स्वप्नमें गेहु या सफेद सरसों दिखाई देना अछा है, फायदा होगा, स्वप्नमे हाड और राख दिखाई देना बुरेदिनों निशानी है, स्वप्नमें दावानल अग्नि दिखाई दे उसको तकलीफ होगी, स्वप्नमे बडेबडे शेनकदार गांव नगर दिखाई दे तो खुशी पैदा हो.–

२६ स्वप्नमें कोई शख्श फुलगजरोंसे या गेंदसे खेल खेले उसको चंद्रौजमें दौलत मीले, स्वप्नमें आसमानके सितारोंका खीरजाना देखे, उल्कापात होना या भूमिकंप होना देखे उसको चंद्रौजमें रज पैदा हो, शरीरकी हाजतसे या तकलीफसे कइतरहके ख्याल दिखाई देते हैं, मगर वो सचे नहीं समजना, सचे ख्याल वोही जो देवताकी प्रेरणासें धर्मसें या पापकर्मसें दिखाई दिये हो, पेस्तर इस लेखमें बयान उसका लिखागया है, स्वप्नमें बुगला क्रोंच या काली मुर्धी दिखाई देना अछा हैं, फायदा होगा.–

२७ स्वप्नमे तेल कपास रूई और लोहा दिखाई देना बुरा है, नुकशान होगा, स्वप्नमे बगेर रोशनीके चादसूर्य दिखाई देना अछा नहीं, तकलीफ होगी, स्वप्नमे जिसके हाथ पाव कान नाक काटदिये गये दिखाई दे तो मरनेकी आफत पेश होगी, स्वप्नमे भूत पिशाचके

शाथ शराब पीतेहुवेकों आदमी या कुत्ते खेंचरहे हैं, ऐसा दिखाई देना, मरनेकी निशानी हैं, स्वप्नमें क्षयरोगकी बीमारीवाला शख्श उंठ भैंसे कुत्ते या गधेपर सवार होकर दखन दिशातर्फ चलाजाय उसका मरना नजदीक आगया जानो.–

२८ स्वप्नमें मकान या पहाड गिरगया देखे या मगरमछ अपनेको खागया देखे तो बुरा हैं, तकलीफ पेंश होगी, स्वप्नमें जिसके हाथ पांवको बेंडी लगी दिखाई दे तो अछा हैं, फायदा, होगा.–

[ दोहा. ]

वेरीका मर्दन करे पूरव उत्तर जाय,
जीता मित्र मिले सुपन ये सुपना सुखदाय, १
शुभ सुपनेकों देखकर शीघ्र उठो रख ध्यान,
परमपुरुपका ध्यानकर शुभफल चितो ज्ञान, २

२९ बीमार शख्श म्यानेपालखीमें बेठकर दखन दिशातर्फ जाय उसको मरणांत कष्ट हो.–

[ जैनशास्त्र उत्तराध्ययनसूत्रकी टीकामें
बयान है, ]

गायने रोदनं विद्यात् नर्तने वधबंधनं,
हसने शोचनं ब्रूयात् पठने कलहं तथा, १

( अर्थः )–स्वप्नमें कोई शख्श गायन करे तो उसको रौना पडे, नाचकरे उसकों वधबंधन हो, स्वप्नमें कोई शख्श हसे तो फिक्र पैदा हो, और स्वप्नमें पाठकरे तो उसे तकलीफ पेंश हो, भगवती सूत्रके ( १६ ) में–शतक छठे उदेशमें तेहरीर हैं, स्वप्नमें किसी शख्सकों कोई दुसरा शख्श आनकर हाथमें पकाहुवा फल देवे, उसकों चंदरौजमें फायदा हो, और दौलत मीले, स्वप्नमें कोई शख्श अपने आपकों हाथीपर सवार हुवा देखे, उसकोंभी चंदरौजमें दौलत और हुकम होदा मिले, स्वप्नमें घोडेपर सवार होकर सफर करना देखे उसकों चंदरौजमें फायदा होगा स्वप्नमें किसीने आन-

कर कहा, तुम यहासे चलेजाओ, उसको बुरे दिनोकी निशानी हैं, स्वप्नमें दूध झरती हुई गौ दिखाई दे उसको जमीनसे या जवाहिरातसें फायदा मिले.–

३० स्वप्नमे अरिहंत देव, सूर्य, चांद, देवविमान, समुंदर, सरोवर, सिंह, कल्पवृक्ष, कलश, राजा, हाथी, वृषभ या लक्ष्मीदेवी, जिसको दिखाई दे उसकों चंदरोजमें फायदा हो, और हकुमत पावे, स्वप्नमें जिसको भूत, पिशाच, राक्षस, गंधर्व, चांडाल, श्मशान, कुवा, हाड, बदशिकल औरत, चमडा, लोही, पथर, कांटेवालेद्रख्त, अंधेरा, लुलालंगडा, वामना-या, बडापवन और बडीधूप दिखाई दे तो उसको बुरेदिन भोगने पडे.–

३१ स्वप्नमे कोई अपने आपकों हंसपर सवारहुवा देखे उसकी इज्जतबढे, सिंहपर सवारहुवा देखे, उसको इनाम मिले, स्वप्नमें दोस्तसे मिलाप हो तो फायदा मीले, स्वप्नमें अपने आपको कपडे धोते देखे, तो कर्जेसें छुटजाय, स्वप्नमें अपने हाथ धोते देखे, एश-आराम मिले, पाव धोते देखे तो इज्जत बढे, स्वप्नमें अपने दाहने हाथपर सर्प काट गया दिखाई दे तो दौलत मीले, स्वप्नमें सफेद रंगका सर्प दिखाई दे तो फायदा हो.–

३२ स्वप्नमें कोई शख्श कुवा उलंघ जाय तो उसे अचानक दौलत मिले, स्वप्नमे अपने आपकों कडुवातेल पीते देखे तो उसको मरणांत कष्ट हो, स्वप्नमें आगके अगारे, पथर, धूल या लोहीका बरसात हुवा देखे तो बुरेदिनोंकी निशानी हे.–

३३ स्वप्नमें वानर शियार या कुत्ता अपने बिछौनेपर आनबेठे तो जानना अपनेकों बीमारी पेंश होगी, राक्षस वेताल या भूत अपने बिछौनेपर या शरीरपर आनेठे तोजानना मरनेकी आफत पेश होगी.–

३४ स्वप्नमे अगर कोई शख्श जहेर पीता देखे तो उसकी उम्र लंबी है, ऐसा जानना, जो शख्श स्वप्नमे बीणाबजावे तो उसकों खूबसुरत औरत मिले.–

३५ स्वप्नमें जिसके मस्तकपर काग वींठ करे उसकी इज्जतमे कलंक लगे, स्वप्नमें जो शख्श अपने आप सफेद या हरेरंगके कपडे पहने देखे या आगसे अपने आपकों जलता हुवा देखे तो उसे दौलत मिले, स्वप्नमें जिसकों शिंगारीहुई कुमारीकन्या दिखाई दे उसकों अछी औरत मिले, स्वप्नमें जो शख्श तेजदार हाथियारोंसे पहाडको तोडडाले उसकों चंदरौजमें सलतनत मीले, और राजा वने.–

३६ स्वप्नमें जिसकों नाचता हुवा मोंर दिखाई देवे तो राजा महेरबान हो, और जमीन इनाममें देवे, स्वप्नमें सफेदरंगके कपडे पहनी हुई औरत दिखाई दे तो फायदा हो, स्वप्नमें जिसके नख या केश वढजाय उसकी इज्जत चढे या अछा इल्काब मिले.–

[ बयान स्वप्नशास्त्रका खतम हुवा, ]

## [ स्वरविज्ञान, ]

१ षड्ज, रिषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, और निषाद इन सातो स्वरोंसें स्वरविज्ञान देखाजाता है, दुनियामें जितने मनुष्य जानवर या परींदे हैं, उनकी बोली इनसात स्वरोंसें जुदी नही, किसीकी कुदरती अवाज षड्जस्वरमें किसीकी रिषभमें और किसीकी गांधार वगेरा स्वरोंमें होतीहैं.–

२ इसमें मनुष्य जानवर और परींदेकी बोलीका बयान होगा, जिसमें मनुष्यकी कुदरती अवाज किस स्वरमें हैं, और उससे उसको क्या फायदा होगा? जानवर और परींदेकी बोलीका बयान जिसमें जानवरोंकी बोलीके सुननेसें क्या नफा नुकशान होगा? जैनशास्त्र अनुयोगद्वारसूत्रके फरमानसे उसके देखनेकी तरकीब बतलाई हैं, राग रागिनीके भेद और केफियत इसमें उमदा तौरसे मिलेगी.–

३ मोरकी कुदरती अवाज षड्ज स्वरमे होती है, मुर्धेकी रिषभ स्वरमें, हंसकी गांधारस्वरमें, बकरेकी मध्यमस्वरमें, कोकिलाकी

पंचमस्वरमें, क्रौंचकी धैवतस्वरमें और हाथीकी कुदरती अवाज निषाद स्वरमें, निकसती है.-

४ जिस मर्द या औरतकी कुदरती अवाज षड्ज स्वरमे निकसती हो, उसके पास दौलत बनी रहे, खानपान एशआराम और सुखचैन भोगे, अगर कहाजाय मोरकी अवाज षड्जस्वरमें बयान फरमाई गई हैं, तो क्या! उसकोंभी यह फल होगा? (जवाब.) मनुष्य और जानवरोकी तकदीरमें फर्क हैं, जो बात मनुष्यके लिये हो वो जानवरोंके लिये नही समजना.-

५ [ उत्तराध्ययनसूत्रकी टीकामे पाठहै, ]
सज्जेण लहइ वित्तिं कयंच न विणस्सइ,
गावो पुत्ताय मित्ताय नारीणं होइ वल्लहो, १

(अर्थः)-जिस मर्द या औरतकी कुदरती अवाज षड्ज स्वरमें हो उसकी आजीविका अछी चले, गौ वगेरा जानवर उसके पास बने रहे, कुटुंब परिवार और दोस्त अछे मिले, और औरतसें उसकों सुखचैन मिले.-

६ जिस मनुष्यकी कुदरती अवाज रिषभस्वरमें निकसती हो उसकों हुकम होदा मिले, खजाना उसका तर रहे, इत्र फुलेल गेहने और उमदा कपडे पहननेके लिये मिले, औरत उसके ताबेमें रहे, और फुलोंके बिछोनेमें सोनेवाला हो.-

७ जिस मनुष्यकी कुदरती अवाज गंधार स्वरमें निकसती हो वो संगीतकलाका जानकार, कवीश्वर, धर्मशास्त्रका पढा हुवा, और दुसरोंको तालीम धर्मकी देनेवाला हो.-

८ जिस मनुष्यकी कुदरती अवाज मध्यमस्वरमें निकसती हो वो दिलका दलेर, खुशमिजाज, और एशआराम भोगनेवाला हो, हिंम्मतबहादूर और दुसरोंकोभी हिम्मत देनेवाला हो.-

९ जिसकी कुदरती अवाज पचमस्वरमें निकसती हो उसको राजाधिराज पदवी मिले, हिम्मतबहादूर हो, बेपरवाही ऐसा जो

किसीसे दवे नहीं, फौजका मालिकहोकर फतेह पावे, और इनाममें उसको जमीन मिले.–

१० जिसकी कुदरती अवाज धैवतस्वरमें निकसती हो, वो दुसरोको लडाकर आप अलग रहजाय, दगावाज पुरा, जिसवातको इख्तियार करलेवे उसको छोडे नहीं, कुस्ती लडनेवाला हो, शरावके नशेमें गाफिल वना रहे, धर्मकी वात उसको पसंद नही, और दुनयवीकारोवारमें खुश रहे.–

११ जिसकी कुदरती अवाज निषादस्वरमें निकसती हो, वो हमेशा वैरहेम वनारहे, हरेकसें टंटे फिसाद करे, हिंसाके काममें खुशरहे, दुसरोंकी नौकरी करके सिकम परवरीश करे, और वडी तकलीफ उठावे, इनसातों स्वरोंका वयान जैनागम-स्थानांगसूत्र और अनुयोगद्वारमें दर्ज है, जिनको देखना हो, मजकूर शास्त्र देखे.–

१२ षड्ज स्वरका स्थान जवानका अग्रभाग, रिषभस्वरका स्थान छाती, गंधारका स्थान कंठाग्र, मध्यमका स्थान जवानका मध्यभाग, पंचमका स्थान नाशिका, धैवतका स्थान दांत और होठ, और निषादस्वरका स्थान भ्रूकुटी हैं.–

१३ गेरमुल्ककी सफरको जाते वख्त या अछेकामही शुरुआतमें मनुष्य या जानवरकी षड्ज रिषभ या गांधारस्वरमें अवाज सुनाई दे तो जानना फतेह होगी, सफरके वख्त या अछे कामकी शुरुआतमें मोरकी अवाज सुनाई दे तो इरादा पूर्ण होगा, अगर नाचताहुवा मोर दिखाई दे तो निहायत उमदा हैं.–

१४ सफरके वख्त या अछेकामकी शुरुआतमें चकोरकी अवाज सुनाई दे या खुद चकोर वहांपर नजर आजाय निहायत उमदा हैं, काम जल्दी फतेह होगा, अगर उसवख्त दुसरा शख्श चकोर ऐसाशब्द मुखसें वोले और अपने कानपर अवाज आवे तोभी अछा हैं, भारद्वाज पंखी जिसको मुल्कमारवाड तर्फ रुपारेल वोलते हैं,

सफरके वख्त या अछे कामकी शुरुआतमे बोलता हुवा सुनाई दे या सामने आजाय तो फतेह होगी.-

१५ सफरके वख्त या अछेकामकी शुरुआतमे हसकी अवाज सुनाई दे या खुद हस वहां नजर आजाय निहायत उमदा है, काम फतेह होगा, सफरके वख्त जिसका घोडा दाहने पावसे जमीन उकेरे या अवाज करे सवारकी फतेह होगी, और आराम मिलेगा, गेरमुल्ककी सफरजाते वख्त पालेहुवे तोतेकी अवाज वामीतर्फ और घरआतेवख्त दाहनीतर्फसुनाई दे तो अछा है, खुशी पैदा हो.-

१६ घरसे मुसाफरी जातेवख्त थोडी दूरगयेबाद बनके तोते उडकर सामनेआवे तो उमदा हैं, इरादा पूर्ण होगा, सफरके वख्त गिध्रपखी बामा जिमना या सामने चाहे जिमतर्फ बोले अछा नहीं, अगर पिछाडी बोले तो अच्छा है, अछे कामकी शुरुआतमें या सफरके वख्त रोनेकी अवाज सुनाई दे तो बुरा है, छोटा लडका रोता हो तोभी बुरा जानना, जिसघरके उपर रातके वख्त उल्लु बोले तो बुरेदिनोंकी निशानी हैं, उसघरके रहनेवाले मनुष्य बरबाद होते जायगें, सफरके वख्त या अछे कामकी शुरुआतमें घंटे-घडियाल-सारगी तबले-या कोई सुरीले बाजोकी अवाज सुनाई दे तो अछा है, काम फतेह होगा.-

१७ षड्ज, रिषभ, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद ये सातस्वर जो पेस्तर लिखे हैं, इनके विना पहिचाने संगीतकला ऐसी, है जैसे आसानमें चित्र बनाना.-

सप्तस्वरास्त्रयोग्रामा मूर्छना स्त्वेकविंशतिः
ताना एकोनपंचाशत् इत्येतत्स्वरमंडलं, १,

(अर्थः)-सात स्वर, तीन ग्राम, एकवीश मूर्छना और उनंचास तान, विना तालीमपाये नही आसकते, विना तालस्वरके गाना गवैयेके लिये शर्मींदे होनेकी बात हैं, अछी अवाजसे तालस्वरमे-गाना गवैयेकी तारीफ हैं,-सा, रि, ग, म, प, ध, नि,-ये सातस्वरके

बीज अक्षर है, छहराग, छत्तीस रागिनी, और उनके अडताली
बेटे कुल संख्या मिलानेंसें (९०) हुवे, इनको जानना जरुरी हैं.-

१८ जो शख्श स्वर्गकी गति भोगकर आया हो, उसकों गा
बजानेका शौख होगा, बाजोमें सबसें उमदा बाजावीणा हैं, जितन
गुंजाश इसमें रही हैं, दुसरे बाजोमें नही, गवयेलोग गाने
जितना काम गलेमें करते है, बजानेवाले बाजोमे नहीं करसके
गानेके संग जो कुछकाम सरंगी करसकती है, दुसरे बाजे न
करसकते, वीन, सितार, दिलरुबा, ताउस, सुरशिंगार, जलतर
वगेरा कोई साज हो, गत तोडे और आलाप देसकते हैं, मग
गानेवालेके अवाजकी नकल करना सरगीकाही काम हैं, बाजो
वो ताहसीर हैं, जिनके बजनेसें लडाइमें नामर्दभी मर्द बनजाते है
और तरहतरहके बाजोकीं अवाज सुनकर दुना जोश पैदा होता हैं.-

[ दोहा, ]

१९ भैरव मालवकोसकों दीपराग हिंडोल,
मेघराग श्रीराग फुन ये षट्राग कलोल, १

भैरवराग, मालकोशराग, दीपकराग, हिंडोलराग, मलारराग,
और श्रीराग ये छह रागोके नाम हैं, पेस्तरके जमानेमें इनरागोंकी
वो ताहसीर थी. अगर विना बैलकी घाणीके सामने बेठकर आला
दर्जेका गवैया साफ तौरसें भैरवराग गाताथा, तो विना बैलकी
घाणी खुद बखुद फिरने लगती थी, (यानी.) गवैयेके मुखसें
भैरवरागके गानेसें जो परमाणुं निकसतेथे वे उस घाणीकों फिरा-
देते थे, जैसे सरगीकी तरबें ठीकठीक तारसें मिलाई गई हो तो
उपरकी तांतपर गज फिरानेसें नीचेकी तरबें थडक जाती हैं, और
अवाज करती है -

२० पेस्तरके जमानेमें पथरकी शिलाके सामने बेठकर आला-
दर्जेका गवैया साफतौरसे मालकोशराग गाता था तो वो पथर
मोंम जैसा मुलाइम हो जाता था, पांच-पचीस दिये तेलबत्ती लगा-

कर विना दियासलाई लगाये तयार रखकर उनके सामने बेठके अगर आलादर्जेका गवैया साफतौरसें दीपकराग गाताथा, तो वे दीपक खुद बखुद जल उठते थे, (यानी) दीपकरागके परमाणुं जो गवैयेके मुखसे निकसतेथे वे उनदीपककों जोंत देतेथे, अगर कोई आलादर्जेका गवैया झुलेके सामने बेठकर हिंडोलराग गाताथा तो झुला खुद बखुद झुलनेलगताथा.-

२१ मलाररागके गानेसें वरसात वरसजाताथा, और अगर कोई आलादर्जेका गवैया श्रीरागके वख्तपर श्रीराग गाताथा तो उसके घर दौलतकी बढवारी होतीथी, या उसको राज्यकी तर्फसे जमीन बतौर इनामके मिलती थी, जमाने हालमे वो ताहसीर कम होगई, पेस्तरके जैसे आला दर्जेके गवैये कम रहगये, और रागकी ताहसीरभी कम होगई, जैसाजमाना है, वैसे गवैये और राग मौजूद हैं.-

२२ तीर्थंकरदेव समवसरणमें मालकोशरागसें लोगोंको तालीम धर्मकी देतेथे, और इंद्रदेवते उनके गानेकी अवाजकेशाथ दिव्य बाजोंसे संगत करते थे, तीर्थंकरदेव जैसे गानेवाले और इंद्रादिदेव जैसे उनके गानेकी संगत करनेवाले जहां मीले फिर किसबातकी कमी रहे? आजकल तीर्थंकरदेव नही रहे और इंद्रादिदेवोंका आनाभी बंद होगया, जमाने हालमें अगर कोई मुनि रागरागिनीसे व्याख्यान धर्मशास्त्रका देवे तो कोई मनानही.-

२३, भैरवी, कालिंगडा, आसावरी, सारंग, गोडसारंग, पीलु बरवा, धनासीरी, श्रीराग, दीपक, कल्याण, कानडा, सोरठ, जेजेवंती, विहाग, कमाच, जिहाग, कमाच, जिला, झिझोटी, मलार, छाया, टोडी, केदारा, दरबारी कानडा, कामोंद, काफी बसत, खयाल, वगेरा गाना जानते हो तो देवमंदिरमे इबादत करो, जमाने तीर्थंकर चक्रवर्त्तीयोंके (३२०००) देशीय रागिनी मौजूदथी, जमाने वासुदेवोंके (१६०००) हजार मौजूद थी, जमाने हालमें

जितने राग और जितनी रागिनी चालु हैं, उतनी सीखे तोभी गनीमत समजो.—

२४ अगर कोई महाशय वीणा, सितार, दिलरुबा, ताउस, सरंगी या हारमानियम बजाना जानते हो, और वे देवमंदिरमें जाकर राग रागिनीसें इबादत करे निहायत खुशीकी बात हैं, इबा करते वख्त अगर दिलमें वैराग आजाय और रोंम रोंम खिलजाय तो जानो धर्मका असर खूब हुवा, ऐसी इबादत करनेसे हजरांजन्मके पापकर्म कटजाते है, वंशरी, अलगोजा, बेला, या नफीरी, गानेके शाथ अछा संग देती है, चाहे मर्द हो या औरत अछे बाजोंके शाथ धर्मके पद रागरागिनीसे गावे निहायत फायदेमंद हें, जिस शख्शकी अवाज मीठी और सुरीली हो वही उमदा तौरसें गाना गासकता हैं, अछी अवाज पाना बडीतकदीरके ताल्लुक हैं.—

[ बयान स्वरविज्ञानका खतम हुवा, ]

[ बयान भूमिकंप, ]

१ इसमें जमीनकांप उठनेसें क्या फल होगा ? इसका जिक्र हैं, सब चीजोंका आधार जमीन ठहरी, जब जमीनही कांप उठे तो फिर इससें ज्यादा आफत और क्या होगी ? धर्मशास्त्रोंका फरमान है, जब दुनियादारोंका तसीबा कमजोर आवे जभी ऐसी आफत पैश हो, कईदफे सुनागया हैं, भूकंप होनेसे गावके गांव जमीनमें दब गये हैं, पांच-सात चीमटी बजावे उतनी देरका भूमिकंपभी भारी नुकशान करता है, अगर इससे ज्यादा देरतक भूमिकंप होता रहे न मालुम क्या क्या आफत पेंशहोजाय, पहाड, नदी, सरोवर, द्रख्त घर हाट चूरचूर होजाते है, नदीयोंका जल उछल कर कहीके कहीं जागिरता हैं, रास्ते और बाग-बगीचे जंगल बनजाते हैं, और जानका जोखम इसी उत्पातसें उठाना पडता हैं.—

२ भूकंपका होना धर्मशास्त्रोंमें इस सबबसे बयान किया जब कभी पातालवासी देवते आपसमें लडाई लडे या गुस्सेमे आकर जमीनपर लात मारे तो पांचपचीस कोसतक जमीन कंपजाय, कभी हजार पांचसो कोशतक कांप उठनाभी कोई ताज्जुब नही, जमीनके नीचे कभी खारीपदार्थोंमे विकार पैदा हो और उसके सबबसेभी जमीन कंपजाती है.–

३–[ जैनशास्त्र उत्तराध्ययनसूत्रकी टीकामे पाठ है, ]

शब्देन महता भूमिर्यदा रसति कंपते,
सेनापतिरमात्यश्च राजा राष्ट्रं च पीड्यते,

( अर्थः )–जब कभी जमीनमेंसें बडे जोरसे अवाज हो, या कांप उठे तो राजा, दिवान, सेनापति और मुल्कको तकलीफ पैदा हो और बीमारी फैले, मगर तमाम जगहके लिये यह बात नही, जिस जगह भूमिकंप हुवाहो, उसीके लिये जानना.–

४ मुल्क स्काटलेंडमे सन (१७०८) इसीमे बडा भूकंप हुवाथा, यह भूकंप किस सबबसे हुवा इसको जाननेके लिये कई विद्वानोंकी सभा मिलीथी और उसमे कई तरहके मत जाहिर हुवेथे.–

[ बयान भूमिकंपका खतम हुवा, ]

---

## [ व्यंजन निमित्त, ]

१ शरीरमें जो तिल मसे होते हैं, उनकी इसमें पुरी केफियत दिई है, व्यंजनशब्दसे तिल मसा और लहसन तीनोंही जानना चाहिये, शरीरकी चमडीपर तिल जैसे आकारका शामरग चिन्ह जो हो उसको तिल बोलते हैं, चमडीसें कुछ उंची बढकर मासकी छोटीसी गाठ राई या बाजरी जितनी हो उसको मसा बोलते हैं, इससे बडा मसा हो वो ठीक नहीं.–

२ लहसन उसकों बोलते हैं, जो कुसुंबेके रंग मुआफिक लालरंगका चिन्ह शरीरकी चमडीपर होता हैं, तिल, मसा, या लहसन कोई हो अगर खुबसुरत या साफ हो तो अछा फल देगा, बदसुरत या टुटाफुटा होगा तो अच्छा फल न देगा.–

३ जैनशास्त्र महानिशीथ या प्रवचनसारोद्धारग्रंथमें व्यंजनशब्दका माइना तिल और मसा लिखा है, तिल मसेका रंग शाम और लहसनका रंग लाल या कुछ शाम होता है.–

४ मस्तकपर तिल मसा या लहसन हो तो वो शख्श हरजगह इज्जत पावे और फायदा हो.–

५ कपालकी दाहनी तर्फ तिल हो वो शख्श दौलत पावे, बायी तर्फ हो तो उसका फल कम होगा, मगर वृथा नही जानना.–

६ भ्रूपर तिल हो तो मुल्क मुल्ककी सफर करे और फायदा उठावे.

७ आंखपर तिल हो वो शख्श नायकपदवी पावे.–

८ मुखपर तिल हो दौलत झलाझल मिले.–

९ गालपर तिल हो तो खुबसुरत औरत मिले.–

१० उपरके होठपर तिल हो दौलत पावे और उसकी बात उंची रहे.

११ नीचेके होठपर तिल हो तो कंजुस हो.–

१२ कानपर तिल हो तो गहने जवाहिरात बहुत पहने.–

१३ गर्दनपर तिल हो तो उसकों एशआराम मिले, औरतकी तर्फसे वारसा मिले, और उम्र लंबी पावे.–

१४ दाहनी छातीपर तिल हो उसकों अछी औरतसें फायदा मीले, और इरादा पूर्ण हो, बायी छातीपर तिल हो तो कमफल देगा, मगर वृथा नहीं.–

१५ दाहने हाथपर तिल हो तो अपने हाथकी कमाइ भोगे, वाये हाथपर हो तोभी ठीक हैं, कमफल होगा, मगर खाली नही जाय, जिसके दाहने कंधेपर तिल हो कामील इल्म हो, वाये कंधेपर तिल हो तो कम इल्म हो.-

१६ हाथके पजोंपर तिल हो तो दिलका दलेर हो.-

१७ जाघपर तिल हो उसकों सवारीका सुख मिले और फौजमें फतेह पावे.-

१८ पांवपर तिल हो वो शख्श मुल्कोंकी सफर करे और फायदा उठावे.-

१९ मर्दकों दाहनें अंगपर तिल, मसा, या लहसन हो तो अछा फायदा करे, अगर वाये अंगपर हो तो कम करे, मगर वृथा न जाय,

२० अगर कोई सवाल करे हमको मजकुर जगह तिल, मसा और लहसन होते हुवेभी फायदा क्यों नहीं ? (जवाब.) फायदा जरुर होता होगा, मगर आपलोग उसकों खयालमें नही लाते, शास्त्रका फरमान गलत नहीं होता, मर्दकों दाहने अगपर तिल, मसा, और लहसन हो तो पुरा फल दे, वाये अगपर हो तो कम फल करे, मगर फल जरुर करे.-

२१ जिस शख्शका दिल साफ हैं, और सत्यधर्मपर कामील एतकात हैं, उसके लक्षण पूर्ण फल देते हैं, जिसका दिल साफ नहीं, सत्यधर्मपर एतकात नही, बातबातमे शकलावे उनके लक्षण कमफल देते है.-

[ औरतकों वामें अंगपर तिल, मसा, या लहसन हो, उसका फल सुनिये, ]

१ जिस औरतके मस्तकपर तिल हो वो राजाकी रानी बने.-
२ कपालपर तिल हो दौलतमंद पति मिले.-

३ आंखपर तिल हो तो अपने खाविंदकी उसपर अछी नजर रहे,
४ गालपर तिल हो तो एशआराम भोगे.—
५ कानपर तिल हो तो जेवर गहने वहुत पहने.—
६ गलेपर तिल हो तो अपने घरमें हकुमत चलावे.—
७ छातीपर तिल हो तो पुत्रवती हो.—
८ हाथपर तिल हो तो उसका पति उसपर प्रीति रखे.—
९ जांघपर तिल हो तो उसके पास नोकर—चाकर वने रहे.—
१० पांवपर तिल हो मुल्कोंकी सफर ज्यादा करे.—

११ औरतको वामें अंगपर तिल मसा या लहसन हो तो ज्यादा फायदा करे, अगर दाहने अंगपर हो तो कम करे, मगर वृथा नही जाय.—

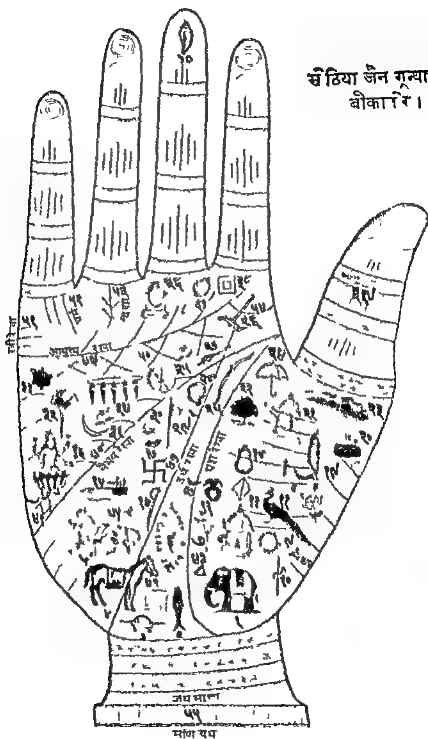
[ वयान व्यंजन निमित्तका खतम हुवा, ]

[ कवित्त, ]

ज्ञान घटे कोइ मूढकी संगत-ध्यान घटे विन धीरज लाये,
प्रीत घटे परदेश गये अरु-भावघटे नितहि नित जाये,
सोंच घटे कोइ साधुकी संगत-रोग घटे कछु औषध खाये,
कवि गंगकहे सुनो शाह अकव्वर-पापघटे प्रभुके गुन गाये, १

[ छप्पय-छंद, ]

सरसर हंस-न-होत-वाजगजराज-न-दरदर,
तरतर सुफल-न-होत-नार पतिव्रता-न-घरघर,
तनतन सुमत-न-होत-मोतीजलविंदु-न-घनघन,
फनफन मणि-न-होत-सर्व मलया नहि वनवन,
कहु-रन-होत-न-सूर सव-नरनर होत-न-भक्तहर,
नरहरकवि-सुकवित्त किय-सर्व-न-होइ एकसर, २



जैन श्वेतांबर धर्मोपदेष्टा-विद्यासागर-न्यायरत्न
महाराज-शांतिविजयजीका बनाया हुवा-
( हस्तरेखाका-पंजा. )

## [ बयान हस्त-रेखा, ]

इसमें हाथपावकी रेखा देखनेका तरिका, उसका फल, और आसानीके लिये हस्तरेखाके पंजेका चित्रभी इसमें दाखिलकर दिया है, जिसके देखनेसे अकलमंदोंकों वो खुशी होगी, गोया! इल्म हस्तरेखाका एक खजाना मिलगया, देखलो! हस्तरेखाके चित्रमे (५५) नंबर लिखे हैं, एक नंबरसें पंचावन नंबरतक चित्र और रेखा मिलाते रहो, व खुबी मालुम होगा किसका क्या! फल हैं, ? शिवाय इसके औरभी ज्यादा बयान दिया है, अवलसें अखीरतक पढनेसें मालुम होगा.—

१ जिसके हाथमे हाथीका निशान हो वो राजा हो, जहागीरदार हो या हाथीयोंकी तिजारत करनेवाला हो.—

२ जिसके हाथमे मछका निशान हो वो दौलतमंद और संतानवाला होता है, और वो समुंदरकी मुसाफरी करेगा.

३ जिसके हाथमे म्याने, पालखीका निशान हो, वो शख्श दौलतमंद हो, जहागीरदार हो, नोकर-चाकर उसके पास बने रहे, और उसकों म्याने पालखीकी सवारी मिले.—

४ जिसके हाथमें घोडेका चिन्ह हो वो शख्श फौजमे अप्सर हो, दुसरोंपर हुकम चलावे, राज्यमे उसकी इज्जत हो, और उसके घर घोडे बंधे रहे.—

५ जिसके हाथमें केशरी सिहका चिन्ह हो वो राजा हो, हकुमत करनेवाला हो, और बहादूर हो.—

६ जिसके हाथमें फुलोंकी मालाका निशान हो, वो हरजगह फतेह पावे, इरादे उसके पूर्ण होते रहे, और दुनियामे इज्जत पावे,

७ जिसके हाथमें त्रिशूलका चिन्ह होगा, वो धर्मध्वज और धर्मचर्चामें होशियार होगा, जिनमंदिरकी प्रतिष्ठा और तीर्थोंकी जियारत करेगा, और धर्मपर साबीत कदम रहेगा.—

८ जिसके हाथमें देवविमानका चिन्ह हो, वो शख्श देवमंदिर बनवायगा, और स्वर्गकी गति हासिल करेगा.–

९ जिसके हाथमें सूर्यका चिन्ह हो, वडा तेजस्वी और तामसी-प्रकृतिवाला होगा, और हिम्मतबहादूर बना रहेगा.

१० जिसके हाथमें अंकुशका निशान हो उसके घर हाथी बंधे, और दौलतमंद हो.–

११ जिसके हाथमें मोरका चिन्ह हो वो हरजगह फतेह पावे और एशआराम भोगनेवाला हो.–

१२ जिसके हाथमे योनिका चिन्ह हो, वो प्रतापी शख्श हो और सुखचैनसें जींदगी तेर करे.–

१३ जिसके हाथमें कलशका निशान हो, वो देवमंदिर तामीर करावे और तीर्थोंकी जियारत करे.–

१४ जिसके हाथमें तलवारका आकार हो वो लडाईमें फतेह पावे, खुशनसीब हो और राज्यकी तर्फसे इनाम पावे.–

१५ जिसके हाथमें जहाजका चिन्ह हो, समुंदरका वडा व्यापारी होगा, और समुंदरकी लंबी मुसाफरी करेगा.–

१६ जिसके हाथमें लक्ष्मीदेवीका चिन्ह हो उसका खजाना तर वा ताजा बना रहे, दौलतकी उसकों कभी कमी न रहे.

१७ जिसके हाथमें स्वस्तिकका आकार हो, उसके घर हमेशां आनंद मंगल बना रहे, दौलतमंद हो, और दुनियामें इज्जत पावे.

१८ जिसके हाथमें कमंडलका निशान हो, वो सुखी और धर्मी हो, साधुलोगोंकी खिदमत करे, और खुदभी साधुबनकर मुल्कोंकी सफर करे.–

१९ जिसके हाथमें सिंहासनका निशान हो, वो राजाधिराज होकर सिंहासनपर बेठे, या राजाका दिवान हो और बडी हकुमत करे.–

२० जिसके हाथमें पुष्करणी वावडीका निशान हो, वो दिलका दलेर हो, दौलतमंद हो, और दुसरोंको मदद पहुचानेवाला हो.–

२१ जिसके हाथमे रथका आकार हो, वो दुश्मनोंसें फतेह पावे, और उसके घर, रथ, गाडी, घोडे, वने रहे, कमी पांवपेदल मुसाफरी न करे.–

२२ जिसके हाथमे कल्पवृक्षका चिन्ह हो, वो दौलतमंद और खुशनसीव हो, उसके जमीन जहागीर वनी रहे, दिलके इरादे पूर्ण हो और खानपानसें सुखी रहे.–

२३ जिसके हाथमे पर्वतका निशान हो, वो जवाहिरातकी तिजारत करे और फायदा उठावे.–

२४ जिसके हाथमे छत्रका निशान हो वो हमेशा देवकी तरह पूज्य बना रहे, या छत्रपति राजा हो.

२५ जिसके हाथमें धनुष्यका निशान हो, वो लडाइमें इज्जत पानेवाला हो, उसपर कोई मुकदमा पेश करे तोभी वो शकिस्त न खाय और फतेह पावे.–

२६ जिसके हाथमे हलका आकार हो, वो खेतीवाडी करनेवाला हो, और जमीन उसकों इनाममें मिले.–

२७ जिसके हाथमे गदाका चिन्ह हो, वो वडा बहादूर शख्श हो.–

२८ जिसके हाथमें सरोवरका आकार हो, वो दौलतसें कमी तंग न रहे, और दुसरोंको दौलत देता रहे.–

२९ जिसके हाथमें धजाका निशान हो वो कीर्त्तिमान और विजयी रहे.–

३० जिसके हाथमे पदमका चिन्ह हो, वो चक्रवर्त्ती राजा हो और मुल्कोंमें फतेह पावे.–

३१ जिसके हाथमे चंद्रमाका निशान हो, वडा नसीवेदार और खुबसुरत हो.–

३२ जिसके हाथमें चमरका निशान हो, वो राजाधिराज या दिवान हो, और हकुमत करे.–

३३ जिसके हाथमें काचवेका चिन्ह हो, वो भूमिपति हो, समुंदरमें जहाज चलावे या खुद समुंदरकी मुसाफरी करे, और विमाका व्यापारी हो.–

३४ जिसके हाथमें तोरणका निशान हो, उसके घर आनंद मंगल बना रहे, और घर हाटहवेली वगेरा मकानात ज्यादा हो.–

३५ जिसके हाथमें चक्रका आकार हो, वो चक्रवर्त्ती राजा हो.

३६ जिसके हाथमें आरीसेका चिन्ह हो वो दिवान मुमद्दी होकर दुसरोंपर हकुमत करे, पीछली उम्रमें साधुबनकर दुनियाको तालीम धर्मकी दे, और आत्मज्ञानी हो.–

३७ जिसके हाथमें वज्रका निशान हो, उसको हुकमहोदा मिले, अपराजित बना रहे, और बडी ताकातवाला हो.

३८ जिसके हाथमें वेदीका आकार हो, वो धर्मके बडेबडे जलसे करे, प्रतिष्ठामहोत्सवका विधिविधान उसके हाथसें हो, और धर्मपर कामील एतकात बना रहे.–

३९ जिसके हाथके दोनों अंगुठोंमें यवका निशान हो, वो इल्मपढा हुवा हो, विद्यासें दुनियामे उसकी प्रसिद्धि हो, दौलतमंद हो, और उसका जन्म बहुत करके शुक्लपक्षमें होना चाहिये.–

४० जिसके हाथमें शंखका निशान हो, वो हमेशां दौलतमंद बनारहे, समुंदरकी मुसाफरी करे और फायदा उठावे.–

४१ जिसके हाथमें षट्कोणका आकार हो, उसके पास जमीन जहागीरी और बाग बगीचे बने रहे.–

४२ जिसके हाथमें नंद्यावर्त स्वस्तिकका आकार हो, वो हमेशा इज्जत पावे, दौलत उसके पास बनी रहे, और धर्मके काममे फतेमंद हो.–

४३ जिसके हाथमें त्रिकोणका निशान हो, वो जमीदार हो जमीनसें फायदा होता रहे और गौ बैल वगेरा जानवर उसके पास ने रहे.—

४४ जिसके हाथमें मुकुटका चिन्ह हो, वो राजाधिराज हो या द्वान् हो, सहस्र अवधान करे और आम दुनियाकों तालीम र्मकी देवे.—

४५ जिसके हाथमें श्रीवत्सका निशान हो उसके इरादे पूर्ण ते रहे, और कभी तकलीफ पेश न हो.—

४६ जिसके हाथमे यशरेखा अखंड हो, टुटी फुटी न हो, और नी हो वो दुनियामे इज्जतदार हो, यशरेखाका दुसरा नाम पितृखा बोलते हैं, मजकुर रेखा टुटी फुटी और खंडित हो तो उस ख्शकी इज्जत खडित होजाय, यशरेखा मणिबंधसे निकलकर गुठेके नीचे और तर्जनीके बीचले भागमे जाकर मिलती हैं.

४७ जिसके हाथकी ऊर्द्धरेखा मणिबंधसें निकलकर तर्जनी गुलीतक जामिली हो, वो राजा या दिवान होगा.—

४८ जिसके हाथमे विभवरेखा अखंड हो, टुटी फुटी न हो, ार लंबी हो, वो अपने खानदानमें नामीग्रामी शख्श हो, विभवरे-ाका दुसरा नाम मातृरेखा बोलते हैं, विभवरेखा हथेलीसें निक-कर अंगुठेके नीचे और तर्जनीके उपर यशरेखाको जाकर मिलती , विभवरेखा और यशरेखा संधिकी जगह न मिले तो उस ख्शको औरतका वियोग रहे, अगर उसके औरत मौजूद हो, तो रदेश फिरनेके सबब या कुसंपसें मिलाप थोडा रहे, इसीतरह ौरतके लियेभी जानना, उसके पतिसे उसका मिलाप थोडा रहे, र्दके हाथमें अगर यशरेखा और विभवरेखा संधिकी जगह न मली हो, और औरतके हाथमें मिली हो तो जानना मर्दका स्नेह म, और औरतका स्नेह ज्यादा रहेगा, इसीतरह जो मर्दकी मजकुरेखा संधिकी जगह मिली हो, और औरतकी मजकुररेखा न मिली

हो, तो औरतका स्नेह कम और मर्दका स्नेह ज्यादा रहेगा, और तकी विभवरेखा उसको सोहागरेखा तरीके फल देती है.–

४९ आयुष्यरेखा कनिष्ठा अंगुलीके नीचे हथेलीसें निकलकर तर्जनी अंगुलीकी जडतक जाती हैं, और वो जिसके अखंडित हो, टुटी फुटी न हो, और लंबी हो, तो वो लंबी उम्र पावे, जिसकी आयुष्यरेखा तर्जनी अंगुलीकी जडतक चलीगई हो, वो आजकलके जमानेमें ( १०० ) वर्सकी उम्रपाता है, मध्यमा अंगुलीकी जडतक गई हो तो ( ७५ ) वर्स, और अनामिका अंगुलीकी जडतक गई हो वो ( ५० ) वर्सकी उम्र पाता हैं, जितनी कम हो, उतनी कम उम्र जानना, जमाने हालमें वहुतसें मनुष्योंकी उम्र जैनशास्त्रमें ( १२० ) वर्सकी फरमाई, इससे ज्यादा उम्रभी किसीकिसीकी होसकती है, मगर वो वहुतकम शख्शोंकी होती है, इसलिये वो गिनतीमें नही आसकती, शास्त्रकारोंने वाहुल्यतासें आजकलके मनुष्योंकी उम्र एकसोवीश वर्सकी फरमाई.–

५० संपतरेखा उसको कहते है, जो आयुष्यरेखा और विभव रेखाके वीचमें चौकडीका आकारहो, जितनी चौकडी हो, उतना वो दौलतमंद हो, जिसकों एकभी चौकडी न हो वो मामुली दौलतमंद हो, जिसकी वैभवरेखा लंवी हो उससेभी दौलत देखी जाती है, और ऊर्द्धरेखासेभी दौलतका होना न होना अंदाज किया जाता है, मगर शर्त यह है, देखनेवाला जानकार होना चाहिये.–

५१ आयुष्यरेखा और कनिष्ठा अंगुलीके वीचमें जितनी आडी रेखा पडी हो, उसको स्त्रीरेखा कहीजाती है, मगर वो रेखा अखंडित और पूर्ण होना चाहिये, मजकुररेखा जितनीपडी हो उतनी स्त्री होनाकहो, मगर मुताविक जमानें और दर्जेके सोच समजकर कहना ठीक है, जैसे चक्रवर्त्ती वासुदेव प्रति वासुदेव छत्रपति राजे महाराजोके लिये उनके दर्जे मुआफिक, और मामुली आदमीयोंकेलिये उनके दर्जे मुआफिक कहना, राजे महाराजोकों सेंकडों

रानीये होतीथी और गरीबोकों एकभी नही, इसका कोई क्या करे, ? सब बात तकदीरके ताल्लुक है.–

५२ कनिष्ठा अंगुलीके नीचे आयुष्य रेखाके उपर और स्त्रीरेखाके सामने जितनी खडीरेखा पडी हो उतनी धर्मरेखा समजना, और वो धर्मरेखा दो या तीन होती है, वो खंडित न हो, और साफ हो वो धर्मी जानना, जिसको धर्मरेखा न हो या खंडित हो वो अधर्मी जानना.–

५३ अनामिकाके नीचे और आयुष्यरेखाके उपर जितनी खडी या आडीरेखा हो, इसका नाम विद्यारेखा है, उतनी उस शख्शकों विद्या होगी, तीन–चार–पांच–सातरेखा हो, उतनी तरहकी वो विद्या पढेगा, व्याख्यान देनेवाला और लेख लिखनेवालाभी होगा, विद्यारेखा जितनी साफ और अखंड हो उतनी उसकी अकल तेज होगी.–

५४ तर्जनी अंगुलीके नीचे वैभव और यशरेखाकी संधिके उपर बीचले भागसे आडीरेखा निकलकर आयुष्यरेखाके अग्रभागको जो रेखा मिलजाय उसरेखाका नाम दीक्षारेखा जानना, और वो अखड या साफ हो उतना वो पुरुष निर्मल चारित्र पालेगा, मगर धर्मरेखा और दीक्षारेखाको देखकर उसकी धर्मश्रद्धाका बयान करना चाहिये, दीक्षारेखा और धर्मरेखा दोंनों अखंडित और साफ न हो तो धर्ममें कमश्रद्धावाला होगा, ऐसा जानना, कोई धर्ममे श्रद्धा-वाला हो, मगर उससे व्रत नियम नही किये जाय, कोई शख्श व्रत नियम करसके मगर धर्ममे उसकी कम श्रद्धा हो.–

५५ हथेलीके नीचे और हाथकी संधिके उपर तीनरेखा होती है, उसको जवमाला बोलते है–मणिबंधमें जिसके एक जवमालाका आकार हो तो वो शख्श आरामतलब होगा, दो जवमाला हो तो वो दुनियामे मशहूर होगा, और तीन जवमाला हो तो बडा दौलत-मंद या तपस्वी मुनि हो, जवमालाका आकार माला जैसा होता है.–

इसकितावमें दाखिल किया हुवा हस्तरेखाका पंजा देखो, और उसमें एकसे लेकर ( ५५ ) नंवरतक जो रेखा और चिन्ह दिखलाये हैं, वो इसलिखाणसें मिला कर देखो, वखूबी मालुम होसकेगा, आगे औरभी बयान दिया है, जो इसीरेखाविज्ञानकों ज्यादा माहिती देनेवाला है.–

५६ मणिवंधसे पांचतरहकी ऊर्द्धरेखा जो अंगुली और अंगुठेकी तर्फ जाती है, उसका बयान सुनिये ! पहली ऊर्द्धरेखा जो मणिबंधसें निकलकर अंगुठेकी नीचेकों जामिले उसको सलतनतकी तर्फसे फायदा होगा, जिसकी दुसरी ऊर्द्धरेखा मणिवंधसेंनिकलकर तर्जनी अंगुलीतक जामिले वो राजा या दिवान होगा, इसतरह जिसकी तिसरी ऊर्द्धरेखा मणिवंधसे चलकर मध्यमा अंगुलीतक जामिले तो वो फौजका अप्सर बने, अगर वो संसारछोडकर साधु होजाय तो उसकों आचार्य पदवी मिले, जिसकी चतुर्थ ऊर्द्धरेखा मणिवंधसें चलकर अनामिका अंगुलीतक जामिले, वो दौलतमंद होगा, इसतरह जिसकी पाचमी ऊर्द्धरेखा मणिबंधसें लेकर कनिष्ठा अंगुलीतक जामिले, वो इज्जतदार और हिम्मत बहादूर होगा.–

५७ जिसकी दाहने हाथकी विभवरेखा अखंड हो, टुटी फुटी न हो, और लंबी हो, वो अपने खानदानमें नामी ग्रामी होगा, विभवरेखासे अंगुलीतर्फ जितनी छोटीरेखा निकली हो, उतने उसके दुश्मन और जितनी मणिवंधतर्फ निकली हो, उतने उसके मददगार होगे.–

५८ आयुष्यरेखामेसें जितनी छोटीरेखा विभवरेखातर्फ निकली हो, उतनी उस शख्शको संपदा मिले, और जितनी अंगुलीतर्फ निकली हो, उतनी उस शख्शकों विपदा मिले.–

५९ मणिबंधसे आयुष्यरेखातक हथेलीकी बाजुमें जितनी आडीरेखा पडी हो, उतने उस शख्शके वेटावेटी जानना, जितनी मजकुर रेखा अखंड और साफ हो उतने उसके वेटावेटी जिते रहेगें, और

अखंड और साफ न हो उतने उसके संतान विनाश होजायगें, कोई आचार्य इस रेखाकों भाई वहेनकी रेखा कहते हैं.–

६० मणिबंधसें लेकर अंगुठेतककी संधितकके वीचले भागमे हथेलीपर जितनी खडी रेखाहो उतने उस शख्शके भाई बहेन होगें, कोई आचार्य इस रेखाकों वेटा वेटीकी रेखा कहते हैं.–

६१ हथेलीपर यशरेखाकी दाहनीवाजु अंगुठेतर्फ जितनी आडीरेखा गई हो, उतनी वो शख्श मुल्कोंकी सफर करे और फायदा उठावे.–

६२ जिसशख्शके दाहने हाथकी यशरेखा अखंड और साफ हो वो मरेवाद स्वर्गकी गतिपावे, और जिसकी विभवरेखा अखंड और साफ हो वो मरेवाद मनुष्यगति पावे.–

६३ जिस शख्शके वाये हाथकी यशरेखा अखंड और साफ हो वो स्वर्गगति भोगकर आया है, ऐसा जानना, और जिसके वाये हाथकी विभवरेखा अखंड और साफ हो वो मनुष्यगति भोगकर आया है, ऐसा जानना.–

६४ जिस शख्शके वाये हाथकी विभवरेखा अखंड लंबी और साफ हो उसकों एश आराम ज्यादा मिले, जिसके वाये हाथमे धजा या चंद्रमाका आकार हो उसकों खुबसुरत औरत मिले, किसी शख्शको स्त्रीरेखा मौजूद हो और वो शख्श अगर दीक्षा लेवे तो उसकों दीक्षाकी हालतमें गुरुभक्ति और धर्माज्ञा उठानेवाली भक्तखिये मीले, और अगर उस शख्शकों संतानरेखा मौजूद हो और वो दीक्षा लेवे तो दीक्षाकी हालतमें गुरुभक्ति करनेवाले और धर्मकी आज्ञा उठानेवाले चेले मीले, कोई आचार्य कहते हैं, मर्दके वाये हाथमे स्त्रीरेखाके अग्रभागमे दीक्षारेखा होती है, रेखाविज्ञान शास्त्री धर्मरेखा और दीक्षारेखाका खयालकरके देखे फिर धर्मश्रद्धा ज्ञान और चारित्रका वयान करे.–

६५ रेखा चिन्ह या लक्षण इनतीनोंको एक कहो तोभी कोई हर्ज नही, सबबकि–तीनोंका मतलब एक हैं, इतना जरुर हैं, बहारके लक्षणोसे अंतःकरणका लक्षण ज्यादह फायदेमंद होता है, अंतःकरणका लक्षण सत्व धैर्य या हिंमत है, जो शख्श हिम्मत बहादूर हो, वो हमेशां सुखचैन भोगेगा.–

६६ [ जैनशास्त्र उत्तराध्ययनके आठमें
अध्ययनकी टीकामें पाठहै, ]

**अस्थिष्वर्था त्वचि भोगाः-सुखं मांसे स्त्रियोक्षिषु,**
**गतौ यानं स्वरे चाज्ञा सर्वं सत्वे प्रतिष्ठितं, १**

( अर्थः ) –जिसशख्शकी हड्डीयें मजबूत और वजनदार हो, वो दौलतमंद होगा, जिसके शरीरकी चमडी मुलाइम हो, उसको एश आराम ज्यादा मिलेगा, जिसका शरीर मोटा ताजा हो, हाथपांवकी नशे उसकी न दिखाई देती हो, वो सुखचैनसें जींदगी गुजारेगा, जिसकी आंखे तेजदार और खुबसुरत हो, उसकों औरतकी तर्फसें सुख ज्यादा मिले, जिसकी चाल अछी हो, उसकों सवारीका सुख मिले, और जो शख्श तकलीफके वख्तभी हिम्मत बहादूर बना रहे, वो हमेशां सुखचैन भोगेगा.–

६७ [ जैनशास्त्र उत्तराध्ययनके पनरमें अध्ययनकी
टीकामें बयानहै, ]

**चख्खुसिणेहे सुभगो दंतसिणेहे अ भोयणं मिठ्ठं,**
**तयनेहेण य सोख्खं नहनेहेण होइपरमधणं, १**

( अर्थः )–जिसशख्शकी आंखोमें स्नेह हो, वो हमेशां सौभाग्यवान् बना रहे, जिसके दात स्निग्ध हो, उसकों खानपान अछा मिले, जिसके शरीरकी चमडी मुलाइम हो, उसकों हमेशां आराम-चैन मिलता रहे, और जिसके नख तेजदार लालरंगके हो, उसके-पास दौलत हमेशां बनी रहे.–

६८ आंखे, नाक, और हाथ जिसके लंबे हो, वो दौलतमंद शख्श होगा, जिसका नाक, तोतेकी चंचुसमान अणीदार हो, वो सुखी और धर्मी होगा.–

६९ कंठ, जांघ, और पीठ जिसकी छोटी हो, वो नसीबेदार शख्श होगा, केश–नख–चमडी दांत और अंगुलीके पोरवे जिसके पतले हो, अछा है, लंबी उम्र भोगेगा.–

७० हाथपांवके तलवे आखोके कोंने-नख-तालु जबान और होठ जिसके खुबसुरत और लालरंगके हो वो एश आरामभोगनेवाला हो.–

७१ छाती मस्तक और निलार जिसके चोडे हो तो अछा हैं, आराम चैन मिले, जिसकी अवाज और नाभि गंभीर हो तो अछा है, सुखचैन पायगा.–

७२ खडे होनेपर जिसके हाथ गोडेतक लंबे हो, वो सुखी और हिम्मत बहादूर होगा, जिसके हाथपांवकी अंगुलीयें लंबी हो, वो बडी इज्जत पावे, होशियार और दिलका दलेर हो, जिसका निलार उंचा वो उच्च पदवी पावे.–

७३ जिसकी तर्जनी अंगुली लंबी हो, वो तामसीप्रकृतिवाला हो, और आरामतलब हो, जिसके हाथपांवकी अंगुलीयें लंबी और अणीदार हो वो शख्श नसीबेदार और सुखचैन भोगे.–

७४ जिस शख्शके पुरे बत्तीसदांत हो, वो निर्ग्रंथमुनि या दौलतमंद गृहस्थ होगा, जिसके ( ३१ ) दांत हो, वोभी अछा है, और जिसके ( ३० ) दांत हो, वोभी ठीक है, सुखी होगा, जिसके इससें कम दांत हो, वो तकलीफसें जींदगी गुजारे.–

७५ जिसके ललाटमें पांचरेखा आडी पडीहुई हो, वो (१००) वर्स जीयेगा, चार रेखावाला ( ८० ) वर्स, तीन रेखावाला ( ६० ) दो रेखावाला ( ४० ) और एकरेखावाला (२०) वर्स जियेगा.–

७६ जिस शख्शका मुख हमेशा खुशमिजाज और प्रसन्न रहे वो कभी दुखी न होगा, सुखचैन भोगनेवाला होगा.–

७७ हरेक शख्शके हाथमें तीनरेखा जरुर होती हैं, एक आयुष्य-रेखा, बीचली विभवरेखा, तीसरी मणिबंधसें निकलकर अंगुठे और तर्जनीके बीच जामिलनेवाली यशरेखाहैं, ये तीनो रेखा जिसके अखंड साफ और लंबी हो, तो उस शख्शकी इज्जत दौलत और उम्र पुरी जानना, अखंड साफ और लंबी न हो तो इज्जत दौलत और उम्र कम जानना.—

७८ जिसके हाथमें बहुतसी फिजहुलरेखा हो या बिल्कुल कम रेखा हो वो ठीक नहीं, मामुली आदमी होगा, बत्तीस लक्षण हाथमेंही नही, बलिक! सारे शरीरमें किसीजगह पडे हो जरुर फायदेमंद होगें, टुटे फुटे लक्षण फल नही देयगें, साफ लक्षण एकभी होगा तो पुराफल देगा.—

७९ जिसके हाथमें कमलका आकार हो, हमेशां सुखचैन भोगे, जिसके हाथमें भालेका निशान हो वो जंग करनेमे बहादूर हो.—

८० जिसके हाथकी सभी अंगुलीयोमें चक्र हो, वो जैनमुनि या राजा हो, नवचक्र हो तो दिवान, आठचक्रवाला हमेशां दौलतमंद हो, मगर बीमार रहे, सात चक्रवाला सुखी, छह चक्रवाला कामी, पांच–चार–तीन–दो–या–एक चक्रवाला गुणवान होता हैं.

८१ जिसके दोंनों हाथोंकी अंगुलीयोंमें और अंगुठोंमें दाहनेमें दक्षिणावर्त और बामेमें बामावर्त शंख हो वो हरतरहसें सुखी रहे.

८२ जिसके हाथकी अगुलीयोमें या अंगुठोमें सीपका चिन्ह हो वो मोहनी कर्मके उदयसे तकलीफ पायगा.—

८३ जिसकी अनामिका अंगुलीके तिसरे पोरवेसें कनिष्ठा अंगुली बढगई हो, वो दौलतमंद और सुखी होगा, जिसकी मध्यमा अंगुलीके तिसरे पोरवेसें तर्जनी अंगुली बढगई, हो वो नसीबेंदार होगा.—

८४ जिसकी हाथकी अंगुलीये खडीकरके देखो, अगर आपसमें हुई हो, वो शख्श दौलतको इकट्ठी करे और कंजुस हो,

जिसके बीचबीचमें अंतर पडाहुवा हो वो दिलका दलेर और दौलत सर्फ करनेमें बहादूर होगा.–

८५ जिसके अनामिका अंगुलीके मूलसें कनिष्ठा अंगुलीका मूल नीचे हो, वो शख्श अकलमंद होगा, और इसीतरह जिसके मध्यमा अंगुलीके मूलसे तर्जनी अगुलीका मूल नीचेकों हो वोभी अकलमंद और उपदेशक होगा, सभामे भाषण देसके और चतर होगा.–

८६ अनामिका अंगुलीके नीचले पोरवेमें जितनी आडीरेखा हो उतनी वो शख्श हकुमत भोगे, और जितनी खडीरेखा हो उतनी उसकी धर्मश्रद्धा पकी बनी रहे.–

८७ मध्यमा अंगुलीके नीचले पोरवेमें जितनी आडी और खडीरेखा हो, उतनी उस शख्शकों हकुमतमें और धर्मश्रद्धामे कमी होगी, अनामिकासे मध्यमाका फल उल्टा कहा है, कनिष्ठा अंगुलीके नीचले दो पोरवेमें जितनी खडीरेखा हो, उतना उस शख्शकों सुखचैन बना रहे.–

८८ तर्जनी मध्यमा और अनामिकाके बीचले पोरवेमें जितनी खडीरेखा हो, उतने उस शख्शके दोस्त हो, और आडी हो, उतने दुश्मन हो, तर्जनी अंगुलीके नीचले पोरवेमे जितनी खडी और आडीरेखा हो उतने उस शख्शके अवर्णवाद बोलनेवाले हो, अनामिका अगुलीके बीचले और नीचेके पोरवेकी खडीरेखाकों धर्मरेखामेंसी गिनी है.–

८९ मर्दके जैसें दाहने हाथके लक्षण देखेजाते है, वैसे बामे हाथकेभी देखना चाहिये; दाहने हाथके लक्षण पुरेपुरा फल देयगें, और बामे हाथके लक्षण कम देयगें, मगर वृथा नही.–

९० बत्तीस लक्षणोमेंसे एकभी लक्षण जिसके हाथमें या शरीरमें साफ हो, तो वो एकही लक्षण तमाम उम्र, फायदा पहुचाता रहेगा, अगर कोई कुलक्षण साफ पडगया हो तो वोभी तमाम उम्रतक बुरा फल पहुचाता रहेगा.–

९१ जो शख्श अपने हाथकी अंगुलीयोंसें (१०८) अंगुल उंचा हो, वो तेजस्वी होगा, जिस शख्शकी उंचाई (९६) अंगुल हो वो मध्यम और जो शख्श (८४) अंगुल उंचा हो वो सामान्य पुरुष होगा, और इससे कम उंचा हो वो तकलीफके शाथ जींदगी गुजारेगा, शरीरकी उंचाई मापनेकी तरकीब इसतरह है; अवल खडे होकर एक लंबीडोर लेना, और दाहने पांवके अंगुठेसें थोडी दबाकर मस्तकतक उंची लेजाना, फिर उस डोरकों अपनी अंगुलीयोंसें इसतरह, माप देखना, कितनी अंगुलप्रमाण डोर लंबी है, मापते वख्त हाथकी अंगुलीयोंके बीचले पोरवेसें मापना, नीचले पोरवेसे मापोगे तो माप ठिक न होगा, इसीतरह उपरके पोरवेसें मापोगे तोभी माप बराबर न होगा, मापनेकी तरकीब गुरुलोगोंसें खसीना चाहिये.–

९२ ज्यादा शूरवीर, ज्यादा अकलमंद, ज्यादा इज्जतदार और ज्यादा सुखी, इस पंचमकालमें कम उम्रवाले होते हैं, सबब पंचमकालमें अछी चीजोंकी ज्ञानी शख्शोने हानि होना फरमाया –

९३ नाकके दोनों छिद्र छोटे होना उमदा है,–जिसका नाक हमेशां सुका बना रहता हो, वो लंबी उम्र भोगेगा, जिसके कान, नाक, हाथ, पांव, और आंखे लंबी हो, उसकी उम्र लंबी जानना.

९४ जिसकी आंखे कमलसमान खुबसुरत हो, दोनों कोने लाल, कीकी शाम और बीचमे सफेदी होना यह लक्षणवती आंखोंके चिन्ह हैं, हाथीके नेत्रोंकी तरह जिसके नेत्र हो, वो फौजका अप्सर हो, मोरकी आंखोंसमान आंखवाला शख्श मध्यम स्थितिवाला हो, और मांजरी आंखवाला आपमतलबी होता है.–

९५ जिसके शरीरका रंग–हीरा–मानक–मोती–सोना–या–हरताल समान चमकदार हो, वो नसीबेदार और सुखचैन भोगनेवाला होगा, जिसके शरीरका रंग प्रवाल या चंपेके समान हो, बडा इकबालमंद शख्श होगा.–

९६ चाहे मर्द हो या औरत मुबारक चहेरा और खुबसुरत रूप पाना बडी तकदीरके ताल्लुक है, पेस्तरके जमानेके लोग आला दर्जेकी तकदीरवाले थे, जमाने हालमे वैसे नही रहे.–

९७ जिसकी कुदरती अवाज–सारस–कोकिल–चक्रवाक–क्रौंच हंस–वीणा–और सारगीके समान मीठी हो वो सुखी होगा, और एशआराम करेगा, जिसकी कुदरती अवाज मेघध्वनिके समान या हाथीकी अवाजसमान गंभीर हो, वो बडा भाग्यवान् होगा, मीठी और गंभीर अवाजवाला शख्श हरजगह इज्जत पाता हैं, और हमेशा सुखचैन भोगता हैं.–

९८ जिस शख्शकी चाल हंसकी तरह, हाथीकी तरह, सिंहकी या वृषभकी तरह अछी हो, वो हरजगह इज्जत पायगा, जिसके शरीरमें पित्तप्रकृति ज्यादा हो वो चाहे मर्द हो या औरत, अकलमंद धर्मपावद और ज्ञानी होगा.–

९९ तीर्थंकर और चक्रवर्त्तीके शरीरमें ( १००८ ) लक्षण होते है, वासुदेव प्रतिवासुदेव और बलदेवके शरीरमें ( १०८ ) और उनसे नीचेके दर्जेवालोंके शरीरमे (३२) लक्षण होते है,–आजकल जिममें पाच विजयलक्षण मिले वोभी अछा समजो.–

१०० जिसके हाथमें तराजुका आकार हो वो गेरमुल्कोंकी सफर करे और दौलत मिलावे, जिसके हाथमें अष्टकोणका आकार हो, वो दौलतमंद और खुशनसीब होगा,–

१०१ जिसके हाथमें कुंडलका निशान हो, वो दौलतमंद शख्श होगा, जिसके हाथमें देवमंदिरका चिन्ह हो वो देवमदिर बनवावे, और धर्मपर कामील एतकात रहे, या तीर्थकी जगहपर देवमूर्त्ति जायेनशीन करे.–

१०२ जिसके हाथमें सर्पका निशान हो, वो तामसी प्रकृतिवाला हो, मगर दौलतमद बना रहे.–

१०३ अंगुठे और अंगुलीयोंमें जो तीनतीन पोरवे होते है, और उनके वीचमें जो जवके आकार जैसे कापे बने रहते है, वे दशसे कम हो तो ठीक नही, वारा हो तो दौलतमंद, पनरां हो तो ज्यादा दौलतमंद, और अठारां वीश या पचीसतक हो, तो ज्ञानी और सुखी मनुष्य होगा.–

१०४ जिस शख्शके हाथपर थोडेथोडे वाल उगेहुवे हो, वो शख्श एशआराम भोगेगा, औरतके हाथपर अगर वाल उगेहुवे हो तो ठीक नही, जिसके हाथकी नशें न दिखाई देती हो, और मांसकरके पुष्ट हो वो शख्श एशआराम भोगे, जिसके हाथका अंगुठा छोटा हो तो ठीक नही, अंगुठेका पहला पोरवा लंबा हो वो शख्श धर्मपर कामील एतकात रहे, और इसीतरह दुसरा पोरवाभी लंबा होना अछा है.–

१०५ जिस शख्शकी पांचों अंगुलीयोंके सीरेपर चक्रका निशान हो वो दुनियामे इज्जत पावे और उसकी पूज्य पदवी बनी रहे, जिसकी तर्जनी अंगुलीके सीरेपर चक्र हो उसके वडेवडे दोस्त हो, और उनसें फायदा मिले, मगर दक्षिणावर्त्त चक्र होना चाहिये, वामावर्त्त होगा तो कमफल करेगा, इसीतरह जिसके मध्यमा अंगुलीके सीरेपर चक्र हो, उसको जमीनसे फायदा मिलेगा, इसीतरह जिसके अनामिका अंगुलीके सीरेपर चक्र हो वो विद्वान् हो, तरहतरहके इल्मका जानकार हो, और जो कामकरना शुरु करे उसमें फतेह पावे, अगर वो दुनियाको छोडकर दीक्षा इख्तियार करे तो राजाओंकाभी धर्मगुरु बने, और पूजनीक हो, मगर चक्र दक्षिणावर्त्त होना अछा है, वामावर्त्त फल कम देगा.–

१०६ जिसकी कनिष्ठा अंगुलीमें चक्र हो वो मुल्कोंकी सफर करे और दौलत पावे, जिसके पांचों अगुलीयोंमें शंख हो तोभी अछा है, जिसकी पांचो अंगुलीयोंमें सीप हो वो शख्श कंजुश हो, जिसके दशों अंगुलीयोंमे चक्र हो वो राजा या योगीराज होगा.–

१०७ जिसके पांवमे चक्रका आकार हो वो दौलतमंद और दिलका दलेर होगा, जिसके पावमे अगुठेसें निकलकर नवअंगुल लंवी ऊर्द्धरेखा पानीतक चलीगई हो, वो राजा हो या योगी हो.–

१०८ जिसके पांवमे धजाका निशान हो उसकी दुनियामें वडी इज्जत वढे, जिसके पावमे रथका आकार हो उसके घर-रथ-वगी घोडे वगेरा सवारी वनी रहे, जिसके पांवमें शंखका चिन्ह हो वो वैराग्य पाकर साधुमहात्मा वने.–

१०९ जिसके पावमें चंद्रमाका निशान हो वो देवकीतरह हमेशां पूजनीक रहे, जिसके पावमे त्रिशूलका आकार हो वो साधु वने, मगर उससे धर्म आराधन होसके नही, जिसके पांवमे मोरका निशान हो तो अछा है, इरादे उसके पूर्ण होते रहेगें, जिसके पावमें काचवेका आकार हो वो जलमे तेरना सिखे और समुंदरकी मुसाफरी करे.–

११० जिसके पावमें अष्टपांखडीका कमल हो, वो राजाधिराज हो और सलतनत करे, जिसके पांवमे अंगुठेके नीचे जवका आकार हो वो वडा जंगवहादुर और दौलतमंद होगा.–

१११ जिसके पांवमे पदमका चिन्ह हो वो राजाधिराज या राजरिषि होवे, जिसके पावमें धजाका चिन्ह हो वो दुनियामें इज्जत पावे और मशहूर शख्श हो, जिसके पांवमे छत्रका चिन्ह हो वो छत्रपतिराजा होकर अमलदारी करे, जिसके पावमे धनुष्यका आकार हो वो हमेशा दुसरोंसें लडता रहे, जिसके पावमे सर्पका चिन्ह हो उसका मृत्यु जहेरसे होगा.–

११२ जिसके पांवमें स्वस्तिकका चिन्ह हो वो संसार छोडकर दीक्षा इख्तियार करे, धर्माचार्य वने, और दुनियाकों तालीम धर्मकी देवे, जिसके पावमे वज्र हल या कमलका चिन्ह हो वो राजा या निर्ग्रंथ मुनि होवे, जिस शख्शके पांवमें चक्रका निशान हो उसके वडेभाग्य समजना, हमेशा तंदुरस्त और दौलतमंद वना रहेगा.–

## [ औरतोंका लक्षणविज्ञान, ]

११३ जैसे मर्दके दाहने अंगके लक्षण अछे फरमाये वैसे औरतके बांमें अंगके लक्षण अछे जानो, जिस औरतका मुख गोल और खुबसुरत हो, और सीरके केश लंबे हो वो पदमनीके लक्षण हैं, जिस औरतके शरीरपर केश कम हो वो दौलतमंद वनी रहे, पतले हृदयवाली औरत हमेशां खानपानसें सुखचैन भोगे और दिलसे दलेर हो.–

११४ जिस औरतका निलार छोटा हो अछा नही, वडे निलारवाली औरत एशआराम भोगती रहेगी, जिस औरतके निलारमें वामीतर्फ छोटासा तिल हो वो हरजगह इज्जत पायगी, बहुत लंबी और बहुत नीची औरत खाविंदके हुकमकों मंजुर न रखेगी.–

११५ जिस औरतका नाक छोटा और खुबसुरत होगा वो सुखसे जींदगी गुजारेगी, मांजरी आंखवाली औरत आपमतलबी होगी, जिस औरतके शरीरपर केश थोडे हो नींद कम और पसीनाभी उसको कम आता हो ये सब पदमनीके लक्षण हैं.–

११६ जिस औरतके हाथमें चक्र, धजा, छत्र, चमर, तोरण, अंकुश, कुंडल, हाथी, घोडा, रथ, जव, पर्वत, मछली, महेल, कलश, पदम, तलवार, कमल, और फुलमाला वगेरा चिन्ह हो वो दौलतमंद होगी, सुखचैन भोगे, और उसकी इज्जत दुनियामें वनी रहे.–

११७ जिस औरतके होठ पतले और लाल हो वो हमेशा सुख पावे, जिस औरतकी नाभि उंडी हो उसके पास दौलत हमेशा वनी रहे, जिस औरतकों हसते वख्त गालमें खाडे पडजाते हो वो खुशमिजाज और पतिसे स्नेहरखनेवाली हो, जिस ओरतके पांवपर वहुत केंश उगेहुवे हो, वो दौलतसें तंग रहेगी.–

११८ कोयलकी अवाज समान मीठी अवाजवाली औरतके वडेभाग्य समजना, उसका, खजाना तर रहे, और हरजगह इज्जत पावे.–

११९ जिस औरतके दांत छोटे और पतले हो वो हमेशां खान-पानसे सुखी रहे, जिस औरतके नागिकाके दोनों छेद छोटे हो केश पतले और चमकीलेहो और आखोमें शर्म हो ये सन पदमनीके लक्षण है.–

१२० जिस औरतके पांवकी तर्जनी अंगुली अंगुठेसें लंबी हो वो पतिके हुकममे न चले, और जिस औरतके पांवकी तर्जनी अगुलीसे मध्यमा अंगुली लंबी हो वो घमंड करनेवाली हो, और उसी सबनसे गो तकलीफ पावे, जिस औरतकी नाभि बहार निकली हुई हो, होठ शामरगके और दात बहार निकले हुवे हों, उसकों पतिकासुख कम मिले, और तकलीफसें दिन गुजारे.–

१२१ जिस औरतके पांवमे सात अंगुल लंबी ऊर्ध्वरेखा हो वो राजाकी रानी हो या उसको दौलतमंद पति मीले, और अपने घरमें उसका मान अछा रहे, जिस औरतकी भ्रू लंबी हो वो हमेशां सुख भोगनेवाली हो, जिस औरतके बत्तीस दांत एकसरीखे खुनसुरत हो वो हमेशा मिष्ट भोजन खावे और सुख भोगे.–

१२२ जिस औरतके गलेमे तीन आडीरेखा पडी हो वो खुशनसीन और आरामतलब रहे, ये सब मर्द और औरतके लक्षण बयान किये, इसको पढकर आमलोग फायदा हासिल करे, औरतके वामअगके लक्षण पूर्णफल देते है, और दाहने अंगके कमफल देते हैं, मगर वृथा नही जानना.–

[ बयान हस्तरेखाका खतम हुवा, ]

## [ उत्पात-निमित्त, ]

१ जब दुनियादारोंका नसीबा कमजोर आता है, अनहोते बनाव बनते है, इन्ही अनहोते बनावोंका दुसरा नाम उत्पात है, जो जो उत्पात आमलोगोंकेलिये कहदेना मुनासिब है, वही इसमे लिखे जायगें, उत्पात होनेसे क्या क्या फल होगा? उसकी तप-

सील इसमें दिई जायगी, विजलीके होनेसें कितनेकोशतक असर होगा और गर्जना होनेसें कितनी दूरतक उसकी अवाज सुनाइदेवे वगेरा केफियत इसमें दिई है.—

२ असलमें जब दुनियादारोंके बुरेदिन पेंश हो निमित्तभी वैसे मिलने शुरु होते हैं, जिस मुल्क शहर या जंगलमें उत्पातका होना देखो! यकीन करलो इसजगह बुरेदिनोंकी निशानी है, जिस शहरके दरवजे-या-देवमंदिरके शिखरपर विजली गिरे वहां छह महिनेमें दुश्मनका जोर बढे, जिस मुल्कमें नदीयोंका पानी जिसतर्फ वहता हो, वदलकर उल्टा वहने लगजाय वहां एकवर्समें अमलदारी रद-बदल हो.—

३ जहां देवमूर्त्ति हसने लगे, या रोतीहुई दिखाई दे, सिहासनसे आपही नीचे उतर जाय वहां राजाओंमें लडाई हो और और मुल्क-बरबाद हो.—

४ जहां दिवारपर बनीहुई चित्रामकी पुतली रोने लगे, हसती हुई दिखाई दे, या भ्रूकुटि चढाकर गुस्सा करे वहा गदर मचे लोगोंकों घर छोडकर भागना पडे और मुल्क उजाड होजाय, जहां आधीरातकों काकपक्षी बोले वहां दुकाल पडे, और लोगोंको बुरेदिन पेंश हो, चारघडी रातरहेते वख्त काक बोले तो वो बात यहा शुमार नही करना.—

५ जिस मुल्कके राजेका डंका निशान लडाइमें जातेवख्त विना सबब टुट जाय उसकों लडाईमें शकिस्त हो, जहां देवमंदिरके या राजाके चमरसें विनाअग्नि आगके अंगारे झरने लगे, वहा टंटे झगडे होकर वहुतोंका नुकशान हो.—

६ जहां वृक्षोंमेसें लोहीकी धारा छुटे वहां दंगे फिसाद बढे और लडाई हो, जहां राजाके छत्रमें आग लगे वहां राजद्रोह पैदा हो.—

७ जिस राजाके कोठार या शस्त्रशालामेसें विना अग्नि धुआं निकलने लगे, वहां लडाई और दंगे फिसाद वढे, जहा वृक्षोमेंसें दूध घी या सहेतकी धारा छुटे वहा लोगोमे वीमारी चले और वुरेदिन पेंश हो, जिस उत्पातका फल छह या वारां महिनेमें न हुवा वो उत्पात गलत समजना.–

८ जहां देवमूर्त्ति अकस्मात टुट जाय, या नेत्रोंमेंसें आसु गिरे, पसीना आजाय अगर मुखसें वोलना दिखाई दे, उस मुल्कके राजाका और लोगोका नुकशान हो, और आफत आवे, देवमंदिर राजमहेल धजापताका या तोरण अग्निसें या विजली गिरनेसे जल उठे वहां वुरे दिनोकी निशानी है, और किसी तरहकी आफत आयगी.–

९ जहां विना अग्निके धुएका निकलना. आसानसें धूल गिरना, या दिन होते हुवेभी विना सबब अंधेरा होजाना वुरे दिनोंकी निशानी है, रातको विना वारीश या वादलके आसानमें तारे न दिखाई दे और दिनमे दिखाई दे वो ठीक नही, किसी तरहकी आफत पैदा होगी, वृक्षोमेसे अचानक रोनेजैसी या वोलनेजैसी अवाज निकले तो अछा नही, वुरे दिन पेंश होगें, वृक्षोंके उत्पातका फल अंदाज दशमहिनेमे मिलना चाहिये, अगर नही मिला तो गलत समजना.–

१० जहां आसानसें लोही–चर्वी–मांस या हड्डीयोंकी वारीश हो वहां किसीतरहकी वीमारी फैलेगी, जिस शहरमें आसानसें कोलसे या धूल वरसे तो उस शहरके लोगोको आफत पेश हो.–

११ जहां किसी नदीमे तेल-लोही-या मांस वहेता हुवा दिखाई दे तो उसके आसपासके गाव नगरपर दुश्मनोंका जोर वढे, किसी कुवेमेंसें अग्निकी ज्वाला या धुआ निकलता दिखाई दे या गाना वजाना सुनाई दे तो इर्द गिर्दके मकानोंमे या चौतरेमे वीमारी फैले, कुत्तोंका रोना जिस मकानके आसपास सुनाई दे तो अशुभ-सूचक है.–

१२ बिजलीका होना (८०) कोशतक दिखाई देता है, और आसानकी गर्जना (१००) कोशतक सुनाई देती हैं, पेस्तरके जमानेमें बारीशका जल मीठा और स्निध बरसता था, जमीनकों खुशबूदार बनाता था, पुष्करावर्त मेघका जल घृत या दूधकी तरह ताकातवाला होता था, जभी बारांबारां वर्सतक जमीनमें उसकी तरावट बनी रहती थी, और खेंती वाडी खूब पैदा होती थी, जमाने हालमें वैसे बरसात नही रहे, जैसा जमाना है, वैसे बरसात है, और खेंती वाडी पैदा होती हैं, बरसात होते वख्त मोरका बोलना अछा है, दुनियामें खेंती वगेराका फायदा जरुर होंगा.–

१३ बरसात वायु वगेरा निमित्त जीवोंके पुन्यानुसार होते है, जिन जिन लोगोंकों पुन्यपापपर यकीन नही, उनकी वात निराली है, मगर पुन्यपापरूपी सडक ऐसी है, जो अखीरमें उसपर आनाही पडता है, पेस्तरके लोग निमित्त ज्ञानको खयालमें रखते थे, जमाने हालमे कई लोग इस वातकों हासीमे उडा देते थे, मगर निमित्त-ज्ञान वेशक! सचा है, जाननेवाला होशियार होना चाहिये.–

१४ लडाईकों जातेवख्त राजासाहवका मुकुट हार या दुसरा गेहना टुट जाय या गिरपडे तो उसकी फतेह न होगी, जंगलके बहुतसें जानवर अचानक शहरमें आजाय तो ठीक नही, अशुभ-सूचक है, जिस जगह कुवेका मीठा पानी अकसात खटा खारा या कडवा होजाय तो उसके आसपासके लोगोंमें बीमारी फैले, जिस जगह वृक्षोंमे एक फलपर दुसरा फल पैदा हो या एक फूलपर दुसरा फूल आजाय तो उस जगह आफत आवे, जिस जगह जिनमंदिरके शिखरमेंसें विना अग्निके धुआं निकलना दिखाई दे तो उस जगहके वसनेवालोंकों बुरेदिनोकी निशानी है.–

१५ जिस मंदिरके शिखरपर उल्लु आनकर बेठे वहां दुष्काल पडे, जिस जगह सर्प अपनी पुंछकों उंची करके चले तो वहां लडाई दंगे फेले, और लोगोंमें फिक्र पैदा हो.–

१६ जिस जगह जिनमंदिरके शिखरपर चढाइ हुई धजा उसी रोज वापिस गिरजाय तो उस जगह लोगोंको नुकशान पेंश हो.-

१७ जिस मनुष्यके हाथसें जिनमूर्त्तिका मस्तक टुटजाय उसकी दौलत चलीजाय और मरणांत कष्ट हो.-

१८ लडाईमें जातेवख्त जिस राजाके रथपर उल्लु आनबेठे उसकी फतेह होना मुश्किल है, तकलीफ पेंश हो या मरणात कष्ट आवे.-

[ बयान उत्पात निमित्तका खतम हुवा, ]

---

[ बयान अंतरिक्ष-निमित्त, ]

१ इसमें उल्कापात, दिग्दाह, गंधर्वनगर, और इंद्रधनुष्यका आकार आसानमे दीखपडे तो दुनियाको क्या ! नफा नुकशान होगा ? दुमदार सितारा ( पुछडिया तारा, ) दिखाई दे तो क्या फल होगा ? उसका बयान दिया है.-

२ पुद्गल परमाणुके तरहतरहके आकार आसानमे जो बनते है, और नजरके सामने दिखाई देते है, उसका नाम उल्का है, भूत-प्रेत-राक्षस-उंट-बंदर-या हिरनके जैसी शिकलवाली उल्का बुरे फल देनेवाली होगी, सर्प गोंह और दोसिरवाली उल्काभी बुरी होती है.-

३ उल्का जब चांद-सूर्यको लगकर गिरे तो उस जगह राज्यका उलथा हो, और दुष्काल पडे, सूर्यसें निकसीहुई उल्का सफरकों जानेवालेके सामने आतीहुई आसानमे दिखाई दे तो सफर जानेवालेकों फायदेमंद है.-

४ जिसजगह देवमंदिर या इंद्रधजापर उल्का गिरे तो राजाकों और सलतनतको बुरे दिनोंकी निशानी है, उल्का किसीके घरपर गिरे तो उस घरवालेको तकलीफ पैदा हो, दंडेके आकारकी उल्का आसानमे बडीदेरतक दिखाई दे तो राजाकों खौफ पैदा हो, जो

उल्का उल्टी चले यानी जहांसे निकसी हो वहांही फिर लोटजाय तो व्यापारी लोगोंको नुकशान करे, बांकी-टेडी चलनेवाली उल्का राजाकी रानीयोंकों और उपरकों जानेवाली उल्का ब्राह्मणोंको तकलीफ पैदा करे, मोरपींछीके आकारकी उल्का दुनियाको और मंडलके आकारकी उल्का उस शहरकों नुकशान पैदा करे.–

५ जो उल्का बेलके आकारकी बनकर आसानसें गिरे तो उसजगह खेतीका नुकशान हो, चक्रकीतरह फिरतीहुई उल्का आसानसें गिरे तो उस जगहके मनुष्य बरबाद हो.–

६ सिंहके आकारकी उल्का, वाघके आकारकी उल्का, वराह, स्वान, घोडा, धनुष्य, गदा, वज्र, तलवार, सियार, बकरा, काक, खरगोस, मगरमछ, रीछ, हल, और अजगरके आकारवाली उल्का आसानसें गिरे तो उस मुल्कवालोंकों नुकशान हो, अगर किसीजगह दिनभर उल्का गिरती रहे तो जानना उस जगहके रहनेवालोंकों तकलीफ होगी.–

७ कमलके आकारवाली उल्का, लक्ष्मीदेवीके आकारकी या वृक्ष, चांद, सूर्य, नंघावर्त, कलश, धजापताका-हाथी-छत्र, सिंहासन, रथ, या मुद्गरके आकारकी उल्का आसानसे गिरे तो उस मुल्कके वाशिंदोकों फायदेमंद होगी, जिस वख्त वारीश जोरसें होरही हो, उस वख्त उल्कापात हो, और शामरंगका पथर आसानसे गिरे वहां जानवरोंका मरना हो.–

८ जिसजगह संध्याके वख्त सूर्य अस्त होनेके बाद और चंद्रके उदयसे पहले आसान एकदम लालरंगका होजाय और कुछदेरतक बना रहे, उसको दिग्दाह बोलते है, जिस जगह दिग्दाह दिखाई दे उसजगह लडाई दंगे पैदा होगें, और लोगोंको तकलीफ होगी, अगर उस दिग्दाहमेंसें एकमूर्त्ति आदमीके आकार हाथ पसारकर निकले और छिपजाय, और फिर पीछें मस्तकपर हाथ देकर रोती हुई दिखाई दे, वहां गदर मचे, तलवार चले, और हजारोंकों मरना

ाजाय, जहांके लोगोंकों आसानमें नकली वाजे बजते सुनाई दे हां तकलीफ पेंश हो, और घर छोडकर चले जाना पडे.–

९ गंधर्वनगर उसकों कहते है, जो आसानमें तरहतरहके रग रग पुद्गल परमाणु परिणमन होकर नगर जैसा आकार दिखाई , अगर शामरगका गंधर्वनगर दिखाई दे तो बुरा है, लालरगका ़खाई दे तो जानवरोंकों तकलीफ हो, हरा, पीला, सफेद, लाल, ा शाम किसीरगका हो, पूरब पश्चिम, या दखन दिशा तर्फ धर्वनगर होना अछा नही.–

१० उत्तर दिशाका गंधर्वनगर जिसमे गहेरा, साफ और ़मकीला रग हो और उसमे किला तोरण, वृक्ष, और पशुपक्षीके ाकार उमदा तोरसें दिखाई दे तो अलबते! अछा है, वहाके ोगोंको फायदा होगा.–

११ ईशान, अग्नि, और वायुकोंनेमें गंधर्वनगर हो तो शूद्रोंकों कलीफ पैदा हो, पांडुरगका गधर्वनगर किसी दिशामें हो मुल्कमे हावायु चले, और वडेवडे द्रख्तोंकों गिरा डाले.

१२ पीलेरगका दिग्दाह दिखाई दे तो सलतनतमें खौफ पैदा ा, अग्निके समान रगवाला दिग्दाह देशभंग होजानेका सूचक है, ास दिग्दाहमें सूर्यसमान रौशनी हो, वो राजाको खौफ पैदा रेगा, पूरवदिशामें दिग्दाह हो तो क्षत्रियोंकों–पश्चिम दिशामें ा तो किसानोंकों–दखन दिशामें हो तो वणिकोंकों और उत्तर ़शामें हो तो ब्राह्मणोंको तकलीफ पैदा होगी.–

१३ आसान साफ हो, तारे दिखाई देते हो और मंदमंद वन चलता हो उस वख्त सुवर्णजैसें रगका दिग्दाह दिखाई दे ो राजा और रियायाकों फायदेमंद है.–

१४ हरहमेश सूर्य–अस्त होनेके बाद जबतक आसानमे तारे न ़खाई दे तबतक संध्याकाल कहाजाता है, तावे जैसे रगकी और ीलेरगकी संध्या फौजकों और फौजके अप्सरोंकों बुरी है, ९२

संध्या किसानोंकों बुरी है, अनाज और जानवरोंकों बरबाद करे, धुएजैसे रंगकी संध्या गाओंकों तकलीफ पेंश करे, मजीठ जैसे रगवाली संध्या हो तो अग्निका खौफ होगा, पीलेरगकी संध्या हो वायु चलेगा, बारीश होगी, और भसके समान रंगवाली संध्या हो बारीश न होगी.-

१५ संध्याकालके बादलमें हाथी, घोडा, धजा, छत्र और पहाडके जैसे आकार दिखाई दे तो अछा है, फतेह होगी, वहांके लोग सुखचैन पायगें.-

१६ जिस मुल्कमें दुमदार सितारा दिखाई दे वहांके राजा और रियायाकों खौफ पैदा हो, दुमदार सितारेकी शिखा जिसतर्फ झुकी हो, उस दिशावालोंकों ज्यादा तकलीफ होगी, दुमदार सितारेके छेडेपर दुसरा सितारा दिखाई दे तो उस मुल्कमे बीमारी चले और मुल्क बरबाद हो.-

१७ बारीशके दिनोंमें आसानमें इंद्रधनुष्यका होना अछा है, चांद-सूर्यकी चारोतर्फ गोल आकारका मंडल होना भी अछा और उसका नाम शास्त्रोमें परिवेप लिखा है, इंद्रधनुष्य और परिवेप शित और उश्नकालमें होना ठीक नही, आसानमें पचरगी धनुष्यके आकार कमान दिखाई देती है, उसकों इंद्रधनुष्य बोलते है, बारीशके दिनोंमे इंद्रधनुष्य दिखाई दे तो जानना जल्दी बारीश होगी. ईशान कोनेंमें बिजलीका होना दिखपडे तोभी जल्दी बारीश हो.-

१८ चंद्रमाकी चारों तर्फ चाहे सफेद रगका परिवेप हो, काले रंगका या धूम्रवर्णका हों बारीश अछी होगी, पचरगी परिवेप हो तो लडाई चले, हरे या पीलेरगका हो तो बीमारी चले.-

१९ सूर्यकी चारोंतर्फ पीले रगका परीवेप हो राजाकों या रियायाको खौफ पैदा करे, सूर्यकी चारोंतर्फ दिनभर परिवेप बना रहे तो दुष्काल पडे, अगर हरेरगका हो तो अनाज वृक्ष और

फलफुल बरबाद हो, शामरंगका अर्ध परिवेष हो तो दुश्मनोका जोर बढे, पचरंगी परिवेष हो तो जानवरोंका मरना हो.–

२० चांद-सूर्यकी चारोंतर्फ परिवेष लगा हो और उसमें शनि आजाय तो अनाज कम पैदा हो, मंगल आजाय तो फौजकों और फौजके अप्सरको तकलीफ होगी, बृहस्पति आजाय तो दिवान और पुरोहितकों तकलीफ पेशहोगी, बुध आजाय तो बारीश अछी हो, शुक्र आजाय तो फौजके लोगोंमे और राजाकी रानीयों तकलीफ होगी, राहु आजाय तो बीमारी चले और केतु आजाय तो दुष्काल पडे.–

[ बयान अंतरिक्ष निमित्तका खतम हुवा, ]

[ दर बयान शकुनशास्त्र, ]

१ शकुन दो तरहके होते हैं, १ द्रष्टशकुन, और २ दूसरा शब्द-शकुन, द्रष्टशकुन उसको कहते है, जो वस्तु नजरसें दिखाई दे, और शब्दशकुन उसको कहते है; जो अपने कानसे सुनेजाय.–

२ आजकल शकुनशास्त्रपर लोगोंका एतकात कम होता जाता है, मगर शकुन भले बुरेके बतानेवाले जरूर है, अपनी तकदीर आलादर्जेकी हो तो अछे शकुन हो, और बुरी तकदीर पेंश हो तो बुरे शकुन हो.–

ताद्दशी जायते बुद्धिर्व्यवसायोपि ताद्दशः
सहायास्ताद्दशाश्चैव याद्दशी भवितव्यता, १

(अर्थः)–जिसका जैसा होनहार हो, उसको वैसी बुद्धि पैंदा होती है, उद्योगभी वैसा बनता है, और मददगारभी वैसेही मिल जाते है, जैसा उसका भाविभाव बननेवाला हो.–

३ घरसे रवाना होतेवख्त अछे शकुन हुवे, और जहां गये वहांभी अछे शकुन हुवे तो जानना इरादा पूर्ण होगा, पहुचते वख्तके शकुनसे रवाना होते वख्तके शकुन ज्यादह फायदेमंद फरमावे.–

४ कोश दो कोश गये वाद चाहे जैसे शकुन हो वृथा है, शकुन उसीका नाम है, जो अपनेघर या गांवके नजीकमें हो, जो शकुन नजीक दिखाई दे वो जल्दी फल देयगें, दुर गये वाद दिखाई दे वो देरीसें फल देयगें.–

५ एकदफे बुरेशकुन हुवे तो थोडीदेर ठहर जाना, दुसरीदफे हुवे तोभी ठहरजाना, तीसरी दफे खोटे शकुन हुवे तो जानना सफरमे जरूर विगाड होगा, और उस वख्त जाना वंद रखना, एक रोज ठहरकर रवाना होना.–

६ शकुनशास्त्रका लेख है, सजन, शकुन, या निमित्तज्ञानी मनाकरे उस वख्त मुसाफरी जाना नही, तकलीफ पेंश होगी.–

७ शब्दशकुन उसकों कहते है, जो रवाना होते वख्त शब्दके जरीये सुने जाय, जैसे कोई शख्श घरसें निकला, और सफरके लिये रवाना हुवा, उस वख्त किसी दूसरेके मुखसें सुना तुमारी फतेह होगी. तुमारी तकदीर तेज है, फायदा उठाओगें, तो जानना अपनेकों शब्दशकुन अछेहुवे, अगर ऐसा सुना, तुमारे काममें गलती है, मत जाओ, तकलीफ पाओगें, तो जानना शब्दशकुन अछे नही हुवे, इसलिये मुनासिब है, शब्दशकुनभी खयालमें रखना.–

८ धर्मशास्त्र और नजुमका फरमान है, वारसें तिथिवलवान् तिथिसें नक्षत्र वलवान्, नक्षत्रसें करण वलवान्, करणसे लग्न, लग्नसें निमित्त, निमित्तसें मनके भाव, मनके भावसें पूर्वसंचित कर्म, और पूर्वसंचित कर्मसे धर्म वलवान् है, धर्मपर ज्यादा ध्यान रखना.–

९ पहले अछे शकुन हुवे और पीछे बुरेहुवे तो पीछले फल देयगें, पहले बुरे शकुन हुवे और पीछे अछे हुवे, तो पीछले फल देयगें, पहलेवाले रद हो जायगें.–

१० शकुन सन्मुख होना अछा, दाहनी तर्फभी अछा, वायीत-र्फका अछा नही, मगर अपना चंद्रस्वर चलता हो तो वायी तर्फका-

भी अछा है, सूर्यस्वर चलता हो और दाहनी तर्फ अछे शकुन हुवे तो ज्यादा फल देगा.–

पद्मिनी राजहंसाश्च निर्ग्रंथाश्च तपोधनाः,
यं देशमनुसर्पंति तत्र देशो शिवं वदेत् १

(अर्थः)–पदमनी औरत, राजहंसह, और निर्ग्रंथमुनि जिस मुल्कमे जावे, अछे दिनोंकी निशानी हे.–

११ जैनशास्त्र व्यवहारकल्पमें जैनाचार्य हरिभद्रसूरि बयान करते है.–

पुरुषेणाथवा नार्या द्रष्टव्यं न कदाचन,
चंद्रबिंबं निशि शुक्लचतुर्थीसंभवं किल, १

(अर्थः)–हरेक महिनेकी सुदी चौथका चंद्रमा देखना अछा नही, अगर सुदी दुज या तीजका चंद्रमा देख लिया हो.–तो चौथका चंद्रमा देखना कोई हर्ज नही.–

१२ आगे फिर उसी शास्त्रमें जैनाचार्य हरिभद्रसूरी फरमाते है.

नक्षत्रस्य मुहूर्त्तस्य तिथेश्च करणस्य च,
चतुर्णामपि चैतेषां शकुनो दंडनायकः १

(अर्थः)–नक्षत्र, मुहूर्त्त, तिथि, और करण इन सबमें शकुन ज्यादा बलवान् है.–

१३ निर्ग्रंथमुनि, राजा, हाथी, घोडा, मोर, बैल, राजहंस, पदमनी औरत, या मर्दऔरतका जोडला, मुसाफरी जाते सामने मिले तो काम फतेह होगा, कितनेक शख्श मुनिजनोंका शकुन अछा नही गिनते उनकी भूल है, मुनि धर्मके नायक पूज्य और मंगलीक है, फिर उनके शकुन मंगलीक क्यों न हो? जरूर हो.–

१४ जिनप्रतिमा, फलफुल, गहने आभूषण, धजापताका, छत्रचवर, सोना–चादी, रथ, पालखी, वाजा, वीणा, सितार, सरगी, मृदंग, चंदन, आरीसा, पानीका भराहुवा घडा, रसोइका थाल, दूध, दही, गोरोचन, कमल, हथियार, पंखा, झारी, सिंहासन,

रत्न, अंकुश, विनाधुएकी अग्नि, सफेद सरसव और धोए हुवे कपडे लेकर आता हुवा धोबी, कुमारीकन्या, तांबूल, मिठाई, इत्र, और उमदावर्ण, गंध, रस, स्पर्शवाली कोइभी चीज मुसाफरी जाते वख्त सामने मीले तो फतेह होगी, और इरादा पूर्ण होगा.–

१५ मुसाफरी जाते वख्त खुबसुरत मर्द या औरत शिंगार पहने हुवे सामने मीले तो अछा है.–

१६ सफरके वख्त गर्भवती, रजस्वला, या विधवा औरत सामने मीलना अछा नहीं, अपनी माता अगर विधवा हो तो उसका सामने मीलना बेटेके लिये बुरा नही, माता बेटेका हमेशां भला चाहनेवाली होती है.–

१७ भेसे या उंठपर चढाहुवा आदमी सफरके वख्त सामने मिलना बुरा है, अगर कोई गधेपर, चढाहुवा आदमी सामने मीलजाय तो ज्यादह बुरा है, नपुंसक या रोताहुवा आदमी सामने मिले तो निहायत बुरा है.–

१८ गांव नगरमें प्रवेश करते वख्त खुद हसना या गाना ठीक नही, पेंशवाईमें आयेहुवे हसे या गायन करे कोई हर्ज नही.–

१९ मुसाफरी जातेवख्त अपने पीछे खालीघडा लेकर औरत या मर्द अपने पीछाडी आते हो, निहायत उमदा है.–

२० मुसाफरी जातेवख्त सर्प, किरकाटीया, छिपकली या गोंह जानेवालेके रास्तेमें आडे उतरे तो बुरा है, फण चढाया हुवा सर्प दिखाई देनाभी खराब है.–

२१ सफरको जातेवख्त बायीतर्फ भमरा गुंजार करे या फुलोंका रस पीताहुवा दिखाई दे तो अछा है, मुर्धेकी अवाज या मोरकी अवाज सुनाई दे या खुद नजर आजाय तो अछा है, इरादा पूर्ण होगा.–

२२ लडाईकेलिये जानेवालेके निशान या रथपर वाज पक्षी आनबेठे निहायत उमदा है, फतेह होगी.–

२३ मुसाफरी जानेवालेका पहेला कदम अटक जाय, हाथ-पांवको ठोकर लगे, कपडा फसजाय, या धजापताका गिरपडे तो अछा नही, मुसाफरीमे तकलीफ होगी.–

२४ सफरके वख्त लुला, लगडा, काणा, और अंधा सामने मिले तो तकलीफकी निशानी है, लकडीका भारालेकर कोई सामने मीले, बिल्ली लडती हुई दिखाई दे या दुर्गंधकी चीज सामने मीले किसी सुरत अछा नही.–

२५ अगारे, राख, हाडके, पथर, तेल, गुड, चमडा, चरबी, फुटाहुवा भाडा, नमक, सुका घास, छास, कपास, अनाजके छील्टे, केश, कालेरंगकी चीज, लोहा, वृक्षकी छाल, अर्गला, लोहेकी सांकल, खल, अशुभवर्ण गंध, रस, स्पर्शकी चीज सफर जातेवख्त सामने मीले तो तकलीफ होगी –

२६ फलफुल लेकर कोई मर्द या औरत सामने मीले तो मुसाफरी जानेवालोंकी फतेह होगी, इरादा पूर्ण होगा.–

२७ सफरकों जातेवख्त सारसका जोडला चाहे जिसतर्फ दिखाई दे या दोनो एकशाथ अवाज करे तो सफर करनेवालोंको फायदा होगा, अकेला सारस दिखाई देना अछा नही.–

२८ छत्री हाथमें लेकर पानबीडी खाता हुवा शख्श सामने मीले वो फतेह होगी, रोता हुवा आदमी मीले तो बुरा है, सफरके वख्त मुर्दा सामने मीलना बुरा है.–

२९ मुसाफरी जातेवख्त दाहनी या पीछाडीका पवन चलता हो तो फतेह होगी, घरआते वख्तभी येही पवन अछे है, सामने या वायीतर्फका पवन अछा नही.–

३० सफरके वख्त मुंगस (यानी) नोलिया दिखाई दे या उसकी अवाज सुनाई दे तो फतेह होगी, तीतर या मुर्धा दाहने हाथको दिखाई दे तो अछा है, गधा वायेहाथकी तर्फ अवाज करे तो सफर जानेवालेके लिये अछा है.–

३१ मुसाफरी जातेवख्त भात लेकर कोई सामने मिले अछा है, जब अपना चंद्रस्वर चलता हो, उसवख्त वायीतर्फ जो जो शकुन हो, पूर्ण फल देयगे, सूर्यस्वर चलतेवख्त दाहनीतर्फ जितने शकुन हो, पूर्णफल देयगें, खालीस्वरमें अछे शकुनभी कमजोर, और पूर्णस्वरमें कमजोर शकुनभी ताकतवर होते है.-

३२ सफरके वख्त कोई दिवाना आदमी या गीलें कपडे पहने हुवे आता हुवा आदमी सामने मीले तो बुरा है.-

३३ हथियारसें सजाहुवा कोई बहादूर शख्श सामने मीले फतेह होगी, चांवल, गेहु, जवारी लेकर कोई आदमी सफरके वख्त सामने मीले तो अछा है.-

३४ सफरके वख्त अपनेको चाहनेवाला मर्द या औरत सामने मीले तो अछा है, फायदा मीले, विवाह करके कोई दुल्हा, अपनी दुल्हनके शाथ आता हुवा सामने मीले निहायत उमदा है, लडकेकों लेकर कोई औरत सामनें मीले तो अछा है.-

३५ म्याना, पालखी, नीलकंठ पक्षी, गौ, हिरन या तोता सफरके वख्त सामने मिलना निहायत उमदा है.-

[ दरबयान शकुन शास्त्र खतम हुवा, ]

[ वीच बयान स्वरोदयज्ञान, ]

१ स्वरोदयज्ञानका बयान जैनागमोमें प्रकीर्णग्रंथोंमें और भाषामय कवित्त छंदोंमें कइजगह देखागया, विवेकमार्तंडयोगरहस्य और हैमचंद्राचार्यरचित योगशास्त्र और चिदानंदजीकृत स्वरोदय ज्ञानभी स्वरशास्त्रकेही ग्रंथ है, अगर स्वरोदयज्ञानका इल्म सिखना चाहो तो स्वरोदयज्ञानीकों मिलकर सीखो, और उनके फरमानेपर अमल करो, हरहमेश हृदयमें कर्णिकायुक्त अष्ट पांखडीका कमल बनाकर नवपदका ध्यान करो, योगकी जो दश भूमि है, उसमे

पहली भूमि स्वरोदयज्ञान है, जिनके बडे भाग्य हो, उनको इसका रास्ता मिलता है.-

२ तीर्थंकर गणधर और पूर्वधारी संपूर्ण योगके माहितगार थे, तीर्थंकर महावीर निर्वाणके बाद जब चौदह पूर्वज्ञानके पढेहुवे जैनाचार्य भद्रबाहुस्वामी हुवे, उनोंने सूक्ष्मप्राणायाम ध्यानका परावर्त्तन किया था, इससें मालुम होता है. पेस्तरके जमानेमें जैनमुनि स्वरोदयज्ञानपर अमल करते थे, जमाने हालमें लोगोंकी ताकात कम होगई, और धर्मश्रद्धा जैसी होना चाहिये रही नही, स्वरोदय ज्ञानकी मेहनत उठाना किसको पसंद पडे, यह काम निर्लोभी और आत्मज्ञानीयोंका है.-

३ योगकी दशभूमितक जाना न बने तो दो तीन या चारभूमितक जितना बने उतना सीखो.-

[दोहा,]

नाडी तो तनमें घनी-फुन चौइस प्रधान,
तिनमें नव फुन ताहुमे तीनअधिककरजान, १
इंगला पिंगला सुखमना ये तीनोंके नाम,
भिन्न भिन्न अब कहतहुं ताके गुन अरुधाम, २
भ्रूकुटिचक्रसें होतहैं स्वासाको परकास,
धंकनालके ढिगथइ नाभिकरतनिवास, ३
नाभितें फुन संचरत इंगला पिंगला धाम,
दक्षिण दिश हैं पिंगला, इंगलानाडीवाम, ४
इनदोउके मध्यमें सुखमना नाडी जोय,
सुखमनके परकासमें स्वरफुन चालत दोय, ५

(अर्थः)-शरीरमें बहुतसी नाडीयें है, उनमे चौइस नाडी बडी है, चौइसमें नव और नवमे तीन सबसें बडी है, उनके नाम इंगला, पिंगला, और सुखमना है, भ्रूकुटिचक्रसे स्वासका प्रकाश होकर

बंकनालके रास्ते नाभिमें जाकर स्थिर होता है, नाभिमेंसें फिर स्वास निकसकर जो दाहनी तर्फ चले उसका नाम पिंगला, बायी-तर्फ चले उसका नाम इंगला, और इनदोनोंके बीचमें चले उसका नाम सुसमना है.–

[दोहा,]

४ डावा स्वर जब चलत है, चंदउदय तब जान,
जब स्वरचालत जीमना उदयहोत तबभान, ६
सौम्यकाजकोंशुभशशी क्रूरकामकों सूर,
इनविध लखकारजकरत पामे सुखभरपूर, ७
दोउ स्वरसमसंचरे तब सुखमन पहिचान,
तामे कोउ कारजकरत अवशहोत कछुहान, ८
चंदचलत किजेसदा थिरकारज स्वरभाल,
चरकारज सूरज चलत सिद्धहोत तत्काल, ९
कृष्णपक्ष एकम दिने प्रातसूरजो होय,
तो ते पक्ष प्रवीण नर आनंदकारी जोय, १०
शुक्लपक्षके आददिन जो शशीस्वर उद्योत,
तो ते पक्ष विचारिये सुखदायक अतिहोत, ११

(अर्थः)–बायास्वर चले तो उसकों चंद्रस्वर जानना, और दाहना-स्वर चले तो उसकों सूर्यस्वर समजना, सौम्य और स्थिरकारजके लिये चंद्रस्वर अछा है, क्रूर और चरकारजके लिये सूर्यस्वर ठीक है, इसतरह स्वर देखकर काम करनेवाला सुखी होता है, जब दोनों-स्वर शाथ चले तो उसका नाम सुखमना स्वर है, उसमें जो कुछ-काम कियाजाय नुकशान पहुंचेगा, हरमहिनेकी वदी एकमके रोज सूर्योदयके वख्त सूर्यस्वर चले तो पनरांरोज सुखचैनसे वतीत हो, हरमहिनेकी सुदी एकमके रोज सूर्योदयके वख्त अगर चंद्रस्वर चले तो पनरांरोज उमदा तौरसें वतीत हो.–

[ दोहा, ]

९ चंद्रतिथिमें आय जो भानुकरत प्रकाश,
तो कलेश पीडा होवे किंचित् वित्तविनाश, १२
सूरजतिथि पडिवादिने चलेचद्रस्वरभोर,
पीडा कलहनृपभयकरे चित्तचंचलचिहुं और १३
दोउपक्ष पडिवादिने सुखमन स्वर जो होय,
लाभ हानि सामान्यथी तो निश्चय करजोय, १४

(अर्थः)-हरमहिनेकी सुदी एकमके रौज सूर्योदयके वख्त अगर सूर्यस्वर चले तो अछा नही, कलेश हो, हरमहिनेकी वदी एकमके रौज सूर्योदयके वख्त अगर चंद्रस्वर चले तो फिक्र चिता पैदा हो, और राज्यकी तर्फसे खौफ हो, अगर उन दोनों प्रतिपदाके रौज सूर्योदयके वख्त सुखमना स्वर चले तो ठीक नही.–

६ तीनपखवाडेकी एकमके रौज सवेरे सूर्योदयके वख्त जैसा उपर लिखा है, वैसा स्वर न हो तो दोस्त दुश्मन होजाय, और जैसा उपर लिखा है, वैसा हो, तो दुश्मन दोस्त होजाय, हरमहिनेकी सुदी एकमके रौज सूर्योदयके वख्त चंद्रस्वर और वदीएकमके रौज सूर्यस्वर होना चाहिये, तीनतीन रौज जो चंद्र और सूर्यस्वर चलनेकी बात लिखी है, वो देखनेकी जरुरत नही, अगरचे एकम सुधर गइ हो.–

७ एक वर्षके (२४) पखवाडे होते है; उनमें शुकल पक्षके बारां और कृश्नपक्षके बारा, शुकलपक्षकी बारां एकमके रौज सूर्योदयके वख्त चद्रस्वर चले, और कृश्नपक्षकी बारां एकमके रौज सूर्योदयके वख्त सूर्यस्वर चले तो निहायत उमदा है, तन-मन धनसें फायदा होगा, शुक्लपक्षकी एकमके रौज रविवार आवे या वदी एकमके रौज सोमवार आवे तो वारके स्वरोदयकी कुछ गिनती नही, वारसें तिथि बलीष्ठ है, इसलिये तिथिकी बात मंजुर रखना.–

८ यह एक कुदरती नियम है, चाहे औरत हो, या मर्द सबकों दिनरात घंटे घंटेभर चंद्रस्वर और सूर्यस्वर अदल बदल होते रहते है, बीमारके लिये यह नियम नही, ज्यादा-कमभी होजाय, तंदुरस्तके लिये यह नियम है.-

९ [ चंद्रस्वर चलते वख्त जो जो कार्य करने चाहिये, उसकी यादी, ]

(दोहा,)

शशी सूरस्वरमां अभी करन योग जे काम,
तसविचार अब कहतहुं सुखदायक अभिराम, १
देवल श्रीजिनराजनो नवो निपावे कोय,
खात मुहूरत अवसरे चंद्रयोग तिहां जोय, २
अमीश्रवत शशीयोगमें अरुणद्युतिथिर होय,
करत प्रतिष्ठा बिंबनी अतिप्रभाव तसजोय, ३
तखतमूलनायक प्रभु बैठावे तिणवार,
जिनघर कलशचढावतां चंद्रयोग सुखकार, ४
पौषधशाल निपावतां दानशाल घरहाट,
महेल दुर्ग गढ कोटनो रचित सुघट धुरघाट, ५
संघमाल आरोपतां करतां तीरथदान,
दीक्षामंत्रबतावतां चंद्रयोगप्रधान, ६
घरनवीन पुरनगरमें करतां प्रथमप्रवेश,
वस्त्र आभूषण संग्रहत लेतइजारे देश, ७
योगाभ्यास करतसुधी औषधभैसज मीत,
खेंती वागलगावतां करतां नृपथी प्रीत, ८
राजतिलक आरोपतां करतां गढपरवेश;
चंद्रयोगमें भूपति विलसे सुख सुदेश, ९
राजसिंहासन पगधरत करत और थिरकाज,
चंद्रयोगशुभ जाणजो चिदानंद महाराज, १०

१० [ चौपाइ छंदः ]

मठ देवल अरु गुफा बनावे, रतन धातुना घाट घडावे,
इत्यादिक सहु जगमें काम, चंद्रयोगमें अति अभिराम, ११
चंद्रयोग थिरकाज प्रधान, कह्यो तास किंचित् अनुमान,
स्वरसूरजमें करिये जेह, सुनो श्रवण देइ कारज तेह, १२

(अर्थः)—नया मंदिर बनाना, नये मंदिर बनवानेकी नीव डालना, जिनमूर्त्तिकी प्रतिष्ठा करना, मूलनायकजीकी मूर्त्ति तख्तनशीन करना, जिनमंदिरके शिखरपर धजादंड या कलश चढाना, पौषधशाला, दानशाला, घर, हाट, महेल, कोट, किला बनाना, संघमाल पहनना, तीर्थमें दानकरना दीक्षादेना, मंत्र बताना वगेरा काम चंद्रस्वर चलतेवख्त करना चाहिये, नये घरमें रहनेजाना, गाम नगरमें प्रथम प्रवेश करना, कपडे गहनेआभूषण पहनना, कंट्राक्टर लेना योगाभ्यासकी शुरुआतकरना, बीमारीके वख्त औषध खाना, खेतीकरना, बाग-बगीचे लगाना, राजासाहबसे अवल मुलाकात करना, ये काम चंद्रस्वरमें करना फायदेमद है, राजासाहबकों राजतिलक करना, किलेमें प्रवेश करना, राजासाहब गादीपर बेठे तो चंद्रस्वरमें सिंहासनपर पांवधरना, मठ, देवल या गुफा बनवाना, सोना जवाहिरातके गहने बनवाना, वगेरा स्थिरकाम चंद्रस्वर चलते वख्त करना अछे है.—

११ [ सूर्यस्वरचलतेवख्त जो जो कार्य करनेचाहिये उसकी यादी, ]

( चौपाइ छंदः )

विद्या पढे ध्यान जो साधे, मंत्रसाध अरु देव आराधे,
अरजी हाकिमके करदेवे, अरिविजयका बीडा लेवे, १
विष अरु भूतउतारण जावे, रोगीको जो दवा खिलावे,
विघ्न हरनशांति जलनाखे, जो उपाय कष्टीकों भाखे, २

**गजवाजी वाहन हथियार, लेवे रिपुविजय चित्तधार,**
**खानपान कीजे असनान, दीजे नारीकों रितुदान, ३**
**नयाचोपडा लिखे लिखावे, वणजकरत कछु वृद्धि पावे,**
**भानयोगमें ये सहुकाज, करतलहे सुखचैन समाज ४**
**भूपति दक्षिणस्वरमें कोइ, युद्धकरन जावे सुन सोइ,**
**रणसंग्राममांही जसपावे, जीत अरि पाछो घर आवे, ५**
**सायरमें जो पोतचलावे, वंछित द्वीपवेगेसो पावे,**
**वेरिभुवनगमन पगदीजे, भानयोगमें तो जसलीजे, ६**
**उंट महिष गो संग्रहकरतां, साटवदत सरिता जलतरतां,**
**करज द्रव्यकाहुकों देतां, भानयोग शुभ अथवालेतां, ७**
**इत्यादिक चरकारज जेते, भानयोगमें करिये ले ते,**
**लाभालाभ विचारी कहिये, नहितर मनमें जानीरहिये, ८**

(अर्थः)–विद्या पढना शुरु करना तो सूर्यस्वरमें करना, ध्यानसमाधि लगाना तो सूर्यस्वरमे शुरु करना, देवताकों प्रत्यक्ष बोलानेके लिये मंत्रपढना तो सूर्यस्वरमें शुरु करना, आजकल प्रत्यक्ष देवता आते नही, यह बात उसवख्तकी है, जब देवता प्रत्यक्ष आते थे, जमाने हालमें स्वप्नमें या आंखो मीचकर देखनेसे देवताका आभास होता है, मगर प्रत्यक्ष नही आते, राज्यके हाकिमकों अरजी देना तो सूर्यस्वरमें देना, दुश्मनकों फतेह करनेके लिये बीडा उठाना, जहर उतारना, भूतपिशाचको निकालना तो सूर्यस्वरमें जाना, बीमारकों हकिम वैद्य या डाक्तर दवा खिलावे तो अपना सूर्यस्वर चलता हो उसवख्त खिलावे, बीमार शख्श जब दवा खावे तो अपने चंद्रचलतेवख्त खावे, आफतको दूर करनेके लिये जो शांतिजल डाले, या कष्ट दूर करनेके लिये किसीको उपाव बतलावे तो सूर्यस्वरमे बतलावे, हाथी, घोडे, रथ, या किसीतरहका हथियार दुश्मनकों हरानेके लिये खरीद करना, भोजन जीमना, स्नान करना,

औरतकों रितुदान देना, नया चौपडा लिखना शुरु करना, या वेपार करना, सूर्यस्वरमें फायदेमंद है, राजा लडाइके लिये जावे तो सूर्यस्वरमे जावे, फतेह होगी, समुद्रमे जहाज चलाना, या आपखुद समुंदरकी मुसाफरीकों जाना तो अपना सूर्यस्वर चलते वख्त जहाजमें सवार होना, अछा है, सहीसलामत मुकामपर पहुंच जायगें, दुश्मनके सामने जाना तो सूर्यस्वरमे जाना, उंट गौ भेंस वगेरा खरीदना, सट्टा करना, नदी उतरना, किसीको कर्ज देना या लेना ये सब काम सूर्यस्वरमें करना फतेहमंद है.—

१२ [दोहा,]

सुखमन चलत न कीजिये, चरथिरकारज कोय,
करत काम सुखमनविषे, अवश्य हानी कछुहोय, १
भवनप्रतिष्ठादिक सहु, वर्जित सुखमनमाहि,
ग्रामांतर जावाभणी, पगलां भरीये नांहि, २
दुखदोह्गपीडा लहे, चित्तमे रहे कलेश,
चिदानंद सुखमनचलत, जो कोइ जाय विदेश, ३
कारजकी हानी हुवे, अथवा लागेवार,
अथवा मित्र मिले नही, सुखमन भावविचार, ४
श्वास शीघ्र अतिपालटे, छिनचंद छिनसूर,
ते सुखमन स्वर जाणजो, नाभि अनिल भरपूर, ५
सुखमन स्वर संचारमें, किजे आतमध्यान,
हिरदगति अहिभक्षकी, लहिये अनुभवज्ञान, ६
आतमतत्त्वविचारणा, उदासीनता भाव,
भावतस्वर सुखमनविषे, होवे ध्यानजमाव, ७

(अर्थः)—सुखमनस्वर चलतेवख्त कुछकाम नही करना, अगर करोगे नुकशान उठाओगे, मंदिरकी प्रतिष्ठा वगेरा काम और मुसाफरी जाना सुखमना स्वरमे मना है, सुखमन स्वरमे किसी कामकी शुरुआत करोगे तो उसमे देरी होगी, या जिसकामके लिये

जिसकी मदद होना चाहिये वो शख्श मीले नही, छिनछिनमें स्वर बदलता रहे, थोडी देर सूर्य होजाय या चंद्रस्वर चलने लगे, या दोनों शाथशाथ चले, उसको सुखमनस्वर कहा, सुखमनस्वर चलता हो उस वख्त आत्मध्यान करना ठीक है.–

१३ [ दोहा, ]

दक्षिणस्वर भोजनकरे, डावे पीवे नीर,
डावी करवट सोवतां, होय निरोग शरीर, १
चलतचंद्र भोजनकरे, अथवा नारीभोग,
जलपीवे सूरज विषे, तो तन आवे रोग, २

(अर्थः)–दाहनेस्वर चलतेवख्त भोजन करना, पानी, चाह, दूध, शरबत, ठंडाई वगेरा प्रवाही पदार्थ चंद्रस्वर चलतेवख्त पीना, सोते वख्त डावीतर्फ सोना, इसतरह बरताव करनेसें शरीर तंदुरस्त रहेगा, अगर कोई चंद्रस्वरमें खाना खावे, या मैथुन सेवे, और सूर्यस्वर चलते वख्त पानी पीवे तो उसके शरीरमें तंदुरस्ति नही रहेगी, और बीमारी पेंश होगी.–

१४ चैतसुदी एकमके रौज सवेरे सूर्योदयके वख्त अगर अपना चंद्रस्वर चलता हो तो अछा है, पनरांरौज सुखचैनसें गुजरेंगे, जिनकों तत्वकी पहिचान हो, और देखे चंद्रस्वरमे पृथवीतत्व या जलतत्व चलता हो तो उसको बारां महिनेका ज्ञान मालुम होसके, लेकिन! तत्वोंकी पहिचान सीखना चाहिये, मेपराशिपर जिसरौज सूर्य आवे उसवख्त अगर जिसका चंद्रस्वर चलता हो, तो समजलो! वर्सभर सुखचैन रहेगा, अक्षयतृतीयाके रौज सवेरे सूर्योदयके वख्त चंद्रस्वर चलना अछा है, वर्स अछा होगा.–

१५ चैतसुदी एकमके रौज दिनभरमें जिसका घंटाभरभी चंद्रस्वर न चले तो उसको तीन महिनेमें बीमारी पेंश होगी; चैतसुदी दुजके रौज दिनभरमें जिसका चंद्रस्वर घंटाभरभी न चले, उसको गेरमुल्ककी सफर करना पडे.–

१६ चैतसुदी तीजके रौज दिनभरमे जिसका चंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसके शरीरमे पित्तज्वरकी वीमारी हो, चैतसुदी चौथके रौज दिनभरमें जिसका चंद्रस्वर एकघंटाभरभी न चले, वो शख्श उसीवर्समें मरजाय.-

१७ चैतसुदी पचमीके रौज दिनभरमें जिसका चद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसकों राज्यकी तर्फसे जरीमाना हो, चैतसुदी छठके रौज दिनभरमे जिसका चंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसका भाई उसी वर्समें इतकाल होजाय.-

१८ चैतसुदी सप्तमीके रौज दिनभरमें जिसका चंद्रस्वर घंटाभरभी न चले उसकी औरत उस सालमे मरजाय, चैतसुदी अष्टमीके रौज दिनभरमें जिसका चंद्रस्वर घंटाभरभी न चले, उसकों उस वर्समे पैदाश कम हो, इसतरह वर्सदिनका भलाबुरा नतीजा अपने लिये आठ दिनमें देखना चाहो तो देख सकते हो, ये आठरौज मानींद ! वर्सरौजका वीज है, जैसे जन्मग्रह सारी जिदगीका वीज है.-

१९ स्वरोदयज्ञान जानकर उसमुआफिक बरताव करनेका सबब यह है, जिससे मन स्थिर होजाय, मनका स्थिर होना सहज नही, मगर जितना हो उतना अछा है, मरुदेवी माता और भरतचक्रवर्त्ती ध्यानकी स्थिरतासें ज्ञान पाकर ससार समुदरसे तीरे है.-

[ जैनाचार्य हेमचंद्रसूरिरचित
योगशास्त्रमें बयान है, ]

अहो योगस्य माहात्म्यं, प्राज्यं साम्राज्यमुद्वहन्
अवाप केवलज्ञानं, भरतो भारताधिपः, १
पूर्वमप्राप्तधर्मापि, परमानंदनंदिता,
योगप्रभावतः प्राप मरुदेवापरं पदं, २

( अर्थः )-योगका कैसा महातम है, जिससे भरतचक्रवर्त्तीने दुनियादारी हालतमेभी ध्यानसे केवलज्ञान पाया, और मरुदेवीमाता इसीतरह ध्यानके प्रभावसे केवलज्ञानपाकर मुक्त हुये.-

२० [ विवेकमार्तंडयोगरहस्यमें लिखा है, ]

ब्रह्मचारी मिताहारी, योगी योगपरायणः,
अब्दादूर्ध्वं भवेत्सिद्धो, नात्र कार्या विचारणा, १
न गंधं न रसं रूपं न स्पर्शं न च निःस्वनं,
नात्मानं न परं वेत्ति, योगी युक्तसमाधिना, २

(अर्थः)–ब्रह्मचर्य पालनेवाला और मान प्रमाण आहार करनेवाला योगी एक वर्समें सिद्ध होता है, अगर कोई योगी ध्यानसमाधिमें लयलीन हो, उस वख्त उसको ध्यानकी एकाग्रतासे रूप, रस, गंध, शब्द और स्पर्शमें खयाल नही आता, अपने परायेकों चीनता नही, सिर्फ! ध्यानसमाधिमेही लयलीन बना रहता है.–

२१ [ चौपाइ छंदः ]

प्राणायाम भूमि दश जाणो, प्रथम स्वरोदय तिहां पिछानो,
स्वरप्रकाश प्रथम जे जाने, पंचतत्वफुन तिहां पिछाने, १
कहु अधिक अब तासविचार,सुनो अधिकचित थिरताधार,
स्वरमें तत्व लखे जबकोइ, ताकों सिद्धस्वरोदय होइ, २

(अर्थः)–प्राणायामकी दशभूमिमें अवलभूमि स्वरोदयज्ञान है, फिर तत्वोंकी पहिचान करना, जिसकों स्वरमें तत्वोंकी पहिचान हुई तो समजलो उसकों स्वरोदयज्ञान सिद्ध हुवा.–

२२ [ दोहा, ]

पृथवी जल पावक अनिल, पंचमतत्व नभ जान,
पृथवी जलस्वामी शशी, अपर तीनकों भान, १
पीत स्वेत रातो वरण, हरित शामफुन जान,
पंचवरण ये पांचके, अनुक्रमथी पहिचान, २
पृथवी सन्मुख संचरे, करपल्लव पद्दोय,
समचतुरंस आकारतस, स्वरसंगममे होय, ३
अधोभाग जल चलत है, षोडश अंगुलमान,
वर्तुल है, आकार तस, चंदसरीखों जान ४

चार अंगुल पावक चले, ऊर्द्धदिशा स्वरमांहि,
त्रिकोणाकार तस, बालरविसम आंहि, ५
वायु तिरछा चलत है, अष्टअंगुल नितमेव,
धजारूप आकार तस, जानो इणविधभेव ६
नाशासंपुटमां चले, बाहिर नाही प्रकाश,
शुन्न है आकार तस, स्वरयुग चलत आकाश, ७

(अर्थः)-पृथवी, जल, अग्नि, वायु, और आकाश ये पांचतत्व है, उनमें पृथवी और जलतत्वका मालिक चंद्र, अग्नि, वायु और आकाश इन तीनोंका मालिक सूर्य है, पृथवीतत्वका रंग पीला, जलतत्वका सफेद, अग्नितत्वका लाल, वायुतत्वका हरा, और आकाशतत्वका रग काला है, पृथवीतत्व सन्मुख और नाशिकासे बारां अगुलतक लंबा चलता है, और उसका आकार चौखुटा होता है, जलतत्व नीचेकी तर्फ और नाशिकासें सोलह अगुलतक लंबा चलता है, उसका आकार चद्रमाकी तरह गोल, अग्नितत्वउपरकी तर्फ और नाशिकासे चार अंगुलतक लंबा चलता है, और उसका त्रिकोणाकार है, वायुतत्व टेडा चले और नाशिकासे आठअगुल दूरतक लंबा रहता है, और उसका आकार धजाके जैसा कहा, आकाशतत्व नाशिकाकी अंदरअंदरही चले, और उसका आकार कुछ नही.-

२३ हरेकस्वरमे पांचतत्व अनुक्रमसे दिनरात चलते रहते है, पृथवीतत्व (५०) पलतक चलता है, जलतत्व (४०) पल, अग्नितत्व (३०) पल, वायुतत्व (२०) पल, और आकाशतत्व (१०) पल चलता है.-

अढाइ पलकी एक मिनिट, चौडस मिनिटकी एक घडी, और अढाइ घडीका एक घटा होता है,

२४ [दोहा,]

श्रवण अंगुठामध्यमा, नासापुटपर थाप,
नयन तर्जनीयी ढकी, भ्रुकुटिमें लख आप, १

पडे बिंदु भ्रूकुटिविषे, पीतश्वेत अरु लाल,
नील शाम जैसी हुवे, तैसी तिहां निहाल, २
जैसा वर्ण निहारिये, तैसा स्वर विचार,
स्वासगति स्वरमें लखो, इछा फुनआकार, ३

(अर्थः)–पदमासन लगाकर दोनोंहाथके दोनों अंगुठे दोनों कानमें लगाना, दोनों हाथकी मध्यमा अंगुली नाशिकाके दोनों पदोंपर टिकाना, दोनों आंखोंके पर्दे तर्जनीअंगुलीसें ढांककर भ्रूकुटिचक्रमें उंचीनजरसें देखना, किसरंगका बिंदु पडता है, अगर पीले रंगका बिंदु पडे तो पृथवीतत्व समजना, सफेदरंगका पडे तो जलतत्व, लालरंगका पडे तो अग्नितत्व, नीलेरंगका पडे तो वायुतत्व और धूम्रवर्णका पडे तो आकाशतत्व जानना, मोरकी गर्दनजैसे रंगकों नीलरंग और रास जैसे रंगको धूम्रवर्ण कहते हैं.–

२५ पांचतत्वोंकी पहिचान दुसरीतरकीबसेंभी किइ जाती है, पीली, सफेद, लाल, नीली और शामरंगकी पांचगोली चनेजितनी बनाना, और अपने खिस्सेमें रखना, जब तत्व देखना हो, उसमेसें बीनादेखे हाथसें एक गोली उठाना, जिसरंगकी गोली हाथमें आवे वो तत्व जानना, पीलेरंगकी आवे तो पृथ्वीतत्व, सफेदरंगकी आवे तो जलतत्व, लालरंगकी आवे तो अग्नितत्व, नीलेरंगकी आवे तो वायुतत्व, और धूम्रवर्णकी आवे तो आकाशतत्व जानना, यह एक मामुली तरकीब है, असली तरकीब भ्रूकुटिचक्रमें देखनेकी है, जो उपर लिखदिई है.–

२६ तत्वोंके आकार देखनेकी तरकीब, एक आरिसा विलस्तलंबा चोडा लेना और नाशिकाके नजदीक रखकर उसपर नाककी हवाको छोडना, आरिसेपर जो आकार पडे वो देखना और तत्वकी पहिचान करना, पृथवीतत्वका समचौरस आकार पडेगा, चंद्रमाकी तरह गोल आकार पडे तो जलतत्व, त्रिकोणाकार पडे तो अग्नितत्व, धजाके जैसा आकार पडे तो वायुतत्व और कुछभी आकार न

पडे तो आकाशतत्त्व जानना, पृथवीतत्व और जलतत्व अछे, अग्नितत्व और वायुतत्व साधारण, और आकाशतत्व अछा नही कहा.–

२७ चंद्रस्वरमें पानी और सूर्यस्वरमें भोजन जीमना चाहिये, भोजन जीमना न वनसके तो पानी तो चंद्रस्वरमेंही पीना, जिसकों रात्रीके वख्त पानी पीनेका त्याग है, उनको सूर्यअस्तके वख्त अगर चंद्रस्वर न चले तो पहले जिस वख्त चंद्रस्वर चला हो, उसवख्त पीइलेना, इसीसें कहा जाता है, स्वरोदयज्ञानीको शरीरसें मोह कम करना होगा.–

२८ [ जैनशास्त्र नारचंद्र ग्रंथमें पाठ है, ]

शशिप्रवाहे गमनादि शस्तं, सूर्यप्रवाहे नहि किंचनापि,
प्रश्नुर्जयः स्याद्वहमानभागे, रिक्ते च भागे विफलं समस्तं १

( अर्थः )–शुभ और स्थिरकाम चंद्रस्वर चलतेवख्त करना, क्रूर और जल्दीके काम सूर्यस्वरमे करना, इसका खुलासा इसीलेखमे पहले लिख दिया है, पढलो, कोई सवाल पुछनेवाले आवे और जवाव देनेवालोकी पूर्णस्वरकी दिशामे बेठकर या खडे होके सवाल पुछे तो उसका काम फतेह होगा, और अगर जवाव देनेवालोंकी खाली दिशामे रहकर सवाल पुछे तो उसका काम फतेह न होगा, चद्रस्वरकी पूर्णदिशा उंची, वायी, और सन्मुख है, और सूर्यस्वरकी पूर्ण दिशा दाहनी, पिछाडी और नीचेकी है.–

२९ चंद्रस्वर या सूर्यस्वर एकएक घंटेभर चलता है, और उसमें पृथवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पांचतत्व अनुक्रमसे चलते रहते है, जो शख्श पूर्ण दिशासें आनकर जवाव देनेवालोकी खाली दिशामे रहकर सवाल पुछे तो उसका काम फतेह न होगा, अगर खाली दिशासे आनकर जवाव देनेवालोंकी पूर्ण दिशामे वेठे और सवाल करे उसका काम फतेह होगा, जो शख्श खाली दिशासें आनकर जवाब देनेवालोंकी खाली दिशामें वेठे और सवाल करे तो कहना काम फतेहमंद न होगा, जो शख्श पूर्ण दिशासें आनकर

जवाब देनेवालोंकी पूर्ण दिशामें बेठे और सवाल करे तो कहना काम फतेह होगा.–

३० चंद्रस्वरमें पृथवीतत्व, या जलतत्व चलता हो, उसवख्त कोई शख्श आनकर पूर्ण दिशामें रहकर सवाल पुछे तो उसका काम फतेह होगा, अग्नितत्व, वायु या आकाशतत्व चलता हो और चंद्रस्वरमें कोई सवाल करे तो कहना काम फतेह न होगा.–

३१ सूर्यस्वरमें अग्नितत्व, वायु या आकाशतत्व चलता हो उसवख्त कोई शख्श आनकर जवाब देनेवालोंकी पूर्ण दिशामें सवाल करे तो उसका काम फतेह होगा, पृथवीतत्व या जलतत्व चलता हो और सूर्यस्वरमें कोई सवाल करे तो कहना काम फतेह न होगा.–

३२ नीदमेंसें उठतेवख्त अपना जो स्वर चलता हो, उसतर्फका पांव नीचे रखना.–

३३ जिसशख्शका तीनरोजतक दिनरात सूर्यस्वर चलता रहे तो जानना एकवर्समें उसका मृत्यु होगा.–

३४ अगर सोलहदिनतक जिसका बराबर सूर्यस्वर चलता रहे तो उसका मृत्यु एक महिनेमें हो.–

३५ जिसका एक महिनेतक हमेशां सूर्यस्वर चलता रहे वो शख्श दो दिनमें मरजाय, ऐसा निमित्तशास्त्रका फरमान है.–

३६ जिस शख्शका चारदिन, आठदिन, बारहदिन, सोलहदिन या वीशदिनतक बराबर दिनरात चंद्रस्वर चलता रहे तो उसकी लंबी उम्र जानना.–

३७ शरीरकी बडीबडी नाडीयें कितनी और किसतर्फ वहती है, उसका खुलासा, नाभिसें दशनाडी ऊर्द्धगामिनी, दश अधोगामिनी, और चार वक्रगामिनी, सब मिलकर चौइस नाडी हुई, इनमें दशनाडी प्रवाहीसंज्ञाकी कही, इनके नाम, १ इंगला, २ पिंगला, ३ सुखमना, ४ गांधारी, ५ हस्तजिव्हा, ६ पूषा, ७ यशस्विनी, ८ अलंबुखा, ९ कुहू, और १० शंखिनी.–

३८ [ दोहा, ]

**वामभाग है इंगला, पिंगला दक्षिणधार,**
**नासापुटमें संचरत, सुखमन मध्यनिहार, १**

(अर्थः)–बायीतर्फकी नाडीका नाम इंगला है, दाहनी तर्फकी नाडीका नाम पिंगला, दोनोंके बीचमे चलनेवाली नाडीका सुखमना है.–

३९ [ दोहा, ]

**सोपक्रम आयु कह्यो, पंचमकालमझार,**
**सोपक्रम आयुविषे, घात अनेक विचार, १**
**चालत षोडश सोवतां, चलत स्वास बावीश,**
**नारी भोगवतां थकां, घटे स्वास छत्तीश, २**
**अधिका नांही बोलिये, नहीरहिये पड सोय,**
**अतिशीघ्र नही चालिये, जो विवेक मनहोय, ३**
**वधे भावना चित्तमें, तनमनवचनअतीत,**
**तिमतिम सुखसायरतणी, उठेलहेर सुनमीत, ४**
**इंद्रतणा सुखभोगतां, जे तृपति नवी थाय,**
**ते सुख छिन एकमें, मिले ध्यानमें आय, ५**

(अर्थः)–अग्नि, जल, जहेर, वगेरा निमित्त मिलनेसें आयुष्य टुट जाय उसकों सोपक्रम आयुष्य कहते हैं, जैनशास्त्र स्थानांगसूत्रमे सात तरहसें आयुष्य टुट जाना फरमाया, जिसकों शक हो, स्थानागसूत्रमें देखे, इस चालु पंचमकालमे जीवोंका सोपक्रम आयुष्य कहा, इसलिये अनेक तरहकी घातसे आयुष्य टुट जाना संभव है, जल्दी चलनेसें ( १६ ) स्वासोस्वास घटते है, नींदमें सोतेहुवे (२२) स्वासोस्वास और मैथुनसेवनेसे (३६) स्वासोस्वास घटते है, इसलिये ज्यादा बोलना, ज्यादा नींदलेना, और जल्दी जल्दी चलना, नहेत्तर नही, ध्यानसे जो इस आत्माकों सुख मिलता है, वो इंद्रके सुखसेभी ज्यादा है.–

४० [ दोहा, ]

**जो रचना तिहुं लोकमें, सो नरतनमें जान,**
**अनुभव विन होवे नही, अंतर तास पिछान, ६**

( अर्थः )-जो रचना तीनलोकमें मौजूद है, वो रचना अपने तनमें है, और उस रचनाका ज्ञान आत्मअनुभवके विदून होसके नही, ध्याता, ध्येय और ध्यान इन तीनोंके भेदानुभेद समजना जरुरी बात है, और उसके लिये जैनयोगके ग्रंथ, १ योगशास्त्र, २ ध्यानरहस्य, ३ मंत्रचूडामणि, ४ ध्यानउपनिषत्, ५ परमेष्ठिपदकारिका, और ६ सिद्धसेनदिवाकररचित अष्टप्रकाशिका, वगेरा गुरुगमसें वांचना चाहिये, और उसपर अमल करना चाहिये.

४१ आज्ञाविचय, अपायविचय, विपाकविचय और स्वस्थानविचय, ये चार धर्मके स्थंभ है, जिनेंद्रदेवके हुकमकी तामील करना उसका नाम आज्ञाविचय, रागद्वेष इस आत्माके बडे दुश्मन है, ऐसा खयाल करना उसका नाम अपायविचय, शुभाशुभ कर्मका मनन करना उसका नाम विपाकविचय, और चउदह रज्वात्मक पुरुषाकृतिलोकका चिंतन करना उसका नाम स्वस्थानविचय है.-

४२ मैत्री, प्रमोद, कारुण्य, और माध्यस्थ ये चार भावना है, पिंडस्थ, पदस्थ, रूपस्थ, और रूपातीत, ये चार ध्यानके तरीके है, आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान और शुक्लध्यान, ये चार ध्यानके नाम है, आर्तध्यान और रौद्रध्यान दुर्गतिकों लेजानेवाले है, इनसें बचना चाहिये, शुक्लध्यान जमाने हालमे बनसकता नही, धर्मध्यान करनेलाइक है, और हरशख्शकों करना फर्ज है, ध्यानकरनेके कई भेद है, उनके भेदानुभेद, और करनेकी तरकीब बतलाते है.-

४३ [ सिद्धचक्रका ध्यान, ]

मजकुरध्यान चाहे कोई वेठकर करे या खडे होकर करे, वेठकर करे तो पदमासन लगाकर या सुखासनसें करे, सुखासन उसका

नाम है, जो सादी पलोंठी मारकर बेठना, और पदमासन उसका नाम है, जिनमूर्त्ति जिसआकार वेठी है, उसआकार वेठकर करना, अगर खडे होकर ध्यान करना हो तो कायोत्सर्ग मुद्रासें करना, हृदयकमलमे ( यानी ) छातीमें कर्णिकासहित अष्टपांखडीका कमल मनमे चिंतन करना और कमलकी कर्णिकामें झलाझल रौशनीवाली अरिहंतदेवकी वज्ररत्नमय सफेदरंगमूर्त्ति स्थापन करना, जैसी हीरेकी वनीहुई मूर्त्ति हो, फिर अरिहंतदेवकी मूर्त्तिके उपर जो कमलकी पांखडी है, उसमे माणकरत्नकी वनीहुई लालरंगकी सिद्धमहाराजकी मूर्त्ति स्थापन करना, फिर अरिहंतदेवकी मूर्त्तिसें वायीतर्फकी पांखडीमें चमकदार रौशनीवाली पिरोजेकी वनीहुई आचार्य महाराजकी पीलेरंगकी मूर्त्ति स्थापन करना, फिर अरिहंतदेवकी मूर्त्तिके नीचेकी पांखडीमे पनेकी वनीहुई चमकदार रौशनीवाली उपाध्यायकी हरेरंगकी मूर्त्ति स्थापन करना, आगे अरिहंतदेवकी मूर्त्तिसें दाहनी तर्फकी पाखडीमें नीलरत्नकी वनीहुई साधुमहाराजकी श्यामरंग मूर्त्ति स्थापन करना, आगे सिद्धभगवान् और आचार्यमहाराजकी मूर्त्तिके वीचले भागमें जो पांखडी है, उसमें सचे मोतीयोंसे लिखाहुवा नमोदंसणस्स पदकों स्थापन करना, फिर आचार्य और उपाध्याय महाराजकी मूर्त्तिके वीचले भागमें जो पाखडी है उसमे सचे मोतीयोंसें लिखाहुवा नमोनाणस्स पदको स्थापन करना, फिर उपाध्याय और साधुमहाराजकी मूर्त्तिके वीचले भागमें जो पाखडी है, उसमे सचे मोतीयोंसें लिखा हुवा नमोचारित्तस्सपद स्थापन करना, फिर अखीरमे साधुमहाज और सिद्धभगवान्की मूर्त्तिके विचले भागमे जो पाखडी है, उसमें सचे मोतीयोंसें लिखा हुवा नमोतवस्सपद स्थापन करना.—

४४ फिर नमोअरिहंताणं पद कहकर कर्णिकामें रहीहुई अरिहंतदेवकी मूर्त्तिपर ध्यान करना, आगे नमोसिद्धाणं पद कहकर सिद्धमहाराजकी लालमूर्त्तिका ध्यान करना, फिर नमोआयरियाण पद

कहकर आचार्यमहाराजकी पीलीमूर्त्तिका ध्यान करना, आगे नमो उवज्झायाणं पद कहकर उपाध्यायमहाराजकी हरेरंगकी मूर्त्तिका ध्यान करना, फिर नमोलोएसव्वसाहूणंपद कहकर साधुमहाराजकी शामरंग मूर्त्तिका ध्यान करना, आगे नमो दंसणस्सपद कहकर पांखडीमें लिखाहुवा दंसणपदका ध्यान करना, फिर नमोनाणस्सपद कहकर पांखडीमें लिखाहुवा ज्ञानपदका ध्यान करना, आगे नमोचारित्तस्स पद कहकर पांखडीमें लिखाहुवा चारित्रपदका और अखीरमें नमोतवस्सपद कहकर पांखडीमें लिखाहुवा तपपदका ध्यान करना, इसीतरह ध्यान लगाकर ( १०८ ) दफे नवपदके ध्यानका परावर्तन करना.–

४५ वदौलत इस ध्यानके दुनियादारीकी चीजें धन, दौलत, संतान वगेरा हासिल होंगे, और अखीरमें मुक्तिका सुख मिलेगा, जमानेहालमें मुक्ति होना इस क्षेत्रमें वंद है, तोभी स्वर्गगति पाकर महाविदेहक्षेत्रमें पैदा होके मुक्तिपद पासकेंगे, दुनियामें जो तरहतरहकी तकलीफे है, इस ध्यानसें रफा होगी, और इरादा पूर्ण होगा, चौदह विद्या, अष्टमहासिद्धि और नवनिधि मीलेगी, इसमे कोई शक नही, मगर मन वचन और कायाकी एकाग्रतासें ध्यान होना चाहिये, इस ध्यानसें पेस्तरके जमानेमें चौदहविद्या हासिल होतीथी, उनके नाम, १ आकाशगामिनी, २ परकायप्रवेशिनी, ३ रूपपरावर्त्तिनी, ४ स्थंभिनी, ५ मोहिनी, ६ स्वर्णसिद्धि, ७ रजतसिद्धि, ८ रससिद्धि, ९ वंधमोचिनी, १० शत्रुपराजयिनी, ११-वशीकारिणी, १२ भूतादिदमिनी, १३ सर्वसंपत्करी, १४ शिवपदसाधिनी.–

४६ [ पंचपरमेष्ठिका ध्यान, ]

भ्रूकुटिचक्रमें ( यानी ) निलारमें पंचपरमेष्ठिका ध्यान करना, पंचपरमेष्ठिकी जो पांचरगकी मूर्त्ति हृदयकमलके ध्यानमें वतलाई है, उसी मुआफिक हीरा, माणक, पुखराज, पन्ना, और नीलमरलकी अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, और साधुमहाराजकी

अनुक्रमसे पांचमूर्त्ति भ्रूकुटिचक्रमे स्थापन करे, वीचली कर्णिकामें अरिहंतदेव, उपरकी बाजुमे सिद्धभगवान्, बायीतर्फ आचार्य, नीचेकों उपाध्याय, और दाहनीतर्फ साधुमहाराज, इसतरह पंचपरमेष्ठिपदकों स्थापन करके ( १०८ ) दफे ध्यान करे, वदौलत इसध्यानके दुनियादारीके सुखचैन और अखीरमे मुक्ति हासिल होगी.–

४७ [ नासाग्रदृष्टि ध्यान, ]

पद्मासन लगाकर जो कोई शख्श नासाग्रभागमें अपनी दृष्टिकों स्थिरकरे नवपद पंचपरमेष्ठी या किसी दुसरी तरहके मंत्रपदका ध्यान करे तो इसका नाम नासाग्रदृष्टि-ध्यान है, मजकुर ध्यान सहजमें होसके ऐसा है, वदौलत इसध्यानके भूत, भविष्य, वर्त्तमानका ज्ञान होगा, इसलोक परलोककी रिद्धि सिद्धि मिलसकेगी, और मनके इरादे पूर्ण होगें, नासाग्रदृष्टि-ध्यानकों त्राटकयोग कहो कोई हर्ज नही, या किसी दुसरी चीजपर अपनी नजर स्थिर करके ध्यान करे उसका नामभी त्राटकयोग है, चाहे किसी देवमूर्त्तिपर ध्यान करो, तोभी त्राटकयोग हो सकता है, बाह्य त्राटकसे अगर दृष्टि थिर होजाय तो अंतर त्राटक जल्दी होसकता है.–

४८ [ ह्रींकारका ध्यान, ]

ह्रींकारका ध्यान चाहे पद्मासन या सुखासनमें करे, या खडे रहकर कायोत्सर्गमुद्रासें ध्यान करे, दोनोतरीके है, हृदयके कोठेमें माणकरत्नका वनाहुवा लालरगका चार अंगुल लंबा चोडा ह्रींकार स्थापन करना, और उसके आगे एक रौशनीदार चिराग जलता है, ऐसा ध्यान करना, फिर इसीतरह माणकरत्नका बनाहुवा चारअंगुल लंबा चोडा ह्रींकार निलारमें स्थापन करना, फिर वैसाही एक ह्रींकार कंठमे एक छातीमे और एक नाभिकमलमे स्थापन करना.–

४९ फिर श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् एप योगः फलतु, एसा पाठ बोलकर आगे लिखा हुवा ॐ ह्रींनमः इसवीजका (१०८) दफे पाचो-

ह्रींकारपर ध्यान करना, वदौलत इसध्यानके दुनियामें धनदौलत, संतान, हुकम होदा और आराम चैन मीले, और अखीरमें आत्मकल्याणका मार्ग हासिल हो, जिसकों ये उपरलिखे हुवे सिद्धचक्र पंचपरमेष्ठि नासाग्रदृष्टि और ह्रींकार ध्यानके बारेमें समज न पडे गीतार्थ जैनमुनिकों मीलकर दरयाफ्त करे, या जबतक मेरी जिंदगी दुनियामें हयात है, रुबरु मिलकर पुछे, चीठीसे खुलासा होसकता नही.–

५० वहिरात्मा जीव जो संसारके रंगरागमें पडा है, वो ध्यानके कावील नही, जो अंतरआत्मा जीव है, वो कुछ करसकेगा, जिनेंद्रवोंने गणधरोंने और पूर्वाचार्योंने ध्यानकरके इसका फल मोक्षसुख हासिल कर लिया, तकलीफके वख्त गभरावे नही, हिम्मत रखे, और आराम चैनके वख्त घमंड न लावे, वो शख्श ध्यानके लाईक है.–

५१ आजकलके कितनेक श्रावक कहते है, हमने आत्मज्ञान हासिलकर लिया है, देहकों और आत्माकों हम जुदा समजते है, और अपने विचारमें स्वतंत्र है, मगर मुखसे ऐसा कहनेपर वे सचे अध्यात्मज्ञानी नही बनसकते, जो शख्श जैसा कहे वैसा करके बतलावे जब ठीक है, प्राणांतकष्टके वख्तभी धैर्य रखे, धर्मशास्त्र उसकों सचे अध्यात्मी और स्वतंत्र विचारवाले कहते है.–

५२ किसी मर्द या औरतने अपने खयालसें अध्यात्मज्ञानके ग्रंथ वांचलिये और अध्यात्मज्ञानी वनगये, मगर उनके स्वतंत्र विचार तीर्थंकर गणधरोंके फरमाये हुवे सिद्धांतोंसें मीले नही, तो किसकामके रहे? गुरुमुखसें धर्मशास्त्र पढे लिखे नही, जिनवाणीका मतलव पाया नही, तो वे पंडित और अध्यात्मज्ञानी कैसे कहे जाय.?

५३ शरीर आत्माके लिये एक तरहका आधार है, और उसमें रहाहुवा आत्मा आधेयरूप है. आधारकों तकलीफ हो तो आधेयकोंभी तकलीफ होनेका संभव है, मगर तारीफ उनकी है, जो तक-

लीफके वख्तभी साबीत कदम रहे, जैसे गजसुकुमारजी मेतार्यमुनि और खंधक अणगार तकलीफके वख्तभी ध्यानमें अचल रहे, समजसको तो समजलो! सचे अध्यात्मज्ञानी किसको कहना?

५४ आजकल कितनेक श्रावक और श्राविका आनंदघनजीके बनाये हुवे पद गाकर कहते है, हम अध्यात्मज्ञानी है, मगर धर्मके बारेमें उनका बरताव देखो तो उनमें अध्यात्मका अंशभी साबीत नही होता, व्रत नियम करसकते नही, और कोरीबातें बनाकर कामचलाते है.–

५५ [ चिदानंदजीका बनाया हुवा
अध्यात्मिक पद, ]

**कथनी कथे सब कोइ, रहेनी अती दुर्लभ होई, ए टेर,**
**शुक रामको नाम बखाने, तसपरमारथ नही जाने,**
**या विध भणे वेद सुनावे,फुन अकलकला नही पावे,कथनी१**
**षट्तीस प्रकारे रसोई, मुख गिनतां तृप्ति न होइ,**
**शिशु नाम नहीतस लेवे, रसस्वाद अतिसुखदेवे, कथनी,२**
**वंदीजन कडखा गावे, सुनीसुरा शिशकटावे,**
**जब रुंडमुंडताभासे सहु आगल चारणनासे, कथनी, ३**
**कहेनी तो जगतमजूरी, रहेनी है वंदीहजूरी,**
**कहेनी साकरसममीठी रहेनी अतिलगत अनीठी, कथनी,४**
**जब रहेनीका घर पावे, कहेनी तब गिनती आवे,**
**अब चिदानंद ये जोई, रहेनीकी सेजरहे सोई, कथनी, ५**

५६ (अर्थः)–दुनियामें बातकरना सहज है, मगर उसमुजब बरताव करना सहज नही, देखो! तोता रामका नाम लेता है, मगर वो राम कौन है, उसको जानता नही, इसीतरह नामधारी अध्यात्मज्ञानी अध्यात्मके ग्रंथ बांचकर अध्यात्मके वेत्ता कहलाते है, लेकिन! अध्यात्मज्ञान क्या चीज है, और उसका बरताव कैसे

करना ? उसका उनकों खयाल नही, १ जैसे कोई शख्श छतीस तरहकी रसोइके नाम गिने, मगर उसतरहकी गिनती करनेसे उसका पेट नही भरता, इसतरह नकली अध्यात्मज्ञानसें काम नही चलता, छोटा बालक छत्तीस तरहकी रसोइका नाम नही जानता, मगर जो रसकेज्ञाता है, वे उनके स्वादकों जानते है, २ रणसंग्रामके वख्त भाट चारण शूरवीरताके कवित्त गाते हैं, और बहादूर योद्धे लडते हैं, मगर जब धड और मस्तक जुदे दिखाई देनेलगते हैं, तब भाट चारण रणसंग्रामसें सबके पहले भागने लगते हैं, इस तरह बातें बनानेवाले और अध्यात्मिक पद गानेवाले बहुत है, मगर उसमुजब बरताव करनेवाले विरले होते है, ३ हरबातका कहना सहज है, मगर उसमुजब बरताव करना कठीन हैं, कहनेमुजब बरताव किया जाय जभी उसकी बात गिनतीमें आसकती है, इसपदकों बनानेवाले चिदानंदजी महाराज फरमाते हैं, जैसा कहना वैसा चलना चाहिये, जब ठीक हो, ५,

५७ [ अध्यात्मिक पद, रागतोडी, ]

सोहं सोहं सोहं सोहं सोहं सोहं रटना लगीरी, सोहं, ए टेर.
इंगला पिंगला सुखमनासाधके, अरुण धूतिथी प्रेमपगोरी,
बंकनाल षट्चक्र भेदके, दसमैंद्वारेज्योतिजगीरी, सोहं० १
खोल कपाट घाटनिजपायो, जन्मजराभयभीतिभगीरी,
काचशकल दे चिंतामणिले,कुमता कुटिलकोसहजठगीरी२
व्यापकसकलस्वरूपलख्योइम,जिमनभमें मगनलहखगीरी,
चिद्रानंद आनंदमयमूरति, निरखतप्रेमभर बुद्धिथगीरी, ३

[ बीच बयान स्वरोंदयज्ञान खतम हुवा ]

## [बयान मंत्रशास्त्र,]

१ निर्बीजमक्षरं नास्ति, नास्तिमूलमनौषधं,
निर्धना पृथिवी नास्ति, आम्नायाः खलु दुर्लभाः १

(अर्थः)–दुनियामे जितने अक्षर हैं, सब ताकातवाले हैं, और उसके सुननेसे या वांचनेसें एकतरहकी असर पैदा होती है, जैसे किसीने अपनेकों अच्छे शब्दोसें बुलाया तो खुशीपैदा होगी, अगर अपशब्दोसे बुलाये तो नाराजी पैदा होगी, कहिये! यह अक्षरोंकी ताकात साबीत हुई या नही? जितनी वनास्पति है, वोभी ताकातवाली है, पृथिवी निर्धन नही, तरहतरहके रत्नोंसें गर्भित है, इसीलिये धर्मशास्त्रोंमें पृथिवीकों रत्नगर्भा कही, मगर सबचीजकी माहिती पाना दुसनार है.–

२ मंत्रसाधन करनेवाले शख्श काम, क्रोध, लोभ, मद, माया, कपट, स्वाद, शिंगार, कौतुक, और स्त्रीसंग ये दशबातें छोडकर मन वचन कायाकी एकाग्रतासें मंत्रपढे, अगर तकदीर अछी होगी जरुर फल देगा, अगर तकदीर अछी न होगी तो फल न देगा, सबबातमें कर्म बलवान् है, दुसरी बात यहभी है, एतकात बडी चीज है, विना एतकातके मुक्तिभी नही मिलती, फिर मंत्र कैसे फल देगा, कई आदमी तीर्थोंमें स्नान करने जाते है, जिनकों श्रद्धा है, उनकों फल मिलता है, जिनको श्रद्धा नही, और दिलमें ऐसा नही मानते कि मेरा आतमा पाक हुवा, कहिये! फिर उनको तीर्थस्नानका फल कैसा मिलेगा? यहीबात मंत्रपरभी समजो.–

३ पेस्तरके ज्ञानीलोग ऐसे नही थे जो मंत्रके बहाने दुनियाकों धोखेमे डाल जाय, अगर अपनी तकदीर अछी न हो तो मंत्रके अधिष्ठायक देव अपनेपास न आयगें, बस! कहनेवाले कहनेलगेंगें मंत्र नही फला, मंत्र नही फलनेके सबब दो है, यातो तुमारी तकदीर अछी नही, इसलिये विधि सहित मंत्र न पढसकोगे, या कोई

विघ्न आन पडेगा, अगर तुमारी तकदीर अछी होगी, मंत्रके देव अद्दष्ट रहकर जवाब देयगें, मगर प्रत्यक्ष नही आयगें.–

४ अगर कहाजाय तकदीर अछी हो तो मंत्रपढनेकी क्या! जरुरत? (जवाब) जब तकदीर अछी होती है, तभी अछे योग मिलते हैं, अक्षरोंके संयोगका नाम मंत्र है, मंत्रपढनेसे जो जो परमाणुं फेलते है उससें एकतरहकी असर पैदा होती है, अवधिज्ञानी देवते अपने अवधिज्ञानसें स्वर्गसें बेठेहुवेभी जानसकते हैं, फलां शख्श मंत्रपढनेलगा है, और हमकों याद करता है, पेस्तरके जमानेमें जब मनुष्योंकी तकदीर आलादर्जेकी थी, देवते प्रत्यक्ष आतेथे, जैसे तीर्थंकर चक्रवर्त्ती वासुदेव वगेराके ताबेमे देवते रहतेथे, जमानेहालमें वेसे खुशनसीब रहे नही.–

५ कइमंत्र ऐसे है, जिसके पढनेसें आत्माका भलाहो, पंचपरमेष्टि महामंत्रका पाठकरनेसें अशुभ अनिकाचित कर्म छुटकर पुन्यानुबंधिपुन्य हासिल होगा, परलोकमें अछीगति मिलेगी, और इसजन्ममेंभी सुखचैन हासिल होता रहेगा, वर्द्धमानविद्या, सूरिमंत्र, अपराजिता महाविद्या जो जैनशास्त्रोंमें लिखी हैं, जैनमुनिजनोंकों जरुर पढतेरहना चाहिये, जिससे अशुभ अनिकाचित कर्मोंकी निर्जरा होगी.

६ नमस्कारमंत्रकल्प, ऋषिमडलस्तोत्र, कल्याणमंदिरस्तोत्र, भक्तामरस्तोत्र, तिजयपहुत्त और भयहरस्तोत्र, लोगस्सकल्प, और शक्रस्तवकल्प वगेरा काबील जाननेके हैं, जमानेहालमें मंत्र, यत्र, तंत्र, औषध, और फल फुलोंकी ताकात कम होती जाती है, मनुष्योंकी तकदीर पेस्तरके जैसी नही रही, इसहालतमें अगर मंत्र कम फल देवे तो कोई ताज्जुबकी बात नही, चिंतामणि रत्न जैसे रत्न रहे नही, पारसमणि और चित्रावेलभी जमानेहालमे मिलना दुसवार है, मुताबिक अपनी तकदीरके जो चीज मौजूद है, उसीमें शत्र करना चाहिये, मुक्तिकेलिये परमेष्ठिमंत्र पढना तो सफेद वस्त्र पहनकर सफेद मालासें जाप करना ठीक है, माला कईतरहकी होती

है, सूत्रकी चांदीकी और मोतीकी ये सफेदरंगकी माला कही जाती है, सोनेकी और कहरवेकी माला पीलेरंगमे शुमार किई जाती है, रक्तचंदन और मुंगेकी माला लालरगमें शुमार किई गई है.–

७ जिस मकानमे बेठकर मंत्र पढना हो, पाक और साफ होना चाहिये, दिवारोंकों चुना पोंतकर या रगरोशनसें खूबसुरत बनाना, छतमें चादनी बांधना, और फुलमाला वगेरा चीजोंसें शिंगारना चाहिये, मकान चाहे भूमितलका हो या छतपर हो, कोई हर्ज नही, मगर पाक साफ और एकात होना चाहिये, अतिशय युक्त तीर्थभूमि ज्यादा पसंद किई गई है, मंत्रपढनेवालोकों एक शख्श अपनेपास बतौर उत्तरसाधकके रखना चाहिये, याते जिसचीजकी दरकार हो लाकर देवे, जमानेहालमें अगर जीवोंकी तकदीर कमजोर होजानेकी वजहसें मंत्र जल्दी फल न देवे तो दुसरीदफे पढना, दुसरीदफे फल न हुवा तिसरी दफे पढना, जितनी संख्या शास्त्रोंमें बतलाइ हो वो याद रखना चाहिये, कमसें कम साढेबारा हजारतो निष्कामजाप करना चाहिये, फिर जरुर पढनेपर एक मालाभी काफी है.–

८ कपडे और आसन साफरखना, घीका दीपक, दशागधूप, फल, फुल, नैवेद्य वगेरा जो जो चीजे लेना उमदा और किंमती लेना, मंत्रपाठ करतेवख्त पद्मासन या सुखासन सें बेठना, पद्मासन उसकों कहते है, जैसे जिनप्रतिमाका आसन होता है, मगर जिनमदिरमे पद्मासन लगाकर कभी बेठना नही, जिनेंद्रदेवोंकी अदबी होगी. सुखासन उसको कहते है, सादी पलोंठी लगाकर बेठना, पद्मासनसें या सुखासनसें बहुत वख्ततक आरामसे बेठ सकते हो,–

९ मंत्र पढतेवख्त माला अंगुठेपर रखकर तर्जनी अगुलीसें फिराना, जितनेरोजतक मंत्र पढना हो, उतनेरोज वख्तसर पढनाचाहिये, वख्तमें फेरफार नही करना, सवेरे दुफेरकों या रात्रीकोंजिसवख्त पढना हो वख्तसर पढना, दिनमें एकवख्त भोजन

करना, ब्रह्मचर्य पालना जमीनपर चटाई, कंबल, या शतरंज बीछाकर सोना, झुठ बोलना नही, आचारव्यवहार शुद्ध रखना, खानपानमें रोटी, दाल, दूध, सकर, घी, वगेरा पवित्रचीजे उतनी खाना जो बराबर हाजमा होसके, और वात पित्त कफमें विकार पैदा न हो.-

१० हरेकमंत्र सिखनेके लिये पुष्यार्क, हस्तार्क, मूलार्क या तीर्थंकर महावीर स्वामीके निर्वाण कल्याणिक दीपमालाके रौज ठीक है, अगर ये योग नजीकमें न हो तो पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, या धनिष्ठानक्षत्रके रौज सिखना चाहिये, अगर ये नक्षत्रभी नजीकमें न हो और शिष्यकों सिखलानेकी जरुरत हो गुरु अपने चंद्रस्वरमें सिखलावे, शिष्यका उसवख्त चंद्रस्वर चलता हो तो अछा है, अगर चंद्रस्वर न चलता हो गुरुके सिखलाये बाद जब खुद पढना शुरुकरे तो चंद्रस्वरमें पढना शुरु करे, एकदफे शुरुकियेबाद हमेशां चंद्रस्वर देखनेकी जरुरत नही.-

## ११ [ जिनपंजरस्तोत्रं, ]

परमेष्ठिनमस्कारं, सारं नवपदात्मकं,
आत्मरक्षाकरं वज्र, पंजराभं स्मराम्यहं, १
ॐ नमो अरिहंताणं, सिरस्कंसिरसिस्थितं,
ॐ नमो सव्वसिद्धाणं, मुखेमुखपटांबरं, २
ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षातिशायिनी,
ॐ नमो उवझायाणं, आयुधं हस्तयोर्द्दढं, ३
ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे,
एसो पंचनमुक्कारो शिलावज्रमयी तले, ४
सव्वपावप्पणासणो, वप्रोवज्रमयो वहिः
मंगलाणं च सव्वेसिं खादिरांगारखातिका, ५
स्वाहांतं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइमंगलं,

वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देहरक्षणे, ६
महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी,
परमेष्ठिपदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः ७
यश्चैनां कुरुते रक्षां, परमेष्ठिपदैः सदा,
तस्य न स्याद् भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन, ८



१२ अगर कोई शख्श सफरकों जाना चाहे तो आगे लिखे हुवे बीज अक्षर (१०८) दफे पढकर सफर करे, और जिसगांवमें जाना हो, वहाभी एकसो आठदफे पढकर गांवमें प्रवेश करे.-

[ तीर्थंकर गणधर प्रसादात् एष योगः फलतु, ]

एसा एकदफे बोलकर आगेलिखेहुवे बीजअक्षर पढे ॐनमो भगवओ-गोयमस्ससिद्धस्स-बुद्धस्स अखीणमहाणस्स लद्धीसंपन्नस्स भगवन् भास्कर मम मनोवांछितं कुरुकुरु स्वाहा,-

ये बीजअक्षर सफरकों जातेवख्त या घरआतेवख्त पढे तो अछा है, अगर कोई हरहमेश (१०८) दफे पढता रहे तोभी अछा है, मगर शर्त यह है, मांस न खावे, शराब न पीवे, लशन प्याज वगेरा जमीकंद न खावे, और सुदेव सुगुरु सुधर्मपर श्रद्धारखे, तो खानपानसें सुखी रहेगा, और उसके इरादे पूर्ण होगें.-

१३ [ मंत्र बीज-माला, ]

१ नमः सपत्तिकरं, २ ॐ प्रणवो, ध्रुवबीजं, विनयप्रदीपतेजो बीजं, वा, ३ ह्रीं मायाबीजं, त्रैलोक्यबीजं, परमतत्वबीजं वा ४ स्वाहा पुष्टौ, शांतिबीजं, होमबीजं, वा, ५ स्वधा तुष्टौ, मंत्राणां पल्लवे, पौष्टिकबीजं वा, ६ फट् पिशाचादि उच्चाटने अस्त्रबीजं वा, ७ श्रीं लक्ष्मीबीजं ज्ञानबीजं वा, ८ अर्हं सिद्धचक्रबीजं, जिनपतिबीजं, अष्टमहासिद्धिबीजं,

वा, ९ क्ष्वीं पृथिवीवीजं, १० अं अपांवीजं, ११ स्वा वायुवीजं १२ हा व्योमवीजं, १३ ए ज्वलनवीजं, १४ ऐँ वाग्वीजं, श्रुतदेवीवीजं च, १५ क्लीं कामवीजं, १६ क्रौँ अंकुशवीजं, निरोधवीजं, वा, १७ स्वः स्वादनवीजं, १८ ग्लै स्तंभनवीजं, १९ प्रे ग्रहणवीजं, वैरिवीजं, निरोधवीजं, वा, २० हूँ विद्वेषण वीजं रोपणवीजं, वा, २१ स्त्रीं अमृतवीजं, चांद्रवीजं वा, २२ ब्लूं द्रावणवीजं, २३ यः विसर्जनवीजं, २४ यं वायुवीजं, २५ रः अग्निवीजं, २६ लः स्तंभनवीजं, २७ हं गगनवीजं, ज्ञानवीजं वा, २८ क्ष्मौँमहाशक्तिवीजं, २९ क्ष्मौं शक्तिवीजं, प्रेतनाशनं, वा, ३० क्ष्वीं विषापहारवीजं, सोमं, वा, ३१ फुट् विसर्जनवीजं, ३२ संवोषट् आमंत्रणवीजं ३३ द्रॉ, द्रीं, क्लीं, ब्लूँ, स, पंचबाणवीजं, ३४ हंसं विषापहारवीजं, ३५ जूँ विद्वेषणवीजं, इसतरह वषट् वौषट् क्ष्वीं यौं क्ष्मौं वगेरा कइवीज अक्षर हैं, शास्त्रपढोगें जब, मालुम होसकेगा,—

१४ [ सारस्वती महाविद्या, ]

[ तीर्थंकरगणधरप्रसादात् एष योगः फलतु, ]

(एसा एकदफे पढकर आगे लीखीहुइ-
महाविद्या पढना शुरु करे, )

ॐ ह्रीं चउदसपुव्विणं, ॐ ह्रीं पयाणुसारिणं,
ॐ ह्रीं एगारसंगधारिणं, ॐ ह्रीं उज्जुमइणं,
ॐ ह्रीं विपुलमइणंस्वाहा,

यह-महाविद्या हरहमेश छह महिनेतक (१०८) दफे पढते रहे, तो अकलतेज हो, यादशक्ति वढे, जो जो इल्म सिखना चाहे जल्दी सिखसके और सभामें व्याख्यान देसके.—

१५ [ श्रीसंपादन करनेवाली महाविद्या, ]
[ तीर्थंकरगणधरप्रसादात् एष योगः फलतु, ]
( एसा एकदफे पढकर आगे लिखीहुई
महाविद्या पढना शुरु करे, )

ॐ ह्रीँ वीयबुद्धिणं, ॐ ह्रीँ कुट्ठबुद्धिणं,
ॐ ह्रीँ संभिन्नसोआणं, ॐ ह्रीँ अख्खीण-
महाणसलद्धिणं, सवलद्धिणं नमः स्वाहा,

यह महाविद्या तीन उपवास करके तीनरोजमें साढेबारां हजार-दफे पाठ करना, उपवास न बने तो दूध, चावल, घी, सक्कर और रोटीका एकवख्त भोजन जिमना, गर्मकियाहुवा ठंडा पानी पीना, महाविद्या पढतेवख्त पीले कपडे, पीला आसन, और पीली माला, रखना, साढेबारां हजार पढेबाद हरहमेश (१०८) दफे पढते रहना, धन, दौलत, पुत्र, परिवारसें सुखचैन पाओगें, और आजीविका अछी चलेगी.–

१६ [ रोगापहारिणी महाविद्या. ]
[ तीर्थंकरगणधरप्रसादात् एष योगः फलतु. ]
( एसा एकदफे बोलकर आगे लिखीहुई
महाविद्या पढना शुरु करे, )

ॐ नमो आमोसहि लद्धिणं, ॐ नमो विप्पोसहि लद्धिणं,
ॐ नमो खेलोसहि लद्धिणं, ॐ नमो जल्लोसहि लद्धिणं,
ॐनमो सवोसहिलद्धिणं,एएसिं रोगोवसमणे पसिज्जउ स्वाहा

यह महाविद्या (१०८) दफे चंद्रस्वर चलते वख्त पढकर पांच-तोले पानी या दूध मंत्रित करके सात या चौदहरोज जिस वीमा-रकों पिलाओगे तो वीमारी रफा होगी, अगर खुद वीमार मजकुर महाविद्या पढना चाहे तो एएसिं रोगोवसमणेकी जगह मम रोगोवसमणे पसिज्जउ स्वाहा, पढे,–वीमारीका इलाज हैं, मगर आयुष्यका इलाज नही है.–

१७ [ बयान उवसग्गहरं स्तोत्र, ]

[ श्रीभद्रबाहुस्वामिप्रसादात् एष योगः फलतु ]

( एसा एक दफे बोलकर उवसग्गहरं स्तोत्र पढे, )

जो शख्श हरहमेश सताइस रोजतक सताइस दफे उपसर्गहरस्तोत्र पढे तो उसका उपसर्ग मिटे और आईहुई आफत दूर हो, मजकुर-स्तोत्र भद्रबाहुस्वामिका बनाया हुवा है, इसलिये पहले उनका नाम लेकर पढना चाहिये.-

१८ [ बयान नमिऊण स्तोत्र, ]

[ श्रीमानतुंगसूरिप्रसादात् एष योगः फलतु, ]

(एसा एकदफे बोलकर आगेलिखाहुवामंत्र और गाथा पढे)

ॐ ह्रीँ नमिऊण पास विसहरवसहजिण फुल्लिंग ह्रीँ नमः-

ॐ जल जलण विसहर चोरारि मयंदगय रणभयाइं,

पासजिण नामसंकित्तणेण, पसमंति सवाइं ॐ स्वाहा,

किसीको किसीतरहका अचानक खोफ आनपडे तो उपर लिखाहुवा मंत्र और गाथा(१०८)दफे पढे, खोफ दूर होगा, अगर जल्दी खोफ दूर न हुवा तो चौदह या एकीस रोजतक पढे जिससे जरूर खोफ मिटेगा.-

१९ [ विछूके जहेर उतारनेका मंत्र, ]

तीर्थंकरपार्श्वनाथप्रसादात् एष योगः फलतु, श्रीजिन-दत्तसूरिप्रसादात् एष योगः फलतु, एसा एकदफे बोलकर आगे लिखाहुवा मंत्र पढना,-

[ ॐ कं खं फुट्स्वाहा, ]

यह मंत्र ( १०८ ) दफे पढते जाना, और विछूके काटेहुवे शख्शकों मोरपीछीसें झाडतेरहना, जहेर उतर जायगा.-

२० [ बुखार उतारनेका मंत्र, ]

तीर्थंकरपार्श्वनाथप्रसादात् एष योगः फलतु,

श्रीजिनदत्तसूरिप्रसादात् एष योगः फलतु,

एसा एकदफे बोलकर आगे लिखाहुवा मंत्र पढना,-

ॐ इहुग्गये सूरे एए नासंति तिमिर संघाया
नलिणीवणो विवुधो अमुगस्स जरं पणासे ॐस्वाहा, १

जिस शख्शको रोज बुखार आता हो, तीन रोजसें या चार रोजसें आता हो, उसको उपर लिखीहुइ गाथा ( १०८ ) दफे पढतेजाना, और मोरपीछीसे या रजोहरणसे झाडतेजाना, ऐसा तीन रोजतक करनेसे बुखार न आयगा, मगर इतना याद रहे ! चढते बुखारवालेकों तीनवारी चढेबाद चौथीवारीसे उपरलिखाहुवा इलाज करना.

२१ [ सर्पके जहेर उतारनेकी पाठ सिद्ध जांगुलीनाम महाविद्या, ]

ॐ इलमित्ते, तिलमित्ते, इलतिलमित्ते, डुबे डुंबेलिए, डुस्से डुस्सेलिए, डुग्गे डुग्गेलिए, तक्के तक्करणे, जक्के जक्करणे, अक्के अक्करणे, मम्मे मम्म-रणे, सिंझे सिंझकरणे, कश्मीरे कश्मीरमंडने, अनघे अनघाघने, अघने अघनाघने, अघायंते, अखयंते, पेयं पायंते, श्वेते श्वेततुंडे, अनानुरक्ते ठः ठः ठः स्वाहा,

(विधि,)भो ! भिक्षवः !! इमां जांगुलीनाम महाविद्यां त्रिकालं यः पठति, सः सर्पेण न दश्यते, अथ चेत् दश्यते, न च अस्य काये विषं संक्रामति, भुक्तं च सर्वमपि जीर्यते विषं,

अनया विद्यया वालुकां कोद्रवांश्च एकीकृत्य त्रिरभिमंत्र्य यत्र क्षिप्यते, तत्र सर्पाद्यो न प्रभवति, अनया विद्यया सप्तवारं जलं दुग्धं वा अभिमंत्र्य पाययेत् सर्वं स्थावरं जंगमं कृत्रिमं जाठरं विषं नाशयति,—

२२ (अर्थः )—यह उपरलिखीहुई जांगुलीनाम महाविद्या जो शख्श हमेशां त्रिकाल पढे तो उसको सर्प काटेगा नही, अगर कदाच काट जावे तो शरीरमे जहेर चढेगा नही, अगर किसी दुसरी तरहका स्थावर विष अफीम सखिया वगेरा खाया हो वोभी उतर जाय, इसविधासे वालुरेती और कोद्रव धान्य इकठा करके तीन दफे मंत्रित करे जहां डाले वहा सर्पका आना न होसके, दश तोले

पानी या दूध इसजांगुली विद्यासें मंत्रितकरके पिलाओगे तो सर्प काटेहुवे शख्शका जहेर उतर जायगा, दुसरेभी स्थावर जंगम कृत्रिम और जठरअग्निसबंधी सब तरहके जहेर (२१) दफे इस जांगुली विद्याकों पढतेरहना और मोरपीछी या रजोहरणसे झाडते जाना जहेर उतर जायगा, इसमें कोई शक नही, मगर कंठ, छाती, मस्तक, कान, नाक, डाढी, आंख, होठ, हाथपांवके तलवे, बगल या स्कंध ये मर्मस्थान है, इतनी जगह सर्पदंश होनेसें विजलीकी तरह शरीरमें जहर जल्दी पसर जाता है, अगर हलाहल जहेर पसरगया हो तोभी जांगुलीविद्या ताकतवाली है, जहेर उतर जायगा, जहेर उतारनेका इलाज है, मगर आयुष्य चढानेका इलाज नही है, आगे इस किताबमें जहां तंत्रशास्त्रका बयान लिखा है, उसमें सर्पके जहेर उतारनेकी दवाभी बतलाई है, उसकोंभी देखलेना, और उसपर अमल करना.-

२३ [ सर्पके जहेर उतारनेका पाठसिद्ध जांगुली महामंत्र, ]

ॐ नमो हंस, महाहंस, पद्महंस, क्रौँ हंस, घरघर हंस, पक्षिहंस, विषं भक्ष स्वाहा,-

इस जांगुली महामंत्रकों(१०८)दफे पढते रहना और मोरपीछीसे या रजोहरणसे सर्पकाटेहुवे शख्शको झाडते जाना, जहेर उतर जायगा, दश तोले दूध या पानी इस महामंत्रसें मंत्रितकरके उसशख्शकों पिलाना चाहिये.-

ॐ कुरुकुल्ले, कुरुकुल्ले, मातंगशवराय-शंखं-वादय-वादय, ह्रॉँ ह्रूँ फुट् स्वाहा,-

इस मंत्रसें वालुरेत (२१)दफे पढकर मंत्रित करना, और जिस घरमें सर्प आताजाता हो, उसजगह डालनेसें सर्प नही आयगा, चलाजायगा.

२४ [ गर्भवती औरतकों बालक जन्मते वख्त कष्ट हो तो उसकों मिटानेका उपाव. ]

[ तीर्थंकरपार्श्वनाथप्रसादात् एष योगः फलतु. ]

[ श्रीजिनदत्तसूरिप्रसादात् एष योगः फलतु. ]

एसा एकदफे बोलकर आगेलिखे हुवे बीजअक्षर पढे,

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कलिकुंड दंड स्वामिन् आगछ आगछ
परविद्या उछेदं कुरुकुरु स्वाहा.

ये बीज अक्षर (१०८) दफे पढकर एक तोलाभर तीलका तेल मंत्रित करके गर्भवती औरत कष्ट पाती हो उसके पेट और नाभिपर लगावे, तो कष्ट मीटे, और बालकका सुखसें जन्म हो एकदफे तेल लगानेसे कष्ट न मिटे तो घंटेभरबाद दुसरीदफे मंत्रितकरके लगाना, फिरभी कष्ट न मिटे तो तिसरीदफे लगाना जरूर कष्ट मिटेगा.–

२५ [ दोषनिर्नाशिनी विद्या ]

[ तीर्थंकरगणधरप्रसादात् एष योगः फलतु. ]

एसा एकदफे पढकर आगे लिखीहुई महाविद्या पढना,

ॐ नमो उग्गतवचरणधारिणं, ॐ नमो, दित्ततवाणं,
ॐ नमो तत्ततवाणं, ॐ नमो पडिमा पडिवन्नाणं,
एएसिं परविद्यापहारणे पसिज्जउ स्वाहा,

यह महाविद्या (१०८) दफे हरहमेश पढते रहे किसी तरहके देवदोषका दिलमें शक हो इस विद्याके पढनेसे दूर होजायगा.–

२६ [ भूतप्रेतके खोफ मिटानेका उपाव, ]

[ तीर्थंकरपार्श्वनाथप्रसादात् एष योगः फलतु, ]

एसा एकदफे पढकर आगे लिखाहुवा पाठ पढे,

ॐ नमो भगवते श्रीपार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेंद्रपद्मावतीसहिताय अट्टे मट्टे भूतविघट्टे भूतान् स्तंभय स्तंभय स्वाहा,

ये बीजअक्षर तीनरोजमे साढेबारां हजार दफे पढनेसें सिद्ध होगें, पढतेवख्त ब्रह्मचर्य पाले, जमीनपर सोवे, आचाम्लतप करे, अथवा दिनमें एकदफे एक आसनपर वेठकर भोजन करे, दशांग धूप और घृतका दीपक रखे. फिर जिसवख्त जरुर पडे (१०८) दफे पढकर चमेलीके फुलकी माला या लवंगकी माला मंत्रितकरके जिस शख्शकों भूत तकलीफ देता हो, उसके गलेमे डालना, तक-

लीफ दूर होगी, या पानी मंत्रितकरके पिलानेसें तकलीफ दूर होगी.

(सूचना,) दुनियामें कइ तरहके वातरोग होते है, कमपढेहुवे लोग उसकों भूतपिशाचकी तकलीफ समजते है, मगर उसकी तलाश करना चाहिये, भूतपिशाचकी तकलीफ हो, और जिस वख्त शरीरमें प्रवेशकरके बोलने लगे उस वख्त अपने हाथमें कोई चीज लेकर पुछो, हमारी मुष्टिमें क्या चीज है? अगर तुर्त बतलादेवे फलां चीज है, और वो सच निकले तो जानना भूतदोष है, नही तो जानना अंगरोग है, अंगरोग हो तो उसकी दवा करना चाहिये.

२७ [ भूतप्रेतके खोफ मिटानेका दुसरा उपाय, ]

[ श्रीमाणिभद्रदेवप्रसादात् एष योगः फलतु, ]

एसा एकदफे बोलकर आगे लिखाहुवा पाठ पढे,-

ॐ नमो भगवते-माणिभद्राय-क्षेत्रपालाय-कृष्णरूपाय चतुर्भुजाय-जिनशासनभक्ताय-नवनागसहस्रबलाय-किन्नर-किंपुरुष-गंधर्व-यक्ष-राक्षस-भूत-प्रेत-पिशाच-सर्वशाकिनीनां-निग्रहं कुरुकुरु स्वाहा, पात्रं रक्षरक्ष स्वाहा,-

इस पाठकों तीन रौजमें साढेबारांहजार दफे धूप-दीपके-शाथ पढनेसे सिद्ध होगा, पाठपढतेवख्त ब्रह्मचर्य पालना, जमीनपर सोना, एकदफे भोजन जिमना, सत्यवचन बोलना और शुद्धआचार रखना, फिर जरूरीके वख्त (१०८) दफे पानी मंत्रित करके पिलाना, भूत-पिशाच-शाकिनी-वगेराकी तकलीफ दूर होगी.-

[ बयान मंत्रशास्त्रका खतम हुवा, ]

---

[ बयान यंत्रशास्त्र, ]

१ हरेक यंत्र पुष्यार्क, हस्तार्क, मूलार्क या अपना चंद्रस्वर चलता हो उसवख्त अष्टगंधसें भोजपत्रपर लिखना, (अष्टगंधकी चीजें,) १ केशर पावतोला, २ भीमसेनीकपुर पावतोला, ३ गोरोचन एकअन्नीभर, ४ कस्तूरी दो रति, ५ चंदन आधातोला, ६ अगर

पावतोला, ७ तगर पावतोला, और ८ कंकोल, दो अम्बीभर, ये अष्टगंधकी चीजें हुई, इनकों कुट छानकर खरलमें डालना, कस्तूरी गोरोचन पीछेसें मीलाकर घोटना, और रगके लिये हिंगलु मिलाना, घोटतेवख्त गुलाबजल डालकर घोटना, जब सबचीजे एकरस होजाय एक काचकी शीशीमें भर लेना, या छायामें सुकाकर गोली बना लेना, और यंत्र लिखनेकी जरुरत पडे काममें लेना.–

२ [ तिजय–पहुत्तका–यंत्र, ]

ॐ भवणवई वाणमंतर,

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अजित-नाथाय नम' | रोहिणी | प्रज्ञप्ती | ह्रीं | वज्र-शृखला | वज्रां कुशी | शांति-नाथाय नम. |
| महा मानसी | ह २५ | र ८० | क्षि | हुं १५ | ह ५० | चक्रे-श्वरी |
| मानसी | स २० | र ४५ | प | सुं ३० | स. ७५ | नरदत्ता |
| ब्लुँ | क्षि | प | ॐ | स्वा | हा | श्रीं |
| अछुता | ह ७० | र. ३५ | स्वा | हुं ६० | ह. ५ | काली |
| वेरुट्या | स. ५५ | र १० | हा | सुं ६५ | स ४० | महा-काली |
| वर्द्धमा-नाय नम | मानवी | महा-ज्वाला | ह्रीं | गां-धारी | गोरी | पार्श्व-नाथाय नम |

जोइसवासी विमानवासीय,

जे केवि दुट्ठदेवा,

ते सबे उपसमतु मे स्वाहा,-१

३ यह तिजयपहुत्तका यंत्र निहायत उमदा है, इसमें क्षिप ॐ स्वाहा ये बडे ताकातवाले बीज अक्षर है, क्षि पृथवीबीज है, प अप्-बीज, ॐ अग्निबीज, स्वा पवनबीज, और हा आकाशबीज है, मजकुर (१७०) जिनेंद्रोंका यंत्र तीनभुवनकी प्रभुताकों देनेवाला है.–

**पणवीसा य असीआ, पन्नरस पन्नास जिणवरसमूहो,**
**नासेउ सयल दुरियं भवियाणं भत्तिजुत्ताणं,–१**

(अर्थः)–पचीस, असी, पनरांह और पचास, ये (१७०) जिनवरोंका समुदाय भव्य जीवोंके पापोंका नाशकरनेवाला है.–

**वीसा पणयाला विय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा,**
**गह भूअ रक्खसाइणि, घोरुवसग्गं पणासंतु–२**

(अर्थः)–वीस, पैंतालीस, तीस, और पचहत्तर ये (१७०) जिनेंद्र सबतरहके ग्रह, भूत, राक्षस, और शाकीनी वगेराकी तकलीफकों रफा करनेवाले है.–

**सत्तरि पणतीसा विय, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो,**
**वाहिजलजलणहरिकरि चोरारिमहाभयं हरउ, ३**

(अर्थः)–सत्तर, पैंतीस, साठ, और पांच ये (१७०) जिनेंद्र सबतरहके रोग, जल, अग्नि, केशरीसिह, हस्ती, दुश्मन, और चौर वगेराके खोफकों मिटानेवाले है.–

**पणपन्ना य दसेव य, पन्नठीतह्य चेव चालीसा,**
**रक्खंतु मे सरीरं, देवा सुरपणमिया सिद्धा,–४**

(अर्थः)–पंचावन, दश, पैंसठ, और चालीस ये (१७०) तीर्थंकर मेरे आत्मा और शरीरका रक्षण करनेवाले हो, ये तीर्थंकर रागद्वेष वगेरा दोषोंसे रहित और चोतीश अतिशय अष्टमहाप्रातिहार्य करके सहित है, उनकों मैं नमस्कार करता हुं.–

४ भुवनपति, वाणव्यंतर ज्योतिषी और वेमानिक, इन चारों तरहके देवताओंमेंसें [illegible] । हो तो व–दौलत इस यंत्रके दूर [illegible]

अष्टगंधसे लिखकर दशागधूप देना, और दूधसें धोकर बीमारकों भूतपिशाचवालोंकों तरहतरहके बुखारवालेको या गर्भवती औरतकों कष्टके वख्त पिलानेसे आराम होगा, और सुखचैन मिलेगा, इसमें कोई शक नही.–

५ इस तिजयपहुत्तके यंत्रमें दशतर्फसें एकसरखा गिने तो एकसो सितेरका आंक मिलजाता है, इसमें बढकर कोई यत्र नहीं, इसमें जो ह्ः–र्ः–ह्रूँ–ह्ः–ये चार वीज हैं, (उसका अर्थः) ह्ः–सूर्य-वीज, र्ः–दहनरूप अग्निवीज, ह्रूँ–आत्मरक्षक कवचवीज, ह्ः–द्वितीयसूर्यवीज या संपुटवीज है, स्ः–र्ः–स्रूँ–स्ः–ये जो चार वीज हैं, (उसका अर्थः) स्ः–चंद्रवीज, र्ः–तेजोदीपन अग्निवीज, स्रूँ–सर्वदुरितनाशक शामकवीज, और स्ः–द्वितीय चद्रवीज, या संपुटवीज है, यंत्र तिजयपहुत्तकी चारोंतर्फ सोलह विद्यादेवी-योंके नाम इसतरह है, १ रोहिणी, २ प्रज्ञप्ति, ३ वज्रशृंखला, ४ वज्रांकुशी ५ चक्रेश्वरी, ६ नरदत्ता, ७ काली, ८ महाकाली, ९ गौरी, १० गांधारी, ११ महाज्वाला, १२ मानवी, १३ वैरुट्या, १४ अछुप्ता, १५ मानसी, और १६ महामानसी, ये सोलहविद्या देवीयोंके नाम हुवे, इनमें जो काली महाकाली नामकी देवी बतलाई गई है वो सम्यक्त्ववासिनी हे, मिथ्यात्ववासिनी नही.

[ बयान तिजयपहुत्तयंत्रका खतम हुवा. ]

## [ बयान रिषिमंडलयंत्र. ]

१ रिषिमंडलका यंत्र जो जैनमजहबमे मशहूर है, सोने चांदी कासे या तांबेके पत्तेपर थालीके आकार गोल बनाना, और वो अंदाज लंबाइ चौडाइमें बारा इंचका होना चाहिये, उस पत्तेपर पेस्तर शास्त्री हर्फोंमे आगे लिखीहुई तरकीबसें यंत्र लिखना, और फिर अछे कारीगरके पास अक्षर उकेरवाना.

२ [ रिषिमंडलयंत्र वनानेकी तरकीव ]

यंत्रके वीचलेभागमें पांचअंगुल लंवा चौडा गोलाकार चक्र वनाना, और उसमें ह्रींकार दोहरी लकीरका लिखना, उस दोहरी लकीरमें आध इंच जितनी जगह रखना. जिसमें जिनेंद्रभगवान्के नाम लिख सके, ह्रींकारके उपर अर्द्धचंद्रमाके आकार जो सफेदरंगकी कला होती है, उसमें सफेदवर्णवाले तीर्थंकर चंद्रप्रभपुष्पदंतेभ्यो नमः ऐसा नाम लिखना, फिर उसकलाके उपर जो शामरंगका विंदु होता है, उसमें शामवर्णवाले मुनिसुव्रत नेमिनाथेभ्यो नमः ऐसा नाम लिखना, आगे रेफके नीचे और ह्रींकारके उपर मस्तककी जो लालरंगकी लकीर होती है, उसमें लालवर्णवाले पद्मप्रभवासुपूज्येभ्यो नमः ऐसा नाम लिखना, ह्रींकारका जो दीर्घ इकार हरेरंगका होता है, उसमें हरेवर्णवाले मल्लिपार्श्वनाथेभ्यो नमः ऐसा नाम लिखना. ह्रींकारका जो वाकी रहाहुवा हकार रकार पीलेरंगका होता है, उसमें वाकी रहेहुवे स्वर्णवर्णवाले सोलह तीर्थंकर रिषभ, अजित, संभव, अभिनंदन, सुमति, सुपार्श्व, शीतल, श्रेयांस, विमल, अनंत, धर्म, शांति, कुंथु, अर, नमि, वर्द्धमानेभ्यो नमः ऐसा लिखना, ह्रींकारके वीचमें जो खुली जगह रहती है, उसमें ॐ ह्रीं अर्हं नमः ऐसे बीज अक्षर लिखना,–

३ फिर ह्रींकारकी चारोंतर्फ आठ कोठेवाला गोलाआकार मंडल वनाना, और ह्रींकारके विंदुके उपरसें पहलेकोठेकी शुरुआत करना, पहले कोठेमें अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ह्म्ल्वर्यूं. ऐसा लिखना, आगे दुसरे कोठेमें क ख ग घ ङ भ्म्ल्वर्यूं, ऐसा लिखना, तिसरे कोठेमें च छ ज झ ञ म्म्ल्वर्यूं, लिखना, चौथे कोठेमें ट ठ ड ढ ण, रम्ल्वर्यूं लिखना, पांचमें

कोठेमें त थ द ध न, धम्ल्वर्यूं, लिखना, छठे कोठेमें प फ ब भ म, झम्ल्वर्यूं, लिखना, सातमें कोठेमे य र ल व, सम्ल्वर्यूं, लिखना, और आठमे कोठेमें श ष स ह, खम्ल्वर्यूं ऐसा लिखना.

४ फिर दुसरे मंडलकी चारों तर्फ आठ कोठेका गोलआकार तिसरा मंडल बनाना, उसकी शुरुआत अआ कोठेके उपरसें करना, और सब कोठे दाहनी तर्फसें लिखते जाना, पहले कोठेमें ॐ ह्रां अर्हद्भ्यो नमः ऐसा लिखना, दुसरे कोठेमें ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यो नमः ऐसा लिखना, तिसरे कोठेमें ॐ ह्रुं आचार्येभ्यो नमः लिखना, चौथे कोठेमे ॐ ह्रूं उपाध्यायेभ्यो नमः लिखना, पांचमे कोठेमे ॐ ह्रें सर्वसाधुभ्यो नमः लिखना, छठे कोठेमें ॐ ह्रैं सम्यग्दर्शनेभ्यो नमः लिखना, सातमे कोठेमे ॐ ह्रौं सम्यग्ज्ञानेभ्यो नमः लिखना, और आठमे कोठेमें ॐ ह्रः सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः ऐसा लिखना.—

५ आगे इसी तिसरे मंडलकी चारोंतर्फ चौथा सोलह कोठेका मंडल बनाना, और उसकी शुरुआत उपरमुजब अनुक्रमसें करना, पहले कोठेमें ॐ ह्रीं भुवनेंद्रेभ्यो नमः ऐसा लिखना, दुसरे कोठेमे ॐ ह्रीं व्यंतरेंद्रेभ्यो नमः लिखना, तीसरे कोठेमें ॐ ह्रीं ज्योतिष्केंद्रेभ्यो नमः लिखना, चौथे कोठेमें ॐ ह्रीं कल्पेंद्रेभ्यो नमः लिखना, पांचमें कोठेमें ॐ ह्रीं श्रुतावधिभ्यो नमः लिखना, छठे कोठेमे ॐ ह्रीं देशावधिभ्यो नमः लिखना, सातमे कोठेमे ॐ ह्रीं परमावधिभ्यो नमः लिखना, आठमे कोठेमें ॐ ह्रीं सर्वावधिभ्यो नमः लिखना, नवमें कोठेमे ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धिप्राप्तेभ्यो नमः लिखना, दशमे कोठेमें ॐ ह्रीं सर्वौषधिप्राप्तेभ्यो नमः लिखना, ग्याहरमे कोठेमे ॐ ह्रीं अनंतबलर्द्धि-

प्रासेभ्यो नमः लिखना, बारहमे कोठेमें ॐ ह्रीँ तपर्द्धिप्रासेभ्यो नमः लिखना, तेरहमे कोठेमें ॐ ह्रीँ रसर्द्धिप्रासेभ्यो नमः लिखना, चौदहमे कोठेमें ॐ ह्रीँ वैक्रेयर्द्धिप्रासेभ्यो नमः लिखना, पनरहमे कोठेमें ॐ ह्रीँ क्षेत्रर्द्धिप्रासेभ्यो नमः लिखना, और सोलहमे कोठेमें ॐ ह्रीँ अक्षीणमहानसर्द्धिप्रासेभ्यो नमः ऐसा लिखना.–

६ फिर इसी चौथे मंडलकी चारोंतर्फ चौइस कोठेका गोलआकार मंडल बनाना, और उसकी शुरुआत उपरमुजब अनुक्रमसें करना, पहले कोठेमें ॐ ह्रीँ ह्रीदेवीभ्यो नमः ऐसा लिखना, दुसरे कोठेमें ॐ ह्रीँ श्रीदेवीभ्यो नमः लिखना, तिसरे कोठेमें ॐ ह्रीँ धृतिभ्यो नमः लिखना, चौथे कोठेमें ॐ ह्रीँलक्ष्मीभ्यो नमः लिखना, पांचमें कोठेमें ॐ ह्रीँ गौरीभ्यो नमः लिखना, छठे कोठेमें ॐ ह्रीँचंडीभ्यो नमः लिखना, सातमें कोठेमें ॐ ह्रीँसरस्वतीभ्यो नमः लिखना, आठमें कोठेमें ॐ ह्रीँजयाभ्यो नमः लिखना, नवमे कोठेमें ॐ ह्रीँ अंबिकाभ्यो नमः लिखना, दशमे कोठेमें ॐ ह्रीँ विजयाभ्योनमः लिखना, ग्यारमे कोठेमें ॐ ह्रीँ क्लिन्नाभ्यो नमः लिखना, बारहमे कोठेमें ॐ ह्रीँ अजिताभ्यो नमः लिखना, तेरहमे कोठेमें ॐ ह्रीँ नित्याभ्योनमः लिखना, चौदहमे कोठेमें ॐ ह्रीँ मदद्रवाभ्यो नमः लिखना, पनरहमें कोठेमे ॐ ह्रीँ कामांगाभ्यो नमः लिखना, सोलहमे कोठेमें ॐ ह्रीँ कामबाणाभ्यो नमः लिखना, सतराहमे कोठेमें ॐ ह्रीँ सानंदाभ्यो नमः लिखना, अठराहमे कोठेमें ॐ ह्रीँ आनंदमालिनीभ्यो नमः लिखना, उन्नीसमे कोठेमें ॐ ह्रीँ मायाभ्यो नमः लिखना, वीसमें कोठेमें ॐ ह्रीँ मायाविनीभ्यो नमः लिखना, एकीसमे कोठेमे

ॐ ह्रीँ रौद्रीभ्यो नमः लिखना, बाईसमे कोठेमें ॐ ह्रीँ कलाभ्यो नमः लिखना, तेईसमें कोठेमे ॐ ह्रीँ कालीभ्यो नमः लिखना और चौईसमें कोठेमें ॐ ह्रीँ कलिप्रियाभ्यो नमः लिखना, इसतरह पांचमडलका रिपिमंडलयंत्र बनाना, और यंत्रकी दाहनीतर्फ ॐ, उपरकी तर्फ ह्रीँ बायीतर्फ क्ष्विँ और यंत्रकी नीचेकी तर्फ क्षः अक्षर लिखना.–

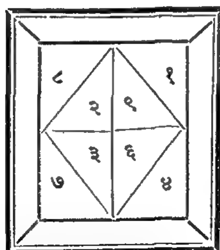
७ फिर इसयंत्रकी चारोंतर्फ गोलआकार (१०८) ह्रींकार लिखकर यंत्रको वेष्टित करना, मगर ह्रींकार छोटे छोटे इसतरकीबसें लिखना. जो बराबर एकसो आठ ह्रींकार यंत्रकी चारोंतर्फ वेष्टित होजाय, जिससे रिपिमंडल यंत्र पूर्ण हो, कितनेक लोग इससे ज्यादामंडल बनाते हैं, और उसमें देव, देवी, इंद्र, दशदिग्पाल, पनरा, वीशायंत्र वगेरा डालते हैं, मगर वो सब गलत है, असली रिपिमंडलयंत्र जितना उपर लिखा है, उतनाही है, इस यंत्रकी बराबरी करनेवाला दुसरा कोइ यंत्र नही, कल्पवृक्ष या चिंतामणिरत्नकी तरह मनके इरादे पूर्ण करनेवाला बडा प्रभाविक है, धर्मपर कामीलएतकात शख्स अगर इसको विधिसहित आराधन करे, और इसके बीजमंत्रका जाप करे, अपनी मुराद हासिल करेगा, इसमे कोइ शक नहीं.–

८ इस रिपिमंडलयंत्रके पांचमे मंडलके छठे कोठेमे जो चंडी देवीका नाम है, नवमे कोठेमे अंबिका देवी, एकीसमे कोठेमें रौद्री देवी, और तेईसमे कोठेमें जो कालीदेवीका नाम लिखा है. वे सब देवीयां जैनमजहबपर कामील एकातवाली और सम्यक्त्ववासिनी जानना, उनको शराब मांस वगेरा कोइ अपवित्र चीज नही चढती, और वो अपवित्र चीजकी चाहनाभी नही रखती, इसलिये उनको मिथ्यात्ववासिनी नही समजना.–

[ रिषिमंडलयंत्र बनानेकी तरकीब खतम हुई. ]

९ दुनियामें तरहतरहके कलाकौशल्य मौजूद है, उनका हासिल करना वेशक ! मुश्किल है, मगर धर्मकरना उससेभी ज्यादा मुश्किलकी बात है, पेस्तरके जमानेमें लोग ज्यादा सुखीथे, कई लोग कहाकरते है, सुखमें धर्म याद नही आता, क्यौं नही याद आता, अगर धर्मपर श्रद्धा कम हो तो याद न आयगा, मगर जिसकी धर्मश्रद्धा मजबूत है, वे सुखमेंभी धर्मकों याद करते हैं, और दुनियादारीके काम छोडकर पहले धर्म करते हैं, सुखपाना पुन्यका फल है, तकलीफ उठाना पापका फल है, उत्कृष्ट पुन्यपापका फल इसभवमेंभी मिलता है, और परभवमेंभी मिलता है, जैसे जिसके कर्म हो, वैसा उसकों फल मिले यह सब शास्त्रोका सार है, पूर्वसंचित कर्म भोगते वख्त रागद्वेष करे तो नये कर्म बंधे, और अगर निस्पृह होकर धर्म करे और समभावमें रहे तो आगेकों–नये–कर्म-न–बंधे.–

[ वीसका यंत्र. ]




मजकुर वीशका यंत्र पुष्यार्कके रौज अपने चंद्रस्वर चलते वख्त अष्टगंधसे भोजपत्रपर लिखना, यंत्र लिखते वख्त एकके अकसे चढते चढते कोठे भरना शुरु करना, यह यंत्र पासरहनेसें रिद्धि वृद्धि प्रभाव

दर्शक है, मगर पुष्यार्कके रोजही लिखना, पुष्यार्क उसको कहते है जिसरोज पुष्यनक्षत्र और रविवार हो, पंचांग देखनेसें मालुम होगा यंत्र छह तर्फसे गिनाजाता है, उपर देखलो, और गिनती करलो छह तर्फसें वीसकी संख्या मिलती जायगी, आठ, दो, नव, एक (२०) एक, नव, छह, चार, (२०) चार, छह, तीन, सात, (२० सात, तीन, दो, आठ, (२०) आठ, दो, छह, चार, (२०) औ एक, नव, तीन, सात (२०) इसतरह गिनना चाहिये.–

[ पनरका यंत्र ]

| | | |
|---|---|---|
| ८ | १ | ६ |
| ३ | ५ | ७ |
| ४ | ९ | २ |



मजकुर पनराहका यंत्र पुष्यार्कके रोज अपने चंद्रस्वर चलतेवख्त अष्टगंधसे भोजपत्रपर लिखना, यंत्र लिखतेवख्त एकके अंक चढते चढते कोठे भरना शुरु करे, यह यंत्र पासरहनेसें रिद्धि वृद्धि और प्रभावदर्शक है, मगर पुष्यार्कके रोज लिखना, इसकी गिनती करो तो सब तर्फसे पनराहकी संख्या मिलती जायगी.–

दुनियामे तरहतरहके यंत्र हैं, सिद्धचक्रजीका यंत्र सब यंत्रों उमदा कहा, इसके बाद रिषिमंडलका यंत्र और तिजयपहुत्तक यंत्रभी किसीकदर कम नही, जिशके यंत्र कईतरहके देखेगये, मग उपर दिखलाया हुवा वीशका यंत्र काबिल भरुसेके है, सालभर

पुष्यार्कका रौज बहुतकम आता है, उसमेंभी दिनभर पुष्यनक्षत्र होना और उस रौज रविवार होना निहायत उमदा योग है, मजकुर बात पंचांगसे मालुम हो सकेगी, अंकोंके संयोगसें यंत्र बनता है, जब तकदीर अछी होती है, अछी चीजोंका संयोग मिलता है.–

१ जैनागम चंद्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति वगेरामें ज्योतिषचक्रका बयान दर्ज है, तीर्थंकर गणधरोंने जो द्रव्योंकी अनेकतरहकी शक्ति फरमाई वो एक दुसरेके मिलानसे खीलती है.–

२ मणि मंत्र और औषधियोंका अचिंत्यप्रभाव शास्त्रोमें कहा, कई लोग आमकी गुंठलीकों डांडलीये थोहरके दूधमें एकीस दफे पुट देकर आमका पेंड जल्दी उगाते है, इससे साबीत हुवा, द्रव्योंमें तरहतरहकी ताकात रही हुई है, वो एक दुसरेके संयोगसें जाहिर होती है.–

३ सहदेवी, विष्णुक्रांता, काकजंघा, मयूरशिखा, केतकी, अपामार्ग, शंखपुष्पी वगेरा वनास्पति अचिंत्यप्रभाववाली है, और इनके अलग अलग कल्प बनेहुवे है, तलाशकरनेसे मालुम होगा, ये जडीये विजय देनेवाली है,–

४ सर्पकाटनेवालेको नागदमनी चाहे हरी हो या सुकी, छहमासे लेकर खिलाईजाय तो फौरन ! जहेर उतरजायगा, मुल्क मारवाडमें नागदमिनी जडीकों कालीपाड बोलते है, नींबकी सुकी नींबोली पांचमासे, सिधानिमक पांचमासे, और कालीमिर्च पांचमासे ये तीनोंचीजे बारीक पीसकर उसमें देडतोले ताजा घी मिलाना, और सर्पकाटे हुवे शख्शकों खिलाना, और थोडा डंखपर लगाना, जहेर उतर जायगा, मरुवेकी जड चारमासे लेना, उसमें (२५) कालीमिर्च मिलाकर घोटना, और दशतोले जल मिलाकर पिलाना, सर्पका जहेर उतरजायगा, कालीकसुंदरीकी जड आधातोला पानीमें घीसकर पिलानेसे सर्पका जहर उतर जायगा, गुडमार रुखडीके

पाच पत्ते और सात कालीमीर्च बारीक पीसकर साततोले पानीमे मिलाकर पिलानेसे बछनागका जहेर उतर जाता है.–

५ कपासके हरेपत्ते और राई एकशाथ पीसकर डंखपर लेपकरनेसे विछुका जहेर उतर जाता है, तीन–चार–रतिकपुर पानमें रखकर खिलानेसे विछु वगेरा जहेरी जीवोंका जहेर उतर जाता है.

६ नीमके सुके पत्ते, बच, हिंग, और सर्पकी कांचली, इन चारोंकों अग्निपर डालकर भूत लगे हुवेको धुणी देना, भूत पिशाच चला जायगा.–

७ राल और कपुर आधे आधे तोले लेकर पानीमें घीसकर रुईकी बत्तीपर लगाना और धूपमे सुकाना, इसतरह तीन पुट देना, फिर पानीके भरेहुवे कटोरेमें रखकर दियासलाई लगानेसें दिया होजायगा, और वगेरतेलके दिया जलता रहेगा.–

[ बयान तंत्रशास्त्रका खतम हुवा, ]

[ जानवरोंके लक्षण, ]

१ सफेदरगका हाथी निहायत उमदा होता है, लाल या काले रगका हाथी दोयमदर्जेपर, और जिस हाथीके कुंभस्थलमेसें मद झरता हो, वो आलादर्जेका हाथी है.–

२ जिस हाथीके पिछले बायेपावके साथलमें सफेदरंगका चक्र, धजा, या शंखका आकार हो, निहायत फायदेमंद है, जिस हाथीके पिछले दाहनेपांवके गोडेपर मछका निशान हो, एकतरहका बुरा चिन्ह है.–

३ जिस हाथीके पुंछपर विल्कुल वाल न हो वो एकतरहका बुरा चिन्ह है, जिस हाथीकी पीठपर छत्र, देवविमान, मछ, या अकुशका चिन्ह हो, वो लडाईमें फतेहपावे, मालिककों प्यारा हो, और, लाखों रुपयोंके गहेने उसकों पहनाये जाय, जो हाथी वारवार गर्जना करे वो अछा नहीं, जैसे हाथीके लक्षण कहे वैसे हथनीकेभी जानना.–

४ जिस घोडेके दोनों कान अणीदार हो, वो घोडा निहायत उमदा जानना, जिस घोडेके दाहने कानपर दक्षिणावर्त चक्र और बाये कानपर शंखका आकार हो, निहायत उमदा है, छत्रपतिराजे महाराजोंके दरबारमें रहे, और उसकी खिदमतमें नोकर—चाकर हमेशां बने रहे.—

५ जिस घोडेके दाहने कानपर भ्रमरका निशान हो, निहायत बुरा है, जिस घोडेकी आंखें अणीदार और चमकीली हो निहायत उमदा है, जिस घोडेकी नाशिकाके बहारकी चमडी लाल हो, निहायत उमदा है, जिस घोडेकी आंखोंपर भ्रू बिल्कुल न हो वो बुरा चिन्ह है, जिस घोडेकी नाशिकापर कमलफूलका आकार हो, तो अछा है.—

६ जिस घोडेकी दाहनी नाशिकापर चक्र त्रिशूल या मछका चिन्ह हो, निहायत उमदा है, जिस घोडेकी बायी नाशिकापर ज्यादा केश हो और दाहनी नाशिकापर बिल्कुल केश न हो वो घोडा निहायत बुरे लक्षणवाला है.—

७ जिस घोडेके मुखमेंसें बदबू आती हो, वो घोडा अछा नही, जिसके मुखमेंसें कमलफूलकी तरह खुशबू आती हो, वो अछे लक्षणवाला है, जिस घोडेके दांत अनारकी कलीसमान खुबसुरत हो वोभी अछे लक्षणवाला जानना.—

८ जिस घोडेके निलारमें चक्र अर्धचंद्र या मछयुग्मका आकार हो, वो लडाईमें फतेह पावे, और हमेशां आरामतलब रहे, जिस घोडेके निलारमें सफेद सर्पका आकार हो वो निहायत बुरा है, जिसके निलारमें कालेरंगका अंकुश बना हुवा हो, वोभी बुरा है.—

९ जिस घोडेकी गर्दनपर गुछेदार और मुलाइम केश हो, वो निहायत उमदा लक्षण है, जिसके केश न हो वो बुरा लक्षण है, जो घोडा सफेद, लाल, काला, या पंचरगी रंगवाला हो मगर खूबसुरत और तेजस्वी हो वो बहुत अछा है.—

१० बैल सफेद, या लालरंगका अच्छा, कालेरंगका ठीक नही, जिस बैलके दोनों शिंग अर्धचंद्रमाके आकार हो, वो उमदा है, जिस बैलके शिंगमें फाट पडी हो या दाहनी तर्फका शिंग—बायी तर्फके शिंगसें बडा हो, ऐसा बैल खराब लक्षणवाला है, जिस बैलका शिंग हाथीदांतकीतरह सफेद हो, या बायीतर्फके शिंगपर सफेद रंगका चक्र हो निहायत उमदा है.—

११ जिस बैलके दोनों शिंग बाकेटेडे हो, या बहुत छोटे हो वो अछे नही, जिस बैलके शिंग हरेरंगके चमकीले हो वो अछा है, जिस बैलके निलारमे शंख, पद्म, चक्र, कलश, धनुष्य, या शंकुंगका आकार हो, निहायत उमदा है, जिस बैलके निलारमे सर्प, भ्रमर, या बाणचढाया हुवा धनुष्यका आकार हो तो बुरा है.—

१२ जिस बैलके दोनों शिंग उचे और अणीदार हो वो उमदा बैल है. जिस बैलका दाहना कान बायेकानसें लंबा हो, या बायेकानपर मसे हो यह लक्षण बुरा है, जिस बैलके गलेके नीचे सफेद या लालरंगका चक्राकार चिन्ह हो, अछा है, जिस बैलका अगला दाहना पांव बाये पानसें छोटा हो, वो अछा नही.—

१३ जिस बैलके दाहने अगमे शंख, चक्र, धजा, स्वस्तिक, पुष्पमाल, छत्र, चवर, कलश, पद्म, मत्सयुगल, या मयूरका चिन्ह हो वो बैल उमदा लक्षणवाला जानो, जिस बैलके बायेअगपर त्रिशूल, गदा, या नकुलका चिन्ह हो तो अछा नही, जिस बैलके पांवकी खुरीपर ज्यादा बाल उगे हो, जिससे खुरी न दिखाई दे तो यह लक्षण बुरा है.—

१४ जिस बैलके शरीरपर वज्राकार चिन्ह हो अछा है, जिस बैलके पुंछपर सफेद या लालरंगके पटे पडे हो, एकतरका अछा लक्षण है, जिस बैलके पुंछपर बाल बिल्कुल न उगे हो वो ठीक नही, जिस बैलका पुंछ बहुत छोटा हो वो अछा नही, जिस बैलकी खाध खूबसुरत हो तो वो उमदा है.—

१५ परींदोंमें तोता, मैंना, मोर, कबूतर, मुर्घी वगेराके लक्षण शास्त्रोंमें बयान फरमाये हैं, जिनकों ज्यादा माहिती मिलाना हो, दुसरे शास्त्र देखे.–

[ बयान जानवरोंके लक्षणका खतम हुवा, ]

[ बयान नजुम शास्त्र, ]

१ ज्योतिष् शास्त्र एक दिव्यज्ञान है, और उर्दू जबानमें उसको नजुम कहते है, नजुम सचा है, मगर शर्त यह है, उसकों जाननेवाला होशियार होना चाहिये, नजुमकों अछी तौरसें देखा गया तो इम्तिहानके मेंदानमें सचा पाया, तीर्थंकर गणधरोंकी यह कमाल महेरबानी समजो वें नजुमकों जैनागमोंमें बयान फरमागये, तीर्थंकरदेवोंनें जब द्वादशांगवानीका बयान किया और गणधरोंने जब उसकी रचना किई आग्रायणीनामकेपूर्वमें ज्योतिष्विद्या दर्ज किइगई, जैनागम चंद्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति जैननजुमके आलादर्जेके ग्रंथ हैं,–

२ बाद जब श्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामी हुवे उनोंने भद्रबाहुसंहितानामका ग्रंथ सवालाख श्लोकका बनाया, मगर अपशोष है, मजकुरग्रंथ जमानेंहालमें पुरा मिलता नही, भद्रबाहुस्वामी जैनाचार्य थे, और उनके सगेभाई वराहमिहेर थे, जिनोंने वराहमिहेरसंहितानामका ग्रंथ बनाया, और वें वैदिकमजहबपर एतकात रखतेथे.–

३ बाद उसके जैनाचार्य हरिभद्रसूरिजी कालिकाचार्य पादलिप्ताचार्य मलयगिरिजी हैमचंद्राचार्यजी और हैमप्रभसूरिजी वगेरा बहुतसें जैनाचार्य नजुमके माहितगार हुवे, उनके बनाये हुवे नजुमग्रंथ जमाने हालमें मिलते है, और कितनेक नेस्त नाबुद होगये, पेस्तरके वख्तमें जैनपंचांग चलता था, जमानेहालमे अगर कोई बनाना चाहे तो बनसकता है, जैनज्योतिषके ग्रंथ बहुत है, सिर्फ! बनानेवाले और खर्चकरनेवाले चाहिये.–

४ जैनमजहबमें चंद्र–सूर्यकों ज्योतिषदेवोंके इंद्र माने हैं, बाकीके ग्रह नक्षत्र और तारे मिलाकर पांचतरहके ज्योतिषदेव कहे, चंद्र और

सूर्य कभी चक्र नही होते, और राहु केतु कभी मार्गी नही होते, पेस्तरके जमानेमें (८८) ग्रहोंका गणित चलता था, जमानेहालमें (९) ग्रहोंका गणितकरनाभी दुसवार होगया, मनुष्य कमजोर शुस्त और कमउम्रवाले रहगये, इसलिये नवग्रहोंका गणित अछी तौरसें किया जाय तोभी बहुत है, जैनोके ज्योतिप्शास्त्र उमदा वने हुवे है, मगर उनकों जाननेवाले चाहिये.–

५ असली नजुमी वे कहेजाते है, जो यंत्रवेधसें ग्रह नक्षत्रोंकों आस्मानमे देखलेवे, करीब दो हजार वर्सके पेस्तर भारतवर्षमे जो ज्योतिप्विद्या थी ग्रो आजकल नही रही, जैनमजहबमे ज्योतिप्चक्रकी गिनती और छह आरोंकी शुरुआत हिंदी श्रावणवदी और गुजराती आषाढवदी एकमसे मानी गई है.–

[ ज्योतिप्करंडक जैनग्रंथका पाठ, ]

**सावण बहुल पडिवइ, वालवकरणेअभिइनखत्ते,**
**सवथ्थ पढम समये, जुगस्स आइं वियाणाहि, १**

( अर्थः–) हिंदी श्रावणवदी गुजराती आषाढवदी एकमके रौज बालव करण और अभिजित् नक्षत्रसें युगकी शुरुआत गिनी जाती है.

६ चद्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, भद्रबाहुसहिता, ज्योतिप्करडक, आरंभसिद्धि, जन्माभोधि, यंत्रराज, त्रैलोक्यप्रकाश, मानसागरीपद्धति, मेघमाला, गणिविज्जापयन्ना, मेघमहोदधि, भुवनप्रदीप, और नारचंद्र ये जैनमजहबके नजुमग्रंथ है.–

७ वराहसंहिता, जैमनीयसूत्र, पाराशरसूत्र, अगस्तिसूत्र, लंपाक, नीलकंठ, बृहज्जातक, पारिजातरत्नाकर, सूर्यसिद्धांत, कमलाकर और आर्यभट्टसिद्धांत वगेरा दुसरे मजहबके ग्रंथ है.–

८ जैनशास्त्रोंमे द्वादशारचक्रमय कालचक्र माना है, और वैदिक मजहबके शास्त्रोंमें सत्य, द्वापर, त्रेता, और कलि ये चारयुग माने गये है.–

९ अगर कोई इससवालको पेशकरे चाद–सूर्य किसीका भला-बुरा करडाले, यहभी एकतरहका बखेडा नही तो और क्या है, ?

जवानमें मालुम हो, चांद, सूर्य, किसीका भलाबुरा नही करते, जो कुछकरनेवाले हैं, अपने पूर्वसंचितकर्म है, मगर जिसवख्त आदमीकी तकदीर अछी आती है, चांद, सूर्य, वगेरा ग्रह अछे चिन्ह बतलाते हैं, जब बुरी तकदीर पेंश होती है, बुरे चिन्ह बतलाते हैं.

१० नजुमीलोगोंका फर्ज हैं, जो फायदेआम हो, जाहिर करे, रुई, अनाज, सोना, चांदी, वगेरा चीजोंकी तेजीमंदी सुकाल, दुकाल वगेरा बातें बजरीये नजुमके मालुम हो सकती हैं, मगर जब इल्म नजुम पढोगे मालुम होगा, बगेरइल्मके कोई बात मालुम नही होसकती, आजकल आलादर्जेके नजुमी और रमाल नही रहे, जो गलती न खावे, भूल सबके पीछे लगी हैं, जो लोग इल्मनजुम पढते नही, और कहते हैं, नजुम जुठा है, उनकी आलादर्जेकी गलती समजो.–

११ चैत्र, वेशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, आसोज, कार्तिक, मृगशीर्ष, पौष, माघ, और फाल्गुन ये बारांह महिनोंके नाम हैं, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमंत, शिशिर, ये छह रितुओंके नाम हैं, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर ये चार दिशाओंके नाम हैं, अग्नि, नैरुत्य, वायव्य, और ईशान ये चार विदिशाओके नाम हैं, उर्द्ध और अधः ये उंची नीची दिशाओंके नाम हैं,–

१२ आदित्य, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, और शनि ये सात वार हैं, एकम, दुज, तीज, चौथ, पंचमी, छठ, सातम, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी चतुर्दशी, पौर्णिमा, औ अमावास्या ये तिथियोंके नाम हैं,–

१३ अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, (अभिजित्,) श्रवण, धनिष्ठा, शभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, और रेवती, ये सताइस नक्षत्रोंके नाम है,–

१४ निष्कुंभ, प्रीति, आयुष्मान्, सौभाग्य, शोभन, अतिगं[illegible] सुकर्मा, धृति, शूल, गंड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतीपात, वरीयान, परिघ, शिव, सिद्ध, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्म, ऐंद्र, वैधृति, ये सताईस योगोंके नाम हैं,–

१५ बव, बालव, कौलव, तैतल, गरल, वणिज, विष्टि, शकुनि, चतुष्पद, नाग, किंस्तुघ्न, ये ग्यारह करणोंके नाम हैं,–

१६ मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ, मीन, ये बारा राशियोंके नाम हैं. चंद्र, सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, और केतु ये नवग्रहोंके नाम हैं–

१७ [ शतपद-चक्रम् ]

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ चू चे चो ला, | अश्विनी, | १६ नी नू ने नो, | विशाखा, |
| २ ली लु ले लो, | भरणी, | १७ ना नी नू ने, | अनुराधा, |
| ३ आ ई ऊ ए, | कृत्तिका, | १८ नो या यी यू, | ज्येष्ठा, |
| ४ ओ वा वी वू, | रोहिणी, | १९ ये यो भ भी, | मूल, |
| ५ वे वो क की, | मृगशिरा, | २० भू ध फ ढ, | पूर्वाषाढा, |
| ६ कु घ ङ छ, | आर्द्रा, | २१ भे भो ज जी, | उत्तराषाढा, |
| ७ के को ह ही, | पुनर्वसु, | | |
| ८ हु हे हो डा, | पुष्य, | २२ जू जे जो खा, | अभिजित् |
| ९ डी डू डे डो, | आश्लेषा, | २३ खी खू खे खो | श्रवण, |
| १० म मी मू मे, | मघा, | २४ ग गी गू गे, | धनिष्ठा, |
| ११ मो टा टी टू, | पूर्वाफाल्गुनी | २५ गो सा सी सू, | शततारका, |
| १२ टे टो प पी, | उत्तराफाल्गुनी, | २६ से सो द दी, | पूर्वाभाद्रपदा, |
| १३ पू ष ण ठ, | हस्त, | २७ दू थ झ ञ, | उत्तराभाद्रपदा, |
| १४ पे पो रा री | चित्रा, | | |
| १५ रू रे रो ता, | स्वाति, | २८ दे दो च ची, | रेवती, |

[ नजुमनदेखनेका इस चक्रको उक्त

१७ मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह कन्या, तुला, वृश्चिक, धन मकर, कुंभ, और मीन. ये बारां राशिकेनामभी हिञ्ज याद करे,–

१८ अश्विनी भरणी कृत्तिकापादमेकं मेषः,
कृत्तिकानां त्रयः पादा रोहिणी मृगशिरोर्धं, वृषः,
मृगशीरोर्धं आर्द्रा पुनर्वसुपादत्रयं, मिथुनः–
पुनर्वसुपादमेकं पुष्य अश्लेषांतं, कर्कः–
मघाच पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनीपादमेकं सिंहः,
उत्तराफाल्गुनीपादत्रयं हस्तचित्रार्ध, कन्या,–
चित्रार्ध स्वाति विशाखापादत्रयं, तुला,
विशाखापादमेकं अनुराधा ज्येष्ठांतं, वृश्चिक,–
मूलच पूर्वाषाढा उत्तराषाढापादमेकं, धनुः–
उत्तराषाढापादत्रयं श्रवण धनिष्टार्द्धं, मकरः–
धनिष्ठार्ध शतभिषा पूर्वाभाद्रपदापादत्रयं कुंभः,
पूर्वाभाद्रपदापादमेकं उत्तराभाद्रपदा स्वात्यंतं, मीनः–

इसपाठकोभी कंठाग्र करे, जभी नजुमकी शुरुआत हुइ जानना,–

१९ जन्मपत्रिकाके बारह भुवनके नाम, तन, धन, सहज, सुख, संतान, शत्रु, जाया, मृत्यु, धर्म, कर्म, लाभ, और व्यय,–

२० पहेला, चौथा, सातमा, दसमा, केंद्र,
दुसरा, पाचमा, आठमा, ग्यारहमा, पणफर,–
तीसरा, छठा, नवमा, बारहमा, आपोक्लिम.–

[ अनुष्टुप् वृत्तम्, ]

पणफराद् भाविकार्यं, ज्ञेयमापोक्लिमाद्गतं,
केंद्रे सर्वग्रहाः पुष्टाः त्रैकालिकफलप्रदाः १

(अर्थः) पणफरसे भाविकार्य देखा जाता है, आपोक्लिमसें भूतकालकी बात देखी जाती है, और केंद्रसें भूत भविष्य वर्तमान तीनोंकालकी बात देखी जाती है,–

२१ एक एक नक्षत्रके चार चार चरण और सवादो नक्षत्रकी एकराशि होती है, इसतरह सत्ताइस नक्षत्र बारां राशिपर बटे हुवे है,-

शनौ चंद्रे त्यजेत् पूर्वां, दक्षिणां च दिशं गुरौ,
सूर्यशुक्रे पश्चिमां च, बुधे भौमे तथोत्तरां,-१

(अर्थः) शनिवार और सोमवारके रौज पूरवमें दिगशूल रहता है. गुरुवारके रौज दखनमें रहता है, रविवार और शुक्रवारके रौज पश्चिममें और बुधवार मंगलवारके रौज उत्तरमें दिगशूल रहता है.

२२ मेषे च सिंहे धनपूर्वभागे,
वृषे च कन्यामकरे च याम्यां,
युग्मे तुलाकुंभज पश्चिमायां
कर्कालिमीने दिशि ह्युत्तरस्यां,-१

(अर्थ) मेष सिंह और धनराशिका चंद्र पूर्वदिशामें रहता है, वृषभ कन्या और मकरराशिका चंद्र दखनदिशामें रहता है, मिथुन तुला और कुंभराशिका चंद्र पश्चिममें और कर्क वृश्चिक मीनका चंद्र उत्तर दिशामे रहता है,-

२३ पू, उ, अ, न, द, प, वा, इ, १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, पू, उ, अ, न, द, प, वा, इ ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, ३०, अमावास्या, ये ये तिथियोंके रौज इनइन दिशामें योगिनी रहती है,-

२४ प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशीकों नंदा तिथि कहते हैं, द्वितीया, सप्तमी, द्वादशीकों भद्रातिथि कहते है, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशीकों जया तिथि कहते है, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशीको रिक्ता, और पंचमी, दशमी, पौर्णिमा, अमावास्याको पूर्णातिथि कहते है,-

२५ जन्मपत्रिकाके पहले भुवनका नाम, तन, लग्न, मूर्त्ति, अंग, और वपु वगेरा है, और इससें शरीर, वर्ण चिन्ह, आयु, सुखदुख, जाति, और ताहसीर वगेरा देखेजाते है, दुसरे नाम, धन, कोश, स्वः अर्थ और कुटुंब वगेरा है, और इससें

चांदी, जवाहिरात, धातु, दोस्त और रुपये पैसे वगेराका ह
देखा जाता है, तीसरे भुवनका नाम सहज, सहोदर, और भ्र
वगेरा है, और इससें भाई नोकर चाकर वगेराका सुख कै
होगा देखाजाता है,–

२६ जन्मपत्रिकाके चौथे खानेका नाम सुख, पाताल, तु
अंब, हिबुक, सुहृद, नीर, जल वगेरा है, और इससें जमीन, ज
दाद, गांव नगर, मकान और एश आराम वगेरा हालात दे
जाते हैं, पांचमे खानेका नाम संतान, तनय, बुद्धि, विद्या, आत्म
वाक्स्थान, पंचम, और तनुज वगेरा है, और इससें बेटा, बे
विद्या, मंत्र, यंत्र, तंत्र, और लक्ष्मी पैदा करनेके उपाव देखे ज
है, आंखोंका विचारभी इससे किया जाता है, छठे खानेका न
शत्रु, द्वेष, वैर, षष्ठ, रिपु वगेरा है, और इससें दुश्मन, खो
बीमारी, और मामेका पक्ष देखा जाता है,–

२७ जन्मपत्रिकाके सातमें कोठेका नाम, जाया, यामित्र, अ
मदन, मद, और काम वगेरा है, और इससे मुल्कोंकी सफर, औ
तिजारत, और चोराइ हुइ चीजोंके हालात देखे जाते हैं. आ
कोठेका नाम मृत्यु, रध्र, आयु, छिद्र, यान, निधन, प्रलय, अ
अष्टम वगेरा है, और इससें मृत्यु, कुटुंब और बडे बुढोंकी दौ
मिलेगी या नही वगेरा हालात देखे जाते है, नवमें कोठेका न
धर्म, भाग्य, गुरु, शुभ, तप, और नवम हैं, और इससें मजा
एतकात (धर्मश्रद्धा) दीक्षा, मुल्कोंकी सफर वगेरा देखे जाते है

२८ जन्मपत्रिकाके दशमें स्थानका नाम, कर्म, व्योम, ख–न
तातआस्पद, गगन, आज्ञा, मान, मध्यम, व्यापार, और दशम
इससें हुकमहोदा, पदवी, खिताब, इज्जत, और अपनी तरकी कित
होगी वगेरा देखाजाता है, ग्यारहमें स्थानका नाम, लाभ, उपच
उपांत, आय, प्राप्ति, आगम, भव, और एकादश वगेरा है, अ
इससें किसी तरहका फायदा होगा या नही? वगेरा देखा ज

है. बारमे स्थानका नाम, व्यय, अंतिम, द्वादश, रिष्फ, प्रांत, वगेरा है, और इससें हरतरहके खर्चका बयान देखा जाता है.-

२९ [ कल्पसूत्रवृत्तिमें बयान है, ]

**तिहि उचेहिं नरिंदो, पंचहिं तह होइ अद्धचक्की अ,**
**छहि होइ चक्कवट्टी, सत्तहि तित्थंकरो होइ,-१**

(अर्थः)-जिसके जन्मपत्रमें तीनग्रह उंचके पडे हो वो राजा होवे, पांचग्रह उचके पडे हो वो वासुदेव राजा हो, छह ग्रह उंचके पडे हो तो वो चक्रवर्त्तीराजा और जिसके सातग्रह उंचके पडे हो तो वे तीर्थंकरदेव होवे.-

**सुखी भोगी धनी नेता, जायते मंडलाधिपः**
**नृपतिश्चक्रवर्त्ती च, क्रमादुच्चग्रहे फलं,-१**

(अर्थः)-उंचग्रहोंका फल सुखी, भोगी, धनवान्, सरदार, मंडलाधिप, राजा या चक्रवर्त्ती वगेरा है.-

३० लग्नेश, उंच, मित्रक्षेत्री, या स्वगृही हो, तो लंबी उम्र पावे, और खुशनसीब हो, धनेश उंच, मित्रक्षेत्री या स्वगृही हो तो वो शख्श दोलतमंद हो, तृतीयेश उंच, मित्रक्षेत्री या स्वगृही हो तो उसके भाई बडे नेंक हो, सुखेश उंच, मित्रक्षेत्री या स्वगृही हो तो मोज शोखमें रहनेवाला हो, पंचमेश उंच, मित्रक्षेत्री, या स्वगृही हो तो अकलमंद और हाजिरजवाब हो, षष्ठेश उंच, मित्रक्षेत्री, या स्वगृही हो तो हमेशा बीमारीकी शिकायत उसकों बनी रहे.-

३१ सप्तमेश उंच, मित्रक्षेत्री या स्वगृही हो तो उसकों खूबसुरत औरत मिले, अष्टमेश उच, मित्रक्षेत्री या स्वगृही हो तो वो लंबी उम्र पावे, नवमेश उंच, मित्रक्षेत्री या स्वगृही हो तो बडा इकबालमद और खुशनसीब हो, दशमेश उंच, मित्रक्षेत्री, स्वगृही हो तो सलतनतमें इज्जत पावे, हुकम होदा मिले, और हमेशां आरामतलब बना रहे, एकादशेश उंच, मित्रक्षेत्री या स्वगृही हो तो दोलतमंद हो, द्वादशेश उंच, मित्रक्षेत्री, या स्वगृही हो. तो आमदनी कम

और खर्च ज्यादा रहे, लेकिन! शुभग्रह स्वगृही होकर वेठा हो तो वो शख्श धर्मध्वज होवे

३२ लग्नेश नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो तो उसकों शरीरका सुख न हो, द्वितीयेश नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो तो उसकों दौलत कम मिले, तृतीयेश नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो तो उसको भाईयोंका सुख नही, चतुर्थेश नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो तो उसको सुख कम मिले, पंचमेश नीच, अस्त या शत्रुक्षेत्री हो उसके संतान जीवे नही, षष्ठेश नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो तो हमेशां तंदुरस्ती बनीरहे,–

३३ सप्तमेश, नीच, अस्त या शत्रुक्षेत्री हो उसकी विवाहसादी न हो, अगर होवे तो औरत जल्दी मरजावे, अष्टमेश नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो तो वो शख्श छोटी उम्रमें मरजाय, नवमेश नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो तो अधर्मी हो, धर्म करना उसकों पसंद नही, तीर्थभूमिमें जावे तोभी दर्शनपूजनके वख्त तबीयत नादुरुस्तका बहाना निकाले, दशमेश नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो तो अमलदारी और हुकमहोदा न मिले, दुखसे जीदगी तैर करे, एकादशेश नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो उसको फायदा कम मिले, और द्वादशेश नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो तो वो शख्श दौलतमंद हो,–

३४ सूर्य उंच, स्वगृही या मित्रक्षेत्री हो तो उसकों अमलदारी मिले, अगर वो शख्श दीक्षा इख्तियार करे तो उसकी पूज्यपदवी बनी रहे, और किसीबातकी कमी न हो, चंद्रमा उंच स्वगृही या मित्रक्षेत्री हो उसका हमेशां खुशमिजाज बना रहे, और हरबातमें बेपरवाह हो, मंगल उंच, स्वगृही, या मित्रक्षेत्री हो तो जंगबहादूर हो, किसीसे डरे नही, और हिम्मत हारे नही, बुध उंच स्वगृही या मित्रक्षेत्री हो तो तिजारत बहुत करे और फायदा उठावे, बृहस्पति उंच, स्वगृही या मित्रक्षेत्री हो तो अकलमंद चतर और पंडित

हो, शुक्र उच्च स्वगृही या मित्रक्षेत्री हो तो खूबसुरत और कमाल हुस्न हो, शनि उंच, स्वगृही या मित्रक्षेत्री हो तो उम्र लंबी पावे.–

३५ सूर्य नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो तो हुकम होदा मिले नही और वालिदका सुख कम हो, चंद्रमा नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो तो हमेशां दुख पाता रहे, और माताकी तर्फसे तकलीफ पावे, मंगल नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो उसके दिलके इरादे नापाक रहे, बुध नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो तो वो शख्श मुंगा हो, या सभामे बोलते शर्म करे, बृहस्पति नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो तो कमअकल हो, शुक्र नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो तो पराई औरतसे दोस्ताना करे, और शनि नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री हो तो कमउम्रमें इंतकाल होजाय.–

३६ मासं शुक्रबुधादित्याश्चंद्रः पाददिनद्वयं,
भौमस्त्रिपक्षं जीवोब्दं सार्द्धं वर्षद्वयं शनिः १
राहुः केतुः सदा भुंक्ते सार्द्धमेकं तु वत्सरं, इति,

(अर्थः)–शुक्र, बुध, और सूर्य एकराशिपर करीब एक महिनेतक रहते है, चद्रमा सवादो दिन, मंगल देढमहिनेतक, बृहस्पति एकवर्स, शनि अढाई बर्स, और राहु केतु अठारांमहिने एक एक राशिपर रहते है,–

राश्यादिगौ रविकुजौ फलदौ सितेज्यौ,
मध्ये सदा शशिसुतश्चरमेऽजमंदौ,

(अर्थः)–सूर्य मंगल राशिमें आते तुर्त फल देते है, बृहस्पति शुक्र राशिके मध्यमें आवे जब फलदेते हैं, बुध जब राशिमे आवे और जहांतक रहे फल देता है, और चद्र शनि राशिकी अखीरमे आवे जब फल देते है,–

३७ लग्नेश या धनेश जिसके जिसवख्त उदय हो उसवख्त उसशख्शकों दौलत मिले, भाग्येश जिसके लग्नमे पडा हो–या लग्नेश भाग्यभुवनमे पडा हो, तो उसको दीक्षा उदय आवे, लग्नेश लग्नमे

पडा हो या भाग्येश भाग्यभुवनमें पडा हो, तोभी दीक्षा उदय आवे, लग्नेश लग्नकों देखता हो या भाग्येश भाग्यभुवनकों देखता हो तोभी दीक्षा उदय आवे, लग्नेश नवमेशको देखे या नवमेश लग्नकों देखे तोभी उसकों दीक्षा उदय आवे, इसमें कोई शक नही,–

३८ जैनागम गणिविज्ञापयन्नामें लिखा है, चारनक्षत्रमें लौकिककार्य करना, और चारनक्षत्रमें लौकिक कार्य नही करना.–

[ गणिविज्ञापयन्नेका पाठ, ]

किल्तियाहिं विसाहाहिं, मघाहिं भरणीयहिं,
एएहिं चउरिख्खेहिं लोयकम्माणि वज्जये, १
पुण्णवसुणा पुस्सेण, सवणोथ धणिट्ठया,
एएहिं चउरिख्खेहिं, लोयकम्माणि कारये, २

(अर्थः)–कृत्तिका, विशाखा, मघा, और भरणी इन चारनक्षत्रोंमें अछाकाम करना मना है, खता खाओगें, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण और धनिष्ठा इनचारनक्षत्रोंके रोज अछाकाम करना हुकम है, फतेह पाओगे, मगर धनिष्ठापंचकमें दखनदिशाकों जाना बहेत्तर नही, पूरव, पश्चिम, और उत्तरमें शौखसें जाओ, कोई हर्ज नही.–

३९ [ जैननजुमग्रंथ त्रैलोक्यप्रकाशमे पाठ है–, ]

लग्ने तुंगे सदालक्ष्मी, तुर्ये तुंगे धनागमः
तुंगजायास्तगे तुंगे, खेतुंगे, राज्यसंभवः १
लाभे तुंगे महालाभो भाग्ये तुंगे च दीक्षित, इति,

(अर्थः)–लग्नमें जिसके उंचग्रह पडा हो, वो हमेशां दौलतमंद वना रहे, चौथे भुवनमें जिसके उंचग्रह पडा हो, उसकों हमेशां दौलत मिलती रहे, सातमें भुवनमें जिसके उंचग्रह पडा हो उसकों खूबसुरत औरत मिले, अगर औरतकी जन्मपत्रीमे सातमें भुवनमें उंचग्रह पडा हो, तो उसकों खूबसुरत पति मिले, दशमें भुवनमें जिसके उंचग्रह पडा हो, उसको सलतनत मिले, और अमलदारी करे, लाभभुवनमें जिसके उंचग्रह पडा हो उसको तरहतरहके फायदे

होते रहे, और नवमें भुवनमें जिसके उच्चग्रह पडा हो तो उसकों दीक्षा उदय आवे.–

४० लग्नेश जिसके धनुभुवनमें पडा हो, या धनेश लग्नमें पडा हो तो वो शख्श दौलतमंद होगा, लग्नेश लग्नमें पडा हो तोभी दौलतमंद होगा, धनेश धनभुवनमें पडा हो तोभी दौलतमद हो, लग्नेश, धनेश दोनो एकशाथ धनुभुवनमें या दोनों एकशाथ लग्नमें पडे हो तोभी दौलतमंद होगा, नवमेश दशमे भुवनमे पडा हो या दशमेश नवमे पडा हो उस शख्सकों राजयोग हुवा जानना, नवमेश नवमे और दशमेश दशमे हो तोभी राजयोग हुवा समजना, नवमेश दशमेश दोनों मिलकर नवमे पडे हो या दोनों एकशाथ दशमें पडे हो तोभी राजयोग बना जानना, इसतरहके राजयोगवाला शख्श अगर दीक्षा इख्तियार करे तो आचार्य उपाध्याय गणी प्रवर्त्तक वगेरा पदवीधर बने.–

४१ [भावाद् भावपतिर्व्ययाष्टरिपुगो भावोथ्थपीडाकरः]

जन्मपत्रमें जिसभावका स्वामी अपने भावसे छठे आठमें या बारहमें जाकर बेठे तो उसभावकी उसको तकलीफ हो, जैसे लग्नका स्वामी छठे आठमें या बारहमे जाकर पडा हो तो उसकों दुश्मनोंसें बीमारीसें और खर्चेसें तकलीफ रहे, सूर्य, चंद्र, मंगल, और बृहस्पति नैसर्गिकमैत्रीमे परस्पर मित्र है, और बुध, शुक्र, शनी, ये तीनभी नैसर्गिकमैत्रीमे परस्पर मित्र है.–

पश्यंति सप्तमं सर्वे, शनिजीवकुजाः पुनः
विशेषतस्त्रिदशत्रिकोणचतुरष्टमान् १

(अर्थः)–हरेक ग्रह जहा बेठा हो उसजगहसे सातमे स्थानकों पुरी तौरसें देखे, मगर शनि तिसरेदशमे स्थानकोभी पुरी तौरसें देखे, बृहस्पति पंचम नवमस्थानको पुरीतौरसें देखे, और मंगल चौथे आठमे स्थानकोभी पुरीतौरसे देखे, हरेकग्रह तिसरे दशमें एकचरण, चौथे आठमे दो चरण, और पाचमें नवमे स्थानको तीनचरणसें देखते है.

४२ लग्ने नूनं चिंतयेद् देहभावं,
होरायां वै संपदाद्यं सुखं च,
स्याद् द्रेष्काणे भ्रातृजं भावरूपं,
सप्तांशे स्यात्संततिः पुत्रपुत्री, १
नूनं नवांशेपि कलत्रभावं स्याद्द्वादशांशे पितृमातृसौख्यं,
त्रिंशांशके कष्टफलं विचिंत्यं, होरागमे होरविदो वदंति,२

(अर्थः)–लग्नसे देहसंबंधी बातें देखना, होरासें संपदावगेरा सुख, द्रेष्काणसें भाई भतिजेका हाल, सप्तांशसें बेटाबेटीका बयान नवांशसें औरतका सुख, द्वादशांशसे मातपिताका सुख, और त्रिशांशसें तकलीफ वगेराका हाल देखना.–

शुभराशौ शुभांशे वा कारके धनवान् भवेत्
तदंशके शुभे केंद्रे राजा नूनं प्रजायते, १,

(अर्थः)–आत्मकारक ग्रह शुभराशिमें या शुभनवांशमें हो तो वो शख्श दौलतमंद हो, वो कारकांश जन्मलग्नसे केंद्रमें हो, और उसमें कोई शुभग्रह बेठा हो, तो वो राजाधिराज हो.–

४३ [ जन्मपत्रिकाके बारां भावोंका फल, ]
[ तन्वादिभुवनस्थसूर्यफलं, ]

१ सूर्य तनभुवनमें बेठा हो, तो मुल्कोंकी सफर करे, वडे समुंदरकी लंबी मुसाफरी करे, बेटोंसें तकलीफ पावे, शरीरमें पित्तप्रकृति ज्यादा रहे, दौलत कभी हो, कभी न हो, गुस्सा ज्यादा, शरीर लंबा हो, नाशिका अणीदार हो, किसीका–काम दिललगाकर करे तोभी यश न मिले.–

२ दुसरा भुवन, नसीबेदार हो, सवारीका सुख हो, हाथी, घोडे, बेल उसके घर कायम रहे, दौलत अछेकाममे खर्च हो, अपने

रिस्तेदारोंसें तकलीफ पावे, अपना फायदा अपने हाथसें गुमावे, दोस्तोंसें दगा पावे.—

३ तिसराभुवन, बडानामी ग्रामी शख्श हो, अपने भाइयोंसें अनबनाव रहे, दुश्मन कदम कदमपर खडे रहे, मगर सामने हुवे बाद कुछ बोल न सके, तीर्थोंकी जियारत करे, तंदुरुस्त हो, दुसरोंको फायदा पहुचानेवाला हो, दुसरोंकी खातिरतवज्जे करे, और इल्मदार हो.—

४ चौथाभुवन, निहायत खूबसुरत हो, हुकम होदा पावे, भाइयोंसें बने नही, दुश्मनलोग सताते रहे, दिल हमेशा रंजिदा बना रहे, फिक्रके मारे नींद न आवे, किये हुवे उपकारसें बेदरकार हो, अपनेपास दौलत कम रखे, मगर उसके हुकममे दौलत बहुत हो, जूठ बोलना न चाहे, मगर दुसरोंके कहनेसे जूठ बोले, और उम्रभर मुकदमा बाजीकरता रहे.—

५ पांचमाभुवन, अवलसंतान जीवे नही, मंत्र-यंत्र-तंत्रका जाननेवाला हो, इन्साफकी बात बोले, गुस्तमिजाज हो, दौलतकों जोडनेवाला हो, अकलमंद हो, लोगोंके शाथ चालाकीसें बरते, ओलादकम हो, कुव्यसनमें पडजाय, दुश्मन बहुत हो, मगर सामने आयेबाद ठंडे होजाय, पेटके दर्दसें उसका मरना हो.—

६ छठाभुवन, राज्यकी तर्फसें जरीमाना हो, सफरमें दौलत गुमावे, सवारीका सुख नही, दोस्त दगा देजाय, खूबसुरतरूपवाला हो, खुशमिजाज हो, अछे शख्शोंकी सोबतकरे, देवगुरुकी खिदमत करे, व्रत नियम बनसके नही, मगर धर्मश्रद्धामें पावंद रहे.—

७ सातमाभुवन, औरत दगाबाज मिले, शरीरमें हमेशां बीमारीकी शिकायत रहे, दिलमें हमेशां फिक्र बनी रहे, जहां हजारका फायदा दिखाईदे वहा पांचसो मिले, धर्ममें खर्च करना चाहे मगर अंतराय पडे, बादीकी प्रकृतिवाला हो, जवानीमें एश आराम ज्यादा करे.—

८ आठमाभुवन, व्यापारमें होशियार हो, उमदा खाना खावे, शुस्तमिजाज हो, उसकी दौलत चौर लेजाय, हमेशां एकतरहकी बीमारी बनी रहे, मुल्कोंकी सफर करे, और आरामतलब हो.–

९.नवमाभुवन, विदून तपकिये तपस्वी कहलाय, दिलमें तरहतरहकी चिंता बनी रहे, किसीसें ठगाय नही, भाइयोंसें तकलीफ पावे, राज्यमें इज्जत हो, मुल्कोंमें मशहूर हो, परायेधनसें धनवान् बने, देवगुरुकी खिदमत करे, धर्मश्रद्धामें अचल हो.–

१० दसमाभुवन, माताका सुख नही, दुनियामें उसकी इज्जत हो, खुशनसीब हो, जिसकामकी शुरुआत करे फतेह पावे, दौलतमंद हो, बडेबडे दोस्त हो, बुजुर्गोंकी खिदमत करे, और उनके फ़रमानपर चले.–

११ ग्यारहमाभुवन, राज्यकी तर्फसें इज्जत पावे, दुश्मनोंको हठानेवाला हो, तरहतरहकी संपदा उसके पास बनी रहे, ओलादका सुख नही, दौलतमंद हो, नसीबेदार हो, सौचसमजकर कामकरे, खानपानसे सुखी, उमदा पुशाक पहने, सवारीका सुख रहे, मीठी जबान बोले, भोगावलीकर्मके उदयसें व्रतनियम टुट जाय.–

१२ बारहमाभुवन, आंखोंमे तकलीफ रहे, दुश्मनोंसें फतेह पावे, सफरमे दौलत गुमावे, रिस्तेदारोंसें तकलीफ हो, शरीरमें बीमारी बनी रहे, विना सौचे काम करे और पीछेसें रंज उठावे, बुरे शख्शोंकी संगतसें दौलत लुटावे.–

---

४४ (तन्वादिभुवनस्थचंद्रफलं.)

१ पहलेभुवनमें अगर मेष, वृष, या कर्कका चंद्र हो वो दौलतमंद हो, दुसरीराशिका हो तो मुंगा बहेरा, दरिद्री हो, पूर्णचंद्रमा हो तो नसीबेदार हो, क्षीणचंद्रमा हो तो शरीरसे दुखी रहे.–

२ शरीरसें तंदुरस्त रहे, खानपानसें सुखीरहे, जवानीमें एशआराम भोगे, रिस्तेदारोंकी परवाह न करे, स्त्रीवल्लभ हो, बोलनेमें चतर, मिलनसार, देवगुरुधर्मका रागी, और उसके बडेबडे दोस्त हो.–

३ अपनीभुजासे दौलत पैदा करे, खूबसुरत औरत मिले, धर्मात्मा हो, तपस्वी हो, और दुनियामें मशहूर हो, भाइयोका सुख रहे, स्त्रीवल्लभ हो, इल्मदार हो, भाइयोंसे नेकी करे, इज्जत आबरु अछी पावे, और धर्मध्वज हो.-

४ भाइयोसें और दोस्तोंसें सुखी रहे, औरत अछी मीले, बेटे हुकममे चले, राज्यकी तर्फसें हकुमत पावे, दौलतमंद हो, जहागीरदार हो, बोलनेमे चतर हो, बेपरवाह हो, तीर्थयात्रा बहुत करे, स्त्रीवल्लभ हो हमेशां तदुरस्त बना रहे, और दुश्मनोंसे फतेह पावे.

५ औलादका सुख हो, अकल तेज रहे, जवाहिरातसें फायदा उठावे, वडोंके कियेहुवे काम उसके पार पडे देवगुरुकी खिदमत करनेवाला हो, बोलनेमे चतर, राज्यमे उसकी इज्जत हो, दुश्मन सतावे, मगर सामने आयेबाद कुछ बोल सके नही.-

६ दुश्मनोंसे डरे नही, राजा उससे दुश्मनाइ करे तोभी परवाह न करे, अपनी तकदीरसें खुशमिजाज बना रहे, हमेशा सुखचैन भोगे, दुनियामें नामी हो, शरीरमे बीमारीकी शिकायत बनी रहे.

७ औरतका सुख रहे, व्यापारमे फायदा हो, मुल्कोंकी सफर करे और दौलत मिलावे, हमेशां उमदा खाना खावे, कृष्णपक्षका चंद्र हो तो दुबलापतला हो, दुश्मनोसें तकलीफ पावे, धर्मात्मा हो, रहेमदिल हो खुश्मिजाज हो, मशहूर हो, अकलमंद हो.-

८ हमेशा बीमार रहे, हकीमोंकी मजलीस उसके घर बेठी रहे, पानीसें घात हो, कुवा वावडी नदी-या-समुंदरसे उसको आफत आवे, दुश्मन बहुत सतावे.-

९ दुनियामे उसकी इज्जत हो, इल्मदार हो, शरीरसें तंदुरस्त रहे, हिम्मतबहादूर हो, अकलतेज हो, खूबसुरत हो, उसके बडेबडे दोस्त हो, खानपानसें सुखी रहे, और धर्मको तरक्की देवे.-

१० पुन्यात्मा हो, तीर्थोंकी जियारत करे, भाइयोसे बनाव रहे, राज्यसे इनाम पावे, धर्मपर साबीत कदम रहे, खुशनसीन हो,

समुंदरकी लंबी मुसाफरी करे, हुकम होदा और इज्जत पावे, देवगुरुधर्मपर कामील एतकात हो, धर्मकों तरकी दे.—

११ राज्यकी तर्फसें हकुमत पावे, दौलतमंद हो, औरतका सुख रहे, तिजारतसें फायदा उठावे, दिलका दलेर हो, खूबसुरत हो, अछे लोगोंकी सोबत करे, दुश्मनोंसें फतेह पावे, किसीसें ठगाय नही.—

१२ आंखोंमें तकलीफ रहे, अछेकामोंमें दौलत सर्फ करे, कुडुंबसें तकलीफ पावे, खूनकी बीमारी हो, दुश्मन बने रहे, उम्र छोटी हो, जूठ बोलनेकी आदत हो, एशआरामसें नफरत करे और धर्मध्यानमें खुश रहे.—

४५ [ तन्वादिभुवनस्थभौमफलं, ]

१ हथियारसें खोफ हो, आगसें नुकशान हो, शूली या फांसीसें मरना हो, औरतका वियोग रहे, सिरमें और आंखोंमें तकलीफ हो, कोई काम शुरुकरे बडी मुसीबतसे पार पडे, पित्तप्रकृतिवाला हो, अकलमंद हो, किये हुवे उपकारकों भूल जाय, बाहियातकामोंमे दौलत खर्च डाले,—

२ कंजुस हो, भूलनेस्वभाववाला हो, सख्त जबान बोले, आपमतलबी हो, कुडुंबका और औलादका सुख नही.—

३ बहादूर शख्श हो, दौलत कमानेवाला हो, भाइयोंसें अनबनाव रहे, धर्मके व्रतनियम पाले नही, राजासें इज्जत पावे, औलादका सुख हो, और दिलका दलेर हो.—

४ भाइयोंका सुख नही, दोस्तोसें बने नही. मातापितासें जुदा रहे, दिलमें रंज रहे, खर्च बहुत हो, राजासे इनाम पावे, जमीनसे फायदा हो, उमदा पुशाक पहने.—

५ जठराग्नि तेज रहे, हमेशां दिलमें रंज बना रहे, संतान हो, मगर जीवे नही, इल्म कम पढे, धर्मपर एतकात जमे नही, मतलब पुराकरनेमें खुश रहे.—

६ दुश्मन उससें डरते रहे, लडाईमें फतेह पावे, मुकदमा जित
ाय, अकल तेज रहे, मामाका सुख नही, एकदफे दौलत गुमावे
कदफे दौलत पैदा करे, अपने कुटुंबमे नामी हो, खूबसुरत कमाल-
स्न हो, दुनियामे उसकी इज्जत हो.–

७ औरत मिले नही, मिले तो नाइत्तिफाकी बनी रहे, मुल्कोंकी
फर करे, दुश्मनोंकों हठानेवाला हो, बुरेलोगोकी संगत करे,
ुम्मतबहादूर हों, तामसीस्वभाववाला हो.

८ दुश्मनोंसें मिलाप रखे, दुश्मनलोग दुश्मनाई छोडे नही,
ोचसमजकर काम करे तोभी फतेह न पावे, शरीरमे हथियारका
ाव लगे, बुरोंकी सोनतकरे, दिलमें रहेम नही,–

९ नसीबेदारहो, दौलतमंदहो अकल तेजहो, तामसीस्वभाववालाहो,
ये मकान बनावे, भाईयोंसें अनवनाव रहे, धर्मपर कामीलएतकात
ो, दुसरोकोंभी तालीमधर्मकी देवे, व्रत नियम उससे होसके नही,–

१० हमेशां उसके घर आनद मगल बना रहे, बहुत आदमी उ-
की मुलाकातकों आवे, उसका फरमान सबलोग मंजुर करे, राजा-
मान तेजस्वी हो, बहादूरहो, अपने कुलमे नामी हो, दुश्मनोंसें फतेह
ावे, इज्जतकेलिये हजारो रुपये खर्च करे, दुनियामे मशहूर हो,–

११ संतानका सुख नही, दुश्मनोंको हठानेवाला हो, हाथी
ोडे गौ बैल वगेराके व्यापारसे दौलत मिलावे, अछे काममें दौलत
र्फ करे, इज्जत पावे, राज्यकी तर्फसे हकुमत मिले,–

१२ दौलत गुमानेवालाहो, शरीरमे हथियारका घाव लगे, दुश्म-
ोंसें डरे नही, सर्पसें कमी उसकों खोफ हो, पराये दुखमे सामील
ो, वाहियातकामोंमे दौलत सर्फ करे. दुर्व्यसन लगजाय, पाप-
रना न चाहे मगर दुसरोंकी सोवतसें सामील होजाय,–

## ४६ [ तन्वादिभुवनस्थ बुधफलं. ]

१ किसीतरहकी तकलीफ न हो, अकल तेज रहे, निहायत
खूबसुरत कमालहुस्न हो, हकीमीमे चतर हो, इल्मसे अपने कुटुंबका

गुजर करे, धर्मपर पावंद हो, अपने कुटुंबमें प्रतापी हो, राज्यके अमलदार उसकी सलाह लेवे, पापसे वचता रहे, और तिजारतसें फायदा उठावे,–

२ अकल तेज हो, सभामें भाषण देसके, दिलका दलेरहो, एशआराम भोगे, दौलतमंद हो, मीठीजवान बोले, देवगुरुकी खिदमत करे, इज्जत आवरू अछी बनीरहे, नोकरचाकरोंको खुश रखे,–

३ व्यापारमें होशियार हो, नेंकचलनवाला हो, किसीकी परवाह न रखे, अपनी अकलहोशियारीसे सबकों खुश करे, भाईयोके शाथ बनाव रहे, एशआराम करे, धर्मात्मा हो, उसके बडेबडे दोस्त हो, छलकपट पसंद नही, सचबोलनेवाला और साफ दिल हो–

४ राज्यका अमलदार हो, बडेबडे दोस्त हो, वालिदकी दौलत मिले नही, अपने हाथकी कमाई भोगे, शरीर तंदुरस्त रहे, अकलमंद हो, खेतीसें फायदा हो, व्यापारसे दौलतमंद बने, सुखचैन भोगे, बहुतलोग उसकी मुलाकातकों आवे,–

५ संतानका सुखहो, अपनी अकलहोशियारीसें दौलत पैदा करे, मंत्रशास्त्रका जानकार हो, शरीरमें कमताकात हो, व्रतनियम बनसके नही, इष्टका वियोग रहे,–

६ बडेलोगोंसे दुश्मनाइ रहे, बंधकुष्टकी बीमारीसें तकलीफ पावे, साधुजनोंकी खिदमत करे, धर्मका फायदा हासिलकरे, अछेकामोंमें दौलत सर्फ करे, नेंकीसें व्यापार करे, और अपनी भुजाबलसें दौलत पैदा करे,–

७ औरतका सुख रहे, शरीरमें कमताकात हो, दौलतमंद हो, सचबोलनेवाला हो, खूबसुरत हो, एशआराम ज्यादा भोगे, औरत नेंकचलन मिले, दुसरोंका भला करे, अगर बुध अस्तहोकर सप्तमभावमें बेठा हो, कम फल देगा,–

८ उम्र लंबी पावे, मुल्कोंमें मशहूर हो, व्यापारसें दौलत मिले, औरतका सुखहो, कफप्रकृति ज्यादा रहे, अपने कुलकी तरकी करे,–

९ दुनियामें उसकी तारीफ हो, दौलतमंद हो, धर्मपर साबीतकदम रहे, अकल तेज हो, दीक्षा उदय आवे, अपने कुलमें नामीग्रामी हो, राज्यकी मदद रहे, दुश्मनोंको हरानेवाला हो, सबसें मुलाकात रखे, जितेंद्रियहो, खेंतीके काममे होशियारहो, बोलनेमें चतरहो,–

१० वालिद्की दौलत मिले, दुनियामे इज्जतहो, इल्मदारहो, नेंकीसें चले, राज्यकी तर्फसें हकुमत मिले, खूबसुरतहो, नसीबेदार हो, उमदा पुशाक पहने, सवारीका सुखहो, स्त्रीवल्लभहो, बडेबडे मकान बनावे,–

११ दौलतमंद हो, खूबसुरत हो, किसीका कर्जदार न हो, हमेशा फायदा होता रहे, साधुजनोंकी खिदमत करे, रहेमदिल हो, विद्वान् हो, शरीरसें तंदुरस्त हो, राज्यका अमलदार हो,–

१२ दुश्मन उससे डरते रहे, साफ दिलहो, अछे कामोंमें दौलत सर्फ करे, इश्कके फंदेमें जा पडे, अपने भाईयोंके कहनेमें चले इज्जतके लिये बदनका कपडाभी देदेवे, मांगनेवाले आवे उनकों नाराज न करे, और मुताबिक अपनी हेसियतके कुछभी चीज देवे,–

४७ [ तन्वादिभुवनस्थ गुरुफलं. ]

१ उमदा पुशाक पहने, खूबसुरत हो, अल्पवीर्यहो, चतर हो, परभवमें स्वर्गकी गतिपावे, एशआराममे दौलत खर्च करे, इल्मपढा हुवा हो, खुशनसीबहो, रहेमदिल हो, हमेशां परलोककी चिंता बनी रहे, दुनियामे इज्जत पावे, और पापकर्मसें बचता रहे,–

२ कवीश्वर हो, बोलनेमे चतर हो, मुखमें बीमारी रहे, अल्पवीर्य हो, खर्च ज्यादा रहे, दिलका दलेर हो, दुश्मनोंकों हठानेवाला हो, दुसरोंकों तालीम धर्मकी देवे,–

३ भाईयोंका सुखरहे, दौलत कममिले, अछे लोगोंकी सोबत करे, सुखी रहे, राज्यकी तर्फसें इज्जत पावे, जात बिरादरीमें नामी हो.–

४ उसके घर घोडे बधे रहे, हमेशा पुन्य धर्म करता रहे, दुश्मनभी ताबेदारी करे, दिलमे हरबातका फिक्र बना रहे, पुन्यात्मा हो,–

५ एशआराम करे, बोलनेमें चतर हो, उसकी दलिलको कोई रद करसके नही, लेखलिखनेमें होशियार हो, व्यापारमें फायदा कम मिले, औलादका सुख रहे, गुणवान् हो, अकलतेज हो, देवगुरुकी खिदमत करे,—

६ बीमारीकी शिकायत बनी रहे, दुश्मनोंकों हठानेवाला हो, गौ भैंसवगेरा जानवर घरमें बंधे रहे, मुल्कोंकी सफर करे, किये हुवे उपकारसे बेदरकार रहे,—

७ सोचसमजकर काम करे, दौलतमंद हो, हमेशां बेपरवाह बना रहे, किसीकी खुशामद न करे, अपने कुटुंबमें नामी हो, खूबसुरत हो, सच बोलनेवाला हो, देवगुरुकी खिदमत करे,—

८ अपने वालिदके घरमें न रहे, लंबी उम्र पावे, मुल्कोंकी सफर करे, शरीर तंदुरस्त रहे, परलोकमें स्वर्गगति पावे, दुसरोंसें ठगाय नही,—

९ राज्यसें इज्जत पावे, शुस्त हो; तरहतरहकी संपदा उसके पास बनीरहे, जहागीरदार हो, साधुजनोंकी खिदमत करे, भाईयोंसें बना रहे, धर्मपाबंद हो, सच बोलनेवाला हो, रहेमदिल हो, दुनियामें नामी हो,—

१० उसके घर धजापताका लगी रहे, प्रतापी हो,—राज महेलजैसे मकानमें रहे, अपने वालिदसे ज्यादा मशहूर हो, उसके घरसे बहुतोंका गुजर हो, राजासे इनाम पावे, देवगुरुकी खिदमत करनेवाला हो,—

११ दौलतमंद हो, पंडित हो, मातपिताकी सेवा करे, औलादका सुख हो, सवारीका सुख रहे, अछी औरत मिले, उमदा पुशाक पहने, और सुखचैनसें जींदगी तेर करे,—

१२ अछेकाममें दौलत सर्फ करे, धर्मात्मा हो, तीर्थोंकी जियारत करे, पापकर्मसें बचता रहे, शरीरमें एकतरहकी बीमारी बनी रहे, धर्मश्रद्धामें पाबंद हो, और परलोकमें अछी गति पावे,—

## ४८ [ तन्वादिभुवनस्थशुक्रफलं, ]

१ जिसके लग्नमें शुक्र बलवान् होकर बेठा हो निहायत खुबसुरत हो, अछे शख्शोकी संगत करे, उमदा औरत मीले, चालचलन अछी हो, एशआराम बहुत करे, इज्जत आबरु बनी रहे, इलमदार हो, मीठी जबान बोले, दोस्तसे दगा पावे.–

२ खुबसुरतरूप हो, अक्कल तेज हो, उमदा पुशाक पहने, कुटुंबका सुख हो, दौलतमंद हो, ऐशआराम करे, अछे लोगोंकी सोनतमें रहे, जवाहिरातसे फायदा हो, तदुरस्त बना रहे, दिलमें फिक्र रहे, जिससें कोई काम सुजे नही.–

३ औरतसे बने रहे, भाइयोंसे मेल रहे, फोजका अपसर हो, मगर दिलका दलेर न हो, धर्ममें खर्चकरना चाहे मगर अतराय आनपडे, दुश्मनभी तावेदारी करे, खूबसुरत और कमालेहुस्न हो.–

४ देवगुरुधर्मकी खिदमत करे, दुश्मन कदमकदमपर खडे रहे, मगर सामने हुवेबाद ताबेदारी करे, बेपरवाह हो, शिवाय देवगुरुधर्मके किसीकी परवाह न करे, नये मकान बनावे, दिलके इरादे पुरे होते रहे, माताकी खिदमत करे, सुखमें जीदगी तेर करे, अछे शख्शोंकी संगत करे.–

५ औलादका सुख रहे, दौलतमंद हो, मगर खर्च बहुत होता रहे, हमेशा सुखचैन भोगे, कवीश्वर हो, विना पढाये पंडित हो, किसीसे ठगाय नही.–

६ दुश्मन बडेबडे हो, मगर उनका जोर न चले, लडाईमें बहादूर हो, अछे कामोंमें दौलत सर्फकरे, उच कुलमे जन्म हो, गुणवान् हो, जहां हजार रुपये मिलनेकी उमेद हो, पाचसो मिले, दिलमें तरहतरहके इरादे होते रहे, अपने रिस्तेदारोंका गुजर करे, मगर वे लोग यश न देवे, संतान कम हो, अल्पायु हो.–

७ उमदा औरत मिले, और हुकममें चलनेवाली हो, एशआराम ज्यादा करे, औलाद अछी हो, मुल्कोंकी सफर करे, दुसरोंका काम

सुधार दे, मगर अपने काममें गाफिल रहे, खूबसुरत हो, इकवाल-मंद हो, मुवारक चहेरा हो, सच बोलनेवाला हो, दुनियामें उसकी तारीफ हो.–

८ उसके घर हाथी, घोडे, गौ, वेल, बने रहे, उम्र लंवी हो, सुखचैन भोगे, व्यापारमें फायदा हो, मगर कर्जदार बना रहे, नरमदिल हो, मुल्कोंकी सफर करे, तरहतरहके व्यसन हो, भाईका सुख नही, दुश्मन पीछे लगे रहे, देवगुरुधर्मपर कामील अतकात हो, व्रत नियम बनसके नही, सवारीका सुख रहे.–

९ पुन्यात्मा हो, धर्मकरनेवाला हो, दौलतमद हो, हुकम होदा मीले, नोकरचाकर बने रहे, अपनी इज्जतके लिये हजारां रुपये खर्च कर डाले, दुश्मनभी तावेदारी करे, औरतसे दिल खुश नही.

१० दौलत बहुत हो, औलादका सुख रहे, उसके घरका ख्वाब बहुत पडे, दिलमें फिक्र बना रहे, खूबसुरत हो, उसके इरादे पार पडते रहे.–

११ गुणवान् हो, खूबसुरत हो, मिलनसार हो, सच बोले, एशआराम करे, उम्र लंबी पावे, राज्यमें उसकी इज्जत हो, हुकम होदा बना रहे.–

१२ धर्ममें खर्च करे, कभी दौलत हो, कभी न हो, धर्मपर कामील एतकात हो, परलोकमें अछी गति पावे, आंखोंमे तकलीफ रहे, वहेस बहुत करे, शरीरसें कमताकात हो.–

४९ [ तन्वादिभुवनस्थशनिफलं, ]

१ शनि लग्नमें पडा हो, जरूर दौलतमंद हो, विना सौचे काम करे, पीछेसें रंज उठावे, दुश्मनको हठानेवाला हो, आंखोमें दर्द रहे, बुरे शख्शोकी संगत करे और तकलीफ पावे, हमेशां बीमारीकी शिकायत बनी रहे.–

२ कुटंबका सुख नही, मुल्कोंकी सफर करे, खानपानसें सुखी

रहे, सख्तजबान बोले, दौलत कम मिले, व्यसनी हो, दुबला पतला हो, दुश्मन बने रहे.–

३ भाइयोसें अनबनाव रहे, दौलत पैदा करनके लिये बडीबडी कोशिश करे, मगर फायदा न हो, एकदफे मरनेकी आफत आवे, मगर उससें बचजाय, अपनी बात पकी रखनेके लिये जिद बहुत करे, लंबी उम्र पावे, विद्वान् हो, खुशमिजाज हो, खूबसुरत हो.–

४ वालिदकी दौलत मीले नही, वालिद दौलत देवे तोभी लेवे नही, जातबिरादरीसे यश न मिले, बादीकी प्रकृतिवाला हो, सुख-चैन कम मिले, परदेशमे ज्यादा रहे, दुसरोंकी तावेदारी करे, भाइयोका सुख नही.–

५ संतानका सुख नही, दौलत कमी हो, कमी न हो, धर्मपर कामील एतकात नही, लिये हुवे व्रत नियम टुटजाय, तीर्थोंकी जियारत करे, दोस्तोंसें फायदा नही, कामके मारे फुरसत कम मीले, मकानसें द्रख्तसे या सवारीसे गिरजाय.–

६ हिम्मतबहादूर हो, राजासें या चौरोंसे डरे नही, लडाईमें जमामर्द हो, उसके घर घोडे बंधे रहे, मामाका सुख नही, जठराग्नि मंद हो, दुश्मन डरते रहे, मुकदमा जित जाय, खानपानसें सुखी रहे अकल तेज हो, धर्मपर कामील एतकात हो.–

७ औरत अछी न मिले, दोस्तसें दगा पावे, बीमारीकी शिकायत बनी रहे, शुस्ती ज्यादा रहे, दिलमें फिक्र बना रहे, ताकात कम हो, वडोंका कहना न सुने.–

८ सत्संग मिले नही, इष्टका वियोग रहे, दौलतका नाश हो, बीमार रहे, रुधिरविकारसें शरीरमे तकलीफ हो, रोटीदालसें सुखी रहे.–

९ दीक्षा उदय आवे, पापकर्ममें दिल न लगे, स्वरोदयज्ञानी हो, प्राणायाम करे, तामसीस्वभाव हो, भाइयोंसें तकलीफ हो, दुसरेके दुखसें दुखी हो, सुखचैन कम मिले.–

१० मातपिताका सुख नही, लडकपनमेंभी माताका दुध न मिले, अपनी भुजासें दौलत पैदा करे, राज्यकी तर्फसें हकुमत मीले, पीछली उम्रमें सुख पावे, धर्मात्मा हो, औरत अछी मिले, खर्च ज्यादा, आमदनी कम, दिल धर्मपर पावंद रहे, राजाओंकाभी पूजनीक हो, और प्रतापी हो.–

११ दौलतमंद हो, उम्र लंबी पावे, अकल तेज हो, तंदुरस्ति बनी रहे, औलादका सुख नही लडाइमें बहादूर हो, दुश्मन बने रहे, मगर उनसे फतेह पावे, दुनियामें इज्जत आवरु बनी रहे.–

१२ कम हिम्मत हो, आंखोकी रौशनी कम हो, परदेशमें खुश रहे, दुश्मनोंकों हठानेवाला हो, खर्च बहुत हो, दोस्तोंसें दगा पावे, शरीरसे तकलीफ पावे, सवारीसें गिरजाय, चोंट ऐसी लगे जिससे शरीरमें उसका निशान बना रहे.–



## ५० [ तन्वादिभुवनस्थराहुफलं, ]

१ दुश्मनोंसे फतेह पावे, एशआराम ज्यादा करे, इश्कके फंदेमें पडजाय, दौलत बरबाद करे, धूर्त्तोंसेंभी ठगाय नही, सीरमें तकलीफ रहे, चर्चामें फतेह पावे, मुकदमा जितजाय, शरीरमें एक-तरहकी बीमारी बनी रहे,–

२ रिस्तेदारोंसें अनबनाव रहे, हथियारका घाव लगे, जुठ बोलना न चाहे, मगर दुसरोंकी सोबतसे जुठ बोले, दिलका दलेर हो, किसीकी परवाह न रखे, सभामें भाषण देनेवाला हो, मुल्कोंकी सफर करे, सब बातसें होशियार हो,–

३ हिम्मतबहादूर हो, हाथीयोसें और शेरोंसे कुस्ती लडे, दुनि-यामें इज्जत बनी रहे, उमदा पुशाक पहने, बहुतलोग उसके हुकममें चले, दुश्मनभी ताबेदारी करे, दौलतमंद हो, गईहुई दौलत फिर मिले, भाईयोकी तकलीफ रहे, खुशमिजाज हो,–

४ माताकी तकलीफ रहे, शरीरमें बीमारीकी शिकायत बनी रहे, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, या कन्याका राहु हो तो राजाका दिवान हो, अमलदारी करे, बहुतलोग उसकी मुलाकातको चाहे, औलादका सुख नही, दिलमें हरतरहसे फिक्र बना रहे,—

५ औरतका सुख कम हो, दिल नाराज रहे, कभी शूलरोगकी बीमारी हो, जहा फायदेकी उमेद हो, वहां नुकशान आन पडे, औलाद कम हो, इल्म थोडा पढे, मगर अकलसें काम लेवें, दुश्मन लोग सतावे, मगर उनकी परवाह न करे,—

६ दुश्मनोंको हठानेवाला हो, अकलमंद हो, दौलतमंद और खुशनशीन हो, उसके बडेबडे दोस्त हो, शरीरमें वादीकी तकलीफ रहे, अनार्यलोंगोंकी संगत करे, मातुलपक्षका सुख नही, हाजिरजवान हो,—

७ औरतका वियोग रहे, और उसकी बीमारीमें हजारां रुपये खर्च करडाले, कुटुंबके लोगोंसे बने नही, दिलमें तरहतरहका फिक्र बना रहे, मुकदमा लडते जींदगी पुरी होजाय, सख्त मिजाज हो, मिलता हुवा फायदा लेसके नही, एकदफे मरनेकी आफत आवे, मगर उससे बच जाय.—

८ वालिदकी दौलत मीले नही, राजाओंसें पंडितोंसें इज्जत पावे, रिस्तेदारोंसें अनबनाव रहे, पेटमें कभी शूलरोगकी तकलीफ हो. कभी दौलत हो, कभी न हो, प्रमेह या बवाशीरकी तकलीफ रहे, विद्यासें इज्जत बढे, और मुल्कोंकी सफर करे,—

९ अकल तेज हो, अपने सद्गुणोसें दुनियामें इज्जत पावे, रहमदिल हो, देवगुरुकी खिदमत करे, धर्ममें कामील एतकात हो, व्रतनियम बने नही, अपने व्याख्यानोंसे सभाकों खुश करे, बडेबडे खेल तमाशे करना जाने, दुसरोंके उपकारको भुले नही, रिस्तेदारोंका गुजर करे, मगर वे लोग उससे खुश न रहे, एकदफे अचानक नुकशान आजाय मगर इज्जत बनी रहे,—

१० हमेशां अनार्यलोगोंसे फायदा हो, इश्कमें दौलत खर्चे, गाना सुननेमें उम्र पुरी हो, कामके मारे सोनेका वख्त न मिले, राज्यकी तर्फसें इल्काव मिले, पिताका सुख नही, मुल्कोंकी सफर करे, वडे वडे दोस्त हो,–

११ अनार्यलोगोंसें तिजारत करे, और फायदा उठावे, दौलत कमानेके लिये वडीवडी मुसाफरी करे, हरवख्त नोकर चाकर बने रहे, रोटीदालसें खुश रहे, धूर्त्तोंसेंभी ठगाय नही, राज्यकी तर्फसें मान मिले, उमदा पुशाक पहने, जो काम शुरु करे उसमें फतेहमंद हो,–

१२ आमदनी कम और खर्च ज्यादा, दौलत कमानेके लिये मुल्कोंकी सफर करे, बोलनेमें होशियार हो, जहां जावे मान पावे, बहुतलोग उसकी मुलाकातको आवे, तीर्थोंकी जियारत करे, और धर्मपर कामील एतकात हो,–

५१ [ तन्वादिभुवनस्थकेतुफलं, ]

१ भाइयोंसें तकलीफ पावे, दुश्मन लोग वहुत सतावे, दिलमें रंज बनारहे, औरत और वेटोंसें तकलीफ हो, दिलमें तरहतरहके इरादे होते रहे, मगर पार पडे नही, वातप्रकृति ज्यादा हो,–

२ राज्यकी तर्फसें कभी खोफ हो, आमदनी कम और खर्च ज्यादा, मुखमें बीमारी रहे, रिस्तेदारोंसें बने नही, सख्त जबान बोले, अगर मिथुन, कन्या, या वृश्चिकराशिका वेठाहो फायदेमंद हो–

३ इज्जत आवरू बनी रहे, दौलतमंद हो, दुश्मनोसें फतेह पावे, दोस्त दगा देजाय, शरीरमें एकतरहकी बीमारी बनी रहे,–मुकदमा जितजाय, मजहबी वहेसमें फतेह पावे, परलोककी चिंता बनीरहे,–

४ माताका सुख नही, पिताकी दौलत मिले नही. जन्मभूमिमें रहना पसंद नही, मुल्कोंकी सफर करे और फायदा उठावे. अगर धन मीन राशिका होकर वेठा हो तो फायदेमंद हो.–

५ औलाद कम हो, अपनी गलतीसे अपना फायदा गुमावे, पेटमें वातप्रकृति रहे, नोकरी करके गुजर करे, तकलीफके वख्तभी हिम्मत रखनेवाला हो.

६ सवारीका सुख रहे, दुश्मनोंकों शकिस्त देवे, दौलत कभी हो कभी न हो, मातुलपक्षका सुख नही, उसके घर घोडे बंधे रहे, शरीरसें तदुरस्त रहे.–

७ मुल्कोंकी सफर करे, कभी अचानक नुकशानसें उतरजाय, पानीसें तकलीफ पावे, सख्तमिजाजवाला हो, औरतका सुख नही, आमदनी कम और खर्च ज्यादा, अगर वृश्चिकराशिका होकर बेठा हो तो फायदेमंद हो.–

८ बवासीरकी बीमारी रहे, भंगदर रोग हो, कभी सवारीसें या मकानसें गिरजाय, दौलत कर्ज लेना पडे, रिस्तेदारोंसें अनबनाव रहे, अगर मेष, मिथुन, कन्या, और वृश्चिकका होकर बेठा हो तो फायदेमंद हो.–

९ भाइयोंसे अननाव रहे, लोकदिखानेका धर्म करे, और उसीसे उसकों यश न मिले, अनार्योंसे व्यापारमें फायदा हो, ओलाद जीवे नही.

१० पिताकी दौलत मिले नही, सवारीका सुख नही, तानै उम्र एकही दफे फायदा हो, अगर मेष, वृष, कन्या, और वृश्चिकका होकर बेठे तो दुश्मनोंसें फतेह पावे.–

११ नसीबेदार हो, खूबसुरत हो, अकलमंद हो, अछी पुशाक पहने, तरहतरहकी संपदा उसके पास बनी रहे, इल्म पढा हुवा हो, इकबालमंद हो, जातबिरादरीमें नामवरी हो, औलादका सुख नही, पेंटमे बीमारी रहे, हरवख्त दिलमे फिक्र बना रहे, मगर खानपानसें सुखी रहे.–

१२ हरवख्त राजाकी तरह सुख भोगता रहे, अछेकाममे दौलत सर्फ करे, शरीरमे बीमारीकी शिकायत बनी रहे, आखोंमे तकलीफ रहे, मातुलपक्षसे सुख नही, मगर दुश्मनोंसें फतेह पावे.–

## ५२ [ सामान्य-फलादेश, ]

१ लग्नेश धनेश लग्नमें पडे हो, तो वो दौलतमंद शख्श होगा, लग्नेश लग्नमें, धनेश धनमें, या लग्नेश धनेश धनभुवनमें–या–लग्नमे पडे हो तोभी उसके दौलत झलाझल होगी.–

२ चंद्र, बुध, बृहस्पति, और शुक्र ये चारों शुभग्रह जिसके केंद्रमें पडे हो, उसकों हमेशां फायदा होता रहे, सूर्य, मंगल, शनि, और राहु केतु, जिसके त्रिकोणमें बेठे हो उसकों हमेशां नुकशान होता रहे, जिसके कोईभी शुभग्रह उंच मित्रक्षेत्री या स्वगृही होकर लग्न या धनभुवनमें पडे हो उसकों फायदा जरुर होता रहे, जिसके धनभावमें कोई उंचका ग्रह पडा हो या ग्यारहमें भुवनमें उंचका कोई ग्रह हो, या जिसके बलिष्ठ चंद्रमा ग्यारहमें भावमें पडा हो, उसकों भी हमेशां फायदा होता रहे.–

३ लग्नेश लग्नमें पडा हो, लाभेश उदय हो, या अपने उंचस्थानकों जानेवाला हो, उसकोंभी हरतरहसे दौलत मिलती रहे, लाभ भुवनमें जिसके शुक्र, बृहस्पति, चंद्रमा, या उसका स्वामी खुद लाभेश पडा हो, उसको हमेशां फायदा होता रहे, दुसरोंकी दौलतका मालिक, बने, लग्नमें चौथे भुवनमे या पांचमें भुवनमें जिसके उंचके ग्रह पडे हो, और उसकों शुभग्रह देखते हो, या मीनका शुक्र होकर लाभभुवनमें पडा हो, उसको गाव नगर मुल्क इनाममे मिले.

४ सिंहलग्नमें लाभभुवन मिथुन आया, अगर उसमें चंद्रमा बेठा देखो तो कहो, उसकों फायदा कम होगा. सबब चंद्रमा बुधका निहायत दुश्मन है, लाभभुवनमे कोई उंच स्वगृही या मित्रक्षेत्री ग्रह उदित होकर पडाहो, और चंद्रमा उसको देखता हो, तो उसको हजारोका फायदा हो, लाभभुवन जिसके चरराशिका हो, और शुभग्रहकरके युक्त हो, या बलिष्ठचंद्रमा उसमें बेठा हो, उसकोंभी अमन चैन बना रहे, जहां कोई योग फायदेका न देखो, वहां देखलो, नवमें भुवनकों कोईभी शुभग्रह देखता है या नही! अगर देखता हो

तो जानलो! उसकों जरूर फायदा होतारहे, और त्रिकोणमें जिसके कोईभी ग्रह बेठेहो, उसकोंभी हमेशा फायदा होतारहे, बारोंभावों-मेंसें जिसजिस भावमे उंच, मित्रक्षेत्री या स्वगृही ग्रह बेठेहो, उसउस भावके जरीये उसकों सुख चैन और धनदौलत मिले,–

५ जिसजिस भावमें नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री ग्रह बेठेहो, उस-उस भावके जरीये उसकों हानि होतीरहे, सभीग्रहोंकी दृष्टि लग्नपर आतीहो, और लग्नेश उंच, मित्रक्षेत्री, या स्वगृही हो, ऐसे वख्तपर जन्माहुवा शख्श राजा बने, सभी ग्रह केंद्रमें पडेहो, लग्नेश उदय हो, और लग्नको देखताभी हो, ऐसे वख्तपर जन्माहुवा शख्श चक्रवर्त्ती राजाहो, आजकल चक्रवर्त्ती, वासुदेव, प्रतिवासुदेव वगेरा राजे नही रहे, अगले जमानेमें जब आलादर्जेकी तकदीरवाले बडेराजे होतेथे. तब तीर्थंकर चक्रवर्त्ती वगेरा खुशनसीब और ईकबालमंदराजे पैदा होतेथे,–

६ धनेश, तुर्येश, और भाग्येश, उदय हो, और तीनों मिलकर चौथे भुवनमें बेठे हो, ऐसे वख्तपर जन्माहुवा शख्श कोटीध्वज होगा, भाग्येश और चंद्रमाके बीचमें या लग्नेश और भाग्येशके बीचमें जिसके सभीग्रह पडे हो, ऐसे योगमे जन्मा हुवा शख्श हमेशा आरामचैन करे, लग्नमें बृहस्पति और राहु, चौथेभुवनमे शुक्र, सातमे भुवनमे चंद्रमा, और दशमे भुवनमें सूर्य जिसके पडे हो, बडा नसीबेदार शख्श हो, लग्नमें बृहस्पति, चतुर्थस्थानमें चंद्रमा, आठमे शुक्र और दशमे स्थानमें सूर्य स्वगृही या मित्रक्षेत्री होकर पडा हो, ता-वेउम्र उसकों सुख चैन बना रहे, और इज्जतमें कभी कलंक न लगे,–

७ लग्नेश वृषभके नवांशमें उदय हो, और भाग्येश भाग्यको देखता हो, ऐसेवख्तपर जन्मा हुवा शख्श हमेशां एशआराम भोगे, लग्नेश वृषभके नवांशमे उदय हो, अपने उंच स्थानकों जानेवाला हो, और लग्नकों देखताभी हो ऐसे वख्तपर जन्मा हुवा शख्श दौलत-मंद बना रहे, चतुर्थभुवनमें जितने शुभग्रह पडे हो, अच्छा जानो,

अगर दुसरे शुभग्रह उसकों देखते हो तो औरभी अछा हो, नवमेश दशमेशका किसीतरहका संबंध हो वो शख्श जरूर राज्ययोग भोगे,–

८ लग्नके या लग्नेशके दुसरे बारहमें सूर्य या चंद्रमा पडे हो तो तोरण-योग हुवा, यह योग निहायत उमदा है, हरतरहसे फायदा पहुंचावे, संजीविनी विद्या शुक्रके ताल्लुक है, बृहस्पतिके नही, इसलिये बृहस्पतिसे शुक्र बलवान् कहा गया, जिसके शुक्र स्वगृही होकर चाहे जिसभुवनमें बेठा हो, निहायत फायदेमंद होगा, एश आराम ज्यादा भोगे, औरतका उसको सुख रहे, और धर्मपर साबीतकदम हो,–

९ बृहस्पति जिसके स्वगृही होकर चाहे जिसभुवनमें बेठा हो, निहायत उमदा है, देवगुरुकी भक्ति उसके दिलमें बनी रहे, और बदौलत उसके आराम चैन मिलता रहे, जिसशख्शकी जो जन्मराशिहो, उसराशिका स्वामी जब जब उंच या सुदीप्त हो, तब तब उसकों जरूर फायदा मिले, जिसभावमें लग्नेश बेठा हो, उसभावका स्वामी जब जब उसको पूर्णदृष्टिसे देखे तब तब उसकों जरूर फायदा होगा, जिसराशिका स्वामी और धनभावका स्वामी लग्नमें, धनभावमें, या त्रिकोणमें पडा हो या स्वापसमे देखते हो उसकोभी हमेशा फायदा होता रहे,–

१० जिसके लग्नेश लग्नमें पडा हो, उसकी औरत उसके कहनेमें चले, जिसका लग्नेश सप्तमभावमें पडा हो, वो खुद अपनी औरतके कहनेमें चले, जिसका लग्नेश सप्तममें और सप्तमेशभी सप्तममें पडा हो, उसका और उसकी औरतका बडाप्रेम रहे, सप्तमेश लग्नमें और लग्नेश सप्तमे पडा हो, तोभी निहायत उमदा प्रेम रहे, लग्नेश सप्तमेश लग्नमें या सप्तमेश लग्नेश सप्तममे पडा हो, तोभी दोनोंमें उमदा प्रेम रहे, जिसके सप्तमभावमें उंचका ग्रह बेठा हो, उसको निहायत उमदा औरत मिले, जिसके सप्तमभावमें चंद्र, बुद्ध, गुरु, या शुक्र इनमेंसें कोईभी ग्रह उंचका होकर पडा हो, उसकोंभी खूबसुरत औरत मीले, चाहे खुद गरीबी हालतमें हो.–

११ जिसके सप्तमभावमें राहु पडा हो, उसकों औरतका सुख नही, विवाह होते ही मरजाय, जीती रहे तो तकलीफ रहे, जिसके सप्तमभावमें या चतुर्थभावमें सूर्य मंगल, शनि, राहु, या केतु इनमेंसें कोईभी ग्रह पडा हो, और शुक्र नीच, अस्त, शत्रुक्षेत्री होकर चाहे जहा बेठा हो, उसकों न विवाही हुई, न रखी हुई कोईभी औरत न हो, जिसके सप्तमभाव या चतुर्थभावमे शुभ या उचका ग्रह पडा हो, उसकों घरकी ओर पराई दोनोंतरहकी औरतोंसें सुख रहे, जिसके गुरु, शुक्र, चंद्र, या बुध, ये चारोशुभग्रह मित्रक्षेत्री होकर चाहे जहा पडे हो, उसको निहायत खूबसुरत औरत मिले, जिसके ये चारोंग्रह शत्रुक्षेत्री हो, उसको पराई औरतसें स्नेह, और अपनी औरतसें लडाई रहे.–

१२ जिसके सप्तमभावमें सूर्य, मंगल, शनि, राहु, या केतु, इनमेसें कोईभी क्रूरग्रह पडा हो, और चतुर्थस्थानमें गुरु, शुक्र, चंद्र, या बुध, इनमेसें कोई शुभग्रह पडा हो, उसकों अपनी विवाही हुई और रखी हुई दोनों तरहकी औरतसें सुख रहे, हजारा रुपये एशआराममें सर्फ करे, चंद्रमासें या लग्नसें सातमे सूर्य हो, तो उसकों अछी औरत न मिले, मंगल हो तो मिजाजवाली औरत मिले, बुध हो तो बदचलन औरत मिले, बृहस्पति हो तो नेंकचलन मिले, शुक्र हो तो उसपर शौक आवे, और शनि हो तो वंध्या औरत मिले, सप्तमभावमें जिसके गुरु या शुक्र पडे हो, उसकों निहायत उमदा औरत मिले, सप्तमभावमें क्रूर ग्रह पडना बुरा और शुभग्रह पडना अछा है.–

१३ [ बयान औरतोंके जन्मग्रहोंका, ]

कर्क लग्नमें जन्मीहुई औरत एशआराम ज्यादा भोगे, जिसके लग्नमे राहु, मंगल, या सूर्य एकशाथ पडे हो, वो जल्दी विधवा होजाय, जिसके अकेला राहु, मंगल, या सूर्य पडा हो, वो कुछ-

दिनवाद विधवा हो, जिसके धनभुवनमें शुक्र पडा हो वो गुप्त व्यभिचार करे, मगर जाहिरातमें सती कहलावे, जिसके सप्तमभावमें सूर्य, मंगल, या शनि पडा हो, और शुक्र उसकों देखता हो वो अपने पतिकों छोडकर चलीजाय, और घरघर डोलती फिरे.—

१४ जिसके सप्तमभावमें मंगल, नीचका होकर पडा हो, या शनि अस्तहोकर बेठा हो, राहुभी उसमें सामील हो, वो तावेउम्र विवाह न करे और अपने मिजाजमें बनी रहे, जिसके सप्तमभावमें एक क्रूरग्रह पडा हो उसकों अपने पतिसें हमेशां लडाई रहे, जिसके चारों क्रूरग्रह सूर्य, मंगल, शनि, राहु, एकशाथ पडे हो, फिर तो कहनाही क्या ? बातबातमें लडाई हो, और अपनेपतिकों छोडकर दुसरेसें दोस्ती करे, जिसके सप्तमभावमें कोई शुभग्रह अपने न वांशका होकर पडा हो, वो हमेशां एशआराममें मस्त रहे.—

१५ जिसके मेष, सिंह, वृश्चिक, मकर, और कुंभ ये लग्न हो, और लग्नेश लग्नको न देखता हो, वो अपने घरवालोंसें हमेशां लडती रहे, और जिद चलावे, जिसके कर्क राशिका मंगल हो, फिर तो कहनाही क्या ? एकदिनभी विदुन लडाईके चैन नही, जिसके बृहस्पति और शुक्र शत्रुक्षेत्री हो, और लग्नमें चारों क्रूरग्रहोंमेंसें एक या दो पडे हो, ऐसे लग्नमें जन्मी हुई विपकन्या जानना, जिसके आठमें बारहमें मंगल या कोईभी क्रूरग्रह पडा हो, और लग्नमें राहु हो, वो जल्दी विधवा होजाय, भोगांतराय कर्मका उदय उसको सख्त जानना, जिसके लग्नमें मंगल सूर्य और शनि एकशाथ पडे हो, वो हमेशां तकलीफ भोगे, कोई दिन उसकों चैनका न गुजरे, शुभग्रह जिसके स्वक्षेत्री या उंचके हो, या उंचके नवांशमें हो, वो हमेशां एशआराम भोगे, और उमदा महेलपर फुलोंकी शय्यामें सोवे.—

१६ शनि जिसके तिसरे, आठमें, या ग्यारहमें बेठा हो, तो आप

दुसरोंकी गोंद जावे, या दुसरेकों अपनी गोंद लेवे, मंगल जिसके दुसरे, दशमें, या ग्यारहमें बेठा हो, तो उसकी औलाद जीवे नही.

सुतपे शत्रुक्षेत्रेच दृष्टे क्रूरेथ वापि च,
शत्रुक्षेत्रे यदा जीवः संततिर्म्रियते ध्रुवं, १

(अर्थः)–पांचमें भावका स्वामी जिसके शत्रुक्षेत्री हो, या उसकों कोई क्रूरग्रह देखता हो, या बृहस्पति जिसके शत्रुक्षेत्री हो उसकी औलाद जीवे नही,–

१७ [ दोषकृन्नहि सर्वत्र स्वोच्चस्वर्क्षगतो ग्रहः ]

(अर्थः)–उंच या स्वक्षेत्री होकर कोईभी ग्रह चाहे जहां बेठा हो, वो बुराफल न देगा, अछा फल देगा, जब जब चंद्रमा, या सूर्य, उंच, स्वक्षेत्री, या मित्रक्षेत्री हो तो पूर्णफल देयगे, नीच, शत्रुक्षेत्री या अस्तके हो तो कमफल देयगें, यह बात सबग्रहोंपर जानना, वक्र हो तो दुगुना फल करे, मगर वक्रगे दक्षिणा दृष्टिः यह बातभी खयालमें रखना, त्रैलोक्य दीपक (यानी) सर्वतोभद्र चक्रमें देखना, जहां बेठा हो, वहांसे दाहनेहाथतर्फ उसकी दृष्टिपडे ऐसा जानना,–

१८ त्रिभिः स्वक्षेत्रजैर्मंत्री त्रिभिरुच्चैर्नराधिपः
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासः त्रिभिरस्तमितैर्जडः, १

(अर्थः)–तीनग्रह जिसके उंचके पडे हो, वो राजाधिराज बने, तीनग्रह जिसके स्वक्षेत्री हो वो दिवान हो, तीनग्रह जिसके नीचके पडे हो, वो नोकरीकरके गुजरान चलावे, और तीनग्रह जिसके अस्त हो, उसकी बुद्धि जड हो,–

चंद्रलग्नाधिपौ यत्र, तत्रिकोणमथापि वा,
तत्सप्तमं त्रिकोणं वा, लग्नं भवति निश्चितं, १

(अर्थः)–चंद्रमा और लग्नका स्वामी, जिसजगह हो, उससें पहेला, नवमा, पांचमा, अथवा सातमा त्रिकोण आवे, वही लग्न सच्चा होता है,–

तीर्थंकर महावीरके जन्मग्रह,



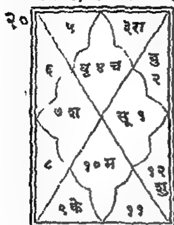

इसमें केंद्र और त्रिकोणमें सबग्रह आगये, सूर्य, मंगल, बृहस्पति, और शनि उंचके है, दुसरे ग्रंथमें शुक्रमीनका और राहुमिथुनका लिखा, यह योगभी उमदा है, लग्नेश शनि दसमें और चंद्रमा नवमें ये योग पूर्णयोगीराजके है,–

राजा युधिष्ठिरके जन्मग्रह,




इसमें उंचका सूर्य बलवान् होकर तिसरे बेठा है, नवमें और दसमे भावके मालिक उचके है, दुसरे भावका स्वामी गुरु चंद्रके साथ सातमे है, इनको राजयोग हुवा, मगर पूरा राजयोग नही था, इसलिये वनवास जाना पडा,–

रामचंद्रजीके जन्मग्रह,



इसमें चारों केंद्र उच्चग्रहोंसे भरेहै, नवमे भुवनमें शुक्र उच्चका है, सप्तममें मंगल पडाहै, नवमेश-दशमेशका दृष्टसंबंध है इसलिये पूर्ण राजयोग हुवा,

कृष्णजीके जन्मग्रह,



इसमें बृहस्पति बु शनि और मंगल उच्चके चंद्र सूर्य स्वगृही है. नवमे दशमेश शनि शत्रुभुव पडे है, ये ग्रह दुश्मनों शकिस्त देनेवाले अ राजयोगवाले है,

२१ [ इष्ट निकालनेकी तरकीब,]

यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्टे, घट्यादिकं स्वेष्टघटीयुतं तत्
तत्तुल्यघट्यादि भवेद्धि यत्र, तत्तिर्यगूर्द्ध्वांकमितं हि लग्नं

(अर्थः)-जिसराशिका सूर्य हो उस राशिके घटी आदिमे घटीकों मिलना, फिर सारिणीमें देखना, जिसकोठेमे वो अंक मि अथवा उससे कमअंक मिले, उससे बायीतर्फ लग्नकी राशि जा और उपरकीतर्फ अंश जानो, लग्नके बलकों विना देखे, कोई करना बहेत्तर नही, ऐसा नजुमशास्त्रका फरमान है.-

२२ ग्रहचार, राजयोग, दीक्षायोग, ग्रहोंके चारसें चीजें तेजीमंदी वगेरावाते नजुमपढनेसें मालुम होसकती है, जन्मप

उंचके हो, और उनमेंसें एकग्रह लग्नमें पडा हो तो राजयोग होसके, अगर इनमेंसें दो या एकग्रह उंचके हो, चंद्रमा स्वगृही हो, और उनमेसें एक कोई ग्रह लग्नमें पडा हो, तोभी राजयोग होसके, पांच या छह ग्रह अगर उंचराशिके स्वगृही या त्रिकोण राशिके हो, तोभी राजयोग बनसके, सूर्य सिंहका, चंद्रमा वृषभका, मंगल मेषका, बुध कन्याका, बृहस्पति धनका, शुक्र तुलाका, और शनि कुंभका, ये ग्रहोंके त्रिकोणभुवन है, और इनके अंशोंकीभी गिनती है.

## २३ [ संवत्का वरतारानिकालनेकी तरकीब ]

१ चैतसुदी एकमके रौज जो वार हो, वो वर्सका राजा, और मेषसंक्रातिके रौज जो वार हो, वो वर्सका दिवान होता है, राजा और दिवान, सोम, बुध, गुरु, या शुक्र हो, तो अछा और रवि, मंगल, शनि हो तो बुरा जानना,

२ आर्द्रानक्षत्रपर सूर्य आवे उसरौज, ज्येष्ठसुदी एकमके रौज, आषाढ महिनेकी रोहिणी नक्षत्रकेरौज और दीवालीके रौज, सोम, बुध, गुरु, या शुक्रवार हो, तो घरघर आनंद मंगल हो,–

३ जिस वर्समें (३५५) दिन हो वो वर्स अछा, (३५४) दिन हो वो बुरा समजना, जिस वर्समें बारां संक्रांतिके मुहूर्त्तोंकी संख्या (३६०) हो तो अछा और कमहो तो बुरा है, सालभरकी सब पुनमकी घडियां और सब अमावास्याकी घडियां जोडना, अगर अमावास्याकी घडियां पुनमकी घडियोंसें वढजाय तो बुरा और अमावास्याकी घडियोंसे पुनमकी घडियां वढजाय तो संवत् अछा है, ऐसा जानना,–

४ जिससाल अक्षयतृतीयाके रौज रोहिणीनक्षत्र न हो, पौषमहिनेकी अमावास्याके रौज मूलनक्षत्र न हो, श्रावणसुदी पुनमके रौज श्रवणनक्षत्र न हो, और कार्तिक सुदी पुनमके रौज कृत्तिकानक्षत्र न हो, तो दुष्काल पडे ये चार तिथि वर्सके चारस्तंभ है,–

५ जिससाल आषाढसुदीमें बुधका उदय हो, और श्रावणमहिनेमें शुक्रका अस्त हो, तो जमाना बिगडे, और दुष्काल पडे,–

६ जिससाल चौमासेके दिनोंमें कर्क, कन्या, मकर, और मीन-

राशिपर शुभग्रह हो तो उस साल वारीश अछी हो, अगर क्रूरग्रह हो तो वारीश कम हो. आषाढ श्रावणमे कर्क, और भादवे आसोजमें कन्यापर बुध, शुक्र आतेही है. मगर जब शनि, राहु, या केतु आजाय तो वारीश रूक जाती है,—

७ शुक्रस्यास्तमने वृष्टिरुदये च वृहस्पतौ,
चलितांगारके वृष्टिस्त्रिधावृष्टिः शनैश्चरे, १

(अर्थः)— चौमासेके दिनोंमें जब शुक्र अस्त हो, वृहस्पति उदय हो, मंगल जब राशिको छोडे, या शनि उदय अस्त मार्गी या वक्री हो, उसरोज वारीश जरूर हो.—

८ चंड, प्रचंड, दहन, सौम्य, जल, नीर, और अमृत, ये सात नाडी ज्योतिषशास्त्रमे बयान फरमाई, उसका चक्र नीचे दिया जाता है, देखलो!—

[ सप्तनाडीचक्रं, ]

चंड, प्रचंड, दहन, सौम्य, जल, नीर, अमृत,
कृ, रो, मृ, आ, पु, पु, अ,

चंड, भ, प्रचंड, अ, दहन, रे, सौम्य, उ, जल, श्र, नीर, श, अमृत, ध,

इस सप्तनाडीचक्रको समजना चाहिये, जिससे वारीशका ज्ञान हो,

९ चौमासेके दिनोंमें आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, और हस्त, इनइन नक्षत्रोंपर चौमासेमें सूर्य आता है. और इन नक्षत्रोंकी नाडी, सौम्य, जल, नीर, अमृत, और फिर अमृत, नीर, जल, और सौम्य है, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु वगेरा ग्रहभी इन नक्षत्रोंपर अनुक्रमसे सफर करते हैं, चौमासेके दिनोंमें जब जब सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, सौम्य, जल, नीर, और अमृत नाडीयोंपर आवे, तब वारीश अछी हो, चौमासेके चारमहिनोंमें जिस नक्षत्रपर राहु हो, उसपर जिस जिस रौज चंद्रमा आवे, उसउस रौज वारीश हो.-

१० एकनाडीसमायातौ चंद्रमाधरणीसुतौ.
यदि तत्र भवेद्जीवः करोत्येकार्णवां महीं, १

(अर्थः)-चौमासेके दिनोंमें जबजब चंद्रमा और मंगल एक नाडीपर आवे, उसउस रौज वारीश जरूर हो, अगर उसमें बृहस्पतिभी सामील हो, तो उसरौज दुनियाके तीनहिस्से गांव नगरोंमें वडी वारीश हो, समरसारग्रंथमें लिखा है, मंगल वक्र हो तो बुरा है, मगर जैननजुमग्रंथ त्रैलोक्यप्रकाशमें लिखा है, मंगल वक्र हो तो अछा है, सुकाल होगा,-

११ बुधः शुक्रः समीपस्थः करोत्येकार्णवां महीं,
तयोरंतर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत् १,

(अर्थः)-बुध शुक्र चौमासेके दिनोंमें एकसाथ हो तो वारीश खूब हो, और अगर इनदिनोंमें इनकेबीच सूर्य आजाय तो वारीशकी खेंच रहे,-

१२ चित्रास्वातीविशाखासु यस्मिन्मासे न वर्षणं,
तन्मासे निर्जला मेघा इति भद्रमुनेर्वचः १

(अर्थः)-ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, और भाद्रपद महिनेमें दिन नक्षत्र जबजब चित्रा, स्वाती, विशाखा, आवे, उन तीन दिनोंमें

वादल, विजली, बुंदपात या वर्सा न हो, तो उसउस महिनेमें वारीश कम हो, और अगर वादल, विजली, बुंदपात, या वर्सा हो तो उस उस महिनेमे वारीश अछी हो, ऐसा भद्रमुनिका फरमान है,–

१३ जबजब बुधशुक्रका मिलाप हो, या गुरुशुक्रका मिलाप हो या बुधगुरुका मिलाप हो, उस अर्सेमें जमाना अछा रहे,–

१४ जब सूर्य कृत्तिका नक्षत्रपर आवे और जितने दिनतक रहे, उनदिनोंमें वादल, विजली, बुंदपात, या वारीश हो, तो अछा है, चौमासेके दिनोंमे वारीश अछी होगी, अगर कृत्तिकाके सूर्यमें वादल, विजली, बुंदपात या वर्सा न हो, तो चौमासेके दिनोंमे वारीश अछी न होगी, ऐसा जानना,–

१५ जबजब शुक्र वक्र हो, दुनिया चैन करे, बुध वक्र हो तो दुनियामें महोदय हो, शनि वक्र हो तो बीमारी चले, और मगल वक्र हो तो सुकाल रहे, अगर चंड, प्रचंड, दहन नाडीपर वक्र हो तोभी कोई हर्ज नही, मगर मंगलका वक्र होना अछा है,–

१६ जिससाल सभी संक्रांति (४५) मुहूर्त्तकी होजाय तो वो साल निहायत उमदा होगी, जिससाल धनसंक्राति ( ४५ ) मुहूर्त्तकी हो तो अछा, (३०) मुहूर्त्तकी हो तो मध्यम, और (१५) मुहूर्त्तकी हो तो अछा नही.–

१७ जिससाल अगस्तिनामका सितारा चंद्र शुक्रके होरेमें रातके-वख्त उदय हो तो अछा है.–

१८ धन या मीनराशिपर मंगल, शनि, और राहु इकठे होकर आवे तो अछा नही, मंगल, शनि, या राहु अगर रोहिणिशकटकों वेधे तो निहायत बुरा है.–

१९ शुक्र अगर शुक्ल पक्षमे अस्त होकर शुक्ल पक्षमेंही, उदय हो तो निहायत बुरा है, राजा प्रजाकों तकलीफ होगी, शुक्र जब पश्चिममे अस्त होकर पूर्वमें उदय हो तो अंदाज आठ रौज लगे, और पूर्वमे अस्त होकर पश्चिममे उदय हो तो अंदाज अढाई महिने लगे.

२० जबतक मीनराशिपर शनि, कर्कपर बृहस्पति, और तुलापर मंगल रहे, दुनियामें तकलीफ पेंश हो.–

२१ जबजब सातग्रह एकराशिपर आवे और बहुत अर्सेतक रहे तो दुनियामें गदर मचे, मगर राहु या शनि उसमें सामील न हो तो कुछ हर्ज नही, सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति और शनि एकराशिपर आवे राजाप्रजामें तकलीफ रहे.–

२२ शनि या मंगल हस्त, मघा, रेवती, या आर्द्रापर वक्र हो, दुनियामें दगे फिसाद हो, एकराशिपर शुक्र शनि अस्त हो तो दुनिया तकलीफ पावे.–

२३ आर्द्रा नक्षत्रपर जब सूर्य आवे, उसवख्त वृषलग्न हो, और बुध शाथ हो तो अछा है, सुकाल रहेगा, आर्द्राप्रवेशके रोज जो वार हो, वो मेघाधिपति, और कर्कसंक्रांतिके रोज जो वार हो, वो शस्याधिपति होता है.–

२४ चंद्रसंवत्सरके ( ३५४ ) दिन, और सूर्यसंवत्सरके ( ३६५ ) दिन होते हैं.–

२५ श्रावण महिनेकी अमावास्याके रोज अगर सूर्यग्रहण हो तो वाद तीनमहिनेके बीमारी चले, और दुष्काल पडे, यह योग संवत् ( १९२५ ) मे था, उस असेंमे वैसाही हुवा था.–

२६ श्रवणनक्षत्रपर जबजब क्रूर ग्रह आवे अनाज महँघा बीके, राहु शनि एकराशिपर आवे तबभी अनाजके भाव तेज हो, मिथुनराशिपर जबजब शनि या राहु आवे जमानेका रग विगडा रहे, इसीतरह चाहे जिस राशिपर ये द्रो ग्रह शाथ आजाय जमानेका रग ठीक न रहे.–

२७ हरसाल जेठसुदी ग्यारस, वारस तेरसके रोज बहुतकरके दिननक्षत्र चित्रा, स्वाती, विशाखा, होते है, इनदिनोमें वदल, विजली, और वारीशकी हिलचाल न हो तो चोमासेमें वारीश न होगी, और अगर इनदिनोमे वदल, विजली, या वारीशकी हिलचाल

ो तो चौमासेमें अछी वारीश होगी, और सुकाल रहेगा, मजकुर
ात जेठसुदी ग्यारस, वारस, और तेरसके रोज देखना चाहिये.-

२८ जब सूर्य अगली राशिपर और शुक्र पिछली राशिपर हो,
रमयान उसके चंद्रमा आजाय तो उतने अर्सेतक अनाज सस्ता
ीके, शुक्र शनि जब एकराशिपर हो और उनके पिछे बुध आजाय
वभी अनाज सस्ता वीके, और रियाया चैन करे.-

२९ मंगल शुक्र जब एकसाथ होकर तुलाराशिपर आवे तो
ाजाओंमे लडाई रहे, रेवती या भरणीनक्षत्रपर जबजब शनि,
ाहु, या मंगल आवे अनाजके भाव तेज रहे, मकरसंक्रांति शुभचारी
ो तो अछा, अशुभचारी हो तो अछा नही.-

३० नक्षत्रसंवत् नक्षत्रसे बदले, रितुसवत् रितुसे बदले, चंद्रसं-
त् पौर्णिमासें, सूर्यसंवत् सूर्यसक्रांतिसें और अभिवर्द्धितसंवत् तेरह-
ाहिनेसें बदलता है, मगर जैनशास्त्र कल्पसूत्रका फरमान है अधिक
ाहिना व्रतनियमकी अपेक्षा गिनतीमें नही लेना.-

३१ जिसजिस महिनेके शुक्लपक्षमे तिथि बढजाय तो अछा है,
ुखचैन रहे.-

३२ जिस वर्समें आर्द्रा नक्षत्रपर सूर्य रातकेवख्त आवे तो अछा
देनमें आवे तो अछा नही, आर्द्रानक्षत्रसे लेकर हस्तनक्षत्रपर जब-
ाक सूर्य रहे, वारीशके दिन है, और उनदिनोंमे सूर्य सौम्य, जल,
ीर और अमृत नाडीपरही सफर करता है, पेस्तर नाडीचक्रमे
लेखागया है, देखलो!

३३ चित्रा, अनुराधा, ज्येष्ठा, कृत्तिका, रोहिणी, मघा, मृगशिरा,
ूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, या विशाखा, इनइन नक्षत्रोंकी उत्त-
में होकर जबजब चद्रमा चले, उससाल वारीश अछी हो, और
ुकाल रहे, अगर इनइन नक्षत्रोंकी दखनमें होकर चंद्र चले तो
उससाल वारीश अछी न हो, और दुष्काल पडे, यह योग आसा-
नमे देखनेका है, जो महाशय! ज्योतिषचक्रकों आसमानमें देखन

जानते होगें बखूबी देख सकेगें, जिस वर्समें दुमदार सितारा दिखाई दे तो लोगोंको तकलीफकी निशानी है.—

३४ चौमासेके दिनोंमें जबजब बुध, शुक्र, सिंहराशिपर आवे, और उस अर्सेमें चंद्रमाभी सिंहराशिपर आजाय तो उन दिनोंमे बारीश अछी होगी, बुध, शुक्र, या मंगल, एकशाथ या अलग अलग जबजब आश्लेषानक्षत्रपर आवे दुनिया आराम चैन करे, उसवख्त ये तीनोंग्रह अमृतनाडीपर रहते हैं.

३५—शुक्रास्ते भाद्रमासे, शुभभगणगते, वाक्पतौ सौस्थ्यहेतौ, ज्येष्ठाद्याहे सुवारे, शशिसितभगणेषूदिते निश्यगस्त्ये, क्रूरे भूपादिवर्गे, विघटिनिसमये, मंगले वक्रितेपि, चापाढ्याः पूर्वधिष्ण्ये, प्रहरवसुगते, जायते दिव्यकालः १

[ इति त्रैलोक्यप्रकाशः ]

इसकाव्यका मतलब मजकुर लेखमें उपर लिखागया है, इसलिये ये यहां नही लिखा.—

३६—राहुकेतू सदावक्रौ, शीघ्रगौ चंद्रभास्करौ,
गतेरेकस्वभावत्वा, त्तेषां दृष्टित्रयं सदा, १
वक्रगे दक्षिणादृष्टि-र्वामादृष्टिश्च शिघ्रगे,
मध्यचारे तथा मध्या, ज्ञेया भौमादिपंचके, २
स्वक्षेत्रस्थे बलं पूर्ण-पादोनं मित्रभे गृहे,
अर्द्धं समगृहे ज्ञेयं-पादं शत्रुगृहे स्थिते, ३
ग्रहाः क्रूरास्तथा सौम्या-वक्रमार्गोचनीचगाः
स्थानं च वेध्यमित्येवं-बलं ज्ञात्वा फलं वदेत्, ४
वक्रग्रहे फलं द्विघ्नं, त्रिगुणं स्वोचसंस्थिते,
स्वभावजं फलं शीघ्रे-नीचस्थोर्द्धफलप्रदः ५

(अर्थः)—राहु—केतु—हमेशां वक्र चलते है, और चांदसूर्य हमेशां शीघ्र चलते है, इनकी दृष्टि हमेशां तीनोंतर्फ रहती है, मगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इन पांचग्रहोंकी दृष्टि जब ये वक्रगतिसें चले

तव दक्षिणतर्फ, शीघ्रगतिसें चले तो वायीतर्फ, और मध्यगतिसे चले तो मध्यमें रहती है, सव ग्रह जवजव स्वक्षेत्री हो तो पूर्ण फल करते है, मित्रक्षेत्री हो तो बारांआने, सम हो तो आधा फल देते है, और शत्रुक्षेत्री हो तो चतुर्थांश फल देते है, चाहे क्रूर ग्रह हो या सौम्य हो, चाहे वक्र हो या मार्गी हो, उच्च हो या नीच हो, स्थान और बल देखकर उनका फल कहनाचाहिये, जन ग्रह वक्री हो तो दुगुना फल करे, उंच या स्वक्षेत्री हो तो तीनगुणा फल करे, शीघ्रगति हो तो मामुली फल करे, और नीचस्थानमें हो तो आधा फल करे.–

३७–न नंदति विवाहे च, यात्रायां न निवर्त्तते,
न रोगान्मुच्यते रोगी, वेधवेलाकृतोद्यमः १
तिथिं ऋक्षं स्वरं राशिं, वर्णं चैव तु पंचमं,
यद्दिने विध्यते चंद्रः तद्दिने स्यात् शुभाशुभं, २
ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि, क्रूरभुक्तादिकानि च,
भुक्त्वा चंद्रेण मुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते, ३

(अर्थः)–जन ग्रहोंका वेध हो, उसवख्त किसी कामकी शुरुआत किईगई हो तो उसमें फतेह न होगी, विवाहकी शुरुआत किईगई हो तो उसमे विघ्न आनपडे, मुल्कोकी सफर करना शुरु किई हो तो उसमें फायदा न पहुंचे, वेधके वख्त बीमारी पैदा हुई तो मरणांत कष्ट हो, जिसरोज चद्रमा जिस तिथिकों वेधे जिस नक्षत्रको वेधे जिस स्वरकों जिस राशिकों और जिस अक्षरकों वेधे, उसको त्रैलोक्यदीपक (सर्वतोभद्र) चक्रमे देखकर शुभाशुभ फल बतलाना चाहिये, क्रूरग्रहोंसें जो जो नक्षत्र वेधित हो, जिसजिस नक्षत्रपर क्रूरग्रह बेठे हो, अगर उसपर चंद्रमा आकर चलाजाय तो वे नक्षत्र शुभ हो जाते है.

३८–अकालेपि फलं पुष्पं, वृक्षाणां यत्र जायते,
स्वजातिमांसभुक्तिश्च, दुर्भिक्षं तत्र रौरवं, १

परचक्रागमस्तत्र, विग्रहश्च स्वराज्यके,
ऋतोर्विपर्ययो यत्र, दुर्भिक्षं मंडले भवेत्, २
भूमिकंपो रजःपातो, रक्तवृष्टिश्च जायते,
देशे सर्वसुखोपेते, वेध्यादेवं वदेत् बुधः, ३
वृक्षाणां जायते वृद्धिः स्वकाले फलपुष्पयोः
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं, प्रजानां तत्र जायते, ४
स्वचक्रं परचक्रं च न कदाचित् प्रजायते,
बांधवाः सुहृदस्तत्र शुभानां वेधसंभवे, ५

(अर्थः)-जिसमुल्कमे द्रख्तोंपर अकाले फल फूल आजाय. पशुपक्षी स्वजातका मांस खानेपर आमादा हो, उसमुल्कमे दुष्काल पडे, जिसमुल्कमें दुसरोंकी फौज चढआवे, और अपनी रियाया खुद आपसमें लडने लगे, रितुमें फेरफार हो, तोभी उसमुल्कमें तकलीफ पेश होगी, भूमिकंप हो, आस्मानसे धूल या लोहुकी वर्सा वरसे तो उसमुल्कमें बडा खौफ पैदा हो, अशुभग्रहोंके वेधका फल ऐसाही होता है, जब शुभग्रहोंका वेध हो तो मुल्कमे वारीश अछी हो, अपने अपने वख्तपर द्रख्तोंकों फल फूल अछी तौरसे आवे, राजा प्रजामे टंटे बखेडे न हो, और भाईबंधुओमे स्नेह बढे,-

[ संवत्के वरतारा निकालनेकी तरकीब खतम हुई, ]

---

## [ रोगावलीचक्रं, ]

१ जिसरौज बीमारी पैदा हो, उसरौज देखना चाहिये, कौनसा वार और कौनसा नक्षत्र है,? उसकों देखकर इसरोगावली चक्रको बांचो, और अंदाज करो, यह बीमारी इतनेरौज सतायगीः जो बीमारी वख्तमरनेके आती है, वो दूर न होगी, लेकिन! जो मामुली बीमारी आती है, वो कितनेरौज रहेगी इस चक्रके पढनेसें मालुम होसकेगा, नक्षत्र मिले, और इसमें लिखे मुजब वार न मिले तो वो बीमारी कमजोर समजना.-

२ जिसरौज अश्विनी नक्षत्र हो और रवि, सोम, या शुक्रवार हो, उसरौज बीमारी पैदा हो तो जानना (२१) रौज तकलीफ रहेगी, फिर आराम होगा, भरणीनक्षत्रके रौज बीमारी पैदा हो तो मरणात कष्ट, होगा,—

३ कृत्तिकानक्षत्र और गुरुवारके रौज बीमारी पैदा हो तो आठ रौज तकलीफ रहे, रोहिणीनक्षत्रके रौज बीमारी पैदा हो तो सात रौज तकलीफ फिर आराम, मृगशीर्ष नक्षत्रके रौज चाहे कोईभी वार हो, बीमारी पैदा हो तो एक महिना तकलीफ रहे, फिर आराम हो,—

४ आर्द्रा नक्षत्रके रौज मंगल, या शुक्रवार हो, और बीमारी पैदा हो तो मरणात कष्ट होगा, पुनर्वसु नक्षत्र रवि, बुध, शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो तो पचीस रौज तकलीफ फिर आराम, पुष्य नक्षत्र सोम, बृहस्पतिवारके रौज बीमारी पैदा हो तो तेरह दिन तकलीफ फिर आराम, अश्लेषा नक्षत्र सोम या शुक्रवारके रौज बीमारी पैदा हो, तो मरणात कष्ट होगा,—

५ मघानक्षत्र रवि, बुध, या शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो तो उन्नीस रौज तकलीफ फिर आराम, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र सोम, गुरुवारके रौज बीमारी पैदा हो तो ग्यारह रौज तकलीफ फिर आराम, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र सोम शुक्रवारके रौज बीमारी पैदा हो तो पचीस रौज तकलीफ रहे, फिर आराम हो, हस्त नक्षत्र रवि बुध, या शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो तो पनरा रौज तकलीफ फिर आराम,—

६ चित्रा नक्षत्र सोम या गुरुवारके रौज बीमारी पैदा हो तो पनरा रौज तकलीफ रहे, फिर आराम, स्वातिनक्षत्र रवि, बुध, या शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो तो दश रौज तकलीफ फिर आराम, विशाखा नक्षत्र रवि, मंगल, या शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो तो मरणांत कष्ट हो, अनुराधा नक्षत्र बुधवारके रौज बीमारी पैदा हो तो

चार रौज तकलीफ फिर आराम, ज्येष्ठा नक्षत्र गुरुवारके रौज बीमारी पैदा हो तो बीशरौज तकलीफ फिर आराम,–

७ मूल नक्षत्र रवि, मंगल, या शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो तो मरणांत कष्ट होगा, पूर्वापाढा नक्षत्र सोम या बुधवारके रौज बीमारी पैदा हो ता पांच रौज तकलीफ फिर आराम, उत्तरापाढा नक्षत्र गुरुवारके रौज बीमारी पैदा हो तो तीन रौज तकलीफ फिर आराम, श्रवण नक्षत्र रवि, मंगल, या शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो तो पचीस रौज तकलीफ फिर आराम होगा,–

८ धनिष्ठा नक्षत्रके रौज कोईभी वार हो बीमारी पैदा हो तो पचीस रौज तकलीफ फिर आराम, शतभिपा नक्षत्र गुरु, शुक्र, या शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो तो (१००) दिनतक तकलीफ रहे, फिर आराम, पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र रवि, मगल, या शनिवारके रौज बीमारी पैदा हो तो मरणांत कष्ट हो, उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र सोम, या बुधवारके रौज बीमारी पैदा हो तो आठ रौज तकलीफ फिर आराम, रेवती नक्षत्र गुरु, या शुक्रवारके रौज बीमारी पैदा हो तो (१००) रौज तकलीफ रहे फिर आराम हो,–

९ जिस शख्शकी जन्मराशि मेप हो उसको अगर पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वापाढा, या पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्रमें बीमारी पैदा हो तो मरणांत कष्ट हो, वृपभराशिवालेकों हस्तनक्षत्रमें बीमारी पैदा हो तो सख्त तकलीफ हो, मिथुनराशिवालेकों स्वातिनक्षत्रमें, कर्कराशिवालेको अनुराधामें, सिंहराशिवालेकों पूर्वापाढामें, कन्याराशिवालेको श्रवणमें तुलाराशिवालेको शतभिपामे, वृश्चिकराशिवालेको रेवतीमें, धनराशिवालेकों भरणीमे, मकरराशिवालेको रोहिणीमें, कुंभराशिवालेकों आर्द्रामें, और मीनराशिवालेको अश्लेषा नक्षत्रमे बीमारी पैदा हो तो सख्त तकलीफ होगी,–

१० बीमारीकी हालतमेभी धर्मकों भुलना नही चाहिये, साधु साधवी श्रावक श्राविका पुस्तक, प्रतिमा और मंदिर इन सातों

क्षेत्रोंमे दौलत सर्फ करना, और गरीबोंको अनुकंपा दान देना अच्छा है, ब-दौलत धर्मके इस जीवको सुख चैन मिला है, और आइंदे मिलेगा, दुनियामे सार वस्तु धर्म है.-

[ बयान रोगावली चक्रका खतम हुवा. ]

१ [ गइहुइ चीज मिलेगी या नही. ]

(उसके देखनेकी तरकीब. ब-जरीये नजुम, )

[ बाले भमइ पासे, तरुणे जाइ न जायइ थवीरे, ]

( अर्थः )-जिसवख्त सूर्य जिस नक्षत्रपर हो, उस नक्षत्रसे छह नक्षत्र बालसंज्ञावाले कहे जाते है, उसके आगेके बारा नक्षत्र तरुण-संज्ञावाले कहे जाते हैं, और उसके आगे बाकी रहेहुवे नव नक्षत्र स्थविर संज्ञावाले कहे जाते हैं, बालसंज्ञावाले नक्षत्रमे गइहुइ चीज नजीकमे है, दूर नही गइ, मीलजायगी, तरुणसंज्ञावाले नक्षत्रमे गइहुइ चीज मिलनेका संभव नही, और स्थविरसंज्ञावाले नक्षत्रमे गइहुइ चीज खोज करनेसे मिलसकेगी,-

२ [ दुसरी तरकीब, ]

( जिस नक्षत्रमें चीज गइ हो उस नक्षत्रसे ब-जरीये नजुमके देखना, और अगर वो नक्षत्र याद न हो तो जिस रोज सवाल पुछने आवे उस दिनके नक्षत्रसे देखना, )

| | |
|---|---|
| १ अश्विनीमें गइहुइ चीज (९) दिनमे मिले, | ७ पुनर्वसुमें मिले नही, |
| २ भरणीमे १५ दिन, | ८ पुष्यमें ७ दिनमे मिले, |
| ३ कृत्तिकामे चीज मिले नहीं, | ९ अश्लेषामे मुश्किलीसे मिले, |
| ४ रोहिणीमें ७ दिन, | १० मघामे २० दिन, |
| ५ मृगशिरामे ३० दिन, | ११ पूर्वाफाल्गुनीमे मिले नही, |
| ६ आर्द्रामे मिले नहीं, | १२ उत्तराफाल्गुनीमें ७ दिन, |
| | १३ हस्तमे १५ दिन, |

| | |
|---|---|
| १४ चित्रामें ११ दिन, | २२ अभिजित्में १२ दिन, |
| १५ स्वातीमें चीज मिले नही, | २३ श्रवणमें मिले नही, |
| १६ विशाखामें १५ दिन, | २४ धनिष्ठामें जल्दी मिले, |
| १७ अनुराधामें तकलीफसें मिले, | २५ शतभिषामें देरसें मिले |
| १८ ज्येष्ठामें पता लगे, मगर मिले नहीं, | २६ पूर्वाभाद्रपदामें पता लगे, मगर मिले नहीं, |
| १९ मूलमें मिले नहीं, | २७ उत्तराभाद्रपदामें मिले नहीं, |
| २० पूर्वाषाढामें जल्दी मिले, | २८ रेवतीमें कोशिससें मिले. |
| २१ उत्तराषाढामें देरसें मिले, | |

१ [ मुहूर्त्त गर्भाधानसंस्कारका. ]

जिस रौज सोम, बुध, गुरु, या शुक्रवार हो, दुज, तीज, पंचमी, सप्तमी, या दशमी तिथि हो, रोहिणी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, शतभिषा, तीनों उत्तरा, या रेवती नक्षत्र हो, उस रौज मेष, और मकरलग्नकों छोडकर दुसरेलग्नोंमें गर्भाधान संस्कार कराना चाहिये, जिस औरतको स्वरोदयज्ञानकी पहिचान हो, अपने चंद्रस्वर चलते वख्त गर्भाधानसंस्कारकी विधि करानेपर आमादा हो, निमित्तशास्त्रोंमें बनिस्बद नजुमके स्वरोदयज्ञानको ताकतवर फरमाया मजकुर संस्कार पांचमे महिने कराना चाहिये,–

२ [ मुहूर्त्त पुंसवनसंस्कारका ]

जिस रौज मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मूल, या श्रवण नक्षत्र हो, दुज, तीज, पंचमी, सप्तमी, दशमी, त्रयोदशी, या पौर्णिमा तिथि हो, रवि, भौम, या बृहस्पति वार हो, उस रौज लग्नशुद्धि देखकर पुंसवनसंस्कार कराना चाहिये, मजकुर संस्कार गर्भवती औरतको सातमे या आठमे महिने कराया जाता है, जिस औरतको स्वरोदयज्ञानकी पहिचान हो, अपने चंद्रस्वर चलते वख्त पुंसवनसंस्कारकी विधि करानेपर तयार हो–

३ [ विधान जन्मसंस्कारका, ]

जिस वख्त बेटा बेटीका जन्म हो, मुनासिब है उनके मातापिताकों उस वख्तकी घडी पलकों लिख लेवे, और अछे नजुमी पंडितकों बुलाकर जन्मग्रह बनवावे, ओर ब मुजब अपनी हेसियतके नजुमीको-रूपया महोर या राजे महाराजे हो, तो जवाहिरात भेटकरके जन्म-ग्रहोंका बयान सुने, लडका केसा नसीबेदार होगा इसपर खयाल करे, तीर्थंकर, चक्रवर्त्ती वासुदेव, प्रतिवासुदेव, मांडलिक और छत्र-पति वगेरा बडेबडे राजे महाराजेके जमानेमें नजुमकी कदर थी, अछीतरह मदद देतेथे, और इसीलिये नजुम तरकीपर था, आजकल कइलोग नजुमकों बेकदरसे देखते हैं, और फरमाते हैं चांद सूर्य किसीका भलाबुरा करडाले यहभी एक तरहका बखेडा नही तो और क्या है, मगर याद रहे! नजुम तीर्थंकर गणधरोंका फरमाया हुवा और इसीलिये सचा है, असलमें चांद सूर्य भला बुरा नही करते, जो कुछ करनेवाले है, अपने अपने पूर्वसंचित कर्म है, मगर चांद सूर्य उसके सूचक और द्योतक है, अछे लोगोने नजुमकों तज-रूबेमे लिया और इम्तिहानके मेदानमे सचा पाया,—

४ [ चंद्रार्कदर्शनसंस्कार, ]

जन्मसे तिसरे रौज चंद्रार्कदर्शनसंस्कार कराया जाता है, (यानी) बेटाबेटीको चांद सूर्य विधिविधानसे दिखाये जाते हैं, ज्यादा खुलासा जैनशास्त्रकल्पसूत्रवृत्तिमे दर्ज है, उसमे देखना चाहिये, यहा कहांतक बयान किया जाय?—

५ [ पांचमा क्षीराशनसंस्कार. ]

जिस रौज चंद्रार्कदर्शन-संस्कार कराया जाय उस रौज या उसके दुसरे रौज कराया जाता है, तीन रौजतक प्रसूता औरतके दुधमे विकार रहता है, इसलिये वो दुध नहीं पिलाना, गौका दुध लाकर पिलाना, चौथे रौज क्षीराशन संस्कारकराना, और पीछे माताका स्तनपान कराना,—

६ [ षष्ठीपूजनसंस्कार. ]

जन्मसें छठे रौज षष्ठीपूजनसंस्कार कराया जाता है, उस रौज शामकों जातविरादरकी औरते मिलकर मंगल गीत गावे, प्रसूता औरतका मकान साफ करके इत्र धूप वगेरासें खुशबुदार बनावे, एक चौकीपर चांदी या कांसेका थाल रखे, और उसमें केशर या कुकुमका स्वस्तिक बनावे, फिर उसपर चावल डालकर शासनदेवीके चरणोंका आकार बनावे, और उसके मामने बेठकर सोहागन औरतें मंगल गीत गावे, फिर गीतगान करनेवाली औरतोंकों वमुजब अपनी हेसियतके मेवा मिठाई बांटे,–

७ [ सूचीकर्मसंस्कार, ]

जन्मसें ग्यारहमे रौज सूचीकर्मसंस्कार कराया जाता है, जिसकों दशोटनभी बोलते हैं, लेकीन! उस रौज भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, चित्रा, विशाखा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, या पूर्वाभाद्रपदा ये नक्षत्र, और रवि, और मंगलवार आजाय तो एक दो रौज बचाकर आगेकों करना चाहिये,–

८ [ मुहूर्त्त नामकरणसंस्कार, ]

जिस रौज सूचीकर्मसंस्कार कराना उपर लिख चुके, अगर उस-रौज लडकेका नाम न रखागया हो, तो जिस रौज मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, और चरसंज्ञावाले नक्षत्र हो, बुध, बृहस्पति, शुक्रवार हो, चौथ, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी, अमावास्या, पौर्णिमा, सक्रांति या पंचकके दिन न हो, और लग्नशुद्धिमे गुरु, शुक्र, चौथे भुवनमे बेठे हो, ऐसें वख्तपर लडकालडकीका नाम रखना चाहिये, बहुत दिनतक विना नामके रखना अछा नही, मुताविक कायदे नजुमके जिस राशिका चंद्रमा लडकालडकीके जन्मलग्नमें हो, उसी राशिके अक्षरोंपर नाम रखना चाहिये, राशिके अक्षरोंका बयान इसी लेखमें शतपदचक्रमे दर्ज है,उसको देखो! और मुताबिक उसके अमल करो!! इन अक्षरोंका और इन नक्षत्रराशियोंका अनादिसंबंध है, जिस जिस

नक्षत्र और राशिपर शुभ या क्रूर ग्रह जब जब आवे, तब तब उन नक्षत्र और राशिके नामवालोंको शुभाशुभ फल मिले, इसीसे नजुम सचा, और काबिल एतकातके कहा गया,–

अगर मातापिताने लडका लडकीका नाम मुताबिक शतपदचक्रके न रखा हो, अपनी खुशीसे चाहे जैसा रखा हो, तो उस बोलते नामसेभी नजुम देखा जाता है,–

[ प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दितः, ]

(अर्थः)–सोताहुवा शख्श जिस नामके बोलनेसे जवान देवे या अपने पास आजाय, उस बोलते नामसेभी नजुम देखो, वोभी मिलेगा.–

९ [ मुहूर्त्त अन्नप्राशनसंस्कार, ]

मजकुर संस्कार लडकेकों बाद छह महिनेके सम महिनेमें और लडकीकों बाद पाच महिनेके विषम महिनेमे कराना चाहिये, जिस रोज अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराफल्गुनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपदा, और रेवती, ये नक्षत्र, क्रूराक्रांत वगेरा दोषोंसें रहित हो, रवि, सोम, बुध, गुरु, और शुक्रवार हो, रिक्ता, अमावास्या, और व्यतीपात वगेरा खोटे योग न हो, उस रोज लग्नशुद्धि देकखर अन्नप्राशनसंस्कार कराना चाहिये,–

१० [ मुहूर्त्त कर्णवेधसंस्कार, ]

मजकुर संस्कार पहले, तिसरे, पाचमे या सातमे वर्स कराना चाहिये, तिथियोंमे नंदा, अष्टमी, अमावास्या, इन तिथियोंकों छोडकर जिस रोज अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपदा, या रेवती नक्षत्र हो, रवि, मगल, बृहस्पति वार और अच्छा योग हो, उस रोज लग्नशुद्धि देखकर कर्णवेधसंस्कार कराना, लग्नशुद्धिमे देखो! तिसरे ग्यारहमें शुभग्रह बेठे हैं या नही? और

शुभग्रहोंके स्थानमें पापग्रह न बेठे हो, ऐसे वख्त कर्णवेधक शख्शकों बुलाकर लडकेलडकीका कान विंधाना चाहिये,–

११ [ मुहूर्त्त केशवपनसंस्कार, ]

जिस रौज मृगशिरा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, और रेवती नक्षत्र हो, तिथिमें १,२,३,५,७,१०,११,१३ ये तिथि हो, सोम, बुध, या शुक्रवार हो, उस रौज चंद्रबल देखकर लडकेका केश उतरवाना चाहिये,–

१२ [ मुहूर्त्त उपनयनसंस्कार, ]

मजकुर संस्कार बाद आठ वर्सकी उम्रके कराना चाहिये, जिस रौज अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, या रेवती नक्षत्र हो, तिथिमें २,३,५,७,१०,१३ ये तिथि हो, बुध, गुरु, या शुक्रवार हो, उस रौज लडकेकों मयबाजोंके शाथ मंगलगीत गातेहुवे जिनमंदिरमें दर्शनोकों लेजाना, फल, नैवेद्य, रुपया, महोर, या जवाहिरात मुताबिक अपनी हेसियतके जिनमूर्त्तिके सामने रखना, और नमस्कारकरके वहांसें वापिस लोटना, निर्ग्रंथगुरुके पास जाकर परमेष्ठिमहामंत्र लडकेकों सिखलाना, और वासक्षेप कराना,–

१३ [ मुहूर्त्त विद्यारंभसंस्कार, ]

लडका या लडकी जब आठ वर्सकी उम्रमे आवे तब उनको विद्यारभसंस्कारकी शुरुआत कराना चाहिये, जिस रौज, अश्विनी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, पूर्वाषाढा, धनिष्ठा, शततारका, और पूर्वाभाद्रपदा ये नक्षत्र हो, और तिथिमें २,३,५,७,१०,११,१२,१३ ये तिथि हो, रवि, सोम, बुध, गुरु या शुक्रवार हो, उस रौज अछे लग्नमे लडकेकों इल्म पढानेके लिये मदर्सेमें भेजना चाहिये, विद्यागुरुसें विद्यापढनेकी शुरुआतके वख्त लडकेका सूर्यस्वर चलता हो, निहायत उमदा है, इल्म जल्दी हासिल होगा,–

## १४ [ मुहूर्त्त विवाहसंस्कारका, ]

विवाह आठतरहके होते हैं, १, ब्राह्म्यविवाह, २, प्राजापत्य-विवाह, ३, आर्षविवाह, ४, क्षत्रिजविवाह, ५, गांधर्वविवाह, ६, आसुरविवाह, ७, राक्षसविवाह, और ८, पिशाचविवाह, इनमे पेस्तरके चार धर्मविवाह, और पिछले चार अधर्मविवाह है, रोहिणी, मृगशिरा, मघा, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद, रेवती ये नक्षत्र विवाहके लिये अछे हैं, लेकिन! इनमें लत्ता, पात, एकार्गल, वेध, उपग्रह, वगेरा दोष न होने चाहिये, नक्षत्रगंडात, तिथिगंडांत, भद्रा, व्यतिपात, या वैधृति वगेरा कुयोगभी न होना चाहिये, क्रातिसाम्य, दग्धातिथि, अधिकमास, और चौमासेके कालकोभी बचाकर विवाहका मुहूर्त्त निकालना चाहिये.–

वढी या घटी हुई तिथि, रिक्ता, अष्टमी, षष्ठी, द्वादशी, या अमावास्याकों छोडकर जिसरौज २-३-५-७-१०-११-१३-१५ ये तिथि हो, उसरौज विवाहका मुहूर्त्त मुकरर करना चाहिये, जिसवख्त सिंहराशिका बृहस्पति, धनमीनका सूर्य, या गुरु शुक्र अस्त हो, उसवख्त विवाह दीक्षा या प्रतिष्ठा कराना वहेत्तर नही, संक्रांतिके रौज या उसके दुसरे रौज, ग्रहणके रौज, या ग्रहणके बाद सातरौज-तक विवाहका मुहूर्त्त देखना मना है, जन्मलग्न, जन्मवार, जन्मनक्षत्र, जन्मतिथि, या जन्ममासमे विवाह करना मुनासिब नही, जन्मलग्नका स्वामी अस्त हो, या क्रूरग्रहकरके पराजित हो, उसवख्तभी विवाह करना अछा नही, जन्मराशिसे या जन्मलग्नसें आठमे लग्नमे विवाहका होना बुरा है, बुध, गुरु, या शुक्रवार, इनमेसें कोईभी वार हो, विवाहके लिये अछे है,–

स्थिर, द्विस्वभाव, या चर इनमेसे कोईभी लग्न हो अछा है, हां! उत्पात वगेरा दोषकरके रहित, और लग्नशुद्धिमे उमदा लग्नशुद्धि देखलेना होगा, विवाहलग्नकी उदयशुद्धि और अस्तशुद्धिभी जरूर

देखलेना चाहिये, लग्नका स्वामी और लग्नके नवांशका स्वामी नवांशकों देखता हो, या नवांशसें युक्त हो, उसको उदयशुद्धि बोलते हैं, सप्तमनवांशका स्वामी सप्तम नवांशकों देखता हो, या सप्तमनवांशसे युक्त हो, उसकों अस्तशुद्धि बोलते हैं, विवाहलग्न दो पापग्रहोंके बीचमें होना अछा नही, चंद्रमाभी दो पापग्रहोंके बीच या पापग्रहोंकरके दृष्ट होना ठीक नही,–

लग्नमें शुभग्रहका नवांश हो, या उसकों शुभग्रह देखते हो, ऐसे लग्नपर विवाह करना अछा है, लेकिन! इतना याद रहे! सप्तमस्थानमें कोईग्रह न होना चाहिये, लग्नशुद्धिमें सूर्य तिसरे, छठे, या दशमें भुवनमें होना अछा, चंद्रमा, पहले, छठे, और आठमेकों छोडकर चाहे जहां पडा हो अछा है, मंगल तिसरे, छठे, होना ठीक है, बुध, पहले, दुसरे, चौथे, पांचमें, छठे, आठमे या दसमें होना अछा, बृहस्पति पहले, दुसरे, पांचमें, सातमे, नवमे, या दशमें होना ठीक, शुक्र पहले, पांचमे, छठे, यां दशमें होना अछा, शनि तिसरे, छठे, होना उमदा, ग्यारहमें भुवनपर सब ग्रह अछे होते हैं, तिसरे या छठे भुवनमें राहु हो, पाचमें भुवनमें कोई पापग्रह न हो, और सातमें भुवनमें शुभ या अशुभ कोई ग्रह न हो, ऐसे लग्नमें विवाहका मुहूर्त मुकरर करना अछा है,–

औरतके लिये बृहस्पतिका और चंद्रमाका बल देखना, और मर्दके लिये सूर्य और चंद्रबल देखना अछा है, इसतरह मुताबिक नजुमशास्त्रके विवाहलग्न मुकरर करना चाहिये, नजुमसें स्वरोदयज्ञान बढकर है, इसलिये मामुली दिनशुद्धि देखकर चंद्रस्वर चलते वख्त विवाह मुहूर्त करायाजाय तो निहायत उमदा है, विवाहके वख्त अगर मर्द और औरत दोनोंका चंद्रस्वर चलता हो बहुतही उमदाबात है, इसमें कोई शक नही. बरात चढते वख्त, तोरण छनते वख्त, या हस्तमेलनके वख्त, अगर मर्दका चंद्रस्वर चलता हो, निहायत उमदा है, विवाहके सब काम चंद्रस्वरमें करना अछे हैं,–

## १५ [ मुहूर्त्त व्रतारोपसंस्कार, ]

जिस मर्द या औरतकों व्रतनियम लेना हो पाक और साफ होकर निर्ग्रंथगुरुके सामने जावे, और अर्ज करे मुजकों व्रत दीजिये, अगर उसकों दीक्षा लेना हो तो उसकी ताकात देखकर उसको दीक्षा देवें, अगर दीक्षा न लेना हो, तो गृहस्थधर्मके बारांव्रत देवे, या उसमेंसें जितने व्रत लेनेकी ताकात हो उतने देवे,–

कितनेक जैनमुनि श्रावकोंको जोराजोरी समजाकर व्रत नियम देते हैं, यह मुनासिब नही, जिसकी जितनी ताकात हो उसमुजब व्रत देवे, जैनशास्त्रोंमें बयान है, जितनी ताकात हो उतने व्रत नियम लेना, सबसें बडी श्रद्धा है, श्रद्धाके बाद ज्ञान, और ज्ञानके पीछे व्रतनियम है, अगर श्रद्धा है तो वो शख्श मोक्ष पासकता है, विना श्रद्धाके चाहे जितने व्रत नियम करो, आत्माकों कोई फायदा नही, जैनशास्त्र संबोधसीतरीमें पाठ है,–

दंसणभट्ठो भट्ठो, दंसणभट्ठस्स नत्थि निव्वाणं,
सिज्झंति चरणरहिआ, दंसणरहिआ न सिज्झंति, १

(अर्थः)–श्रद्धासे रहित है, वो धर्मसें रहित है, श्रद्धासे रहितकी मुक्ति नही, चारित्रसें रहितकी मुक्ति होसकती है, मगर श्रद्धासें रहितकी मुक्ति नही होसकती, इसका मतलब यह हुवा, अकेली श्रद्धासें ज्ञानपाकर मुक्ति मिलसके, अकेले चारित्रसे यानी व्रतनियमसें मुक्ति नही मिलसके,–

अगरकोइ इससवालको पेंशकरे जैनशास्त्र तत्वार्थसूत्रमें लिखा है सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः सम्यक्दर्शन ज्ञान और चारित्र ये तीनोंसे मोक्ष होना कहा, मगर जैनागम आवश्यकसूत्रके वंदना अध्ययनमे यहभी पाठ है, श्रद्धा और ज्ञानसे मोक्ष पासके, चाहे दीक्षा न लिई हो, या व्रतनियमभी न लिये हो,–

भट्ठेण चरित्ताओ, सुट्ठुयरं दंसणं गहेयव्वं,
सिज्झंति चरणरहिया, दंसणरहिया न सिज्झंति, १

**दसारसिंहस्सय सेणियस्स, पेढालपुत्तस्सय सुव्वयस्स, अणुत्तरा दंसणनाणसंपया, विणाचरित्तेण अहरंगयं या, १**

(अर्थः)—चारित्रसें रहित हो, तोभी श्रद्धामें पावंद रहना चाहिये, सवव चारित्ररहितकी मुक्ति होसकती है, श्रद्धारहितकी मुक्ति नही होसकती, दशारसिह, श्रेणिक और पेढालपुत्र वगेराकी श्रद्धा और ज्ञानसंपदा निहायत उमदा थी, जिससे विनाचारित्रभी उनका आत्मकल्याण होगया, इसलेखका मतलब यह हुवा श्रद्धा और ज्ञान वडी चीज है, श्रद्धा ज्ञानके सामने चारित्र कोई चीज नही, इसीलिये उपरके आवश्यकसूत्रके पाठमें कहा गया, चारित्रविना मुक्ति होसकती है, जैसे मरुदेवीमाता और एलाची कुमारने दीक्षा नही लिई थी, तोभी भावनासे कर्म क्षय करदिये और श्रद्धासे केवलज्ञान पाकर मुक्ति गये,—

जैनशास्त्रोंमें जैनमुनिजनोंके और श्रावकोंके लिये, दो तरहके मार्ग तीर्थंकर गणधरोंने फरमाये, एक उत्सर्गमार्ग, दुसरा अपवादमार्ग, उत्सर्गमार्गका दुसरा नाम कठिनमार्ग, और अपवादमार्गका दुसरा नाम शिथिलमार्ग है, उत्सर्गमार्गमें जैनके पंचमहाव्रतधारी क्रियावान् साधु या साधवीको विहारमेंभी किसीकी सहायता नही लेना चाहिये, शत्रुंजयजी गिरनारजी केशरीयाजी समेतशिखरजी तथा मुल्क मारवाड, मेवाड, सिंध, पंजाव, राजपुताना, वंगाल, मध्यप्रदेश, वराड, खानदेश, या दखनतर्फ जाते वख्त किसी जैनमुनिके शाथ श्रावक श्राविका, नोकर, चाकर, चले, उन श्रावक श्राविका और नोकर चाकरोंके लिये वेलगाडीभी शाथ रहे, जैनमुनि खुद जानतेहो ये सवलोग हमारे विहारके सवव शाथ चले है, और ऐसी सहायता लेवे तो यह वात मुताविक जैनशास्त्रके उत्सर्गमार्गमें समजना या अपवादमार्गमें! इसपर कोई कहे जमाना पहले जैसा नही, शरीरकी ताकात कम होगइ, इस लिये, जमाने हालमें जैनमुनिकों इरादेधर्मके ऐसी सहायता लेनी पडती है, तो जवावमें मालुम हो, यह उत्सर्ग-

मार्ग नही, शिथिलमार्ग हुवा, शिथिलमार्गपर चलकर कोई जैनमुनि अपनी धर्मक्रियाकी महलता करे तो यह मुनासिन नही, अगर कोई जैनमुनि असहायक होकर विहार करे तो अछी वात है,–

जैनमुनिकों नवकल्पी विहार करना कहा, अगर कोई जैनमुनि या जैनसाधवी किसी गांव नगरमें दो दो वर्सतक ठहरे तो वतलाइये! यह वात उत्सर्गमार्गमें समजना या अपवादमार्गमें! अगर कहाजाय अपवादमार्गमे है, तो फिर अपनी धर्मक्रियाकी उत्कृष्टता क्यारही! जैनमुनियोंकों उत्सर्गमार्गमें उद्यान वनखड वाग वगिचे या पहाडोकी गुफामें रहना चाहिये, आजकलके मनुष्योंकी ऐसी ताकाद नही रही, इसलिये इरादे देहरक्षा और संयमरक्षाके गाम नगरमे रहनेका शिथिलमार्ग इख्तियार करना पडता है. जो कोई जैनमुनि उत्सर्गमार्गपर चलना चाहे तो आजभी वनमें या गुफामें जाकर रहे,–

जैनशास्त्र उत्तराध्ययनमे लिखा है, जैनमुनिकों और जैनसाधवीको उत्सर्गमार्गमे दिवसके तिसरे प्रहर भिक्षाको जाना,–

[ पाठसूत्र उत्तराध्ययनका अध्ययन २६ गाथा, १२ ]

पढमं पोरिसि सज्झायं, बियियां झाणं झियायइ,
तइयाए भिखायरियं, चउथी भुजोवि सज्झायं,–

(अर्थः)–जैनमुनि दिवसके पहले प्रहरमें स्वाध्याय करे, दुसरे प्रहरमें ध्यान करे, और तीसरे प्रहरमें भिक्षाकों जावे, अगर कोई इसदलिलको पेंशकरे दिवसके तीसरे प्रहरमें भिक्षा मिलना दुसवार होगा, तो फिर कुबुल करना चाहिये आजकल उत्सर्गमार्गको छोडकर अपवादमार्गमे चलना पडता है, दिवसमे तीनदफे सवेरे, दुफेरको और शामको भिक्षाके लिये जाना पडता है, सोचो! फिर यह कठिनमार्ग रहा या शिथिल? चाह दूधकी गवेपणा करना, दुसरे प्रहरमें आहारके लिये जाना, तीसरे प्रहरमे फिर भिक्षाकों जाना, यह किस जैनशास्त्रका फरमान है, कोई वतलावे, अगर कोई जैनमुनि

उत्सर्गमार्गमें चलना चाहे तो दिवसके तीसरे प्रहर भिक्षाकों जावे, और जो कुछ निरस आहार मिले उसपर संतोष करे,–

[ दशवैकालिक सूत्रके छठे अध्ययनमें पाठ है, ]

अहो निच्चं तवो कम्मं, सब्व बुद्धिहिं वन्नियं,–
जायलज्जासमा विति, एगभत्तं च भोयणं, २३

देखिये ! इस दशवैकालिकसूत्रमें क्या लिखा है ? इसमें साफ लिखा है, जैनमुनिको दिनमें तीसरे प्रहर आहार लेना चाहिये, आजकल कई जैनमुनि तीनदफे आहार करते हैं, और कहते हैं, हम बडे क्रियापात्र है, कितनेक श्रावकभी उनको बडे क्रियापात्र समजते है, मगर जैनशास्त्र क्या फरमाते है, इस बातकों सौचो ! दुसरी बात यह है, जबजब जैनमुनि जैनसाधवी या श्रावक श्राविका उपवासव्रत करे तो पहले रौज एकाशना करे, दुसरे रौज खाना न खावे, और पारनेकेरौजभी एकाशना करे, इसीका नाम जैनशास्त्रोंमें उपवासव्रत कहा, आजकल ऐसा बरताव थोडे शख्श करते होगें, उपवासमें चारटंक आहार छोडना, छठमें छह टंक और अठममें आठटंक आहार खाना छोडना चाहिये, ऐसा करना नही, और अपनी धर्मक्रियाकी महलताकरना कहांतक सच है, ! इसबातकों सौचो ?–

अगर कोई जैनमुनि आचार्य उपाध्याय गणी प्रवर्त्तक वगेरा पदवीके धारक बने तो पहले उनकों यह सौच लेना चाहिये, मेने उस पदवीके गुण हासिलकिये है या नही ? सचपुछो तो सोनेचांदीके फेमवाले चश्मे और जेबघडीभी रखना क्या जरूरत ? जैनमुनि और जैनसाधवीकों मुनासिब है, पंचमहाव्रतधारी गुरुकों वंदन नमन करके विनयकेशाथ जैनशास्त्रकी विद्या पढे, दुसरे मजहबके विद्वान् व्याकरण, काव्य, कोश, न्याय, और अलंकार वगेरा अछे पढेहुवे रहते है, मगर जैनागमका मतलब जैनगुरुसेही मिलसकेगा,–

अगर कोई जैनश्वेतांबर श्रावक अध्यात्मके दो चार ग्रंथबाचकर अध्यात्मज्ञानी बने, और कहे, आजकलके जैनमुनिजनोकों हम

नही मानते तो जवाबमें मालुमहो, ऐसे श्रावककों जैनमुनि धर्मलाभ कब देते हैं! श्रावक खुद चरित्र लेकर उत्सर्गमार्गपर चले और अपने आत्माका कल्याण करे, कौन मनाकरता है,? ऐसा करना नही और बातें बडीबडी बनाना क्या फायदा! तीर्थंकर चक्रवर्त्ती वगेरा राजे-महाराजोंने राज्य छोडकर पेस्तरके जमानेमें दीक्षा लिइ है, थद्वार-हित केशरका तिलक करनेसें श्रावक होगये ऐसा समजना गलत है.–

जैनशास्त्र फरमाते हैं, श्रावककों (२१) गुण और (१२) व्रत इख्तियार करना चाहिये.–

(दोहा,) चउदह चुके बारह भूले, छह कायाके न जानेनाम,
नगर ढंढोरा फेरिया, श्रावक हमारा नाम, १

श्रावकोको रात्रीभोजन नही करना चाहिये, कितनेक श्रावक रात्रीभोजन करते हैं, और जैनमुनियोंकी धर्मक्रियापर टीका करते है, जैनशास्त्रोंमे फरमान है, श्रावकको व्यापारमेभी असत्य बोलना नही, जमीकंद नही खाना, धर्मखातेकी बोली हुइ रकम अपने चौपडेमें जमाकर रखना बहेत्तर नही, धर्मका गुनाह है, बहुतसे श्रावकोंके घर देवद्रव्य धर्मद्रव्य जमा है, खर्चते नही और जैनमुनियोंके सामने बडीबडी बातें बनाते है, जब देवद्रव्यनिकालनेकी बात आती है, तब जबाबदेते है,दुसरे देयगें तो में दुंगा, ऐसा बोलके चले जाते है.–

श्रावककों मुनासिब है, जींदगीभरमें नवलाख नमस्कारमत्र पढना, चौदहनियम धारन करना, बडेबडे पापारभ छोडना, जिसजैनमंदिर या जैनतीर्थके देवद्रव्यका हिसाब अपने हस्तगतहो वो जिनमंदिरके खजानेमें रखना, और मुनीम गुमास्ते रखकर मदिरका काम चलाना, अपने घरमे देवद्रव्य नही रखना, हरसाल देवद्रव्यका हिसाब छपवाकर जाहिर करना, उसपर चतुर्विध जैनसंघकी सलाहसें पांचश्रावक कार्यकर्त्तातरीके मुकरर करना, गुजराती, मारवाडी पंजाबी, दक्षणी, काठियावाडी या कछी कोई श्रावकहो, देवद्रव्यपर सबका समान हक है. कोई श्रावक किसी दुसरे श्रावककों ऐसा नही कह-

सकता आपका इसमें हक नही, आजकलके श्रावक जैनमजहबके शास्त्र-मुजब चलते नही, देवद्रव्यके मालिक जैसे बनजाते है, और अपने चोपडेमें जमा रखते हैं, जैनमुनियोंके सामने आकर बातें बनाते हैं, और कहते है आप लोगोंमें संप नही, मगर इतना मालुम नही, अपने घरमें कितना संप है,! एकबिरादरीमें कितने तड पडे हुवे हैं,–

सामायिक प्रतिक्रमण करना श्रावकका नित्यकर्त्तव्य है, कइश्रावक सामायिक प्रतिक्रमण करते नही, और बातें बडीबडी बनाते है, यह मुनासिब नही, हर साल एक जैनतीर्थकी यात्रा श्रावककों जरूर करना चाहिये, आजकल कितनेक श्रावक दश दश वर्सतक तीर्थोंकों जाते नही, यह क्या श्रावकधर्म है,! पेस्तर अपने बरतावतर्फ देखो! श्रावककों बाईस अभक्ष्य और बत्तीस अनंतकायकी चीज नही खाना चाहिये, मांस नही खाना, शराब नही पीना, वेश्यागमन नही करना, धर्मकी कसम नही खाना, अदालतमें कसम खाना पडे तो सच बोलना, साठवर्सकी उम्रहुवे पीछे विवाह नही करना, छोटीउम्रके लडका लडकीकों विवाहसादीमें नही जोडना, अपना भाईका इंतकाल होजाय और उसकी औरत मौजूद हो, तो जैनशास्त्र अर्हन्नीतिका लेख फरमाता है, अपने भाईका हिस्सा उसकी औरतकों देना, आजकलके कइ श्रावक देते नहीं, और अपने भाईकी औरतको तकलीफमें डालते हैं, यह बडा बेइन्साफ है,–

जैनशास्त्रोंमें फरमान है, श्रावककों धर्मके काममें शोक संताप रखना नही, जब अपने रिस्तेदारका मरना होजाय और उठमना किया तो शोककों उठादेना चाहिये, आजकलके कइ श्रावक धर्ममें बर्सोंतक शोक रखते हैं, स्वधर्मिवात्सल्यमें जिमने नही जाते, प्रभावना नही लेते, और धर्मके काममें खलल पहुचाते है, और फिर कहा करते हैं, जैनमुनियोंकी धर्मक्रिया शिथिल होगई, में उमेद करताहुं जो जो श्रावक इसलेखकों पढेगें तो सायत! उनके दिलका शक रफा होसकेगा, जो जो जैनमुनि अपने दिलमें ऐसा खयाल

रखते होंगे हमारी धर्मक्रिया उत्सर्गमार्गकी है, उनकोंभी इसलेखके पढनेसें मालुम होसकेगा, जैनशास्त्रोंमें तीर्थंकरगणधरोंनें उत्सर्गमार्ग कैसे फरमाया है? और आजकल कैसा वरतवा चल रहा है, उत्सर्गमार्गमें जैनमुनिको दिनमे नींद लेना हुकम नही, रोगादिपरिसह सहन करना, विहारकरते वख्त धूप ठंड वगेरा परिसह सहन करना, कंतानके मोजे पहननाभी क्या जरूरत! कठीनमार्ग उसका नाम है जो मुताविक धर्मशास्त्रके फरमानपर चलना, और बने उतना धर्मपालन करना,–

जैनशास्त्रोंमें फरमान है, विना हुकम उनके वारीशोंके किसीकों दीक्षा नही देना, जो जो जैनमुनि विना हुकम वारीशोंके किसीके लडकेको दीक्षा देते है, वो खिलाफ हुकम जैनशास्त्रोंके है,–

जिस रोज अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती, ये नक्षत्र हो, रवि, बुध, गुरु, शनि, वार हो रिक्ता तिथिकों छोडकर कोई तिथि हो, व्यतीपात, वैधृति, भद्रा, वगेरा कुयोगोंसे रहित हो, उसरोज दीक्षाका मुहूर्त्त मुकरर करना चाहिये, जैनशास्त्र गणिविज्जापयन्नेमे जो संध्यागत, रविगत, क्रूराक्रात, राहुगत, क्रूरविद्ध और क्रूरांतरगत वगेरा दोष बयान किये है, उनकों और वेध, लत्ता, पात, एकार्गल वगेरा दोषोंकों बचाकर अछे नक्षत्रमे दीक्षा देवे,–

धन मीनके सूर्यमें, बृहस्पतिके अस्तमें, अधिक मासमें और चौमासेके दिनोंमें दीक्षादेना मना है, मिथुन, वृश्चिक, धन, और कुंभलग्न दीक्षाकेलिये अछे है, वृषभ और तुलालग्न दीक्षाकेलिये अछे नही, वृषके तुलाके नवांशकभी ठीक नही, दुसरेलग्न दीक्षाके काममें मध्यम है, लेकिन! लग्नशुद्धिमें अछे निकले तो लेनाभी कोई हर्ज नही,

लग्नकी उदयशुद्धि और अस्तशुद्धि देखना चाहिये, दोनों एकसरखी न मिले तो उदयशुद्धि जरूर देखे.—

दीक्षालग्नमें सूर्य दुसरे, पांचमें, छठे, या ग्यारहमें भुवनमें हो तो अछा, चंद्रमा दुसरे, तीसरे, छठे, वारहमें हो तो अछा, मंगल तीसरे, छठे, दशमें, ग्यारहमें हो तो अछा, बुधभी तीसरे, छठे, दशमें, ग्यारहमें होना अछा, बृहस्पति केंद्र या त्रिकोणमें होना ठीक, शुक्र तीसरे, छठे, नवमें, वारहमें होना अछा, और शनि दुसरे, पांचमें, आठमें ग्यारहमें होना अछा है,—

सूर्य तीसरे भुवनमें अछा नही, चंद्रमा दशमें अछा नही, बुध या बृहस्पति आठमें, वारहमें ठीक नही, शुक्र केंद्रमें या आठमें ठीक नही, शनि तीसरे, छठे अछा नही, मंगल शुक्र या शनिसें सातमें चंद्रमा ठीक नही, चंद्रमासें सातमें राहु केतु अछे नही, सूर्यके शाथ चंद्रमा वेठजाय तो राज्यका खौफ हो, मंगलके शाथ चंद्रमा वेठे तो दंगे फिसादकी सुरत है, बुधके शाथ चंद्रमा वेठे तो तकलीफ हो, बृहस्पतिके शाथ चंद्रमा वेठे तो रज हो, शुक्रके शाथ चंद्रमा वेठे तो मानभंग हो, शनिके शाथ चंद्रमा वेठे तो तकलीफ हो, चंद्र, बुध, गुरु, या शनिका लग्न दीक्षाके वख्त होना अछा, नवांशभी इनके अछे, होरा, द्रेष्काण, वगेरा षड्वर्गभी इन्हीके होना उमदा है.—

[ जन्मपत्रिकामें या प्रश्नपत्रिकामें
दीक्षायोग देखनेकी तरकीब, ]

भाग्येश उंचका होकर लग्नमें वेठा हो, और लग्नेश उंचका होकर भाग्यभुवनमें वेठा हो, उसशख्शकों एकतरहका दीक्षायोग हुवा जानो, नवमेश नवममें और लग्नेश लग्नमें वेठा हो, तोभी एकतरहका दीक्षायोग हुवा कहो, लग्नेश लग्नकों और भाग्येश भाग्यकों देखता हो तोभी एकतरहका दीक्षायोग हुवा जानो, लग्नेश भाग्येशकों और भाग्येश लग्नेशको देखता हो तोभी एकतरहका दीक्षायोग हुवा समझो.—

धर्मभावमें जिसके कोईभी ग्रह उंचका होकर पडा हो, और शुभग्रह उसकों देखते हो, वो उंचग्रह नवमेशसें युक्त और बलिष्ठ हो, वो धर्मधुरंधर आचार्य कहलायगा, उसके आगे धर्मध्वज चले, और राजाओंकेभी पूजनीक हो, गणधर गौतमस्वामी, जंबूस्वामी, वज्रस्वामी, हेमचंद्राचार्य, हीरविजयसूरि ऐसेही योगोंसें नामी होगये, छत्रपतिराजे और देवते जिनके कदमोंमें गिरतेथे.–

चंद्रमा जिसके शुभग्रहके नवांशमें रहेहुवेकों और उंचग्रहको देखता हो, और शनि जिसके बलिष्ठ हो, उसकी दीक्षा उमदा तौरसे पलेगी, और वो जगद्गुरु कहलायगा, नवमें भावमें जिसके शनि उंचका होकर शुक्र या बृहस्पतिके शाथ पडा हो, या शुक्र बृहस्पति उसकों देखते हो वो राजा होगा, अगर वो शख्श दीक्षा लेवे तो राजाओंकाभी पूजनीक बने.–

जिसके नवमें भुवनमे सूर्य बलिष्ठ होकर पडा हो, उसकों तापसमुनिकी दीक्षा उदय आयगी, जिसके चंद्रमा बलिष्ठ होकर पडा हो तो उसकों कापालीमतकी दीक्षा उदय आयगी, जिसके मंगल बलिष्ठ होकर पडा हो, उसकों बौधमजहबकी दीक्षा उदय आवे, जिसके बुध बलिष्ठ होकर पडा हो तो परिव्राजकमतकी, बृहस्पति बलिष्ठ होकर पडा हो तो संन्यासियोंकी, शुक्र बलिष्ठ होकर पडा हो तो चरकमतकी, और जिसके शनि बलिष्ठ होकर पडा हो तो उसकों जैनमजहबकी दीक्षा उदय आयगी, अगर दो तीन ग्रह बलिष्ठ होकर नवमे स्थानमें पडे हो तो उसको एकही जन्ममें दो तीन मजहबकी दीक्षा उदय आयगी, पहले एक मजहबपर एतकात रखकर दीक्षा लेवे, फिर दुसरे मजहबपर एतकात होजाय, और उस मजहबमें दाखिल हो.–

नवमे स्थानका स्वामी जिसके बलिष्ठ हो, और शुभग्रह करके दृष्ट हो, उसके दिलमें हमेशा धर्मश्रद्धा बनी रहे, नीचका हो, शत्रुक्षेत्री हो या क्रूर ग्रहकरके दृष्ट हो, उसकी श्रद्धा पहले ठीक रहे,

फिर बदल जाय, और अगर दीक्षा लेवे तो उसकी दीक्षा बराबर न पले, छोडकर चला जाय, नवमें भुवनमें जिसके सूर्य पडा हो, वो धर्मद्वेषी बने, बुध शुक्र एकशाथ जिसके नवमें पडे वो शाक्तमतकी श्रद्धावाला हो, जिसके नवमे भावमें मंगल पडा हो उसकों अपने स्वधर्मियोंसें अनबनाव रहे, जिसके नवमे भुवनमें राहुशनिके शाथ पडा हो वो नये मजहबकों इख्तियार करे, या नया मजहब जारी करे, और अपने मजहबकों छोड देवे.–

जिसके बुधके साथ राहु नवमे स्थानमें पडा हो, खूब धर्मात्मा हो, और धर्मपर साबीतकदम रहे, नवमें भावमें जिसके सूर्य, मंगल, या राहु पडे हो, वो बेंरहेम हो, नवमें भावका स्वामी जिसके राहुके शाथ हो, उसको दीक्षा लेकर पतित होना पडे, व्रतनियम उससें पले नही, नवमें भावका स्वामी जिसके अस्त, नीच, वक्र, या शत्रु-क्षेत्री हो, वो दीक्षा लेकर छोड देवे, और भोगावलीकर्म उसकों ज्यादा सतावे, जिसके उमदा राजयोग पडा हो, जैसे नवमेका मालिक दशमे और दशमेका मालिक नवमें वो दीक्षा इख्तियार करे तोभी भोगा-वली कर्मके उदयसें दीक्षा छोडना पडे, जैसे आद्रकुमारजीने और नंदीषेणमुनिजीने छोडी थी, मगर उनकी धर्मश्रद्धा इसकदर साबीत कदम थी, जिससे फिर सुधर गये, और अपने आत्माका निस्तार किया.–

जिसके शनि और लग्नपति अस्त, नीच, वक्र, या शत्रुक्षेत्री हो उसकोंभी भोगावलीकर्मके उदयसें व्रत नियमसें गिरजाना पडे, मगर धर्मश्रद्धा उसकी पकी बनी रहे, इसतरह धर्मगुरु चेलेका दीक्षा-योग देखे, अगर हस्तरेखाका इल्म आता हो, तो हस्तरेखामें दीक्षाकी रेखा देखे, और फिर दीक्षा देवे, चेलेके मोहमें पडकर विना सोचे दीक्षा न देवे, जो जो धर्मगुरु विना सोचे किसीके लडकेकों दीक्षा देते है, वे पीछेसे पस्ताते है, बहुत चेले करनेसे कोई ऐसा समजे मेरी दुनियामें तारीफ होगी और मे धर्मध्वज कहलाउगा, मगर याद

रहे!- चेला किसीको तारेगा नही, अपना आत्मधर्मही अपनेकों तारेगा, ज्ञानियोंके दरबारमे उसीकी तारीफ होगी, जो भावितात्मा अणगार होकर अपने आपको पापकर्मोंसें बचायगा, और चेले करनेके मोहमे न पडेगा, अगर कोई शख्श अपनेपास दीक्षालेने आवे तो उनके वारीशोंकों इत्तिलादेना चाहिये, तुमारा लडका या तुमारा रिस्तेदार हमारेपास दीक्षा लेनेकों आया है, अगर वे आनकर हुकम देवे तो दीक्षा देना, न देवे तो न देना, मगर उम्र देखकर दीक्षा देना चाहिये, चाहे मर्द हो या औरत छोटी उम्रमे दीक्षा देना लाजिम नही, कितनेक साधु और साधवी छोटे छोटे बच्चेकों दीक्षा देते है, उसका नतीजा अछा नही आता.-

१६ [ बयान अंतकर्मसंस्कार, ]

दुनियामे मरनेकी बराबर कोई आफत नही, और इसका मुहूर्त्त कोई देखताभी नही, देखे क्या? मरनेकी आफतही ऐसी है जो अचानक आन पडती है, उसवख्त मुहूर्त्तकी तलाश कौन करे! दुनियामे कोई ऐसा नही जो मरनेसें बचा हो, जितना आयुष्य पूर्वभवमे जीव बांध लाया है, उसका पुरा होजाना उसीका नाम मृत्यु है, क्या! राजा या रंक? सभीको मरना है, धर्मशास्त्रोंमे लिखा है, क्रोध, मान, माया, और लोभसे आत्मघात करना बुरा है, अछेध्यानसें मरना उंचगति पानेका सबब है.-

[ जैनशास्त्र गुणस्थान क्रमारोहमें पाठ है, ]

आयुर्बध्नाति नो जीवो, मिश्रस्थो म्रियते नच,
सुदृष्टिर्वा कुदृष्टिर्वा भूत्वा मरणमश्नुते, १६
सम्यग मिथ्यात्वयोर्मध्ये ह्यायुर्येनार्जितं पुरा,
म्रियते तेन भावेन गतिं याति तदाश्रितां, १७

(अर्थः)-मिश्रगुणस्थानपर रहाहुवा जीव परभवका आयुष्य न बांधे सम्यक्तहालतमें या मिथ्यात्व हालतमे परभवका आयुष्य बांधे, और मरते वख्त वही भाव उदयमें आजाय जिसभावमें आयुष्य

बांधा हो, हरेक जीवकों परभवका आयुष्य अपनी उम्रके तीसरे भागमें बंधता है, खयाल करो! किसी शख्शका आयुष्य अंदाज साठ वर्सका है तो चालीशवर्स उसके बतीत हुवे बाद अगले भवका आयुष्य बंधता है, इसी मुआफिक सबके लिये जानना.–

अगर कोई शख्श पहलेसें अपना मरना समताभावसे होना चाहे तो आगे बतलाई हुई गाथाका ध्यान करे तो उसका मरण समाधिसे होकर अगला जन्म सुधर सकता है, वो गाथा यह है.–

ॐ ॐ–अंबराय–

कित्तिय वंदियमहिया, जेए लोगस्सउत्तमा सिद्धा,
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु स्वाहा,–१

मजकुर गाथा (१५०००) पनरां हजार दफे मनवचन कायाकी एकाग्रतासे पढे तो मरते वख्त मनके अछे परिणाम रहे, और अछी गति पावे, जिस शख्शकों धर्मपर एतकात न हो और इसबातकों न माने तो उसकी मरजीकी बात है, इससे ज्ञानीयोंका कुछ नुकशान नही, धर्म और प्रीत जोराजोरी नही होती, अंतकर्मसंस्कारका बयाना आगे इस किताबमें बहुत कुछ लिखा जायगा, वहांसें देख लेना.–

## १७ [ बयान प्रतिष्ठामुहूर्त्त मुताबिक जैननजुम, ]

प्रतिष्ठा उत्तरायणसूर्यमे करना चाहिये, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, और आषाढ महिने हो, अधिकमासमें या गुरु शुक्रके अस्तमें प्रतिष्ठा कराना बेहत्तर नही, रिक्ता, षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, अमावास्या, घटीवढी तिथि, भद्रा, नक्षत्रगंडांत, तिथिगंडांत, व्यतिपात, वैधृति, वगेरा कुयोग, प्रतिमा बेठानेवालेका जन्मनक्षत्र, जन्मतिथि, या जन्मवार जिस रौज न हो, उस रौज प्रतिष्ठाका मुहूर्त्त मुकरर करना चाहिये,–

, नाडीका अविरोध, षडाष्टक अविरोध, योनिका अविरोध, वर्गका अविरोध, गणका अविरोध, लभ्यालभ्यसंबंध, राशिके स्वामीका अविरोध, प्रतिष्ठाकारक गुरुका चद्रबल, और शिष्यकी गोचर शुद्धिभी देखना चाहिये, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपदा और रेवती ये नक्षत्र प्रतिष्ठाके लिये अछे हैं, लेकिन गणिविज्ञा पयन्नेके दिखलाये हुवे सप्तदोष न होने चाहिये, प्रतिमा बेठानेवाले शख्शके जन्मनक्षत्रसें प्रतिष्ठाका नक्षत्र १०-१६-१७-१८-२३ और २५ मा-होना अछा नही.-

तिथियोंमें शुक्लपक्ष और कृष्णपक्षकी पंचमीतक अछी कही, जिसमेंभी १, २, ५, १०, १३, १५, ज्यादा अछी कही, सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार होना ठीक कहा, योग अछा मिलजाय तो तिथि-वार चाहे जैसा हो कोई हर्ज नही, कुंभस्थापनाके लिये सूर्यनक्षत्रसें आगेके पांच नक्षत्र छोडना, और उसके आगेके आठ नक्षत्र लेना, फिर आठ नक्षत्र छोडकर आगेके छह नक्षत्रलेना ठीक है, जिस नक्षत्र-पर सूर्य हो उससे सातमा नक्षत्र भस्मयोगवाला कहताला है, इसको छोडदेना चाहिये.-

प्रतिष्ठाके लिये द्विस्वभाववाला लग्न मिथुन, कन्या, मीन, स्थिर-लग्न, वृषभ, सिंह, वृश्चिक, कुंभ, ये श्रेष्ठ है, अगर ये अछे बलवान् न मिले तो चरलग्न लेना, मिथुन, और धनलग्नका पहेला आधाभाग अछा, मीन, तुला, सिंहलग्नका बीचला भाग अछा होता है.-

प्रतिमाजी तख्तनशीन करनेसे पेस्तर अगर घंटे दो घंटेमें अगर अकस्मात् उत्पात होजाय तो उस रौज प्रतिष्ठाका काम बंद रखना, बिजलीका कडाका होना, आस्मानसे आगके अंगारे गिरना, धूलकी बारीश होना, बडी भारी अंधी आना, दिवारपरकी चित्रमूर्त्ति हसने रौने लगना, आंखे फाडकर डराने लगना, ये सब उत्पात है, ऐसा होनेपर प्रतिष्ठा मुहूर्त्तको बंद रखना चाहिये, अगर सवाल

कियाजाय इतनी तयारी किई, फिर मुहूर्त्त बंद क्यौ रखना? (जवाव) फायदेसे नुकशान ज्यादा हो वैसा काम क्यौं करना? फिर दुसरा अछा मुहूर्त्त देखकर करना ठीक है.–

प्रतिष्ठालग्नमें ग्रह, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिंशांश इनमें सौम्य ग्रह आवे तो अछा, पांचवर्ग, या चार वर्गशुद्धितक ठीक है, इनमेसें कम हो तो अछा नही, मेष, कर्क, तुला, और मकर. ये चरराशि हैं, वृषभ, सिंह, वृश्चिक, और कुंभ ये स्थिर राशि हैं, मिथुन, कन्या, धन, और मीन ये द्विस्वभावराशि हैं, प्रतिष्ठालग्नकी उदयास्तशुद्धि जरूर देख लेना चाहिये.–

[ प्रतिष्ठालग्नशुद्धिः–]—[ शार्दूलविक्रीडितं. ]

सौरार्कक्षितिसूनवस्त्रिरिपुगा द्वित्रिस्थितश्चंद्रमाः
एकद्वित्रिखपंचबंधुषु बुधः शस्तः प्रतिष्ठाविधौ;–
जीवः केंद्रनवस्वधीषु भृगुजो व्योमत्रिकोणे गतः
पातालोदययोः सराहुशिखिनः सर्वेप्युपांते शुभाः १
खेर्कः केंद्रनवारिगः शशधरः सौम्यो नवास्तारिगः
षष्ठो देवगुरुः सितस्त्रिधनगो मध्याः प्रतिष्ठाक्षणे,
अर्केदुक्षितिजाः सुते सहजगो जीवो व्ययास्तारिगः
शुक्रो व्योमसुते विमध्यमफलः सौरिश्च सद्भिर्मतः २

(अर्थः)–प्रतिष्ठालग्नमें शनि, सूर्य, या मंगल, तीसरे, छठे वेठे हो तो अछे, चंद्रमा दुसरे, या तीसरे, वेठा हो तो अछा, बुध, पहले, दुसरे, तीसरे, पांचमे, या दशमे हो तो उमदा, बृहस्पति दुसरे, केंद्रमें, पांचमे या नवमे हो तो अछा, शुक्र पाचमे, नवमे या दशमें हो तो अछा, राहु केतु पहले या सातमे वेठे हो तो अछे, और ग्यारहमे भुवनमें चाहे सो ग्रह वेठे हो–सभी ग्रह अछे होते हैं, दशमे सूर्य वेठा हो तो मध्यम, छठे नवमे या केंद्रमे चंद्रमा वेठा हो तो मध्यम, बुध छठे, सातमे, नवमे, मध्यम, छठे, बृहस्पति मध्यम, और शुक्र दुसरे, तीसरे, मध्यम, सूर्य, चंद्रमा या मंगल, पाचमे ठीक नही, तीसरे

मध्यम, सूर्य चंद्रमा या मंगल, पांचमे ठीक नही, तीसरे बृहस्पति अछा नही, छठे, सातमें, बारहमे शुक्र ठीक नही. पाचमें, दसमें, शनि ठीक नही.–

प्रतिष्ठालग्नमें सूर्य निर्बल हो तो जिनप्रतिमा बेठानेवालेके लिये अछा नही, चंद्र निर्बल हो तो प्रतिमा बेठानेवालेकी औरतके लिये ठीक नही, शुक्र निर्बल हो तो दौलतका नुकशान हो, केंद्र या त्रिकोणमे सूर्य मंगल या शनि बेठे हो तो उस मदिरकी तरकी न होगी, दिनपर दिन हानि होती रहेगी, सूर्य मंगल, शनि, राहु या केतु इनमेसे कोईभी ग्रह सप्तमस्थानमें शुक्रके शाथ बेठा हो तो कारिगरकों प्रतिमा बेठानेवालेको और प्रतिष्ठाकारक गुरुको नुकशानकारक है, केंद्र या त्रिकोणमे शनि बलवान् होकर बेठजाय और उसको मित्रग्रह देखते हो, उसवख्त अछे कामकी नींव डालना ठीक नही.–

प्रतिष्ठालग्नमे शनि बलवान् हो, मंगल, बुध बलहीन हो, मेष, वृषका सूर्य या चंद्र हो, ऐसे वख्तपर प्रतिष्ठा किइजाय निहायत उमदा है, प्रतिष्ठालग्नमें तीसरे, छठे, या ग्यारहमें भुवनमे सूर्य बेठा हो, और अगर उस रौज तिथिवार बुरेभी हो कोई हर्ज नही, प्रतिष्ठालग्नमें पहले, चौथे, पांचमे, नवमे या दशमे–बृहस्पति, या शुक्र बेठा हो, निहायत उमदा है, सूर्य, चंद्र, मंगल, शनि, या केतु तीसरे, छठे, या ग्यारहमें बेठे हो निहायत उमदा, बुध, बृहस्पति, या शुक्र केंद्रमें बेठे हो, और उनको कोई क्रूरग्रह न देखते हो तो अछा है, लग्नमे बुध, गुरु, या शुक्र हो तो लग्नके दूसरे दोषों तर्फ खयाल करना जरूरत नही, ये सब दोषोंके मिटानेवाले शुभ ग्रह है.–

नजुमसें स्वरोदयज्ञान ज्यादा बलवान् है, सामान्य दिनशुद्धि देखकर चंद्रस्वरमे जलतत्व चलते वख्त अगर वर्द्धमानविद्या पढकर जिनप्रतिमा बेठाई जाय निहायत उमदा है, सूर्यस्वर चलते वख्त प्रतिमा बेठाना अछा नही, आफत पेश होगी, इसलिये अपने चंद्रस्वरमे जलतत्व चलते वख्त प्रतिमा बेठावे, और प्रतिष्ठा करानेवाले

गुरु अपने चंद्रस्वर जलतत्वमें जिनप्रतिमापर वासक्षेप करे तो निहायत उमदा है.–

[ बयान प्रतिष्ठामुहूर्त्तका बजरीये नजुमके खतम हुवा, ]

१ ग्रहण होनेसे पेस्तर सात दिन, और पीछले सात दिन, दग्धतिथि कही, इनदिनोंमें अछे कामकी शुरूआत करना ठीक नही, जिस नक्षत्रपर सूर्य हो, उस नक्षत्रसें चोथा, छठा, नवमा, दसमा, तेरहमा, ओर वीसमा इनमेसें कोई नक्षत्र हो, उसरोज रवियोग जानना, उसरोज जो काम करोगे, फतेह पाओगें.–

२ विशोत्तरीदशाकी अपेक्षासें मेषलग्नमे बुधकी दशा बुरी होती है, वृषभलग्नमें चंद्रमाकी दशा बुरी होती है, मिथुनलग्नमे सूर्यकी दशा खराब होती है, कर्कलग्नमे मंगलकी दशा बुरी होती है, सिंहलग्नमे शनिकी दशा अछी, और मंगलकी दशा खराब होती है, कन्यालग्नमें मंगलकी दशा खराब होती है, तुलालग्नमें मंगलकी दशा अछी होती है, और वृश्चिकलग्नमे बुधकी दशा अछी होती है, शुक्रकी दशामें राहुका अतर तीनवर्सका और राहुकी दशामें शुक्रका अतर तीनवर्सका होता है, वो बुरा फल करता है, सब बातका नुकशान होगा.

३ संध्यागत नक्षत्र उसकों जानना, जो सूर्य अस्त होते वख्त उदय हो, और वो नक्षत्र अछे काममे लेना मना है, रविगत नक्षत्र उसको कहना, जिस नक्षत्रपर सूर्य हो, उसरोज किसीकामकी शुरूआत करे तो काम फतेह न हों, राहुगत नक्षत्र उसको कहना जिस नक्षत्रपर राहु हो, उस नक्षत्रके रोज किसी कामकी शुरूआत करे तो तकलीफ हो, ग्रहभिन्न नक्षत्र उसको समजना, जिसनक्षत्रके वीचहोकर कोई ग्रह चलाजाय उसनक्षत्रके रोज किसीकामका मुहूर्त्त करना नही चाहिये, अगर करे तो फतेहमंद न हो, मुसाफरी जाते वख्त चंद्रमा सन्मुख या दाहना और योगिनी पिछाडी या बायीतर्फ अछी, दिग्शूल बायीतर्फ रहना ठीक है.–

| (नाम) | (राशि,) | (नक्षत्र,) | (चिन्ह,) |
|---|---|---|---|
| १ रिषभदेव, | धन, | उत्तराषाढा, | वृषभ, |
| २ अजितनाथ, | वृषभ, | रोहिणी, | हस्ती, |
| ३ संभवनाथ, | मिथुन, | मृगशीर्ष, | अश्व, |
| ४ अभिनंदन, | मिथुन, | पुनर्वसु, | कपि, |
| ५ सुमतिनाथ, | सिंह, | मघा, | क्रौंच, |
| ६ पद्मप्रभु, | कन्या, | चित्रा, | पदम, |
| ७ सुपार्श्वनाथ, | तुला, | विशाखा, | स्वस्तिक, |
| ८ चंद्रप्रभ, | वृश्चिक, | अनुराधा, | चंद्रमा, |
| ९ सुविधिनाथ, | धन, | मूल, | मत्स्य, |
| १० शीतलनाथ, | धन, | पूर्वाषाढा, | श्रीवत्स, |
| ११ श्रेयांसनाथ, | मकर, | श्रवण, | गेंडा, |
| १२ वासुपूज्य, | कुंभ, | शतभिषा, | महिष, |
| १३ विमलनाथ, | मीन, | उत्तराभाद्रपद, | वराह, |
| १४ अनंतनाथ, | मीन, | रेवती, | सिंचाणा, |
| १५ धर्मनाथ, | कर्क, | पुष्य, | वज्र, |
| १६ शांतिनाथ, | मेष, | अश्विनी, | मृग, |
| १७ कुंथुनाथ, | वृषभ, | कृत्तिका, | अज, |
| १८ अरनाथ, | मीन, | रेवती, | नंद्यावर्त्त, |
| १९ मल्लिनाथ, | मेष, | अश्विनी, | कलश, |
| २० मुनिसुव्रत, | मकर, | श्रवण, | कच्छप, |
| २१ नमिनाथ, | मेष, | अश्विनी, | कमल, |
| २२ नेमिनाथ, | कन्या, | चित्रा, | शंख, |
| २३ पार्श्वनाथ, | तुला, | विशाखा, | सर्प, |
| २४ महावीर, | कन्या, | उत्तराफाल्गुनी, | सिंह, |



[ दुनियामें चलते हुवे बडेबडे संवत्सरोंका बयान, ]

दुनियामें कई राजे महाराजोंके संवत् चलचुके, चलते है, और चलेगें, दुनिया कदीमसे चली आती है, और चलती रहेगी, इसका अवल आखीर नही, कालचक्र बदलता रहता है, इस भारतवर्षके इस चालु कालचक्रमें जैनमजहबके आदि ब्रह्मा रिषभदेव तीर्थंकर हुवे, उसवख्त अयोध्यानगरीकी जगह एक विनीता नगरी आबाद थी, उस नगरीके महाराजा तीर्थंकर रिषभदेव थे, उनका संवत् चला.–

१ तीर्थंकर रिषभदेव संवत् जिसको आज एक कोटान् कोटि सागरोपमकाल बतीत हुवा, जैनलोग सागरोपमकाल किसकों कहते है, उसका खुलासा देखना हो तो जैनशास्त्र देखो.–

२ भरतचक्रवर्त्ती संवत्, भरतचक्रवर्त्ती राजा तीर्थंकर रिषभदेवके संसारी हालतके बेटे थे, जिसके नामसे, इस मुल्कका नाम भारतवर्ष कहा जाता है, राजारामचंद्रजीके छोटेभाई भरतजी जुदे हुवे, यह भरतचक्रवर्त्ती जुदे हुवे, इसतरह चौइस तीर्थंकर और बारह चक्रवर्त्ती राजे हुवे और उनके नामके संवत् चले, जैनमजहबके अखीर तीर्थंकर महावीर मुल्क मगधके क्षत्रियकुंड नगरमें हुवे, उनका निर्वाण संवत् आज (२४५०) चलता है.–

३ ब्रह्माजीका संवत्, जो वैदिकमजहबमें मशहूर है.–

४ युधिष्ठिर संवत्,–

५ पर्शुराम संवत्,–

६ चीनी संवत् जो मुल्कुचीनमें उनके अवल बादशाहसे चला है.–

७ मुल्कमिश्रवालोंका संवत्, उनके अवल बादशाहसे चला है.–

८ इरानी संवत्,–

९ यहूदी संवत्,–

१० कलियुगी संवत्, जो कलियुगकी शुरूआतसे चला है.–

११ युनानी संवत्,–

१२ सिकंदर संवत्,-
१३ दाहूदी संवत्,-
१४ रूमी संवत्, रूमके अवल बादशाहसे चला,-
१५ बौध संवत्, शाक्यमुनि गौतमबुधसे चला, जो-शुद्धोदन राजाके बेटे थे, और कपिल वस्तु गामके-राजपुत्र थे, जैनमजहबमे जो गौतमगणधर इसी अर्सेमें हुवे, वे जुदे थे, जो धनवरगोवर गामके रहनेवाले विप्र वसुभूतिके बेटे थे,
१६ विक्रम संवत्,-
१७ ईस्वीसन सवत्, हजरत इशाहमसीहके वख्तसे चला.-
१८ शालिवाहन संवत्.-
१९ सन हिजरी महम्मदी संवत्.-
२० नानकशाही सवत्.-

वगेरा वगेरा कइ संवत् चलते है, यहां बडे बडे संवत्सरोंके नाम जो मशहूर थे, बतलाये है.-

[दुनियामे चलतेहुवे बडेबडे संवत्सरोंका बयान खतम हुवा,]

[किस नक्षत्रके रौज कौनसी चीज खाकर मुसाफरीको जाना,]

१ अगर कोइ शख्श कृत्तिकानक्षत्रके रौज मुसाफरी जावे तो चलतेवख्त पांच साततोले दही खाकर जावे, काम फतेह होगा, आर्द्रा नक्षत्रके रौज जाय तो दो चार तोले ताजा मखन खाकर जावे, काम फतेह होगा, पुनर्वसुनक्षत्रमें मुसाफरीकों जावे तो दो चार तोले ताजा घृत खाकर जावे, इरादा पूर्ण होगा, पुष्यनक्षत्रके रौज सफरकों जावे तो क्षीर खाकर जाय, मनोवांछित काम होगा, चित्रानक्षत्रमें मुसाफरी जाय, पकाई हुई मुगकी दाल खाकर जावे, काम फतेह होगा, स्वातिनक्षत्रमे जाय तो किसीतरहका मीठा फल खाकर जावे, मुराद पुरी होगी, अभिजित् नक्षत्रमें अगर मुसा-

फरीकों जावे तो गुलाब चमेली जाई जुई मोघरा डमरामरुवा वगेरा किसीतरहका खूशबूदार फुल खाकर जावे, इरादा पूर्ण होगा, श्रवण नक्षत्रमे अगर कोई मुसाफरीको जाय क्षीर खाकर रवाना हो, दिलकी मुराद पार पडे, अगर कोई शतभिषानक्षत्रमें मुसाफरीकों जाय तो पकाई हुई तूअरकी दाल खाकर जावे, तो काम फतेह होगा, भरणीनक्षत्रमे कोई सफरको जाय तो पके हुवे चावलमें थोडे तिल मिलाकर खावे और रवाना हो, इरादा पूर्ण होगा, उपर दिखलाये हुवे नक्षत्रोंमें अगर कोई शख्श चंद्रस्वरमे बायापांव उठाकर मुसाफरी करे तो उसका काम फतेह होगा, इसमें कोई शक नही, मगर इतना याद रहे ! चलते वख्त नाशाग्र दृष्टि रखकर मनवचनकायाकी एकाग्रतासे तीन दफे परमेष्ठि महामंत्रका मनमें जप करे, और चौईस तीर्थकरोंके नाम लेवे, फिर मुसाफरीको जाय तो दिलकी मुराद पूरी होगी, इसमें कोई शक नही.–

२ इस नजुमशास्त्रकों अगर कोई पुरी तौरसे बाचेगा, नजुम शास्त्रका कईतरहका फायदा होगा, सवत्का वरतारा निकालनेकी तरकीब और सप्तनाडीचक्र इसकदर उमदा है, अगर कोई इसको देखकर हरसालका वरतारा निकालना चाहे तो निकाल सकेगा, और आमलोगोको फायदा पहुंचा सकेगा, जन्मपत्रिका और बारहभावोका फल थोडा पढा हुवा नजुमीभी उमदा तौरसें जान सकेगा, और दुसरोको बतला सकेगा.–

## [ वस्तुकी तेजी मंदी जाननेकी तरकीब ]

१ वस्तुकी तेजी मंदी जाननेके लिये पहले उनकी राशिकों जानना चाहिये, विना राशि जाने तेजी मंदी मीलसकेगी नही, कपासकी मिथुनराशि, अलसीकी मेषराशि, एरडेकी वृषभराशि, चांदीको शास्त्रोंमें रजत लिखा है, इसलिये उसकी तुलाराशि सूत्रकी कुंभराशि, मोतीकी बोलते नामसें सिहराशि होती है, मगर

उसकी पैदाश जलसे है, इसलिये शास्त्रोंमे उसकी मीनराशि लिखी, शैरकी कुंभराशि, सोनेकी बोलते नामसे कुंभराशि आती है, मगर शास्त्रोंमें उसकी मेष राशि फरमाई, सरसवकी कुंभराशि, गेहुकों शास्त्रोंमें गोधूम लिखा, इसलिये उसकी कुंभराशि हुई, चावलको शास्त्रोंमें अक्षत बोलते है,अक्षतकी मेषराशि, बाजरेकी वृषभराशि, जवारकी वृश्चिकराशि, सबब-शास्त्रोंमे इसका नाम युगंधरी लिखा है,-तिलकी तुलाराशि, खाडकों शास्त्रोंमें शर्करा, बोलते है. उसकी कुंभराशि, और वस्त्रकी वृषभराशि हुई, इसतरह चीजोंकी राशि निश्चय करके उपर बतलाई हुई तरकीबसे तेजी मंदी देखना.-

२ पहले पाच क्रूरग्रहोंका बयान तेजी मदीके लिये सुनिये! सूर्य, मगल, शनि, राहु, और केतु ये पाच क्रूरग्रह है, जिस राशिसे सूर्य, मगल, शनि, राहु या केतु, इनमेसे कोईभी ग्रह, तीसरे, छठे, दसमें, ग्यारहमे आजाय तो उस राशिकी चीजोंके भाव मदे होजाय, सबब ये उपचयस्थान है, जिस राशिसें इन्ही पांचग्रहोंमेंसें कोई क्रूरग्रह पहले, दुसरे, चौथे, पाचमे, सातमें, आठमे, नवमे, या बारहमे आजाय तो उस राशिकी चीजोंके भाव तेज होजाय, सबब ये पीडास्थानपर ग्रह है.-

[अब चार सौम्यग्रहोंका बयान तेजीमदीके लिये देखिये]

३ जिस राशिसें चंद्रमा चौथे, आठमें, बारहमे आजाय तो उस राशिकी-चीजोंके भाव तेज होजाय, जिस राशिसें चंद्रमा पहले, दुसरे, तीसरे, पाचमे, छठे, सातमे, नवमें, दसमें, ग्यारहमे आजाय तो उस राशिके भाव मंदे होजाय, जिस राशिसें बुध दुसरे, पांचमें, आठमें, दसमें, या ग्यारहमे आजाय तो उस राशिकी चीजोंके भाव मंदे होजाय, और जिस राशिसें बुध पहले, तीसरे, चौथे, छठे, सातमे नवमे, या बारहमे आजाय तो उस राशिकी चीजोंके भाव तेज होजाय,-जिस राशिसें बृहस्पति दुसरे, चौथे, पांचमे, सातमे, नवमे, दसमे और ग्यारहमे स्थानपर आवे तो उस राशिकी चीजोंके भाव मंदे

होजाय, और जिसराशिसे पहले, तीसरे, छठे, आठमें, बारहमें स्थानपर आवे तो उस राशिकी चीजोंके भाव तेज हो जाय, जिस राशिसें शुक्र पहले, दुसरे, तीसरे, चौथे, पांचमें, आठमे, नवमें, दशमें, ग्यारहमें या बारहमें स्थानपर आवे तो उसराशिकी चीजोंके भाव मंदे होजाय, और जिसराशिसें शुक्र छठे, सातमे स्थानपर आवे तो उस राशिकी चीजोंके भाव तेज हो, मगर इतना याद रहे! जिस राशिसें कोई ग्रह तेजीकरनेके स्थानमें आजाय और उस वख्त उस राशिकों कोई शुभ ग्रह बलवान् होकर देखता हो तो तेजी न करे, और जो उस राशिको कोई अशुभग्रह बलवान् होकर देखता हो तो तेजी जरूर करे.–

४ चंद्र या सूर्य जिसजिस राशिमें जाय उसवख्त अगर उस राशिमें मित्रग्रह बेठे हो या मित्रग्रह उनको यानी चंद्र सूर्यको पूर्ण दृष्टिसे देखते हो तो तेजी करनेके स्थानपरभी मंदीकरनेके सूचक होजाय, और अगर अशुभग्रहोंके शाथ होजाय यानी शनि राहु या केतूके शाथ हो जाय या ये अशुभग्रह उनकों पूर्ण दृष्टिसे देखते हो तो मंदीरनेके स्थानपरभी तेजी करनेके सूचक होजाय, चंद्र सूर्य मंगल और बृहस्पति आपसमें नैसर्गिक मैत्रीसे मित्र है, बुध शुक्र सौम्यग्रह है, अगर इनके शाथ चंद्र सूर्य आजाय तो मंदी-करे और उपर दिखलाये मुजब शनि राहु केतुके शाथ आजाय तो तेजी करे.–

५ सूर्य, मंगल, शनि, राहु केतु ये पांच क्रूरग्रह, और चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र चार सौम्यग्रह जो उपर बतला चुके है, और उनके तेजी मंदीके स्थानभी बतला चुके है, उसउस जगहपर समजो वे आये है, या उनके नवांशमेभी उसउस जगहपर आये है, अगर उसवख्त वे उंच, मित्रक्षेत्री, या स्वगृही हो तो पुरा फल करेंगे, तेजीके स्थानमे हो तो तेजी और मंदीके स्थानमें हो तो मंदी करेंगे, अगर नीच, अस्त, या शत्रुक्षेत्री होगे तो कमजोर होनेसे अपनी तेजी या मंदी कुछ करसकेगें नही, ये सब नैसर्गिक मैत्रीकी अपेक्षा बात कही गई.

६–[ वस्तुकी तेजी मंदी देखनेकी दुसरी तरकीब, ]

वस्तुकी तेजी मंदी ग्रहोंकी तात्कालिकमैत्रीसेभी देखी जाती है, तात्कालिक मैत्री उसको कहते हैं,–"अन्योन्यस्य धनव्ययाय-सहजव्यापारबंधुस्थितास्तत्काले सुहृदः–"जिस ग्रहसे जो ग्रह दुसरे, तीसरे, चौथे, दशमे, ग्यारहमें, बारहमें, आजाय वो ग्रह तात्कालिक मैत्रीमें मित्र हुवा, उससेभी तेजी मंदी देखना, अगर इससे किसीको पुरी माहिती न मीले तो किसी अछे नजुमीकों मिलकर पुछे और माहिती हासिल करे, इल्म वो चीज है, जिसमे बडेबडे अक्लमंद चक्र खाजाते है, सौच समजकर करना चाहिये, जैसे कार्पासकी राशि मिथुन है, और उस राशिका मालिक बुध हुवा, जिसवख्त बुध जहां जिस राशिमें बेठा हो उस राशिका मालिक उसवख्त बुधसे दुसेरे, तीसरे, चौथे, दशमे, ग्यारहमे, बारहमे हो तो मित्र हुवा उसवख्त बुध बलवान् हो गया, उससबब वो बुध पुरा फल देगा, ऐसा जानना, अगर निर्बल हो तो फल न देगा, चंद्रमा जिसजिस वख्त जिसजिस राशिमे आवे उसवख्त उस राशिके मालिकसे तात्कालिक मैत्रीमे मित्र है या शत्रु है इस बातको देखो, चंद्रमा उस राशिके मालिकका तात्कालिक मैत्रीमे मित्र हो तो पुरा फल देगा, अगर शत्रु हो कमजोर होनेसे फल न देगा.–

७ जो ग्रह राहुके शाथ बेठा हो और राहुके अंशोंसे कमती अंश हो वो राहुके मुखमें आगया जानना, जैसे राहु सिंहराशिका (२०) अंश है, और चंद्रमा सिंहराशिका (९) अंश है, इनका अंतर (११) अंशका हुवा, उसवख्त चंद्रमा राहुके मुखमे है, ऐसा जानना, इसीतरह सब ग्रहोंके लिये समज लेना, जो ग्रह राहुके मुखमें आया वो कमजोर होगया, उसवख्त वो कुछ फल नही करसके, (१२) अंशसे ज्यादा अंतर हो तो उसवख्त वो ग्रह राहुके मुखमें नही ऐसा जानना, वो ताकातवाला है, फल जरूर करेगा.–

[ वस्तुकी तेजी मंदी देखनेकी तरकीब खतम हुवा ]

## १-[ नजुमीकों कोई किसीतरहका सवाल पुछने आवे तो आगे लिखीहुई तरकीवसें जवाब देवे. ]

( अनुष्टुप् वृत्तम् , )

आगतं पृच्छकं दृष्ट्वा, तत्कालं लग्नमादिशेत्,
शुभाशुभं फलं वाच्यं, सर्वदा गणिकोत्तमैः-१

( अर्थः )-सवाल पुछनेवाला शख्श जब सवाल करे,-नजुमी उसी वख्तका इष्टशोधन करके लग्न निकाले, और उस लग्नमें देखे लग्नेश बलवान् है या नही ? लाभेश या भाग्येशकोंभी देखे, बलवान् है या निर्वल ? लग्नेश, लाभेश या भाग्येश इनमेंसे तीनो या दो या एक बलवान् हो तो पुछाहुवा सवाल फतेह मंद होगा, अगर निर्बल हो, तो सवाल फतेहमंद न होगा.

## २-[ सूर्यवगेरा आठग्रहोंसें ज्ञानावरणीयवगेरा आठकर्मोंका हाल देखनेकी तरकीव, ]

१ सूर्यसे ज्ञानावरणीय कर्मका हाल देखना, जिसकी जन्मपत्रिका या प्रश्नपत्रिकामें-साधुमहाराजकी दीक्षाके लग्नकी पत्रिकामे अगर सूर्य उंचका स्वगृही या मित्रक्षेत्री हो तो वो शख्श बहुतज्ञानवान् होगा, और अगर, नीचका अस्त या शत्रुक्षेत्री हो तो वो शख्श ज्ञानवान् कम होगा, २ चंद्रमासें दर्शनावरणीय कर्मका हाल देखना, जिसके चंद्रमा उंच, स्वगृही, या मित्रक्षेत्री हो, मित्रग्रह-या-शुभग्रह उसको देखते हो या शाथ बेठे हो तो उसकी धर्मपर निहायत उमदा श्रद्धा वनी रहे, यानी वो शख्श धर्मपर कामील एतकात हो, ३ मंगलसें वेदनीय कर्मका हाल देखना, ४ बुधसे मोहनीय कर्म देखना, ५ बृहस्पतिसे नामकर्मका हाल देखना, यानी इज्जत आबरु कैसी रहेगी वगेरा बात जानना, ६ शुक्रसे गोत्रकर्मका हाल देखना, ७ शनिसे आयुष्यकर्मका और राहुसें अंतराय कर्मका हाल देखना.-

३ आसमानमें ग्रह, नक्षत्र, तारा, और जो चद्र-सूर्यके विमान दिखाई दे रहे है, उनके मिलने न मिलनेके निमित्तसें ज्ञानियोंने नजुमकों बयान किया, और वो सचा है, मगर देखनेवाला सचा होना चाहिये, नजुम बेशुमार है, जितना मालुम हुवा यहा दर्ज किया है, ज्ञानियोंने नजुमको अछी तौरसें देखा तो इम्तिहानके मेंदानमे सचा पाया.–

१–[ बयान ग्रहशांतिका मुताबिक जैनशास्त्रके. ]

ग्रहशातिकेलिये जापवगेराका काम करना तो जिनमंदीरमें नही, अपने घरके मकानमे करना, सबब यह काम अपने संसारके मतलबका है, ग्रहशांतिका जाप खुद करे, या दुसरेके पास खर्चा देकर करावे, और उसका अनुमोदन करे, तो अनिकाचित अशुभकर्म दुरहोकर पुन्य हासिल होसकता है, जैनशास्त्रोंमें फरमान है, करन, करावन, और अनुमोदनसें जीवकों पुन्य मिलता है.–

सूर्यकी शातिके लिये तीर्थंकर पदमप्रभुकी तस्वीर चित्रामकी बनीहुई-सामने रखकर वासक्षेपसें उसकी पूजा करे, पूजनके वख्त लालवस्त्र पहने, जापके वख्त माला माणककी, लालरेशम या लालसूत्रकी रखे, बेठनेके लिये लालरगका आसन लेवे, धूप, दीपके शाथ आगे लिखे हुवे मत्रका जाप (१२५००) दफे एकीसरोजमे करे,

ॐ पद्मप्रभजिनेंद्रस्य नामोच्चारणभास्कर,–
शांतिं तुष्टिं च पुष्टिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियं,–

गेहुके बनाये हुवे लाडु बतौर नेवेद्यके चढावे, लालरगके फल अनार, लालरगकी छालके केले, अजीर वगेरा चढावे, फुलोमें लालरंगके गुलाब जासुस वगेरा और गेहुका स्वस्तिक करे, या चावलकों लालरगसे रगकर उसका स्वस्तिक करे,–

जिनमंदिरमे माणकका तिलक जिनप्रतिमाको चढावे, तांबेके बर्तनोंमे तांबेकी बनीहुई तामाकुंडी लोटा, वगेरा, और कपडोंमे लालरगके शाल, दुशाले, पहननेके लिये लालरगके रेशमी धोती,

दुपट्टे और चंदावे तोरण भेट देवे, और अपने हाथमें हमेशांके लिये माणककी अंगुठी पहने.–

२ चंद्रमाकी शांतिके लिये तीर्थंकर चंद्रप्रभुकी तस्वीर चित्रामकी बनीहुई-सामने रखकर वासक्षेपसें उसकी पूजा करे, पूजनके वख्त सफेद कपडे पहने, जापके वख्त माला हीरेकी चांदीकी सफेद-रेशम या सफेद सूत्रकी रखे, बेठनेके लिये सफेदरंगका आसन लेवे, धूप दीपके शाथ आगे लिखेहुवे मंत्रका जाप (१२५००) दफे एकीस रौजमें करे.–

ॐ चंद्रप्रभजिनेंद्रस्य, नाम्ना तारागणाधिप,
प्रसन्नो भव शांतिं च, रक्षां कुरु जयश्रियं,–१

सफेदरंगका नैवेद्य, बरफी, पेंडे, सूत्रफेणी वगेरा चढावे, सफेद-रंगके फलोंमें श्रीफल, अमरुद, शिताफल वगेरा चढावे, फुलोंमें, सफेद गुलाब, केवडा, मोघरा, चमेली, वगेरा, चढावे और चावलका स्वस्तिक करे.–

जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाकों हीरेका तिलक चढावे, चांदीका कलश, रकाबी, कटोरी वगेरा, और कपडोंमें सफेदरगके शाल, दुशाले और सफेदरेशमके धोती, दुपट्टे, चंदोवे तोरण भेट देवे, और अपने हाथमें हमेशांकेलिये हीरेकी अगुठी पहने.–

३ मंगलकी शांतिके लिये तीर्थंकर वासुपूज्य भगवान्‌की चित्रामकी बनीहुई-तस्वीर सामने रखकर वासक्षेपसे उसकी पूजा करे, पूजनके वख्त लालरगके कपडे पहने, जापकेवख्त माला, मुंगेकी लालरेशम या लालसूत्रकी रखे, बेठनेकेलिये लालरंगका आसन लेवे, धूप दीपके शाथ आगे लिखेहुवे मत्रका जाप (१२५००) दफे एकीस रौजमें करे.

ॐ सर्वदा वासुपूज्यस्य, नाम्ना शांतिं जयश्रियं,
रक्षां कुरु धरासूनो, अशुभोपि शुभो भव,१–

लालरगका नैवेद्य गेहुं और गुड मिलाकर बनायेहुवे लाड्

चढावे, लालरंगके फलोंमें लालछालके केले, लालरंगकी सेलडी, लालरगके सुकेछहारे चढावे, फुलोंमे लालरगके गुलाब जासुस, और लालरगसे रगेहुवे चावलोका खस्तिक करे.–

जिनमदिरमें जिनप्रतिमाकों माणकका तिलक चढावे, तांबेके बर्तनोंमें तांबाकुडी लोटा वगेरा, और कपडोमे लालरगके शाल, दुशाले, पहननेके लिये लालरगके रेशमी धोती दुपट्टे और चंदोवे तोरण भेट देवे, और अपने हाथमे हमेशाके लिये, माणककी अंगुठी पहने.–

४ बुधकी शांतिके लिये तीर्थंकर शांतिनाथ महाराजकी तस्वीर चित्रामकी बनी हुई, सामने रखकर वासक्षेपसें उसकी पूजा करे, पूजनकेवख्त पीलेरगके कपडे पहने, जापकेवख्त माला सोनेकी पीलेरगके रेशम या सूत्रकी रखे, बेठनेके लिये पीलेरगका आसन लेवे, धूप, दीपकेशाथ आगे लिखे हुवे मंत्रका जाप ( १२५०० ) दफे एकीस रोजमे करे.–

ॐ विमलानंतधर्मारा:, शांतिः कुंथुर्नमिस्तथा,
महावीरश्च तन्नाम्ना, शुभो भूयात् सदा बुधः,१

पीले रगके नैवेद्यमें मगनके लाडु केशर डालीहुई पीलेरगकी बरफी चढावे, फलोंमे नारगी, मुसंबी, पीलेरगकी छालके केले चढावे, फुलोंमे केशरी चंपेके पीले फुल, या पीलेरगके गुलाबके फुल चढावे, और केशरसें रगेहुवे पीले चावलका स्वस्तिक करे.–

जिनमदिरमे जिनप्रतिमाकों पुखराजका तिलक चढावे, सोनेका कलश, रकाबी या कटोरी देवे, और कपडोंमे पीलेरगके शाल, दुशाले, और पीले रेशमके धोती, दुपट्टे, चंदोवे तोरण भेट देवे, और अपने हाथमे पुखराजकी अंगुठी पहने.–

५ बृहस्पतिकी शांतिके लिये, तीर्थंकर रिषभदेव भगवानकी तस्वीर चित्रामकी बनीहुई-सामने रखकर वासक्षेपसे उसकी पूजा करे, पूजनके वख्त पीलेरगके कपडे पहने, जापके वख्त माला

कहेरवेकी सोनेकी पीले रेशम या सूत्रकी रखे, बेठनेके लिये पीले-रंगका आसन लेवे, धूप दीपके शाथ आगेलिखे हुवे मंत्रका जाप (१२५००) दफे एकीस रौजमें करे.–

ॐ ऋषभाजितसुपार्श्वौ, श्चाभिनंदनशीतलौ,
सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसश्च जिनोत्तमः१
एतत्तीर्थकृतां नाम्ना, पूज्योऽशुभः शुभो भव,
शांतिं तुष्टिं च पुष्टिं च, कुरु देवगणार्चित, २

पीलेरंगके नैवेद्यमें मगजके लाडु केशर डालीहुई पीलेरंगकी बरफी चढावे, पीलेरगके फलोंमें नारगी, मुसंवी, पीलेरगकी छालके केले चढावे, फुलोंमें केशरी चंपेके पीलेफुल, या पीले-रंगके गुलाबके फुल, वगेरा, और केशरसें रगेहुवे चावलोंका स्वस्तिक करे.–

जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाकों पुखराजका तिलक या सोनेका छत्र चढावे, सोनेका कलश, रकानी, या कटोरी वगेरा और कपडोंमें पीलेरगके शाल, दुशाले, और पहननेके लिये धोती दुपट्टे, या चंदोवे तोरण भेट देवे, और अपने हाथमें हमेशांके लिये पिरोजेकी अंगुठी पहने.–

६ शुक्रकी शांतिकेलिये तीर्थंकर सुविधिनाथ भगवान्‌की तस्वीर चित्रामकी बनीहुई-सामने रखकर वासक्षेपसें उसकी पूजा करे, पूजनके वख्त सफेद कपडे पहने, जापके वख्त, माला मोतीकी चांदीकी सफेदरेशम या सफेदसूत्रकी रखे, बेठनेकेलिये सफेदरगका आसन लेवे, धूप दीपके शाथ आगे लिखेहुवे मंत्रका जाप (१२५००) दफे एकीस रौजमें करे.–

ॐ पुष्पदंतजिनेंद्रस्य नाम्ना दैत्यगणार्चित,
प्रसन्नो भव शांतिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियं, १

सफेदरंगके नैवेद्यमें लाडु बरफी बतासें सूत्रफेणी या मिश्री वगेरा चढावे, सफेद रगके फलोंमे श्रीफल अमरुद, शिताफल

वगेरा चढावे, फुलोंमें सफेद गुलाब, केनडा, मोघरा, चमेली वगेरा चढावे, और चावलोंका स्वस्तिक करे.–

जिनमंदिरमे जिनप्रतिमाको हीरेका तिलक या मोतीयोंका हार चढावे, चांदीके कलश, रकावी, कटोरी वगेरा, और कपडोंमे सफेदरगके शाल, दुशाले, सफेदरगके धोती दुपट्टे, चंदोवे तोरण भेट देवे, और अपने हाथमे हमेशांकेलिये हीरेकी अगुठी पहने.–

७ शनिकी शांतिके लिये तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रत भगवान्‌की तस्वीर चित्रामकी बनीहुई-सामने रखकर वासक्षेपसें उसकी पूजा करे, पूजनके वख्त आसानी रगके कपडे पहने, जापके वख्त माला अकलबेर कालेरेशम या सुत्रकी रखे, बेठनेके लिये आसानी रगका आसन लेवे, धूप दीपके शाथ आगे लिखेहुवे मंत्रका जाप ( १२५०० ) दफे एकीस रोजमें करे.–

ॐ श्रीसुव्रतजिनेंद्रस्य नाम्ना सूर्यांगसंभव,
प्रसन्नो भव शांतिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियं, १

नैवेद्यके लिये उडदकी दालके बनेहुवे लाडु या बडे चढावे, फलोंमे कालेरगकी सुकी द्राख, या कमलकाकडी वगेरा चढावे, फुलोमे लविंग चढावे, और आसानीरगसें रगेहुवे चावलोंका स्वस्तिक करे.–

जिनमंदिरमे जिनप्रतिमाकों नीलरत्नका तिलक चढावे, सोनेके कलश, रकाबी या कटोरी वगेरा, और कपडोंमें आसानी रंगके शाल, दुशाले, चंदोवे तोरण भेट देवे, और अपने हाथमें हमेशांके लिये नीलमकी अगुठी पहने.–

८ राहुकी शातिकेलिये तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान्‌की तस्वीर चित्रामकी बनीहुई-सामने रखकर वासक्षेपसें उसकी पूजा करे, पूजनकेवख्त आसानी रगके कपडे पहने, जापके वख्त माला अकलबेरकी आसानी रगके रेशमकी या सुत्रकी रखे, बेठनेके लिये आसानी रगका आसन लेवे, धूप दीपके शाथ आगे लिखेहुवे मंत्रका जाप ( १२५०० ) दफे एकीस रोजमे करे.–

ॐ श्रीनेमिनाथ तीर्थेश, नामतः सिंहिकासुत,
प्रसन्नो भव शांतिं च रक्षां कुरु कुरु श्रियं, १

नैवेद्यके लिये कालेतीलके बनेहुवे लाडु या तिलपापडी चढावे, फलोंमे कालेरंगकी द्राख या कमलगटे वगेरा चढावे, फुलोंमें लवींग चढावे, और आसानी रंगसें रंगेहुवे चावलोंका स्वस्तिक करे.

जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाकों नीलमरत्नका तिलक चढावे, सोनेके कलश, रकावी, या कटोरी वगेरा, कपडोमें आसानी रंगके शाल, दुशाले, और चंदोवे तोरण भेट देवे, और अपने हाथमें हमेशांके लिये नीलमकी अंगुठी पहने.–

९ केतुकी शांतिके लिये तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान्‌की तस्वीर चित्रामकी बनीहुई-सामने रखकर वासक्षेपसें उसकी पूजा करे, पूजनके वख्त हरेरंगके कपडे पहने, जापके वख्त माला, पंनेकी हरेरंगके रेशम या सूत्रकी रखे, बेठनेकेलिये हरेरंगका आसन लेवे, धूप दीपके शाथ आगे लिखेहुवे मंत्रका जाप (१२५००) दफे एकीस रोजमें करे.–

ॐ राहोः सप्तमराशिस्थकारेण दृश्यसंवरे,
श्रीमल्लिपार्श्वयोर्नाम्ना केतो शांतिं जयश्रियं, १

नैवेद्यके लिये पिस्तेकी बर्फी चढावे, फलोंमें हरेरंगकी छालके केले, आम, तरबुज वगेरा, और हरेरंगके फुलोंमें डमरा, मरुवा, वगेरा चढावे, और हरेरंगसे रंगेहुवे चावलोंसें स्वस्तिक करे.–

जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाकों पंनेका तिलक चढावे, बरतनोंमें चांदीके कलश रकावी या कटोरी वगेरा देवे, और कपडोंमें हरेरंगके शाल, दुशाले, पहननेकेलिये हरेरंगके रेशमी धोतीदुपट्टे, चंदोवे, तोरण भेट देवे, और अपने हाथमे हमेशांकेलिये पंनेकी अंगुठी पहने.–

## १०-[ ग्रहशांतिस्तोत्र, ]

( अनुष्टुप्-वृत्तम्, )

॥ जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् ॥
ग्रहशांतिं प्रवक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे ॥१॥
जिनेन्द्रैः खेचरा ज्ञेयाः, पूजनीया विधिक्रमात् ॥
पुष्पैर्विलेपनैर्धूपै-र्नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥
पद्मप्रभस्य मार्त्तंड-श्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च ॥
वासुपूज्ये भूमिपुत्रो, बुधोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥
विमलानंतधर्मारा:, शांतिः कुंथुर्नमिस्तथा ॥
वर्धमानस्तथैतेषां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥
ऋषभाजितसुपार्श्वा-श्चाभिनंदनशीतलौ ॥
सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसश्चैषु गीष्पतिः ॥५॥
सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः ॥
नेमिनाथे भवेद्राहुः, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥६॥
जन्मलग्ने च राशौ च, यदा पीड्यंति खेचराः ॥
तदा संपूजयेद्धीमान्, खेचरैः सहितान् जिनान्॥७॥

## ११-[ नवग्रहोंकी शांतिकेलिये मंत्र, ]

ॐ श्रीसूर्यसोमांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चर-राहुकेतवः सर्वे ग्रहाः मम सानुग्रहाः भवंतु स्वाहा,
ॐ ह्रीं असिआउसाय नमः-

इस मंत्रका ( १२५०० ) दफे धूप दीपके साथ जाप करना.-

[ इति नवग्रहशांतिपूजा समाप्ता. ]

१२-[ बयान आसन्न आयुदेखनेका. ]

( अनुष्टुप्-वृत्तम्. )

अल्पायुर्लग्नपे भानोः शत्रुर्मध्यं तु मध्यमे,
मित्रे लग्नेश्वरे तस्य दीर्घमायुरुदाहृतम्, १

( अर्थः )-जिसकी जन्मपत्रिकामें लग्नपति सूर्यका शत्रु हो तो अल्प आयु जानना, सम हो तो मध्यम आयु और मित्र हो तो लंबा आयुष्य जानना, मजकुर बयान नैसर्गिक मैत्रीसें और तात्कालिक मैत्रीसें पंचधा मैत्री मिलाकर देखना चाहिये, इससें उस शख्शके आयुष्यका अंदाज कितना होगा, मालुम पडेगा, महिना, तिथि, वार, वगेरा देखनेके लिये ज्यादा तलाश करना होगा, नजुमशास्त्र बडा है, पढोगे उतना मालुम होगा.-

[ बयान नजुम शास्त्रका खतम हुवा. ]

[ चिकित्सा-विद्या, ]

१ जीवकों पापकर्मके उदयसें बीमारी पैदा होती है, और जब पापकर्मका नाश होजाय तो विना इलाज किये आराम होजाता है, दुनियामें बडेबडे राजे महाराजे होगये, जिनकी खिदमतमें सेकडों वैद्य और हकीम मौजूद थे, हजारोंतरहकी दवायें मौजूद थी, मगर उनकी बीमारी मीटी नही, एक राजासाहब एक हकीमपर गुस्सा लाकर कहने लगे, इतने दिन मेरे खजानेसे तनखाह पाइ, और हजारों रुपये मेने तुमकों दिये, इतनेपरभी तुमने ऐसी दवा मुजे नही दिई जिससे मेरी बीमारी रफा हो, हकीमने अर्ज गुजारी, जो दवा जिस बीमारीपर मुकरर है, मेने आपकों तीनदफे दिई, मगर कारआमद नही हुई, इसका क्या किया जाय ? जब उम्र खतम होनेपर आती है, कोई दवा कार नही करती, इसका मतलब यह हुवा, निकाचितकर्मके सामने उद्यमभी वृथा जाता है, और अपने

पूर्वसंचितकर्म भोगने पडते है, इससें सबुत हुवा, कर्म बलवान् है, और उद्यम उसके सामने कमजोर है.-

२ बीमारीकी हालतमें बीमारी सताती है, मन चल विचल होता है, दवा लेनेसें मनकों धीरज रहती है, इसलिये व्यवहार नयसें दवा लेनेकी जरूरत है, तीर्थंकर गणधरोंने शास्त्रोंमें तरहतरहकी वनास्पति, जडी, बूटी, रस, रसायन वगेराके गुणदोष बयान किये और बीमारीयोंके व्यावहारिक उपावभी बतलाये है, उसीका नाम चिकित्साशास्त्र या आयुर्वेदशास्त्र है, बडेबडे आयुर्वेदीय पंडित बयान करते है, बीमारीका उपाव है, मगर आयुष्यका उपाव नही, बीमारीकी पहिचान करना, और उसकी दवा देना, वैद्य, हकीम, और डाक्तरोंका काम है, बीमार शख्शकी उम्र लंबी हो तो दवा कार करेगी, एकशास्त्र पढनेसें पुरेपुरे हकीम नही बनसकते, कइग्रंथ पढने पडते है, जभी आलादर्जेके हकीम बनसकते है, बीमार शख्शकों मुनासिब है, कमपढे हुवे हकीमकी दवा न लेवे, वैद्य, हकीम और डाक्तरोंकों हमेशां साफ कपडे पहनना चाहिये, विना बुलाये बीमारके घर जाना मुनासिब नही.-

३ जिसकों अछीतरह भूख लगती हो, नींद आती हो, और चलने फिरनेकी ताकात बनी हो, वो शख्श बीमार नही कहलाता, विना बीमारीके दवाखाना कोई जरुरत नही, जब भूख न लगे, नींद न आवे, चलने फिरनेकी ताकात न रहे तो जानना बीमारीकी शिकायत है, वैद्य, हकीम, या डाक्तरकों लाजिम है, किसीतरहका नशा न करे, नशाकरनेसें कौनसी दवा किसवख्त देना, याद न रहेगा, बीमार शख्शकों चाहिये हकीमके फरमानेपर यकीन रखे, और दवाकेलिये जो कुछ खर्च करना पडे खुले दिलसें करे, धन, माल, और खजाना अगर जींदगी नही तो किसी कामके नही, हकीमकों मुनासिब है, बीमारकों हिम्मत देवे, और कहते रहे, आप गभराईये नही, बीमारी जल्द आराम होजायगी.-

४ बीमारीकी पैदाश असलमें अजीर्णसें होती है, अजीर्ण कहो, या बदहजमी कहो, मतलब दोनोंका एक है, हरशख्शको लाजिम है, ज्यादा खाना न खावे, और अजीर्णसें बचे, ज्यादा एश करनेसें ताक़ात कम होजायगी, और तरहतरहकी बीमारी पेंश होगी, बीमार शख्शकों हवादार मकानमें रखना चाहिये, कई लोग बीमारकों अंधेरी कोठरीमें और बंदहवामें रखते है, इससें तो उसको ज्यादा तकलीफ होगी, और बीमारी बढेगी, बीमारकेलिये बिछौना मुलाइम होना चाहिये, और उसकी चदर जहांतक बने साफ रखना, एक दो रोजके बाद बीमारके बिछौनेकों धूपमें या हवामें डालते रहना ठीक है, याते बीमारके पसीनेकी बदबू उडजाया करे, बीमारके कपडे साफ रखना जरुरी है, बीमारके पास ज्यादा आदमी बेठे रहना ठीक नही, मगर बीमारकों अकेले छोडनाभी अछा नही.—

५ बीमारी बढजाय तोभी उनकों ऐसा कहना ठीक नही तुम! इसबीमारीसें फतेह न पाओगे, सबब इससें बीमारकी हिम्मत छुट जाती है, बल्कि! ऐसा कहतेरहना चाहिये, आपकी बीमारी जल्द मिटजायगी, और आराम पाओगें, बीमारके सामने हमेशां धर्मशास्त्रकी बातें सुनाना, और उनको फिक्र पैदा हो ऐसी बात नही कहना, बीमारकों हवाबदलनेकी जरुरत पडे तो जिसजगहकी हवा दुरुस्त हो, वहां लेजाना चाहिये, जो शख्श खानपानसे परहेज रखे उनको वगेरदवाके आराम होसकता है, और जो शख्श परहेज न रखे उनकों दवालेनेसेंभी कुछ फायदा न होगा, ज्यादा एशकरना, ज्यादा बोलना, ज्यादा बोजा उठाना, ज्यादा गर्मीमें फिरना, पेंशाबकों रोकना, और गीले मकानमें रहना बीमार पडनेकी सुरत है.—

६ जो शख्श हमेशां दातून नही करते, या दंतमंजनसें दांतकों साफ नही रखते, उनके मुंहमें बदबू आती है, मसूडोंमें दर्द, और दांतोंकी जड कमजोर होजाती है, इसलिये हरशख्शकों लाजिम है,

अपने मुंहकों साफ रखे, जो जो महाशय ! पढने लिखनेके काममें लगे रहते है, और रातके वख्तभी दिये बत्तीके सामने बांचते पढते रहते है, उनके सीरमें कमजोरी होजाती है, उनकों आगे दिखलाया हुवा इलाज करना चाहिये, छह मासे बादामकी गीरी, छह मासे ताजा घी, दो रति केशर, तीन रति छोटी पींपर, एक सोनेका वर्क, और छह मासे मिश्री लेना, ताजे घीकों अलग रखकर दुसरी सबचीजोंको कुटकर एक समान करना, फिर उसमें घी मीलाकर सवेरे दातून कुरलाकरके खाना, और उसपर (२०) तोले दुध गर्मकरके चद्रस्वरचलते वख्त पीना, इसतरह सातरोजतक करनेसें मग्जकों ताकात पहुंचेगी, और सीरकी कमजोरी मिटेगी, इतनेपरभी सीरमें दर्द न मीटे तो दो तोले चमेली या बेलेका तेल लेकर सीरपर मालीश करना, दर्द मिटेगा, और ताकात आयगी, लिखने पढनेकी मेहनत उठानेवालोंको मुनासिब है, पांचतोले ताजा घी गर्मरोटी या दालके शाथ खावे, आंखोंकी रोशनी बढेगी, और मग्जकों तरी पहुंचेगी, घी, दुध, अनाज, और पानी, मनुष्यका, जीवन है, जिसमेंभी दुध ज्यादा असर करनेवाला और फायदेमंद कहा, एक कविका फरमान है.–

(दोहा,)

धातधरन अरु वलकरन जो कोई पुछे मोय,<br>
पयसमान इस लोकमें अवर न औषध कोय, १

७ हर शख्शकों चाहिये अपने बदनकों तंदुरस्त रखनेके लिये इतनी महनत जरूर उठावे, जिससे बदनमें तनक पसीना आजाय, गादी तकीयेके सहारे बेठे रहना, और कामकाज नही करना यही तंदुरस्ती बिगडनेका सबब है, जो शख्श हरहमेश तोले दो तोले चमेली या बेलेका तेल लेकर अपने बदनमें मालीश करे, और गर्मजलसें स्नान करे, उसको लोही विकार या खुजलीकी शिकायत न होगी, जो शख्श हमेशां गर्म रसोई जीमे और मील दो मीलतक पांवपेदल

चले, उसका खानपान अछीतरह पचजायगा, तंदुरस्ती अछी रहेगी, और बीमारी न होगी, शुभहके वख्त जंगलकी हवामें घूमने जाना निहायत फायदेमंद है, हरेक शख्शकों लाजिम है, सूर्यस्वर चलते-वख्त खाना खावे, चंद्रस्वरमें पानी पिवे, और सोतेवख्त डावीबाजु सोवे तो बीमारी पैदा न होगी, मगर सूर्य और चंद्रस्वरकी पहि-चान बहुतकम शख्शोकों होगी और उसपर अमल करनेवालेभी बहुत कम होगें, जिनकों स्वरोदयज्ञानकी माहिती मिलाना हो, इसी किताबमें "बीचवयान स्वरोदयज्ञान" नामका लेख देखे.–

८ ठंडी रसोई खाना तंदुरस्तिमें बिगाड होनेकी सुरत है, लुखी रोटीभी अगर गर्म हो, तो-खाना फायदेमंद है, ताजी रसोई, घी, दूध, सकर, शरीरमें सामर्थ्य बढानेवाली चीजे हैं, शरीरमें वीर्यकी हिफाजत करना इसलिये जरुरी है, तमाम शरीरका उसीपर दार मदार है, शरीर तंदुरस्त होगा तो धर्मभी होसकेगा, जिन्होंने पूर्व-जन्ममें जीवोंपर रहेम किया है, उनोनेंही यहांपर तंदुरस्त शरीर और सुखचैन पाया है, हरशख्शकों मुनासिब है, सूर्योदयके पेस्तर बिछौनेसें उठजाय, और सुदेव सुगुरु, और सुधर्मकों याद करे, दिशाजंगलजानेकी हाजतकों रोकना अछा नही, बुखार आता हो, बदहजमीकी शिकायत हो, जुलाब लिया हो, उल्टी हुई हो, उसरोज शरीरपर तेल लगाना ठीक नही, नाखुन बढजाय और उसमें मेंल भरा रहे इसलिये बढेहुवे नाखुनोंकों आठ आठरोजमें कटवा लेना चाहिये, याते उसमें मेंल न रहे.–

९ हरहमेश एकदफे स्नान करना, चिकित्साशास्त्रका फरमान है, ज्यादा गर्मीमें चलना आंखोंकों नुकशान पहुचाता है, बाग-बगीचोंकी हरियाली देखना आंखोंकों फायदेमंद है, नेत्र है, तो जान है, और नेत्रोंसेंही जगत है, भूख लगनेसें खाना, और प्यास-लगनेसे जलपीना अछा है, ज्यादा मिठाई खाना अछा नही, दुधके साथ खट्टे और क्षारवाले पदार्थ खाना बहेत्तर नही, दुध और दहीं

एक शाथ खाना ठीक नही, चावलका खाना उमदा है, मगर चावल अछे और खुशबूदार होना चाहिये, उर्द, मुंग, और चनेके वनेहुवे पदार्थ वेंशक ! स्वादिष्ट होते है, मगर वनानेकी चतराई होना चाहिये, आम्रफल जैसा हिंदमें होता है, किसी मुल्कमें नही होता, बंबईके आम मुल्कोंमें मशहूर, बनारसके लंगडे आम और दखन हैदराबादके मलगोवा आम किसीकदर कम नही, पुरी कचौरी मुल्क पूखमें नामी होती हैं, मुल्कपंजावकी कचौरी सबसे बढकर, तिलके लाड्डु जिसको तिलवट बोलते हैं, यहभी एक पौष्टिक पदार्थ है, दूधमे पाचतोले बादामकी गीरी डालकर क्षीर बनाना और शुभहके वख्त तीन या सात रोजतक खाना, इससे आधाशीशी और मस्तकके तमाम रोग रफा होगें.–

१० जिनकी जठराग्नि तेज हो, उनकों मावा खाना फायदेमंद है, मगर ताजा होना चाहिये, बहुतदिनोंका बनाहुवा ठीक नही, घी शरीरकों ताकात देनेवाला और आंखोंकी रोशनी बढानेवाला है, संस्कृत जबानमें घीकों घृत, हवि, और जीवन बोलते हैं, फारसी जबानमे इसकों रोगने जर्द बोलते है, बुखारके दिनोंमें या मदाग्निके दिनोंमें घी खाना ठीक नहीं, पानी एकशाथ ज्यादा नही पीना, चंद्रस्वरमें जितनी तृषा हो पीना चाहिये, ज्यादा पानी पीनेसे बीमारी होगी, खाना खाकर ( १०० ) कदम फिरना जरुरी है, जिससे खायाहुवा अनाज हलका होकर पाचन होने लगता है, खाना खाकर पानबीडी खाना इससे मुंह साफ होता है, और खायाहुना अनाज हजम होता है, दिनभर पानबीडी खाते रहनाभी अछा नही, जबानपर छाले पडजाते है, और तकलीफ होती है, धूपमे रास्ता चलते वख्त छाता लगाकर चलना चाहिये, धूपसे बचाव होगा और आंखोंके लियेभी फायदा होगा.–

११ साफ कपडे, इत्र, फुलेल, गेहने, उमदा मकान, और फुलोंकी माला शरीरकी तदुरस्ती बढानेवाली चीजे है, मगर विना

पुन्यके ये चीजे मिलती नही, जिन्होंने पूर्वजन्ममें पुन्य हासिल नहीं किया, उनकों सुखचैन मिलना दुसवार है, रातमें छह घंटेतक नींद जरुर लेना चाहिये, इससें कम नींद लेना ठीक नही, बीमारी पैदा होगी, दिनमें सोना फायदेमंद नहीं, दांतकी बीमारीवालोंकों खटाइ खाना अछा नही, हमेशां त्रिफलेके चूर्णसे दांतकी जडको मसलना चाहिये, अजीर्ण मीटानेके लिये शंखवटीकी गोली खाना अछा है, हमेशां किसी एकबातपर खयाल न बढाओ, और बार-बार उसकी फिक्र मत करो, ऐसा करनेसे आदमी दिवाना होजाता है, मानसिक तकलीफ उठानेवाले पंडितोंकों वकिलोंकों और ग्रंथ-कर्त्ताओंकों आरामसें नींद लेनेकी जरुरत है,–

१२ पांवके तलवोंमें तिलका एरंडीका या खोपरेका तेल मालीश कराना फायदेमंद है, इससे पांवोमें फुटनी नहीं होती, थकावट मिटती है, और मस्तकमें तरावट पहुंचती है, ठंडके दिनोंमें पांव फटते नहीं, और आरामसें नींद आती है, जबतक तुमारा दिल फिक्रमें हो, ज्ञानके पुस्तक बांचते रहो, करेलेके पत्तोंके रसमें एक कालीमिर्ची पीसकर आंखोंमें अजन करनेसें तीनदिनमें रातअंधापन मिट सकता है.–

१३ अकरकरा चार मासे, केशर आठ मासे, जायफल बारा मासे, लोंग बारा मासे, शुद्धशिंगरफ चौदस मासे, और अफीम आठ मासे, इन चीजोंकों कुटकर सहेतमे चनेसमान गोली बनाना, और एक गोली शामकों खाना खाकर दो घंटे बाद लेना, उपरसें गर्म-दूध मिश्री डालकर पीना, खटाइ मीर्च और तेलका परहेज करना, (२१) रोज खानेसे ताकात बढेगी.–

१४ सचे मोती मासा एक, कस्तूरी मासा एक, सोनेके वर्क मासे दो, चांदीके वर्क मासे चार, लोहेकी खाख मासे चार, वंगभस्म मासे चार, और शिलाजित मासे चार, इन सबकों पथरकी खरलमें सहेत डालकर गोली बनाना, जिनको सहेतकी कसम हो, पानी

डालकर मुंगसमान गोली बांधे, शुमह-शाम-एक एक गोली खाकर मिश्री डालाहुवा (२०) तोला गर्म दूध पीवे, इससें शरीरमें ताकात बढेगी, खासी और श्वास मिटेगा, और कफका विकार मीटे.-

१५ आंख, कान, नाक, वगेरा मल निकलनेकी जगहको और दोनों पावोंको साफ रखो, जहांतक बने मेले, फटे पुराने कपडे मत पहनो, हमेशां खुशमिजाज रहो, अगर तुम दौलतमंद हो तो खुशबूदार इत्रफुलेल वगेरा चीजोंको इस्तिमाल करो, फिक्रसें बचो, फिक्रके समान कोई बुरी चीज नही, आदमी फिक्र करना नही चाहता, मगर पूर्वकृत कर्मके उदयसें फिक्र आन पडती हैं, फिक्रके मिटानेकी दवा नही,-पूर्वकृत कर्म भोगनेही पडते है, धर्मपर श्रद्धा रखना, धर्मके पुस्तक वाचते रहना, जिससे दिलकों हिम्मत मिले, तीर्थोंकी जियारतको जाना, जिससे बात भुल जाय और फिक्र मिटे.-

१६ रास्ता चलते वख्त चारहाथ आगेको देखते चलो, ताकि अकस्मात् गाडी, घोडा वगेरा तुमारेपर न आन पडे, और सांप, वीछु वगेरा जीवोंपर तुमारा पाव न पडे, द्रख्तोंपर विनाजरुरतके मत चढो, गिरनेका खोफ है, रातकेवख्त मशानके पास मुकाम मत करो, सुने मकानमें या जंगलमे अकेले मत रहो, दुश्मनकी दिईहुई चीज विनातलाशीके मत खाओ, औरतोंकी बातका भरुसा मत करो, रातके वख्त अनजानी जगहमे मत फिरो, जहांतक बने गुस्सा कम करो, गुस्सा ज्यादा करनेसें तंदुरस्ति विगडती है, दुसरोंकों आफतमें फसाहुवा देखकर मत हसो, आफत सबकों आती है, कभी अपनेकोभी आनपडेगी, पूर्वकृत कर्म किसीकों छोडनेवाले नही.-

१७ दौलत और खानपानमें हमेशां शम्र करो, चिकित्साशास्त्र पढना या बांचना सबके लिये अछा है, शरीरमें कितनी नाडी है?

कितने मर्मस्थान है, वात, पित्त, और कफके स्थान कौनकौनसे है? इन बातोंकों समजना चाहिये, चिकित्साका इल्म अवल भारतवर्षमें अतिशयज्ञानी शख्शोंने बयान किया, फिर दुसरे मुल्कोंमें फेला.-

१८ निमक एक पाचन और रुचिकारक पदार्थ है, इक्षु मधुर और पेंशावकी बीमारीकों रफा करनेवाली चीज है, चंदन दाहकों मिटानेवाला पदार्थ है, बुखार तमामरोगोंका सिरदार, और अजीर्णसें इसकी पैदाश है, पेस्तरके जमानेके लोग आलादर्जेकी तकदीरवाले थे, इससें तंदुरस्त और खुशमिजाज बने रहते थे, जमाने हालमें देखो पचीस पचीस वर्षके लडके धातुक्षीण, क्षय, प्रमेह, और गर्मीके रोगोंसें हेरान परेशान है, तनक! मेहनत उठानेसें बडे बुढोंकी तरह थक जाते हैं, सोडावोटर, नीमलेट, आइस्क्रीम, और चाहके बिदून चलता नही, पेस्तरके लोग केशर, कस्तूरी, जायफल और एलाची मिलाहुवा दूध पीते थे, और खानपानके शाथ दहीं, दूध खातेथे, इससे वे ताकतवर लंबी उम्रवाले और तंदुरस्त बने रहतेथे.-

१९ आधी रति कस्तूरी, एक नारवेलके पानमें खिलानेसें शर्दीकों, सन्निपातको, मिर्गीकों और हेजेको मिटाती है, खांसीकों और दमेकोभी रफा करती है, छोटे लडकेकों दब्बेकी बीमारी हुवा करती है, वोभी मिटसकती है, मगर छोटे लडकेकों पावरतिसें ज्यादा कस्तूरी देना नही, कस्तूरीका इम्तिहान करना चाहिये, असली कस्तूरी कारआमद होगी, नकली फायदा न करेगी, दो तोले असली नारायणतेल लेकर उसमें एक तोला सोंठ, और एक जायफल कुटछानकर मिलाना, हाड गोडेमें जहां वादीकी बीमारी हो लगानेसें आराम होगा, पक्षघात और अर्द्धांग वगेरा वादीकी बीमारी मीटसकेगी, हाथ पांवमें कमरमें जहां दर्द हो, नारायणतेल लगानेसे फ़ायदा होगा, मगर शर्त्त यह है, नारायणतेल अछा और ताजा होना चाहिये, छ महिनेके बाद तमाम जातके तेल कमताकात हो जाते हैं.

२० शुद्ध शिलाजित तोला एक लेकर तीन तोले खडीसाकर और पाव तोले एलाची उसमें मिलाना, और (१४) गोली बना रखना, एक गोली हमेशा शुभहकेवख्त खाकर उपरसे वीश तोले गर्मदूध मिश्री डालाहुवा पीना, तेल, खटाई नही खाना, चौंदह रौजमें फायदा होगा, बदनमे ताकात आयगी, मग्जकी गर्मी और त्वचागर्मी मिटेगी, और बवाशीरकी बीमारीकोभी रफा करेगी.–

२१–[ बयान मौसिम पाक, ]

केशर तोला एक, जवत्री तोले दो, छोटी एलायची तोले दो, एखरा तोला एक, एखरेका दुसरा नाम तालमखाना बोलते हैं, गोखरु तोला एक, सफेद मुशली तोला एक, काली मुशली तोला एक, सोंठ तोला एक, शतावरी तोला एक, छोटी पीपर तोला एक, कवचके बीज तोला एक, बादामकी गीरी तोले चालिश, पीस्ते तोले वीश, मिश्री तोले पचास, घृत तोले सो, वर्क सोनेके तोले पाव, इनमेसे केशर, बादाम, पीस्ते, मिश्री, सोनेके वर्क और घृतकों अलग रखना, और बाकीकी चीजोंको हमामदस्तेमे कुटना और आटे जैसी बनाकर बारीक चालनीसे छानना, आधे बादाम पीस्ते गर्म पानीमें भीगोंकर उसके छिल्टे उतारना, और फिर पथरकी शिलापर पीसना, इतनी चीजे तयार करके फिर मिश्रीकी चासनी तीनतारकी बनाना, और उसमे सबसें अवल पीसे हुवे बादाम, पीस्ते डालना, फिर केशरकों दूधसे खरलमें घोटकर डालना, बाद थोडी देरके तमामचीजें जो हमामदस्तेमें कुटछानकर तयार किइथी डाल देना, और सबको अछीतरह पकने देना, दवाये जल जाय या कची रहजाय ऐसाभी नही होना, अखीरमे घृत डालना, और सब काम चतराइसे बनाना, अगर अपनेको पाक बनानेकी तरकीब न आती हो, किसी होशियार हलवाइसे बनवाना, मगर बनानेमे गलती नही करना, जब मौसिमपाक तयार हो, दो उमदा पराते लेकर उसमे डालना और जमाना, आधे बादाम पीस्ते जो बाकी रखेथे,

कतरकर तयार किये हो वो पाकपर छांट देना, फिर उपरसे सोनेके वर्क छापदेना, और फिर चाकूसें बर्फीकी तरह छोटीछोटी चक्कीयें बनाना, पाककों एकरातभर परातमेही ठंडा होने देना, दुसरे रोज मौसिमपाककी चकीयोंकों एक डब्बेमें भर रखना, अगर चासनी कची रहगई होगी पाक बिगड जानेका खौफ है, इसलिये डब्बेका ढकना खुलारखकर कपाटमें या जहां मुनासिब समजो हवामें रखना, याते बिगडने न पावे.-

२२ अढाई तोले मौसिमपाक हमेशां शुभहके वख्त खाकर उपरसे ( २० ) तोले गर्मदूध मिश्रीडालकर पीना, बदनमे तंदुरस्ति बढेगी, आंखोंमें रौशनी आयगी, जइफ आदमी अगर एकीसरौज मजकुर पाक इस्तिमाल करेगे, तंदुरस्ति हासिल होगी, पुरे बेतालीस रौज खायगें, निहायत उमदा है, जबतक पाक इस्तिमाल कियाजाय तेल खटाई और मीर्चीसे परहेज रखना, रोटी, दाल, घी, दूध मिश्री वगेरा तरचीजें खाते रहना, इल्म पढनेवालोंकों भाषण देनेवालोंकों और लेख लिखनेवालोंको मौसिमपाक निहायत फायदेमंद है, मौसिमपाक जिस मौसिममे खाओ फायदा पहुंचायगा, इसलिये इसका नाम मौसिमपाक कहा गया.-

२३ अर्क कर्पूर हैजेके लिये अछा इलाज है, चंद्रप्रभा गुटिका खानेसे वीर्यदोष दूर होते है, जइफीमें केशर, कस्तूरी, अंबर, जायफल, जवत्री, इलायची, इशबगोल, शालम, सफेदमुशली, कालीमुशली, आसगंध, शतावरी, कवारपाठेका रस, ये चीजें ताकात बढानेवाली है, मगर अछे वैद्यकी सलाहसे खाना.-

२४ गर्मीयोंके दिनोंमें खाना कम खाना चाहिये, मगर तर और ताकतवर चीजे खाना, जिससे कमखानेंमेंभी ताकात बनी रहे, शरबतअनार, शरबतगुलाब, शरबतबनपशा, गर्मीके दिनोंमें पानीके शाथ मिलाकर पीना चाहिये, बारीशके दिनोंमें नीमकीन पदार्थ इस्तिमाल करना चाहिये, इन दिनोंमें विना नीमकके खाना जल्दी हजम

होता नही, जहांतक बने नीमकीन चीजें खाते रहना अछा है, नींबू वगेरा खटाईकी चीजें खाना वारीशके दिनोंमें फायदेमंद है.—

२५ खानपानके बारेमें मुल्कमुल्ककी चीजें जुदी जुदी तरहकी है, लाडु, पेंडे, बर्फी और जलेवी तमाम मुल्कोंमे होती है, किसी मुल्कमें उमदा तो किसीमें मामुली, मगर होती है सब मुल्कोंमे, कलाकंद, मुंगके लडु, मग्जके लडु, बादामकी बर्फी, पीस्तेकी बर्फी, केशरकी बर्फी, इमरती, बालुशाहि, गुलाबजामन, मोतीदाना, सोहन हलवा, पेंठा, दुधी हलवा, मलाइके लडु, पुरी कचौरी, सकरपारा, सूत्रफेनी, खोपरापाक, महेशूब, तलीहुई मुंग, चनेकी दाल, चविणा, दालमोंठ, दहींवडे, कल्मीवडे, पकोडे, कांजीके पकोडे, इमलीके पकोडे, हरीमीर्ची, सोंठ, खटाई, नीबू, सेव, कई तरहकी चीजे दुनियामे मौजूद है, मगर अपने शरीरकी ताकात देखकर खाना चाहिये.—

२६ छोटेगांवके लोगोंको या जंगलमें रहनेवालोंको वख्तपर अचानक बीमारी होजाय, बनी बनाई, तयार दवाई बडे शहरोंसें लेजाकर पास रखना चाहिये, १ त्रिभुवनकीर्ति गोली, २ बुखारके लिये सुदर्शनचूर्ण, ३ वासावलेह, और ४ खांसीके लिये लविंगादिटीकडी, ५ अजीर्णबीमारीकेलिये शिवाक्षारचूर्ण और शंखवटीगुटिका, ६ मस्तकके दर्दकी गुटिका, ७ पेंशाबकी बीमारीके लिये शिलाजित चद्रप्रभा, ८ वातव्याधिके लिये योगराजगुगलकी गोलिया, और महारासनादिक्काथ, ९ दस्तके लिये स्वादिष्टविरेचन, १० करडाजुलाब लेना हो, इछामेदीरस, ११ शक्तिके लिये चवनप्रासजीवन, १२ केशरीजीवन, १३ मुरब्बा सफरजंगका, मुरब्बा आवलेका, और गुलकद गर्मीके दिनोमे खाना अछा है, १४ बुखारके लिये अग्निकुमारकी गोलियां, १५ तरहतरहके बुखार और सन्निपातके लिये 'ज्वरांकुश, १६ संग्रहिणी और खांसीके लिये आनदभैरवरसकी गोली,' १७ बवाशीर' और मसेकेलिये

अर्सकुठाररसकी गोलियां, १८ पेटके दर्द शूल, गुल्मवात, वगेराके लिये भास्कररसकी गोलियां, १९ दमेके लिये स्वासकुठार रसकी गोलियां, २० त्रिदोपके लिये हेमगर्भरसकी मात्रा, २१ ज्वर और खांसीके लिये द्राक्षादिचूर्णवटिका, २२ स्वास और खासीके लिये लवंगादिचूर्ण, २३ प्रमेह और मूत्रकृछ्रकेलिये महाचंद्ररसकी गोलियां, २४ क्षयरोगके लिये शीतोपलादिचूर्ण, २५ पेटके दर्द और हेजेके लिये हिंगाष्टकचूर्ण २६ बुद्धिके लिये सारस्वतचूर्ण, ये सब चीजें बंबई वगेरा बडेबडे शहरोंमें मिलती हें, मंगवाकर पास रखना चाहिये, याते छोटेछोटे गांवमें वख्तपर कामदेवे.–

२७ ठंडकपहुचानेवाला सुर्मा और जिनकों कलपलगानेका शौख हो उनके लिये एकतरहका कल्प पास रखना अछा है, बवासीर और मसेकी बीमारीवालोंकों दिशा फराकत जातेवख्त मसोंकों पानीसे साफ करते रहना चाहिये, जो लोग मसोको अछीतरहसे साफ करते नही उनका दर्द बढता है, और खून पडता है,–

२८ दांतोंकों साफ नही करनेसे दर्द शुरु होता है, दांतोंका हिलना, चीस मारना, और उनमेंसे खून गिरना, ये सब दांतोंकी बीमारी है, बदनमे खुजलीका रोग बडा तकलीफ देता है, चमेली, गुलाब, या बेंलेका तेल लगाते रहना चाहिये, गरीबोंके लिये आवलेका या खोपरेकाही तेल लगाना काफी है, औरतोके लिये केश एकतरहका शिंगार है, मगर जिस औरतको ऐसा खयाल हो, मेरा औढना तेलसे खराब न होजाय, उसको लाजिम है, तेलकों मसलकर बाल साफ करे, और फिर टुवालसें पोछ लेवे, औढना खराब न होगा.–

२९ जिन जिन शख्शोंकों शरीरमें ताकात कम हो उनको वसंतमालिनी दवा इस्तिमाल करना फायदेमंद है, बहुमूत्रबीमारीके लिये, हरहमेश अढाई तोले तिल और सवा तोला गुड मिलाकर शुभहके वख्त ( २१ ) रौजतक खावे, तिलवटके लड्डु तिलपापडी

या रेवडी खावे मोभी वहुमूत्रदोष और वीर्यदोष मीटकर ताकात बढेगी, मगर खातेवख्त बहुत चवाचवाकर खाना चाहिये, तेल खटाई और मीर्चका परहेज रखना, घी, दूध, मेवा वगेरा तरचीजे खातेरहना ठीक है. जावूका रसभी वहुमूत्रदोषकों मिटाता है, संग्रहिणी वीमारीवालोंकों हमेशां छास पीते रहना और खानपानके शाथभी लेते रहना अछा है, चावल, धुली, साबुदानेकी खीर, वगेरा हलका भोजन है, अकेली छाससे और हलका भोजन जिमनेसें संग्रहणी, और ववाशीर जुद व जुद मिटजाती है, और छाससें मीटीहुई संग्रहिणी वीमारी फिर तावे उम्र नही होती.–

३० सचेमोतीका सुरमा आंखोंकेलिये निहायत फायदेमद है, सुवर्णभस्म, चांदीकी भस्म, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, शंखभस्म, वंगभस्म, प्रवालभस्म, अगर अछेवैद्य या हकीमकी वनाईहुई हो, मुताविक रसायनशास्त्रके फरमानसे खाईजाय तो फायदेमद होगी, चरास जिसकों भीमसेनी कपुर वोलते है, पानमें एकरतिभर खानेसे मग्जमे तरावट पहुंचेगी, पीपरमीटका अर्क, वायुकी वीमारी मिटानेके लिये फायदेमद है.–

३१ वायुकी वीमारीकेलिये पतासेमे या पानीमें पांचबुंद पुदीनेका अर्क लेना अछा है, बुखारकेलिये कुनेनकी गोलीया या कुनेन खाना ठीक है, मगर पांच या सातदिनसें ज्यादेअर्सेतक खाना अछा नही, सोंफका तेल, अजवायनका, लोंगका, दारचीनीका, और इलायचीका तेल, वायु और बदहजमीको मिटानेवाला है, असली चंदनका तेल, पांच बुंद पतासेमें डालकर शुभह शामखावे, और तेल, खटाई, मिर्चसे परहेज करे तो सुजाकका दर्द मीटसकेगा, लोहूविकार, कुष्टरोग, गमी, क्षय और दमेकी वीमारी निहायतवुरी है, इसका उपाव जल्दी करना चाहिये.–

३२ उमदा दंतमंजन, हरडे पाचतोला, बहेडे पांचतोले, आवले पांचतोले, माजुफल पांचतोले, सफेद जीरा अढाई तोले, सिंधान-

मक अढाई तोले. और सफेद कथा अढाई तोले, इन सबचीजोंकों कुट छानकर बारीक बनालो, उमदा दंतमंजन होजायगा, हमेशां पावतोले लेकर दांतको लगानेसे दांतके और मुखके तमाम रोग मीटसकते हैं, और हिलते हुवे दांत मजबूत होसकते हैं, सारसापरिला दवा खुनकों सुधारनेलिये ठीक है, देशीदवाओंमें मंजिष्ठादिकाथ लोहूसुधारनेकेलिये उमदा है, शुभहके वख्त तोलेभर बादामकी गिरी, तोलेभर ताजा घी, और दो तोले मिश्री मिलाकर खाना अछा है, लेकिन! लालमीर्च, तेल, और हींग, जबतक न छोडोगे फायदा न होगा, कानमें दर्द हो तोभी तुनका वगेरासे उकेरना नही चाहिये, जगह नाजुक होनेसें सहजमें बीमारी पैदा होजायगी, अजीर्णबीमारीवालोकों पेदल सफर करना अछा है, अजीर्ण होनेसे बुखारकी पैदाश है, जबतक जठराग्नि तेज बनीरहे बुखार कभी नही आता, अजीर्ण और बुखारके होनेसें कुछ बीमारीयां हाजिर होजाती है, जबतक अजीर्ण और बुखार न छुटे और छुटनेपरभी जबतक शरीरमें ताकात न आवे, खानपानसें परहेज रखो, चढते बुखारमे दो तीन रौज खाना न खावे तो अछा है, स्निग्धभोजन बुखारके लिये बुरा है, जिनकों स्वासरोगकी बीमारी हो, उनको मुनासिब है अवल कामसेवन करना बंद रखे, स्वासबीमारी जैसी दुसरी कोई सख्तबीमारी नही है, अगर शरीर तंदुरस्त रखना चाहतेहो तो अजीर्ण बुखार और खांसी होतेही इनका इलाज करना शुरु करो.—

३३ गर्मीयांके दिनोंमें पीनेका मसाला, बादामकी गिरी ग्यारह, पीस्ते ग्यारह, एकतोला खसखस, पावतोला सोंफ, पावतोला छोटी एलायची, एकतोला खरबुजेके बीज, एकतोला काकडीके बीज, दो तोले गुलकन, और पनरातोले मिश्री, इनसबचीजोकों घोटकर दो गिलास ठंडाई बनावे, दो आदमीकेलिये काफी है, तबीयत तर होगी, और कलेजेमें तरी पहुंचेगी.—

३४ अजीर्ण-बीमारी मिटानेकी दवा, वंसलोचन आधा तोला, छोटी एलायचीके दाने पावतोला, अकरकरा पावतोला, चित्रक तोला आधा, सफेद जीरा तोला आधा, काली मीर्च तोला आधा, भुनीहुई हिंग तोला पाव, लवंग तोला पाव, छुहारा तोला एक, मनक्का दाख तोला दो, सोंठ तोला एक, छोटी पींपर तोला एक, इन सब चीजोंकों कुटकर कपडछान करना, फिर खरलमें डालकर पांच नींबुके रसमें घोटना, गोलीबनसके वहांतक घोटते रहना, और फिर चने जितनी गोली बनाना, हरहमेश दो या चार गोलीखानेसे अजीर्ण रोग चला जायगा.-

३५ अजीर्णकी दुसरी दवा, सोंठ तोले दो, धनिया तोले दो, पुदिना सुका तोला एक, अनारदाने तोले तीन, दारचीनी तोला आधा, काली मीर्च तोला आधा, और इलायची बडी तोले दो, इतनी चीजे कुटकर चूर्ण बनाना, और एक बोतलमें भररखना, भोजन जिमनेके बाद पावतोले खानेसें अजीर्ण रफा होगा, और मुंहका स्वाद सुधरेगा.-

३६-[ खांसीकी दवा, ]

तालीशपत्र तोला आधा, दारचीनी तोला एक, एलायची छोटी तोला दो, काली मीर्च तोला चार, सोंठ तोला चार, छोटी पीपर तोला चार, वंशलोचन तोला चार, मिश्री तोले (१००) इन सब चीजोंकों कुट छानकर चूर्ण बनाना, दो दो मासे चूर्ण दिनमें तीनदफे सहेतमें या खांडकी चासनीके शाथ लेना, इससें बुखार, खांसी, क्षय, अजीर्ण, दम, पेशाबके रोग, और निमोनिया (त्रिदोषबुखार) मिट जाता है, परहेजमे तेल, मिर्ची, और खटाई नही खाना.-

३७-[ बवासीरकी दवा, ]

सोंठ तोले दो, पुष्करमूल तोले दो, और वरधारा तोले दो, वरधारेकों हिंदीमे विधारा बोलते हैं, इन तीन चीजोंकों कुट छानकर चूर्ण

बनाना, तीन तीन मासे चूर्ण दिनमें तीन वख्त सवेर, दुफेर और शाम, पानीके शाथ लेना, इससें सवजातकी ववाशीर मीटजायगी, सात या चौदह रौज लेनेसे फायदा होगा, कडवी तुरइकी वेल सुकी या गीली, दशतोले लेकर ( ८० ) तोले पानीमें गर्मकरना, आधा पानी रहे, जब उस पानीको छानकर बोतलमें भर रखना, जब दिशाजंगल जाना इसी पानीसें अशुचिकी जगह साफ करना, ववासीर मिट जायगी; ववासीरका दुसरा उपाव, वादामकी गिरी तोला एक, वडी हरडे तोला एक, मिश्री तोले तीन, इन सब चीजोंकों कुट छानकर चूर्ण बनाना, तीन मासे चूर्ण पानीके शाथ सवेर, दुफेर, शामको खाना, ववासीर मिट जायगी.–

## ३८–[ अजमोदादि गुटिका, ]

अजमोद तोला एक, छोटी पीपर तोला एक, वावडीग तोला एक, सोंफ तोला एक, नागरमोथा तोला एक, काली मीर्च तोला एक, सिंधालोन तोला एक, वडी हरडेके दल तोले पांच, सोंठ तोले दश, विधारा तोले दश, भारगमूल तोले छत्तीस, इन सब चीजोंकों कुट छानकर चूर्ण बनाना, और उस चूर्णसे दुगुना गुड लेकर दोनोंकों मिलाना, और छोटे वेंर जितनी गोली बनाना, शुभह, शाम, और दुफेरकों एक एक गोली दो तोले गर्मपानीके शाथ लेनेसे खांसी, स्वास, पेटका दर्द, अजीर्ण, और पुराना बुखार मीट सकेगा.

## ३९–[ पेटकी गांठ, जिसकों तापतिल्ली बोलते है, उसकी दवा, ]

आंवाहलदी जिसकों हिंदीमें कपूरहलदी बोलते है, पांच तोले, कालीजीरी पांचतोले, लेकर कुट छानकर चूर्ण बनाना, तीन तीन मासे चूर्ण पानीके शाथ शुभह, शाम और दुफेरको लेनेसें पेटकी गांठ, और तापतिल्ली मीट सकेगी.–

४०–[ संजीवनी-गुटिका, ]

वावडीग तोला एक, सोठ तोला एक, छोटी पींपर तोला एक, हरडेदल तोला एक, चित्रक तोला एक, वहडेदल तोला एक, घोडावच तोला एक, घोडेवचको हिंदीमे वच वोलते है, गिलोय तोला एक, भिलावा तोला एक, वछनाग शुद्धकिया हुवा तोला एक, इन सब चीजोंकों कुट छानकर चूर्ण बनाना, और अद्रकके रसमे मुंग जितनी गोली करना, अद्रकके रसमे एक गोली लेनेसें अजीर्ण वीमारी मिटती है, दो गोली अद्रकके रसमे लेनेसें हेजा मिटता है, तीन गोली अद्रकके रसमे लेनेसे सर्पका जहर उत्तर जाता है, और चार गोली अद्रकके रसमें लेनेसे सन्निपात मिटता है, ये गोली मनुष्यकों सजीवन करती है, इसलिये इसकों संजीवनी गुटिका कही गई.–

४१–[ पेंशाव बंद होगया हो उसका उपाव, ]

पाषाणभेद तोला एक, छोटी पींपर तोला एक, शिलाजित् तोला एक, छोटी एलायची तोला एक, इन चीजोंको कुट छानकर चूर्ण बनाना, चावलके धोनमें या आधे तोले गुडमे दो मासे चूर्ण खानेसे पेंशाव छुट सकेगा.–

४२ जो शख्श रातके वख्त दो चंद्रमा देखे, दिनमें दो सूर्य देखे, और रातको तारेरहित आकाश देखे, उसका मरना अंदाज छह महिनेमें होना संभव है, जिसवीमारकी जीभ काली पडजाय, उसका मरना नजीक आया जानना, जब कोई हकीम वीमारके घर उसके इलाजकों जावे, रास्तेमे अगर उसकों, वाजा मृदंग, शंख, वीणा, पुत्रकेशाथ स्त्री, वछडेके शाथ गौ, धोये हुवे कपडे लेकर आता हुवा धोबी, छत्र, चवर, आरिसा, फुलगजरे, कुमारी कन्या, सोहागन औरत, गानेवजानेको जाती हुई वेश्या, चंदन, हाथी, घोडा, पकेहुवे फल, जिनप्रतिमा, धजापताका, हथियार, कमल फुल या सिंहासन सामने आता हुवा दिखाई दे तो अछा है, अपनेकों और वीमारको अछा होगा.–

४३ कोढ, राजयक्ष्मा, प्रमेह, संग्रहिणी, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, स्वास, भगंदर, कंठमाल, पक्षघात, अंधापन, जलोदर, रक्तपीत, ये बडे रोग कहे जाते है.—

४४ आधाशीशीका दर्द शुरु होनेके तीनघंटे पेस्तर अढाई रति कुनेन पानीमें मिलाकर पीलानेसें या पावतोले गुडमें मिलाकर खिलानेसे आधाशीशीका दर्द मिटजायगा; अगर किसीकी डाढ दुखती हो चने जितना कपुर रुईमें लपेटकर डाढमें रखे, हिंग या अफीमभी रुईमें लपेटकर डाढमें रखनेसें आराम होगा.—

४५ पीपरमींटका अर्क रुईमें दो तीन बुंद डालकर डाढमें रखनेसें आराम होगा, क्रियासोट कारगोलीएसीट या नैट्रीकएसीट ये तीनों तेजाब है, जखम करनेवाली चीज है, एक सलाइके सीरपर रुई लगाकर फुंमा बनाओ, दुखती हुई डाढमें रखनेसे दर्द मीटेगा, मगर शिवाय डाढके मजकुर दवा दुसरी जगह नही लगना चाहिये.—

४६ [ स्वादिष्ट चूर्ण, ] सोंठ तोले दो, लविंग तोले तीन, जीरा तोला एक, धनिया तोला दो, पुदीना सुका तोला एक, अनारदाने तोले पांच, लाल मनका द्राख तोले दश, काली मीर्च तोला एक, एलायची तोले दो, मिश्री तोले पांच, दारचीनी तोले दो, इन सबको कुट छानकर नीवुके रसमें छोटे बेर जितनी गोली बनाना, इससे अजीर्ण, स्वास, खासी, दमा, वात, पित्त और कफके तमाम रोग मीटसकते हैं, मगर गोली सवेर—दुफेर और शामकों तीनदफे खाना.—

४७ अफीम चार रति, और तिलका तेल एक तोला, मिलाकर गर्म करना, दो बुंद कानमें डालनेसें कानके दर्दको आराम मिलेगा, मरवेके पत्तेका रस दो चार बुंद कानमें डालनेसेभी कानका दर्द मिटेगा.—

४८ रोंसेका तेल तोले अढाई, और मालकांगणीका तेल तोला

एक मिलाकर शरीरमें जहा दर्द हो मालीश करनेसे आराम होगा, गोडेमे कमरमें पानमें जहा जहां बादीसे दर्द होता हो मजकुर तेल मालीशकरनेसे मिट जायगा.–

४९ [ बुद्धिवर्द्धक पाक, ]

बादामकी गीरी तोले असी, किसमिस तोले पांच, लविंग तोला एक, जायफल तोला एक, वंशलोचन तोला एक, छोटी एलायची तोला दो, दारचीनी तोला दो, नागकेशर तोला एक, चीरोंजी तोले पांच, पीस्ते तोले दश, छुहारे तोले दश, केशर तोला एक, चांदीके वर्क तोला एक, सोनेके वर्क तोले पाव, गिलोयका सत तोला आधा, अपामार्ग तोला अढाई, वावडींग तोला पांच, शखाहुली तोले पाच, ब्राह्मी तोले पाच, वच तोले पांच, सोंठ तोले पांच, शतावरी तोले पाच, मिश्री तोले ( २०० ) और घृत तोले ( ५० ) इतनी चीजें लाना.–

पहले बादामकी गीरीकों गर्मपानीमे डालकर लालछिल्टे उतार डालना, और पत्थरकी शिलापर पीसकर बारीक लुगदी बनाना, फिर (२५) तोले घृत कडाहीमे डालकर बादामकी लुगदीकों सेंकना, और एक तर्फ रखना, पीस्ते, चीरोंजी, केशर, चांदी-सोनेके वर्क छोडकर बाकीकी सब चीजें कुट छानकर चूर्ण बनाना, और एकतर्फ रखना, दोसो तोले मिश्री जो उपर लिखी है, लेकर उसमे अंदाज पचीस तोले पानी डालना, और तीनतारी चासनी बनाना, फिर बादामकी गीरी सेकी हुई जो बाजुपर रखी है, वो चासनीके अदर डालना, फिर सब चीजोंका चूर्ण जो अलग रखा है, वोभी चासनीमें डालना, फिर खरलमें दशतोले दूधके शाथ एक तोला केशर पीसकर चासनीमे डालना, (२५) तोले घी बाकी है, वोभी चासनीमे मीलाना, तमाम चीजोंकों कडाहीमे धीमीआंचसें पकने देना, इतना यादरहे चीजे जल न जाय या चासनी कची न रह जाय, इसतरकीबसें बुद्धिवर्द्धक पाक बनाकर नीचे उतारना, फिर कलाई किई हुई दो परातमे

डालकर बरफीकी तरह जमाना, उपरसे पीस्ते और चीरोंजी छाटकर दबाना, सबसें अखीरमें सोनेचांदीके वर्क चिपकाना और पाककों एक रातभर ठंडा होने देना, फिर एक डब्बेमें भररखना, हरहमेश अढाइ तोले पाक खाकर उसपर (२०) तोले गर्म दूध मिश्री डाला हुवा पीना, एकीस रौज उसतरह करनेसें बुद्धि तेज होगी, और बदनमें फुर्त्ती बढेगी.–

५० गर्भ पैदा होनेकी दवा, अगर पूर्वसंचित कर्म अछे होगे तो इस इलाजसे फायदा होगा, अशोकवृक्षकी छाल (४०) तोले लाकर छायामें सुकाना, और उसकों कुट छानकर चूर्ण बनाना, तीनमासे चूर्ण छह मासे मिश्रीके शाथ पांचतोले दूधमें मिलाकर औरतकों जिसरौजसे रितुधर्म आवे, उसीरौजसे पीलाना शुरु करना, और एकीसरौजतक पीलाना, गर्भ पैदा होनेका संभव है, अगर यह इलाज किसीसें न बनसके तो अशोकारिष्ट नामकी दवा बनीबनाई कलकत्ता, बंबई वगेरा शहरोंमें आयुर्वेदीय वैद्योंके पास मिलती है. तलाश करके शीशी मंगाकर दो महिनेतक शुभह शाम-दो-दो तोले पीलाना, मजकुर दवा गर्भ पैदा होनेके लिये फायदेमंद है, [गर्भ पैदा होनेकी दुसरी दवा] सफेद मिर्ची एक, एरडीका बीज एक, दोनोंकी बराबरी गुडलेकर खरलमें पीसके गोली बनाना, और रितुवती औरतकों रजस्वलाकी हालतमें तीनरौज ठंडे पानीके शाथ खिलाना, अगर पूर्वसंचित कर्मका योग हो तो गर्भ पैदा होनेका संभव है.–

५१ सफेद मिर्च ( २१ ) दाने और एक तोला मिश्री कुटकर मिलाना, फिर दो तोले ताजे घींमें सामील करके शुभहके वख्त खाना, एकीस रौजतक ऐसा करनेसें आखोंकी रौशनी बढेगी, सुके अंजीर तीन, चालीशतोले दूध और पांचतोले मिश्रीमें डालकर गर्म करना, जब दशतोले दूध जलजाय, नीचे उतारकर अंजीर खाना और दूध पीना, बाद उसके दो तोले बादामकी गीरी और दो तोले पीस्ते चबाचबाकर खाना, उसके पीछे तीनघंटेतक कोई चीज खाना-

पीना नही, लिखनेपढनेवालोंके और भाषण देनेवालोंके ज्ञानतंतुमें ताकात चढेगी, दो तोले ताजा मखन जिसकों छासमेंसे निकालेकों दो छडी हुई हो, दो तोले मिश्रीमिलाकर खाना, पित्तकों मिटाता है, बदनमें ताकात लाता है, और लिखनेपढनेवालोंके दिमागकों फायदा पहुचाता है, चालीश तोले दूध लेकर उसमें पांच तोले मिश्री डालना, खूनगर्म करके उसमे एक तोला ताजा घी मिलाना, फिर अपना चंद्रस्वर चलता हो पीना, निहायत फायदेमद होगा, एकीस रौज इसतरह करनेसें बदनमें ताकत चढेगी, मगर बदहजमीकी हालतमे घी खाना अछा नही, जठराग्नि तेज हो जब खाना चाहिये.-

५२ हरशख्शकों लाजिम है, सवेरे सूर्योदयके पेस्तर बिछौनेपरसें उठ जाय, खुलीहवामें फिरने जाय दातूनकरे, देवपूजनकरे और अगर सद्गुरुका योग हो उनके पास जाकर धर्मशास्त्र सुने, दिनके पहले प्रहरमें दूधके शाथ पुरी कचोरी वगेरा कुछ खोराक खावे, मगर इतना याद रहे! खोराक खाकर तीनघंटेतक दुसरा खाना न खावे, जो लोग एकपरएक खानपान करते रहते हैं, वे जल्दी बीमार होजाते हैं, शरीर एकतरहका इंजिन है, खाना खायेबाद तीनचार घंटेतक उसकों अपना काम करनेदेना चाहिये, एकपरएक खाना खाते रहोगे तो जठराग्निरूप इंजिन अपने खोराकको पचानेका काम कैसे करसकेगा? पेटमे तीनहिस्से अनाज, दो हिस्से पानी, और एक हिस्सा श्वासोत्स्वास चलनेके लिये खाली रखना चाहिये, जो लोग गलेतक खूब खाना खाते हैं, बहुत बुरा करते हैं,

५३ दिशाजंगलकी हाजतकों जो लोग रोकते है, अछा नही करते, हाजतको रौकनेसें तरहतरहकी बीमारीयें पैदा होती हैं, जो लोग ज्यादा कामविकार सेवते है, उनकों क्षयरोग दरपेश होगा, जो लोग मेले कपडे पहनते है, उनकों लोहीकी बीमारी पैदा होती है, हरशख्शकों रसोइ गर्म गर्म खाना चाहिये, मगर साधुलोगोंकों

भिक्षा मांगकर सिकम परवरीश करना पडता है. उनकों जैसी भिक्षा मीले उसीपर शब्र मुनासिव है.–

५४ [ चिकित्सा शास्त्रका-फरमान है, ]

वर्जयेद् द्विदलं शूली, कुष्टी मांसं ज्वरी घृतं,
नवमन्नमतीसारी, नेत्ररोगी च मैथुनं,–१

( अर्थः )–शूलरोगवाला शख्श द्विदल ( यानी ) उर्द, मुंग, चने, वाल वगेरा चीजे न खावे, कोढरोगवाला शख्श मांस न खावे, तंदुरस्तकोंभी मांस खाना धर्मशास्त्र मना फरमाते हैं, मगर कोढीकों मांस खाना बिल्कुल मना है, बुखारकी बीमारीवालेकों घी दूध वगेरा भारीपदार्थ खाना मना है, सबब भारीपदार्थ उसकों हजम होगा नही, बल्कि! बीमारी बढेगी, अतिसार रोगवालेकों नया अनाज खाना बुरा है, और आंखोंकी बीमारीवालोंकों कामविकार सेवना निहायत बुरा है, सबब इससें मजकुर बीमारी ज्यादा बढना संभव है.–

५५ खाना खाकर एकजगह बेठ रहना अछा नही, जो मर्द बदनमें थोडा पसीना आजाय उतनी मेहनत उठाते नही, कामकाज करते नही, चलते फिरते नही, उनके शरीरमे तरह तरहकी बीमारी पैदा होती है, जो औरत घरका कामकाज नही करती, रसोई नही बनाती, खुली हवामें नही फिरती, और बेठी बाते बनाती है, उसकोंभी खाना हजम होता नही, और कई तरहकी बीमारी पैदा होजाती है, अगर कोई इससवालकों पेंश करे, हमारे घरमें नोकर बहुत है, जवाबमें मालुम हो, इससे क्या हुवा? शरीरको मेहनत विना दिये वो तंदुरस्त कैसे रहेगा? लाजिम है, जरा पसीना आजाय उतनी मेहनत जरुर उठावे, साधुमहाराजको या साधवीजीकोंभी मुनासिव है, विहार करते रहे, आहार पानी लानेकों जाया करे, और पढने गुननेकी मेहनत उठाया करे, जभी शरीर तंदुरस्त रहेगा, एकजगह ज्यादेअर्सेतक बेठे रहना तंदुरस्ती बिगाडनेकी सुरत है.–

५६ ज्यादा बोलना या गुस्सा करना हरशख्सके लिये बुरा है, इसीलिये धर्मशास्त्रमे लिखा है, मित भाषण करना, और शांतस्वभावसें रहना, जबतक करडी भूख न लगे, खाना मुनासिब नही, और जितनी भूख हो उतना खाना खाना, पचा नही, और उपरसे दुसरा खाना खाते रहे, इसीसे बीमारी बढेगी, चाहे उमदासे उमदा खाना क्यौ न हो, जितना हजम हो उतना खाना अछा है, तंदुरस्त आदमीको भारीपदार्थ खानाभी मना नही, मगर जो नाजुक मिजाज हैं, उनको सौच समजकर खानपान करना, और अपनी तबीयतको तंदुरस्त बनाये रखना चतराईका काम है.–

५७ कई मनुष्य पापकर्मके उदयसें अंधे होजाते हैं, या जन्मसें भी कई अंधे जन्मते हैं, उनको दिन और रात एकसमान है, कई मनुष्य पापके उदयसें दोनोंकानसें बहेरे होजाते ह, उनसे धर्मशास्त्र सुनना बनता नही, बहेरोके शाथ बात करनाभी बडी मुसीबत समजो, कई मनुष्य लुलेलंगडे ऐसे है जो जराभी चलफिर सकते नही, यह सब उनके पापकर्मका उदय समजो, जिन्होंने पूर्वभवमें पुन्य किया है वे यहां तंदुरस्त मिजाज और सुखचैन भोगते हं.–

५८ एक पानीदार नारीयल लेकर उसको तोडना, और उसका पानी एक कलाईके बरतनमे ले रखना, खोपरेको एक पथरकी शिलापर पीसकर लुगदी बनाना, फिर एक कडाहीमे उसकों और नारीयलका निकाला हुवा पानी जो कलाईके बर्त्तनमें रखाथा, डालना, और उसमे (४०) तोले घी डालकर आगपर चढाना, जब पानी जलजाय, घी और खोपरेकी लुगदीको नीचे उतारना, फिर (४०) तोले गुद-बावल या खेरका लेकर (१०) तोले घीमे तलना, और नीचे उतारकर ठंडेहुवे बाद पीसकर बारीक बनाना, बादामकी गीरी पांच तोले लेकर बारीक टुकडे करना, और-पीसीहुई (१००) तोले मिश्री लेकर खोपरेकी लुगदी, गोंद, बादामकी गीरी वगेरा मीलाना खूब मीलजाय एक डब्बेमे भररखना, तीन दिनके बाद हरहं

पांच तोले खाना, इससें कमरका दुखना, और सीरका दर्द मिटजायगा और बदनमें ताकात बढेगी, तेल मीर्ची और खटाईका परहेज करना, घी, दूध और गर्म रसोई खाना, बासी रसोई खाना नही.–

[ बयान चिकित्सा-विद्याका खतम हुवा. ]

## [ बयान-जिनमूर्तिकी-प्रतिष्ठा. ]

१ जिनमूर्त्तिकी प्रतिष्ठाका मुहूर्त्त मुकरर करके एक उमदा मंडप बनाना, मंडपकी जगह पाक और साफ होना चाहिये, झाड, फानुस, हंडी, तख्ते, और झलाझलरौशनीसे मंडपको सजाना, और चारोंतर्फ किनरुका धूप करतेरहना, आठरौजतक हमेशां बाजा बजता रहे, गवैये लोग गायन करे और तीर्थंकरदेवोंकी इबादत होती रहे, श्राविका शुभहके वख्त मंगल गीत गावे.–

२ प्रतिष्ठाका खर्च चाहे एक श्रावक करे या पंच मीलाकर करे दोनों ठीक है, मगर इसमें कंजुसपना करना अछा नही, प्रतिष्ठाका काम जैनाचार्य, जैनउपाध्याय, या जैनमुनि करा सकते हैं, विधि विधानके लिये चाहे श्रावक रहे, मगर सबकाम जैनाचार्य, उपाध्याय या जैनमुनि महाराजोंकी देखरेख नीचे होना चाहिये.–

३ पहले रौज स्नात्रपूजन शांतिकलश और अष्टप्रकारी पूजा करके कुंभस्थापना करना, दुसरे रौज (१०८) कुवोंका जल लाना, अष्टोत्तरीस्नात्र, और जिनमूर्त्तिकी प्रतिष्ठाके लिये यही विधि है, अकेला शांतिस्नात्र कराना हो तो (२७) कुवोंका जल लाना ठीक है, जिस गांवमे या शहरमें उतने कुवे न हो तो नदीके कनारे ( १०७ ) या ( २६ ) खाडा खोदकर उसमें सोपारी पान कुकुम फुलवगेरा डालकर जल लेना, एकसो आठमेंसे एक कुवा इसलिये बाकी रखना, तिसरे रौज उस कुवेका पानी जलयात्राका जलसा करके लाना होगा, और वो कुवा शहरसे या गांवसे कुछ फासलेपर होना चाहिये, जिस

गाव नगरमें एकसोआठ या सताइस कुवे न हो तो दुसरे गांवके कुवेसें जल लाना चाहिये,–

४ तिसरे रौज जलयात्राका जलसा करके बाकी रहेहुवे एक कुवेका जल लेनेके लिये, बाजेवगेरा जुलुससे जाना, और वहांसें विधिके शाथ जल लाना, ज्यादा खुलासा गुरुमुखसे या प्रतिष्ठाकल्प-शास्त्रसें जानना. यहां कहांतक लिखे, थोडेमें बयान दिया है, जल-यात्राके जलसेकेवख्त नवग्रह, दशदिग्पाल, वगेराका पूजन करना बलि बाकुल देना, और फिर उस कुवेका जल लेना.–

५ चोथे रौज नंद्यावर्त्तका पूजन करना, पांचमे रौज नवग्रह, दशदिग्पाल वगेराका पूजन करना, छठे रौज धजा और कलशका पूजन और सातमे रौज शासनदेवी और शासनदेवका आमंत्रण अभिषेक वगेरा चैत्यप्रतिष्ठा करना.–

६ आठमे रौज जिनप्रतिमाका स्नात्र पढाकर शांतिकलश करना, फिर अष्टप्रकारीपूजन करके जिनप्रतिमाको गर्भद्वारके दरवजेके पास पांच पोखना करके जिनमंदिरमें तख्तनशीन करना, प्रतिष्ठा-करानेवाले गुरु अपने चंद्रस्वर चलतेवख्त सूरिमंत्र या वर्द्धमान विद्यापढकर वासक्षेप करे, अठारा अभिषेक करे, फिर अष्टप्रकारी पूजा करके आरती मंगलदीपक उतारे, और दुफेरको अष्टोत्तरी या शांतिस्नात्र पढावे.–

( प्रतिष्ठा अष्टोत्तरीस्नात्र या शांतिस्नात्रमें जो जो चीजे चाहिये उसकी यादी )

७ केशर तोले ४०, बरास तोले १०, कस्तूरी वाल ४, अंबर वाल ४, अगर तोले १०, गोरोचन वाल ४, चंदन तोले ८०, कचा हिंगलु तोला एक, चणिकबाब तोले २, वासक्षेप तोले ८०, कंकु तोले ४०, रतांजली तोले २, अगरका चुरा तोला एक, चमेलीका तेल तोले ४०, इत्र गुलाब तोला एक, इत्र केवडा तोला एक, इत्र चमेली तोला एक, इत्र वेला तोला एक, इत्र हीना तोला एक.–

८ श्रीफल ( २०१ ) मीढोल ( १२५ ) मरडासिंगी ( १२५ ) पंचरत्नकी पोटली ( ५१ ) पंचरत्नकी पोटलीमें हीरा, माणक, पुखराज, पंना और नीलम ये पांच रत्न लेते थे, आजकल कमखर्च करनेके सबब मोती, माणक, मुंगा, सोना और चांदी इनकों पंचरत्नकी पोटली मानकर लेते हैं.–

९ पंचरंगी मशरु गज सवा, हरा पाज गज पांच, पीलापाज गज पांच, लालपाज गज पांच, आसानीरंगका पाज गज एक, जामली पाज गज एक, कालापाज गज एक, सफेदपाज गज दो, सफेद, लाल, पीला, हरा आसानी, जामली और शाम ये सातरगके पाज एक एक गज.–

१० जगन्नाथीके थान तीन, मलमलका थान एक, लालकसुंबेका थान एक, धोती जोडा ( १२ ) दुपट्टे कनारीवाले जोडा ( १२ ) नवग्रह, और दशदिग्पालकी पूजामे पहननेके लिये नये धोती-जोडे होना चाहिये, पहले जमानेके लोग प्रतिष्ठा वगेरा अछे काममें रेशमी धोती दुपट्टे पहनते थे, आजकल कमखर्च करनेके सबब सूत्रके पहनने लगे हैं.–

११ गेहु, दश शेर पक्का, ( ८० ) तोलेका शेर लेना, मुंग, पांच शेर पक्के, चने, पांचशेर पक्के, जुवार, पांचशेर पक्की, उर्द, पांचशेर पक्के, चौले, पांच शेर पक्के, जव, पांच शेर-पक्के, ये साततरहके धान्य बलिबाकुल देनेके लिये चाहिये, सरसव, दोशेर पक्के, चावल, एकमण पक्का, काले तिल, तोले दश, नागरवेलके पान एक हजार, किन्नरु, आधमण पक्का, ये सब ( ८० ) तोलेका शेर जानना.–

१२ दशांग धूप तोले ( २०० ) छुहारे दोशेर पक्के, बादाम सावत पांचशेर पक्की, खोपरेके गोले ( ५० ), सिंगोडे सुके एक शेर पक्के, द्राख एकशेर पक्की, बादामकी गीरी तोले ( ८० ) पीस्ते तोले ( ४० ) चीरोंजी तोले ( १० ) अखरोट तोले ( १०० ) अंजीर तोले ( ८० ) मिश्री अढाई शेर पक्की, एलायची छोटी तोले

( ६० ) लोंग तोले ( ३० ) जायफल तोले ( ६० ) जवत्री तोले ( १० ) दारचीनी तोले ( ३० ) और सोंफ तोले ( ४० ).-

१३ आवले कुटेहुवे तोले ( ४० ) पीठी (वटना) तोले ( ४० ) कंकोडी तोले ( २० ) स्नात्रकरानेवालोके लिये शुद्धिकी चीजे हैं, सुपारी सफेद पांचशेर पक्की, नवग्रहके पूजनकेलिये विजोरे ( ४ ) फलोंमें अनार, सीताफल, केले, अमरुंद, संतरे, आम नारगी वगेरा जोजो मीले लाना.-

१४ फुलोंमें गुलाब, चंपा, चमेली, वेंला, जाई, जुही, मरुआ, मोलसीरी, जासुस, और लालकनेर वगेरा जितने चाहिये लाना, नैवेद्यमें घेवर, छत्रफेनी, मोतीचूर, मग्ज, मेहसुब, बर्फी पेंडे, मोतीचूरके लाडु वगेरा तयार रखना, नवग्रहोंका पाटला एक, दशदिग्पालका पाटला एक, अष्टमंगलीकका पाटला एक, नंद्यावर्त्तका पाटला एक, कूर्मका पाटला एक, चदोवे दो, तोरण दो, सिंहासनका त्रिगडा एक, वासके जवारीये चार जिसमे जवारे बोये जायगें.

१५ आरती, मंगलदीप, धूपदाना, वालाकुंची, आरीसा, कलश, रकाबी, कटोरी, चांदीका बनाहुवा एक इंद्र और चांदीकी बनाइ हुई इंद्राणी एक, चांदीके बनेहुवे काचवे दो, चादीका बनाहुवा गज एक, चादीका बनाहुवा चुना उठानेका चुनाला एक और तगारी एक चौंखुटा पुराने सिक्केका रुपया एक, इतनी चीजे प्रतिष्ठाके कामके लिये तयार रखना.-

१६ मीटीके घडे साफ जिनमे काले दाग न हो, नग ( १३ ) और उनपर अष्टमंगलीकके चित्र निकलवाना, मीटीकी कची इंटे ( ५०० ) वेदिका बनानेके लिये चाहियेगी, वोभी तयार रखना, जिनप्रतिमाका नसार करनेके लिये सचेमोती तोला एक, सोनेके फुल तोले चार, चादीके फुल तोले चार, ये ये चीजें जिनमूर्त्तिकी प्रतिष्ठाके काममें जरुरी है, ज्यादा हकीकत गुरुलोगोंसे दरयाफ्त करो, इस लेखमे जो कुछ लिखा है, थोडेमे दिखलाया हैं, कितनेक

जैनश्वेतांबर मुनि या श्रावक जिनमूर्त्तिकी प्रतिष्ठाके काममें घंटाकर्णकी पूजा कराते हैं, मगर वो बौधमजहबका है, जैनोंके लिये रिपिमंडलका या तिजयपहुत्तका यंत्र रखना चाहिये.—

१७ जिनमूर्त्तिकी प्रतिष्ठाका बयान खतम होता है, जो जो जैनश्वेतांबर श्रावक जिनमूर्त्ति माननेमें पक्की श्रद्धावाले हैं, वे प्रतिष्ठाके काममें हजारों रुपये धर्मके लिये खर्चते हैं, जिन जिन श्रावकोंकी श्रद्धा जिनमूर्त्ति माननेकी नही है, वे चाहे खर्च न करे, मगर उनसे इस बातका दरयाफ्त जरुर करना चाहिये, आपलोग धर्मध्यान करनेकेलिये स्थानक क्यौ बनवाते हो? जिनमंदिर बनवानेमें जैसे इंट चुना पानी लगता है वैसे स्थानक बनानेमेंभी लगता है, बतलाना चाहिये फिर स्थानक बनानेमेंभी मिट्टी पानी वगेराके सूक्ष्मजीवोंकी हिंसा हुई या नही? और स्थानक बनाने पुन्य मानना या पाप? इसका कोई जवाब देवे. दीक्षादेनेके जलसेमें बाजा बजवाना और महोत्सव करना इसमे पुन्य मानते हो या पाप? इसका कोई जवाब देवे, जो जो जैनश्रावक तीर्थोंकी जियारत जाना ठीक नही समजते उनसे दरयाफ्त किया जाता है, आप लोग चौमासेमें अपने धर्मगुरुओको वंदन करनेके लिये एक शहरसे दुसरे शहर क्यों जाते है? इसका कोई जवाब देवे.—

१८ प्रतिष्ठाके दिनोंमें नोकारसी या स्वधर्मिवात्सल्यकरना श्रावकोंका कर्त्तव्य है, जिनमंदिरके पूजारीको नोकर चाकरोंको और जिनमंदिर बनानेवाले कारीगरोंको इनाम देना चाहिये, साधु, साधवी, श्रावक, श्राविका, वगेरा चतुर्विधसंघकी भक्ति करना चाहिये, दुनियादारी हालतमें और बेटाबेटीकी विवाहमें हजारो रुपये खर्च किये जाते है, तो धर्मकाममें हजारों लाखो रुपये खर्च क्यों नही करना? दुनियामें धर्म सबसे बडी चीज है, कितनेक श्रावक कहा करते हैं, प्रतिष्ठा महोछव तीर्थयात्रा या उजमणामें कम खर्च करके बाकीके केलवणी खातेमें देना चाहिये, उनसे पुछा

जाता है, आप लोग जो दुनियादारीके खर्चमें और मोजशोखमे हजारां रुपये खर्चते हो उसमें कमखर्च करके केलवणी खातेमे ज्यादा खर्च किया करो तो क्या हर्ज है, ? धर्मसें दुनियादारीका काम क्या ! बडा समजते हो ? धर्मशास्त्रका फरमान है, दुनियामे सारवस्तु धर्म है, कितनेक श्रावक कहा करते है, बडेबडे जिनमंदिर बनाकर पथरोंमे पैसा क्यों खर्चना ? जवाबमें मालुम हो, कई स्थानकवासी श्रावक स्थानक बनवाकर ईंट चुनेमें खर्च क्यों करते है, ? यहभी एक सवाल है, दुसरा सवाल यहभी है दीक्षाका जलसा करना, बाजा बजवाना आयेगये श्रावकोंकों खाना खिलानेके लिये रसोई बनवाना इन कामोमें सेकडों हजारों रुपये क्यों खर्च करना ? और इन कामोमें पुन्य समजना या पाप ? अगर पुन्य समजा जाय तो जिनमंदिरके काममे तीर्थोंकी जियारतमें और जिनमूर्तिकी प्रतिष्ठामें पुन्य क्यों नही ? इस बातको सौचो !

[ बयान जिनमूर्त्तिकी प्रतिष्ठाका खतम हुवा. ]

## [ अंतिम आराधना ]

१ जईफी आनेपर आदमीको लाजिम है, अपने कियेहुवे पापोंकी आलोचना लेवे, अपने कियेहुवे पापोंको सद्गुरुके सामने बयान करे और पश्चात्ताप करे, जीवहिंसा किई हो, जूठ बोला हो, व्रतनियम तोडे हो, सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषधव्रत वगेरामे दोष लगे हो, तीर्थयात्रामे पाप लगा हो, देवद्रव्यभक्षण किया हो, जूठी गवाही दिई हो, किसीपर जूठा दोष लगाया हो, वगेरा जो जो बुरेकाम अपनेसे बनगये हो, सद्गुरुके पास जाकर सुनाना, और सद्गुरु गीतार्थ होना चाहिये, उत्कृष्टसे जिस जमानेमे जैनागम हो, उनके पढेहुवे हो, और जघन्यसे आचारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग, और समवायांगके पढेहुवे हो, उनको जैनशास्त्रोंमे गीतार्थमुनि फरमाये.–

२ गीतार्थमुनि उसको सुनकर मुताविक जैनशास्त्रके फरमानसें प्रायश्चित्त देवे, प्रायश्चित्त लेनेवालेकी बात दुसरे किसीके पास न कहे, और प्रायश्चित्त लेनेवाला शख्शभी गीतार्थ मुनिने दियाहुवा प्रायश्चित्त दुसरेको न कहे, प्रायश्चित्त देनेके कई रास्ते है, जिसकी ताकात तप करनेकी न हो, उसकों गीतार्थमुनि ज्ञानध्यान करनेकों फरमावे, जिस शख्शसें ज्ञानध्यानभी न हो सकता हो, उसकों धर्म-काममें दौलत सर्फ करनेका बतलावे, जिसको दौलत खर्च करनेकी ताकात न हो, उसकों नमस्कारमंत्रका पाठकरनेको बतलावे, इसीका नाम प्रायश्चित्त है.-

३ सद्गुरुके पास अपने कियेहुवे पापोंको जाहिर करनेसे वडा फायदा है, दिलमें शल्य रखना अछा नही, बीमार शख्शकों मुनासिब है, अपने मरनेसें पहले धर्मकामके लिये दौलत निकालकर देवमंदिर या धर्मस्थानमें भेज देवे, अपने चौपडेमे जमा न रखे, पिछेसें वेटा वेटी न मालुम कैसे निकलेगें, कई लोगोंके घरमे धर्मका पैसा रहगया है, और वे पापसे डुब गये है, अधर्मी वेटे वापका निकाला हुवा धर्मनिमित्तका द्रव्य पिछेसें खर्चते नही, इसलिये मरनेवालोंकों लाजिम है, अपनी हयातीमें सातक्षेत्रके लिये धन निकालकर जहांका तहा भेजवा देवे, लेकिन! अपशोष है, पुन्य-हीनलोगोंसे धर्मका काम होता नही, बल्कि! वेटावेटीके या धन-दौलतके मोहसें तकलीफ पाकर मरजाते हैं, धर्मी वेटे वे है, जो अपने मातपिताके फरमानेपर तुर्त धर्मद्रव्य तीर्थोंमें, जिनमंदिरमें, ज्ञानखातेमें, और स्वधर्मियोंकी मददमें भेज देवे, कितनेक लोग अपनी वडाईके लिये कहदेते है, हमने हमारे मातपिताके पीछे इतने रुपये धर्मके लिये निकाले हैं, लेकिन! पीछेसे एक पैसाभी धर्ममें नही खर्चते.-

४ मरनेका वख्त नजदीक आगया मालुम देवे कुटंबके लोगोंकों मुनासिब है, उसकों धर्मकी बाते सुनावे, जिससे उसका दिल धर्ममे

बनारहे, देव गुरु धर्मका सरण देवे, और उसको सुनाते रहे दुनियामें सारवस्तु धर्म है, मरनेवालेके सामने किसीतरहकी नाराजी न बतलावे, नेंक औरत वो है जो अपने खाविंदको मरनेके वख्त धर्म सुनावे, खुद नाराज न हो, और अपने खाविंदकोभी नाराज न करे, और कहतीरहे आपकी काररवाईसें मे खुश हुं, आप फिक्र न करे, जिसवख्त मनुष्यका मरना हो, अछा ध्यान रहे तो जानना उनको अछीगति मीली, मरनेके बाद तुर्त जीव दुसरी गतिकों चला जाता है, रास्तेमें उसके शुभाशुभ कर्म शाथ लगेरहते है, जबतक इस जीवकी मुक्ति नही होती, कर्म उससे अलग नही रहते, जीवके शाथ जो शुभ पुद्‌गल लगे है–उसका नाम पुन्य और अशुभ पुद्‌गल लगे है– उसका नाम पाप है, इसलिये मुमकीन है, धर्मतर्फ खयाल रखकर किसी चीजपर मोह ममत्व नही लाना.–

५ मरतेवख्त मरनेवालेका सबसे शरीरमें कौनसा अंग हिला, वो देखना, और उसपरसें अदाज करना मरनेवाले फला गतिमे गये, मरनेवालोके गोडेसे नीचे पावके तलवेतकका अग हिला, यानी अखीरका आत्मप्रदेश निकला तो जानना उनकी अधोगति हुई, अगर गोडेउपर और कमरसे नीचेका कोई अंग हिला तो उनका जीव तिर्यंच-गतिमें गया जानना, नाभिसे लेकर गलेतकके भागमेंसे कोई अंग हिला तो जानना उनका जीव मनुष्यगतिमे गया, मुह, आख, नाक, कपाल, और मस्तकमेसें कोई अंग हिला तो उनका जीव देवगतिमे गया जानना, पेस्तरके जमानेमे जब मुक्ति होती थी तब मुक्तिजाने-वालोंका जीव सर्व अंगसें एकशाथ जैसे लालटेनसे दीया बुझ जाता है, वैसें निकलकर मुक्त होताथा और मुक्ति होती थी, ऐसा बनाव आजकल बने नही, सबब मुक्ति होनेका जमाना नही रहा.–

---

६–[ बीमारशख्श नीचेलिखी इबारतकों बाचता रहे
या दुसरेसे सुनता रहे, ]
( जिससे अछा ध्यान बनारहे )

[ दोहा– ]

जैसे कंचुक त्यागसे, विनसत नाही भुजंग,
देहत्यागसे जीव फुन, तैसे रहत अभंग, १,
जो उपजत सो तुं! नही, विनसत सोपि नाहि,
छोटा मोटा तुं! नही, समज देख मनमांहि, २,
तुं! सबमे सबसे अलग, न्यारा अलख स्वरूप,
अकथ कथा तेरीमहा, चिदानंद चिद्रूप, ३,
जन्म मरण जहां है नहि, ईत भीत लवलेश,
नही सिर आन नरींदकी, सोही अपना देश, ४
वेडी लोहकनकमयी, पापपुन्य युग जान,
दोनोंसें न्यारा सदा, निजस्वरूप पहिचान, ५
युगलगति शुभपुन्यसे, इतर पापसें जोय,
चारो गति निवारीये, तब पंचमगति होय, ६
पंचमगतिविन जीवको, सुख तिहुलोकमझार,
चिदानंद नही जान जो, ये मोटा निरधार, ७
मे! मेरा इस जीवको, बंधन पुख्ता जान,
मे! मेरा जाको नहीं, सोहि मोक्ष पहिचान,
रागद्वेष जाकों नही, ताकों काल न खाय,
काल जीत जगमें रहे, मोटा विरुदधराय, ९

७–[ अनुष्टुप्-वृत्तम्, ]

म्रियमाणं मृतं बंधुं, शोचंते परिदेविनः
आत्मानं नानुशोचंति, कालेन कवलीकृताः १

( अर्थः )–अपने स्नेही बंधुको मरतेहुवे या मरे देखकर शौच
[illegible]ता है, मगर अपने आत्माका शौच नही करता कि–मुजकोंभी

मरना है, हरशख्शको लाजिम है, अपने दिलको मुकामपर रखे, शौच फिक्र न करे, तीर्थंकर, चक्रवर्त्ती, वासुदेव, प्रतिवासुदेव, छत्रपति, बडेवडे राजे महाराजे इस देहसे सफर करगये, तो अपने स्नेही बंधुओंकी कौन गिनती, ? दुनियाका हाल देखिये ! जिस घरमें सेंकडों आदमी वसते थे, नोकर, चाकर, खिदमतमे मौजूद थे, उसी घरमें ऐसा वख्त आजाता है, एक आदमी रहजाता है, और सब विरान होजाते है, इसीलिये कहा जाता है, संसार असार है.–

८–[ धर्मशास्त्रका पाठ है, ]

यत्प्रातस्तन्न मध्याह्ने, यन्मध्याह्ने न तन्निशि,
निरीक्ष्यते हि संसारे, पदार्थानामनित्यता, १
अद्यैव हसितं गीतं, पठितं यैः शरीरिभिः,
अद्यैव–ते–न दृश्यंते, कष्टं कालस्य चेष्टितं, २

( अर्थः )–जो शुभहमें था वो दुफेरको नही, जो दुफेरकों था वो रातको नही, इसतरह सब चीजोके हाल देखेजाते हैं, इसीका नाम ज्ञानियोंनें संसारकी अनित्यता फरमाई, देखा गया है, सवेरे जो हसते-खेलते थे, शामको वे नजरमें नही आते, और वो स्थान विरान दिखाई देता है इसीका नाम कालकी विचित्रता है, हरशख्शको मुनासिब है, खयाल करे ! जवानी विदा होगई, जइफी सामने खडी है, ऐसा समजकर परलोकका रास्ता साफ करे, जैसे चिरागको हवा बुझादेती है, वैसे हजारो देवते और राजे महाराजोंको कालने बुझा दिये है, इतनी बात जानते हुवेभी बडे ताज्जुबकी बात है धर्मपर कदम नही बढाते ?

९ पेस्तरके जमानेमे कई शख्श कोडवर्स जिते थे, वेभी चले गये, कई महाशय ! लाखवर्सका और कई हजारवर्सका आयुष्य भोगकर विदा होगये, आजकल अदाज सो वर्सकी उम्र रहगई, बडे ताज्जुबकी बात है, तोभी धर्म नही करते और दुनियामे मशगूल रहते है, मरनेवालोंके पीछे धर्मी शख्श शोक सताप नही करते

बल्कि! धर्म करते है, खयाल करो! जीव कहां पैदा होता है, और कहां मरता है, ? एक शख्श हिंदमें जन्मा, और यूरोपमें जाकर मरा, एक यूरोपमें पैदा हुवा और हिंदमें आनकर मरा, न मालुम यह खाखी पुतला किस जगह जाकर गिरजायगा, जो जो बात जहांजहां गुजरनेवाली है वहांही गुजरेगी, किसीका इल्म उसवख्त नही चलता, उद्यमवादी उद्यमको वडा मानते है, मगर मरतेवख्त किसीका उद्यम नही चलता, फिर उद्यम वडा कैसे समझा गया ? उद्यमको कर्मके सामने वडा मानना नही बनता, सबब कर्मके आगे उद्यम वृथा जाता है, मगर पूर्वसंचित कर्म वृथा नही जाते.—

१० आम लोगोंको लाजिम है, गमीके वख्त दुसनके घरभी जाना और उसकों मदद् पहुचाना, आरामके वख्त सबकोई जाते है, मगर वख्त तकलीफके जावे तारीफ उनकी है, हां! अधर्मी शख्शके घर जाना कोई जरुरत नही, मरनेवालोंके पीछे शोक संताप करना अछा नही, कई मुल्कमें मुर्देको जैसी धूमसे लेजाते है, वेसी धूम दुसरे मुल्कमें विवाह सादीके वख्तभी नही होती होगी, मुल्कमुल्ककी रश्म अलग अलग है, कहातक बयान करे, जिनके जन्मके वख्त किसीने खुशी नही मनाई, और मरते वख्त कोई रोया नही, ऐसे शख्शभी दुनियामें कई होगये.—

११ स्वर्गके देवोंको दुनियाके मनुष्योंको सबको मरना है, कोई इसबातका घमंड न करे, में! अमर रहुंगा, अगर दुनियामें मरना न होता तो न मालुम लोग कितने अभिमानके शिखरपर चढजाते? जो जो शख्श दुनियामें नही समाते थे, मरेबाद उनका शरीर तीन हाथ जमीनमें समागया, जिनजिन शख्शोंपर छत्र चमर होते थे, मरतेवख्त उनकों कोई जल पीलानेवाला नही मिला, रिस्तेदार अपने स्नेहीयोंके मूर्दोंको जलाकर या जमीनमें गाडकर चले आते है, कोई किसीके शाथ नहीं जाता, "नयीबात नयादिन तानीखेंची

तेरह दिन" इसीतरह थोडेदिन सौच फिक्र करके अपने ऐशआरामें लगजाते हैं, जाहिरातमे कहते है, हमारे घर शोक है, और घरमे बेठकर मिठाई खाते है, देखिये! दुनियाका अजब तमाशा.—

१२ [ एक कविका बनाया हुवा—संसारकी असारता दिखलानेवाला पद, ]

( रागिनी काफी- )

कोई अजब तमाशा देखा दुनिया बीच, एटेर,—
एकनके घर मंगलगावे, पुरे मनकी आशा,
एक वियोग सहित दुख रोवे, भरभर नैन निराशारे, कोई १
तेज तुरगमपर चढ चलते, पहने मलमल खासा,
रंक भये नंगे पग डोले, कोई न दियेरे दिलासारे, कोई २
प्रातःकाल तखतपर बेठे, चाकर बखत हुलासा,
ठीक दुफेरी मुदत पहुंची, जंगल होगया वासारे, कोई ३
कोडी कोडी कर धन जोडा, जोडा लाख पचासा,
अंतसमय चलनेकी वारी, साथ न चले एक मासारे, कोई ४
तन धन जोवन थीर नही जगमें, ज्यू जलवीच पतासा,
भूदर इनका मानकिया जिन्हे, छुटा उनका घरवासारे, कोई ५

१३ समजसकों तो दुनियाकी कैसी स्थिति है? जिसका जन्म है, उसका नाश है, दुनियामें यह जीव अनंतवार जन्म मरण करचुके इसलिये धर्म करना जरुरी है, जिससे जन्म मरण छुट सके.—

मातापितृसहस्राणि, पुत्रदाराशतानि च,
प्रतिजन्मनि लभ्यंते, कस्य माता, पितापि वा,

( अर्थः ) हे! आत्मा! जन्मजन्ममें मातापिता हजारों होगये, औरत और बेटाबेटी सेकडो हुवे, फिर किस जन्मके मातापिताकों याद करे? सब्र करो, और शोकके वख्तभी धर्म करो, कई लोग इज्जत या तकलीफके मारे जहर खाकर या कुवेमे गिरकर मरते है,

कई औरतें पतिके मरनेके बाद जलमरी है, मगर धर्मशास्त्र इस बातकों अछी नही फरमाते है, अज्ञानी अव्रतीका मरना बालमरण है, ज्ञानी सर्वविरतिका मरना उत्तम मरण है, और देशविरतिका मध्यम दर्जेका मरण है, जो शख्श धर्मध्यानमें पावंद रहकर मरे उसकी अछी गति होगी, मगर मरनेसे पहले जिसभावमें अगले जन्मका आयुष्य बंधा हो वो भाव मरतेवख्त आजायगा, इसलिये उम्रके तीसरे भागमें धर्मध्यानपर ज्यादा पावंद रहना चाहिये, जिससे अछी गतिका आयुष्य बंधे.–

१४ दुनियामें कोई ऐसा शख्श नही जो मृत्युसे बचाहो, जितना आयुष्य पूर्वभवसें जीव बांधलाया है उसका पुरा होजाना उसका नाम मृत्यु है, क्या! अमीर या गरीब सभीको मरना है, आदमी अपनी जीवितदशामें धन्यवाद और इज्जत हासिलकर सकता है, लेकिन! विना गुणके इज्जत फेलती नही, फुल नही मगर अछे शख्शोंकी इज्जतरूपी खुशबू बनी हुई है, दुनियामे मान अपमान सुखदुःख और हांसीखुशी आदमीकों मिलसकती है, लेकिन! तारीफ उन्हीकी है जो समभावमें रहे.–

१५ पानीमें डूबकर या जहेर खाकर मरना अज्ञानीयोका काम है, क्या! इसतरह मरनेसे पूर्वसंचितकर्म विदून भोगे छुटसकते है? कभी नही, बल्कि! बुरी गति पाकर जन्मजन्ममें तकलीफ उठाना पडती है, अछे लोगोंकी तालीम पाई है, तो याद रखो! इसतरह जान खोना बुरा है.–

१६ मृतकलेवरकी अंतिमक्रिया मुल्कमुल्कमे अलग अलग तौरसे किई जाती है, लेकिन! जो जलादेनेकी रसम है वो सबसे अछी है, कई लोग मुर्देको जमीनमें गाड देते है, कई समुंदर या नदीमे वहन करदेते है, कई सूर्यके तापसे सुकानेके लिये या सडगल जानेके लिये जंगलमे छोड आते है, कई लोग मसाला भरकर संदूकमें रखते है, कई लोग इंट चुनेके कमरे बनाकर उसमे सोला देते

है, लेकिन! सबसे अछी रसम अग्निमें रखकर जला देनेकी है, किसी जमानेमे जंगलमें रखआनाभी लोग पसंद रखते थे.–

१७ जीव जब इस दुनियाफानी सरायसे सफर करजाता है, नजर नही आता, नजर कैसे आवे? वो अरूपी है, उसके शाथ जो चारफर्सी पुदगलरूपकर्म लगे है, वे पाचइद्रियोंके गोचरमें नही आते, मुर्देकों जलाकर स्नानकरके घर आना यह एक कदीमी रवाज है, देवदर्शनकों जाना तो दुरसे खडे होकर दर्शन कर लेना चाहिये.–

१८ जब कभी साधुलोगोका इंतकाल होजाय उनके मृतकलेवरकों काष्ठके विमानमे वेठाकर लेजाना और मशानमें जाकर अग्निसंस्कार करना चाहिये, चदनकी लकडीसें केशर, कपुर, वगेरा खुशबूदार चीजोंसे मृतकलेवरको जलाना गुरुभक्तिका काम है, दुनियादारोंसे साधुलोगोंका दर्जा बडा है, तीर्थंकरोंके शरीरके अस्थि देवते क्षीरसमुद्रमें वहन करा देते है, और उनकी दाढे इंद्रदेवते स्वर्गमे लेजाकर पूजते है.–

१९ जो शख्श धर्म करेगा अगले जन्ममे आराम पायगा, इसलिये कहाजाना है, दुनियामें सारवस्तु धर्म है.–

[ यदुक्तं धर्मशास्त्रे, ]

विपत्तौ किं विषादेन, संपत्तौ हर्षेण किं ?
भवितव्यं भवत्येव, कर्मणो गहना गतिः १
देशेन यः संचितकर्मणां क्षयः
स्यान्निर्जरा प्राज्ञजनैर्निवेदिता,
स्यात्सर्वथेयं यदि सर्वकर्मणां,
मुक्तिस्तदा तस्य जनस्य संभवेत् २,
अज्ञानकष्टाश्रिततापसादयो,
यत्कर्म निघ्नंति हि वर्षकोटिभिः,
ज्ञानी क्षणेनैव निहंति तद्द्रुतं,
ज्ञानं ततो निर्जरणार्थमर्जयेत् ३,

( अर्थः ) दुखके वख्त दिलगिरी लाना क्या जरूरत है? किये हुवे कर्म भोगनेही पढते है, सुखके वख्त खुशी माननाभी क्या जरूरत? चाहे शुभकर्म हो या अशुभ उदय आनेपर भोगनेही पडेगे, होनहार मिटता नही, इसीलिये कर्मकी गहनगति ज्ञानी जनोंने फरमाई, १ पूर्वकृतकर्मका क्षय होना इसका नाम निर्जरा है, और उन्हीकर्मोंका बिल्कुल क्षय होजाना इसका नाम मुक्ति है, २ अज्ञान कष्टसें जो कर्म कोडो वर्षमें खपाये जाते है, वेही कर्म ज्ञानी लोग एक क्षणमें क्षय करदेते है, इसलिये ज्ञान बडी चीज है, सब कर्मोंकी उपाधिरूप अग्निका बुझ जाना, उसका नाम निर्वाण है, और निर्वाणका दुसरा नाम मुक्ति है, निर्वाण हुवेबाद आत्मा लोकके अग्रभागमें जाता है, और आत्मिक सुख भोगता है.—

२० कई मुल्कोंमे सारंगी तबले बजातेहुवे वैराग्यरसके पद गाते मुर्देकों लेजाते है, यह अछी रसम है, सबको इस दुनिया फानी सरायसे रुकसत होना है, अपनी दौलत और सुखचैनका अभिमान करना कोई जरुरत नही.—

२१ जिस बीमारको रातभर नींद न आवे और सब इंद्रिये अपना अपना कार्य छोडदेवे तो जानना चाहिये बीमारी सख्त है, स्वास चलना, शूल उठना, हिचकी चलना, बहुत प्यास लगना, सब चीजे लालरगकी दिखाई देना, सख्त बीमारीके निशान है, जिस बीमारके हाथ पांव गर्म बनेरहे, और होशियारीसे बाते करे जानना चाहिये, बीमारी रफा होगी, आंखोसें देखे मगर किसीकों पहिचाने नही तो जानना बीमारी सख्त है.—

२२ जिसकों अपनी छायामें अपना मस्तक न दिखाई दे उसका मरना नजीक आया, अपने दोनों कानोंमें एकशाथ दोनों अंगुली दबाकर देखो! अंदरका अवाज (घोर शब्द) अपनेको सुनाई देता है, या नही? अगर न सुनाई दे तो जानना बीमारी सख्त है, बीमार शख्शके कानोंसे सुनना बंद होजाय तो सात रोज जीना,

बाकी है, नाकसें खुशबू या बदबू मालुम होना बंद होजाय तो पांच रोज जीना बाकी है, कई शख्शोंकी नाशिका जन्मसेही कमजोर होनेसें उनको खुशबू या बदबू मालुमही नही होती, उनकी बात यहां नही जानना, छींक आनेके शाथ पेशाब वीर्य या पाखाना छुट जाय तो जानना, महिनाभर जीना बाकी है.–

२३ जब कोई अपना स्नेही, मरनेकी सेजपर सोवे, उसकी भलाइके लिये धर्म सुनावे, मरतेवख्त धन दौलत और कुटुंब परिवारपर मोह रखना बहेत्तर नही, बल्कि! देवगुरु धर्मपर कामील एतकात रहना चाहिये, मरणांतकष्टके वख्त उनके सामने जाकर सचे दिलसे क्षमापना करना और वैर विरोधको छोड देना अछेशख्शो काम है, अपनी जात बिरादरीमे किसी रिस्तेदारोंके शाथ दुश्मनाई होगई हो और बोलाचाली छुट गई हो, मरणांतकष्टके वख्त उनके पास जरुर जाना और क्षमापना करना चाहिये.–

२४ बीमारीके वख्त अपनी दौलतका वसीयतनामा करदेना चाहिये, मेरे मरेबाद मेरी दौलतकी व्यवस्था इसतरह है, धर्ममे बोलाहुवा धन तुर्त खजानेसें निकालकर जैनमंदिर जैनतीर्थ या जैनपाठशालामे भेजवा देना, और बाकी रहाहुवा धन स्त्री पुत्र पुत्री और भाईयोंके लिये लिख देना जिससें पीछे विरोध न हो.–

२५ मरतेवख्त मरनेवाले बेहोश होजाय और कुटुंबके लोग उनके सामने बेठकर अमुक रकम आपके पीछे धर्म करेंगे ऐसा बोले, उसवख्त मरनेवालेका ध्यान न हो तो उसको पुन्य न होगा, और कुटुंबपरिवारके लोगोंकोभी अगर विनाधर्मके इरादे दुनियादारीके मुलाहजेसें किया हो तो पुन्य न होगा, मरनेवाले या कुटुंबपरिवारके लोग इरादे धर्मके अगर करे, करावे, या अनुमोदन देवें तो पुन्य है, अगर विनाधर्मके इरादे दुनियादारीकी शर्मसें करे तो कुछ पुन्य नही.–

२६ सब लोग इस दुनियाफानी सरायमें बतौर मेहमानके आये है, और चलेजायगे, सबकों एक रौंज जाना है, रंज करना क्या? फायदा? तारीफ उनकी हैं जो रज न करे, जीव परभवसें दो तरहके आयुष्य बांधकर आते है, चौइस तीर्थकर बारह चक्रवर्त्ती वगेरा (६३) शलाका पुरुष नोपक्रम आयुष्य बांधकर आते है, दुसरे जीव सोपक्रम आयुष्य बांधकर आते है.–

२७ मरनेके बाद जीव एक गतिसें दुसरी गतिको जाता है, कइ कहते हैं, यम पकडकर लेगये, मगर नही, अपने अपने कियेहुवे भलेबुरे कर्म उसकों लेजाते है, पापकर्म करके जीव यहांसे मरकर नरकगतिमें जाता है, जो लोग पुन्य पाप नरक-स्वर्ग और धर्मशास्त्रको नही मानते वे चाहे न माने, उनकी मरजीकी बात है.–

२८ पापकरके नरकगतिमे गयेहुवे जीव मारे तकलीफके चिल्लाते है, शौर गुल करते है, मगर उनकी सुनाई करनेवाला वहां कोई नही, जितनी उम्र पाई है, वहांतक छुट आनेका कोई उपाव नही, छुट कैसे आवे? जब अपने पापकर्म पुरे भोग लिये जाय जभी वहासें मरकर दुसरीगति पासके, हमेशां वहां भुख सतांती है, प्यास तकलीफ देती है, निहायत गर्मी और कहीं कही निहायत ठंडी, हमेशां बीमारी, हमेशां बुखार, जलन, और तरहतरहकी तकलीफे उठाना पडती है, कोई वहां तकलीफ मिटानेवाला या छुडानेवाला नही, शरीर पारेकी तरह बिखर जाय और फिर मिल जाय चाहे जितनी तकलीफ पावे, मगर शरीरसें जान निकसे नही, जब लाखों करोडों वर्सकी उम्र पुरी हो अपनी करनीके फल भोग लिये जाय जीव वहांसे निकसकर दुसरी गतिमें आसके मुताबिक फरमान धर्मशास्त्रके नरकगतिका स्थान जमीनके नीचे है, जहां हमेशां अंधेरा बना रहता है, बहुत पापकर्मके उदयसें जीवकों नरकगतिमें जाना पडता है, जैसे लोहचुंबक पथर लोहेकों खेंच लेता है, वैसे पापकर्म इसजीवकों खेंचकर नरकगतिकों लेजाते है,

चुनाचे! जीव बुरीगतिको जाना नही चाहता, मगर लाचार है कर्मके आगे जोर नही, और उदय आनेपर भोगना पडता है.–

२९ (शार्दूल-विक्रीडितं.)

अर्हंतो भगवंत इंद्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता,–
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः,–
श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः,–
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वंतु वो मंगलं,– १.

[अनुष्टुप्-वृत्तम्,]

नमोस्तु वीतरागाय, देवाय परमार्हते,
नमोस्तु सर्वसिद्धेभ्यो, धर्माय च नमो नमः– २
शरणं स्युर्ममार्हंतः सिद्धाश्च शरणं मम,
शरणं साधवः सर्वे, धर्मश्च शरणं मम, ३
संप्राप्ता मृत्युवेलेयं, कालः संसाध्यते ततः
आत्मनो मरणं भाग्यैः पश्यंति हि सुचेतसः ४

३० [सूत्रपाठः]

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहु मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं,
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंतालोगुत्तमा, सिद्धालोगुत्तमा,
साहु लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मोलोगुत्तमा
चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंता सरणं पवज्जामि,
सिद्धा सरणं पवज्जामि, साहु सरणं पवज्जामि,
केवलिपन्नत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि,–

[अनुष्टुप्-वृत्तम्]

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभुः,
मंगलं स्थूलभद्राद्या, जैनधर्मोस्तु मंगलं,– १

३१ [ दोहा. ]

स्मर्ण करो अरिहंतनुं, सिद्ध भजो भगवंत,
आचारज उवज्झायने, समरो महामुनि संत, १
पंचमंगल ऐ मोटकां, ध्यातां भव निस्तार,
शरण नही कोई ए विना, भवमां राखण हार, २
शरण ऐक अरिहंतनुं, शरण सिद्ध भगवंत,
शरण धर्म श्रीजैननुं, साधु शरण गुणवंत, ३
आभव परभव जे कर्यां, पापकर्म केई लाख,
आत्म साखे ते नींदिये, पडिकमिये गुरु साख, ४
सगपण ए संसारमां, थयां अनंती वार,
वालां वैरीथई अवतरे, वेरी वालो संसार, ५
मिथ्या दुःकृतदीजिये, सेव्यां पाप अढार,
आभव परभव सेवियां, दोष अनेक प्रकार, ६
जे जे कर्यांने कार्व्यां, पनरे कर्मादान,
त्रिविध त्रिविध वोसराविये, दुर्गतिनां ये निदान, ७
शूर थावो जिव ईण समय, न करो कायर भाव,
असुर सुरादिक थीर नही, ये संसार स्वभाव,- ८

३२ [ अनुष्टुप्-वृत्तम्. ]

तपःश्रुतादिना मत्तः क्रियावानपि लिप्यते,
भावनाज्ञानसंपन्नो, निःक्रियोपि न लिप्यते, ९
मयूरीज्ञानदृष्टिश्चेत् प्रसर्पति मनोवने
वेष्टनं भयसर्पाणां न तदानंदचंदने, १०
याति दूरमसौ जीवः पापस्थानाद् भयद्रुतः
तत्रैवानीयते भूयोभिनवप्रौढकर्मणा, ११

[ गाथा. ]

देवा विसयपसथ्था, नेरयिया विविधदुःखसंतत्ता,
तिरिया विवेकविकला, मणुआणं धम्मसामग्गी, १२

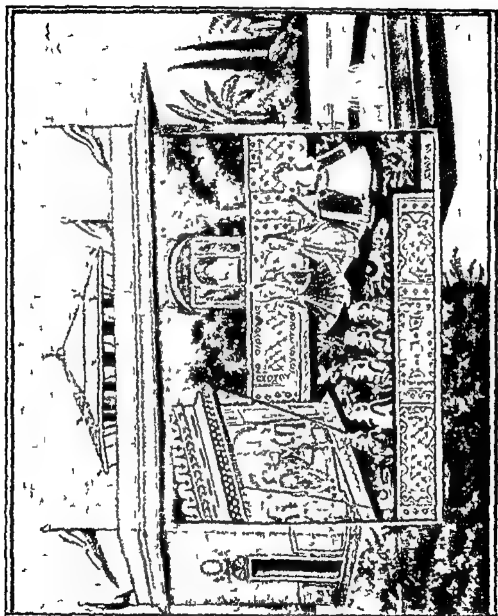
सोहु तवो कायवो, जेण मणो मंगुलं न चिंतेइ,
जेण न इंदिय हाणि, जेणय योगा न हायंति, १३

[ तपःश्रुतादि तीनश्लोक और देवासुर पसध्यादि-
दो गाथाका अर्थः- ]

तप और श्रुतज्ञानका घमंड करके कोई शख्श तरहतरहकी क्रिया करे तोभी वो संसारसें मुक्त नही हो सकता, बल्कि! संसार बढाता है, अगर वो शख्श ज्ञानयुक्त भावनामे लीन रहे तो विना क्रियाभी संसारसे मुक्त होसकता है, जिस शख्शके मनरूपी वनमें ज्ञानरूपी मयूरी फिरती है, उसके आत्मआनंदरूपी चंदनवनको कर्मरूपी सर्प बंधन नहि कर सकते, अगर कोई शख्श दुखपानेके खौफसें दुखकी जगहकों छोडकर दूर चला जाय और दिलमें सौचे-मैं-दूर चला आयाहुं, मुजे दुख न होगा, मगर उसके पूर्वसंचितकर्म उसके इरादोंको फिराकर वापिस उसी जगह लाते है, और दुख भोगना पडता है, देवगतिके देवते लोग एशआराममें मशगूल रहते हैं, नारकीके जीव हमेशा दुखमे पडे रहते है, तिर्यंचगतिके जीवोंको विवेक नही, इसलिये ये तीनों अछी तौरसें धर्म नही करसकते, मनुष्यजन्ममे धर्मकी सामग्री मीली है, इतनेपरभी धर्मध्यान न करे उनकी भूल है, तप वैसा करना चाहिये, जिससें मनकों सकल्प विकल्प पैदा न हो, और अश्रद्धा न आजाय, इंद्रियोंको हानि न पहुंचे और मनवचनकायाके योगोंकोभी क्षति न आन पडे.-

३३ [ धर्मआराधन करनेके वीस रास्ते, ]

१ अरिहंत और अरिहंतकी मूर्त्ति, २ सिद्ध, ३ प्रवचन, श्रुतज्ञान, अथवा श्रुतज्ञानका आधार, साधु, साधवी, श्रावक, श्राविका चतुर्विधसंघ, ४ आचार्य, ५ स्थविर, ६ उपाध्याय, ७ साधु, इन सातपदोंकी इरादे धर्मके शुभभावसें भक्ति, पूजा, और ध्यान करनेसें इस जीवकों पुन्यानुबंधिपुन्य हासिल होता है, और स्वर्गगति पाकर, अनुक्रमसें



१० पाणपुन्ये, ११ इसिवाई, १२ भूइवाई, १३ कंदे, १४ महाकंदे, १५ कोहंदे, और १६ पयंगदेवे. ज्योतिषी देवोंके दश भेद, १ चंद्र, २ सूर्य, ३ ग्रह, ४ नक्षत्र और ५ तारे, ये पांच अढाईद्वीपके अंदर चर हैं, और अढाईद्वीपके बाहर पांच अचर है, दोनों मिलानेसे दश-भेद हुवे, देवताओंकी उम्र बनिस्बत मनुष्योंके लंबी होती है, मगर उनकोभी अखीरमें मरना है, अलबते! देवलोकमें मनुष्यलोकसें सुख ज्यादा, साफ हवा, उमदा बगिचे, कुवे, वावडी, तालाव, और तर व तरजलके भरेहुवे कुड, खेलकरनेके लिये मौजूद है, तरह-तरहके रत्न, तरहतरहके नाटक, गीत गान, और भोग विलास हाजिर है, जहां देवागनोको गर्भ रहनेका कोई काम नही, वहांकी उत्पात शय्यामे पैदा होकर देवोंको दो घडीमे जवानी आजाती है, और सुख चैन भोगनेकी चीजे हाजिर होजाती है, लंबी उम्रतक एशआराम भोगते है, देवताओंमें धर्मी और अधर्मी दो तरहके देवते होते है, जो धर्मी देवते है, वे मनुष्यलोकमे आकर महाविदेह क्षेत्र वगेरामे जाकर जिनेंद्रोंकी वानी सुनते है, तीर्थोंकी जियारत करते है, नंदीश्वर द्वीप वगेरामे अष्टान्हिका महोत्सव करते है, और जिनेंद्रदेवोंकी इबादत करते हैं, फिर देवलोकमे चले जाते है, मगर जब उनकी उम्र खतम होती है, वहासे मरकर मनुष्यगतिमें अछे खानदानके घर जन्म पाते हैं, जिससे उस जीवको यहाभी सुख चैन मिलता है,–

३९ जो अधर्मी देवते हैं, वे देवलोकमेंभी धर्म नही करते, एश आराममें मशगूल रहते है, आपसमें लडाई करते है, और वैर विरोध करके पापकर्म बांधते है, जब उनका मरना नजीक आता है, उदाश होकर रंज उठाते हैं, और दिलमें फिक्र लाते हैं, हमने कुछ नही किया, मगर उसवख्त फिक्र लानेसे क्या हो, जैसे कर्म किये जाय वैसाही फल मिले, यह सिधी सडक है.–

[ अनुष्टुप्-वृत्तम् , ]

**हा ! वाप्यो हा ! निधानानि, हा ! प्रिया हा ! सुरांगनाः,**
**क्व द्रष्टव्याः पुनर्यूयं, हंत ! दैवैर्वियोजिताः १**

( अर्थः ) मरतेवख्त वे अधर्मी देवते दिलमें रंज लाकर कहते हैं, हा ! बावडी और बाग बगिचे, हे ! रत्नोके भरेहुवे निधान ! हे ! देवांगनाओ !! आप अब फिर कब मिलोगे ? पूर्वसंचितकर्म वियोग डालते है, क्या करे ! इसका कोई इलाज नही, आपको छोडकर मुजे जाना पडता है, इसतरह फिक्र और रंजमें गायब होकर मरते है, मगर यह नही सौचते, धर्मकरनेके वख्त गाफिल क्यौ बने थे, और धर्म नही किया, धर्मशास्त्र फरमाते है निस्पृह होकर धर्म करोगे मुक्ति हासिल होगी, और जन्म मरण छुटेगा.—

४०-[ मुक्तिका-बयान. ]

मुक्तिके बारेमें कई मजहबवालोंका कहना है, मुक्तिमें जाकर फिर संसारमें आना होता है, इन्साफ कहता है, वो मुक्ति क्या ! हुई !! जहांसे फिर संसारमें आना पडे, कई मजहबवाले फरमाते है मुक्तिमें किसी तरहका ज्ञान नही होता, पथरकीतरह जड और सुखदुख-रहित मुक्ति मानी है, और फिर तारीफ इसबातकी है, आत्माकों सर्वव्यापी मानते है, मगर इन्साफ इसबातको कबुल नही करता, मुक्ति ज्ञानमय होना चाहिये, और आत्मा देहमें रहकर सर्वव्यापी नही बनसकता, मुक्तिमें ज्ञानसे सब पदार्थोंको जाननेकी अपेक्षा सर्वव्यापी बनसकता है, कई मजहबवाले बयान करते है, मुक्तिमें विषयसुख मिलता है, मगर इतना नही सौचते, मुक्तिमें शरीर नही तो फिर विषयसुख कहांसें मिले ?—

४१-[ जैनमजहबमे मुक्तिका बयान इसतरह है. ]

( स्रग्धरा-वत्तं, )

नात्यंताभावरूपा, न च जडिममयी, व्योमवद् व्यापिनी नो,
न व्यावृत्तिं दधाना, विषयसुखघना, नेक्ष्यते सर्वविद्भिः
सद्रूपात्मप्रसादा, दृगवगमगुणौघेन संसारसारा,
निःसीमात्यक्षसौख्योदयवसतिरनिःपातिनी मुक्तिरुक्ता १

( अर्थः ) जैनमजहबमें अत्यंत अभावरूप मुक्ति मंजुर नही रखी, बल्कि ! सद्भावरूप मुक्ति मानी है, मुक्तिमे जाकर जीव जडरूप होजाता है, ऐसाभी जैनमजहबवाले नही मानते, बल्कि ! मुक्तिमे आत्माकों ज्ञानमय मानते हैं, देहकरके सर्वव्यापी नही, क्योंकि मुक्तिमें देह नही रहता, बल्कि ! जैनलोग मुक्तात्माकों ज्ञानसे सर्वव्यापी मानते है, ( यानी ) मुक्तात्मा अपने ज्ञानसे सब चीजोको मुक्तिमें रहेहुवे जान सकते है, जैसे कितनेक मजहबवाले मुक्तिमें जाकर वापिस लोट आना मानते है, वैसे जैनलोग मुक्तिमेसे वापिस लोट आना नही मानते, मुक्तिमें विषयसुखका होनाभी जैनलोग मंजुर नही रखते, विषयसुख संसारमे होता है, मुक्तिमे आत्मिकसुख है, मुक्तिमें गयेबाद जन्म मरण नही, और वहांसें फिर गिरनाभी नही होता, मुक्तिमें हमेशां सचिदानंदरूप ज्ञानमय आत्मा अपने आत्मिक सुखमे लीन रहता है, और वो मुक्तिका स्थान स्वर्गसें उपर है.–

४२ अंतिम आराधनाका बयान खतम होता हैं, पापकरनेसें इस जीवकों दोजक और पुन्यकरनेसे बहीस्त मिलता हैं, बहीस्तसेभी मुक्तिका दर्जा बडा है, बहीस्तमे जन्ममरण नही छुटता, मुक्तिमे छुटजाता है, और आत्माको अनंत अव्याबाध सुख मिलता है, और फिर इस दुनियामें आना नही होता.–

[ बयान अंतिम-आराधनाका खतम हुवा, ]

## [ सिद्धांत-रहस्य, ]

१ धर्मशास्त्र साफ फरमाते हैं, अपनी धर्मक्रिया अपनेकों फल देती है, दुसरोंकों नही, फर्ज करो! सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रवान् उत्तम मुनिको किसी गृहस्थनें नमस्कार किया, अगर वो नमस्कार अछे मनपरिणामसें किया गया हो तो पुन्यरूप फलदायक होसकेगा, अगर अछे मनपरिणामसें न किया हो, लोग देखादेखी किया हो, तो पुन्यफलका दायक न होसकेगा, अकेला कायक्लेश होगा, सबुत हुवा उस उत्तममुनिका उत्तमचारित्र उनकों फलदायक है, नमस्कार करनेवालोंको नही, नमस्कार करनेवालोंकों तो अपने मनपरिणामही फलदायक है, धर्मशास्त्रोंमें परिणामें बंध कहा.–

२ दुनियामें एक जानकर शख्श है, जो अछे बुरेकों समज सकता है, दुसरा अजानकार शख्श है, जो अछे बुरेको नही समज सकता, जानकारके हाथसें कोई पापकर्म हुवा, और इसीतरह अजानकारके हाथसेभी हुवा, जानकार शख्श अपने ज्ञानसें पापकर्म करते वख्तभी समज सकता है, मे पाप करता हुं अछा नही है, इसलिये जानकारकों निकाचितकर्म नही बंध सकता, अजानकारकों उतना ज्ञान नही, इसलिये क्रूर परिणाम रहनेसें निकाचितकर्म बंध हो जाता है, दुनियामें ज्ञान बडी चीज है, ज्ञान जैसा इस जीवका कोई दोस्त नही, और अज्ञान जैसा कोई दुश्मन नही, उस जीवने पूर्वजन्ममें क्यों ऐसे पापकर्म किये जिससें उसकों निर्मलज्ञान हासिल नही हुवा, अपनी करनीके फल भोगे.–

३ श्रद्धा, ज्ञान, और चारित्रमें श्रद्धा इसलिये बडी चीज कहीगई वो ज्ञानकों हासिलकरके मुक्ति मिला सकती है, चारित्र न हो तो भी पापकर्मका नाश होसके, धर्मशास्त्रमें लेख है, "भावना भवनाशिनी," सबुत हुवा, भावनाभी भवका नाश करनेवाली है, कई जीवोंने चारित्र नही लिया, चारित्रके भेदोंकों आराधन नही किये, मगर श्रद्धामे पावंद रहनेसे उनको ज्ञान और मुक्ति मिली है, एक

कूर्मापुत्र नामके गृहस्थकों दुनियादारी हालतमेंभी भावनासें केवलज्ञान मिला, एलाचीकुमारको नृत्यकरते हुवेभी भावनासें केवलज्ञान मिलसका, भरतचक्रवर्तीको आरिसा भुवनमें भावनासे केवलज्ञान हासिल होसका, चारित्र हो अगर न हो, श्रद्धा और ज्ञान पुख्ता होने चाहिये.—

४ काल, स्वभाव, नियति, कर्म और उद्यम, इन पांचोंमें कर्म बलवान् है, उद्यम न कियाजाय तोभी अकेले कर्म फल देसकते है, और सब सामग्री मिला सकते है.—

[ दोहा, ]

इष्टवस्तु साधन भणी, प्रापति कारण पंच,
तेहमांहि पुन्यज वडुं, मेले अवर प्रपंच, १

इसका मतलब यह हुवा, सबमें पूर्वसंचित कर्म बलवान् है, और वेही सब सामग्री मिलादेते है, पूर्वकृत कर्मके उदयानुसार जीवको बुद्धि पैदा होती है, और उस मुजब बरताव करता है, इसलिये कर्म ताकतवाले फरमाये गये.—

५ जैनशास्त्रोंमें सामायिक चारतरहके फरमाये, १ सम्यक्तसामायिक, २ श्रुतसामायिक, ३ देशविरतिसामायिक, और ४ सर्वविरतिसामायिक, इनमें सम्यक्तसामायिक और श्रुतसामायिक, बडे कहे, हरचीजके दो बडे गुण है, एक मूलगुण दुसरा उत्तरगुण जैसे संयमी पुरुषकेलिये पंचमहाव्रत मूलगुण और पिंडविशुद्धिवगेरा उत्तरगुण है, मूलगुणमें फर्क न होना चाहिये, उत्तरगुणमे फर्क हो तो कोई हर्ज नही.—

६–[ दोहा, ]

ज्ञानदशा जहां आकरी, तेहीज चरण विचारो,
निर्विकल्प उपयोगमां, नथी कर्मनो चारो, १

(अर्थः)—ज्ञानमें जबतक मनका तीव्रउपयोग लगा रहे, उतनेवख्त वो शख्श चारित्रमें है, ऐसा जानो, ऐसे ज्ञानके निर्विकल्प उपयोगमें बरतता हुवा जीव अशुभकर्म न बांधे, बल्कि ! शुभकर्म बांधे.—

७ विशस्थानकमेंसें किसीपदकी आराधना करे तो पुन्यानुबंधि पुन्य हासिल करे, पुन्यानुबंधि पुन्य इस जीवकों धर्मके नजीक लाता है, तीर्थंकरदेव तीसरे भवमें विशस्थानकपदकी आराधना करते है, इसलिये उनकों तीर्थंकर गोत्र हासिल होता है, सबुत हुवा पुन्यानुबंधि पुन्य बडी चीज है, जो लोग कहा करते है, पुन्यभी छोडने लाईक है, मगर यह बात ठीक नही, जबतक इस जीवको मुक्ति नही मिली, पुन्य छोडने लाईक नही, अलबते! मुक्ति पायेबाद पुन्यकी कोई जरुरत नही.–

८–[ दोहा. ]

**आत्मसाक्षी ये धर्म ज्यां, त्यां जननुं शुं काम,**
**जनमनरंजन धर्मनुं, मूल्य न एक बदाम, १**

( अर्थः )–सचेदिलसें जहां धर्म किया जाय वहां दुसरे लोग खुश हो या न हो, उसकी क्या जरुरत? दुसरे लोगोंको खुश करनेकेलिये जो धर्म कियाजाय तो उसकी कुछ किंमत नही, क्यौंकि जहां मनपरिणाम ठीक न हो तो धर्मका फायदा कैसे मिलसके? किसी शख्शसें उपवासव्रत होसकता नही, मगर उसका तीव्रमनपरिणाम उपवास करनेका है, तो उसको उपवासव्रतका फल मिलसकता है, किसी शख्शने उपवासव्रत किया, मगर मनमें कहता है, नाहक! मेने उपवास किया, न करता तो अछाथा, ऐसे इरादेवाले शख्शको उपवासव्रतका फल नही मिलसकता, सबब उसके मनपरिणाम उपवास करनेके नही.–

९ अगर कोई कहे, जीवका स्वरूप कैसा समजना? जवाबमें मालुम हो, चेतनालक्षणो जीवः, चेतनालक्षणवाला जीव और चेतनालक्षणसें रहित अजीव है, अगर कोई कहे पूर्वसंचितकर्मका नाश होसकता होगा या नही? जवाबमें तलबकरे, पूर्वसंचितकर्म विनाभोगे नाश नही होसकते, निकाचितकर्मके भोगतेवख्त अगर रागद्वेष न करे और समताभावमें रहे, तो आगेको अशुभकर्म न बंधे,

पूर्वसंचितकर्मके उदयानुसार जिसको ऐसी ताकात हासिल हुई हो, और समताभावमें रहसके तो अच्छा है, अगर ऐसी ताकात हासिल न हुई सकी हो, समताभावमें न रह सके, आर्त्तध्यानमें पडजाय तो आगे ज्यादा अशुभकर्म बंधे, पुन्योदयसें इस जीवके मनपरिणाम सुधरते है, पापके उदयसें मनपरिणाम बिगडते है.–

१० अगर कोई इस दलिलकों पेंश करे, कर्म--इस जीवकों खुद फल देते है, या दुसरा कोइ, ? कर्म जड है फिर फल कैसे देसकेगें ? यहभी सवाल है, ( जवाब. ) कर्म जड है तो क्या हुवा ? उनकी ताहसीर फल देनेकी है, वो कैसे छुटे ? देखो ! शराब जड है, मगर उसके पीनेसें आदमीकों नशा आजाता है, अफीम, वछनाग जड पदार्थ है, उसके खानेसे मरणांत कष्ट होता है, सबुत हुवा, जड पदार्थसें चेतनको असर होती है, इस तरह जड कर्मभी जीवको असर पहुचाते है, किसीको समजो बुखार चढा तो कहता है मुजे बुखार चढा है, उतरगया तो कहता है, मुजे अब आराम है, कहिये ! यह क्या बात हुइ ? बात यह हुई, अशुभ कर्मके उदयसें बुखार आया, और अशुभकर्म दूर होनेसें उतर गया, यह एक सीधी सडक है, घी, और दुध खानेसे शरीरमें ताकात आती है, सोचो ! जड वस्तुसें ताकात आई या नही ? सबुत हुवा, जड कर्म जीवकों सुख दुख देते है.–

११ अगर कोई तेहरीर करे, कर्मकी माफी देनेवाला कोई नही, भोगनेही पडेगें, तो सचितसें क्रियमाण कर्म वढजायगें, फिर जन्ममरणका अंत कैसे आयगा ? मन चंचल है, हरवख्त कर्म बांधता रहता है, मुक्ति कैसे होगी ? ( जवाब. ) मुक्ति ऐसे होगी, सुनिये ! पूर्वसंचित कर्म समताभावसें भोग लिये जाय, आगेको नये कर्म न बधे, वो फिर मुक्ति कैसे न होसकेगी ? अगर मन सुधरजाय तो वचन और काया अकेले क्या कर सकते है ? सब बात मनके इख्तियार है, जब कियेहुवे कर्मके भोगनेमें अगर कोई समताभाव

रख सके तो आगे उसके क्रियमाण कर्म कैसे बढ सकेगें? अगर कोई शख्श सोते वख्त धर्मध्यानमें लीन होकर सोवे तो उसको नींदमेंभी अशुभ कर्म न बंधेगें, बल्कि! शुभकर्म बंधेगे, क्यौकि-सोतेवख्त उसका मन धर्मध्यानमें लगाथा, अगर कोइ शख्श आर्त्तरौद्रध्यानमें लीन होकर सोवे तो नींदमेभी उसकों अशुभकर्म बंधेगें, क्योंकि-उसका मन बुरेध्यानमें लगाथा, दुनियामें मिशल मशहूर है, मनके हारे हार है, मनके जीते जीत, एक मनकों जिसने जीत लिया उसने सबकों जीत लिया, इस बातकों कोई इनकार नही करसकता.-

१२ अगर कोई कहे-कर्मका फल देनेवाला ईश्वर है, ऐसा माने तो क्या हर्ज है? ( जवाब. ) जीव अपने कियेहुवे कर्म भोगे और उसके बीचमें ईश्वरकों आनेकी क्या! जरूरत? फर्ज करो! किसी जीवने बडे बडे पापकर्म किये और दुर्गतिकों जाने लगा, क्या! ईश्वर उसकों रोक सकते है? हर्गिज! नही, जो जो कर्म इस जीवने किये है, उसको भोगनेही पडेगें, देखो! जब जीवका मृत्यु नजीक आता है उसकों कोई रोक नही सकता, अगर कोई शख्श स्वर्गके देवतेकों मंत्र पढकर आराधन करे तोभी वे मरनेवालेकी आफतकों नही रोक सकते,

१३ मुक्तात्माका स्वरूप निराकार है, उनकों मुक्तिमें देह नही, ज्ञानमय अरूपी आत्मा वहां है, मुक्तिमें संसारिक सुख नही, आत्मिक सुख है, मुक्तिमें कालकी गिनती नही, मनुष्य लोककी अपेक्षा कालकी गिनती मानी गइ है, मुक्तात्मा वहा रहे हुवे अपने ज्ञानसें सब जीवोंके हालातकों जान सकते है, जैसे आरिसेमें हर-चीजका प्रतिबिंब पडता है, मुक्तात्माके ज्ञानमें लोकालोकका प्रकाश पडता है,-

१४ मुक्तिस्थानमें किसीके ज्ञानमें कमी बेंसी नही, तीर्थंकरोंकी प्रख्याती इस दुनियामें है, मुक्तिमें अपने अपने ज्ञानमें सब समान हैं, वहा कोइ राजा नही, और कोइ नोकर नही, सेव्यसेवकभाव यहां है, मुक्तिमें कोई सेव्य नही, और कोई सेवक नही.-

१५-[ आतम परमातमपद पावे,
जो परमातमसें लय लावे, ]

जीव परमात्माका ध्यान करनेसे अपने कर्मोको जलाकर खुद परमात्मा होसकता है, जैसे आतसी शीशा सूर्यके सामने धरनेसे उसमे आतीश पैदा होती है, और उसके नीचे रखी हुई रुई जल जाती है, इसतरह परमात्माका ध्यान करनेसें इस जीवके कर्म जल जाते है, जैसे आतसी शीशेमें सूर्य अग्नि रखनेको नही आता, वैसे मुक्तात्मा किसी जीवके कर्म दूरकरनेको नही आते, ध्यानधरनेसें जीवमे कर्मजलानेकी ताकात पैदा होती है, और वो ताकात कर्मको खुद जला देती है.

१६ अगर कहाजाय मुक्तात्मा इस जीवको कुछ मदद देते है, या नही? (जवाब.) मुक्तात्मा कुछ मदद नही देते, इस जीवकी आराधनाही उसको पार पहुंचाती है, यानी, मुक्ति देती है, मुक्तात्मा किसीपर खुश या नाराज नही होते.–

१७ अगर कोई सवाल करे, मत्र खुद फल देता है, या उसके प्रतिपाद्य पुरुप फल देते है? अगर खुद फल देता है तो उसमे फलदेनेकी ताकात नही दिखाई देती, अग्निशब्द कागजको जलाता नही, और जबानको दाह करता नही, अगर मत्रके प्रतिपाद्य पुरुप फल देते हैं तो उनको मंत्रके आधीन होनेका दोप आयगा, (जवाब) नमस्कार मंत्र खुद फल देता है, उसके प्रतिपाद्य पुरुप अरिहतदेव फल नही देते, फिर उनको मत्रके आधीन होनेका दोप कैसे आसकेगा? मत्रमे फल देनेकी ताकात कैसे नही दिखाई देती? देखलो! सर्पका जहेर मंत्र पढनेसे उतर जाता है! भूत प्रेत चलेजाते है, अग्निशब्द बोलनेसे, जबानको दाहकरता नही और कागजपर लिखनेसें कागजको जलाता नही, यह मिशाल कारआमद नही, अग्निशब्द बोलनेसें या लिखाहुवा देखनेसे वाचने या सुननेवालोंके दिलमें अग्निशब्दका ज्ञान पैदा होता है, यह ताकात उसने बतला

दिई, शब्दरूप मंत्र जड है तो क्या हुवा? जडमेंभी इतनी ताकात सामने दिखती है कि-प्रीतिजनक शब्द बोलनेसें प्रीति हासिल करता है, और अप्रीतिजनक शब्द बोलनेसें अप्रीति पैदा करता है, इसतरह नमस्कार मंत्र बोलनेसे या दिलमें ध्यानकरनेसे कर्मक्षय होनेकी ताकात पैदा होती है, और कर्मक्षय होनेसें इस जीवकी मुक्ति है, इसमें कोई शक नही, सबुत हुवा, परमात्मा किसीको मदद नही देते, उनका ध्यानकरनेवाला शख्श अपने ध्यानहीके जरीये अपनेमें परमात्मपद हासिल करसकता है.-

१८ परमात्माकी मूर्त्तिकों पूजनेवाला शख्श मूर्त्तिकी पूजा भक्ति इसलिये करता है, मूर्त्ति उस देवकी यादी दिलानेमें सहायक है, जबतक अपने आपको केवलज्ञान और मुक्ति हासिल नही हुई. मूर्त्तिकी जरूरत है, जैसे छोटे बालकोंको पढनेकी शुरुआतमें सलेट पेंनसीलकी जरूरत होती है, मगर जब इल्म पढकर कामील होजाते है, मुखसेही हिसाब करलेते है, वैसे जबतक इसजीवकों वो दर्जा हासिल नही हुवा मूर्त्तिकी जरूरत है, जो लोग देवमूर्त्तिको नही मानते, उनकोभी धर्मशास्त्र माननेकी जरूरत होतीही है, असल पुछो तो जितने धर्मशास्त्र हैं, वे ज्ञानकी मूर्त्ति है, कागज स्याहीके बनेहुवे धर्मशास्त्र जिन्होंने माने सबुत हुवा, उनोंने ज्ञानकी मूर्त्तिको मानी, जैनमें स्थानकवासी मजहबवाले जिनमूर्त्तिको नही मानते, मगर धर्मध्यान करनेकेलिये श्रावक लोग मकान बनवाते हैं, और उसको स्थानकके नामसें बोलते हैं, सवाल पैदा होनेकी जगह है, स्थानक बनानेमें पुन्य मानना या पाप? अगर पुन्य माना जाय तो मंदिर बनवानेमे पुन्य क्यौं नहीं? अगर कोई महाशय उनके मजहबकी दीक्षा लेना चाहे तो उनके श्रावक लोग दीक्षाका जलसा करते है, दीक्षाका महोछव करना, बाजे वगेराका जुलुस निकालना, गीतगान करना, इन कामोंमें अगर पुन्य समजा जाय तो जिनमंदिर और जिनमूर्त्तिके जलसेमे पुन्य क्यौं नहीं?-

१९-[ आठ कर्मोंका बयान, ]

( गाथा )

पगइठिइरसपएसा, तं चउहा मोअगस्स दिठ्ठता,
मूलपगइठ्ठ उत्तर, पगइ अडवन्न सयभेयं, १

( अर्थः )-प्रकृति, स्थिति, रस और प्रदेश, ये चारतरहके भेद मोदक-बनानेकी मिशालसे समजना, कर्मोंकी मूलप्रकृति आठ है, और उत्तरप्रकृति एकसो अठावन, दरअसल! कर्मोंका बंध चारतरहसे कहा, प्रकृतिबंध, स्थितिबंध, रसबंध, और प्रदेशबंध, ये चारतरहके बंध हुवे, जैसे मोदक बनानेमे आटा, घी सकर वगेरा मसाला चाहिये, जब मोदक बनसके, अगर घी ज्यादा हो तो ज्यादा स्निग्ध बने, वैसे कर्म बाधनेमेभी मनपरिणामरूप रस जैसा हो, वैसे कर्म बंधे.-

२० जीव आत्मप्रदेशके शाथ अवल कर्मवर्गणा ग्रहण करता है, फिर मनके परिणामोंसे रस डालता है, कर्मकी स्थिति बाधता है, और अखीरमे बंधेहुवे कर्म इस जीवको फल देते हैं.-

[ दोहा, ]

करे कष्टमां पाडवा, दुर्जन क्रोड उपाय,
पुन्यवंतने ते सवी, सुखनां कारण थाय, १

जिसकी तकदीर आलादर्जेकी है, उसको अगर कोई तकलीफ देना चाहे तो वो तकलीफ तकदीरवाले शख्शको आराम देनेवाली होजाय, इसीलिये तकदीर बडी फरमाई.-

२१-[ दोहा, ]

कर्म अनेक प्रकारनां, तेहमां मुख्ये आठ,
तेहमां मुख्ये मोहिनी, हणाय ते कहु पाठ, १

कर्म अनेक तरहके हैं, उनमें आठ कर्म बडे हैं, उनमेंभी मोहिनी कर्म सबसे बडा फरमाया, जिससे फतेह पाना मुश्किल है, मगर फतेह पानेका उपाव शास्त्रकारोंने इसतरह बतलाया, बेटा, बेटी, धनदौलतसें

मोह कम करना, गुस्सेके वख्त गम खानेसें गुस्सा कम होगा, निकाचितकर्म बंधेगे नही, धनदोलत और फतेह पानेके वख्त घमंड न लानेसे अभिमान कम होता है, छलकपट न करनेसें और दिल साफ रखनेसे मायाकर्म नही बंधता, हरबातमे ममता कम करनेसें लोभ दूर होता है, अगर अपने पूर्वसंचित कर्ममें एशआराम नही लिखा तो चाहे जितनी कोशीश करो न मिलेगा, जैसे पूर्वसंचितकर्म बंधे हैं, वैसे भोगने पडेगें.–

२२ **मिथ्यात्वाविरतिकषाययोगाः कर्मबंधहेतवः** इस सूत्रका माईना यहहुवा, मिथ्यात्वसे जीवको कर्म बंधते हैं, व्रतनियमके अभावसें यानी दिलकी बुरी चाहना न रोकनेसें जीवकों कर्म बंधता है, क्रोध, मान, माया, और लोभसे जीव कर्म बांधता है, और मन वचन कायाके योगोंसे जीव कर्म बांधता है.–

**[ जीवोयं, अनादिकर्मभाक् यद् अनेन पूर्वजन्मनि प्रकृतिस्थितिरसप्रदेशैः आश्रववृत्त्या कर्म बद्धं तद् बंधोदयदीर्णासत्ताभिः परिभुनक्ति, ]**

( अर्थः )–जीव अनादिकालसें कर्मोंके शाथ मिला हुवा है, जैसे मीटीके शाथ सोना मिला है, जीवने पूर्वभवमे प्रकृति, स्थिति, रस, और प्रदेशोंसें आश्रवके जरीये जो जो कर्म बांधे हैं, वे बंध उदय उदीर्णा और सत्ताके जरीये भोगता है.–

२३ ध्रुवबंधी, अध्रुवबंधी, ध्रुवउदयी, अध्रुवउदयी, ध्रुवसत्ता, अध्रुवसत्ता, पुन्यपाप परावर्त्तमान, अपरावर्त्तमान, जीवविपाकी, पुद्गलविपाकी, भवविपाकी, क्षेत्रविपाकी, बंध, उदय, उदीर्णा, सत्ता, उपशमश्रेणी, और क्षपकश्रेणी, इनके भेदोंको समजना चाहिये, और मुताबिक फरमान धर्मशास्त्रके चलना चाहिये, जिससें जीव कर्मकों क्षय करके मुक्तिको पासके.–

२४ धर्मशास्त्रोंमे जीवोंको छह तरहकी लेश्या होना फरमाई, और लेश्या उसका नाम है, जो कषाय करके लिप्त मनके परिणाम होना,

इनके छह भेद हैं, कृष्णलेश्यावाला जीव क्रोधी होता है, कितनाही कहो, मगर वो गुस्सा न छोडे, नीललेश्यावाला जीव उसको जानना जो छल कपट ज्यादा करे, और धनमालपर मोह ज्यादा रखे, कापोतलेश्यावाला जीव-शोक, संताप, ज्यादा करे, दुसरोंकी तारीफ सहन करसके नही, अगर उसकी कोई तारीफ करे तो खुश होजाय, और उसको मदद करे, तेजोलेश्यावाला जीव-रहेमदिल होता है, पद्मलेश्यावाला जीव-दिलका दलेर, तकलीफ आनपडे तो गम खावे, और देवगुरुधर्मके काम खुश होकर करे, शुक्ललेश्यावाला जीव-इन्साफसें बोलनेवाला हो, और पापकर्मोंसें डरता रहे.-

२५ इस जीवकों कईतरहके हुकम होदे मिले, ताबे उम्र एशआराम किया, मुल्कोंकी सफर किई, तरहतरहकी पुशाक और गेहने पहने, दौलत पैदा किई, यह सब पूर्वसंचितकर्मकाही फल है, मोह-ममता, और लोभ, इस जीवको दुर्गतिपहुंचाते हैं, हरशख्शकों याद रखना चाहिये, अपने अंतरायकर्मके क्षय होनेपर हरेक चीज मिलती है, और जबतक अंतरायकर्मका उदय हो, चाहे जितनी कोशीश करो, चीज नही मिलती.-

२६ मनुष्यका चोलापाकर जो लोग धर्म नही करते पीछेसे रंज उठायगें, अगर जन्मजन्मातर और पापपुन्य न होता तो एकशख्श सुखी और एक दुखी क्यों? एकशख्श उमदा मकानमे फुलोकी सेजपर सोता है, और एकको बिछानेकेलिये कपडाभी नही मिलता और रास्तेमें पडा रहता है, एक शख्शकों हमेशा तरहतरहके खान पान मिलते हैं, और एक रोटीयोंसें मोहताज घर घर मागता फिरता है, ये सब अपने अपने पूर्वसंचित कर्मकी बात है, अगर कोई सुख चाहे तो धर्म करे, जिससें सुख मिले.-

२७ दुनियामें कोई अमर नही रहा, अज्ञानतासे जीव दुख पाता है, अज्ञानके समान इस जीवका कोई दुश्मन नही, और ज्ञानसमान कोई दोस्त नही.-

[ दोहा, ]

**निश्चयनय हृदये धरी, पाले जे व्यवहार,**
**पुन्यवंत ते पामसे, भवसागरनो पार, १**

(अर्थः)-निश्चयनयको दिलमें धारन करके व्यवहारनयसे वर्ताव करो, पूर्वसंचित कर्ममें जो होनेवाला है, वही होगा, ऐसा निश्चय रखना इसका नाम निश्चयनय है, इसपर एतकात रखकर व्यवहारिक काममें वरताव करो, मगर इतना जरूर है, व्यवहार वृथा जाता है, निश्चय वृथा नही जाता, जिस सुखके पीछे दुख है, वो सुख नही, ज्ञानी उसीको सुख फरमाते है, जिसके पीछे दुख न हो.-

"उद्योगं कुर्वन्नपि फलं न लभ्यते
अतः कर्मणामेव प्राधान्यं,-"

इसका मतलब यह हुवा, उद्योग करते हुवेभी उसका फल नही मिलता, इसलिये कर्म ताकतवर है.-

२८ जीव द्रव्यार्थिकनयकी अपेक्षा नित्य, और पर्यायार्थिकनयकी अपेक्षा अनित्य है, जैनलोग इस दुनियाको प्रवाहरूपसे अनादि मानते है, कर्म जड, और जीव चैतन है, शिवाय मनुष्यगतिके दुसरी गतिमें मोक्ष नही, चाहे कोई स्वर्गके देवते बने तो क्या हुवा? उनकोभी मनुष्यजन्ममें आये विदून मुक्ति नही, सब कर्मोसे छुटना इसीका नाम मोक्ष है, आत्मा अमूर्त है.-

जैनशास्त्रोंमें चार तरहके निक्षेपे मानेगये है. १ नामनिक्षेपा, २ स्थापनाक्षेपा, ३ द्रव्यनिक्षेपा, और ४ भावनिक्षेपा.-

[ अनुयोगद्वारसूत्रवृत्तिका पाठ, ]

(गाथा.)

**नामजिणा जिणनामा, ठवणजिणा जिणंदपडिमाओ,**
**दव्वजिणा जिणजीवा, भावजिणा समवसरणथ्था, १**

(अर्थः)–जिनेंद्रदेवोंके जो जो नाम है, वो नामनिक्षेपा, जैसे तीर्थंकर रिषभदेव, अजितनाथ, वगेरा नाम लेना, उनका स्मर्ण करना उसीकानाम–नामनिक्षेपा कहते है, जिनेंद्रदेवोंकी जो जो जिनमूर्त्तियें जैनतीर्थोंमें, जैनमंदिरोंमें और गृहचैत्यालयोंमें मौजूद है, उनको स्थापनानिक्षेपा कहते है, द्रव्यमय आत्मा जो मानागया है, वो द्रव्यनिक्षेपा, जैसे जिनेंद्रोंका आत्मा द्रव्यनिक्षेपा कहा, जिनेंद्रदेव जब समवसरणमे वेठकर आम लोगोंको तालीम धर्मकी देते है, वो भावजिन यानी भावनिक्षेपा कहा जाता है.–

२९ जीवको कोई अजीव कहे तो गलत, अजीवको कोई जीव कहे तोभी यह कहना गलत है, धर्मको अधर्म कहना गलत, और अधर्मको धर्म कहना गलत है, उत्सर्गमार्ग उसका नाम है, जो उच्चदर्जेका मार्ग हो, अपवादमार्ग उसका नाम है जो अखीरकेदर्जेकामार्ग हो, हरशख्शको मुनासिब है, दिलका दलेर बने, और पापकर्मसे खौफ रखे, खानपानका फिक्र सबजीवको लगारहता है, हरशख्शको आफत आनेपर तकलीफका खौफ रहता है, मगर तारीफ उनकी है, जो तकलीफके वख्तभी हिम्मत रखे, धर्म करतेहुवे कोई बुरा कहे तोभी धर्मको मत छोडो, जब वनमें या किसी बगीचेमें चंदनके पेंड पैदा होते है, तो उनकी खुशबू उतनी नही फेलती, जितनी उनको काटकर टुकडे टुकडे करनेसे फेलती है, इसतरह मनुष्यके लिये समजो, जब किसी मनुष्यको आफत आती है, घरबार छोडकर चलेजाना पडता है, मगर जब उस आफतसे फतेह पावे तो फिर तारीफभी खूब होती है, देखा होगा, जब किसीका मुकदमा कचहरीमें चलता हो, और जब उसमे फतेह पावे तो तमाम लोग उसकी तारीफ करते है, और धन्यवाद देते है, सोनेकी कसोटी आगमे रखनेसे होती है, वैसे मनुष्यकी कसोटी आफतमे पेंश होनेपर होती है, सच पुछो तो आफतही मनुष्यकी कसोटी है, तकदीर बुरी हो तो अछा उद्यम

किया जाय तोभी बुरा फल मिले, और अगर तकदीर अछी हो और उल्टा उद्यम कियाजाय तोभी अछा फल मिलता है, इससे सबुत हुवा, पूर्वसंचित कर्म ( तकदीर ) बलवान् है.-

[ बयान-सिद्धांतरहस्यका-खतम हुवा, ]

[ दुनियाके कारोबार, ]

१ दुनियामें मर्द और औरतको हिलमिलकर चलना चाहिये, दोनोंमें अनबनाव रहेगा तो दुनियाके कारोबार ठीक ठीक नही चलेगें, मगर बनाव या अनबनाव होना यहभी पूर्वसंचित कर्मके ताल्लुक है, जिनकी तकदीर अछी होगी उन्ही मर्द और औरतका बनाव बनारहेगा, मर्दको लाजिम है, अपनी औरतको खानपान पुशाक और गेहने मुताबिक अपनी हेसियतके देता रहे, बिना हेसियतके ज्यादा गेहने बनादेना, रंज उठानेका सबब होगा, औरतको लाजिम है, अपने खाविंदके हुकममें चले, रसोई बनाना वगेरा घरके काममें कमी न करे, घरमें नोकर चाकर या रसोईये मौजूदहो तोभी औरतको रसोईकी और घरके कारोबारकी देख-रेख करते रहना चाहिये, कंजुसपना करके अपने खाविंदकी इज्जतको धका पहुंचाना मुनासिब नही, और पैदाशसें ज्यादा खर्च करके अपने खाविंदको आफतमे डालनाभी ठीक नही.-

२ औरतको उसके मातपिताने जातबिरादरीके रुबरु खाविंदके शाथ पाणिग्रहण कराया है, खाविंदकी मौजूदगीमे औरतको सुख और अभावमें दुख होता है, इसलिये औरतको लाजिम है, खाविंदके फरमानपर चले, खाविंद जब बाजारसे घरपर तशरीफ लावे खडी होकर ताजीम करे, खाविंद घरपर तशरीफ लाये, और वो दुसरेके शाथ बातें करती रहे तो इसमे खाविंदकी बेंअदबी होगी, अगर दौलत फनाह होजाय और गरीबी पेंश हो, तोभी खाविंदकी खिद-मतमे कमी न करे, खाविंदभी अपनी औरतको रोटी कपडोसें खुश

रखे, चाहे मर्द हो या औरत आपसमें जूठ बोले नही, जूठ बोलनेसें स्नेह कम होता है, और सच बोलनेसें स्नेह वढता है.–

३ ब्राह्मी, सुंदरी, कौशल्या, सीता, कुंती, दमयंती, द्रौपदी, राजीमती, गौरी, गाधारी, रुखमणी, सत्यभामा, और जांबूवती, वगेरा सती औरतें दुनियामें मशहूर है, जिनोंने अपने खाविंदको आफतके वख्तभी तकलीफ नही दिई, वल्कि! मदद दिई, तारीफ करो! सुतारा रानीकी जो अपने पति हरिश्चंद्रराजाकी खिदमतमें तकलीफके वख्तभी हाजिर रही, औरतको इल्म पढना एक जरुरी बात है, पढी लिखी औरत धर्मशास्त्रको अछीतरह समज सकेगी, इल्म वो चीज है, जिसके पढनेसें जाहीली खुद मिटजाती है, हरेक औरतको लाजिम है, सतीयोका चरित बांचे और मुताबिक उसके वरताव करे, अगर औरत पढीलिखी न होगी, दुसरोके चरित कैसे बांचसकेगी? पढना लिखना गुरुगमसें सिखना चाहिये, कोई किताब अपनेआप बांचलिई और उससे जानकार होगये ऐसा नही होसकता, अपने आपसे पढा या बांचा हुवा शास्त्र अछीतौरसें समजमें नही आता, और उल्टा असर होकर स्वतंत्रवादी बना देता है, देखो! गाना बजानाभी विना उस्तादके अछी तौरसें नही आता, हारमोनियम बाजा बजाते सिखना हो तोभी उस्तादकी जरुरत पडती है, फिर धर्मशास्त्र पढनेमें गुरुकी जरुरत क्यौं न पडेगी.–

४ औरतकों जब रितुधर्म आवे तीन रौज अलग बेठे, घरका कोई काम न करे, पुस्तकभी न बाचे, और देवदर्शनकोंभी न जाय, चौथे रौज स्नान करें और कपडे साफ करडाले, फिर घरका कामकाज करे, और पाचमे रौज देवदर्शनकों जाय, मगर इतना याद रहे! तीनसप्ताहके अंदर अदर रितुधर्म आवे वो रितुधर्म नही, बल्कि! उस औरतके शरीरमे एक तरहका रोग है, ऐसा जानना, तीनसप्ताह वतीत होनेके बाद रितुधर्म आवे उसीको रितुधर्म कहना.–

५ चाहे मर्दहो या औरत ठंडीके दिनोंमें उनी कपडा पहने, गर्मीके दिनोंमें सूतका, और चौमासके दिनोंमें दोनों तरहके कपडे पहने, कोई हर्ज नही, मगर बहुततंग कपडे पहनना अछा नही, मेले कपडे पहनना किसी हालत और किसी रितुमें ठीक नही, हमेशां स्नान करना और साफ रहना दुनियादारोंका फर्ज है, मगर जब बुखार चढता हो, स्नान करना बहेत्तर नही, स्नान करना तो गर्म जलसे करना चाहिये, गर्भवती औरतको गर्भरहनेकी हालतमें खानपानसे होशियारी रखना, और गर्भको फायदा पहुंचे ऐसा खोराक खाना चाहिये, गर्भमें अगर तकदीरवाला बालक आया हो, उसकी माताको अछेअछे इरादे होते रहे, तीर्थोंकी जियारत जानेका और दानपुन्य करनेका इरादा होगा, अछा खानपान करनेका, उमदा गेहने कपडे पहननेका और अछीअछी चिजें देखनेका इरादा होगा, अगर गर्भमे कम तकदीरवाला बालक आया होगा, उसकी माताको बुरेबुरे इरादे पैदा होगें, बुरे कपडे पहननेका-बुरा खानपान और बुरी बातें सुननेका दिल होगा.-

६ चाहे मर्द हो या औरत, खानपानमें गर्म रसोई रोटी, दाल, घी, सकर, दूध खाना अछा है, मगर बुखारकी हालतमें ठीक नही, तेल, हिंग, मीर्च, और इमली ज्यादा खाना बुरा है, ज्यादा पानी पीना, बदहजमी पैदा करता है, मगर बहुतकम पीनाभी बहेत्तर नही, चंद्रस्वर चलतेवख्त मुताबिक प्यासके जल पीना फायदेमंद है, साबुदानेकी खीर या दूध चावल हलका भोजन है, सुका मेवा तेज जठराग्निवालोंकोंही हजम होसकता है, सख्तजुलाब लेना नाजुक बदनवालोंकों अछा नही, रातकेवख्त जागतेरहना तंदुरस्ति बिगाडनेका सबब है, कमसें कम छह घंटे जरुर नींद लेना चाहिये, नींद न आवे तोभी आंखों मींचकर सोतेरहना अछा है.-

७ साफ मकानमें रहना, और साफ कपडे पहनना तंदुरस्ति बढानेका सबब है, दिल अगर किसी बातसें नाराज होगया हो,

अछे सुरीले बाजोंसे गाना बजाना करनेसे नाराजगी रफा होगी, बागनगिचोकी सैर करनेसे और पुस्तक बाचनेसें दिलको तसल्ली मिलती है, अगर कोई पानीमें तेरना न जानते हो गहरे जलमे कूद पडना ठीक नही.-

८ जिस शख्शके ज्यादा लडका लडकी हो उसको जितना सुख है, उतनी तकलीफभी है, लडकपनसेही लडकेलडकीको अपने हुकममे चलाना और धर्मशास्त्रकी उनको हिदायत देतेरहना अछा है, आठवर्स हुवे बाद लडकेलडकीको इल्म पढानेके लिये मदर्सेमें भेजना जरुरी है, घरमे उस्तादको बुलाकर इल्म पढाना इसर्से मदर्सेमें भेजकर पढाना ठीक है, दुसरे लडकोंके शाथ बेठकर पढनेसें इल्म जल्दी हासिल होगा.-

९ बचना चाहिये कंजुसोंकी दोस्तीसे और बचना चाहिये हरकामकी सुस्तिसे, कंजुस आदमी आप दौलत खर्चता नही, और दुसरोंको खिलाता नही, कंजुस, बखील था सोम-ये-तीनो कंजुसके नाम हैं.-

[ सोमलक्ष्मीके सवाल जवाब. ]

( लावनी )

सोमलक्ष्मी दोनोंका झगडा, सुन जो ! पंचों चित्त लगाय,
कहती लक्ष्मी सुनो सोमसें, ना खर्ची ना खाइजाय,
कहता सोम तुं ! सुनवे ! लक्ष्मी, तुजे कभी नही जाने दुं,
खाडा खोदकर रखुं तुजेको, ना खर्चु ना खाने दुं. १
जोगी जंगम आवे मांगने, ना मुठीभर दाने दुं,
बजारमेंसें रे ? कभी, पैसेकी चिज नही लाने दुं,
एसी जुगतसें रखुं तुजेको, तुंभी जानेरखी छिपाय,
कहती लक्ष्मी सुनो सोमसें, ना खर्ची ना खाइजाय. २
कहता सोम तुं ! सुनवे ! लक्ष्मी, महापापिनि, हत्यारी, !
दौलत खातिर देख ! बहेनने, मारी भाईपर कटियारी,

*

**भाई भाईमें शीशकटावे, बेटा बापसें लडता–री !**
**तेरे कारने कइ विचारे, मरकर भये दुरगतिचारी. ३**
**कहती लक्ष्मी सुनवें ! सोम ! तुं, है मूरख पापी नादान,**
**धनदौलतका मोह त्यागकर, करले निज आतमपहिचान,**
**तुं ! पापी चंडाल सोम, तेरेसें कछु नही धर्मदेवाय,**
**कहती लक्ष्मी सुनो सोमसें ना खर्ची ना खाइजाय, ४**

१० अखवारोंको पढतेरहना अकलमंदोंका काम है, अखबारोंके पढनेसे अजनवी हालात माल्म होसकेंगें, अखवार पढनेवालोंकों लेख लिखनेकी ताकात होसकती है, सभामें भाषणदेनेकी ताकात बढती है, और दुसरे आदमीयोंके सामने नयेनये हाल बयान करनेका मोंका मिलता है, अगर अखवार नही पढोंगे दुनियाकी माहितीके तीनहिस्सोसे अनजान रहोगे, जहांतक बने अखबार पढनेका शौख रखो, जब तुमको कमखर्चमें बडी माहिती मिलती है तो इसकों क्यों नही अमलमें लाना ? हां ! अगर कंजुस और शुस्त हो तो वेशक ! तुमसें मजकुर काम न होसकेगा.–

११ अगर आपका दिल किसीबातकी फिक्रमें है तो धर्म पुस्तक लेकर वाचो, मगर वो धर्मपुस्तक एसा होना चाहिये, जिसके वाचनेसे विना तकलीफके समजमें आसके, एसा मत करना जो जीवविचार नवतत्व दंडक पढकर जैनागम भगवतीसूत्र लेकर वाचने लगजाओ, छोटी नाव चलानेवाले जैसे वडे समुंदरमें नही जासकते, वैसे थोडे पढेहुवे शख्श कठीन शास्त्रकों नही समज सकते, इसीलिये कहा जाता है जो पुस्तक अपनी समजमें आसके उसकों वाचना चाहिये, कठीनशास्त्र अपनेआप वाचना वहेत्तर नही, भाषाके कथानुयोगग्रंथ वेशक ! अपने आपभी बाच सकते हो, मगर उनमेभी जहां कोइ कठीनवात आगइ वो गुरुलोगोसे पुछो और उसका खुलासा हासिल करो, अपने मनसेंही अर्थका अनर्थ मत-कर बेठो, शास्त्रसमुद्र अथाह है, उसका पारपाना सहज वातनही.

१२ बडेबडे शहरोंमे पुस्तकालय ज्ञानभंडार-या वाचनालय पेस्तर होतेथे और अबभी होते हैं, पुस्तकालय कहो या लाइब्रेरी कहो बात एकही है, और उसकी जरुरत है, वाचनशक्तिसे मनुष्यके ज्ञानचक्षु खुलते हैं, इल्म पढनेसें और नसीहतके पुस्तक बाचनेसे ज्ञान बढता हैं, इसीसे कहा गयाहै, ज्ञानके समान इसजीवका कोइ दोस्त नही, आजकल छापेके सबब तरहतरहके अखबार निकलते है, डेली-सप्ताहिक और मासिक कइ शहरोसें कइ जबानमे जाहिर होते है, धार्मिक अखबारभी तरहतरहके जारी हैं, जैनकोमके सप्ताहिक और मासिक वगेरा अखबार जाहिर हुवा करते हैं, जिनकों जो पसंद हो मंगवाकर पढते रहे, कई तरहकी, माहिती मिलेगी.—

१३ [ शेअर. ]

इश्कके दर्दमें सभीदर्द गर्क है,
सिकमके दर्दमे इश्कभी गर्क है, १
इश्क वो शेय है, जो दमसे पथ्थरकों आबकरे,
दिल्ल लगाये जिससें, खाना खराब करे, २

(अर्थः)—इश्क पैदा हो जब सबतरहके दर्द इश्कमे गायब होजाते हैं, मगर जब खानेकाभी फाका पडे तो सिकमके दर्दमे इश्कभी गर्क होजाता है, गरज ! सिकमके दर्दमे इश्कभी भुल जाता हैं, इश्क एक ऐसी चिज है, जो सख्त दिलवालाभी मोमकी तरह नर्म होजाता है, जिससे दिल लगजाय उसकी दोस्तीमे खानाभी खराब होजाता है, कोई उपाव सुजता नही, और सबतरहसे तबाह होजाता है.—

१४ हिंदमें कई बडेबडे गुलजार शहर और तीर्थ हैं, जिनोंने मुल्कोंकी सफर किई होगी, मालुम होगा, देहली एक हिंदकी प्राचीन राजधानीका मशहूर शहर है, राजपुतानेमें अजमेर एक गुलजार शहर है, अमरकंटक जहांसें नर्मदा नदी निकसी हुई हिंदके मध्यप्रदेशमें मशहूर जगह हैं, अहमदावाद मुल्क गुजरातमें मशहूर शहर है, बडेबडे जैनमंदिर और जैनपाठशाला जहां मौजूद हैं, आगराका ताजमहेल कींमती बनाहुवा मुल्कोंमें मशहूर है, आबुपहाड हवाकेलिये प्रख्यात है, बडी कारीगीरीके जैनमंदिर यहां बनेहुवे जिनोंने देखा होगा जानते होगें, इलाहाबाद हिंदके मध्यप्रदेशमें बडा गुलजार शहर है, इलोरेकी गुफा और पहाडमें उकेरे हुवे मंदिर जो मुल्क दखनमें करीब दौलताबादके है, काबीलेदीद है.

१५ मुल्क मालवेका पुराना शहर उज्जेन बडेबडे आश्चर्योंकी भूमि जिसमें बडेबडे धर्मी राजे और पंडित होगये, एलीफंटाके गुफा मंदिर देखने लाईक है, करांची हिंदकी पश्चिममें अखीरका शहर है, कलकत्ता हिदके पूर्वप्रदेशमें गुलजार शहर हैं, बंबई हाता, और बंगाल हाता हिंदके दो बडे गुलजार बाग समजो, बंबईके करीब कनेरीकी गुफाये काबील देखनेके है, हिंदकी उत्तरमें कश्मीर एक उमदा मुल्क हैं, कानपुर अवधमें एक आबाद शहर है, किष्कंधानगरी मुल्क कर्णाटकमें एक पुरानी जगह है, शहर खंडवा मध्यप्रदेशमें रैलका जंक्शन और तिजारतकी जगह है, गवालियर पुरानी राजधानीका शहर—किला गवालियरका निहायतपुख्ता और संगीन है, मुल्क दखनमें गोकाकका जलप्रवाह अजनबी देखाव दिखलाता है, और उसपर सूत और कपडे बननेका काम चलता है, जिसमें लकडे या कोलसे जलानेकी जरुरत नही, कुदरती जलप्रवाहसें मशीन चलती है, गोहाटी मुल्क आसाममें मशहूर जगह है, मुल्कमेवाडमें चितोडगढ पुराना और मजबूत किला है, जमाने बादशाहोंके बडेबडे जंग यहा हुवे, कीलेका घेराव करीब बारांकोश

होगा, जबलपुर हिंदके मध्यप्रदेशका एक मशहूर शहर, बडेबडे दौलतमंद बाशिंदे यहांपर बसते हैं, मुल्क मारवाडमे जेसलमेर बडा नामी शहर-जहां जैनोंका बडा प्राचीन पुस्तकालय मौजूद है, जिसमे ताडपत्रपर सुनहरी हर्फोंसे लिखे जैनागम और महाविद्याओंके ग्रंथ रखेहुवे है, बडेबडे जैनमंदिर और जैनोकी आबादी यहां कसरतसें है, मुल्क ढाका-जहां पेस्तरके जमानेमे उमदा मलमले बनती थी, और अबभी बनती है, थानेश्वर कुरुक्षेत्रमें एक पुराना स्थल है.–

१६ यादवोंकी आबादीका तख्त द्वारिका नगरी पेस्तर बडी आबाद थी, जमाने हालमें छोटी रहगई, वैदिक मजहबवालोंका एक मशहूर तीर्थ है, पेस्तर यहांपर जैनोंकी आबादी अछी और जैनतीर्थ था. शहर नागपुरके रेशमी धोतीजोडे मुल्कोंमें मशहूर है, गोदावरीके कनारेपर बसाहुवा नाशिकशहर वैदिक मजहबका तीर्थ है, पेस्तरके जमानेमे यहापर जैनोंके आठमे तीर्थंकर चद्रप्रभुका जैनतीर्थ था, जमाने हालमें नेस्त नाबुद होगया, जैनोंकी आबादी और जैनमंदिर अबभी वहां है, मुल्क गुजरातमे पाटन राजपुतराजोंकी राजधानीका शहर-जिसमे जैनोंके बडेबडे मंदिर और प्राचीन पुस्तकालय ताडपत्रपर लिखा हुवा मौजूद है, पेशावर हिंदकी सरहदपर बडा आबाद शहर है, बनारस जिसका दुसरा नाम काशी है, विद्याका बडा नामी स्थान जमानेहालमेभी बडेबडे पंडित सस्कृत जबानके जानकार यहा बसते है, जैनमजहब और वैदिकमजहबका पुराना तीर्थभी है, जैनोंके तेइसवे तीर्थंकर पार्श्वनाथ इसी नगरीमें हुवे.–

१७ सावथ्थी नगरी–जहां जैनोंके तिसरे तीर्थंकर संभवनाथ पैदा हुवे, गोंडा जंक्शनके पास बलरामपुरसें सात कोशके फासलेपर मौजूद है, विराड एक फलद्रुप मुल्क है, श्रीकृष्णजीकी जन्मभूमि मथुरा वृंदावन जमनाकिनारे गुलजार जगह है, जिले काठियावाडमे भावनगर एक आबाद शहर है, मुल्क तैलंगमे मद्रास दौलतमद बाशिंदोसे सरगर्म बडीतिजारतकी जगह है, हिमालयकी

उत्तरमें मानसरोवर एक मशहूर जगह है, जिसका बयान शास्त्रोंमें हरजगह आता है, मुल्क मगधकी शिरोताज राजगृही नगरी जैनोंका पुराना तीर्थ है, जिसमें तीर्थंकर महावीरस्वामी कईदफे तशरीफ लाये, जिसवख्त राजा श्रेणिक इसके तख्तपर अमलदारी करता था, जमाने हालमें बराये नाम रहगया, हिंदकी दखनसरहदपर सेतुबंध-रामेश्वर वैदिकमजहबका बडा तीर्थ है, मुल्क सिलोन जिसकों शास्त्रोंमें लंका लिखी है, हिंदकी दखनमें एक टापु है, जिसमें जायफळ जवत्री तज लोंग वगेरा चीजें पैदा होती हैं, हिमालयकी तराईमें हरद्वार वैदिकमजहबका बडा तीर्थ है, मुल्क नयपालमें वैदिकमजहबका पशुपतितीर्थ है, दखन हैदराबाद मुल्क दखनमें बडा गुलजार शहर है, और मुल्क सिंधमें सिध हैदराबादभी बडा आबाद शहर है, जिनोंने मुल्कोंकी सफर किई वो जानते होगें.—

१८-[ दोहा, ]

विपत बडनकों होत है, छोटेसें अतिदूर,
तारे सो न्यारे रहे, ग्रहे चंद और सूर, १,

आफत बडे शख्शोंकोंही आती है, छोटोंसें दुर दुर रहती है, अगर आयगी तोभी वे क्या! सहन करसकेगें,? बडेही सहन करसकते हैं, देखो? आसानमें तारे छोटे है, तो उनकों ग्रहण कभी नही लगता, चंद्र और सूर्य जो बडे है, उन्हीको ग्रहण लगता है.—

१९ नृत्यकरनेवाला शख्श जब औरतका सांग पहनकर नृत्य करता है, दुनिया उसकों औरतके सांगमें देखती है, मगर वो खुद जानता है, में मर्द हुं, इसतरह ज्ञानी शख्श जानता है, में फलां काम करता हुं, मगर जबतक पूर्वसंचित कर्म भोगे न जाय अमरलाचारी है, कुछ जोर नही चलता.—

२० जिनके दरवजेपर हाथी, घोडे, बगी, टमटम और पालखी खडी रहती थी, नोकर चाकर हाजिर थे, हजारों शख्शोपर जिनका

हुकम चलता था, वेभी उम्र खतम होनेपर चलेगये, जिनकों कुटुंब कवीला बहुत हैं, वे कहते है, हमकों सुख नही, जिनके कुटुंबमें थोडे लोग है, वे कहते है, हमकोभी सुख नही, दुनियाका अजब खेल है.—

२१ एक मकानका दरवजा बहुत नीचा था, उसमें घुसतेवख्त एक शख्शको सीरमें बडी चोट लगी, दुसरेने कहा, जरा देखभाल कर चला करो, एक तर्फसे चोट लगी, दुसरा उसको ठपका मिला जिससें उसको ज्यादा दुख हुवा, इसतरह दुसरे रौज एक दुसरे शख्शकोभी चोट लगी, उसवख्त एक शख्श वहां खडा था, कहा, मकान बनानेवाले कैसे कमइल्म थे, जो नीचा दरवजा बनाया, जिससे इनको चोट लगी, इसबातको सुनकर उसको तकलीफ कम हुई, और मनको धीरज मिली, कहाजाता है, वख्तपर चतराइसें बोलना बडी बात है.—

२२ दुनियाके काममे कितनी तकलीफ उठाना पडती है, मगर धर्मके काममे हाजिर रहना उनसें बनता नही, धर्मशास्त्र सुनना बिल्कुल भूलगये, कई कहते हैं, हम देवमूर्त्तिकी पूजा करते कटाल गये है, तीर्थोंकी जियारतसें हेरान होगये, मगर यह सब बहाने है, देखादेखी धर्म करना, और अपनी तारीफ होनेकेलिये खेरात देना, कइ लोगोंको पसंद हुवा है, कितनेक कहते है, मंदिर मूर्त्ति और धर्मशाला बहुतसी बनीहुई है, नयी बनानेकी क्या जरूरत? मगर खयाल नही करते, यात्री लोग आनेजानेवाले और देवमूर्त्ति पूजनेवालेभी बहुत है, फिर मंदिर-मूर्त्ति और धर्मशाला बनानेमें कमी क्यौं करना, ?

२३ अनहोनी होती नही, होनी होय सो होय, यह कहलावत गलत नही, अपने कर्मउदयसे जो होनेवाली बात है वो होती रहेगी, कोई मिटानेवाला नही, बात सबकी सुनना, मगर अपने दिलमे उसको सौच समजकर करना, "कर्मरेख ना मिटे, करो कोई लाखो चतराई," यह कहलावत आपलोगोने सुनी होगी, चाहे कोई लाख चतराई करे तकदीरके लिखेको तदबीर मिटा नही सकती,

थंभा गिरनेलगे तो कोई उसकों थांभ लेवे, मगर पहाड गिरे तो कोई क्या करे.—

२४ एक साधुमहाराज किसी शहरसें रवाना होकर दुसरे शहरको जा रहेथे, इत्तिफाकसें रास्ता भुल गये, जंगलमें एक किसान अपने खेतमें हल चला रहा था, साधुमहाराजने उसकों पुछा, फलाने गांवको जानेका रास्ता कौनसा है,? किसान बोला, आप तो दुसरोंको परलोकका रास्ता बतलानेवाले हो, क्या! इसलोकका रास्ताभी आपको मालुम नही,? साधुमहाराज बोले, बेशक! हम अपने ज्ञानसेंभी जान सकते है, और दुसरोंको बतलाभी सकते है, ऐसा कहकर चलने लगे, किसान अपने दिलमें हसा, और कहने लगा, मेने आपके शाथ मजाक किया था, देखलो? यही रास्ता जाता है, इसपर चले जाइये.—

२५ एकशख्शने दुसरेको पुछा, आपने दरियावकी सफर बहुत किई है, बतलाईये! उसमें नादीर चीज क्या देखी? उसने जवाब दिया, नादीरचीज दरियावमें यही देखी, जो में सहीसलामत किनारे आगया, अगर बीच दरियावके गर्क होजाता तो वहां मुजको कौन बचासकता था?

२६ एक मछर एक उंठके कानपर बेठकर जोरसे अवाज करने लगा, मछरका इरादा था, मेरी अवाजसें उंठ डर जाय, उंठने इस अवाजको सुनकर पुछा तुं! तेरी अवाज किसको जोरसें सुना रहा है, मछरने कहा, तेरेको डरानेके लिये सुना रहा हुं, उंठने कहा, मेरी पीठपर बडेबडे नगारे बज चुके, उसवख्तभी में न डरा, तो तेरी अवाजसे क्या डरुंगा, जा! अपना रास्ता ले, मछर शर्मींदा होकर चला गया.—

२७ जिस शख्शके दिलमे चिंताकी उदबत्ती जलरही है, उसको सुख कहां? आग और पानीकी लडाई है, जहां चिंता है, वहां सुख कहां? और सुख है; वहां चिंता कहा? एक साहुकार पहले बडा दौलतमंद था, मगर दौलत चली जानेसें वो गरीब होगया,

अपनी पहलेकी बातें याद करके दिलमे बडा रंज उठाने लगा, मगर इसतरह रंज उठानेसें क्या फायदा? रंजके वख्त दिलको धीरज देना चाहिये, इसतरह कई विधवा औरतोंको पेस्तरकी बातें याद आनेपर बेंशक! दुख होता होगा, मगर धर्महीके जरीये दुख मिट सकता है, विधवा औरतोको जब दुसरी औरतें मिले, और पहलेकी बाते याद करावे, उनके दिलको दुख होता है, दुसरी औरत विधवाको कहती है, तुमारा बहुत बडा दिल था, तुमारे यहासें हमकों बहुत कुछ मिला है, तुमारे हाथोंसें बहुत खाया पिया है, मगर कर्मोंकी रेखाको कोई क्या करे? तुम तो अबभी देनेमे कुछ कसर नही रखती, तुमारे खाविंदकी मौजूदगीमें तुमने जो सुख भोगा है, वो अब कहा है, ? हमने अपनी आखोंसें क्या? कुछ नही देखा है, ? हमने एक चीज मांगी थी तो दो चिजें दे देती थी, ऐसी बातोंको सुनकर विधवा औरत दिलमे रंज करती है, और अपने पतिके सुखको याद करती है, मगर जो बात मौजूद नही, उसका रंजकरना फिजूल है, बने उतना धर्म करना, दिलसें दिलावर होकर धर्मके काममे खर्च करना, दुनियाका तो यही किस्सा है, धर्म करोगे वही शाथ चलेगा, कंजुस मर्द या कंजुस औरत अपनें हाथसें कुछ खर्च कर सकते नही, दिलमे जानते है, दौलत छोडकर एक रोज जाना है, मगर बडे ताज्जुबकी बात है, उनके हाथसें कुछ दान पुन्य होता नही.–

२८ हरशख्शको लाजिम है, शुभहके वख्त जल्दी उठे, आसानमें सूर्य चढगया और बिछोनेमे सोते रहना सुस्त आदमीयोंका काम है, शुभहके वख्त जल्दी उठनेसें काम काज अछी तौरसे होते हैं, अकल तेज रहती है, और स्मर्णशक्ति बढती है, इल्म पढनेवालोंको शुभहका वख्त बडे फायदेमंद कहा.–

२९ हरशख्शको शुभहके वख्त हवाखोरीको जाना चाहिये, जिससे शरीरकी तंदुरस्ति बढे, जिन्होंके घर सवारी मौजूद हो सवारीमें जाय, जिनको पैदल जानाहो, पैदल जाय, बसतीके बहारकी

हवा और जंगलके द्रख्तोंकी खुशबु लेना बडी फायदेमंद है, शरीरकी हाजत रफाकरनेके लिये दूरजाना और हाथकों मिट्टीसें साफकरना जरुरी है, जिससें हाथमें और नखोंमें मेलापन न रहे, दांतोकों साफ रखना जिससें मुंहमें वीमारी पैदा न हो.—

३० धर्मशास्त्रोमें सुनते हो, पेस्तरके जमानेमें राजे महाराजेभी कसरत करते थे, और कसरतशालाभी बनवाते थे, जैनागम कल्पसूत्रमें बयान है, सिद्धार्थ राजाने सवेरे उठकर कसरत किई, और खुशबूदार तेलसे बदनपर मालीश करवाई, जैसे घडीके पुर्जोमें तेलकी जरुरत है, शरीरके पुर्जोमें तेलकी मालीश होना जरुरी है, साफजलसें स्नान करना, और देवपूजन करना गृहस्थोंका धर्म है, अगर सद्गुरुका योग हो उनके पास जाकर धर्मशास्त्र सुनना चाहिये, जिससें ज्ञान हासिल हो.—

३१ शुभहके वख्त दुध-पुरी, या सामर्थ्य बढानेवाली चीज खाना चाहिये, अगर शरीर तंदुरस्त रहेगा तो धर्मके कामभी बनसकेंगें, जो लोग शुभहके वख्त ठंडीरोटी खाते है, अछा नही करते, चलने फिरनेसें या थोडी मेहनत उठानेसें अनाज जल्दी हजम होता है, और भूख अछी लगती है, रसोई बनाना तो पाक और साफ होकर बनाना चाहिये, जो मर्द या औरत विना नहाये धोये रसोई बनाते हैं, अछा नही करते, रसोई बनानेके वर्तन तांबे-पितलके होना चाहिये, खटाईकी चीजें धातुके वर्तनमें रखना ठीक नही, काच मिट्टी या पथरके वर्तनमें रखना अछा है, रसोईकी जगह हवादार साफ और चांदनेवाली होना ठीक है, जिससे सूक्ष्म जीवजंतुभी दिख पडे और उनकी हिफाजत हो.—

३२ अगर अपने शहरमें मुनिजनोंका योग हो तो आहार देना गृहस्थोंका धर्म है, खाना खाते वख्त जल्दी जल्दी खाना या बहुत देरी करना ठीक नही, चवाचवाकर खाना जिससे जल्दी हजम होसके, रोटी, दाल, घी, सकर, शाकभाजी, जिनकों जैसा योग मिले वैसा खावे, मगर खाना उतना खावे जिससें बदहजमी न हो, जि-

नकी तबीयत दही खानेकी हो, खा सकते है, मगर बहुत खट्टा दही-खाना, बिगाडकीसुरत है, शामकेवख्त दही खाना अछा नही, खाना खानेसें पेस्तर जल पीना, या खाना खायेबाद ज्यादा जल पीना बहेत्तर नही, चंद्रस्वर चलतेवख्त जितनी प्यास हो उतना जल पीना ठीक है, दुध और दही एकवख्तमें खाना ठीक नही, बिगाड होगा.—

३३ दो शख्शोने मिलकर एक थालमे भोजन जिमना या एक दुसरेका जूठा पानी पीना बीमारीकी सुरत है, खाना खाकर सो कदम इधरउधर फिरना चाहिये, एक जगह बेठे रहना ठीक नही, रात्री भोजन करना, धर्मशस्त्रोंमें मना है, रातके वख्त लाल या काली चिटीयें भोजनके शाथ आजाय तो क्या मालुम? भोजन खाये बाद पानबीडी, एलायची वगेरा तांबुल खाना, जिससे मुंह साफ होजाय, पानबीडीमें कई लोग तमाखु मिलाते है, मगर नशे-वाली कोईभी चीज मिलाना ठीक नही, कई लोग हुका, चिलम, या बीडी पिते है, तमाखु खाते है, मगर इससे मुंहमे बास आती है, छातीमे कमजोरी बढती है, और सीरमे गर्मी पहुंचती है, जिससे कईतरहकी विमारीये पेंश होगी, पान, कथा, चुना, केशर कस्तूरी और जायफल खाना दूर रहा, कई लोग, गांजा, तमाखु पिते है, मगर नशेवाली चीज खाना पिना किसी सुरत अछा नही, पानबीडीभी एक या दो खाना, दिनभर पान खाते रहना बिगाडकी सुरत है, कमाया हुवा धनिया या सोंफ खाना कोई हर्ज नहीं.

३४ इत्र एक ऐसी चीज है, जिससें दिमागकों तरावट मिलती है, जो लोग दिलके दलेर है, इत्रकों दरवख्त इस्तिमाल करते है, वेही पहिचान सकते है, संदली इत्र हिंदमे निहायत उमदा बनाये जाते है, दरअसल! खुशबूदार फलोकी पैदाश हिंदमें ज्यादा, जोनपुर कन्नोज लखनउ वगेरा शहर इत्रकेलिये मशहूर है, कन्नौ-जकी चारोंतर्फ गुलाब, चमेली, और बेला, कसरतसे पैदा होता है इत्र गुलाब, फुलोंका राजा और इत्र चमेली, फुलोकी रानी है, बाजारमें या चौराहेपर जहां इत्रबेचनेवालोंकी दुकाने है, खुशबू

फेलनेपर लोग तारीफ करते है, इत्र केवडा, इसकी खुशबू जितनी अपनेको नही आती उतनी दुसरोंको आती है, इसीलिये इसका नाम परभोगी केवडा कहा, इत्रमोतिया, जिसकी खुशबू बडी मस्त, इत्र मुश्क हीना, इसमें कस्तूरीकी खुशबू दिई जाती है, इत्र अंबर, इत्र सोहाग, इत्र जाफरान, इत्र जुही, इत्र खस, पनडी, मौलसीरी और इत्र चंपा, वडीवडी खुशबू देते हैं, लेकिन ! इनकी पहिचान वे करसकते है, जो इत्र लगानेके शौखीन है, जिनके पास चांदीके बनेहुवे इत्रदान या इत्रभरा मखमली जेंबी इत्रदान सफरमेभी बने रहते है, अगरका इत्र, पानमें इस्तिमाल कियाजाय तो ताकात बढसकती है.

३५ रुह गुलाब, (२०) रुपये तोलेसें लगाकर (१००) रुपये तोलेतक मिलती है, मगर इतनी चढियाचीज खरीदना और इस्तिमाल करना, दिलके दलेर शख्शोंका काम है, इत्रखस, और इत्र पनडी, गर्मीकेदिनोंकी सौकात हैं, ठंडकेदिनोमें मुश्कहीना बडीबहार देता हैं, जितना इत्र अपनेलिये खर्च करते हो, देवपूजनमेंभी खर्च किया करो, बदौलत धर्महीके सुखचैन मिला है, और आइंदे मिलेगा.–

३६ सदाचारसें चलना और सद्विचारसें काम करना सबका फर्ज है, अगर सदाचारसें चलना बुरा होता तो बडेबडे ज्ञानी और अकलमंद उसपर क्यौ चलते ? जुआखेलना सब व्यसनोंका सिरदार है, चौरका कोई भरुसा नही करता, और अखीरमे उसकों केद जानापडता है, वेश्याओके संगसें कई शख्शोंने तकलीफ उठाई और उठारहे है, तन, धन, और इज्जत ये तीन चीजे दुनियामें बडी समज गई है, वेश्याके संगसे ये तीनों चीजे बरबाद होती है, शराब पीना, मांसखाना, और शिकार खेलना धर्मशास्त्र मना फरमाते है, जैसा अपना जीव अपनेकों प्यारा है, दुसरोकोभी उसीतरह प्यारा है, अफीम खानेसें शरीरमें नुकशान पहुचता है, बुद्धि कमजोर होजाती है, और सीरमें खुश्की बढती है, अगर गर्मीके दिनोंमें ठंडाई पीना है, विना नशेकी चीजोके बनाकर पीओ.–

२७ कईशख्श दुनियामें ऐसे है, जो किसीके शाथ तकरार होजाय तो कहदेते है, फलानेका बुरा होजाओ, फलानेका नाश होजाओ, हे! भगवान् उसका बुरा कर दो, लेकिन! भगवान् किसीका भलाबुरा नही करते, भलाबुरा होना अपनी अपनी तकदीरके ताल्लुक है, बोलनेवाले एसा बोलकर नाहक पापकर्म बांधते है, जो लोग पाप पुन्य मानते नही, उनकी बात अलग है, मगर जो धर्मपर कामील एतकात है, वे धर्महीको कुबुल रखकर शास्त्रके फरमानपर चलते है, देखो! एक शख्शको चलतेवख्त पथरकी ठोकर लगी, अगर उसपर चिडकर वो ऐसा कहे, इसका नाश होजाओ, यह जलजाय, क्या! इसतरह कहनेसें उसका नाश होजायगा? हर्गिज! नही, फिर नाहक! ऐसा क्यौ बोलना, धर्मशास्त्र फरमाते है, अपनी करनीपर खयाल करो, पापकर्मसें बचो, और धर्मकरो, जिससें परलोकका रास्ता साफ हो.–

[ बयान-दुनियाके-कारोबारका खतम हुवा. ]

---

[ गौतमकेवली महाविद्यासे प्रश्न देखनेकी तरकीब. ]

१ गौतमकेवली भविष्यबतलानेवाली एक महाविद्या है, पेस्तरके लोग ऐसी विद्याओंकी बडी कदर करते थे, आजकल कई लोग इसकों बचोंका खेल समजते है, मगर दरअसल! ज्ञानीयोंका बनाया हुवा यह एक सचाखेल है, देखो! दुनियामे पुन्य एक बडी चीज है, और वो देवगुरुधर्मकी सेवासे मिला है, और शुभाशुभकर्मका भविष्यदेखनेका यह एक उपाव है, गौतमकेवली महाविद्याके यत्रमें जो जो अक आते है, उसका खुलासा इसतरह है.–

[ गाथा, ]

इक्को होइ मियंको, धरासुओ दोसु दिणयरो तिन्नि,
एसा गहाण पंती, निद्दिठा गणहरिंदेहिं, १

( अर्थः ) यंत्रमे जहां जहा एकका अंक है, उसकों चंद्रमाका अक जानना, जहां दोका अंक है, उसको मंगलका अक और जहां

जहां तीनका अंक है उसको सूर्यका अंक जानना, और उस तीन-ग्रहोकी पंक्तिसें शुभाशुभ फल देखना, यह रचना वडे ज्ञानी गण-धरोंकी बनाई हुई महाप्रभाविक चीज है.–

[ गौतमकेवली-महाविद्यासें ]

(प्रश्नदेखनेका यंत्र)

| | | |
|---|---|---|
| १११ | ३३१ | १३२ |
| ११३ | ३२३ | २२२ |
| ११२ | ३२१ | २२१ |
| २३३ | ३१३ | २३२ |
| २३१ | ३११ | १३३ |
| २१२ | १२१ | ३१२ |
| २१३ | १२२ | ३३२ |
| २११ | १२३ | २२३ |
| ३३३ | १३१ | ३२२ |

२ जिसकामके लिये प्रश्न देखना हो, अवल अपने मनमें चिंतन करना, और अपने हाथमे एक रुपया और श्रीफल लेकर उपर बतलाये हुवे यंत्रके सामने भेट रखना, फिर एक एलाची या लोंग हाथमें लेकर [ ॐ चिरिचिरि, पिरिपिरि, निसिरि निसिरि दिव्य भूपतये स्वाहा, ] इस पाठको मन–वचन–काया–स्थिरकरके

विना ओठ हिलाये सातदफे पढना, और उस इलाची या लोंगको मंत्रित करके यंत्रके जो सताइस कोठे बने हुवे है, उनमे अपना दिल चाहे उस कोठेपर रखना, और उसकोठेका अंक देखकर आगे इन्ही अंकोंके जो जो फल अलग अलग लिखे है, उनमे अपना अंक तलाश करना, और उसमे लिखाहुवा फल समजना, एक दिनमे एकशख्शके लिये एकही प्रश्न देखाजाता है, उसका फल चाहे सो आवे, देखाहुवा प्रश्न बारबार देखना नही, यत्रके आगे जो रुपया और श्रीफल भेट रखागया है, ज्ञानके काममें खर्च कर देना.–

[ गौतमकेवलीके सताइस कोठेका अलग अलग– फल इसतरह है,– ]

१११–में अंकका फल,—यह सवाल बहुत उमदा आया है, आपके बुरे दिन चलेगये, आगे अछे दिन आये है, व्यापारमे फायदा होगा, दिलकी मुराद पार पडेगी, हरतरहकी चिंता मनमे बनीरहती है, मगर चंदरौजमे रफा होगी, एक दोस्तसे दगा पाये हो, धर्मके काम करना चाहते हो, मगर अतरायकर्मके उदयसे उसमें हरकत आन पडती है, पेदाशमें खर्च ज्यादा है, कोई काम फतेह होनेपर आता है, अशुभकर्मके उदयसे दुश्मनलोग उसमे हरकत डालते है, देवगुरु धर्मकी खिदमत करो, और धर्मके काममे खर्च करो, जिससे इरादे पूर्ण होगें, इसमे कोई शक नही, प्रतिपक्षी लोग चाहे सो कोशिश करते रहे, मगर आपका विचाराहुवा काम फतेह होगा,–

११२–मे अंकका फल,—यह सवाल अछा है, आपके दिलकों आराम मिलेगा, सुखचैन पाओगें, जो काम दिलमें सोचा है, उसमें फतेह होगी, स्नेहीका मिलाप होगा, फिक्रके दिन गये, और अछे दिन आये है, बदौलत धर्मके सुखचैन पाया, और आगेकों पाओगें, दुसरोका काम मेहनत लेकर सुधार देते हो मगर अपने काममे शुस्ति कर जाते हो, अकल तेज है, बिगडा हुवा कामभी सुधार लेते हो, अपनी इज्जतकेलिये बदनका कपडाभी देदेते हो, औरतकी तर्फसें फायदा है, एकदफे अचानक फायदा मिला है, और मिलेगा,–

११२–में अंकका फल,—सवाल फायदेमंद है, दौलत हासिल होगी, भाग्योदयके दिन नजदीक आये है, जो काम किया जायगा फतेह मिलेगी, स्नेहीका मिलाप होगा, धर्मके कार्य करते रहो, पुन्य हासिल होगा, और सुख मिलेगा, दिल फिक्रमें गायब रहता है, भाईयोंसे जुदाई होती है, मकान बनानेका ईरादा करते हो, वो पार पडेगा, जमीनसे आपको फायदा है, आमदनीसे खर्च ज्यादा होता है, तीर्थोकी जियारत जानेका ईरादा है वो पूर्ण होगा, जो काम धर्मका करना चाहते हो वो बन सकेगा,–

२२३–मे अंकका फल,—चंदरोजमें दौलत मिलेगी, जो काम विचारा है, वो फतेह होगा, स्नेहीका मिलाप होगा, जमीन जहागिरी या मकानसें फायदा होगा, इज्जत बढेगी, धर्मके काममें खर्च करो, बदौलत धर्मके सुखचैन पाओगे, राज्यकी तर्फसे फायदा होगा, ईरादा पूर्ण होगा, आपकी आलादर्जेकी तकदीरका फल है, औरतकी तर्फसे सुख है, एकदफे अचानक फायदा मिलेगा,–

२३१–में अंकका फल,—जो काम दिलमें सोच रखा है, तीनमहिनेमें फतेह होगा, औरतकी तर्फसें फायदा है, कुटुंबके लोगोंसें आजतक सुख नही मिला, आगेको मिलेगा, संतानकी बढवारी होगी, विवाह सादीके खर्चकी चिंता है, फिक्र है वो मिटेगी, इज्जतके लिये आमदनीसे ज्यादा खर्च करना पडता है, तीर्थोकी जियारतका ईरादा है, अंतरायकर्मके उदयसे हरकत आन पडती है, आगेको धर्मके काम बनसकेंगें, दिलमे जिस बातकी चिंता है, बदौलत धर्मके रफा होगी, धर्मपर एतकात रखो,–

२१२–में अंकका फल,—सौचा हुवा काम पार पडेगा, औरतकी तर्फसे फायदा है, विवाह सादीके कामकी चाहना है वो पार पडेगी, कुटुंबकी वृद्धि होगी, बडी मुद्दतके कियेहुवे ईरादे पार पडेगें, पिछली उम्रमें धर्मके काम बनसकेगें, दुश्मन आपके विरुद्ध कोशिश करेंगें, मगर आपकी तकदीरके सामने उनका जोर नही चलेगा,

तीर्थोकी जियारत जाना चाहते हो वो काम होसकेगा, मकान बना-नेका और जमीन खरीदनेका इरादा है, वो फतेहमंद होगा, आपको जमीनसे लाभ है, दुसरे मुल्ककी सफर जाना पडेगा, वहा फायदा मिलेगा, देवगुरुधर्मकी खिदमत करनेसें सब काम ठीक होगे.–

२१३–में अकका फल,—तकलीफके दिन खतम हुवे, सुखके दिन आये है, बहुत दिनोंसें तकलीफ उठा रहे हो, गेरमुल्कोंकी सफर किई मगर सुख नही मिला, अब आरामके दिन आये है, इज्जत बढेगी, औलादका सुख होगा, इतने दिन दोस्त बिरादरोंसे तकलीफ पाई, जहातक बना दुसरोंका अछा किया, मगर उनोनें गुण नही माना, दुश्मन लोग कदम कदमपर मौजूद है, मगर उनका कुछ चलता नही, यह आपकी आलादर्जेकी तकदीर है, पासमें दोलत कम है, मगर इज्जतसे चाहो जितनी मिलसकती है, रिस्तेदारोंसे जैसा चाहिये वैसा सुख नही, इज्जतके लिये खर्च बहुत करते हो. धर्मभुवन आपका सुधरा है, धर्म बडी चीज है, उसपर एतकात रखो.–

२११–मे अंकका फल,—जो काम दिलमें विचारा है, वो होनेवाला नही, उसको छोडकर दुसरा काम करो, देवगुरुधर्मकी खिदमत करो, तीर्थोकी जियारत जाओ, जिससे–पाप दूर हो, और पुन्य हासिल हो, एकदफे आपको अचानक नुकशान हुवा, दुश्मनलोग हरकत करते है, मगर उनका जोर नही चलता, आपकी तकदीर तेज है.–

३३३–में अंकका फल,—इतने दिन दौलतसे तंग रहे, अब दौलत मिलेगी, इरादा पूर्ण होगा, औरतकी तर्फसे सुख मिलेगा, स्नेहीका मिलाप होगा, तीनमहिनेके बाद अछे दिन आयगे, देवगुरुकी खिदमत करो, धर्मके काममें दौलत सर्फ करो, आमदनीसे खर्च ज्यादा है, दौलत जुडी नही, दोस्तकी तर्फसे दगा पाये हो, मन चिंतामे रहता है, दुश्मन लोग पीछे बोलते है, सामने हुवे बाद

बोल सकते नही, इज्जतके लिये अपने बदनके कपडेभी देदेते हो, इज्जतकों धक्का नही पहुंचाते, जमीनसे फायदा होगा, धर्मको तरकी दो, और पंचपरमेष्ठिमंत्रका जाप करो.–

३३१–में अंकका फल,—दिलकी चिंता मिटेगी, बीमारीकी शिकायत रफा होगी, इरादा पूर्ण होगा, चंदरोजमें दौलत मिलेगी, स्नेहीका मिलाप होगा, देवगुरुकी खिदमत करो, धर्ममें दौलत सर्फ करो, आइंदे फायदा होगा, अछेदिन आये है, अंतराय कर्मके उदयसे इतने दिन दुख पाया, अब नही रहेगा, आमदनीसे खर्च ज्यादा रखते हो, पुन्यके उदयसे आगेको किसी बातकी कमी न रहेगी, आजतक जिसजिस बातमें फतेह पाई वो पुन्योदयकी बात है, पुन्यके काममें खयाल रखो, मुल्ककी सफरसे कुटुंबी लोगोंका वियोग रहता है, अब न रहेगा.–

३२३–में अंकका फल,—जो काम दिलमें विचारा है, उसमें फायदा मिलेगा, इरादा पूर्ण होगा, स्नेहीका मिलाप होगा, जो जो चिंता लगरही है वो मिटेगी, तीर्थयात्रा होगी, धर्मके काम बनसकेगें, बहुत दिनोंतक मुल्कोंकी सफर किइ, तकलीफके दिन गये, अब वतनमें जाकर सुखचैन भोगोगे, धर्मके काममे खयाल रखो, इसीसे सुख पाओगें.–

३२१–मे अंकका फल,—जमीन मकान या बागबगीचोंसें फायदा होगा, दौलत पाओगें, स्नेहीका मिलाप होगा, किसीशख्शके शाथ दोस्ती होगी, उससे धन दौलतकी मदद मिलेगी, पुन्यके उदयसें इरादा पूर्ण होगा, धर्मका आराधन करो, दुश्मन कदमकदमपर खडे रहेगें, मगर सामने होनेपर जोर चलेगा नही, अपनी ताकात देखकर खर्च करो, मकान बनाना चाहते हो वो बनसकेगा, दौलत पैदा करते हो, मगर खर्च बहुत होनेकी वजहसे जुडती नही, वालिदकी दौलत कम मिलेगी, औरतकी तर्फसे फायदा है, जईफीमे धर्मके काम बनेगें.–

३१३–में कोठेका फल,—सवाल अछा है, अपने दिलमें जो दौलत स्त्री और संतानके लिये विचार किया है, वो पुरा होगा, स्त्रीसे सुख मिलेगा, संतान होगा, स्नेहीका मिलाप होगा, मुद्दतके कियेहुवे इरादे पार पडेगें, फिक्रके दिन रहे नही, देवगुरुधर्मकी खिदमत करो, दुश्मन लोग सताते है, मगर अब अपनी तकदीर अछी आई है, उनका जोर नही चलेगा, जमीनकी तर्फसे फायदा है, इज्जतके लिये पैदाशसे खर्च ज्यादा करना पडता है, दोस्तोंसें फायदा मिलेगा.–

३११–मे अकका फल,—यह सवाल बहुत उमदा है, जो काम सौचा हैं, उसमें फतेह होगी, मुकद्मा जीत जाओगे, व्यापार रोजगारसें फायदा होगा, इज्जत बढेगी, राज्यतर्फसे फायदा है, धर्मके प्रभावसे सुख मिला, आगे मिलेगा, दुसरोका काम मेहनतसे पार पहुचाते हो, मगर अशुभकर्मके उदयसे अपने काममें गाफिल रहजाते हो, मुल्कोंकी सफर करना होगी, वहा फायदा हो, धर्मपर एतकात रखो, जिससे आफत रफा हो, अपने हाथसे दौलत पैदा करोगे.–

१२१–में अंकका फल,—दिलमें विचारा हुवा प्रश्न फायदेमंद है, बुरेदिन चले गये, अछेदिन आये हैं, बहुत दिनोंसें तकलीफ पाकर नाहिम्मत बने हो, अब पुन्यका उदय हुवा है, देवगुरुधर्मपर एतकात रखो, इरादे पूर्ण होगे, जितनी दौलत खोई है, उससे ज्यादा मिलेगी, दुनियामे इज्जत बढेगी, दिलकी मुराद हासिल होगी, गेरमुल्ककी सफर करोगे, जिस कामकी चिंता है वो मिट सकेगी, उसमें एकशख्श विघ्न डालेगा मगर आपकी फतेह होगी, भाइयोंका और रिस्तेदारोंका गुजर करते हो, इससे इज्जत दुनियामे फैली है, दिलके दलेर हो, जहा जाते हो सुखपाते हो, इज्जतके लिये खर्चमे ज्यादा उतरना पडता है, बदौलत देवगुरुधर्मके किसी बातकी कमी न रहेगी.–

१२२–मे अंकका फल,—जो काम दिलमें सौचा है, वो पार न पडेगा, आपने आजतक बहुतोंका भला किया, मगर अशुभकर्मके

उदयसे विघ्न डालनेवाले मिलेगें, जहांतक बने धर्म करो, तीर्थ-यात्रा और दानपुन्य करनेसे अंतराय कर्म दूर होगा, पंचपरमेष्ठि-महामंत्रका जाप करो, जिससे तकलीफ दूर होगी.–

१२३–में अंकका फल—इतने दिन पापकर्मके थे, बडीबडी तकलीफें उठाई, अब अछे दिन आये है, बहुतोंका भला किया, मगर उनोने गुण नही माना, धर्मके पैसे घरमें मत रखो, तीर्थोंकी जियारत करो, देवगुरुकी खिदमत करो, जिस जगह तकलीफ पाये हो उसकों छोडो, दुसरी जगहपर जाकर रहो, परदेशमें फायदा है, इज्जतके लिये बहुत खर्च किया, आपका दिल फिक्रमें गायब है, धर्मके काम करना चाहते थे, मगर अंतरायकर्मके उदयसे होसका नही, अब अंतरायकर्म दूर होकर शुभकर्मका उदय हुवा है, धारे हुवे सब काम फतेह होगे, धनदौलत मिलेगी, गईहुई चीज फिर मिल-सकेगी, जिस शख्सके शाथ स्नेह है, उसकी सलाहसें काम करो.–

१३१–में अंकका फल,–जो बात दिलमें धारी है, पार पडेगी, उसमें कोइ शक नही, जिस बातका नुकशान हुवा है, वो रफा होकर आगे फायदा होगा, दौलत मिलेगी, संतानकी वृद्धि होगी, आपके हाथसें धर्मके काम बनेगें, धर्मगुरुकी खिदमत करो, जात-बिरादरीमें इज्जत बढेगी, देवाधिदेवका ध्यान करो, जिस स्थानको और जिस आदमीकी मुलाकातको चाहते हो, वो होगी, कलेश और चिताके दिन गये, धातु, धन, संपत्ति और कुटुंबकी वृद्धि चाहते हो, वो होगी, धर्मपर एतकात रखो धर्मसें सुख मिला है, और मिलेगा.–

१३२–में अंकका फल,—आजतक आपके बडेबडे दुश्मन हुवे, अब उनका जोर न चलेगा, विचारेहुवे काममें फतेह होगी, इज्ज-तकी तरकी होगी, आपके हाथसे धर्मके काम बनेगे, राजदरबारमे सन्मान मिलेगा, पूर्वसंचितकर्म अछे आये है, मनोवांछित सुख होगा, मुद्दतके कियेहुवे इरादे पार पडेगे, भाइयोका मिलाप होगा, देवगु-रुधर्मकी खिदमत करो, बदौलत धर्मकेही सुख हुवा, और होगा.–

२२२-में अंकका फल,—जो काम दिलमें विचारा है, उसकों छोडकर दुसरा काम करो, उस कामको करोगे तो आफत पेंश होगी, नुकशान होगा, दुश्मन लोग विघ्न डालेगें, देवगुरुधर्मकी खिद्मत करो, तीर्थोंकी जियारत जाओ! इससे दुसरे काम सुधरेगें, दिलमें तरहतरहकी चिंता बनी है, वो विचारा हुवा काम छोडदेनेसें रफा होगा.–

२२१-मे अंकका फल—इतने दिन सुख चैन भोगा, जो दिन गये वो अछे गये, जो जो काम किये सब पार पडे, मगर अब जो काम दिलमे विचारा है वो पापकर्मके उदयसे पुरा न होगा, दोस्तभी दुश्मन बनेगें, कुटुंबमे अनबनाव होगा, भाइयोकी जुदाई होगी, जो काम करना दिलमे विचारा है उसको छोडदेना ठीक है, धर्मपर एतकात रखो, देवगुरुकी खिदमत करो, दान पुन्य करो, पुन्यके प्रभावसे सुख मिलता है.–

२३२-में अंकका फल,—जो काम विचारा है उसको छोडकर दुसरा काम करो, विचारा हुवा काम करनेसे फायदा नही, स्थान छोडकर गेरमुल्कको जाना होगा, कुटुंबके लोगोंका वियोग होगा, इसलिये बहेत्तर है, उस कामको छोड देना, धर्ममें पाबंद रहना, मुताबिक अपनी हेसीयतके दानपुन्य करना, जिससें सुख हो,–

१३३-मे अंकका फल,—इतने दिन तकलीफ रही, धारेहुवे काम अछी तौरसें पार न पडे, अब अछे दिन पेंश हुवे है, जो काम विचारा है वो फतेह होगा, किसी बातका विघ्न न आयगा, पुन्यके उदयसे अछा ईरादा हुवा है, बदौलत देवगुरुधर्मके दौलत मिलेगी, स्नेहीका मिलाप होगा, संतानका सुख होगा, औरतकी तर्फसे सुख पाओगे, एकशख्शकी तर्फसे अचानक फायदा मिलेगा,–

३१२-में अंकका फल,—जो काम विचारा है, उसको छोडकर दुसरा काम करो, इसमे दुश्मन लोग विघ्न डालेगे, दौलतकी खराबी होगी, घरके मनुष्योंको और जानवरोंकों तकलीफ पेंश होगी, इस-

लिये उस कामको छोड देना मुनासिब है, धर्महीके प्रभावसें सब काम फतेह होते है, निराश्रितोंको आश्रय दो, और देवाधिदेवका ध्यानस्मर्ण करो, जिससे सुख हो,—

३३२—में अंकका फल,—बुरे दिन चले गये, अछे दिन आये है, आपकों जो जमीन और धनदौलतसे नुकशान हुवा है, वो मिट जायगा, गयाहुवा नुकशान मिटकर आगेको फायदा होगा, पंचपरमेष्ठिका ध्यान करो, ज्ञानके काममें मदद करो, ज्ञानावरणीय और अंतरायकर्मका नाशहोकर फायदा मिलेगा, दिल साफ है, इससे दिलकी चिंता जल्दी मिटेगी, परदेशमे रहेहुवे आदमीका फिक्र लगा है, उसकी मुलाकात होगी, बदौलत धर्मके सुख चैन मिलेगा,—

२२३—में अंकका फल,—यह सवाल अछा आया है, सुखके दिन नजदीक आये, व्यापारमें दौलत मिलेगी, आराम चैन पाओगे, औरतका सुख मिलेगा, संतानकी वृद्धि होगी, जो काम करोगे फतेह पाओगे, दिलमे फिक्र है—में परदेश जाउ वहां मुजे ठिकाना अछा मिलेगा या नही? मगर फिक्र मत करो, ठिकाना अछा मिलेगा, अछी नियतसे चलते हो, अखीरमें अछा होगा, धर्मके प्रभावसे सुख होगा, धर्मको मत भुलो, धर्मके काममें शुस्त रहना ठीक नही, देवगुरुकी खिदमत करो.—

३२२—में अंकका फल,—जो काम दिलमें विचारा है, उसमें दुश्मन लोग विघ्न डालेगे, नतिजा ठीक न होगा, राज्यकी तर्फसे खौफ होगा, सुख चाहो तो उस कामको छोडकर दुसरा काम करो, आपके अनुयायी लोग बदलेहुवे है, उनका भरुसा मत रखो, धर्मके काममें ध्यान दो, व्रत नियम करते रहो, दुनियामें सारवस्तु धर्म है, बदौलत धर्महीके सुख चैन पाया और पाओगे,—

[ गौतमकेवली यंत्रके (२७) कोठोंका फल खतम हुवा, ]

३ यह गौतमकेवली महाविद्या काबिल भरूसेके है, पुराने जैन-पुस्तकालयोंमें कई तरहकी प्रश्नावली मौजूद है, उनमें यह गौतमकेवली प्रश्नावली आलादर्जेकी है, जो शख्श इसमें लिखीहुई तरकीनसे प्रश्न देखेगें जवाबमें खुलासा मिलेगा, मज़कुर प्रश्नावली फायदेमंद समजकर यहा दाखिल किईगई है, आजकल कोई यहां केवलज्ञानी मौजूद नही, सिर्फ! उनके फरमायेहुवे धर्मशास्त्र विद्यमान है, उन्हीसे जो कुछ देखना हो देखा जाता है, तमाम धर्मशास्त्र गुरुगममें पढेहुवे बहुत कम है,–

४ आजकल कितनेक जैनमुनि और जैनश्वेतांबर श्रावक आपही आप जैनशास्त्र बांच लेते है, मगर विना गुरुके कोई ज्ञान हासिल नही होसकता, कई श्रावक कहते हैं जैनमुनिजनोंमे संप नही, क्रियामें कमजोर होगये है, हम उनको मानते नही, मगर श्रावकोंमें कौनसा संप चलरहा है? और वे धर्मक्रियामें कौनसे कठीन आचारवाले होगये है? जैसा वख्त है वैसे साधु श्रावक मौजूद है, गुरुगमसे जैनशास्त्र सिखते नही, पुस्तकमे लिखा हुवा पाठ कंठाग्र करके आराधन करने लगते है, इससे कार्य कैसे सिद्ध हो? सूरिमंत्रकल्प, नमस्कारमंत्रकल्प, शक्रस्तवकल्प, और रिषिमंडल, इनमे भविष्य बतलानेवाले कई बीजअक्षर लिखे हुवे है, जो इनशास्त्रोंको पढेहुवे है जानते होगें, गुरुगमसे विधिके शाथ आराधन किया जाय तो फल मिले, उच्च कोटिके देवते जमाने हालमें प्रत्यक्ष आते नही, उतनी आलादर्जेकी तकदीरवाले मनुष्य कम है, परोक्षरहकर जवाब देते है, मगर आराधन करनेवालोंका मन दृढ रहना चाहिये,–

५ आजकल कई श्रावक दौलतमद होते हुवेभी मातापिताके पिछे बोला हुवा धर्मद्रव्य खर्चते नही. अपनी दुकानके चोपडेमे

जमा कररखते है, और कहते हैं हम दरसाल व्याजके रुपये धर्ममें खर्च देयगें, मगर धर्मशास्त्र फरमाते है, धर्ममें वोलीहुई रकम उस काममें लगा देना चाहिये, घरमें रखना ठीक नही, जैनतीर्थोंमें जैनमंदिरोंमें दानशाला विद्याशाला और धर्मशालाके काममें खर्च करदेना चाहिये, न मालुम कल कैसा समय आजाय, धर्मका पैसा घरमें रहना अछा नही.–

६ कई श्रावक–रुई–शेर–सोना–चांदी वगेराके व्यापारमें हजारों रुपये पैदा करते है, धर्मादा निकालते है, मगर तुर्त खर्चते नही, नुकशानमें आजाय तो कहते हे, अब हमारी ताकात नही, मगर धर्मका काम पहले करना चाहिये, लखपति हो तो उनकी ताकात मुजब और साधारण स्थितिवाले हो तो उनकी ताकात मुजब दौलत खर्च करे, जभी कियाहुवा अनुष्ठान फल देगा, अगर कोई श्रावक ससारिक कामके लिये भविष्य बात पुछे तो उसको धर्मकाममे यथाशक्ति खर्च करनेके लिये गुरू उपदेश देवे, खेती करनेवाले किसान लोग जब जमीनमें वीज डालते है, तो फल पैदा होता है, इसलिये धर्मरूपी क्षेत्रमें पेस्तर वीज डालना चाहिये, मुनि लोग जिनोंने संसार छोड दिया है उनको भावपूजा कही, मगर दुनियादारोंको द्रव्यपूजा और भावपूजा दोनो करना फरमाई, जितनी जिसकी ताकात हो उतना खर्च करे, जैनमजहबमे चंद्र-प्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, नजुमशास्त्र है, अष्टांगनिमित्त वगेरा, निमित्त-शास्त्र मौजूद है, इल्मपढनेसे ज्ञानहासिल होगा.–

[ बयान गौतमकेवली महाविद्याका खतम हुवा, ]

[ भारतवर्षका इतिहास भाग पहेला जो श्रीयुत-
लाला लाजपतरायजीने बनाया है, उसमें
जैनधर्मके बारेमे जो लिखाण है,
उसका माकुल जवाव, ]

इसी संवत् (१९८०) में मेने मुकाम दादरमें बारीश गुजारी, जैन एशोशिएशन औफ इंडिया बंबईसें एक खत मेरे पास पहुंचा, उसमें लिखाथा, भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेमे श्रीयुत लाला लाजपतरायजीने जैनधर्मके बारेमें जो कुछ लिखाण किया है, उसका माकुल जवाव देना चाहिये, बाद चंदरोजके भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेकी एक किताब एक श्रावकने लाकर मुजको दिई, मेने उसमे जैनधर्मके बारेका लेख पढा, बेशक, इसपर समीक्षा करना जरूरी है, ऐसा समजकर समीक्षा करताहुं, देखिये!-

भारतवर्ष इतिहास भाग पहेलेके पृष्ठ (१२९) पर श्रीयुत लाला-लाजपतरायजी लिखते है, जैनधर्मके बारेमे लोगोंका अनुमान है, बौधधर्मके आरभके पासपासही जैनधर्मका प्रकाश हुवा, यद्यपि जैन यह मानते है कि-जैनधर्मके मूलप्रवर्तक श्रीपार्श्वनाथ थे, जो भगवान् बुधसे लगभग ढाइसो वर्स पहले हुवे,-

(जवाव)-गौतम बुधके पेस्तर ढाईसो वर्सके आगे तीर्थंकर पार्श्वनाथजी हुवे, इससे क्या हुवा? जैनधर्म उनसे नही चला, बल्कि! इस कालचक्रमे तीर्थंकर रिषभदेव भगवान्सें जैनधर्म चला है, तीर्थंकर रिषभदेव विनीता नगरीके राजाधिराज थे, उस वख्त बौध-धर्मका नामभी नही था, श्रीयुत लाला लाजपतरायजी लिखते हैं, लोगोंका अनुमान है, बौधधर्मके आरभके पासपासही जैनधर्मका प्रकाश हुवा, मगर यह अनुमान गलत है, जैनधर्मका आरभ तीर्थंकर रिषभदेव महाराजसें हुवा है,-

जिनको देखना हो, जैनागम आवश्यकसूत्र और कल्पसूत्र देखे, आवश्यकसूत्र और कल्पसूत्र मूल और संस्कृतटीकासहित छपेहुवे मौजूद है, उनमें साफ वयान है, इस शुरुकालचक्रमें तीर्थंकर रिषभदेव महाराजसे जैनधर्म प्रकाश हुवा, उनोंने जब विनीता नगरीकी अमल्दारी छोडकर दीक्षा इख्तियार किई, अपने लडकोंको राज्यभाग बांट दिया, मुल्कोंकी सफर किई, तप किया, केवलज्ञान पाया, लोगोंको तालीम धर्मकी दिई और मुक्ति पाई, जयति रागद्वेषादिशत्रून् इति जिनः–रागद्वेपकामक्रोध वगेरा दुश्मनोंसें फतेह पावे उनका नाम जिन है, और उनका बयान कियाहुवा मजहब जैन है,–

आगे भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेके पृष्ठ ( १३० ) पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी इस मजमूनको पेश करते है, जैनधर्मके बडे मूलपुरुष श्रीवर्द्धमान महावीर हुवे हैं, वे भगवान् महावीरके समकालीन थे,–

(जवाब.)–तीर्थंकर महावीर और गौतमबुध समकालीन थे, इससे क्या हुवा! दोनोंका मजहब अलग अलग था, एक नही, पेस्तर लिखचुका हुं इस शुरूकालचक्रमें तीर्थंकर रिषभदेव महाराजसे जैनधर्म चला, जैनधर्मवाले दुनियामें अनंतकालचक्र होगये और आगेको होगे मानते है, जैसे वैदिकमजहबवाले मन्वंतर मानते हैं, जैनलोग एक कालचक्रमे चौइस महान्-पुरुष धर्मप्रवर्तकोंका होना मानते हैं, इस कालचक्रमें अवल तीर्थंकर रिषभदेव, दुसरे अजितनाथ, तिसरे संभवनाथ, इसतरह अनुक्रमसें तेइसमें तीर्थंकर पार्श्वनाथ और चौइसमे तीर्थंकर महावीर हुवे, तीर्थंकर पार्श्वनाथने या तीर्थंकर महावीरने नया मजहब नही चलाया, तीर्थंकर रिषभदेव महाराजने जो उपदेश दिया था, वही उपदेश सब तीर्थंकरोंने दिया, तीर्थंकर पार्श्वनाथ बनारसी नगरीके राजपुत्र, और तीर्थंकर

महावीर मगधदेशके क्षत्रीयकुंड गांवके राजपुत्र थे, उन्होंने दीक्षा लिई और मुक्ति पाई.–

फिर भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेके पृष्ठ ( १३० ) पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी लिखते हैं; वे पूर्णयुवाकालमें संसारका परित्याग करके पार्श्वनाथजीके संप्रदायमे संमिलित होगये, कुछ वर्सके पश्चात् उन्होंने एक नवीन सप्रदायकी नींव डाली, और अपनी शिक्षाका खूब विस्तार किया.–

( जवाब. ) तीर्थंकर महावीर पार्श्वनाथजीकी संप्रदायमें संमिलित नही हुवे, बल्कि! पेस्तरसे जो संप्रदाय तीर्थंकर रिषभदेव महाराजसे चली आती थी, उसमे सामील हुवे, और उनके बाद अढाईसो वर्स पीछे तीर्थंकर महावीर उसी संप्रदायमे समिलित हुवे,–तीर्थंकर पार्श्वनाथजीकी स्वयं चलाइहुई कोई संप्रदाय नही थी, हरेक तीर्थंकरोका फर्ज है, सच्चे धर्मके कायदे दुनियाके सामने जाहिर करे.

आगे भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेके पृष्ठ ( १३० ) पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी इस दलिलको पेंश करते है, उनके यानी ( महावीरस्वामीके ) जीवनकालमे अनेक राजपरिवार उनके श्रद्धालु थे, क्योंकि–माताकी औरसें उनका तीन राजपरिवारोंसे संबंध था.

( जवाब ) माताकी तर्फसे चाहे जितने राजपरिवारसे सबंध हो, इससे क्या हुवा? राज्यका अधिकार दुसरी चीज है, और धर्म दुसरी चीज है, असलमे! जिनकी धर्मतालीम सच्ची हो, उनका उनपर असर होता है, धर्ममे रिस्तेदारोके मुलाहजेकी बात नही चलती, बल्कि! सच्चे धर्मकी बात चलती है, कई राजे महाराजे सच्चे धर्मकी तालीम पाकर दुनियाको छोड चुके है, तप किया है, और मुक्ति पाई है, धर्ममे संसारके मुलाहजेकी कोई जरुरत नही, दुनियाको छोडकर जो साधु होते है, वे दुसरोपर दुनियादारीका मुलाहजा क्यो डाले.–

फिर भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेके पृष्ठ ( १३० ) पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी वयान करते है, उनकी यानी तीर्थंकर महावीरके देहांतकी तिथिके विषयमें बहुत भेद है, प्रायः लोग इसाके पूर्व ( ५२७ ) वां वर्स निश्चित करते हैं, अध्यापक जेकोबीकी संमतिमें वे सन ( ४७७ ) इसाके पूर्वमें पंचत्वको प्राप्त हुवे.–

( जवाब ) भगवान् महावीर इशाके पहले ( ५२७ ) मे वर्स मगधदेशकी अपापा नगरीमें देहांत हुवे, इसमें कोई शक नही, यह लेख लिखतेवख्त विक्रमसंवत् ( १९८० ) चलता है, इस्वीसन ( १९२३ ) और भगवान् महावीर निर्वाण संवत् (२४५०) चलता है, ( २४५० ) मेसे ( १९२३ ) बाद किये जाय तो ( ५२७ ) बाकी रहेगा, इससे साबीत हुवा, भगवान् महावीरका देहांत इस्वीसनकी शुरुआतसें ( ५२७ ) वर्स पहले हुवा, प्रोफेसर जेकोबी साहबने जो लिखा है, वो जैनशास्त्रके फरमानसे मिलता नही, उनकी समजमें कोई दुसरी बात आई होगी.–

आगे भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेके पृष्ठ ( १३० ) पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी इस मजमूनको पेंश करते है, जैनधर्मकी शिक्षा अधिकांश बौधधर्मकी शिक्षासे मिलती है, परतु सिद्धातरूपसे दोनों धर्म भिन्न भिन्न है.–

(जवाब) जैनमजहबकी शिक्षा और बौधधर्मकी शिक्षा किसी अंशमें मिलती नही, जैनलोग द्वादशांगवानीके पुस्तक आचाराग, सूत्रकृतांग, स्थानाग, समवायांग, भगवतीसूत्र, ज्ञाताधर्मकथा, उपाशकदशांग, अंतकृत्, अनुत्तरोपपातिका, प्रश्नव्याकरण, विपाक, और दृष्टिवाद वगेरा मानते है, बौधलोग, विनयपीटिकासूत्र, महावग्गसूत्र, कुलवग्गसूत्र परिवारपाठसूत्र, दिग्निकायसूत्र वगेरा पुस्तकोंको मानते है, जैनलोक इस कालचक्रमें रिषभदेव वगेरासे महावीरतक चौइस तीर्थंकरोंको मानते हैं, बौधमजहबवाले विपश्यी, शिखी, विश्वभू, ककुछंद, कांचन, काश्यप, और सातमे शाक्यसिंह इन सातकों मानते

हैं, जैनमजहबमे इंद्रभूति (गौतमगणधर,) अग्निभूति, वायुभूति, और सुधर्मा जैनाचार्य हुवे मानते हैं, बौधमजहबमें गौतमबुध, मौद्‌गलायन, शौरीपुत्र, देवदत्त और आनंद वगेराको मानते हैं, बौधमतके पदवीधर साधुओंको लामा बोलते हैं.–

बौधमजहबका फरमाना है, सब चीजें क्षणविनाशी और आत्माभी क्षणविनाशी है, एकीला ज्ञान क्षणसंततिके शाथ वासनारूप सहचारी है, बौधमजहबमे स्कंध पांच हैं, १ विज्ञान, २ वेदना, ३ संज्ञा, ४ संस्कार, और ५ रूप, बौधमजहबमें भावना पांच हैं, १ मैत्री, २ मुदित, ३ करुणा, ४ अशुभ, और ५ उत्प्रेक्षा, जैनमजहब कहता है, कर्मको प्रधान मानो, बौधमजहब कहता है, सबवस्तु क्षणिक हैं, जैनमजहबवाले षड्‌द्रव्यको अनादि मानते हैं, बौधोंके क्षणिकवादमे अनादिपना रहता नही, जैनमजहबके जिनमंदिर अलग तरहके, और बौधमजहबके बौधमदिर अलग तरहके हैं, दोनोंकी मूर्त्तिये अलग अलग तरहकी हैं, दोनोंके साधुमहाराजोके आचारविचार जुदी जुदी तरहके हैं, इनबातोंसे साबीत हुवा, दोनों मजहबकी शिक्षा और सिद्धांतमे फर्क है.–

फिर भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेके पृष्ठ (१३०) पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी बयान करते हैं, जिसप्रकार बौधधर्मने हिंदुसमाजमें पूर्णपरिवर्तन नही किया, और उसमे क्रांतिकारी हेरफेर उत्पन्न करनेकी चेष्टा नही किई, उसीप्रकार जैनधर्मनेभी तत्कालीन हिंदुसमाजका सुधारकरनेका यत्न किया, उसने न तो जातिपांतिको उखाडा, न देवीदेवताओंको जवाब दिया, और न उनके रीतरवाजोमे बहुत हस्तक्षेप किया.–

(जवाब) दुनियाके रीतरवाज एकसरखे होसकते नही, और इस बातको जैन क्या! सब मजहबवाले मंजुर रखते हैं कि–हानिकारक रवाज छोडना चाहिये, जैनमजहब कहता है, देवीदेवताको

माननना, मगर जो सम्यक्तधारी हो, जिनको मांस मदिरा न चढाया जाता हो उनको मानना, मूर्त्तिपूजा जैनलोग मानते है, और वो जबतक यह जीव मुक्ति नही हुवा माननेकी जरुरत है, जैनमजहबने जातिपांतिको इसलिये उखाडा नही, वो धर्मकी हिफाजत रहनेका सबब है, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र वगेरा वर्णभेद ठीक है, सब एक होजानेसें आर्यधर्मकी मर्यादा रहसकती नही, बल्कि! टुट जाती है, इसलिये वर्णभेद होना जरुरी है, वर्णभेदसें धर्मको हानि नही, बल्कि! पुष्टि मिलती है, तीर्थंकर महावीरने तालीम धर्मकी देतेवख्त किसीका पक्ष नही किया, जैनमजहब सत्यतत्वोकों बयान करता है, चाहे बौधधर्मवाले हो, या हिंदुधर्मवाले हो चाहे किसी दुसरे धर्मवाले हो, जिनको पसद हो माने, नापसंद हो न माने, धर्ममे जोराजोरी नही होसकती, पिताका धर्म जुदा, और पुत्रका धर्म जुदा है, इसमें कोई जबरन नही चलसकती, धर्मका एतकात होना अपने अपने दिलकी बात है.–

आगे भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेके पृष्ठ ( १३० ) पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी लिखते है, बौधधर्मकी तुलनामें जैनसाधु बहुत अधिक त्यागी है, जैनधर्मकी पूजनविधिभी बौधधर्मसे भिन्न है, जैनलोग प्रकृति और जीवकों अलग अलग मानते हैं,–

(जवाब)–बेशक! जैनलोग प्रकृति और जीवको अलग अलग मानते है, मगर जबतक इस जीवने मुक्ति नही पाई अलग नही, जब निस्पृह होकर तप करे, पूर्वसंचितकर्म क्षय होजाय, और आइंदे नये कर्म बांधे न जाय तो इस जीवकी मुक्ति होसके, जैनमजहबकी पूजनविधि बौधमजहबकी पूजनविधिसें जुदी है, जैनमजहबके साधु बौधमजहबके साधुसें अधिक त्यागी है, यह बात श्रीयुत लालाजीने जैसी देखी होगी वैसी लिखी होगी,–

फिर भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेके पृष्ठ ( १३० ) पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी लिखते है, जैनोंका बहुत बडा सिद्धात है,

सृष्टिके प्रत्येक पदार्थोंमें जीव है, केवल मनुष्य और पशुही सजीव नही, वरन ? समस्त प्रकारके पौंधो, वृक्षो, सागपात, धातु, पाषाण, और मिट्टी आदिमेंभी जीव है,–

(जवाब)-वेशक ! जैनलोग जो मनुष्य, पशु, वनास्पति, और मिट्टी वगेरामे जीव मानते है, यह बात बहुत बहेत्तर है, देखो ! मनुष्य और जानवरोंमे तो कोई इनकार करसकता नही, रही वनास्पति, मिट्टी वगेराकी बात, सो लजवती वनास्पति हाथ लगानेसें सुकड जाती है, और हाथ उठालो फिर विकाश होजाती है, कई वृक्ष ऐसे है, जो फलते न हो तो उसके नीचे वेठकर कोई शख्श गाना गावे तो वो प्रफुल्लित होजावे, फर्ज करो ! उनमे जीव न होता तो ऐसा क्यों होता ? कलकत्तेके रहनेवाले प्रोफेसर जगदीशचद्र बोझने ऐसे यंत्र बनाये है, जिससे वनास्पतिमें जीव है, वो हसती है, रोती है, मर-जाती है, उसको तरहतरहके रोग होते हैं, नजरीये यह बात विसमी-सदी मासिक बंबईमें जो निकसता था, छपकर आइथी, कई महाशयोंने प्रोफेसर जगदीशचंद्र बोझके प्रयोग देखकर ताज्जुब माना, और वनास्पतिमें जीनका होना मंजुर रखा, जैनमजहबमे एक छोटासा लडका जो जैनपाठशालामें जीवविचार नवतत्वकी किताब पढा होगा, उसको पुछो तो वो कहेगा, वनास्पति मिट्टी वगेरामे जीव है, सोना, चांदी, तांबा, लोहा, कथीर, शीशा, जसत ये सात धातु जब खानमे हो, तबतक उसमें पृथ्वीकायके जीव है, जब उसको अग्निका सयोग होकर धातु बनजाय फिर उसमे जीव नही, ऐसा जानना.–

आगे भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेके पृष्ठ ( १३१ ) पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी बयान करते है, जैन स्पष्टरूपसे ईश्वरके अस्तित्वमें इन्कार करते है, उनके मतमे अछेसे अछा, श्रेष्ठसे श्रेष्ठ, और त्यागीसें त्यागी मनुष्यही परमेश्वर है.–

(जवाव) वेशक! श्रेष्ठसें श्रेष्ठ, और त्यागीसें त्यागी मनुष्यही ईश्वर होसकता है, अगर मनुष्य ईश्वर न होसकता हो तो धर्मशास्त्र किसके लिये वनाये गये? धर्मशास्त्रमें हरजगह वयान आता है, तप, जप, ध्यान, व्रत, नियम करनेसे पूर्वसंचित कर्म दूर होकर इस जीवकी मुक्ति होसक्ती है, जीव परमात्माका ध्यानकरनेसे अपने कर्मोंको जलाकर खुद परमात्मा होसकता है, जैसे आतसी शीशा सूर्यके सामने रखनेसें उसमें अग्नि पैदा होती है, और उसके नीचे रखीहुई रुई जलजाती है, इसतरह परमात्माका ध्यान करनेसें इस जीवके कर्म जल जाते है, जैसे आतसी शीशेमें सूर्य अग्नि रखते नही आता, इसतरह परमात्मा इस जीवके कर्म दुरकरनेको नही आते, मगर ध्यानकरनेसे जीवमे कर्म जलानेकी ताकात पैदा होती है, और वो ताकात कर्मको खुद जला देती है, और वो जीव खुद वखुद परमात्मा होजाता है.–

मुक्तिमें ईश्वर सबसे वडे और मुक्तिपायेहुवे मुक्तात्मा उससे छोटे ऐसा भेद रहे तो वो इन्साफ नही, जो लोग सामीप्यमुक्ति मानते है, जैन ऐसा नही मानते, जैनलोग सादृश्यमुक्ति मानते है, कई महाशय वयान करते है, ईश्वर एक है, और वो सर्वशक्तिमान् है, जवावमे मालुम हो, जो आत्मा मुक्ति पाये वो क्या ईश्वरस्वरूप नही? जैनमजहववाले मानते है जो जीव कर्मक्षयकरके मुक्तिपाये वो सब ईश्वर है, इससे सावीत हुवा ईश्वर अनेक है, और वे प्रवाहरूपसे अनादि अनंत है, दुनियाभी प्रवाहरूपसे अनादि अनंत है, कभी दुनिया और मुक्ति नही रहेगी ऐसा न होगा, मुक्तिमें जाकर पीछे आना नही होता, सामान्यरूपसे सव मुक्तात्मा ज्ञानमें एक है, और व्यक्तिरूपसे अनेक है, सवका आत्मा जुदा जुदा है.

जैनमजहव ईश्वरको अस्तित्वरूपसे मानते है, मगर जगतके वनानेवाले नही मानते, राग–द्वेष–काम–क्रोध–मोह–लोभ वगैरा षड्रिपुको जीतनेवाला ईश्वर परमात्मा सृष्टिरचनेकी प्रवृत्ति क्यों करे?

वे अपने सच्चिदानंद आत्मस्वरूपमें लीन है, उनको जगत् बनानेकी क्या जरूरत है,? परमात्मा अरूपी है, अरूपी रूपीको कैसे पैदा करसके? निराकार परमात्माको साकार दुनिया बनानेकी जरूरत क्या?–

[ जैनाचार्य हेमचंद्रसूरिजीने वीतरागस्तवमें बयान किया है, ]

(अनुष्टुप् वृत्तम्,)

धर्माधर्मौ विना नांग, विनांगेन मुखं कुतः
मुखाद् विना न वक्तृत्वं, तच्छास्तारः परे कथं,–१
अदेहस्य जगत्सृष्टेः, प्रवृत्तिरपि नोचिता,
न च प्रयोजनं किंचित्, स्वातंत्र्यान्न पराज्ञया,–२
क्रीडया चेत्प्रवर्त्तेत, रागवान् स्यात्कुमारवत्
कृपया चेत्सृजेत्तर्हि, सुख्येव सकलं सृजेत्,–३
दुःखदौर्गत्यदुर्योनिजन्मादिक्लेशविव्हलं,
जनं तु सृजतस्तस्य कृपालोः का कृपालुता.–४

(अर्थः)–पूर्वजन्मके पुन्यपापविना अछा बुरा शरीर मिलता नही, अगर शरीर न होगा तो मुख कैसे होसकेगा? विना मुखके बोलना बनसकता नही, फिर निराकार ईश्वर दुसरोंको उपदेश कैसे देसके? निराकार परमात्मा जगत् बनानेकी प्रवृत्ति क्यों करे? ऐसा करनेका उनका प्रयोजन क्या? परमात्मा स्वतंत्र है, दुसरेके हुकममें नही, फिर उनको जगत् बनानेकी जरूरत क्या? अगर कहा जाय क्रीडा करके परमात्माने जगत् बनाया तो परमात्माको राग रूपी दूषण आयगा, अगर कहाजाय परमात्माने कृपाकरके जगत् बनाया तो सब जीवोंको सुखी बनाना चाहिये, एकको दुखी और एकको सुखी क्यों बनाये? निराकार परमात्माके कोई दुश्मन नही और कोई दोस्त नही, अगर कहाजाय जैसे जैसे कर्म जीवोंने कीये

है, उसके मुताबिक परमात्मा फल देते है, तो वे फलदेनेमें स्वतंत्र कैसे होसकेगें ? जीवने जैसे कर्म कियेथे वैसा फल दिया तो उसमें परमात्माने नयी बात क्या किई ? अगर कहाजाय, परमेश्वर सर्व-शक्तिमान् है, तो जवाबमें मालुम हो, एकशख्शकी तकदीरमे समजो लाखरुपये मिलनेके है, उसको परमात्मा सवालाख रुपये देयगें ? दुसरी मिशाल, ! एक शख्शकी आयुष्य समजो (६०) वर्षकी हो तो परमात्मा उस शख्शकी आयुष्य (७०)वर्सकी करदेयगें ? इस बातकों सौचो ! अगर नही करदेयगें तो वे स्वतंत्र कैसे कहजायगें, ?–

अगर कोई कहे हम ईश्वरकों एक मानते है, और वे जगतको बनानेवाले है, इसपर दलिल पैदा होगी, जगत् बनानेका जडचेत-नरूप मसाला कहांसे आया ? अगर कहा जाय ईश्वरने बनाया तो अरूपी पदार्थसे रूपी पदार्थ कैसे पैदा होसके ? अगर जडचेतनरूप मसाला अनादि था तो जगत् अनादि क्यौं न होसके ? अगर कहा जाय ईश्वरके बनानेवाले कोई नही, अनादि है, तो इसतरह जगत्भी अनादि क्यौं नही, ? जैनमजहबवाले जगत्को अनादि मानते है, जीव जैसे कर्म करे वैसे फल पावे यह एक सिधी सडक है,–

[ गोस्वामितुलसीदासजीका फरमान है, ]

( चोपाई, )

[“सकल पदारथ है जगमांही, कर्महीन नर पावत नांही”]

दुनियामें धनदौलत, सोना, चादी, मालखजाना, औरत और नोकर चाकर मौजूद है, मगर जो कर्महीन मनुष्य है, उनउन चीजोंको नही पाते, इससें सबुतहुवा भाग्य वडी चीज है,–

[ फिर गोस्वामितुलसीदासकृत रामायण
अयोध्याकांडमें लिखा है,– ]

( दोहा, )

सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलखि कहे मुनिनाथ,
हान लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधिहाथ १६४

मुनिनाथ (वसिष्ठजी) ने दुखी होकर भरतजीको कहा, हे! भरत!! सुनो, होनहार वडा बलवान् है, हान, लाभ, जीना, मरना, भलाई और बुराई ये सब विधिके हाथ है, अगर कहाजाय विधिका नाम ब्रह्मा है, तो जवाबमें मालुम हो, इसमें जो भावी प्रबल कहा, इसका माईना क्या हुवा? इसका माईना यह हुवा, भाविकर्म बलवान् है,– जगत् अनादि है, और सब जीव अपने अपने कियेहुवे कर्मोंका फल भोगते हैं. इसमें कोई गलत नही, कियेहुवे कर्महीं जीवको फल देनेवाले है, ईश्वर परमात्मा उनके बीचमें आते नही, बडेबडे वेदांतिक पंडित ऐसे निश्चयपर आगये है, आत्मा अगर परमात्माका ध्यान धरे तो खुद परमात्मा होसके, हिंदुधर्मके कई महाशय यह कहलानत कहा करते है, "जो नर करे करनी, तो नरका नारायण हो" अगर ऐसा न होता तो पेस्तरके जमानेमें वडेवडे राजे महाराजे राज्य छोडकर त्यागमार्ग क्यौ लेते? देखो! राजा भर्तृहरिजीने राज्य छोडकर त्यागमार्ग लिया,–

फिर भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेके पृष्ठ (१३१) पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी लिखते हैं, इस अंगमें जैनोंका धर्म युरोपीय दार्शनिक कमिटीके धर्मसे मिलता है, अमरिकामें इसाइयोंका एक संप्रदायभी लगभग इसी सिद्धांतकी शिक्षा देने लगा है,–

(जवाब) जैनोंका मजकुर सिद्धांत उनको पसंद हुवा होगा तो उस मुताबिक शिक्षा देनेलगे होंगे,–

आगे भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेके पृष्ठ (१३१) पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी बयान करते है, जैनोका सबसे बडा सिद्धांत अहिसा है, बौधोंमे मृतपशुके मासको खानेका निषेध नही, बर्मामे, सिंहलमे, चीनमें, जापानमे, साराश यह कि–सभी बौध देशोमे बौधलोग मास खाते है,–

(जवाब,) जैनका सबमें बडा सिद्धात जो अहिंसा परमो धर्म है, यह बहुत ठीक है, और जैनमजहबके धर्मशास्त्र मासखाना मना

फरमाते है, अगर किसी जैनने खाया तो उसकी मरजीकी बात है, मगर जैनशास्त्र मांसखानेका हुकम देते नही, लालाजी लिखते हैं, बौधलोग मृतपशुका मांस खाना निषेध नही समजते, बौधलोग चाहे निषेध न समजे, मगर मांस खाना पापका सबब है, जैसा अपना जीव है, वैसा पशुओंकाभी जीव है, उनको इजा पहुचानेसे तकलीफ होती है, इसलिये जैनलोग मांसखाना मंजुर नही रखते,

फिर भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेके पृष्ठ (१३१) पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी इस मजमूनको पेश करते हैं, जैनोका सबसें बडा नैतिक सिद्धांत अहिंसा है, इस सिद्धांतको जैनोंने चरमसीमातक पहुंचादिया है, यहांतक कि–कुछ लोगोंकी दृष्टिमें जैन होना पहले दर्जेकी कायरता है,–

(जवाब) कायरता नही, बल्कि ! शूरवीरता है, दुसरेके जीवको बचानेके लिये अपने जीवको तकलीफ देना कुछ सहज बात नही, इसलिये शूरवीरता है, ऐसा कहना चाहिये, दुसरे लोग जैनोंको कायर समजे तो जैनोंका क्या नुकशान है, जिसके दिलमे जो बात बैठे वो माने, जैनलोग किसीको जोराजोरी फर्ज नही डालते आप-लोग जैनधर्म मानो. जिसको पसंद हो, माने, नापसंद हो न माने, जैनशास्त्र ऐसा नही फरमाते तुम तुमारा बचाव मत करो, और गुनहगारोको शिक्षा मत दो, लेकिन ! विना गुन्हा किसीकों तकलीफ मत दो, जैनशास्त्र अर्हन्नीतिमें बयान है, राजा अपने प्रतिपक्षीयोंके सामने लडाई किसतरह लडे, व्यूहरचना कैसे करे ! और अपने सैन्यका पडाव किस जगहपर डाले ? जब शत्रु अपने राज्यपर चढाई करे तो अपने बचावके लिये युद्ध करे, मगर विना सबब किसीको तकलीफ न दे, अर्हन्नीति जैनाचार्य हेमचंद्रसूरिकी रचित है, और बंबई अहमदाबाद वगेरा शहरोमे जैन बुकसेलरोंके पास मिलती है,–

दुसरा सबुत जैनशास्त्र आवश्यकसूत्रके अवल अध्ययनमें बयान है, चेडा नामका राजा जो बारांव्रतधारी जैन श्रावक था, और विशालानगरीके तख्तपर अमलदारी करता था, उसने राजगृहीके नगरीके कौणिकराजाके सामने विशाला नगरीके मेदानमें क्षत्रियधर्मकी रक्षाके लिये युद्ध किया, सबुत हुवा, जैनमजहब किसीको कायर बनाता नहीं, मगर अपने बचावके वख्त शूरवीरता दिखलानेको फरमाता है, कोई राजा महाराजा हो, दिवान हो, या न्यायाधीश हो, न्याययुक्त कायदेसें गुनहगारको शिक्षा दे, अपनी तर्फसे रागद्वेषमें पडकर बेइन्साफ न करे तो उनको शिक्षादेनेमें पाप नही, अधर्मको न रोके तो धर्मकी रक्षा कैसे हो ?–

आगे भारतवर्ष इतिहास भागपहलेके पृष्ठ ( १३१ ) पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी लिखते हैं, जैनका आचारदर्शन त्यागके अंगमें बहुत उंचा है, उसके अनुसार पुरापुरा काम करना मनुष्योंके लिये असभव है, इसलिये जैनधर्मका प्रभाव मनुष्यप्रकृतिपर ऐसा पडता है कि–उससे मनुष्य जीवनके साधारण संग्रामके लिये निर्बल होजाते है, एक ओर तो जैनसाधु उच्चकोटिके संसारत्यागी है, दुसरी ओर जैनजनता क्षुद्र जीवोंकी तो रक्षा करती है, परतु मनुष्योंके शाथ उनका बरताव बडीही निर्दयताका होता है, शायद असाध्य आचार शास्त्रपर बल देनेकाही यह परिणाम है.–

( जवाब. ) जैनोंका आचारदर्शन असाध्य नही, त्यागके बारेमें जैनोंका आचारदर्शन उंचा है, यह बात श्रीयुत लालाजीने जैसी देखी होगी वैसी लिखी होगी, जैनशास्त्रके फरमानपर रहकर काम करना कोई असभव नही, और वे निर्बलभी हो नही सकते, जैनलोग छोटे जीवोंकी रक्षा करते है, और बडे जीवोंकीभी रक्षा करते है, गरीबोंको खानपान देते हैं, बीमारोंको दवादेनेकी मदद करते हैं, और विना आश्रयवालोंको आश्रय देते हैं, दुष्कालके वख्त चदा करके गरीबोंको अनाज वगेरोंकी मददमे हजारो रुपये

खर्चते हैं, फिर मनुष्योंके शाथ, जैनोंका निर्दयताका वरताव कैसे कोई सबुत कर सकते हैं, हिंदके कई शहरोंमें जानवरोंकी पिंजरा-पोल वनीहुई है, उनमें छोटे वडे सब तरहके जीवोंकी रक्षा होती है, जीवदयाके चंदेमें जैनलोग मुताविक अपनी हेसियतके अछी रकम देते हैं, मनुष्योंके शाथ जैनोंका वरताव निर्दयताका नही, किसी जैनने किसीके शाथ निर्दयताका वरताव किया हो, तो तमाम जैनकोंमपर वो वात नही उतर सकती, जैनशास्त्र निर्दयताका वरताव करनेको हुकम देते नही.–

फिर भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेके पृष्ठ ( १३१ ) पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी वयान करते हैं, जैन साधु–शेप समस्तसाधु संप्रदायोंकी तुलनामें अधिक सत्यवादी अधिक त्यागी और अधिक निःस्वार्थ होते हैं, जैनोंके दो प्रसिद्ध संप्रदाय है, एक श्वेतांवर अर्थात् सफेद कपडा पहननेवाले और दुसरा दिगंवर अर्थात् नंगे रहनेवाले.–

( जवाव. ) जैनमजहवमें श्वेतांवर दिगंवर दो संप्रदाय हैं, और जैनसाधु दुसरे साधुकी अपेक्षा अधिक सत्यवादी और त्यागी है, यह वात श्रीयुत लालाजीने जैसी देखी होगी, वैसी लिखी होगी,–

आगे भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेके पृष्ठ ( १३२ ) पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी इस मजमूनको पेंशकरते हैं, हिंदुधर्मपर बुधधर्मकी अपेक्षा जैनधर्मका अधिक प्रभाव पडा है, और भारतमें बौधोंकी अपेक्षा जैनोंकी संख्या वहुत अधिक है, मेरी संमतिमें बौधधर्म और जैनधर्मका सामान्यप्रभाव भारतके राज्यनीतिका अधःपातका एक कारण हुवा है.–

( जवाव. ) हिंदुधर्मपर जैनधर्मका प्रभाव ज्यादा पडा, और जैनोंकी संख्या बौधोंकी अपेक्षासें ज्यादह है, यह वात जाहिर है, इसमें कोई नयी वात नही, जैनधर्मका प्रभाव भारतके राजनीतिक अधःपातका किस कारणसें हुवा उसका खुलासा लालाजीने नही

लिखा, अगर लिखा होता तो जवाब दिया जाता, विना स्पष्ट लिखाणके जवाब कैसे दिया जाय?-

संसारकी असारतापर खयाल करना और आत्मध्यान करना हमेशा फायदेमंद है, आत्मध्यानके सामने दुनियाके पदार्थ कोई चीज नही, जिनको त्यागमार्ग अछा न लगे, और दुनियाके एश-आराम अछे लगे उनकी मरजीकी बात है, जिनको धर्म करना पसंद हो, वे धर्ममार्गपर चले, इतना कहना जरुर बनसकता है, सचे धर्मकी तलाश करना सबका फर्ज है.-

आगे भारतवर्ष इतिहास भाग पहलेके पृष्ठ (११८) पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी लिखते हैं, ये दोनों महापुरुष राजा बिंमिसारके जीवनकालमे उत्पन्न हुवे.-

(जवाब,) बिंमिसारका दुसरा नाम राजा श्रेणिक था, और वो तीर्थंकर महावीर और गौतमबुधके जमानेमें राजगृहीके तख्तपर अमलदारी करता था, अजातशत्रु राजाश्रेणिकका बेटा था, और उसका दुसरा नाम कौणिक था.-

फिर भारतवर्स इतिहास भाग पहलेके पृष्ठ (१२९)पर श्रीयुत लाला लाजपतरायजी बयान करते है, भारतमे मूर्त्तियां और मदिर सबसें पहले बौधलोगोंने बनाये, और प्रतिमापूजनका आरभभी उन्हीसें हुवा.-

(जवाब.) जैनमजहब, और वैदिकमजहब बौधमजहबसें पुराने है, और उनके शास्त्रोमे मूर्त्तिपूजा लिखी है, इससे कहा जाता है, भारतमे मूर्त्तिपूजा बौधमजहबके पेस्तरभी थी.-

जैनोके धर्मपुस्तक मागधी लिपिमे और बौधके धर्मपुस्तक पाली लिपिमें लिखे हुवे है, जैनबौधको कइ महाशय एक समजते है, मगर एक नही, गौतमबुधके वालिदका नाम शुद्धोदन, माताका नाम गौतमी, औरतका नाम यशोधरा, और बेटेका नाम राहुल था,

गौतमबुधके बडे चेले मौदगलायन, शौरिपुत्र, आनंद, देवदत्त, उपालि और अनुरुद्ध वगेरा थे, जमाने तीर्थंकर महावीरके गौतमबुध हयात थे, मगर उनका तीर्थंकर महावीरसें रुबरु मिलना हुवा नही, दोनोंके जीवनचरितमें ऐसा बयान नही आता जो मिलना हुवा हो, दोनोंके धार्मिक सिद्धांत जुदे है, किसी एक दो बातें मिली तो उससें दोनों एक साबीत नही होसकते.–

बौधमजहबके साधु लाल कपडे पहनते है, तारादेवी नामसें एक देवी बौधमजहबमें बतौर मददगारके मानी गई है, जैनमजहबमें मांसखाना मना फरमाया, बौधमजहबमें मांसखाना मना नही, बौधमजहबमें धर्म, बुध, और संघ ये तीन रत्न है, गौशाला, अभयकुमार, और अजातशत्रु वगेराके नाम बौधपुस्तकोंमें आते है, मगर यह नही आता, निर्ग्रथज्ञातपुत्र महावीर नये हुवे और नयामजहब ईजाद किया, बल्कि! गौतमबुधने अपने चेलोंको कहा है, निर्ग्रथज्ञातपुत्र महावीर जो कुछ उपदेश देते है, वो मेरे बयान कियेहुवे पांच स्कंधोंमें आजाता है,–

तीर्थंकर महावीरके चेले गौतमगणधर जुदे, बौधधर्मके गौतमबुध जुदे, वैदिकमजहबके गौतमरिषि जुदे, और नैयायिक मजहबके गौतमरिषि जुदे, है,–

[ भारतवर्षके इतिहास भाग पहलेमें श्रीयुत लाला लाजपतरायजीने जैनधर्मके बारेमें जो कुछ लिखाण कियाथा, उसका जवाब खतम हुवा. ]

| | |
|---|---|
| मुकाम–दादर, जैनमदिर, | हस्ताक्षर,–जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा,– |
| पोस्ट नबर १४, | विद्यासागर–न्यायरत्न– |
| बंबई. | मुनि–शांतिविजय.– |

## [ दरवयान जैनतीर्थ. ]



१ आम जैनतीर्थोंका शिरोताज शत्रुंजयपहाड मुल्क सौराष्ट्रमें निहायत पुराना जैनतीर्थ है, जैनमें मजकुर तीर्थ वडा मशहूर और मारुफ है, तीर्थंकर रिषभदेव महाराज यहां पूर्व ननाणुं दफे तशरीफ लाये, वडेवडे आलिशान शिखरबंद मंदिर और नव टोंके बनी हुई है, जिनमें बेशुमार दौलत सर्फ हुई है, देखनेवाले जानते होगे, पेस्तर यहां वडेवडे मुनिमहर्षियोंने ध्यान समाधि किई और मुक्ति पाये है.–

२ जिले काठियावाड मुल्क सौराष्ट्रमें गिरनार पहाड एक वडी मशहूर जगह है, इसपर तीर्थंकर नेमिनाथजीका वडा आलिशान मंदिर वना हुवा सहस्रामवन और पांचटोंकोंके दर्शन है, गिरनारकी गुफायें मुल्कोंमे मशहूर तरहतरहकी जडीबूंटीयोंका खजाना गिरनारपहाड जिन्होंने देखा होगा, व खूबी जानते होगें, इसपहाडकी दामनमे जुनागढ एक अजनवी और नायाब शहर है.–

३ पश्चिम समुंदरके कनारेपर द्वारिका नगरी, पेस्तर वडी थी, वैदिक मजहबका वडा तीर्थ है, पहले यहां जैनतीर्थभी था.–

४ मुल्ककछमें भद्रेश्वर निहायत पुराना जैनतीर्थ है, गांव भद्रेश्वर छोटा मगर तीर्थकी वजहसें मशहूर है, मंदिर बावन जिनालयका आलिशान बनाहुवा, इसमें तीर्थंकर महावीरस्वामीकी मूर्त्ति बतौर मूलनायकके तख्तनशीन है, सालमे दो दफे यहां यात्रीयोंका मेला भरता है.–

५ मुल्क कछमे दुसरा जैनतीर्थ घृतकल्लोल पार्श्वनाथजीका सुथरीगावमें मौजूद है, यहांपर सालमे एक दफे यात्रीयोका मेला भरता है.–

६ मुल्क गुजरातमें शंखेश्वर पार्श्वनाथजीका निहायत पुराना जैनतीर्थ गाव शखेश्वर छोटा मगर तीर्थकी वजहसें नामी है, यहां

वडा आलिशान जैनश्वेतांवर मंदिर वनाहुवा और इसमें तीर्थंकर शंखेश्वर पार्श्वनाथजीकी निहायत पुरानी जिनमूर्त्ति वतौर मूलनायकके तख्तनशीन है.—

७ मुल्क गुजरातमें अणहिल्लपुरपाटन जिसमें पंचासराजीका नेश कीमती मंदिर वना हुवा. औरभी कई जैनश्वेतांवरमंदिर और जैनपुस्तकालय यहांपर मौजूद है, जिनमें ताडपत्रपर लिखेहुवे जैनपुस्तक रखे हुवे है.—

८ तीर्थ भोयनीजीमें तीर्थंकर मल्लिनाथजीका नया तीर्थ संवत् (१९३०) के अर्सेमें मशहूर हुवा, केवलपटेलके खेतमें कुवा खोदते-वख्त तीर्थंकर मल्लिनाथजीकी मूर्त्ति जमीनमेसें निकसी, भोयनी गावमें वडा मंदिर वनाया गया. संवत् (१९४३)में प्रतिष्ठा हुई, और यात्रीयोंकी आमदरफतसें तीर्थ मशहूर हुवा.—

९ मुल्क गुजरातमें गांव खेरालुके नजदीक तारंगापहाडपर राजा कुमारपालका तामीरकरवाया हुवा, अजितनाथजीका मंदिर मशहूर जैनतीर्थ है.—

१० आवुरोड टेशनसें खुश्की रास्ते आरासणतीर्थ जिसको आजकल कुंभारियाजी तीर्थ बोलते है, पुराना जैनतीर्थ है, यहां वडेवडे पांच आलिशान जैनश्वेतांवर मंदिर वनेहुवे और तीर्थंकर नेमिनाथजीके मंदिरके पिछले पासे दिवारमें गजथर लगा हुवा है.

११ आवुपहाडपर देलवाडेमें विमलशाहशेठ और दिवान वस्तुपाल तेजपालके तामीर करवाये हुवे वडे कीमती जैनमंदिर खडे है, इनमंदिरोंकी शिल्पकारी मुल्कोंमे मशहूर जिन्होने देखे होगें वखूवी जानते होगें, अचलगढमें राजा कुमारपालके वनायेहुवे मंदिरमेंभी गजथर लगा है.—

१२ मुल्क मारवाडमें करीव पिंडवाडे टेशनके वंभणवाड एक स्थापना तीर्थ है, और इसमें तीर्थंकर महावीरस्वामीकी मूर्त्ति तख्तनशीन है.—

१३ मुल्क मारवाडमें रानी टेशनसें आगे ( २० ) कोशके पंचतीर्थी नामसे पांच तीर्थ मौजूद है, १ वरकाणाजी, २ नाडोल, ३ नाडलाई, ४ घाणोराय, और ५ रानकपुर, इनमें रानकपुर तीर्थका मंदिर एक वडी कारिगिरीका नमुना है.–

१४ मुल्क मारवाडमें वालोतरा टेशनके करीब नाकोडा पार्श्वनाथजीका तीर्थ वडा नामी है, पालीटेशनसें लुनी जंकशन होते हुवे जव वालोतरा टेशन पहुचे तो मजकुरतीर्थ वहासे थोडी दूरपर मिलेगा.–

१५ मुल्क मारवाडमें जोधपुरसें आगे ओशिया नगरी जैनका पुराना तीर्थ है.–

१६ मुल्क मेवाडमे चितोडगढ पुराना जैनतीर्थ है, किला इसका वडा संगीन पेस्तर इसमें वहुतसें जैनमंदिर थे, अब विरान पडे है.–

१७ मुल्क मेवाडमे उदयपुरसे वीस कोशके फासले केशरियाजीका तीर्थ धुलेवागांवमें आवाद है, यहांपर केशरियाजीका आलिशान जैनमंदिर बनाहुवा और इसमें तीर्थंकर रिषभदेवकी निहायत पुरानी मूर्त्ति तख्तनशीन है, इसपर केशर ज्यादा चढायाजाता है इसवजहसें इसका नाम केशरियाजी तीर्थ मशहूर हुवा, हरसाल चैतवदी अष्टमीके रौज यहांपर यात्रीयोंका मेला भरता है और वडा जलसा होता है,–

१८ शहर उदयपुरके पास करेडा पार्श्वनाथजीका तीर्थ है, यहांपर वडा आलिशान जैनश्वेतांवरमंदिर और धर्मशाला वनीहुइ है,–

१९ मुल्क मारवाडमें करीब मेरटा रोड टेशनके फलौदी पार्श्वनाथजीका पुराना जैनतीर्थ है, सालमें एक दफे आसोजवदी दसमीके रौज यहांपर यात्रीयोंका मेला भरता है, और जलसा किया जाता है,

२० मुल्क मारवाडमे जेशलमेर पुराना जैनतीर्थ और वडा जैनपुस्तकालय यहापर मौजूद है, जिसमे ताडपत्रपर लिखेहुवे जैनपुस्तक रखे है,–

२१ मीरट टेशनसें (१८) कोशके फासले खुश्की रास्ते हस्तिनापुर तीर्थ जहां तीर्थंकर रिषभदेव महाराजको श्रेयांस कुमारने इक्षुरसके एक घडेसें वार्षिक तपका पारना करवाया था, वडा पुराना जैनतीर्थ है, जैनश्वेतांबरमंदिर और धर्मशाला यहांपर बनीहुइ है,–

२२ मुल्क पंजावके जालंधरविभागमें कांगडा एक पुराना शहर है, पेस्तर यहां जैनतीर्थ था, हालमें नहीरहा,–

२३ मुल्क पंजाबमें लालामुसाजंकशनसे आगे मुल्कोवालके करीब भेंरा टेशन जिसको जैनशास्त्र आवश्यकसूत्रवृत्तिमें वीतभयपत्तन लिखा, यहांपर पुराना जैनतीर्थ था, जमाने हालमें नहीरहा,

२४ हाथरसजंकशनसें आगे कायमगंजटेशनसे तीन कोशके फासले खुश्की रास्ते कंपिलपुर पुराना जैनतीर्थ है, तेरहमे तीर्थंकर विमलनाथजीकी जन्मभूमि यही कंपिलपुर हैं, यहांपर तीर्थंकर विमलनाथजीका मंदिर और धर्मशाला बनीहुई मौजूद है,–

२५ सूरसेनदेशकी राजधानी मथुरानगरी यमुनाकनारे एक पुराना शहर है, और वैदिक मजहबका वडा तीर्थ है, पेस्तर यहां जैनतीर्थभी था, अब नही रहा, सिर्फ १ महोले घिया मंडीमें एक जैनश्वेतांवरमंदिर बनाहुवा कायम है,–

२६ सिकोहाबाद टेशनसें सात कोशके फासले यमुनाकनारे शौरीपुर निहायत पुराना जैनतीर्थ है, तीर्थंकर नेमनाथ महाराजकी जन्मभूमि शौरीपुर पेस्तर वडाथा, आजकल छोटा रहगया, इसको बटेश्वरभी बोलते है, यमुनाकी बिहडमें एक उंची पहाडीपर पाच जैनश्वेतांबरमंदिर बने हुवे है, एकमें तीर्थंकर नेमनाथजीके चरण जायेनशीन है, और चार-खाली पडे है, कोई जैनश्वेतांबर श्रावक यहांपर आबाद नही,–

२७ फैजाबाद जंकशनसे आगे सोहावल टेशनसें पौनकोसके फासलेपर रत्नपुरी तीर्थंकर धर्मनाथ महाराजकी जन्मभूमि पेस्तर वडी आवाद थी, अब छोटी रहगई, यहांपर जैनश्वेतांवरमंदिर और धर्मशाला बनीहुई है,–

२८ सोहावल टेशनसे आगे सरयू नदीके कनारे अयोध्या एक पुराना जैनतीर्थ है, जैनशास्त्रोंमें जो विनीतानगरी कोशलापुरी और साकेतपुर लिखा इसी अयोध्याके नाम है, यहांपर महोले कटडेमें जैनश्वेतांबरमंदिर और धर्मशाला बनीहुई है, वैदिक मजहबवालोंकाभी यहां बडा तीर्थ है,–

२९ अयोध्यासे उत्तर पश्चिमकी रुखपर गोंडा जंकशनसें आगे बलरामपुर टेशनसें सातकोशके फासलेपर खुश्की रास्ते सावथ्थी नगरी पुराना जैनतीर्थ है, तीर्थंकर संभवनाथ महाराजकी जन्मभूमि सावथ्थी पेस्तर बडी आबाद थी, आजकल खडहेर पडे है, और इसको सहेटमहेटका किला बोलते हैं, पेस्तर यहां संभवनाथ महाराजका जैनतीर्थ था, अब विरान होगया, सिर्फ! क्षेत्रस्पर्शना बाकी है,–

३० कानपुरसे रैलरास्ते इलाहाबाद जाते भरवारी टेशनसें करीब दश कोशके फासलेपर खुश्की रास्ते कोशांबी नगरी पुराना जैनतीर्थ है, छठे तीर्थंकर पद्मप्रभुकी जन्मभूमि कोशांबी पेस्तर बडी आबाद थी, आजकल बहुत छोटासा गांव रहगया, और इसका नाम कौसंबपाली मशहूर है, तीर्थंकर पद्मप्रभुका यहां जैनतीर्थ था, अब विरान होगया, सिर्फ! क्षेत्रस्पर्शना बाकी है, जमाने हालमे यहां न कोई जैनश्वेतांबरमंदिर न जैनश्वेतांबर श्रावकोकी आबादी है,–

३१ गंगाकनारे बनारसी नगरी, सातमे तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ, और तेइसमे तीर्थंकर पार्श्वनाथकी जन्मभूमि जैनतीर्थ है, वैदिक मजहबका यहा बडा तीर्थ है, संस्कृत विद्याकी तरक्की यहांपर हमेशासे होती चलीआई, और अबभी है,–

३२ बनारस केन्टोन्मेंट टेशनसें छोटी रैलवेलाइनमे सारनाथ टेशनसे आगे एक मिलके फासलेपर सिंहपुरी नामका जैनतीर्थ है, ग्यारहमे तीर्थंकर श्रेयांसनाथ महाराजकी जन्मभूमि यही सिंहपुरी है, यहांपर जैनमंदिर और धर्मशाला बनीहुई है,

३३ बनारससे सातकोशके फासलेपर गंगाकनारे चंद्रावती नगरी पुराना जैनतीर्थ है, आठमें तीर्थकर चंद्रप्रभु इसी नगरीमें पैदा हुवे थे, जैनश्वेतांवरमंदिर और धर्मशाला यहांपर बनी-हुई है,

३४ गया शहरसें खुश्की रास्ते करीब ( १६ ) कोशके फासले-पर भद्दीलपुर दशमें तीर्थकर शीतलनाथ महाराजकी जन्मभूमि पुराना जैनतीर्थ था, मगर अब विरान है, सिर्फ ! क्षेत्रस्पर्शना बाकी है.-

३५ नवादा टेशनके नजदीक मुल्क पूर्वकी पंचतीर्थी है. १गुणा-याजी, २ पावापुरी, ३ राजगृही, ४ कुंडलपुर, और ५ सूबेविहार ये पंचतीर्थीके नाम है, मुल्क मगधकी राजधानी राजगृही, पेस्तर बडी रवनकपर थी, यहां जैनश्वेतांवरमंदिर और धर्मशाला बनी हुई है, राजगृहीके पंचपहाड जिनपर जैनश्वेतांवरमंदिर बनेहुवे काबिल देखनेके है, पावापुरी तीर्थकर महावीरकी निर्वाणभूमिका जैनतीर्थ है, यहांपर कमलसरोवरमें तीर्थकर महावीरके बडे भाई नंदीवर्द्धनका बनाया हुवा, मदिर बहुत पुराना है, और उसमें तीर्थ-कर महावीर स्वामीके चरण जायेनशीनहै, दीवालीके रौज यहांपर जैनयात्रीयोंका मेंला भरता हैं, और निर्वाणका-जलसा होताहैं.

३६ गंगाकनारे विहारमे पटना एक अवल दर्जेका शहर और जैनतीर्थ है, यहांपर जैनश्वेतांवरमदिर और श्रावकोंकी आबादी, शहर पटनेके बहार एक कमलद्रहमें स्थूलभद्रजीकी छत्री, जियार-तगाह है,-

३७ लखीसराय जंकशनसें सेमरियाघाट दरभंगाजंकशनसें आगे सीतामढी जिसकों पेस्तर मिथिला नगरी कहतेथे, उन्नीसमे तीर्थकर मल्लिनाथ और एकीसमें तीर्थकर नमिनाथ इसीमे हुवे, जमानेहालमे यहां कोई जैनश्वेतांवरमंदिर नही रहा, पेस्तर यहां जैनतीर्थ था,-

३८ लखीसराय जंकशनसे खुश्की रास्ते करीब छह कोशके फासलेपर काकंदी नगरी, नवमे तीर्थंकर सुविधिनाथ महाराजकी जन्मभूमि जैनतीर्थ है, आजकल इसको काकंद गाव बोलते है, जैन-श्वेतांबरमंदिर और धर्मशाला यहांपर बनीहुई मौजूद है,-

३९ काकंदीसें आगे खुश्की रास्ते (९) नवकोशके फासलेपर तीर्थंकर महावीरकी जन्मभूमि क्षत्रियकुंड गांव पुराना जैनतीर्थ है. यहांपर जैनश्वेतांबरमंदिर और धर्मशाला बनीहुई, ज्ञातवनखंड उद्यान जहा तीर्थंकर महावीरने दीक्षा इख्तियार किई थी, इसी क्षत्रियकुंड गावके बहार थोडी दुरपर है, वसी मेंदान और बडेबडे द्रख्त यहांपर खडे है,-

४० भागलपुर टेशनसें आगे खुश्की रास्ते करीब चारकोशके फासले चंपापुरी बारहमें तीर्थंकर वासुपूज्य महाराजकी जन्मभूमि पुराना जैनतीर्थ है, जैनश्वेतांबरमंदिर और धर्मशाला यहापर तामीर है,-

४१ समेतशिखर तीर्थ जानेवाले यात्रीको गिरिडी टेशन या गया लाईनसे इसरी टेशन जाना, गिरिडी टेशनपर जैनश्वेतांबरमंदिर और धर्मशाला बनी हुई, यहांसे खुश्की रास्ते पांचकोशपर आगेको जानेसें रिजुवालुका नदी कनारे जहां तीर्थंकर महावीरस्वामीको केवलज्ञान पैदा हुवा था, बराकड नामका गाव आबाद है, और यहांपर जैनमंदिर और धर्मशाला बनीहुई है,-

४२ रिजुवालुका नदीसे आगे करीब चारकोशके फासलेपर समेतशिखर पहाडकी तराइमे मधुबन एक उमदा जगह है, और वहापर दश जैनश्वेतांबरमंदिर और बडी बडी जैनश्वेतांबरधर्मशाला बनीहुई है, जैनश्वेतांबर कोठी और तीर्थका कारखाना मौजूद है, मधुबनसे समेतशिखर पहाड शुरू होगा, गंधर्वनाला, सीतानाला, जलके झरने और तरहतरहके द्रख्त, जडीबुटीयें यहापर मौजूद है, समेतशिखर पहाडपर बीश तीर्थंकर मुक्ति पाये, उनकी टोंके चरणपा-

दुकाकी छत्रीयें बनीहुई, पहाडके सीरेपर एक आलिशान जैनश्वेतांबरमंदिर जगत्शेठका बनायाहुवा खडा है, जिसको जलमंदिर और धुमटका मंदिरभी बोलते है, इसमें तेइसमें तीर्थंकर सामलिया पार्श्वनाथजीकी मूर्ति तख्तनशीन है, समेतशिखर तीर्थकी जियारत करके यात्री शहर कलकत्ता और मुर्शिदावादकी जियारत करे, जहां बडेबडे आलिशान जैनमंदिर बनेहुवे है,—

४३ मध्यप्रदेशमें वर्धा जंकशनके आगे भांडक नामका एक जैनतीर्थ है. पेस्तर यहां भद्रावती नगरी आबाद थी, यहांपर जैनश्वेतांबरमंदिर और धर्मशाला बनीहुई है,—

४४ मुल्क विरारमें आकोला टेशनसे खुश्की रास्ते बाईस कोसके फासलेपर कस्बे सीरपुरमें तेइसमें तीर्थंकर अंतरिक्ष पार्श्वनाथजीका पुराना जैनतीर्थ है,—

४५ (अष्टापद तीर्थ जोकि—मुताबिक जैनशास्त्रके फरमानसे
वैताढ्य पर्वतके दखनमें वाके है, आजकल वहां कोई
जासकता नही,—)

४६ मुल्क मालवेमें महु छावनीसें (२०) मीलके फासलेपर खुश्की रास्ते मांडवगढ एक पुराना जैनतीर्थ है.—

४७ मुल्क मालवेमें क्षिप्रानदीके दाहने कनारे उज्जेन एक पुराना शहर है, यहांपर अवंती पार्श्वनाथजीका जैनतीर्थ है, विक्रमादित्य इसी उज्जयिनीके तख्तपर अमलदारी करता था, बडेबडे आश्चर्योंकी भूमि उज्जयिनी नगरी इतिहासोंमे मशहूर है.—

४८ मुल्क मालवेमें मकसीजी एक मशहूर जैनतीर्थ है, मकसी नामका गांव यहांपर आबाद होनेसे तीर्थका नामभी मकसीजी कहलाया, एक बडा बुलंद शिखरबंद मंदिर मकसी पार्श्वनाथजीका और धर्मशाला यहापर बनीहुई है.—

४९ मुल्क मालवेमें करीब रतलामशहरके एक शेमलिया नामका जैनतीर्थ है.—

५० मुल्क मारवाड कस्बे सांचोरमें तीर्थंकर महावीरस्वामीका तीर्थ है.–

५१ मुल्क तैलंगमे दखन हैदराबादके आगे आलेर टेशनसे दो कोसके फासलेपर कुल्पाकजी एक पुराना जैनतीर्थ है, यहांपर एक कुल्पाक नामका गाव आबाद है, गावके नामसे तीर्थका नामभी कुल्पाकजी मशहूर हुवा, जब मेने सवत् ( १९६५ ) मे शहर दखन हैदराबादमे बारीश गुजारी, श्रावकोंको इस तीर्थके जीर्णोद्धार करानेके बारेमे उपदेश दिया, शहर दखन हैदराबाद और सिकंदराबादके जैनश्वेतांबर श्रावकोंके शाथ मेरा जाना तीर्थ कुल्पाकजीमे हुवा, यहांपर जीर्णोद्धारके लिये चंदा किया गया, तीर्थका पुनः-उद्धार हुवा, और आजकल बडा उमदा तीर्थ बनगया है, शहर दखन हैदराबादसे बेजवाडा जानेके रास्तेमे आलेर टेशन उतरकर इस तीर्थकी जियारतको जाया जाता है.–

५२ मद्राससे (३४५) मील दुर मुल्क दखनमें शहर मदुरामें पेस्तर जैनतीर्थ था, अब नही रहा, जैनागम आवश्यकसूत्रके अवल अध्ययनकी वृत्तिमे जो दखनमथुरानगरी लिखी है, वो यही मदुरा है,–

५३ लंका टापुको शास्त्रोंमें सिंहलद्वीप लिखा, जमाने रावणके यहा एक शांतिनाथजीका जैनतीर्थ था, अब नही रहा,–

५४ मुल्क कर्णाटकमे बल्लारी टेशनसें (४१) मील दुर होस्पेट टेशनसे (७) मीलपर किष्कंधानगरी आजकल एक छोटासा कस्बा रहगया, पेस्तर बडी थी, जमाने सुग्रीवके यहांपर एक जैनतीर्थ था, अब नही रहा,–

५५ बंबई हातेके दरमयान मनमाड जंकशनसें (४६) मील दखन पश्चिमकी रुखपर नाशिकरोड टेशनसे आगे नाशिक शहर वैदिक मजहबका तीर्थ है, पेस्तर यहा आठमें तीर्थंकर चंद्रप्रभुका जैनतीर्थ था, जमाने हालमें नही रहा, दुसरे जैनश्वेतांबरमंदिर और जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी मौजूद है,–

५६ बंबईसे (२१) मील पूर्वोत्तरकी तरफ थाना एक पुराना शहर है, जमाने तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीके जब उज्जेनसे-श्रीपालजी यहां तशरीफ लायेथे यहां एक पुराना जैनतीर्थ था, जैनश्वेतांबरमंदिर और जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी इसवख्त यहांपर मौजूद है,-

५७ बंबईसे विरार टेशनके आगे पांचमील दुर खुश्की रास्ते अगासी गांव एक पुराना जैनतीर्थ है, जैनश्वेतांबरमंदिर और धर्मशाला यहांपर बनीहुई है,-

५८ शहर भरुअछमें पेस्तर वीशमें तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीके एक अश्वावबोध नामका और दुसरा शकुनिका विहार नामकाभी जैनतीर्थ था, जमाने हालमें एकभी नहीरहा, मगर तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीका जैनमंदिर और जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी.- अबभी मौजूद है.

५९ शहर अंकलेश्वरके पास झगडियागांवमें जैनका एक तीर्थ है, बडा आलिशान जैनश्वेतांबरमंदिर और धर्मशाला बनीहुई है,-

६० शहर खंभातमें स्थंभन पार्श्वनाथजीका पुराना जैनतीर्थ है, जैनश्वेतांबर श्रावकोंकी आबादी और जैनपुस्तकालयोंमें ताडपत्रपर लिखेहुवे जैनश्वेतांबर आम्नायके पुस्तक रखे हुवे है,-

६१ खंभातसे समुंदरके रास्ते सातकोशके फासलेपर कावीगंधार नामके दो जैनतीर्थ है, दोनोमे बडी लागतके जैनश्वेतांनरमंदिर बनेहुवे और गंधारमें अमीझरा पार्श्वनाथजीका मूर्त्ति अतिशय युक्त है.

६२ नजदीक अयोध्याके पुरिमताल शाखानगरमें जैनतीर्थ था, जमानेहालमें नेस्त नाबुद होगया.

६३ प्रयागमें दशमे तीर्थंकर शीतलनाथ महाराजका जैनतीर्थ था, अब नही रहा.-

६४ प्रतिष्ठानपुर जो मुल्क दखनमें पेठनके नामसे मशहूर है, विशमे तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीका यहां जैनतीर्थ था, वो बरबाद होगया.-

६५ मानसरोवरके कनारे जैनतीर्थ था, अब नही रहा ६६ कादंबरी अटवीमे और ६७ दंडकारण्यमे जैनतीर्थ थे, अब नेस्त नाबुद होगये, ६८ ताम्रलिप्ती नगरीमे जैनतीर्थ था, ६९ गंगा यमुना और सरस्वतीके संगमपर आदिक मंडल, और सतराहमें तीर्थंकर कुंथुनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थ था, फिलहाल! उसकाभी कुछ नामनिशान नही रहा.-

७० माहेंद्रपर्वतमें छठे तीर्थंकर पद्मप्रभुके नामका और छयापार्श्वनाथके नामका जैनतीर्थ था, वोभी अब नही रहा,

७१ त्रिकुटगिरि पर्वतमे सोलहमें तीर्थंकर शांतिनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थ था, वोभी बरबाद होगया.-

७२ श्रीपर्वतमें उन्नीसमे तीर्थंकर मल्लिनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थ था, वोभी अब नही रहा, ७३ माणिक्य दंडकमें विशमे तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामीके नामका जैनतीर्थ था, वोभी अब जेरे जमीन होगया, ७४ शखजिनालयमें पाताल गंगाभिध और बाइसमे तीर्थंकर नेमिनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थ था, जमाने हालमें विरान होगया.-

७५ दंडखातमें भव्यपुष्करावर्त्त पार्श्वनाथके नामका जैनतीर्थ था, वोभी नही रहा, ७६ भायलस्वामिगढमे देवाधिदेवके नामका जैन-तीर्थ था, वोभी अब नेस्तनाबुद है, ७७ रामशयनमे प्रद्योतकारि श्रीवर्द्धमानस्वामिके नामका जैनतीर्थ था वोभी अब जमीनदोस्त है. ७८ सिंहाद्रिपर्वतमे जैनतीर्थ था, वोभी अब जेरे जमीन होगया, ७९ खेंगारगढमें उग्रसेन पूजित मेदिनीमुकुट आदिनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थ था, जमाने हालमें उसकाभी कुछ सुराग नही लगता.-

८० नगरमहास्थानमें ८१ महानगरीमे, और ८२ उदंडविहारमें जैनतीर्थ थे, अब नही रहे, ८३ काशहृदमे त्रिभुवनमंगल-कलश आदिनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थ था, अब नही रहा,

८४ सोपारक पतनमें जहां राजा श्रीपालजी तशरीफ लाये थे, तीर्थंकर रिषभदेव महाराजके नामका जैनतीर्थ था, जमाने हालमें बरबाद होगया.–

८५ मोक्ष तीर्थमें ८६ बद्रीमें, और ८७ तारणमें जैनतीर्थ थे, अब नहीरहे, ८८ अगंदिका नगरीमें दुसरे तीर्थंकर अजितनाथ महाराजका, और सोलहमे तीर्थंकर शांतिनाथ महाराजका जैनतीर्थ था, अब उसकाभी नाम निशान नही, ८९ नर्मदानदीके मूलमें सेगमती ग्रामके पास चतुर्थ तीर्थंकर अभिनंदनस्वामीके नामका जैनतीर्थ था, जमाने हालमे वोभी विरान होगया, ९० क्रौंचद्वीप और ९१ हंसद्वीपमें पांचमे तीर्थंकर सुमतिनाथ महाराजकी देवपादुकाके नामका जैनतीर्थ था, वोभी अब नही रहा,–

९२ मुल्क द्राविडमें पेस्तर जैनतीर्थ था, अब नही रहा, ९३कोयाद्वारमें नवमें तीर्थंकर सुविधिनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थ था, अब उसकाभी कुछ पता नही, ९४ विंध्याचल पर्वतमें गुप्त पार्श्वनाथजीके नामका जैनतीर्थ था, बरबाद होगया, ९५ मलयागिरिपहाडमें ग्यारहमें तीर्थंकर श्रेयांसनाथजीका और तेइसमें तीर्थंकर पार्श्वनाथजीके नामका जैनतीर्थ था, वोभी नेस्तनाबुद है,

९६ द्वारवतीमें और ९७ शाकपाणिमें चौदहमे तीर्थंकर अनंतनाथ महाराजके जैनतीर्थ थे, जमाने हालमें वेंभी जेरे जमीन होगये, ९८ अजागृहमें नवनिधि पार्श्वनाथजीका जैनतीर्थ था, अब वोभी नाश होगया, ९९ करहेटकमें उपसर्गहर पार्श्वनाथ महाराजके नामका जैनतीर्थ था, वोभी अब विरान है,–

१०० अहिछत्ता नगरीमें भुवनभानु पार्श्वनाथजीके नामका जैनतीर्थ था, अब वोभी नही रहा, १०१ कलिकुंडमें तीर्थंकर पार्श्वनाथजीके नामका जैनतीर्थ था, वोभी बरबाद होगया, १०२ त्रंकार पर्वतमें सहस्रफणी पार्श्वनाथके नामका, और रोहणाद्रिमें तीर्थंकर महावीरस्वामीका जैनतीर्थ था, अब नही रहा,–

१०३ श्रीमालपत्तनमे, १०४ कुंडग्राममें, १०५ टंकास्थानमे, १०६ पुद्गपर्वतमें, और १०७ नंदीवर्द्धनकोटिभूमिमें एक एक जैनतीर्थ थे, मगर उनकाभी कुछ पता नही, १०८ तिमालमे १०९ श्वेतांबिकामे और चर्मण्वती नदीके कनारे ढींपुरीमें पेस्तर जैनतीर्थ थे, वेभी अब नही रहे.–

११० हिमालयपर्वतमे छायापार्श्वनाथ, मंत्राधिराज और स्फुलिंग पार्श्वनाथजीका तीर्थ था, १११ मुल्क नयपालमें जैनतीर्थ था ११२ मुल्क काश्मिरमें जैनतीर्थ था, ११३ कलिंगदेशमे तीर्थंकर रिषभदेव महाराजका जैनतीर्थ था, ११४ ज्वालामालिनी देवतावसरमें गणधर गौतमस्वामी प्रतिष्ठित चंद्रप्रभुका जैनतीर्थ था, ११५ मुल्क दखनमे रत्नसंचया नगरीमे आदिनाथ महाराजका जैनतीर्थ था, और ११६ तक्षशिलामे बाहुबलिनिर्मित धर्मचक्र नामका जैनतीर्थ था अब नही रहा.–

जैनागम आवश्यकसूत्रवृत्ति, विविधतीर्थकल्प और परिशिष्टपर्वके पाठसे यह बयान जैनतीर्थोका यहा लिखा है, जिनको ज्यादा खुलासा देखना हो, मजकुर शास्त्र देखे.–

हिंदमे शहर देहली, कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, बंबई, सुरत, अहमदाबाद, और अणहिल्लपुर पाटनमें जहा जैनश्वेतांबर श्रावकोकी आबादी कसरतसें है, कई श्रावकोंके घर गृहचैत्यालयोंमे माणक, पन्ना, पुखराज, निलम और स्फटिककी छोटीछोटी मगर कींमती बनीहुई जिनमूर्त्तियें मौजूद है.–

हरसाल एक जैनगृहस्थकों एक नये जैनतीर्थकी जियारतको जाना चाहिये, जिनको धर्मपर कामील एतकात नही, तीर्थोपर और मूर्त्तिपूजापर पुरा इतमिनान नही, वे लोग कहा करते है, तीर्थोंमे जानेसें क्या फायदा? जहां बेठकर ध्यान करलिया, वही तीर्थ है, मगर यह बात बहेत्तर नही. विवाह सादीके लिये और दोस्तोंको मिलनकेलिये सेकडों कोश जाना, और तीर्थ यात्राके लिये तरह तरहके

बहाने बतलाना, सौचो यह कहांतक सच है? याद रहे! तीर्थोंमें जानेसे आदमीके इरादे पाक होते है, धर्मपर अतकात बढता है, और पुन्य हासिल होता है, जो आइंदे फायदा पहुंचायगा, जिन-जिनशख्शोंकों धर्मपर एतकात नही, वे चाहे सो कहे, उनके कहनेपर अमल करना कोई जरूरत नही, धर्मशास्त्र साफ बयान करते है, अछे इरादेसें तीर्थोंमें जाना बडा पुन्य है,–

[ दरबयान जैन तीर्थोंका खतम हुवा, ]

[ जुदे जुदे कवियोंके बनाये हुवे,–]

( उपदेशिक पद. )

१ ( रागिनी भैरवी तीनताल. )

नवरीया मेरी कौनउतारे पार, नवरीया मेरी, ए टेर.
यो संसार समुद्रगंभीरा, किसविध उतरु मे पार, नवरीया मेरी. १
रागद्वेप दोनु नदीया वहत है, भमर पडत गतिचार, नवरीया मेरी.२
रिखबदासकों तार्यो चाहिये, ये विनति अवधार, नवरीया मेरी. ३

२ ( उपदेशिक पद कमाच. )

दिननीके बीते जाते है, दिननीके, ए टेर.
समरन करलो प्रभुके नामका, और विषयका तजो काम,
तेरे संग न चलेगा एक दाम, जो देतेहै सो पातेहै, दिननीके. १
कौन किसीका पुत्र अवारा, तुत किसके और कौन तुमारा,
किसके बल प्रभुनाम विसारा, सब देखतहीके नातेहै, दिननीके. २
लाख चोरासी फिरके आया, बडे भाग्य मानवभव पाया,
तापरभी कछु करी न कमाइ, फिर पिछे पस्तातेहै, दिननीके. ३
जैसे पानी बीच पतासा, जीव फसाहै मोजकी आशा,
क्या देखे स्वासोंकी आशा, गये हाथ नही आतेहै, दिननीके. ४

३ ( रागिनी भैरवी तीनताल )

नहीएसो जनम वारवार, नही, ए टेर,
आरजदेस उदार नरभव उत्तम कुल अवतार,
दीर्घआयु शरीर सुंदर, सुखसंपत दातार, नहीएसो. १
वीतरागसो देव पायो गुरु गिरुवो अनगार,
जैनधर्म सुसाधु संगत महामंत्र नवकार, नहीएसो. २
सदा सूत्रसिद्धात सुनवो करो तत्वविचार,
तपजप संयम दानपूजा जीवदया उपकार, नहीएसो. ३
कहां एसो ज्ञान निर्मल कहा एसो आचार,
कहां एसी धर्मकरनी अवर जन्म मझार, नहीएसो. ४
फेर एसो कहां अवसर पायवो संसार,
हर्षचद कहे चेत चेतन जिमपामो भवपार, नहीएसो. ५

४ (भैरवीकी ठुमरी.)

तनका तनक भरोसा नाही किसपर करत गुमानारे, ए टेर.
अंजलिजलज्यूं आयु घटत है, पानी बीच पतासारे, तनका. १
पेंड पेंडपर तकत फिरतहै, कालकी चोट निशानारे, तनका.२
कहेत बनारसी सन जीवनते जीयरा यूंही जानारे, तनका. ३

५ (भैरवी दादरा )

मेरी नवरीया पार लंघा, ए टेर.
सागर गहेरो नाव पुरानी सुझत वार न पार लंघा, मेरी. १
पुन्य वल्ली न लगाये लगतहे, पापभार अधिकार लघा, मेरी. २
अवगुन छोर और मेरी लख अजाद होकर पारलंघा, मेरी. ३

६ ( झींझोटी )

गफलतमें सारी उमरगइ कारजकी सिद्धि कछु ना जो भइ, गफलतमें.
काल अनादि सुखदुखमे खोया मोह निद्रामे शुद्ध ना जो रही,गफलतमे.
ज्ञानदयासिंधुने अपने कारज हितकी वातकही, गफलतमे. २
गइसो गइ अब राख रहीको अवसर देख विचारो सही, गफलतमें. ३

तज प्रमाद् अप्रमत होयके मुगतपुरीकी राह ग्रही, गफलतमें. ४
दासचुनी सद्गुरु सचेकी आज्ञा सिरपर धारलही, गफलतमें. ५

७ ( उपदेशिकपद झींझोटी )

कुमतप्रीतके सतायेहुवे है विषयभोग धोखेमें आयेहुवे है, कुमत.
शुद्धहे न तनकी न वतनकी खवरहे,
फिरे जावो द्रव्यउठाये हुवेहै, कुमत. १
कभी नर्कमें हम कभी स्वर्गमें हम
अरहटकी तरहसे घुमाये हुवेहै, कुमत. २
यही हालत होगई मगर दिल वदिलकी
दुवारा विषयको बढाये हुयेहै, कुमत. ३
कभी तो कभी हम मिलेगें सुमतसे
वही लौ प्रभुसे लगाये हुवेहै, कुमत. ४
पिता पुत्र भाइसे जाहिर जुदेहै,
नही संग आये न जाये हुवेहै, कुमत. ५
कोइ न हमारा हम न किसीके
हजारोदफे अजमाये हुवेहै, कुमत. ६
अब तू सौचकरे मतकुंदन
किसी दिन मतलव वनाये हुवेहै, कुमत. ७

८ ( उपदेशिक पद कमाच )

दुर्मति डारदे मेरे ग्रानी, ए टेर.
जूठी सब संसारकी माया, जूठी गरव गुमानी, दुर्मति. १
आप न बुझे मोह नींदसे, डोले जिव अज्ञानी, दुर्मति. २
वीतराग दुख डारण दिलमें, विनय जपो शुद्धज्ञानी, दुर्मति. ३

९ ( वीतराग स्तुतिपद कमाच. )

आज दुविधा मेरी मिटगडरे वीतरागका दरसदेख दुविधा, ए टेर.
अष्टद्रव्य लही पूजन आयो मनमे आनद हर्ष बढायो,
मे जिनवानी कानेसुनी दुर्गत मेरी मिटगइरे, वीतराग. १

रसना सफल भइ अब मेरी भक्ति उचार करी प्रभुतेरी,
अब छायी आनंदकी घटा तृसना मेरी मिटगइरे, वीतराग. २
अब मे जन्म कृतारथ मान्यो गोपदतुल्य भवोदधि जान्यो,
अब पाइ मुक्तिकी डगर कलमल मेरी मिटगइरे, वीतराग. ३
जब लगे मुक्ति न आवे नेरे तब लगे भक्ति बसो उर मेरे.
तेरी छबी चदनके हृदे तनमनसे लिपट रहीरे, वीतराग. ४

१० (उपदेशिकपद कमाच,)

विषयोंके नेडे मत जाओरे सुज्ञानी जियारे, ए टेर.
इन विषयनसें बहुदुखपायो, फिर क्यों सेवा चाहो, सुज्ञानी. १
इन विषयनसे रावननेभी, नरकनके दुख पायो, सुज्ञानी. २
होइ अभय निर्भय पद पावो, तासे शिवपुर जावो, सुज्ञानी. ३

११ (शतरजके खेलपर पद, कमाच, ताल तीताल,)

हे! शतरज खेल खेलारी,
सब समज देख शतरजकी बात,
लख दोउ दल अपने परायकी जात,
काहुविधकर मोह बादशाहको मात,
जब जानु तोहेचतर खेलन खेलारी, हे! शतरज खेल खेलारी, ए टेर.
आठो कर्मके पियादे आगे झुकतेही आवे,
कामक्रोध गज चलत थंभत नही थांभे,
लोभ उंठ चारों खूटकी भरोर कर ध्यावे,
मान मायाके तुरग चाल चपल दिखावे,
मिथ्यामदसो वजीर वीर वाके ढिंग ठाडो,
वाके मारवेकों दल अपनो सवार, हे! शतरज खेल खेलारी. १
तेरो ज्ञानसो वजीर वीर तेरे ढिग ठाडो,
आठो अगसमकीतके पियादे हलकारो,
त्याग सांढणी सवार परसांढणीपे डारो,
सत्यवचन तुरगसे तुरगको निवारो,

क्षमाशील दोय पील राखो दलके अगाडी,
परदल करडारो छिनमें संहार, हे! शतरंज खेल खेलारी. २
तप जप सतव्रत वाके घेरे चिंहु और,
जबवाके चलनेको कहु रहे न ठोर,
जब तेरी होगी, जीत दुजो हारेगो खेलारी,
तब सुयशको तेरे सिरबंधेगो मोड,
ठाडे इंद्र धरणेंद्र तोरे ढोंलगें चोंवर,
तेरो भजन भजेगो गुण अथाह, हे! शतरज खेल खेलारी. ३

१२ (जिलेकी ठुमरी,)

निठुर नेमपिया गये गिरनारीरे, वर शिवरमणी मोहे विसारीरे, निठुर.
अष्टभवांतर प्रीतपुरानी, नवमेंभव पिया तुमने निवारीरे, निठुर. १
मुज अवलाकों दूरकरीने पशुवनपर तुमकरुणा विचारीरे, निठुर. २
सहसा बन जाइ संयम लिनो, पंचमहाव्रत भये तपधारीरे, निठुर. ३
नेम राजुल दोय मोक्षसिधायें, पहेली नेमप्रिया निजतारीरे, निठुर.४
नेमपियाजी मोक्ष महेलमें पद्मोदयको हर्ष हजारीरे, निठुर. ५

१३ (ठुमरी,)

वारी जाउंरे सामरिया, तुमपर वारनारे, वारीजाउंरे, ए टेर.
समुद्र विजयराजाके नंदा, शौरीपुर सोहे सुखकंदा,
शिवादेवीके घरमे झुले पारनारे, वारीजाउंरे. १
श्रावणसुदी पंचमी दिन जाये, छपनदिगकुमरी हुलराये,
इंद्रादिक सब हर्ष बढाये, गीत सोहावनारे, वारीजाउंरे. २
दीक्षा ले प्रभु केवलपाये, अष्टकरमको दूर हठाये,
रैवाचलपर मुक्ति सिधाये, गमन निवारनारे, वारीजाउंरे. ३

१४ (इसीचालपर दुसरी ठुमरी)

तनमन सारेजी सावरिया, तुमपर वारनारे, ए टेर.
बालापनमें कमठ निवार्यो, अगनी जलंतो नाग उवार्यो,
वेरी कर्मन मार्यो तपबल धारनारे, तनमन सारेजी. १

जीवाजीव दरब बतलाये, सब जीननके भरम मिटाये,
शिवमारग दरसाये दुख परिहारनारे, तनमन सारेजी. २
स्याद्वादशतभंग सुनाये, नय परमाण निश्चय करवाये,
जूठे मतकिये खंडन, सतको धारनारे, तनमन सारेजी. ३
न्यामत जिन पारस गुन गावे, पुनपुन चरनन शिशनमावे,
वीतराग सर्वज्ञ तूंही हित कारनारे, तनमन सारेजी. ४

१५ ( माढकी ठुमरी )

लगे छब नीकी यामे भरभर दग निरखुं, लगे, ए टेर.
सिद्धारथ त्रिशलाके नदन, पूजत हिये हरखु,
अन्यदेव तजसब चरनन निज तुमसे प्रेमरखु, लगे. १
अष्ट द्रव्यशुचि हेम थालभर, झारी जल झरखुं,
सुरधरगान नाटक नानाविध, सकल अंग फरकु, लगे. २
वसुविध भवभवमे दुखदाइ, या भयते लरकुं,
श्रीजिनराज रतनचिंतामण याचक फल परकु, लगे. ३

१६ ( उपदेशिकपद काफी ताल दीपचदी )

कोइ काल न जीता, काले सकल जग जीता,
अकसमात यम आन फिरेगो जैसे मृगपर चीतारे, कोई. १
शूरवीरभर महाबलयोद्धा ते सब वश कर लिता,–
ताको डर राखत नही कबही या देखी विपरीतारे, कोई. २
जूठीमायासे लोभाया मानरहा अपनीता,
देइ चपेट घर छाडचलेगो, हाथ झुलावतरीतारे, कोई. ३
इनसेती जीते नरदेही भये मुक्तिका मीता,
वारवार विनवे करजोडी नवल प्रेमरस पीतारे, कोई. ४

१७ ( उपदेशिकपद कमाच )

प्राणी मेरो ! चिदानंद अविनाशी, प्राणीमेरो, ए टेर.
कोर मरोड करमकी मेटे, सहज स्वभाव विलासी, प्राणीमेरो. १

पुद्गल खेल मेल जो जगको, सोतो सबहै लत्रासी, प्राणीमेरो.
चिन्मूरत चैतनगुन चिने, साचा सोसन्यासी, प्राणीमेरो. २
नामवेश किरियाकों सबही देखे लोक तमासी,
गुणपर्याय द्रव्य तूं अपनो जागे जोग उदासी, प्राणीमेरो. ३
दूरदिवाने केतेक दोडे मति व्यवहार प्रकासी,
अगम अगोचर निश्चयनयकों दोरी अगम अगासी, प्राणीमेरो. ४
नानाघटमें एकपिछानो आतमराम तपासी,
भेद कल्पनामा जडभूल्यो लुब्ध्यो तृसनादासी, प्राणीमेरो. ५
परमसिद्धि नवनिधि हे घटमे क्या ढुंढत जाय कासी,
यश कहे शांत सुधारसचाख्यो पूरन ब्रह्म अभ्यासी, प्राणीमेरो. ६

१८ ( उपदेशिकपद रागिनी भैरवी. )

जिया तूं अमत सजीव अकेला, कोइसंग न साथीतेरा, जियातूं एटेर
अपना सुखदुख आपही भोगे, होत कुटुंब नही मेला,
स्वारथभये सब विछड जात है, विछड जात ज्यूं मेला, जियातूं. १
तनधन योवन थीरमत जाने, इंद्रजालका खेला,
फुटतपाररुके नही जेसा, दुर्धर जलका ठेला, जियातूं. २
पूरनभये कोइ राखसके नही, आवे अंतकी वेला,
भागचद यूं लखकर भाइ, होसतगुरुका चेला, जियातूं. ३

१९ ( कवाली )

जिनके हृदेसमकीत नही, करनी करी तो क्याकरी, ए टेर.
षट्खंडकों स्वामी भयो, ब्रह्माडमेनामी भयो,
दिये दान चारप्रकारके, रक्षा करी तो क्याकरी, जिनके. १
तिलतुप परिग्रह तजदिये, उग्र जपतप व्रतकिये,
पालीदया षट्कायकी, दीक्षा धरी तो क्या धरी, जिनके. २
गुरुमुनका कहना और है, दगसुख विना दुख ठोर है,
विन मूल तरुवर फुलफल, इछाकरी तो क्या करी, जिनके. ३

२० ( कालिंगडा )

समकीत विन फल नही पाओगे, सरधाविन, ए टेर.
चाहे निरजन वनतप करलो, विन समता दुख दाहोगें, समकीत. १
मिथ्यामारग निशदिन सेवो, केसे मुक्ति पाओगे ?, समकीत. २
पथ्थर नाव समुंदर गहेरा, केसे पार लंघाओगे, समकीत. ३
जूठे देवगुरु तज दिजे, नही आखिर पस्ताओगे, समकीत. ४
न्यामत स्याद्वाद मनलाओ, यासे मुक्ति पाओगे, समकीत. ५

२१ ( ठुमरी )

नींद उचट गइ सगरी मोहकी, मूरत निरखी शामरी, ए टेर,
नेमीश्वरके पद फरसतही, पाओ मे विसरामरी, नींद उचट गइ. १
ध्यानारूढ निहार छबीको, छुटत भव दुख धामरी, नींद उचटगइ.२
मुनिजन याको ध्यान धरतनित, पावत आतमरामरी, नींद उचटगइ.३

२२ ( माढकी ठुमरी )

मानोना चेतनजी महारी बात,छांडो छांडोरे कुमतिकेरो साथ,मानोना.
कुमति तोहे दढावत कुडी, ताते जग भरमात, मानोना. १
जासग दुख सहे भवभवमें, तासंग फिर क्यौं जात, मानोना. २
चेतनज्ञान समजघर आवो, तासे तुम सुखपात, मानोना. ३

२३ ( सद्गुरु स्तुतिपद सोरठ )

वरसत वचन झरी सुगुरु मेरे ! वरसत वचन झरी,
श्रीश्रुत ज्ञानगगनते उलटी, ज्ञान घटा गहरी, सुगुरुमेरे. १
स्याद्वादनय विजरी चमकत देखत कुमति डरी,
अरथविचार गुहर ध्वनि गर्जत, रहत न एक घरी, सुगुरु मेरे. २
सरधानदी चढी अतिजोरे, शुद्धसभाव धरी,
सुभरभर्यो समतारससागर समकीतभूमि हरी, सुगुरु मेरे. ३
प्रकटे पुन्य अकुरे चिहु दिश पापजवास जरी,
चातक मोर पपैया भविजन, बोलत भक्तिभरी, सुगुरु मेरे. ४
दान दया व्रतसंयमखेती, भविक किसान करी,
हरखचद सुरनर शिव सुखकी, सहज सभाव खरी, सुगुरु मेरे.५

२४ (कमाच.)

एक योगी अशनबनावे, तस भखत अशन अघ नशन होत, एक,
ज्ञानसुधारस जलभर लावे चौका शील बनावे.
कर्मकाष्टकों चुन चुन वाले, ध्यान अगनि सुलगावे, एक योगी. १
अनुभव भाजन निजगुन तंदुल, समता क्षीर मिलावे.
सोहं निष्ट निशंकित व्यंजन, समकीत छौंक लगावे, एक योगी. २
स्याद्वादसतभंग मसाले, गिनती पार न वावे,
निश्चयनयका चमचा लेकर, घृत भावना भावे, एक योगी. ३
आप बनावे आपही खावे, खावत नांही अघावे,
आतमसुत भोजन अतिभावे, नयनानंद गुन गावे, एक योगी. ४

२५ (उपदेशिक पद कालिंगडेकी ठुमरी.)

कोइ पियो ! प्रभुगुन प्यासारे, कोइ, ए टेर.
या रसकारन भूप सिधायें, छोडे भोग विलासा,
आसन छांडकर खाखरमाइ, निशदिन बनमे वासारे, कोइ. १
धवलधाम तज मालखजाना, नारखे तनकी आसा,
गगनमंडलमें अमृत छाया, आठोंपहर चौमासारे, कोई. २
आनंद घन चिदानंद पिया, अध्यातमरस आया,
कहे जिनदास आस दर्शनकी, अमृत भरभर पाया, कोई. ३

२६ (उपदेशिकपद, सोरठ.)

इसतनका क्या विसवासा, जैसे पानीवीच पतासारे, इस, ए टेर.
एकदिन एसा आवेगा प्राणी, जंगल होवेगा वासा,
मृतदेहीपर हल फिरेंगा, पशु चुवनगे घासारे, इसतनका. १
जुठा तनधन जुठा जोवन, जुठा घरका वासा,
जुठा ठाठ ठठा दुनियामें, जुठा महेल गवासारे, इसतनका. २
एकवार श्रीजिनवरजीकों, भजले नाम निराशा,
नवल कहे पल एक न विसरो, जवलगे घटमे वासारे, इसतनका. ३

२७ (उपदेशिक पद कमाच )

होनहार न टरेरे, सुनमन ! होनहार, ए टेर.
चित कछु और विचारतहै नर, और हि और वनेरें, सुनमन. १
उपर बाजअरु निचे पारधि, चिडिया केसे वचेरे, सुनमन. २
होनहार वश डस्योपारधि, शर सिंचाणो मरेरे, सुनमन. ३
होत पदारथ भावीभैया ! क्यौं ! मनसौंच करेरें, सुनमन. ४
उदयकर्मगतदेख जगतकी, जिनवर क्यौं न भजेरे, सुनमन. ५

२८ ( कालिंगडेकी ठुमरी )

रानी त्रिशलाने देखा प्यारे चउद सुपना, रानी. ए टेर.
दीठो प्रथमगज उजलोरे दुजे वृषभमनोहार सुपना. १
तीजे सिंहज केशरीरे, चौथे श्रीदेवीमहंत सुपना.
मालयुगल फुल पाचमेरे, छठे रोहिणीकंत सुपना, रानी. २
उगतो सुरज सातमेरे, आठमे ध्वजलहकंत सुपना.
कलश पदमशर जलनिधिरे, बारमे भुवन विमान सुपना. ३
गंजरतननो तेरमेरे, चौदमे वन्हि वखान सुपना.
माता सुपन लही जागियांरे, अवधि जुवे सुरराज सुपना. ४

२९ ( गजल. )

इश्कके जख्म लगे उसका सिलाना मुश्किल,
इस चालपर

अष्टकर्म संग लगे उसका छुडाना मुश्किल,
लाख चोरासीमे नरदेहका पाना मुश्किल, अष्टकर्म. १
मोह ममताकी जडी बेंडियां पगके अदर,
सीख सद्गुरुकी विना उनका तोडाना मुश्किल, अष्टकर्म. २
गुरुका उपदेश नसीवेसें हाथ आता है,
धर्ममें प्रीत लगा ध्यान जमाना मुश्किल, अष्टकर्म. ३
कहे मुनि-शांतिविजय धर्मका बगिचा देखो,
एसा फिर तुमकों यहा दुसरा पाना मुश्किल, अष्टकर्म. ४

३० ( गुरुभक्तिपर पद-रागिनी-भैरवी. )
[ मेरुशिखर नवरावे सुरपति मेरु शिखर नवरावे,
इस चालपर. ]

श्रीविजयदेव सुरीदा परमगुरु, श्रीविजयदेव सुरींदा, ए टेर.
तपगछमांही अधिक विराजे, गुरु सेवे सुरनरवृंदा, परमगुरु. १
गुरु उपदेशी गुरुविद्याधर, गुरु सेवे होत आनंदा, परमगुरु. २
रामविजयकहे तहांलग प्रतिभा, सातसागर रविचंदा, परमगुरु. ३

[ बयान उपदेशिपदोंका खतम हुवा. ]

---

## [ पूर्णता. ]

( किताब जैनमत प्रभाकर )

१ संवत् ( १९८० ) की बारीश मेने मुकाम दादर जैनमंदिर पोस्ट नंबर ( १४ ) बंबइमें गुजारी, बादबारीशके कार्तिकसुदी पुनमके रोज दादरसें रवाना होकर मुकाम भायखाला जैनमंदिरमें तीर्थ शत्रुंजयके चित्रपटकी जियारत किइ, और वहांसे बंबई कोट लोंकागछके उपाश्रयमें जाना हुवा, वहां लोंकागछके रिषिजी मेघचंदजी ठहरे हुवेथे मिले, और ज्ञानचर्चा होती रही, किताब जैनमत-प्रभाकर यहां पूर्ण किई.–

२ जैनगृहस्थका फर्जहै, अगर अपनी ताकात हो एक नया जैनमंदिर तामीर करावे, जैन पाठशाला, धर्मशाला, या तीर्थमें कोई धर्मस्थान बनवावे, नया पुस्तकालय जारी करे, याते धर्मपुस्तक वाचकर कोइ जिज्ञासु ज्ञानका फायदा उठावे, अगर दुनिया छोडकर धर्मकरना चाहे तो दीक्षा इख्तियार करे, अगर दीक्षा इख्तियार करनेकी ताकात न हो तो घर छोडकर पिछलीउम्र तीर्थभूमिमें जाकर गुजारे, औरसाफ दिलसे धर्म करे, जिससें परलोकका रास्ता साफहो, और अछी गति मिले, जो लोग जन्म जन्मातरहोना नही मानते उनकी मरजीकी बातहै, जो माने उनके लिये उपदेश है.–

३ कोई जैन गृहस्थ जिनमंदिर बनवाते है, कोई जिनमूर्त्ति तामीर करवाते है, कोइ पुस्तकालय खोलते है, में एक जैन मजहबका साधु हुं, मेने मेरी जइफीके वख्तमें यह किताब बनाकर आम जिज्ञासुओके सामने रखीहै, इसकों वाचकर ज्ञानका फायदा हासिल करे, मेने इसमे कोइ अपशब्द नही लिखा, और जहांतक बना अपने खयालसें खिलाफ धर्मशास्त्रके कोइबात नही लिखी, इतनेपरभी कोइ गलती होगइ हो मुजे ब जरीये खतके इत्तिला देवे, दुसरी आवृत्तिमे उसका सुधारा किया जायगा.–

४ पुस्तक वाचनेसे आदमीको ज्ञानका फायदा मिलताहै, अगर किसीवख्त किसीका दिल फिक्रमे हो पुस्तक वाचनेसे दिलकों तसल्ली मिलती है, धर्मकी बातें सुनते वख्त मनुष्यके दिलका इरादा सुधरता है, तीर्थभूमिमे जानेसे और व्याख्यान धर्मशास्त्रका सुनतेवख्त दिल धर्मपर रजु होता है, इसीलिये ज्ञानीशख्शोंने तीर्थोंमे जाना और धर्मशास्त्र सुनना फायदेमंद कहा.–

५ हरवख्त आदमीकों दिलके इरादे पाक और साफ रखनेकी कोशिश करते रहना चाहिये, चुनाचे ! यह बात पूर्व संचितकर्मके उदयानुसार है, मगर जहांतक बने कोशिशकरते रहना अछा है, दुनियामे सारवस्तु कौनसी है, इसपर खयाल किया जाय तो दिलपर धर्मका जरुर असर होता है, मेने दीक्षा इख्तियार किये बाद मुल्कोंकी सफर करके जोकुछ बाते ज्ञानकी हासिल किइथी, इसकिताबमें दर्ज कर दिइ है, इसकों वाचे पढे और ज्ञानका फायदा हासिल करे.–

| | |
|---|---|
| संवत् ( १९८० ) कार्त्तिक शुक्ल पौर्णिमा – | ब–कलम,–जैनश्वेतांबर धर्मोपदेष्टा,– विद्यासागर–न्यायरत्न– मुनि–शांतिविजय.– |

## [ किताब-जैन-मत प्रभाकरके पेंशगी ग्राहकोंके नाम. ]

### ( बंबई. )

३५ श्रीयुत शेठ भीमाजी मोतीजी, चंपागली, बंबई.
१० श्रीयुत भीमाजी कपुरचंदजी, चंपागली, बंबई.
५ श्रीयुत भीमाजी रिखबदासजी, चंपागली, बंबई.
५ श्रीयुत भीखाजी मूलचंदजी, चंपागली, बंबई.
५ श्रीयुत भगवानजी रासाजी, विठलवाडी, बंबई.
२ श्रीयुत मोतीजी कुशाजी, विठलवाडी, बंबई.
२ श्रीयुत जवारमलजी चंदनमलजी, सराफबजार, बंबई.
२ श्रीयुत मगनीरामजी दानमलजी, मुकाम घाणेराव, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम सराफबजार, बंबई.
२ श्रीयुत सोमचंद उत्तमचंद, जुना मोदीखाना, नं. ५९ कोट, बंबई.
२ श्रीयुत शांतिनाथजीके मंदिरखाते, कोट, बंबई.
५ श्रीयुत मोहनलालजी वेद, ठिकाना लक्ष्मीचंदजी वेदकी दुकान, कालबादेवी रोड, बंबई.
३ श्रीयुत मूलचंदजी जावतरायजी, मंगलदास-मार्कीट तीसरी गली, बंबई.
२ श्रीयुत फतेचंदजी अनराजजी, छीपीचाली, बंबई.
२ श्रीयुत कपुरचंदजी पंनाजी, मुकाम पाडीव, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम बंबई, ठिकाना बारभाई महोला.
१ श्रीयुत भगवानजी तेजमलजी, मुकाम पींडवाडा, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम विठलवाडी, बंबई.
१ श्रीयुत जवानमलजी मिश्रीमलजी, पारसी गली, जयगोपाल रामदासजीका माला, बंबई.
१ श्रीयुत जशराजजी सागरमलजी, विठलवाडी तेलगली, बंबई.

१ श्रीयुत जवारमलजी मोतीलालजी, विठलवाडी, गणेश महेल, बंबई.

१ श्रीयुत सुंदरजी अमरचंद, कोट, फियररोड, घरनंबर (८३)बंबई.

१ श्रीयुत सरूपचंद पुनमचंद, नाणावटी, मुकाम पेंथापुर, मुल्क गुजरात, हाल मुकाम बंबई, धनजीस्ट्रीट, श्रीयुत कांतीलाल सरुपचंद नाणावटीकी पेढी.

१ श्रीयुत अमोलकचंदजी दानसिंहजी, मुकाम डीसा, राजपुर, हाल मुकाम बंबई, धनजीस्ट्रीट, पारसीगली, ठिकाना शेठ कालीदास ललुभाई, पोस्ट नं. ३.

१ श्रीयुत शामजी पाशुभाई, खारेक बजार, मांडवी, पोस्ट नं.३बंबई.

१ शाह वरजीवनदास चतुर्भुज, वेरावलवाला, हाल मुकाम बंबई, चिकल गली, मूलजी जेठा-मार्कीट भागजी वृंदावनकी दुकानपर.

१ शाह गोविंदजी शामजी, ठिकाना मूलजीजेठा मार्कीट, श्रीयुत मनजी वालजीकी दुकान, बंबई.

१ श्रीयुत कल्याणचंदजी सोभागचंदजी जहोरी, ठिकाना जहोरी बजार, पोस्ट नं. २, बंबई.

१ श्रीयुत पुनमचंदजी भूताजी, मुल्क मारवाड, पालडीवाला, हाल मुकाम परेल, भोइवाडी, बंबई पोस्ट नं. १२.

१ श्रीयुत चिमनाजी कृष्णाजी, मुकाम सेवाडी, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम परेल, भोइवाडी, बंबई पोस्ट नं. १२.

१ श्रीयुत भगवानजी थानाजी, मुकाम चाणोद, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम परेल, भोइवाडी, बंबई, पोस्ट नं. १२.

३ श्रीयुत जीवराजजी लुवाजी, मुकाम खीमेल, जिला जोधपुर मारवाड, हाल मुकाम बंबई, मझगांव, गोदीके सामने, शेठ लुंबाजी लखमाजीकी दुकान.

२ श्रीयुत गुलाबचंदजी राजमलजी, मुकाम बंबई, छीपीचाली, पोस्ट नं. २.

१ श्रीयुत तेजपालजी विरधीचंदजी, छाजेड, कालबादेवीरोड, पोस्ट नं. २, बंबई.

१ श्रीयुत गीरधरलाल सांकलचंद, ठिकाना गोघारीमहोला, मोगलका नया माला, पोस्ट नं. ९, बंबई.

१ श्रीयुत उत्तमचंदजी जेसाजी, ठिकाना एलफिस्टनरोड, बी-बी-सी आई रेलवे टेशन, पोस्ट नं. १३, बंबई.

१ श्रीयुत डुंगाजी भेराजी, ठिकाना एलफिस्टन रोड, बी-बी-सी आई रैलवे टेशन, पोस्ट नं. १३ बंबई.

१ श्रीयुत धनरुपजी सरुपचंदजी मुकाम बांदरा, ठिकाना, जैनमंदिरके पास, बी-बी-सी आई रैलवे टेशन, बंबई.

१ श्रीयुत देवीचंदजी सरदारमलजी, ठिकाना एलफिस्टनरोड, पोस्ट नं. १३, बंबई.

१ श्रीयुत डाह्यालालजी भीमाजी, ठिकाना एलफिस्टनरोड, पोष्ट नं. १३, बंबई.

२ श्रीयुत मोतीचंदजी जशराजजी, भांडावत, ठिकाना अनंतवाडीके सामने, पोस्ट नं. २, बंबई.

२ श्रीयुत चिमनीरामजी जवारमलजी, मुकाम सरदारगढ, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम माहिम, पोस्ट नं. १६ बंबई.

१ श्रीयुत जहोरी रुपचंदभाइ भगवानदास, ठिकाना धनजीष्ट्रीट, पोस्ट नं. ३, बंबई.

१ श्रीयुत चंदुलाल खुशालचंद, जहोरी, ठिकाना जहोरीबजार मुंबादेवीके सामने, बंबई.

१ श्रीयुत प्रेमजी नानचंद, ठिकाना जहोरीबजार, मुंबादेवीके सामने, श्रीयुत चंदुलाल खुशालचंदकी दुकानपर, बंबई.

२ श्रीयुत मूलचंद, ककलचंद, ठिकाना धनजीष्ट्रीट, बोंबे जेवेलरी वर्क शोप, बंबई, पोस्ट नं. ३.

१ श्रीयुत जहोरी, केशवलाल मनसुखराम, प्रिंसिसष्ट्रीट, पोस्ट नं. २ बंबई.

१ श्रीयुत कुंदनमलजी हजारीमलजी, मुकाम माहिम, पोस्ट नं.१६ वंबई.

१ श्रीयुत मणिलाल केशवलाल, ठिकाना धनजीष्ट्रीट, पोस्ट नं. २ वंवई.

१ श्रीयुत छदाजी खुशालजी, ठिकाना मुंवादेवी, वंवई.

१ श्रीयुत सागरमलजी परतापमलजी, ठिकाना मांडवी कोलीवाडा, पोस्ट नं. ३ वंबई.

१ श्रीयुत समरथमलजी फोजमलजी, ठिकाना मांडवी कोलीवाडा, पोस्ट नं. १३ वंबई.

१ श्रीयुत छोटालाल कस्तूरचंद, ठिकाना तावाकाटा, वोहराके नये मालेमें, चौथे दादरे, वंबई.

१ श्रीयुत तिलकचदजी दलिचंदजी, मुकाम माहिम, पोस्ट नं. १६ वंबई.

१ श्रीयुत भीखमचंदजी वछराजजी, ठिकाना मंगलदासमार्कीट, पोस्ट नं. २ वंबई, दुकान नथनलजी मूलचंदजी.

१ श्रीयुत सरदारमलजी सहसमलजी, मुकाम वाली, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम माहिम, पोस्ट न. १६ वंबई.

१ श्रीयुत जेठमलजी मगनाजी, ठिकाना चीचवंदर माडवी, पोस्ट नं. ३ वंबई.

१ श्रीयुत पुनमचंदजी श्रीचंदजी, मुकाम वाली, मुल्क मारवाड, हाल मुकाम वंबई. ठिकाना मुंवादेवी.

१ श्रीयुत जुहारमलजी सागरमलजी, मुकाम सादरी, मुल्क मारवाड, हाल मुकाम वंबई, ठिकाना मुंवादेवी.

३ श्रीयुत रामचंदजी गीदाजी, मुकाम दादर, पोस्ट नं. १४ वंबई.

२ श्रीयुत हजारीमलजी खेमाजी, एलफिस्टनरोड, पोस्ट नं. १३वंबई

२ श्रीयुत धुलाजी नवलाजी, मुकाम दादर, पोस्ट न. १४ वंबई.

२ श्रीयुत खीमजी गांगजी, मुकाम कछ बारोई, हाल मुकाम घाटकोपर, ठिकाना शेठ टोकरसी मूलजीके मकानमे.

१ श्रीयुत वरधीचंदजी खुमाजी, ठिकाना कोलाना, पोस्ट नं.५बंबई.
१ श्रीयुत जीवराज श्रीचंददास, बुरानपुरवाला, हालमुकाम बंबई. ठिकाना गोकलगली.
१ श्रीयुत अनोपचंदजी नेमाजी, मुकाम दादर, पोस्ट नं. १४बंबई.
१ श्रीयुत हरखचंदजी सरदारमलजी, मुकाम बंबई, ठिकाना जहोरी बजार, श्रीयुत नवलमलजी मोतीलालजीकी पेढी.

[ शहर बलारी. ]

२५ श्रीयुत जैनश्वेतांबर पंच, मुकाम बलारी, ( मुल्क कर्णाटक ).
५ श्रीयुत चतराजी डुंगरचंदजी, मुकाम राखी, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम बलारी.
५ श्रीयुत गुलबाजी पेराजी, मुकाम काणदर, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम बलारी.
५ श्रीयुत सेनाजी कपुरचंदजी, मुकाम बागरा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम, बलारी.
३ श्रीयुत धुराजी कस्राजी, मुकाम काणदर, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम बलारी.
३ श्रीयुत डाह्याजी असलाजी, मुकाम बागरा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम बलारी.
३ श्रीयुत दलिचंदजी रुगनाथमलजी, मुकाम गढसेवाणा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम बलारी.
३ श्रीयुत पंनाजी रुपचंदजी, मुकाम गढसेवाणा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम बलारी.–
२ श्रीयुत बस्तीरामजी अंदाजी, मुकाम सेवाणा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम बलारी.
२ श्रीयुत हरजीजी कस्तूरचंदजी, मुकाम जावाल, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम बलारी.
२ श्रीयुत गुलाबचदजी प्रेमचंदजी, मुकाम गढसेवाणा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम बलारी.

२ श्रीयुत नरसिंहजी वस्तीरामजी, मुकाम गढसेवाणा, जिला, जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम वलारी.

२ श्रीयुत जगरुपजी चद्रभाणजी, मुकाम काणदर, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम वलारी.

२ श्रीयुत प्रेमचंदजी इदाजी, मुकाम वागरा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम वलारी,

१ श्रीयुत कनीरामजी जुगराजजी, मुकाम वलारी.

१ श्रीयुत चुनीलालजी लछीरामजी, मुकाम गढसेवाणा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम वलारी.

१ श्रीयुत केशरीमलजी चुनीलालजी मुल्क मारवाड, हाल मुकाम वलारी.

१ श्रीयुत वीरचदजी सुदराजजी, मुकाम जालोर, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम कोट्टर, तालुके होस्पेट, जिला वलारी.

१ श्रीयुत देवीचंदजी ताराचदजी, मुकाम वागरा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम वलारी.

१ श्रीयुत सुमाजी जवेरचदजी, मुकाम कालिंदरी, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम वलारी.

१ श्रीयुत भुगजी लुनाजी,-मुकाम काणदर, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम वलारी.

१ श्रीयुत केशरीमलजी भूताजी, मुकाम पालडी, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम वलारी.

१ श्रीयुत उमाजी भभुतमलजी, मुकाम डोडुवा, शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम वलारी.

१ श्रीयुत नवलमलजी पुनमचंदजी, मुकाम डोडुवा, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम वलारी.

१ श्रीयुत वनाजी भावाजी, मुकाम वागरा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम वलारी.

१ श्रीयुत नरसिंगजी भूताजी, मुकाम आहोर, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम वलारी.

१ श्रीयुत सुगालचंदजी चतराजी, मुकाम आहोर, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम बलारी.

१ श्रीयुत पुनमचंदजी रुगनाथजी, मुल्क मारवाड, हाल मुकाम बलारी.

१ श्रीयुत रुपचंदजी गेंनाजी, मुकाम हरजी, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम बलारी.

१ श्रीयुत घेवरचंदजी कनैयालालजी, मुकाम नौसा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम बलारी.

१ श्रीयुत खेमराजजी यादलचंदजी, मुकाम नौसा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम बलारी.

१ श्रीयुत हकमाजी भावाजी, मुकाम, वागरा, जिला जोधपुर मारवाड, हाल मुकाम उरकुंडा, जिला बलारी.

१ श्रीयुत गोमाजी वर्जींगजी, मुकाम सियाणा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम उरकुंडा, जिला बलारी.

१ श्रीयुत खेमराजजी पनराजजी, मुकाम नागोर, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम बलारी.

१ श्रीयुत नथाजी चिमनमलजी, मुकाम रायद्रुग, जिला बलारी.
Post Rayadrug, Dist Bellary

१ श्रीयुत सेनाजी भभुतमलजी, मुकाम उरकुंडा, जिला बलारी.

१ श्रीयुत केशाजी रुपचंदजी, मुकाम बलदुट, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम कंपली, ठिकाना श्रीयुत गमनाजी गुलाबचंदजीकी दुकान, जिला बलारी.

१ श्रीयुत नवलमलजी वनाजी, मुकाम, जावाल, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम बलारी.

१ श्रीयुत उमाजी केवलचंदजी, मुकाम तुवाच, मुल्क मारवाड, हाल मुकाम कंपली, जिला बलारी.

[ मुकाम आदोनी, ]

४ श्रीयुत हुकमाजी कस्तूरचंदजी, मुकाम कालिंदरी, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम एमीगनुर, ताल्लुके आदोनी, जिला बलारी.

३ श्रीयुत राङ्गजी गुमानमलजी, मुकाम कालिंदरी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड, हाल मुकाम आदोनी, Post. Adoni

२ श्रीयुत पदमाजी मयाचंदजी, मुकाम कालिंदरी, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम एमीगनुर, ताल्लुके आदोनी.

२ श्रीयुत कस्तूरचंदजी चुनीलालजी, मुकाम आदोनी.

१ श्रीयुत कस्तूरचंदजी लालचदजी, मुकाम आदोनी.

१ श्रीयुत लालचंदजी मोतीजी, मुकाम जावाल, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम आदोनी, ठिकाना श्रीयुत कस्तूरचदजी लालचंदजीकी दुकानपर.

१ श्रीयुत चिमनाजी पुनमचंदजी, मुकाम देलंदर, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम आदोनी, ठिकाना शेठ रतनाजी पुनमचदजीकी दुकानपर.

१ श्रीयुत भुरमलजी भीखाजी, मुकाम पाडीव, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम आदोनी.

१ श्रीयुत कपासी, जमनादास भुराभाई, मुकाम महुवा, जिला काठियावाड, हाल मुकाम आदोनी.

१ श्रीयुत रतनाजी पुनमचंदजी, मुकाम देलदर, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम आदोनी.

१ खंडेवाल तिलोकचदजी प्रेमाजी, मुकाम पोशालिया, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड, हाल मुकाम आदोनी.

१ श्रीयुत रतनचंदजी खुमाजी, मुकाम सतापुरा, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम आदोनी.

१ श्रीयुत लखाजी वनाजी, मुकाम वराडा, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम आदोनी.

१ श्रीयुत भभुतमलजी भगवानजी, मुकाम जावाल, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम आदोनी.

१ श्रीयुत ठाकरजी रुपचंदजी, मुकाम पाडीव, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम आदोनी.

१ श्रीयुत हिंदुजी सेनाजी, मुल्क मारवाड, हाल मुकाम आदोनी.

१ श्रीयुत गोमाजी जवेरचंदजी, मुकाम आदोनी.

१ श्रीयुत धुराजी खुशालचंदजी, मुकाम आदोनी.

[मुकाम ताडपत्री ]

३ श्रीयुत चरधाजी सहेसमलजी, मुकाम हरजी, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम ताडपत्री.

२ श्रीयुत नरसिंगजी हिंदुजी, मुकाम सियाणा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम ताडपत्री.

२ श्रीयुत अमीचदजी हांसाजी, मुकाम काणदर, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम कडपा, जिला खास.

२ श्रीयुत रतनाजी खुशालचंदजी, मुकाम वराडा, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम ताडपत्री.

१ श्रीयुत पुनमचंदजी कंनाजी, मुकाम सियाणा, जिला जोधपुर, मारवाड, हालमुकाम ताडपत्री.

१ श्रीयुत नवलमलजी मेघाजी, मुकाम वागरा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम ताडपत्री.

१ श्रीयुत नथमलजी मेघाजी, मुकाम वागरा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम ताडपत्री.

१ श्रीयुत खूबचंदजी भुदरजी, मुकाम तलाव, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम ताडपत्री.

१ श्रीयुत लुंबाजी रतनचदजी, मुकाम मंडवारिया, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम ताडपत्री.

१ श्रीयुत खूबाजी परतापचदजी, मुकाम हरजी, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम ताडपत्री.

१ श्रीयुत कपुरचंदजी लालचंदजी, मुकाम वागरा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम ताडपत्री.

१ श्रीयुत पुनमचंदजी परतापचदजी, मुकाम लास, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम ताडपत्री.

१ श्रीयुत सांकलचंदजी शिवराजजी, मुकाम वागरा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम ताडपत्री.

१ श्रीयुत जेताजी कानाजी, मुकाम सियाणा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम ताडपत्री.

१ श्रीयुत चिमनाजी धनरुपजी, मुकाम गुडा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम ताडपत्री.

१ श्रीयुत देवीचदजी कुन्नाजी, मुकाम वागरा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम नरगुंडी, जिला धारवाड.

## [ शहर मद्रास. ]

१ श्रीयुत शुभकरणजी कनैयालालजी, शेठिया, मुकाम वलुंदा, जिला जेतारण, मारवाड, हाल मुकाम मद्रास, ठिकाना परशुवाग बजार.

१ श्रीयुत कुदनमलजी पुखराजजी, मुकाम खटोर, मुल्क मारवाड, हाल मुकाम मद्रास, ठिकाना परशुवाग बजार.

१ शाह हीराचंदजी भवरचदजी, खजानची, मुकाम नागोर, मारवाड, हाल मुकाम मद्रास, ठिकाना परशुवाग बजार.

१ शाह मोतीचंदजी शेठिया, मुकाम सोजत, मारवाड, हाल मुकाम मद्रास, ठिकाना शूला पटालम पेरमवुर बजार वारकस.

१ श्रीयुत शुभकरणजी आशकरणजी, शेठिया, मुकाम, वलुदा, जिला जेतारण, मारवाड, हाल मुकाम मद्रास, ठिकाना शूला पटालम पेरमवुर बजार वारकस.

१ श्रीयुत रायचदजी हीराचदजी, सोनीगरामुता, मुकाम गंदोज, जिला पाली, मारवाड, हाल मुकाम मद्रास, ठिकाना शूला-पटालम पेरमवुर बजार वारकस.

१ शाह कुंदनमलजी मघराजजी, रांका,मुकाम निवाज, जिला जेतारण, मारवाड, हाल मुकाम मद्रास, ठिकाना परशुवाग वजार.

१ श्रीयुत सांकलचंदजी चिमनाजी, मुल्क मारवाड, हाल मुकाम कडपा, जिला खास.

१ श्रीयुत जवारमलजी भीखाजी, खीमेसरा, मुकाम भवराणी, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम मद्रास, ठिकाना नारायमुद्ली ष्ट्रीट, नं. १०३.

१ श्रीयुत पुनमचंदजी, प्रागचंदजी, मुकाम मणोरा, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम करनोल, जिला मद्रास.

१ श्रीयुत कपुरचंदजीकों मीले, मुकाम करनोल, Post Karnool जिला मद्रास, ठिकाना उमाजी चमनमलजीकी दुकान.

१ श्रीयुत कस्तूरचंदजी भुरमलजी, मुकाम मद्रास, ठिकाना गोविंदापा नायक विदी ष्ट्रीट.

१ श्रीयुत मोतीजी मूलचंदजी पुनमचंदजी, मुकाम जावाल, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम करनोल, जिला मद्रास.

१ श्रीयुत अमरचंदजी शोभाचंदजी, मुकाम सादरी, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम मद्रास.

[ बेंगलोरसीटी ]

१ श्रीयुत लक्ष्मीचंदजी अमीचंदजी, पोरवाल, ठिकाना चीकपेठ, बेंगलोर सीटी, मुल्क दखन.

[ बेजवाडा ]

२ श्रीयुत परतापमलजी अमोलकचंदजी, मुकाम बेजवाडा, जिला मसलीपटन.

१ श्रीयुत जीवराजजी, धुंडाजी, मुकाम बेजवाडा, जिला मसलीपटन, Post Bezwada, Dist Masulipatam

१ श्रीयुत सेनामलजी वनेचंदजी,मुकाम बेजवाडा,जिला मसलीपटन.

१ श्रीयुत खुशालचंदजी ताराचंदजी, मुकाम राजबंदर, जिला गोदावरी.

[ मुकाम बेंलगांव-दखन ]

१ श्रीयुत भीमाजी, देवाजी, मुल्क मारवाड, तखतगढवाले, टेशन एरनपुरा रोड, हाल मुकाम बेंलगांव, ठिकाना भींडीबजार.

१ श्रीयुत मनसालालजी मकनाजी, मुकाम हरजी, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम बेंलगांव.

१ श्रीयुत हिंदुमलजी चदनमलजी, मुकाम वागरा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम बेंलगांव

१ श्रीयुत वरधाजी छोगाजी, मुकाम खांडप, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम बेंलगांव, ठिकाना श्रीयुत सीरेमलजी पुनमचदजीकी दुकान.

१ श्रीयुत भंडारी, विसनराजजी माणकराजजी, मुकाम सोजत, मारवाड, हाल मुकाम बेंलगाव, ठिकाना भीडीनजार, श्रीयुत सीरेमलजी पुनमचदजीकी दुकान.

१ श्रीयुत भडारी मयारामजी मिश्रीमलजी, ठिकाना भीडीवजार, बेंलगांव.

१ श्रीयुत भगवानजी गुलाबचंदजी, मुकाम पाडीव, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम रायचूर.

२ श्रीयुत सुरतीगजी लखमीचंदजी. मुकाम सुरापुरा, पोस्ट याद-गिरी, जी. आई. पी. रेलवे, जिला गुलबर्गा.
Post Yadagiri, Dist Gulbarga

१ श्रीयुत खुमाजी चुनीलालजी, मुकाम सापुर, पोस्ट यादगीरी, जिला गुलबर्गा.

१ श्रीयुत मसुतमलजी रुपचदजी, मुकाम रानीबेन्नुर, जिला धारवाड, Post Ranibennur, Dist Dharwar

[ शहरपुना, मुल्कदखन ]

३ श्रीयुत शिवदानजी सोमाजी, गोटीवाले, ठिकाना वेतालपेठ, पुना.

१ श्रीयुत प्रेमचदजी सरदारमलजी, बेंकर, ठिकाना सोलापुरबजार पुना केंप.

१ श्रीयुत मोतीलालजी लाधाजी, ठिकाना भवानीपेंठ, पुनासीटी, नं. ११६.

१ श्रीयुत दानाजी जशराजजी, ठिकाना भवानीपेंठ, पुना सीटी.

१ श्रीयुत जगन्नाथजी भगवानजी, ठिकाना रविवार पेंठ, पुना सीटी.

१ श्रीयुत कावेरिया, दलिचंदजी, धीरजमलजी, ठिकाना रविवार पेंठ, पुना सीटी.

१ श्रीयुत चुनीलालजी चागमलजी, ठिकाना मीठगंज, पुना सीटी.

१ श्रीयुत नथमलजी गमनाजी, ठिकाना मीठगंज, पुना सीटी.

१ श्रीयुत मणिलाल वालचंद, गुजराती, मुकाम चास, जिला पुना, Post Chas, Dist Poona

१ श्रीयुत रमणीकलाल चुनीलाल, ठिकाना बुधवार पेठ, मुकाम जुन्नेर, जिला पुना.

२ श्रीयुत मयाचंदजी मेघाजी, मुकाम धनापुरा, जिला जोधपुर, मारवाड, हाल मुकाम पोस्ट खापोली, (वाया करजद) मुल्क दखन.

१ श्रीयुत चुनीलाल छगनलाल, ठिकाना गणपतिपेंठ, मुकाम सागली, जिला सतारा, मुल्क दखन.

[ खानदेश विरार और मध्यप्रदेश ]

१ श्रीयुत जुहारमलजी राजमलजी, डोशी, मुल्क मारवाड, मंडारवाले, हाल मुकाम धुलिया, ठिकाना वजार आगरारोड.

१ श्रीयुत अमरचंदजी गंभीरमलजी, छाजेड, मुल्क मारवाड, वडलुवाले, हाल मुकाम धुलिया, ठिकाना तेलीगली.

श्रीयुत रतनलालजी छोगमलजी, छाजेड, मुल्क मारवाड, वडलुवाले, हाल मुकाम धुलिया.

१ श्रीयुत दानमलजी नथमलजी, ठिकाना आगरारोड वजार, मुकाम धुलिया.

२ श्रीयुत चुनीलालजी दीपाजी, मुकाम मोटागाम, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम पाचोरा.

२ श्रीयुत शंकरलालजी दीपाजी, मुकाम मोटागांम, जिला शिरोही, मारवाड, हाल मुकाम पांचोरा.

१ श्रीयुत खूबचंदजी डाह्याजी, मुल्क मारवाड, कालिंदरीवाले, हाल मुकाम नंदुरावाद, ठिकाना डाह्याजी मोतीजीकी दुकानपर, पश्चिमखानदेश.

१ श्रीयुत सुखलाल हरजीवन शाह, मुकाम नंदुरवाड, जिला खानदेश.

२ श्रीयुत कोठारी राजमलजी तेजराजजी, पोस्ट दारवा, जिला एवतमाल, मुल्क विरार, Post Daiwaha, Dist Evatmal ( Beiar )

१ श्रीयुत हवसीलालजी पानाचंदजी, मुकाम वालापुर, जिला आकोला, मुल्क विरार.

२ श्रीयुत ईश्वरदासजी अमीचंदजी, मुकाम नालापुर, जिला आकोला, मुल्क विरार.

१ श्रीयुत मगनलालजी चुनीलालजी, मुकाम अमरावती, मुल्क विरार. Post Amraoti ( Berrar )

१ श्रीयुत आशारामजी छगनलालजी, सराफ, मुकाम एलचपुर सीटी, जिला अमरावती, विरार.

१ श्रीयुत यतिजी युगादिसागरजी, मुकाम वालाघाट, ठिकाना जैनमंदिर, मध्यप्रदेश.

२ श्रीयुत किसनचंदजी हीरालालजी, मुकाम वर्धा, मध्यप्रदेश.

१ श्रीयुत दीपचंदजी घेवरचंदजी, पारख, मुनीम वडी दुकान, सागर, पोस्ट वारा. Post Bara, Dist Saugoi

१ श्रीयुत अमृतलाल केशवलाल, ठिकाना सी. डी. सराफ, मुकाम नाशिक. C/o C D Saiaf.

[ मुल्क मालवा ]

१ श्रीयुत यतिजी शिखरसौभाग्यजी, मुकाम नाराणगढ, जिला होल्कर स्टेट. Post Narayangadh, Holkai State

१ श्रीयुत फुलचंदजी पानाचंदजी, मुकाम नाराणगढ, जिला होल्कर स्टेट.

१ श्रीयुत कोठारी मोतीलालजी मावजी, मुकाम नाराणगढ, जिला नीमच, मुल्क मालवा, होल्कर स्टेट.

१ श्रीयुत मास्तर सुरजमलजी तखतमलजी, महावीर प्राइवेट स्कुल, ठिकाना चौमुखी पुल, शहर रतलाम, मालवा.

१ श्रीयुत मोतीलालजी जयनाराणजी, नाशिकवाले, मुकाम रतलाम, ठिकाना चौमुखी पुल.

१ श्रीयुत लक्ष्मीचंदजी वाफणा, संजीतवाला, ठिकाना जैनप्रभाकर, रतलाम, मुल्क मालवा.

१ श्रीयुत समरथमलजी मानमलजी, भांडावत, शहर इंदोर, मुल्क मालवा, ठिकाना बडा सराफा.

१ श्रीयुत नथमलजी शांतिदासजी, शेखावत, ठिकाना छोटा सराफा, मुकाम इंदोर सीटी.

१ श्रीयुत कल्याणसिंहजी वेदमुता, मुकाम मंदसोर, मालवा, ठिकाना शेठ मूलचंदजी सोनीकी दुकानपर.

१ श्रीयुत संतोकचंदजी रिखवदासजी, ठिकाना चौक मुकाम भोपाल.



[ मुल्क गुजरात काठियावाड. ]

१ श्रीयुत जीवाजी वेलाजी, मुल्क मारवाड, पालडीवाले, हाल मुकाम पोस्ट सातेम, ताल्लुके जलालपुर, जिला–सुरत.

१ श्रीयुत कीकाजी अमरचंदजी गणेशवड, मुकाम सीसोदरा, जिला–सुरत.

१ श्रीयुत गुणमुनिमहाराज, ठिकाना नेमुभाइकी वाडीके उपाश्रय, गोपीपुरा, मार्फत छगनलालजी मास्तर, मुकाम सुरत.

१ श्रीयुत जैनयुवक मंडल तर्फसे, श्रीयुत मोतीलाल नानचंद, तथा वाडीलाल वस्ताराम, मुकाम बुहारी, जिला सुरत. Post Buhari, Dist Surat

१ श्रीयुत लालचंद हरगोविंद शाह, मुकाम सुरवाडा, तालुके करजण, पोस्ट मियागांम, करजण.

१ शाह फुलचंद खीमचंद, मुकाम वलाद, जिला अहमदाबाद, टेशन मेद्रा. Post Valad, Dist Ahmedabad, Station Medara, Prantij Railway

१ श्रीयुत हरिप्रसाद, अमृतलाल, पटेल, C/o Lakhia Pole, Khadia, Ahmedabad

१ श्रीयुत रतिलाल मफाभाइ शाह, मुकाम मांडल, जिला अहमदाबाद, गुजरात.

१ श्रीयुत चंपालाल रामप्रसाद, मुकाम अहमदाबाद, ठिकाना नया-माधवपुरा.

१ श्रीयुत चुनीलाल मगनलाल, मुकाम अहमदाबाद, ठिकाना हाजा पटेलकी पोल, पाछियाकी पोल.

१ श्रीयुत पाटन जैनमंडल, मुकाम शहर पाटन, मुल्क गुजरात.

१ शाह जयचंद तलकचंद, मुकाम वेरावल, जिला काठियावाड.

[ मुल्क कछ और सिंध ]

१ श्रीयुत लधाजी गणपत, मुकाम नानी खाखर, मुल्क कछ, Bidada, ( Cutch )

१ श्रीयुत पोपटलाल त्रिभोवनदास शाह, ठिकाना रणछोड लाइन, शहर करांची, मुल्क सिंध.

१ श्रीयुत तेजपाल खेतसी महेता, ठिकाना रणछोड लाइन, शहर कराची, मुल्क सिंध.

[ मुल्क मारवाड. और मेंवाड ]

२ श्रीयुत गुमानचंदजी विनेचदजी, मुकाम पाडीव, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

२ श्रीयुत कपुरचंदजी मगनलालजी, मुकाम पाडीव, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

२ श्रीयुत फुलचंदजी हीराचंदजी, मुकाम कालिंदरी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

२ श्रीयुत इमरतमलजी कल्याणमलजी बांठिया, मुकाम नागोर, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत यतिजी भक्तिवर्द्धनजी, मुकाम मडार, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड. *Post. Madar, Dist Shirohee, (Marwar)*

१ सेक्रेटरी केशरविजयजी जैनलाइब्रेरी, मुकाम जालोर, जिला जोधपुर, मारवाड, श्रीयुत के. एम. गांधी.

१ श्रीयुत पुखराजजी धनराजजी कासटिया, ठिकाना उदयपुरी बजार, मुकाम पाली, मारवाड.

१ श्रीयुत वस्तीमलजी नाडोलवाले, मुकाम पाली, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत हीराचंदजी शिंगी, मुकाम पाली, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत गोमाजी भागाजी, मुकाम तुवाव, पोस्ट रामसेन, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत भभुतमलजी धनरूपजी पाडीववाला, मुकाम शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत गेंनाजी कुंदनमलजी, मुकाम हरजी, पोस्ट गुडा, मुल्क मारवाड, जिला एरनपुरा.

१ श्रीयुत सुरतीगजी तोलचंदजी, मुकाम हरजी, पोस्ट गुडा, मुल्क मारवाड, जिला एरनपुरा.

१ श्रीयुत वनाजी भभुतमलजी, मुकाम वलदुट, जिला शिरोही, मारवाड.

१ श्रीयुत धुपाजी केशरीमलजी, मुकाम वलदुट, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत खुशालचंदजी ताराचंदजी, मुकाम सियाणा, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत उमेदमलजी रिखवचंदजी, मुकाम हरजी, पोस्ट गुडा, जिला एरनपुरा, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत सुरतीगजी नवलमलजी, मुकाम जावाल, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

२ श्रीयुत समनमलजी देवाजी, मुकाम पाडीव, जिला शिरोही, मारवाड.

१ श्रीयुत नवलमलजी जगरूपजी, मुकाम वलदुट, जिला शिरोही, पोस्ट जावाल, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत वालचंदजी उमाजी, मुकाम देलंदर, जिला शिरोही, पोस्ट जावाल, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत शंकरलालजी नरसिंगजी, मुकाम हरजी, पोस्ट गुडा, जिला एरनपुरा, मारवाड.

१ श्रीयुत पुनमचंदजी तेजाजी, मुकाम कालिंदरी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत देवीचंदजी राजाजी, मुकाम कालिंदरी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत नथमलजी डाह्याजी, मुकाम कालिदरी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत खुशालजी नवलमलजी, मुकाम कालिंदरी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत असलाजी कपुरचंदजी, मुकाम कालिंदरी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत पुनमचंदजी दोलाजी, मुकाम कालिंदरी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत भभुतमलजी गोमाजी, मुकाम कालिंदरी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत मूलचंदजी वेलाजी, मुकाम कालिदरी, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत हीराचंदजी फुआजी, मुकाम कालिंद्री, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत सांकलचंदजी चिंमनाजी, मुकाम जावाल, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत मोतीजी मूलचंदजी, मुकाम जावाल, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत साकलचंदजी केशरीमलजी, मुकाम पाडीव, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत लखाजी गुलाबचंदजी, मुकाम पाडीव, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत गोमराजजी फतेचंदजी, मुकाम शिवगंज, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत गुलाबचंदजी देवीचंदजी, मुकाम शिवगंज, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत नथमलजी जतनराजजी, मुकाम घाणेराव, जिला जोधपुर, मारवाड.

१ श्रीयुत जवेरचंदजी राजमलजी, मुकाम शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत राजमलजी आनंदरायजी, मुकाम घाणेराव, जिला जोधपुर, मारवाड.

१ श्रीयुत राजमलजी वेद, ठिकाना वेदोंका वास, श्रीयुत पुनमचंदजी रेखचंदजीके वहां, मुकाम फलोंदी, जिला जोधपुर, मारवाड. Post Falodi Dist Jodhpur.

१ श्रीयुत पुनमचंदजी राजारामजी, मुकाम पाली, जिला जोधपुर, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत जशराजजी हुकमीचंदजी चौधरी, मुकाम शिरोही, मुल्क मारवाड, ठिकाना चौधरी महोला.

१ श्रीयुत चिमनाजी मेघराजजी, मुकाम जाव्राल, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत जवेरचंदजी नथमलजी, मुकाम पाडीव, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत यतिजी पं. हीरसागरजी जोरावरसागरजी, मुकाम नागोर, मुल्क मारवाड, ठिकाना श्रीयुत जालमचंदजी जहोरीमलजीके यहां.

१ श्रीयुत चैनमलजी रासाजी, मुकाम काणदर, जिला जोधपुर, मारवाड, पोस्ट सियाणा.

१ श्रीयुत चिमनमलजी देवाजी, मुकाम पाडीव, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत दलिचंदजी हीराचंदजी, मुकाम वेंडा, जिला जोधपुर, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत मीखमचदजी रिखवाजी, मुकाम शिवगंज, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत रूपचदजी हंसाजी, मुकाम शिवगंज, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत खेमचंदजी शिवराजजी, मुकाम शिवगंज, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत प्रेमचंदजी भगाजी, मुकाम वेडा, जिला जोधपुर, मारवाड.

१ श्रीयुत उदयराजजी तनसुखदासजी, कोचर, मुकाम फलोंद्री, जिला जोधपुर, मारवाड.

१ श्रीयुत देवीचंदजी कस्तूरचंदजी, मुकाम शिवगंज, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड, पोस्ट एरनपुरा.

१ श्रीयुत पुनमचंदजी राजमलजी, वागरावाला, मुकाम शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत जशराजजी जगरूपजी, मुकाम पाडीव, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत दोलाजी खेताजी, मुकाम वडगांम, जिला शिरोही, पोस्ट शिवगंज, मारवाड.

१ श्रीयुत भुरमलजी राजाजी, पोस्ट तखतगढ, जिला जोधपुर, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत कुंदनमलजी चुनीलालजी, कावेरिया, मुकाम सादरी, जिला जोधपुर, मारवाड.

१ श्रीयुत दौलतरामजी सहेसमलजी, मुंडारावाले, मुकाम पाली, जिला जोधपुर, मारवाड.

१ श्रीयुत सुगनचंदजी रूपचंदजी, मुकाम जयपुर, राजपुताना, ठिकाना चोडारास्ता, जहोरी बाजार.

१ श्रीयुत वगराजजी रूपाजी, मुकाम कोट, पोस्ट वाली, जिला जोधपुर, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत अभयचंदजी नवलमलजी, मुकाम मंडवारीया, पोस्ट जावाल, जिला शिरोही, मुल्क मारवाड.

१ श्रीयुत हेमाजी मूलचंदजी, मुकाम मंडवारिया, पोस्ट जावाल, जिला शिरोही, मारवाड.

१ श्रीयुत मोतीलालजी देवीलालजी, हिंगड, मुकाम उदयपुर, ठिकाना धानमंडी, मुल्क मेवाड.

१ श्रीयुत तारावत चंपालालजी निहालचंदजी, मुकाम आशपुर, पोस्ट सागवाडा, जिला डुंगरपुर, मुल्क मेवाड.

[ किताब जैनमत-प्रभाकरके-पेशगी-ग्राहकोंके नाम पूर्ण हुवे. ]